A collection of Hindi books

Contents

Six volumes in one

With the sanction of the Inspector of Schools, Behar Circle.

Authorized Text Book for the Schools of Behar

नीतिपथ।

अर्थात

नीति विषय का एक अति अद्भुत ग्रन्थ जिसमें नीति के बहुतेरे मनोरञ्जन उपाख्यान और कविता में अति उपकारी उपदेश औ अति उत्तम२ शिक्षा की बातें लिखी हैं।

यह नीतिपथ वर ग्रन्थ प्रगटित झटित कीव बिहार।
श्रीयुत महाशय मान्यवर भूदेव परम उदार॥
जाकी सु अनुमति माथ धरि वर विप्र श्री गोपाल।
सुत जयनारायण मिश्र जू मन सुमिरि ईश कृपाल॥
करि परम श्रम बालकन हित कियो ग्रन्थ यह निरमान।
जे पढ़हिं एहि मन लायके ते होहिं अति मतिमान॥

NITIPATHA

OR

LESSONS ON MORALITY

IN HINDI

For the use of schools

BY

PUNDIT JAY NARAYAN MISRA
Head Pundit Patna Normal School
Late Translator & Scholar, Benares College.

PRINTED & PUBLISHED BY SAHIB PRASAD SINH
KHADGBILAS PRESS, BANKIPORE.
1884

3rd Edition
1000 copies.

Price per copy ans 6
दाम फी जिल्द ।≠)

PREFACE.



This book has been translated at the request of Babu Bhoodev Mukerji Inspector of schools Behar Circle from Pundit Ramgati Nayaratna's Bengali Nitipath by Pundit Jay Narayan Misra Sanskrit and Hindi teacher Patna Normal school. It is as its name indicates, truly a moral instructor for the young for whose edification it is intended. It inculcates by excellent anecdotes taken from Hindoo Shastras and real life, the practice of almost all the virtues that adorn humanity. In fact it would not be too much to say that in th whole range of Hindi and Urdu literature there is hardly another book equally interesting and instructive for Juvenile readers.

Its chaste and correct style and useful matter recommend it as a very suitable text book for use in the Vernacular schools of Behar.

KALLY COOMAR MITTRA B. A,
Head Master.

Patna Normal School,
26*th Decr.* 1882.


TO

A. W. CROFT, ESQUIRE, M.A.

DIRECTOR OF P. I. B.

AND TO

J. V. S. POPE M. A.

INSPECTOR OF SCHOOLS BEHAR CIRCLE

This work is most respectfully dedicated.

In token

Of esteem and honor

by

His most obedient servant the author.

विज्ञापन ।

प्रकाशित हो चाहिये कि इस ग्रंथ को छपाने तथा इस ग्रंथ से लेकर संग्रह आदि करने का किसी को अधिकार नहीं है इस ग्रन्थ पर रजस्तरी हुई है।

२। नीतिपथग्रन्थ का सहानुजाई 'नीतिशिक्षा' जिसका दूसरा संस्करण वर्णमाला के साथ कैथी टाइप में अत्युत्तम कागज़ पर छपकर श्रीयुत जान० वान० सोमरन पोप एम० ए० इंसपेक्टर आफ स्कूल्स सूबे विहार की आज्ञानुसार तैयार है जिसका मूल्य ≶)॥ है जिस महाशय को इस की अपेक्षा हो ग्रन्थकर्त्ता के पास लिखे।

३। **नरदेहनिर्णय** नामक एक अपूर्व ग्रन्थ जिसमें अनेक भौतिक और शारीरिक तत्त्वों का निरूपण तथा और भी अनेक इंगरेज़ी और संस्कृत ग्रन्थों से संगृहीत मनोरंजन इतिहास लिखे गये हैं प्राय: जिनकी चर्चा बहुत कम प्रचलित ग्रन्थों में पाई जाती है विशेष करके इस पुस्तक का अन्त भाग हिन्दुस्तान में जो (सिपाहवार) अर्थात बलवा हुआ था उसके वर्णन में समाप्त हुआ है मैं ने बड़े परिश्रम से इस अपूर्व ग्रन्थ को रचा है। बहुत अच्छे कागज़ पर छप कर तैयार है उक्त ग्रन्थ का दाम कुल ।)॥ साढ़े चारआना है जिस को इस के देखने की इच्छा हो ग्रन्थकार के पास लिखे।

ऊपर लिखी हुई पुस्तक ५०) रु० से अधिक लेनेवाले को १५) रु० सैकड़े के हिसाब से कमिशन दिया जायगा।

बांकीपूर
१८—११—८४

जयनारायण मिश्र।
अध्यापक:
पटना नार्मल स्कूल

सूचीपत्र



भूमिका ।

इस अपूर्व ग्रन्थ " नीतिपथ " की भूमिका लिखने में मुझ को परम उत्साह और हर्ष होता है विख्याति विज्ञ आनरेबुल् श्रीयुत महाशय प्रभुवर श्री ५ बाबू भूदेव मुखोपाध्याय C. I. E. को यह परम अभिलाषा थी कि इस बिहार मण्डल में एक ऐसा उपयोगी और मनोरञ्जन पुस्तक बनाया जाय कि यहां के स्कूलों के विद्यार्थी भी नीति शास्त्र के रस का स्वाद पावें इस हेतु उक्त महाशय ने मुझे यह आज्ञा दी कि बङ्गभाषा में लिखित श्रीपण्डित रामगती न्यायरत्न प्रणीत " नीतिपथ ग्रन्थ " का अनुवाद देशी भाषा में बहुत शुद्धता के साथ किया जाय कि जिसको सब लोग पसन्द करें इस लिए इसके प्रथमावतार में बड़ी छान बीन करनी पड़ी पौर अब श्री ११ सर्वशक्तिमान जगदीश की कृपा और श्रीमान इन्सपेक्टर साहिब बहादुर सूबेबिहार की सहायता से यह अनमोल ग्रन्थ छप कर तैयार हुआ है। जिन महाशयों ने इस अद्भुत ग्रन्थ को आद्योपान्त अवलोकन किया है उनमें से सब से प्रथम श्रीयुत विज्ञवर महाशय बाबू काशी कुमार मित्र बी० ए० हेड मास्टर पटना नार्मल स्कूल को धन्यवाद देना अति उचित है तदनन्तर लेट स्कालर बनारस कालिज पं० रामेश्वर दत्त मिश्र और मुं० देवी दयाल को और श्री मान मौलवी अमीरअली साहिब परसियन एण्ड हिन्दुस्तानी टीचर पटना नार्मल स्कूल को कि जिस ने इस पुस्तक को प्रशंसा में

अपनी उत्कट अनुमति प्रगट की है कि जो प्रशंसनीय है और अब इसका ऐसा होना श्रीयुत विद्वज्जनशार्दूल तेजस्वी यशस्वी श्री ए ए डबल्यू क्राफ् साहिब बहादुर एम० ए० डाइरेक्टर आफ पाबलिक इन्सट्रक्शन बङ्गाल और श्री मान आनरेबुल् इन्सपेक्टर साहिब बहादर सूबेबिहार की इच्छा पर आश्रित है।

पटना नार्मल स्कूल
१० फेब्रुअरी १८८३ } जयनारायण मिश्र

नीतिपथ।

विद्या।

दोहा।

भूपति पण्डितदुहुंन की समता कबहूं नांहि।
होतमान बुधठौरसब नृपनिजदेशहि मांहि१॥

कालिदास।

किसी समय कालिदास घर में बैठ कर अपने पुत्र को पढ़ा रहा था उसी समय महाराज विक्रमादित्य वहां आये। कालिदास ने राजा को देखकर लड़के का पढ़ाना छोड़ दिया पर जब राजा ने आज्ञा दी तब फिर पढ़ाना शुरु किया। अपने पुत्र को यही शिक्षा देता था कि "राजा अपने देशही में पुजाता है और विद्वान का मान सब स्थानों में होता है"। महाराज इस तरह की शिक्षा को सुनकर अपने मन में विचार करने लगे कि कालिदास ऐसा अभिमानी पण्डित है कि मेरे ही सामने पण्डितों की बड़ाई और प्रशंसा करता है और मुझे नीचा देखलाता है। मैं पण्डितों का आदर मान करता हूं और जो मेरे यहां इनका सनमान न हो तो और कहां हो सकता है। ऐसा सोचते हुए बड़े खेद के साथ अपने राज भवन को सिधारे। राजा ने कालिदास को जो सम्पति दी थी उस को छीन लेने के लिए मन्त्री को आज्ञा दी। मन्त्री ने वैसाही किया जैसा महाराज ने कहा। कालिदास की जीविका जब छिन गई तब वह दुखी होकर अपने लड़के वालों के साथ अनेक

देशों में फिरता हुआ अन्त में करनाटक देश में पहुंचा। करनाटक देश का राजा भी बड़ा पण्डित और गुण ग्राहक था उस के पास जाकर कालिदास ने अपनी कविता शक्ति प्रगट की। राजाने उसपर अति प्रसन्न होकर उस को बहुत सा धन और जागीर देकर अपने राज में बसाया कालिदास राजा से सनमान पाके उस देस में रह कर प्रतिदिन राजसभा में जाने लगा वहां राजा के सिंहासन के पास अति प्रतिष्ठित ऊंचे आसन पर बैठ कर सब राज काजों में सलाह देता हुआ और अनेक तरह की कविताओं से सभासदों के मन की कली खिलाता हुआ सुख चैन से रहने लगा। जब से कालिदास को बिक्रम ने त्याग किया तभी से वह शोकसागर में डूबे रहते थे। उन की नवरतन सभा में कालिदासही एक अनमोल रतन था। उसके न रहने से सभाही की शोभा जाती रही। इसके सिवा जब राजा को राज काज के कामों से छुट्टी होती थी तब केवल कालिदास ही की अनेक अद्भुत कविताओं को सुनकर महाराज प्रफुल्लित रहते थे, सो ऐसे मनोरंजक के बिना महाराज का मन सब वस्तुओं से उदास रहने लगा। यहां तक कि राजा का जी सब कामों से टूट गया। फिर राजा ने कालिदास का पता लगाने के लिये अनेक देशों में दूतों को भेजा। परन्तु जब कहीं उसका ठीक पता न लगा तब राजा घबराकर आपही अन्त में भेष बदल कर उसको ढूढ़ने निकला। अनेक देशों में फिरता हुआ जब करनाटक देश में पहुंचा उस समय उसके पास राहखर्च के लिये एकहीरा

जड़ी हुई अंगूठी के सिवा और कुछ न था। उस अंगूठी को बेचने के लिये वह किसी जौहरी की दूकान पर गया जौहरी ने एक कंगले के हाथ में अनमोल जड़ाऊ अगूठीको देखकर यहां तक अचरज में आया कि उसको कोतवाल के पास लेगया। कोतवाल उस की ताड़ना करता हुआ राज सभा में लेगया वह चारोंतरफ देखता भालता जो आगे बढ़ा तो अनेक रत्नों से भूषित अतिउच्च प्रतिष्ठित आसन पर बैठे हुए कालिदास को देखकर पहिचाना। और पुकार कर कहा "कालिदास मैंने जैसा किया वैसाही फल पाया यह बचन सत्य है राजा अपने देशही में पुजाता है और विद्वान का मान सब स्थानों में होता है" इसके बाद करनाटक देश के राजा ने महाराज विक्रमादित्य का बड़े प्रेम से सत्कार किया और कालिदास को राजा के साथ जाने दिया॥

हलायुध

हलायुध राजा लक्ष्मणसेन का एक मंत्री था। वह अत्यन्त, बुद्धिमान विद्वान और बड़ा कवि था। जिसके रचे हुए कई एक संस्कृत ग्रन्थ आज तक देखने में आते हैं। हलायुध अपनी विद्या और चतुराई से राज के कामों में मंत्री हुआ।

थोड़े ही दिनों में हलायुध पर इतना विश्वास बढ़ा कि राजा उस के बिना आप किसी बिषय में हाथ नहीं लगाता था। हलायुध की इतनी बड़ी प्रतिष्ठा को देख कर राजा के सब सभासद उससे डाह करने लगे और एकमत होकर उसको दरबार से निकलवा देना चाहा। हर एक सभा

सद समय पाकर राजा का कान यह कहकर भरने लगे कि "महाराज आप का यह मंत्री अपनी विद्या और चतुराई का बड़ा घमण्ड रखता है और सदा इसी चेष्टा में रहता है कि जिससे आप का मन हम लोगों की तरफ से फिर जाय। इसलिये ऐसे आदमी को सभा में नहीं आने देना चाहिये। राजा उनके कहने पर पहिले हलायुध से साथ कुछ अहंकार लीहुई बात करने लगा और जिस काम को हलायुध अच्छा भी करता उससे वह प्रसन्न नहीं होता था और जब वह कोई काम किया चाहता यद्यपि साफ तो राजा नहीं कहता परन्तु मुख के भाव से उस को प्रगट हो जाता था कि राजा अब मेरे हाथ में कुछ अधिकार रक्खा नहीं चाहता राजा का यह तौर देखकर हलायुध के मन में सन्देह हुआ। हलायुध भी उस के मन का अभिप्राय जानकर चौकसी से सब कामों को करनेलगा। वह भी बड़ा प्रतापी और चतुर था अपमान के डर से वह राजसभा में नहीं रहना चाहता था परन्तु एका एक जल्दी करना उचित नहीं समझा। एक वार राज के किसी विषय के विचार में हलायुध की राय और सब सभासदों की राय से न मिली सभासद लोग पहिले ही से इस बात को जानते थे कि महाराज आज कल इससे अप्रसन्न हैं इस लिये सब एक मत होकर राजा के पास गये और बातें बनाकर कहा कि महाराज हलायुध बड़ी अनुचित बात करता है। यद्यपि राजा अज्ञानी नहीं था परन्तु जी फटजाने के कारण सभों से कहा कि हां अपनी तजवीज

से एक अपराधी मनुष्य को राजदण्ड से बचाया चाहता है। हलायुध एकबार राजा के किसी कुविचार और अन्याय को देख कर बारंबार निडर हो कर हठ करने लगा कि महीनाथ मैं आप को इस बिचार पत्र पर दस्तखत करने की सलाह नहीं देता। आप के इसपर दस्तखत करने से बड़ा अन्याय और कुबिचार होगा परन्तु राजा ने उसकी एक भी न सुनी और दस्तखत करने पर तैयार हुआ हलायुध ने फिर भी हाथ जोड़ कर राजा को मना किया कई बार उसके ऐसा कहने से राजा क्रोध में आकर बोला, हलायुध मैं तेरी बिद्या और चतुराई का आदर करता हूं परन्तु तू क्यों कि घमण्ड में आकर मेरी मति के बिरुद्ध हठ करता है। राजा की मति और आज्ञा से किसी को भी आज्ञा और मति बढ़ कर नहीं हो सकती। राजा लोग बिद्वानों को सभा में स्थान और धन और मान देकर प्रतिष्ठित करते हैं इस से पण्डितों का आदर और जगहों में भी होता है। राजाओं के गुण के बर्णन करने वालों का और लोगों से भी परिचय होजाता है। राम का गुन न गाते तो बाल्मीकि मुनि को कौन जानता? कौरव और पाण्डव के गुण को जो महामुनि व्यास जी न बर्णन किये होते तो उनकी ऐसी कीर्ति संसार में कैसे फैलती। महाराज विक्रमादित्य की नवरतन सभा में जो कालिदास न होते तो उन को कौन जानता? इस लिये राजा और पण्डितों में बड़ा अन्तर है राजा की आज्ञा के सामने पण्डितों की मति

किसी तरह से प्रबल नहीं हो सकती अतएव मैं आज्ञा देता हूं कि अवश्य इस अपराधी को धन दण्ड होना चाहिये अब तुम इस में दखल मत दो ऐसा कह कर उस मुकद्दमे को तय किया। हलायुध इस से अति दुखी हुआ और अपना बड़ा अपमान समझा परन्तु उस समय कुछ भी न बोला सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। पहले यह कह आये हैं कि राजा अज्ञानी न था जब राजा सभा से उठ कर महल में गया उस समय परम पण्डित हलायुध ने जो कुछ कहा था उस को सोच कर पछताने लगा कि आज के मुकद्दमे में मैंने हलायुध को कई बार दुःख दिया हलायुध ने विचार के समय जितनी बातें सुझायी थीं उन पर कुछ भी मैंने ध्यान न दिया इस समय सोचने से तो उस का कारण कुछ और ही मालूम होता है कि आज के विचार में अनुचित विचार किया गया। हलायुध का विचार उचित था ऐसा सोच कर अपने को बड़ा धिक्कारा और हलायुध की तरफ फिर पहिले सी उत्तम बुद्धि हुई दूसरे दिन राजा अपने समय से सभा में बैठ कर हलायुध के साथ उस न्याय किये हुये आदमी को फिर बुला कर हलायुध की तरफ देख कर बोला हलायुध कल मैंने तुम्हारी मति के विरुद्ध इस निरपराधी को दण्ड दिया था परन्तु अब मुझको मालूम होता है कि यह मनुष्य निरपराधी है अब इस में क्या करना चाहिये। राजा की यह बात सुन कर हलायुध ने महाऋषि जाज्ञ वल्क्य संहिता का एक वचन निकाल कर दिखला

दिया। राजा उस वचन के अनुसार लिया हुआ धन फिर उस निरपराधी को देकर और उसका तीस गुना रुपया वरुन देवता के प्रीत्यर्थ ब्राह्मणों को देकर आप सुखी हुआ। उसी समय हलायुध ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज आप सा न्याई बुद्धिमान विद्वान और धर्मी राजा इस धरती पर बहुत कम हैं कल्की भूली हुई बात को आज आपने फिर चेता और उस के लिये प्रायश्चित्त किया इस लिये आपसा सरल प्रकृति का मनुष्य दूसरा कौन होगा यह आपकी उत्तम बुद्धि का कारन है। मेरा अपराध क्षमा कीजिये अब मैं कुछ कहा चाहता हूं "कल आपने कहाथा कि राजाकी आज्ञा के सामने पण्डितों का विचार किसी तरह से बढ़ कर नहीं हो सकता यह बात क्या सच है राजा का हुक्म केवल उसके राज्य में प्रबल हो सकता है परन्तु पण्डितों की व्यवस्था सब स्थानों में और सब कालों में मानी जाती है। जाग्यवल्क्य मुनि के बचन के अनुसार जो आज आपने प्रायश्चित्त किया वह यहां का नहीं था केवल एक महापण्डित के सिवा वह यहां का राजाभी न था कितने दिन मरे उसको हो गए परन्तु आज तक उस महापण्डित का वाक्य सब देशों में राजा से लेकर प्रजा तक सभी मानते हैं आप कहते हैं कि पण्डित लोग राजाओंकी सभा में गुणों को प्रशंसा करके और लोगों से परिचय कर लेते हैं यह एक भी सच नहीं है। रघुकुलभूषण श्री १ रामचन्द्र और युधिष्ठिर आदि बड़े २ महाराज अपने समय में उद्दण्ड प्रतापी हुये परन्तु उनकीभी हुई कोई कीर्ति नहीं देख पड़ता और इसी तरह

से जो महा मुनि बालमिक और व्यास मुनि आदि कुछ वर्णन न कये होते तो उनको कौन जानता। इस लिये आप खूब विचार के देखिये कि ग्रंथ कर्ता पण्डित और राजा इन दोनों में कौन अधिक आदर के योग्य है ? राजा इस बात को सुनकर थोड़ी देर तक चुप रहा, फिर बोला हलायुध आप सा सुविचक्षण पण्डित मैंने नहीं देखा आपने जैसे निडर होकर मुझ को ज्ञानोपदेश किया है ऐसा और कभी किसी ने नहीं किया था यह बात आज मुझे मालूम हुई क "हला युधः पात्रमपात्र मन्यत" अर्थात तुम जैसे पात्र हो वैसा कोई नहीं ।

[सत्पुत्र ।]

सुत गुणवन्त हो एकही, मत हो सौ गुणहीन ।
एक चन्द्र की जोति सम, तारा सहस न कौन ॥
सोवै निर्भय सिंहिनी, एक सुपुत्र को पाय ।
दस कुपुत्र होते हुए, गदही लादी जाय ॥

दयाराम ॥

किसी गांव में सोमदत्त नाम एक ब्राह्मण रहता था। उस के ससुर को कोई पुत्र न था पर दो कन्या थी; उन में से बड़ी सोमदत्त से व्याही थी और छोटी किसी दूसरे से। सोमदत्त ऐसा सुखी था कि उस को किसी वस्तु की कमी न थी; परन्तु उस का साढ़ू बड़ा दरिद्री था इस कारण उसके ससुर ने मरने के समय अपना माल और असबाब उसी को दे दिया। उस समय सोमदत्त ने इस बात को सुन

कर कुछ भी क्रोध न किया, परन्तु इस ताक में था कि देखें किस तरह से वह सब धन दौलत मकान के बाहर लेजाता है। उस से जब कुछ न हो सका तो अन्त में अपना सब कोप उसने अपनी स्त्री पर प्रगट किया। यद्यपि उस की स्त्री का कुछ अपराध न था परन्तु सोमदत्त क्रोध में आकर कुछभी न सोचा और उस बेचारी स्त्री को उस के छोटे बालक समेत अपने घर से निकाल दिया। और अपना दूसरा ब्याह कर लिया। पहिली स्त्री सब तरह से अनाथ होकर अपने लड़के समेत कुछ दिन तक तो वह अपने पिता के घर में रही परन्तु उसके पिता का इतना धन था कि वह और उस की बहिन दोनों का दिन सुख से कट जाता। इस लिये फिर उस को अन्न वस्त्र का दुःख उठाना पड़ा अन्त में उसने यह विचारा कि चाहे दुःख वा सुख हो परन्तु अपने पति के घर में रहना मेरे लिये सब तरह से अच्छा है क्योंकि पति के घर में रहने से न कुछ दुर्यश है और न किसी तरह का अधर्म है। सिवाय इस के यह मेरा पुत्र बड़ा हो चला यहां इस का पढ़ना लिखना किसी तरह से नहीं हो सकता वहां रहने से यह भी एक बड़ा लाभ है। अभाग्य वस मेरे स्वामी का जी मुझसे फट गया है तो क्या मेरे पुत्र से भी फट गया होगा यह किसी तरह से सम्भव नहीं। यह सब सोच विचार कर एक दासी को साथ ले वह अपने पति के घर गई। जहां सोमदत्त रहता था उस के पड़ोस में शिष्ट लोग बसते थे इस लिये वह उस को अपने घरसे बाहर निकाल नहीं सकता था। एक अलग

जगह में जहां कोई नहीं रहता था बड़े अनादर के साथ सब तरह के दुःख को भोगती हुई किसी तरह से अपना दिन काटने लगी। यद्यपि सोमदत्त के घर में बहुत से और लोग भी थे परन्तु सब घर का काम दयाराम जी की मा को करना पड़ता था। कभी तो वह बेचारी अपनी सौत के पुत्र कन्या का लालन पालन करती और कभी उन के मल मूत्र के कपड़ों को साफ करती थी। दूसरे की उतारी फटी मैली धोती पहिरती थी। पहिले के दो एक गहने जो उस के पास रह गये थे वह लड़के के पढ़ाने के खर्च में बिक गये इस पर भी उस के जी को कल न थी किसी काम में कुछ भी चूक जाने से उस को सौत की कड़ी बात सहनी पड़ती थी॥

कभी २ सोमदत्त भी उस बेचारी को मारता था और यह कहता कि "जैसा देवता वैसी पूजा"। उस के परिवार में दयाराम जी को मा सबों की बात सहती थी घर का जो कुछ काम बिगड़ता था दोष उसी के सिर पर लगाया जाता था। इससे उस बेचारी का उपहास और अपमान तो होता ही था बल्कि मार भी खाया करती सब तरह का उपद्रव तो सहती थी पर जब कोई किसी तरह का अपमान उसके पुत्र का करता तो उसका कलेजा फटता था। प्रातः काल सोमदत्त के लड़के अनेक तरह के मेवे लेकर खाते थे और वह बेचारा दयाराम उन की तरफ देख देखकर तरसता था परन्तु उसको कोई भी न पूछता। उस समय वह अपनी मा के पास मन मलीन

किये हुये रहता था। और उस की मा की आंखों में आंसू भर आता था। उस वक्त सोमदत्त का बूढ़ा बाप भी जीता था वही कभी २ दो एक पैसे दया राम को और एक दो कपड़े उसकी मा को देता परन्तु सोमदत्त अपनी छोटी स्त्री के डर से कुछ भी नहीं देता था। उसके दूसरे लड़के तो पाठ शाला में पढ़ने जाते थे परन्तु दयाराम के पढ़ने की कोई सवील न थी। पर उसके दादा के कहने से किसी दयावन्त ने उस के पढ़ाने का खर्च उठा लिया था। उस की कृपा से वह पाठशाला में नाम लिखा कर बराबर पढ़ने लगा जैसा वह योग्य और शान्त था वैसा ही वह मेहनती और बुद्धिमान भी था। सोहन, मोहन, काशी, लल्लू, राम, और श्याम, सोमदत्त की दूसरी स्त्री से छ लड़के थे। म बाप का उन पर बड़ा सनेह था, प्यार के कारण वे सब पढ़ने के लिये पाठशाला नियम से नहीं जाते थे, और गांव के बुरे लड़कों के साथ खेल कूद मार पीट में दिन बिताते थे मानों उनका यही काम था। साथियों के घरमें शरीफा अनार आदि जो बहुत से फल के पेड़ लगे थे उन्ही वृचों के फल उनके अहार थे। यद्यपि सोमदत्त के आस पास के रहने वालों ने कई बार लड़कों की चाल चलन के बारे में उससे कहा परन्तु अपने लड़कों को डांटने के बदले वह उलटा कहने वालों ही से झगड़ता था एक दिन देख पड़ा कि उन्ही कहने वालों ही के घर के कई लता वृक्ष टूटे पड़े हैं और बहुतसी वस्तुओं की चोरी भी हुई है। तब सब अपने मन में सोचने लगे कि

यह सब सोमदत्त के लड़कों के सिवाय किसी दूसरे का काम नहीं है। परन्तु उपद्रव होने के डर से वे कुछ नहीं बोलते थे! दयाराम में यह सब बात न थी। जैसा नाम था वैसा ही वह नेक था। सदा वह नियम के साथ पाठशाला जाया करता और अपने पाठ को मन लगा कर अभ्यास करता था। उसकी उत्तम चाल चलन को देख कर उसका शिक्षक अति प्रसन्न रहता था और उसको गरीब समझकर अपनी जेब से उसके लिखने पढ़ने की ज़रूरी चीजों के लिये मदद देता था। दयाराम अपने पड़ोसियों के घर के बीच होकर जाया करता था परन्तु किसी की वस्तु को नहीं छूता था और उनके लड़के लड़कियों का आदर मान करता था। इस से सब लोग उस से खुश रहते थे; कोई दयाराम को कुछ खाने पीने की चीज़ बिन दिये अपने बाल बच्चों को भी नहीं देता था। इसी तरह से उस के कई एक बरस कट गये इसी अरसे में उसने हिन्दी और अंगरेज़ी दोनों कुछ २ सीख ली। दयाराम को और कुछ भारी कष्ट न था केवल उसको अपनी मा का जो रात दिन का दासी पना था और जो वह थोड़े काम के बिगड़ जाने से भी लोगों की बात सुनती थी और मार खाती थी, उसको देख कर वह आंखों में आंसू भर लाता था एक दिन दयाराम जब पाठशाला से घर लौटा तो देखता क्या है कि मा रसोई के घर के एक कोने में ज़मीन पर पड़ी है और आंखों से आंसू बहा रही है। वह उसके पास जा कर पूछा पर उसने कुछ न कहा एक पड़ोसी के घर

जाकर यह सुना कि आज तुम्हारी मा को थोड़े अपराध के लिये मोहन, सोहन, और सोमदत्त की छोटी स्त्री इन तीनोंने मिलकर झाड़ू मारा है। सोमदत्त के सामने उसने मार खाई पर मना करने के बदले वह कड़ी बातों से उस का और भी अपमान करता था। दयाराम की मा ने उस समय तक पानी भी न पिया था और किसी ने इस की चर्चा भी न की। उस समय दयाराम की उमर दस या बारह बरस की थी लेकिन बातों के समझने की अच्छी बुद्धि हो गई थी। इस लिये वह अपनी मा के दुःख को सुनकर उदास हुआ और आंखों में आंसू भर लाया। निदान, अपनी मा के पास कुछ खाने की चीज भेजने के लिये एक पड़ोसिन से निहोरा करने लगा। वह उसकी बिनती पर कुछ खाने की चीज़ लेकर तुरत उसके पास गई दयाराम उस दिन वहीं रहा यद्यपि पड़ोसिन ने रात को उसे भी कुछ खाने को दिया पर वह सोच के मारे कुछ भी न खा सका। और उसकी मा बे बाछे की गाय की नाईं हुड़-कती हुई चारों ओर उसको ढूंढ़ने लगी। उस का बड़ा दादा कई जगह ढूंढ़ने को गया पर उसका पता न लगने पर वह हारकर लौट आया। कोई यह कहता कि गांव के पास के जंगल के बाघ ने उसको मार डाला मैं ने अपनी आंखों देखा है और कोई यह कहता था कि अपने पिता के अपमान के कारण वह गंगा में डूबकर मर गया उस की लाश पड़ी हुई थी जिसको मांझियों ने देखा है। और कोई कहता था कि दयाराम अपनी मा के दुस्सह दुःख

को न देख सका इसलिये सिर मुड़ा कर किसी दूर देश में निकल गया । कुछ दिन तक लोगों को खुशी हुई परंतु उन्हे पीछे पछताना पड़ा कुछ दिन बाद सोमदत्त के बाप का भी परलोक हुआ। उसने अपने पिता को उसकी ज़िन्दगी भर किसी दिन खुश होकर भोजन न दिया परन्तु लोक लज्जा के भय से उस के मरने पर उस को श्राद्ध करना पड़ा । फिर अवसर मिलने पर दयाराम की मा को सब तरह का दुःख देकर उसने घर से निकाल दिया। वह एक पड़ोसी के घर रसोई बनाने के काम में होकर रहने लगी। सोमदत्त के घर की यह दशा हुई कि उस के बड़े लड़के सोहन के सिवाय और सब शराब और गांजे की नशे में पागल हो गये। इस लिये वे पागलखाने में भेजे गये। मझला मोहन नाम एक लड़का किसी डोम की लड़की की सनेह में डोम हो गया। राम और श्याम ज्वर तापतिल्ली कच्छप रोगों में अति दुःख भोगकर मर गये सोहन और मोहन जैसे शराबी थे वैसे लम्पट भी थे। इन्हीं दुराचरणों से सोमदत्त का सब धन चोरा चोराकर उन्होंने बरबाद कर डाला। जब अपने घर में कुछ न पाया तब वे पड़ोसियों के घर में चोरी करने लगे। इस कारण थोड़े दिनमें कैद हुये। लड़कों की दुर्दशा की सोच में सोमदत्त की स्त्री को मिरगी आने लगी। दवा के न मिलने से धीरे धीरे रोग बढ़ने लगा। पिता के श्राद्ध का खर्च सांसारिक व्यवहार और पुत्रों के दुराचरण के कारण वह बड़े जंजाल में पड़ा उस को एक छोटी जीविका थी वह भी अविश्वास होने के

कारण जाती रही। इन सब कारणों से सोमदत्त बड़े दुःख में पड़ा महाजनों ने पहिलेही उस के घर आदि को बेचवा लिया था उस से भी जब ऋण न अदा हुआ तब महाजनों ने नालिश की वह उस समय क्या कर सकता था। महाजनों ने संदेह किया कि इसके पास अभी धन है इसलिये उसको क़ैद कराना चाहा। इस के बाद एक दिन सोमदत्त को अदालत में हाज़िर किया। वहां ऋण निश्चय होने पर महाजनों की इच्छानुसार प्यादे जब उस को जेलख़ाने में ले जाने को मुस्तैद हुये। ठीक उसी समय एक युवा पुरुष दौड़ा हुआ आया और उसने एक तोड़ा रुपया हाकिम के सामने रख कर कहा कि यह रुपया महाजनों को देकर आप शीघ्र सोमदत्त को छोड़ दीजिये। हाकिम ने कुछ जवाब न दिया थोड़ी देर चुप होकर सोचने लगा कि यह कौन आदमी है और कहां से आया है? सोमदत्त के छोड़ाने के लिये कौन इतना रुपया दे सकता है? इस बात के न जानने से एक बार सब अचंभे में आ गये। सोमदत्त छन भर उस युवा के मुख को देख कर ज़ोर से बोला "बेटा दयाराम" वह भी अपने पिता के गले में हाथ देकर रोने लगा तब सब लोगों पर बात साफ खुल गई कुछ काल तक दोनों ने विलाप किया तब सब उन्हें घर ले गये। राह में दयाराम अपने पिता से सब वृतान्त कहने लगा कि मेरे पड़ोसी का एक सम्बन्धी लखनऊ में रहता था मैं उस के पास गया उस दयावन्त ने थोड़े दिनों तक अपने पास मुझे रक्खा फिर वह बड़े परिश्रम से अदालत में एक छोटी नौकरी मुझेदिलवा दी। मैं

जी लगा कर उस काम को करने लगा। इस से वहां का अफसर बहुत खुश होकर धीरे धीरे मेरा दर्जा बढ़ाने लगा। अब मैं चार सौ रुपये की तनखाह पाता हूं। आप लोगों की दुर्दशा का हाल सुन कर मैं भी दुखी रहता था। इस कई बरस की चाकरी में मैंने थोड़ा रुपया जमा किया है और तीन महीने की छुट्टी ले कर घर आया हूं। ज्यों मेरी नाव घाट किनारे लगी त्यों मैं आप का यह हाल सुन कर बराबर अदालत में चला आया अभी घर तक न गया हूं फिर उसने घर आकर परदेश में जो कुछ किया था थोड़े में कह सुनाया। फिर अपने पिता की सलाह लेकर अपनी मा को बुलाया। पिता का ऋण भर दिया और जो मकान बिक गया था उस को फिर खरीद लिया। और दवा करके अपनी सौतेली मा की मिरगी और भाइयों का उन्माद रोग छोड़ाया। घर की गई हुई चीजों को फिर इकट्ठा किया। बड़े उपाय से बंधे हुये दो भाइयों को बंदीखाने से छोड़ाया। और शास्त्र की आज्ञानुसार प्रायश्चित्त कराया। सोमदत्त ने फिर दया राम का विवाह किया और अपनी बड़ी स्त्री को घर का सब अधिकार देकर और आप भी उसकी आज्ञा में रह कर सुख चैन में अपना समय बिताया।

मनोयोग।

सोरठा।

कबहुं न कीजिय मित्त, बिना ध्यानयुत काजको
लागै जामें चित्त, सुजन सुमति सोइ कीजिये ॥

अर्जुन।

कुरु वंशियों के गुरु द्रोणाचार्य्य ने अपने शिष्यों की अस्त्र शिक्षा की परीक्षा लेना चाहा। इसलिये एक दिन ठहरा कर सबों को इकट्ठा किया और एक बड़े ऊंचे वृक्ष की डाल पर एक कबूतर बनाकर रख दिया और लड़कों से कहा कि तुम धनुष पर बाण चढ़ाये हुये तैयार रहो जब मैं जिस को कहूं वही एक तीर ऐसी ताक कर मारे कि केवल उस पक्षी की आंख में लगे और कहीं नहीं। यह कहकर पहले युधिष्ठिर से पूछा कि तुम इस पक्षी की आंख पर निशाना लगा सकते हो? पर जब तक मैं न कहूं तब तक तुम तीर मत चलाइयो। युधिष्ठिर ने जब धनुष पर बाण चढ़ाया तब द्रोण ने पूछा कि बेटा कहो क्या देखते हो? उस पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि आपको, भाइयों को, वृक्ष कबूतर आदि सब को देखता हूं। यह सुन कर द्रोनाचार्य्य ने नाराज होकर युधिष्ठिर को वहां से हटा दिया फिर दुश्शासन, भीम, नकुल आदि शिष्यों को अलग २ बुला कर वही बात पूछी पर सबों ने वैसाही कहा जैसा युधिष्ठिर ने कहा था। तब द्रोणाचार्य्य ने अर्जुन को अपने पास बुला कर वही बात पूछी अर्जुन ने उत्तर दिया महाराज मैं केवल पक्षी की आंखही देखता हूं इस के सिवा मुझ को कुछ और नहीं देख पड़ता है, इस बात को सुन कर गुरु ने अति प्रसन्न हो बाण चलाने की आज्ञा दी। आज्ञा पातेही अर्जुन ने ऐसा निशाना ताक कर मारा कि उस पक्षी की आंख धरती पर सबों के सामने गिर

पड़ी। तब द्रोणाचार्य्य सबों से कहने लगे कि देखो इसी को निशाना लगाना कहते हैं जो काम करना हो मनुष्य को मन लगा कर करना चाहिये क्योंकि बिना ध्यान का काम किसी तरह से अच्छा नहीं होता, अर्जुन ने इस तरह से पक्षी की आंख में निशाना लगाया कि उस को आंख के सिवा और कुछ न देखा इसलिये ऐसी सुगमता से लक्ष भेद किया और तुम लोगों का मन चंचल था। अतएव अर्जुन की तरह न कर सके और यदि मन लक्ष की तरफ लगा होता तो उस समय कभी कोई दूसरी वस्तु न देख पड़ती। अर्जुन के लक्ष का उदाहरण समझ कर सब लोगों को मन लगा कर अपना २ काम करना चाहिये।

दोहा।

उद्योगी पुरुष।

दैव दैव करि मूर्ख जन, कछु न करैं व्यवसाय।
क्योंकर कर डोले बिना, कवर पेट में जाय॥
श्रम कीन्हें धन होत है, धनहीं सुख को मूल।
व्यवसाई अरु चतुर नर, उद्यम को मत भूल॥
उद्यम किये अनेक विधि, सधै न जबहूं काम।
दैव प्रबल तब कहत हैं, जे पण्डित मति धाम॥

॥ एक लव्य ॥

जिस समय द्रोणाचार्य्य कुरुवंशियों को अस्त्र शिक्षा देते थे उस समय उन का यश सब देशों में फैल गया था।

उन का नाम सुन कर एक निषाद जिस का नाम एकलव्य था। अस्त्र विद्या सीखने की इच्छा से द्रोणाचार्य्य के पास आया। परन्तु नीच जाति समझ कर द्रोणाचार्य्य ने उस को नहीं सिखलाया यद्यपि उस ने बहुत बिनती की और पाओं पर भी गिरा परन्तु द्रोणके जीमें कुछ भी दया न आई इस कारण एकलव्य अपने मन में बड़ा दुखी हुआ पर जहां सब कुरुबंसी लोग अस्त्र विद्या सीखते थे वहीं वह दो तीन दिन तक रहा। द्रोणाचार्य्य की अस्त्र शिक्षा को देख कर अपने मन में उस ने निश्चय किया कि अस्त्र विद्या में इन से बढ़कर इस धरती पर और कोई नहीं है। इस लिये इन के सिवा और किसी को मैं गुरु न करूंगा। इन्हीं की शिक्षा जिस प्रकार से मिलेगी मैं लूंगा जब द्रोण ने देखा कि यह अभी नहीं गया तब उस पर खफ़ा होकर वहां से उस को निकलवा दिया निदान एकलव्य निरास हो कर चला गया। कुछ दिन बाद द्रोणाचार्य्य अपने शिष्यों के साथ शिकार खेलने के लिये किसी बन में गये एक कुत्ता जो उन सभों का संग छोड़ कर कहीं चला गया था थोड़ी देर बाद जब वह लौटा तब तो सभोंने क्या देखा कि उस के मुंह पर ऐसा घाव हो गया है कि मानों किसी ने बाणों से छेदा है और उस से वह ऐसा दुखी हो रहाथा कि भूंक नहीं सक्ता था यह देख कर सब बड़े अचरज में आये कि कौरव और पाण्डवों के बीच में कोई ऐसा बाण चलाने वाला नहीं है तो और दूसरा कौन हो सकता है। इस लिये यह जानना चाहा कि यह किसका काम है। निदान

बन में आगे बढ़कर उस ने क्या देखा कि एक लंबा काला आदमी बड़ी डाढ़ी मोछ बढ़ाये बलकल पहिने तपस्वी के भेष में धनुष बाण लिये खड़ा है। उस से सबों ने कुत्ते के मुंह के घाव का हाल पूछा उसने कहा कि यह मेरे पास आकर मेरी अस्त्र शिक्षा में अपने शब्दोंसे विघ्न करता था इस कारण मैंने बाणों से इसका मुंह बंद कर दिया इस बात को सुन कर द्रोणाचार्य्य ने कहा कि भाई तुम्हारा बाण चलाना अद्भुत है। मेरे शिष्यों में सब से बढ़ कर अर्जुन है वह भी ऐसा बाण नहीं चलासकता और दूसरे को कौन कहे इस लिये मेरा जी चाहता है कि तुम को अपने गले लगा लूं। अब मैं यह पूछता हूं कि तुम कौन हो? और किस से ऐसी उत्तम अस्त्र विद्या सीखी है। इस बात को सुन कर उस जटिल धनुर्धारी ने हाथों को जोड़ कर बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि हे गुरुदेव आप के सिवा ऐसा अस्त्र वेत्ता शिक्षक दूसरा कौन है।

मैं आप ही का एकलव्य नाम शिष्य हूं। जब से आप ने मुझ अभागे को अपने स्थान से निकलवा दिया तब से इस जंगल में मा, बाप और भाई, बन्धु, सब को छोड़ कर एक कुटी में आप की मूर्ति को स्थापन कर के तीन बरससे बाण विद्या का अभ्यास करताहूं। मैंने चलने के समय प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं आप के शिष्यों की अपेक्षा अस्त्र विद्या में अधिक निपुण हो कर आप के मुखारविन्द से प्रशंसित होऊंगा तो प्राण रक्खूंगा नहीं तो आत्मघात करूंगा। अब मेरा मनोरथ आप की कृपा से सुफल हुआ। आप ने

इस प्रश्न पर जो स्नेह प्रगट किया इस से बढ़कर और क्या होगा यह सुन कर सब प्रश्नकर्त्ता का परिश्रम सुफल माने की इच्छा। गुरुभक्ति और उस की निश्चलता को देख कर अचंभे में आगये और उस की प्रशंसा करने लगे।

। गदाधर शिरोमणि ।

अगले समय में संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थी सबके साथ नहीं पढ़ते थे। जिसके घराने में पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला परंपरा से चला आया है उसको जैसा सहज में विद्यार्थी मिल सकते थे औरों को नहीं। गदाधर शिरोमणि बंगाले में ऐसा प्रसिद्ध नैयायिक हुआ कि उस की कीर्ति सब देशों में फैल गई। यहां तक कि उसने न्यायशास्त्र की कई एक नई टिप्पनियों को भी रचा। तब उसके मन में यह बात आई कि शास्त्र पढ़ कर जिसने विद्यार्थियों को पढ़ा कर योग्य न बनाया तो उसका पढ़ाना व्यर्थ हुआ। यह विचार कर अपनी विद्या सफल करने के लिये पाठशाला बनाकर विद्यार्थियों को पढ़ाना चाहा परन्तु उसके गुरु को कोई पुत्र न था और न दूसरे पढ़नेवाले उस समय मिले। इसलिये उसको बहुत से विद्यार्थियों के घरपर जाना पड़ा बहुतेरों को उनके भाई बंधुओं से कहलाया, कई तरह की लालच भी सबों को देखलाया, परन्तु उस समय विद्यार्थि कुछ भी इकट्ठे न हुये। तब वह खेद करने लगा कि हाय मैंने जो इतने परिश्रम से न्याय शास्त्र को पढ़ा और उस की कई एक पद्धति के क्रम से टीकों को लिखा

वे सब व्यर्थ हुये। विद्यार्थियों को न्याय शास्त्र पढ़ा कर इस बंग देश को जो मैं सारी पृथ्वी में प्रख्यात किया चाहता था वह अभिलाषा जी की जी ही में रह गई यह सोच कर वह इतना दुखी हुआ कि अपनी पाठशाला बन्द करके घर में रहने लगा। परन्तु कई एक दिन के बाद उसने अपने मन में यह विचारा कि जिस विद्या के अभ्यास में मैंने अपनी उमर खोई उसके प्रचारकरने में मैं इस समय ऐसा निरुद्यम होकर बैठा हूं क्या किसी काल में मेरा मनोरथ सफल न होगा, एक दो बार किसी काम की चेष्टा करने से यदि वह सफल न होतो क्या एक बारगी उसकी तरफ से निरुद्यम होकर बैठ रहना चाहिये यह तो आलसियों का काम है। क्या आलसी बन कर मुझ को भी बैठ रहना चाहिये? नहीं, जब तक मेरी इच्छा पूरी न होगी तब तक मैं बारं बार उसके लिये चेष्टा करता रहूंगा। ऐसा जी में ठान कर अपनी कल्पना से नई युक्ति यह निकाली की एक दूसरी जगह में पाठशाला खोल कर उसके आंगन में कई एक पौधों को लगा दिया। और उसने यह नेम किया कि प्रातःकाल प्रति दिन हर एक पौधों के पास बैठकर एक एक ग्रन्थ को पढ़ाना प्रारम्भ किया। पढ़ाने के समय पौधों के बदले आपही शंका समाधान करता था। उन्हीं दिनों में जगदीश जो एक नामी धुरन्धर पण्डित था उस की पाठशाला में बहुत विद्यार्थी पढ़ते थे उससे थोड़ेही दूर पर गङ्गा तीर आने को राह में शिरोमणि को भी नई पाठ-

शाला थी। इस कारण उस पण्डित के विद्यार्थी नहान जाने के समय शिरोमणि का अद्भुत उच्च शिक्षा को देखकर कई एक उनमें से दण्डवत कर के पाठ सुनने लगे। शिरोमणि भी अति प्रसन्न होकर अपनी रची हुई टिप्पणियों को तत्र तत्र, कहकर व्याख्या करने लगा नये २ विषयों को सुन कर सबों को रुचि बढ़ी इसलिये दूसरे दिन सब और दिन से पहले गङ्गा स्नान के नाम से वहां जा कर पाठ सुनने लगे। क्रम से विद्यार्थी बढ़ने लगे। प्रातः काल सब नहाने के नाम से वहीं चले आते और नये २ विषयों को पढ़कर अपना पाठ तीन पहर तक लगाते थे। बहुत से विद्यार्थी पुस्तक लेकर आने लगे। इस तरह कुछ दिन के बाद सबों ने आपस में विचार किया कि ऐसा दयालू और पढ़ाने में अति परिश्रमी अध्यापक का मिलना कठिन है। हम लोगों का पढ़ना लिखना जैसा चाहिये वहीं होता है परन्तु जगदीश पण्डित की पाठशाला में टिकने के कारण हम सब शिरोमणि के विद्यार्थी लोगों में अपने को नहीं कह सकते। थोड़े से नाम के कारण ऐसे बड़े पण्डित से पढ़कर उस से कपट का आचरण करना यह लज्जा की बात तो होती ही है बल्कि महा पाप भी है, यह सोचकर एक एक विद्यार्थी शिरोमणि की पाठशाला में आकर रहने लगे। शिरोमणि ने भी विद्यार्थियों को पाकर अपनी अभिलाषा को पूर्ण किया और प्रसन्न होकर उत्साह के साथ उनको पढ़ाने लगा और कुछ दिन बाद बंगदेश में वही गदाधर शिरोमणि एक अद्वितीय नैयायिक हुआ।

दीर्घ उद्योग ।

॥ छंद ॥

विघनहिं निहारि न करैं कारज नीच जन अति आलसी ।
कछु देखि विघ्नहिं डरैं हिय तेहि समब खानहिं कविजसी ॥
शत विघ्न आयेहु जो करैं गुरु का जसो इ अति साहसी ।
सो इज च मब बिधि पूज्य पावन उड़गनन मंह जनु शशी ॥
प्रारम्भ ही नहिं विघ्न के भय अधम जन उद्यम सजैं ।
पुनि करहिं तौ कोउ विघ्न सों डरि मध्य ही मध्यम तजैं ॥
धरि लात विघ्न अनेक पै निरभय न उद्यम तें टरैं ।
जे पुरुष उत्तम अन्त मैं ते सिद्ध सब कारज करैं ॥

अंगरेज़ बालक ॥

गवर्नर जेनरल लार्ड हार्डिङ्ग बहादुर जब हिंदुस्तान में आये उनको आगे से लेने के लिये कलकत्ते के चांद पाल घाट से गवर्नमेन्ट हाउस तक फौज जो सज कर खड़ी हुई थी उसको देखने के लिये बहुत से लोग इकट्ठे हुये थे। लार्ड साहिब के जहाज़ से उतरने के समय तीर पर ऐसी भीड़ हुई कि तिल भर भी जगह खाली न थी। लोग इस चिन्ता में थे कि कहां से अच्छी तरह सवारी देख पड़ेगी। अनेक देशों से जो सब जहाज आते हैं उन में ज़रूरी चीज़ों का बोझा जब नहीं होता है तब पत्थर बालू आदि चीज़ों को बोझ कर लाते हैं जिसको अंगरेज़ी में ब्यालास्ट कहते हैं और उस को तीर पर उतार देते हैं, जहां लोग इकट्ठे हुये

थे उन्हीं सब चीजों को कई एक बड़े ऊंचे टीलेकी तरह राशि थे। लोगों ने सोचा कि इन राशियों पर से अच्छी तरह सवारी देख पड़ेगी यह समझ कर कुछ लोग इन पर चढ़ने लगे परन्तु चढ़ने की कठिनता से न चढ़ सके और भी जिन्होंने चढ़ने को साहस की ऊपर से दो चार बड़े २ पत्थरों के गिरने से उनके हाथ पैर में ऐसी चोट आई कि वे फिर न चढ़ सके।

एक अंगरेज़ का लड़का नव दस बरस की उमर का एक नौकर के साथ दूर खड़ा था वह उन सबों के गिरने पड़ने को देख कर आश्चर्य में आया और उन राशियों की तरफ चला यद्यपि उसके नौकर ने मना किया पर अपने नौकर की बात न मानकर एक ऊंचे पत्थर के राशि पर दौड़कर चढ़ जाने को उद्यत हुआ। कुछ ऊपर चढ़गया पर आगे न चढ़ सका गिरपड़ा और हाथ पैर में चोट भी पाई तौभी न माना कई बार चढ़ा पर गिरता गया पत्थर की चोट के लगने से उस के देह से खून टपकने लगा जिस पर भी उस लड़के ने नहीं छोड़ा जितना उसका उद्योग निष्फल होता उतना उसका उत्साह भी बढ़ता जाता था। इसी तरह बारंबार चेष्टा करने से अन्त में वह उत्साही लड़का उस पत्थर की राशि पर चढ़ गया और जो लोग दो एक बार गिर कर चोट लगने से हार गये थे उनकी तरफ देख कर वह ताली बजा कर हंसने लगा।

जिस जाति के लड़के ऐसे बहादुर और दृढ़प्रतिज्ञ हैं उनके सारी धरती के बादशाह हो जाने में क्या आश्चर्य है!।

तैमूर लंग।

तैमूर लंग समरकन्द नगर के समीप किसी जगह में पैदा हुआ था। उसके बाप दादे जङ्गीज़खां के खानदान के अधीन राज काज करते थे। तैमूरलङ्ग भी लड़कपन से सब राज के कामों को सीख कर उसमें निपुण हुआ। विशेष करके युद्ध विद्यामें उसका बड़ा अनुराग था इस लिये उसमें पक्का होकर अपनी बुद्धि बल से एक प्रधान सेनापति हुआ और बहुत सी सेना को अपने हाथ में कर लिया।

उस समय समरकन्द नगर के राजा का प्रताप घट गया था यह समझ कर ऐसी इच्छा उसके जी में हुई कि उस को जीत कर मैं राज करूं, उसको पूर्ण करने के लिये उसने अपनी अधीन सेना के लोगों को उत्तेजित करके समरकन्द नगर पर चढ़ाई की; परन्तु कुछ न कर सका इस लिये लौट आया उस पराजय से तैमूर का उत्साह भङ्ग नहीं हुआ वरन दूना हुआ। उसने और भी सेना इकट्ठी की और उनको खूब शिक्षा देकर दूसरी बार समरकन्द पर चढ़ा परन्तु फिर भी हार गया। इसी तरह कई बार उत्साह से उसने चढ़ाई की पर हारता गया। जब २१ बार चढ़ा और एक बार भी उसका मनोरथ सफल न हुआ तब उसका उत्साह भङ्ग हुआ, और उसने सोचा कि यह बड़ा काम मुझ से होगा नहीं; तो फिर इस संसार में रहना मेरा निष्फल है इस लिये अब इस देह को क्यों रक्खूं?

मैं बचपन से सदा आशा रखता आया, कि एक दिन समरकन्द नगर के राज सिंहासन पर बैठूंगा इस लिये इस

के उद्योग में लगा रहा सो कुछ भी न हुआ। इससे अब मरना ही अच्छा है।

यह सोच कर बड़े खेद में उदास सा हो कर किसी से कुछ न कहा और अपना जी देने के लिये एक तेज छुरी लेकर पहाड़ की एक कन्दरा में जो करीब थी घुस गया। वहां हाथ में छुरी लेकर ज्यों अपने तईं मारना चाहा उस समय मा, बाप और भाई बहिन, स्त्री और वह सेना जो उसके लिये प्राण देने में भी उद्यत था सबों का ध्यान बन्धा इस लिये मन कुछ फिर गया और एक बड़े पसोपेश में पड़ा उस के ध्यान में एक बात और चढ़ आई जो बाल्या-वस्था में किसी फ़कीर से सुना था कि "यह लड़का किसी समय में राजा होगा" मेरे भाग्य के दोष से उस महा पुरुष का बचन भी क्या झूठा हुआ? अब इस से मरना ही अच्छा है।

यह सब सोच रहा था कि एकाएक उस की आंख एक चिउंटी पर पड़ी तो क्या देखता है कि वह एक चावल का कन मुंह में लिये हुये एक पत्थर के नीचे से ऊपर को चढ़ा चाहती है कुछ ऊपर चढ़ी पर गिरपड़ी फिर चढ़ने लगी तब भी गिरपड़ी। इसको तैमूर खूब ध्यान देकर देखरहा था कि यह चिउंटी २१ बार उसी तरह से चढ़ी और गिर गई; पर जब २२ वीं बार फिर चढ़ी तो अपने मुंहके कन के समेत उस जगह जहां जाया चाहती थी पहुंच गई। इस बात को देख कर तैमूर के मन का भाव कुछ पलटा और उसने सोचा कि परमेश्वर ने मुझ

को शिक्षा देने के लिये इस को यहां पर भेजा है। इस चिउंटी ने और मैंने २१ बार चढ़ने की चेष्टा की परन्तु यह २२ वीं बार चढ़ गई इस लिये मैं भी एक बार समरकन्द नगर पर और चढ़ूं यह विचार कर शीघ्र उस उमंगमें गुफा से निकल कर और बहुत सी फ़ौज साज कर अपने जी में निश्चय किया कि इस बार अवश्य जीतूंगा। ऐसा सोच कर वह बड़े ममसूबे के साथ समरकन्द नगर पर चढ़ा। और थोड़े दिनोंतक घोर युद्ध करके उसने समरकन्द को जीता और वहां का राजा होकर अपनी बहुत दिन की लालसा पूरी की।

संसर्ग।

चौपाई। हीन कि संगति करै जु कोई।
क्रम क्रम बुद्धि हीन अति होई॥
सम संग बुद्धि हुं समता पावै।
उत्तम संग उत्तमहिं कहावै॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू।
जग महं भलेहि बिदित सब काहू॥
सुजन सुनहु सुन्दर यह नीती।
मैं संक्षेप कह्यों अति प्रीती॥

दोहा। दोषहिं को उमहैं गहैं, गुनन गनै खल लोक॥
पिवै रुधिर पय ना पिवै, लगी पयोधर जोक॥
काहु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारे अङ्ग।

रतन लाल ।

किसी गांव में एक लड़का जिसका नाम रतन लाल था रहता था। वह बड़ा बुद्धिमान था। पहले गुरु की चटशाल में उसने कुछ दिन पढ़ा जब वह दस बारह बरस का हुआ तब उसके पिता ने उसको उस गांव की पाठशाला में पढ़ने के लिये एक पण्डित को सौंप दिया। यहां उसने कुछ दिन तक ऐसा मन लगाकर पढ़ा कि किताबों को खूब समझने लगा। उसके साथ के जो और पढ़ने वाले थे, उनको बुद्धि वैसी न थी। जब कभी पण्डित जी सबों को इकट्ठा करके कुछ प्रश्न करते, तो उन में से कोई ठीक उत्तर न दे सकता। रतनलाल प्रायः सब प्रश्नों का ठीक उत्तर देता था। इससे उसके जी में कुछ घमण्ड हुआ। इस कारण पढ़ने लिखने से उसका मन उचट गया। यहां तक कि वह अपने अध्यापक के प्रश्न का उत्तर कुछ भी न दे सकता था।

और दूसरे सपाठियों के मन में यह बात आई कि हम सब मन लगा कर अपने पाठ को अभ्यास नहीं करते, इस बात को उन के मन में बड़ी लज्जा हुई। इस लिये वे सब खूब ध्यान देकर पढ़ने लगे। इससे उसकी और हानि हुई क्योंकि वे सब परिश्रमी और तेज़ न थे। थोड़े दिन में रतन लाल बहुत सुस्त होगया। उसकी बुद्धि में जो तेज़ी थी वह सुस्ती के कारण जाती रही। यहां तक कि उस समय सब विद्यार्थियों में वही सबसे बढ़कर अयोग्य समझा जाता था।

गांव की पाठशाला के पढ़ने में जब उस के पिता ने उस को अच्छा न पाया तब उस को कलकत्ते ले जाकर एक बड़े स्कूल में भरती करा दिया। वहां बहुत से विद्यार्थी तेज़ और मेहनती थे। रतनलाल भी सबों के साथ पढ़ने लगा। वहां के अध्यापक जब विद्यार्थियों को इकट्ठा कर के प्रश्न करते उस समय सब तो शीघ्र उत्तर देते परन्तु वह कुछ नहीं बोल सकता था इस से उस को बड़ी लज्जा हुई। गांव की पाठशाला में सब मतिहीन लड़कों में थोड़ा अपने को अच्छा देखकर जो घमंड करता था वह जाता रहा। वहां देखा कि सब तो अच्छे हैं मैं ही आलसोइ सब तो शिक्षक से प्रशंसा पाते हैं केवल मैं ही नहीं। इस से रतनलाल के मनमें बड़ा दुःख हुआ और इस बात की उस को ग्लानि हुई इस लिये वह फिर मन लगा कर पढ़ने लगा। थोड़े ही दिनों में रतनलाल की बुद्धि फिर चमकी। और वह ऐसा तेज़ निकला कि उसके बराबर कोई बुद्धिमान और परिश्रमी न था। पहले जिन विद्यार्थियों को वह बराबरी किया चाहता था अपने असाधारण परिश्रम और उद्योग से उनमें वही रतनलाल नायक और सुशील विद्यार्थी गिना गया।

। कुबिचार।

(कुण्डलिया)

बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो जग में होत हंसाय॥
जग में होत हंसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान राग रंग मनहिं न भावै।

कह गिरधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय मांहि कियो जो बिना बिचारे।

परीक्षित।

एक बार राजा परीक्षित ने शिकार करने के लिये किसी जंगल में जाकर एक हरिन पर बाण चलाया। हरिण बाण के लगते ही भागा। राजा बन में उस हरिन को ढूंढ़ता हुआ प्यासा और थका हुआ एक कुटी में एक ऋषि को देखा और जाकर उनसे पूछा कि महाराज, आपने कोई हरिन इस तरफ जाते देखा है? मुनि का नाम शमीक था वह उस वक्त मौन साध कर योगाभ्यास कर रहे थे इस कारण कुछ न बोले। राजा ने कई बार अपना नाम भी ऋषि से कहा पर जब उन्हों ने कुछ उत्तर न दिया तब राजा ने अपने जी में सोचा कि यह मेरा अपमान करता है। इसलिये राजा ने चिढ़कर वहां एक मरा हुआ बड़ा सर्प जो पड़ा हुआ था उसको अपने बाण की नोक से उठा कर ऋषि के गले में डाल दिया और चला आया। शमीक बड़ा शान्त था उसने कुछ न कहा परन्तु उस के पुत्र शृंगी ने अपने पिता का बड़ा अपमान समझ कर राजा को श्राप दिया! यद्यपि तपस्वी ने राजा का कुछ अपमान नहीं किया था केवल भ्रम से राजा ने ऐसा किया। ऋषि तो परम शान्त और निरअहंकार था वह क्यों किसी का अपमान करता। राजाओं की रक्षा से मुनियों के तप का विघ्न दूर होता है इससे राजा का भी कुछ दोष न था क्योंकि महाराज ने अपने[illegible] कह कर

बनाया तब भी विचार कर लेना था कि मुनि लोग कभी कभी मौन भी साधते हैं। परन्तु राजा ने कुछ न सोचा बरन एक मरे हुये सर्प को मुनि के गले में डाल दिया। महाराज को लाज़िम था कि उसके मौन को देखकर आप क्रोध न करते देखो बिना विचारे हुये काम का ऐसाही फल होता है। यदि महाराज मुनि के व्रत को समझ कर उत्तर न पाने से दुखी न होते तो कभी श्राप के फल को न भोगते।

अङ्गरेज़ महाजन।

किसी समय एक अङ्गरेज़ महाजन घोड़े पर सवार होकर अपना लहना वसूल करने के लिये कर्ज़दारों के घर पर गया था। उसने जो रुपया उनसे पाया उस को एक थैली में रखकर फिर सवार हो अपने घर को लौटा उसने एक कुत्ता पाला था वह सदा उसके साथ रहता था राह में धूप के लगने से वह घोड़े से उतर कर एक पेड़ तले थोड़ी देर तक ठंढा होकर वहां से रवाना हुआ। उस का कुत्ता भी उसके पास बैठा था। जब उसका मालिक घर की तरफ चला तो वह भी भूंकता हुआ पीछे दौड़ा कभी तो वह आगे जाकर भूंकता और कभी बगल में। यहां तक कि दांतों से काटता और नहों से मार कर घोड़े के रोकने की चेष्टा करता था। उसका मालिक अपने कुत्ते का यह हाल देख अचंभे में आया और सोचने लगा कि क्या कारण है कि मेरे इतने दिनों का पाला हुआ कुत्ता ऐसा हो गया है। अन्त को उसने यह निश्चय किया कि यह कुत्ता पागल हो गया इसलिये भूंकता का

टता और वह बचाता है। किसी तरह से उस कुत्ते के काटने भूंकने के दुःख को सहता हुआ वह एक नदी के किनारे पहुंचा। उसने सुना था कि जो कुत्ता पागल हो जाता है वह पानी देख कर डरता है अगर यह भी डरैगा तो मैं समझूंगा कि यह भी पागल हो गया है। उस कुत्ते ने नदी को नहीं लांघा परन्तु पानी देख कर और भी भूंकने काटने लगा यह देख कर महाजन ने और कुछ न विचारा उस बेचारे कुत्ते को पागल समझ कर बंदूक भर के मार डाला कुत्ता तो गोली के लगतेही चिल्ला कर मर गया। महाजन उसके सोच में जो आगे बढ़ा तो देखता क्या है कि रुपए की थैली घोड़े पर नहीं है तब वह सोचने लगा कि रुपए की थैली कहां छूटी उस समय उस को यह बात याद आई कि जिस पेड़ तले मैं ठहरा था वहीं वह रह गई उसी वक्त वह फिर लौटा और जाकर देखा कि उस पेड़ के नीचे थैली पड़ी है तब उसने जाना कि कुत्ता इसी लिए भूंकता काटता और मेरे घोड़े को रोका चाहता था। फिर तो उस कुत्ते को दया समझ कर उस का कलेजा फटने लगा और पछताने लगा कि मैंने ऐसे स्वामिभक्त कुत्ते को व्यर्थ क्यों मारा इसलिए मैं निर्दय अधम और महा पापी हूं। जब तक वह जीया उसको अपने बिना विचारे काम के करने का खेद जी में बना रहा।

शिशु जननी।

किसी गांव में एक कुलवन्ती स्त्री रहती थी वह अपने पुत्र को हिंडोले पर सोला कर नहाने गई। एक नेवला

जो उसने पाला था उस हिंडोले के पास बंधा हुआ था। वह एक काला सर्प आता हुआ देख कर अपनी दुम उठा कर भुड़कता हुआ उसकी तरफ दौड़ा । सर्प ने उसको देखते ही भागना चाहा पर वह भाग न सका। उन दोनों में ऐसी लड़ाई हुई कि उनके झटके से हिंडोले की एक तरफ की रस्सी टूट गई और वह एक ओर को झुक गया उस समय बालक जो सोता था हिंडोले पर से ज़मीन पर गिर पड़ा। नेवल ने उस सर्प को काट कर कई टुकड़े कर डाला। इससे उस का शरीर उसके खून से भर गया था। इस अरसे में उस लड़के की मा नहा कर और घड़ा जिस में जल भरा था लिए हुए लौटी । वह अपने लड़के को हिंडोले पर न देख कर अवन उस नेवल को खून से भरा हुआ और भी कुछ मांस सी चीज़ वहां पड़ी हुई देख कर उसने चिल्ला कर कहा ' कि हाय मेरे बच्चे को नेवला खा गया, तब उसने अपने पुत्र के स्नेह में उस पानी भरे घड़े को बेचारे नेवल पर पटक दिया। और तुरत उस हिंडोले के पास जाकर देखा कि वह लड़का उसके नीचे पड़ा हुआ सुख से सो रहा है। और हिंडोले की रस्सी लोहू से भीगी है और मरे हुए सांप के बहुत से टुकड़ों को जो ज़मीन पर पड़े हुए थे देखकर उसने सब असल बातों को समझा

उसने अन्त में यह निश्चय किया कि आज इस नेवल ने मेरे पुत्र को रखा, सो जिस को मैं ने बिना विचारे मार डाला इस का उसको बड़ा खेद हुआ और उस स्त्री ने उस नेवल के लिए बहुत विलाप किया यहां तक कि जब तक

वह जोई और जब उसको उसका याद पड़ता था तब वह अपने बिना विचार किए हुए काम के लिये बारहां अपने को धिक्कारती और बड़ा पापिनी समझता थी।

एकता।

दोहा।

अलपहुं वस्तु कि संगति करै कठिन बहु काज।
तृण बहु मिलि जब होइ रजु लेत बान्ध गजराज।

राधा कृष्ण ज़मींदार। (१म बार)

राधाकृष्ण एक ज़मींदार था। उसने थोड़ी ज़मींदारी और ख़रीद की और उसके हर एक गांवों के असामियों से मालगुज़ारी तहसील कर रोम सरकारी अदा करने लगा। पर उसने असामियों की मालगुज़ारी पर फी रुपये आध आने के हिसाब से बेशी लगाना चाहा उसको वसूल करने के लिये हर एक गांव के अपने नायब और गुमाश्तों को हुक्म दिया। और वे लोग उसकी ऐसी नियत देख कर कुछ तो उसके फायदे के लिये और कुछ अपने पाने की गरज़ से असामियों को सताने लगे। उस जमींदारी में गोपुर एक गांव था वहां का रहने वाला एक असामी जिसका नाम विजय था जब वह जमींदार के नायब गुमाश्तों के जुल्म से तंग हुआ तब उसने उस गांव के और कई एक आदमियों को साथ लेकर ज़मींदार के मकाम पर आकर उन्हीं के जुल्म की फरियाद की और कहा कि हुजूर मैं कुछ अरज़ किया चाहता हूं। आप हम लोगों के राजा हैं और हम सब आप की प्रजा हैं। राजा पिता के तुल्य है

और प्रजा सन्तान के तुल्य है। इस लिये आप को सब तरह से अपनी रैयतों पर दया करनी चाहिये। हम लोगों को आप के नायब और गुमाश्ते बहुत तङ्ग करते हैं वाजिब मालगुज़ारी जो दी जाती है उसको न वे लेते और न उसकी रसीद देते हैं। सिर्फ अपने लेने की बात करते हैं। और कुछ कहने पर मार पीट करते हैं गाय बाछा बिकवा लेने के सिवा औरतों पर भी अत्याचार करते हैं। हम सब जिसमे इन उपद्रवों से छूटें वही उपाय आप को करना चाहिये जो आप दया न कीजियेगा तो और कवन करेगा? असामियों की ऐसी बातें सुनकर वह अपने जी में नायब गुमाश्तों पर खुश हुआ और असामियों से कहा कि तुम लोग जाओ मैं उनको समझा दूंगा। परन्तु उसने जो हुक्म पहले अपने नायब और गुमाश्तों को दिया था उसको नहीं बदला। जब सबों ने फिर भी पहले सा अत्याचार देखा तब बहुत से असामी मिलकर ज़मीदार के मकान पर फिर कहने को आये परन्तु उसने उनसे मुलाकात तक न की। जब वे सबतरह से लाचार हो गये तब उनको और कुछ उपाय सोचना पड़ा। गांव के सब रहीसों को इकट्ठा करके सबों ने कसम खाई कि हम लोग मालगुज़ारी के सिवा और कुछ न देवेंगे।

चाहे हम लोगों का सर्वस्व जाय और कैद भी हो पर कुछ बेशी न देवें गे। उन सबों ने इस तरह से आपस में सलाह करके देना मालगुज़ारी का बन्द कर दिया तब नायब और गुमाश्ते और भी चिढ़ कर असामियों पर

ज़मीदार से नालिश बाकी मालगुज़ारी की करवा दी पर कोई गवाह रहने वाला गांव का न मिलने के कारण मुक- द्दमा खारिज किया गया। ज़मीदार ने दोबारा दावा अपना दायर करने पर डिगरी तो पाई पर उसको वसूल न कर सका जब असामियों के घर को नीलाम करना चाहा तो कोई उसको खरीद नहीं करता था और जो आप ज़मीदा- र उसको खरीद करता तो उसको दखल नहीं देते थे और जब नायब गुमाश्ते इस के लिये मुस्तैद होते तो उनको मार पीट कर भगा देते थे। निदान इसी तरह से कई बर- स तक सब एक मत होकर ज़मीदार से बरखिलाफ रहे जब ज़मीदार सब तरह से आजिज़ हो गया और कुछ न कर सका तब असामियों ने ऐसा रोब जमाया कि उनके डर से कोई नायब गुमाश्ता उसका उस गांव में नहीं रह सकता था ज़मीदार की मालगुज़ारी भी रुक गई गांव की तहसील बन्द होजाने से ज़मीदार को अपने तहबील से सर कार में मालगुज़ारी देनी पड़ी। कई साल तक पास के रुपये देने से ज़मीदार का बड़ा नुकसान हुआ कुछ दिन ऐसा होने के बाद ज़मीदार लाचार हो कर आप उस गां- व में गया। गांव वालों ने यथोचित उसका सत्कार किया अपना अपराध क्षमा कराया और वाजिब मालगुज़ारी उसको देकर उसकी इच्छानुसार चलना कबूल किया। ज़मीदार ने भी सबों पर रिआयत की और बेशी लेने से बाज आकर जो मालगुज़ारी वाजिब थी लेने लगा असामी लोग भी उसको बराबर देने लगे और आपस में मेल कर

लिया। उस गांव में बहादुरसिंह और ज़ालिमसिंह दो आदमी बड़े चतुर और ईमानदार थे उनको ज़मींदार बखूबी समझ कर बहादुरसिंह को नायब और ज़ालिमसिंह को गुमाश्ता मुकर्रर किया और दोनों से तहसील गांव की करवाने लगा रैयत लोग भी खुशी से ठीक समय पर बिना मांगे आप जाकर मालगुज़ारी देते थे उन सभों ने एकता के फल को बेहतर समझा और आपद से बचे।

राधाकृष्ण ज़मींदार। (२ बार)

बहादुरसिंह के मकान की खिड़की के सामने ज़ालिम सिंह की एक छोटी पोखरी थी उसको बहादुरसिंह कहता था कि पट्टा इसका ज़ालिमसिंह के बाप ने मुझको लिख दिया है परन्तु ज़ालिमसिंह इस बात से इनकार करता था इसका झगड़ा दोनों में कई बरस से चला आता परन्तु जब यह ज़मींदार को मालूम हुआ तब उसने बहादुरसिंह अपने नायब को उस पोखरी पर जिसको ज़ालिमसिंह की जानता था। ज़बरदस्ती से दखल करने का हुक्म दिया। और वह ज़मींदार का हुक्म पाकर दखल करने के लिये उस पोखरी पर गया। यह ज़बरदस्ती देख कर ज़ालिमसिंह ने अदालत में जाकर नालिश की। ज़मींदार की तरफ से लाला जमालुद्दीन सहाय वकील होकर जवाब लगाया मुकद्दमे के बहुत दिन तक दायर रहने से ज़मींदार का बड़ा खर्च पड़ा तब उसने बहादुरसिंह अपने नायब और ज़ालिमसिंह गुमाश्ता से कहा कि तुम्हारे सदा कचहरी के आने जाने से ज़मींदा-

री के काम में बड़ा हर्ज होता है सिवा इसके मुकद्दमें की पैरवी में भी तुम्हारे न रहने से बड़ी हानि होगी इस लिये तुम थोड़े दिन के लिये रुखसत लो। बहादुरसिंह से ऐसा कह कर ज़मींदार अपने मकान पर गया और वे उसका सब काम छोड़ कर अपने घर बैठे। कुछ दिन के बाद ज़मींदार की तरफ से दूसरे नायब और गुमाश्ता मुकर्रर हो-कर उस गांव में आये वे आतेही कभी बहादुरसिंह की तरफ के लोगों पर और कभी ज़ालिमसिंह की तरफ वालों पर बड़ी सख्ती करने लगे जब उस गांव के ज़मींदार के नायब और गुमाश्तों ने बड़ा जुल्म किया तब असामी लोग भी ज़मींदार का मत अपने मत के विरुद्ध समझ कर जैसा चाहते करते थे फिर तो ज़मींदार और असामियों में ऐसा बैर हुआ जिसको रफा करना उन्हीं के इखतियार में न था।

वृद्ध सेवा।

चौपाई।

जो वृद्धहिं सेवै मन लाई।
यथा शक्ति मद मोह दुराई॥
ताकहंजगमाहींकछुअगमन।
सोगुणधामसकलगुणभाजन॥

उमेशचन्द्र।

एक बार बैसाख के महीने में तीन बजे दिन को हुगली के स्टेशन पर बहुत मुसाफिर उस रेल गाड़ी पर

जो कलकत्ते हो कर बर्दवान को जाती है सवार होने के लिये मौजूद थे । उस दिन शनीचर था इस कारण मुसाफिरों की कसरत था । उस स्टेशन पर तीसरे दर्जे की गाड़ी पर चढ़ने वाले मुसाफिरों के बैठने के लिये दो तीन बेंच थे । उन पर थोड़े मुसाफिर बैठे थे । और बहुत मुसाफिर बैठने की जगह न पाने से टिकट लेने को इन्तिज़ार में इधर उधर फिरते थे । और वहां एक अंगरेज भी टहलता था ।

इस अरसे में एक बूढ़ा आदमी एक बड़ी गठरी हाथ में लिये हुये उस जगह पर आया । उसने अपनी गठरी ज़मीन पर फेंक के दो एक मुसाफिरों की तरफ देखकर कहा कि मैं दूर से रेलगाड़ी की आवाज़ सुन कर दौड़ा आता हूँ उस वक्त वह बूढ़ा जो धूप में दौड़ा आया इससे वह बहुत सुस्त हो गया था । सुस्ताने के लिये कहीं बैठने की इच्छा से इधर उधर देखता था परन्तु वहां कुछ भी जगह खाली न थी इस कारण वह और दुखी हुआ । मुसाफिरों के लिये वहां जो बेंच थे उनपर अंगरेज़ी नये पढ़ने वाले जो बाबू लोग बैठे थे उनमें से एक बाबू बूढ़े को ऐसी हालत देख कर अङ्गरेज़ी जुबान में यह बोला कि रेल से हमारे देश के बूढ़े घबराते थे पर अब ऐसा नहीं देखते यह सुनकर वह अङ्गरेज़ जो वहां टहलता था उस जगह से चला गया । उस बेंच की एक तरफ उमेशचन्द्र नाम का एक बाबू बैठा हुआ था वह बूढ़े को हालत देख कर दुखी हुआ और जिस जगह पर वह बैठा था वहां से उठ कर बूढ़े के पास

आकर कहा कि आप यहां बैठिये । यद्यपि उसको बैठने की इच्छा तो थी पर दो एक बार उसने इनकार किया। उमेश ने कहा कि मैं बहुत देर तक बैठा था और अब मेरी बैठने की इच्छा नहीं है इस लिये आप यहां बैठिये यह कह कर उसकी गठरी उस बेंच के पास रख दी और उसको भी उस पर बैठाला वह वृद्ध इससे बहुत खुश हुआ। उमेश के पास एक पंखा था वह उसको लेकर उस बूढ़े के पास खड़ा होकर इस तरह से पंखा करने लगा जैसे कोई अपने को करता है उसकी इच्छा बूढ़े को पंखा करने की थी।

इस अरसे में टिकट दिये जाने का घंटा बजाया गया वह बूढ़ा भी रुपया निकाल कर टिकट लेने को जाना चाहा परन्तु बड़ी गठरी और आदमियों की भीड़ होने से जहां टिकट बटता था न जा सका। वरन घबराया हुआ इधर उधर देखने लगा उस वक्त उमेश अपना टिकट ले चुका था उसको उसकी ज़रूरत न थी परन्तु उसने जब बूढ़े की व्याकुलता देखी तो उसके पास जाकर पूछा कि आप कहां जावेंगे और क्या केराया वहां का है आप जानते हैं या नहीं बूढ़े ने उचित जवाब दिया। तब उमेश ने कहा कि आप चिन्ता न करें मैं आपके लिये टिकट ला देता हूं यह कह कर वह वहां गया और टिकट ला दिया और गाड़ी पर सवार होने के वक्त उस की बड़ी गठरी गाड़ी में रख दी और उसको उस पर सवार करा दिया।

वह बूढ़ा उमेश की भलमनसाहत देख कर बहुत खुश

हुआ और बड़े प्रेम से उमेश को अपने पास बैठाला और उससे खूब परिचय किया। उमेश एक ब्राह्मण का लड़का था। और वह कुछ अङ्गरेज़ी लिख पढ़ सकता था परन्तु उसको कोई जीविका न थी और न उसका कोई सहायक था बल्कि वह उसकी तलाश में था! बर्दवान के नज़दीक उसका मकान सुन कर उस बूढ़े ने ठंढी सांस लेकर कहा कि बाबू आप ऐसे लायक को नौकरी नहीं यह बड़े अफ़-सोस की बात है। फिर उसने कहा कि बाबू जब मैं हुगली स्टेशन पर खड़ा था उस वक्त एक अङ्गरेज़ मेरे क़रीब टह-लता था और उसने कई बार मेरी तरफ देखा वह अङ्गरेज़ बर्दवान का साहिब मजिस्ट्रेट था मैं ने सुना है कि वह बड़ा दयालू शिष्ट और शान्त है। देखने से वह बड़ा भला-मानुस मालूम पड़ता है और उसने बहुतेरों की भलाई की है इस लिये अगर आप उस साहिब से मुलाकात करें तो मुझको विश्वास है कि वह कोई काम ज़रूर आप को देवेगा। इसी तरह वे आपस में बात चीत कर रहे थे कि रेलगाड़ी दूसरे स्टेशन पर पहुंची वहां उमेश ने उस बूढ़े को सावधानी से गाड़ी से उतारा और आप भी बर्दवान के स्टेशन पर पहुंच कर उतरा।

तीन चार दिन के बाद उस साहिब मजिस्ट्रेट की आफिस में एक काम खाली होना सुनकर उमेश उस बूढ़े की बात सोच कर साहिब की मुलाकात की इच्छा से एक दिन सुबह को उस के बंगले पर हाज़िर हुआ और वहां बाहर खड़ा रहा इस अरसे में दो अङ्गरेज़ वहां पर आये

उमेश ने दौड़ कर सलाम किया उन दोनों में से जो साहिब मजिसट्रेट था उसने उमेश को देखतेही पहिचाना और हुगली के स्टेशन पर जो उसने उस अज्ञात कुलशील वृद्ध का जिस तरह से सनमान किया और उसके दुःख को दूर किया था वह सब समाचार उस साहिब से जो उस दफ़ा उस के साथ में था जनाया। और यह भी कहा कि युवा लोग जो बढ़ों का आदर करते हैं उसको देख कर सब को खुशी हासिल होती है। पहले मैंने देखा था कि लोग बूढ़ों का सदा आदर करते थे परन्तु अब यह व्यवहार कम देखने में आता है उस दिन इस युवा के व्यवहार को देख कर मैं बहुत खुश हुआ यह कहकर उसने उमेश से पूछा कि यहां तुम किस लिये खड़े हो? यह सुन कर उसने दरख्वास्त अपनी जो लिखी थी साहिब मजिसट्रेट को दी वह उसको कचहरी में हाज़िर होने का हुक्म देकर आप बंगले में चला गया।

इसके बाद साहिब मजिसट्रेट ने जो काम उसको सुपुर्द किया उसको उसने बखूबी अन्जाम दिया इस कारण साहिब मजिसट्रेट उससे बहुत राज़ी हुए और तरक्क़ी उसकी जैसी चाहिये की।

सन्तोष।

दोहा।

सकल सुमंगल मूल, गहहु तात संतोष धन।
असंतोष दुख मूल, सुजन बिचारहु लाइ मन॥

रामनाथ पण्डित।

पण्डित राम नाथ एक दिन नहा कर ज्यों पाठशाले को जाने लगा उस समय उसकी स्त्री उसके सामने आकर बोली कि स्वामी आज चावल दाल तक नमक कुछ भी नहीं है। राम नाथ उस वक्त शास्त्र के विचारने में ऐसा मन लगाये हुए था कि अपनी स्त्री का शब्द तो सुना पर कुछ उसपर ध्यान न दिया वरन कुछ नाराज़ होकर उस इमली के पेड़ की तरफ जो आंगन में था देखा और चुप रहा। उसकी स्त्री उसका अभिप्राय समझ कर किसी और काम के लिये चली गई और रामनाथ भी धीरे २ पाठशाले को गया वहां से पढ़ा कर जब लौटा उसकी स्त्री किसी पड़ोसी से थोड़ा चावल नमक उधार लेकर उसको बनाया और इमली के पत्ते के साथ परस दिया उस समय वह ब्राह्मण भूख प्यास से ऐसा व्याकुल था कि पहलेही ग्रास में उसने अपनी स्त्री से पूछा कि इस वस्तु को तुम कहां से लाई हो? यह तो मानो अमृत है। यह सुन कर वह स्त्री मुसक्करा कर बोली कि जिस समय मैं ने आप से चावल आदि न रहने का हाल कहा था उस समय जो आप इमली के पेड़ की तरफ देख कर चुप रहगये थे तो मैंने यह समझा कि आज आपने इसी का पत्ता बनाने के लिये इशारा किया था। यह समझ कर मैंने इसको बनाया है। यह सुन कर रामनाथ बोला कि प्रिये जब यह इमली का पेड़ मेरे घर में है तो मुझे क्या कमी है। क्या तुम मुझे दरिद्री समझती हो? नहीं मैं बड़ा भाग्यमानहूं तुम

प्रति दिन भोजन के साथ यह मुझको दिया करो यह तो अपूर्व वस्तु है।

मथुरा नाथ।

एक पण्डित जिसका नाम मथुरा नाथ था बड़ा ग़रीब था उसको एक बार कश्मीर के राजा ने बुलवाया और उसका दुःख दूर करने के अभिप्राय से उससे यह पूछा कि पण्डित जी जो आप को किसी विषय में असंगति * हो तो आप मुझसे प्रगट कीजिये उसको मैं दूर करूं। वह इस बात को सुन कर थोड़ी देर चुप रहकर बोला, महाराज मैं ने चिंतामणि ग्रन्थ का जो चार प्रकार का तिलक किया है उसमें पहिले तो कहीं असंगति नहीं मालूम पड़ी पर हां एक स्थान में कुछ थी उसको भी मैं ने कल रात को सुधार दिया॥

॥ विनय ॥

। दोहा ।

गुरु जन आदर जे करहिं नीचहि नेह प्रकाश।
सम सन जे अतिप्रीति करि पुजवहिं जियकी आश॥
सो०। ऐसो विनई धीर धर्म परायण जे अहहिं।
कीरति मान नवीन सब कछु भू महं ते लहहिं॥

---

* असंगति एक तो धन के अभाव को कहते हैं दूसरे ग्रन्थ के किसी स्थान के अर्थ न बोध होने को भी कहते हैं राजा ने पहले अर्थ में असंगति शब्द का प्रयोग किया था परन्तु पण्डित मथुरा नाथ ने उसको दूसरे अर्थ में समझा।

श्री चरण पण्डित।

श्री चरण पण्डित नाम का एक युवा ब्राह्मण महाराष्ट्र देश में रहता था वह बड़े कुलीन और धनाढ्य का लड़का था। लड़कपन में जब वह वहां की एक बड़ी पाठशाले में अंगरेज़ी पढ़ता था उस वक्त अपने दरजे के सब लड़कों में से वह अच्छा समझा जाता था। उसके बिनय और शिष्टाचार को देख कर उसके साथ के पढ़ने वाले और सब अध्यापक और उसके जाति कुटुम्ब और पड़ोसी सब खुश रहते थे। जब वह चौबीस पचीस बरस का हुआ तब उसके मा बाप का परलोक हुआ। उस समय उसके बाप का एक मित्र जो उसके मकान के पास रहता था उसने उसका सब भार उठा लिया।

इसने उसको किसी बात की चिंता न थी उस वक्त वह अपने दिलोजान से पढ़ने में मेहनत करता था। जिस साल में उसका पढ़ना खतम हुआ उसी साल उस पाठशाले का बड़ासाहिब कुछ दिन के लिये रुखसत लेकर विलायत जाता था वह बड़ा दयालू था। श्री चरण को विद्या बुद्धि, बिनय और शिष्टाचार को देख कर वह बहुत खुश था और उसको अपने पुत्र के समान मानता था। और वह इस इच्छा से कि श्री चरण को विद्या की शिक्षा में कुछ कमी न रह जाय और वह भारतवर्षीय सिविलसर्विस का काम पावे इस लिए उसकोअपने साथ विलाइत ले जाना चाहा। विद्या की वृद्धि पद, मर्यादा, और लोकोपकार की इच्छा श्री चरण को पहिले से थी। परन्तु यह अपने माननीय आत्मीय और प्रिय भाई

बन्धु, और अनुचरों के साथ आहार व्यवहार छूट जाने की शंका से विलायत जाने को उद्यत नहीं होता था।

साहिब ने कहा कि श्री चरण बहुतेरे इच्छा रहते हुए भी रुपये के न रहने से विलायत नहीं जा सकते। ईश्वर की दया से तुम्हारे लिये खर्च की कुछ तकलीफ नहीं है अगर तुम्हारे मा बाप होते और जो उनकी राय इस बारे में न होती तो भी मैं तुमको ऐसी सलाह न देता। और अगर विवाह तुम्हारा हुआ होता तो स्त्री से सलाह लेना उचित था। जाति के लोग भाई बन्धु नौकर और साथी लोग जो सलाह न देते तो उन का कहना भी अवश्य मानना होता कारण इसका यह है कि जो अपनी भलाई देखता है उसको भी देखनी चाहिये। ऐसा न करना अनुचित है। मैं यहां बहुत दिनों से हूं और लोगों के मन का अभिप्राय जानता हूं इससे मुझको विश्वास है कि कोई ऐसा नहीं है जो तुम्हारी उन्नति न चाहता हो। जो दूसरे का अपमान नहीं करता तो उसका भी कोई नहीं करता। जैसा आप में शिष्टाचार और विनय है अगर विलायत में जाकर उन गुणों को जिनको मैं कहता हूं रक्खोगे तो मुझको निश्चय है कि वहां जाने से आपकी किसी तरह की सामाजिक हानि न होवेगी। मुझको इस बात की बड़ी चिन्ता थी और मैंने बड़े २ पण्डितों से भी पूछा है उन लोगों ने एकमत होकर यह कहा की जो देश की भलाई के लिये और सरकार के काम के लिये समुद्र यात्रा करता है यह शास्त्र के विरुद्ध नहीं है। इसलिये मैं कहता हूं कि आप मेरे साथ विलायत चलें

और वहां आप को किसी तरह का दुःख न होवेगा। जब श्री चरण ने साहिब का यह स्नेह युक्त बचन सुना तो वह विलायत जाने को उद्यत हुआ; और साहिब के साथ वहां गया और कई बरस तक वहां रहकर सिविल सर्विस का इमतिहान पास किया और कुछ दिन के बाद फिर यह अपने देश को लौटा।

श्री चरण ने पहलेही अपने आदमियों से कह कर एक मकान अपने रहने के लिये तजवीज़ करवाया था। विलायत से आकर पहिले अपने पिता के मकान पर नहीं उतरा उस दूसरे मकान में जो तजवीज़ हुआ था उतरा ज़रूरी चीज़ों को किसी परजात से नहीं लिया बल्कि उन को अपने जातिवालोंहीं से लिया। जिसने उसके पिता के मरने पर उसकी रक्षा की थी उसके परिवार के लोग उस से मिलने को आये। श्रीचरण उनको देखकर अति प्रसन्न हुआ और उसने कोमल वाणी से उन्हों का कुशल मंगल पूछा और ऐसा स्नेह प्रगट किया कि जिससे उनके मन की कली खिल गई। उस की प्रकृति बनिसबत पहले के कुछ विपरीत न देखकर वे लोग बहुत खुश हुये। इसके बाद श्री चरण अपनी जाति के लोगों को और स्कूल के साथ के पढ़ने वाले और भाई बन्धुओं की मुलाक़ात करने लगा। उस की जाति के लोगों ने भी बड़े आनन्द और प्रीति के साथ कुशलमंगल आदि व्यवहार किया। यद्यपि वह अपने सम्बन्धियों की मुलाक़ात करने के लिये शरमाता हुआ गया तौभी उन्हों ने आदर के साथ उसका उचित सनमान किया

कुछ दिन तक तो वह उनके बैठने की जगह से अलग बैठता परन्तु फिर आपस में ऐसा मेल हुआ कि कुछ भेद इसका न रहा वह जहां जाता वहां उसका आदर होता था। उसने अपने मकान में बैठने के लिये दो कमरा बनवाये एक में अच्छी २ कुरसियां और मेज़ आदि लगाई थीं और दूसरे में देश की रीति के अनुसार फ़रश कालीन आदि बिछवाये थे। जब कोई अंगरेज़ उसकी मुलाकात के लिये आता तो उसको वह पहले कमरे में बैठाता और जब उसके भाई बंधु मिलने को आते तो उनको दूसरे कमरे में जगह देता था। जब वह किसी अंगरेज़ की मुलाक़ात को या आफ़िस में जाता तो अंगरेज़ी पोशाक पहिरता और जब वह अपने भाई बंधु के मकान पर जाता तब हिन्दुस्तानी पोशाक पहिरता था।

श्री चरण के ऐसे नम्रता युक्त सद्व्यवहार को देख कर सब लोग बहुत खुश हुये परन्तु उसके विलायत जाने के कारण थोड़े लोगों ने जाति से बाहर रखना चाहा पर उसके उत्तम व्यवहार के कारण यह बात औरों को ना पसन्द हुई। जब श्री चरण को यह मालूम हुआ तब वह अपने कई एक सम्बन्धी पण्डितों के पास गया और उन पण्डितों ने बड़े परिश्रम से यह व्यवस्था लिखी कि जो श्रीचरण विधिवत प्रायश्चित करे तो जाति में आ सकता है। इसके बाद एक दिन ठहराकर श्री चरण ने अपनी जाति के लोगों की सभा की और उनके सामने प्रायश्चित्त करके जाति में मिला। फिर उसने ऐसा उपाय किया कि

कोई उससे प्रतिकूल न रहा जो कोई विरुद्ध होता तो उन के लिये अनुकूल लोगों की संख्या इतनी थी कि प्रतिकूल लोग उसका कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते थे।

जाति में आने के कुछ दिन बाद वह अपने पिता के मकान पर आया और अपने जाति का व्यवहार जैसा पहले करता था करने लगा। इसके बाद अपनी जाति के एक कुलीन की कन्या से अपना विवाह किया और सरकार में बड़ा पद्दा हासिल करके वह अपने परिवार के लोगों के साथ सुख चैन से अपना समय बिताया।

पाप फल।

दोहा

अन्यायो पार्जित जुधन, दसै बर्ष तिष्ठाय।
बरस इग्यारह लागते मूल सहित बिन साय॥
बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय।
कांसे ऊपर बीजुली परत कहत सब कोय॥
अनुचित धन से पोषि अंग हय प्यादे गजराज।
दिन थोरे महं सीदहीं ज्यों बालू की प्याज॥
आप अकारज आपनो करत कुसंगति साथ।
पांव कुलहाड़ी देत हैं मूरख अपने हाथ॥
लोभ महारिपु देह में, सब दुःखों की खान।
पाप मूल अरु प्राण हर, तजे ताहि मतिमान॥
क्रोध काम हंकार ते, लोभ महा बलवान।
जाके बश ह्वै तजत हैं, दुर्लभ नर प्रिय प्राण॥

हरिजीवन।

हरिजीवन नाम एक आदमी किसी अच्छे घराने का था वह कुछ लिखना पढ़ना सीख कर एक साधारण केरानी की नौकरी करके अपना काल क्षेप करता था। यद्यपि उस समय उसकी आमदनी अधिक न थी पर जो कुछ थी उस से उसके परिवार का निर्वाह होता था। फिर उस को क्रम से अपनी आमदनी अधिक बढ़ाने की इच्छा हुई। धर्मपूर्वक उसको अपना मनोरथ सिद्ध करना चाहता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। वह बड़ा चतुर था और ऐसा सुन्दर लिख भी सकता था कि किसी तरह का लिखा हुआ हो वह उसको उसी तरह हूबहू लिखता था इस से वह कम्पिनी नोट और भी बहुत सरकारी कागज़ जाली बनाने लगा। उसके बनाये हुये नोट और कम्पिनी नोट में ऐसी समानता थी कि कोई जाल उस का नहीं पकड़ सकता था। इसलिये उसके जाली बहुत से नोट देशों में फैल गये और इसी के द्वारा उसकी आमदनी भी बहुत बढ़ गई। ऐसा क्यों न हो? जो थोड़े दाम के कागज़ पर दस, बीस, पचास, सौ, हज़ार, दस हज़ार का नोट तैयार कर सकता हैं उसके धनी हो जाने में क्या आश्चर्य है जब उसको इस जालसाज़ी से बहुत रुपया हाथ लगा तब उसने बड़ा ऊंचा मकान बनवाया और गाड़ी घोड़ा आदि बहुत सा असबाब इकट्ठा किया और दीवाली दसहरा आदि के जलसे में उत्साह से बहुत रुपया खर्च करने लगा उस समय के लोग उसको बड़ा दाता, भोगी शाखर्च और शौकीन सम

भने लगी। देखो पाप कर्म्म बहुत दिनों तक नहीं छिपता।

जब उसका इस तरह का कारखाना बढ़ा तब वह सरकार के नौकरों की आंख पर चढ़ा यह जानना उन सभों ने चाहा कि यह कहां से इतना रुपया लाता है अन्त में उसका भाल खुलगया उसने अपनी रिहाई पाने के लिए बहुत सी तदबीरें कीं पर एक भी न लगी वह उस जुर्म में काला पानी भेजा गया संसार में उसकी बड़ी बदनामी हुई और सरकार में उसकी जायदाद ज़प्त की गई। उसके परिवार की ऐसी दुर्दशा हुई कि थोड़े दिन जो वे सुख किये थे उनके बदले भूखों मरने लगे।

सत्यवादिता।

दोहा।

सौ हयमेध अरु सत्य को, धरिय तुला दोउ अङ्ग।
सब मिलि तुलै न सत्य सम, देखिय करि सतसङ्ग॥
जहां सत्य तहं धर्म्म है, जहां सत्य तहँ योग।
जहां सत्य तहं श्री रहति, जहां सत्य तहं भोग॥
सत्य भाव को गहहु तुम, तजो झूठ को भाव।
नहिं असत्य सम और है, पातक सुनु द्विज राव॥
सत्य नाव करि जो चढ़े, यह भव सिंधु अपार।
आप बचे अरु और को, दे वे पार उतार॥

कृष्णापान्ति।

कृष्णापान्ति जो एक मशहूर आदमी था एक दिन रानी

घाट से किश्ती पर सवार होकर कलकत्ते को जाता था। राह में बहुत से चोर उसकी किश्ती के पीछे लगे। यद्यपि मल्लाहों ने उन सबों को चोर जान कर किश्ती जल्दी चलाई पर तौभी चोरों ने पीछा न छोड़ा। वे उसकी किश्ती पर चढ़ कर और मल्लाहों को मार कर पानी में गिरा दिया और कृष्णपान्ति को भी मारने लगे। उस वक्त वह अपने बचने का कोई चारा न देख कर बोला 'भाई मुझे मत मारो रुपया मेरे पास नहीं है जो तुमको देकर खुश करूं॥ मेरा नाम कृष्णपान्ति है और मैं कलकत्ते को जाता हूं जो तुम लोग उस जगह और उस वक्त पर वहां आओगे जो अभी तुम को बतलाता हूं तो प्रतिज्ञा कर कहता हूं कि इतना रुपया तुमको बेशक दूंगा यह सुनकर चोरोंने कहाकि आप हम लोगोंको थाने में पकड़वा देवें तो हमलोग क्या करेंगे? तब कृष्णपान्ति ने कहा कि मैं कसम खाता हूं कि कभी तुमको गिरिफ्तार न करवाऊंगा। चोरों ने पहले ही सुना था कि कृष्णपान्ति बड़ा सत्यवादी और उदार है। इसलिये वे उसकी बात मान कर चले गये।

फिर कुछ दिन के बाद वे सब उस मकान पर जो उस ने उनको बतलाया था गये। कृष्णपान्ति ने अपने कहने के मुताबीक रुपया उनको दे दिया। यह देख कर एक आदमी जो कृष्णपान्ति का था बोला कि यह आप क्या करते हैं? कोई चोरों पर भी दया करता है? क्या इन्हों ने कुछ भलाई आप की की है? जो आप इनपर दया करते हैं।

ए तो संसार के कंटक हैं जब तक जीयेंगे लोगों को दुःख दिया करेंगे इस लिये इनको जिस तरह हो सके निर्मूल करना चाहिये ऐसा इनके साथ न करना बेजा है। देखिए इन्होंने ऐसा आप को मारा है कि अब तक निशान उसका आपके बदन पर मौजूद है इस कारण मैं आप की बात कुछ न सुनूंगा जब ये मेरे हाथ में आवेंगे तो जरूर थाने में गिरिफ्तार करा कर सजा दिलवाऊंगा। यह सुनकर क्षमापान्ति ने कहा, को भाई तुम सच कहते हो और मैं भी जानता हूं कि ये सब जगत के कंटक दुःख देने वाले और विश्वास घात करने वाले हैं। परन्तु मैंने इनको रुपया देने और न गिरिफ्तार कराने की प्रतिज्ञा की है मेरे कहने पर ये सब विश्वास करके मेरे मकान पर आये हैं। इस वक्त जो मैं अपना सत्य छोड़ कर विश्वास घात करूं तो मुझ से बढ़ कर और कौन महा पापी, होगा? अगर मेरा सत्य जायगा तो वह प्राण जाने पर भी मुझको न मिलेगा। जो तुम मेरी इच्छा के विपरीत करोगे तो मैं आत्मघात करूंगा। यह कह कर जब वह जान देने पर मुस्तैद हुआ तब वह आदमी क्षमापान्ति का चुप हो गया और चोरों ने सबके सामने रुपया लेकर कृष्णपान्ति का यश सराहते हुये अपने घर की राह ली।

राजभक्ति।

दोहा।

भूपति नित पाले प्रजा, जानि पुत्र नहिं आन।

सब विधि ताकहं मानिये, पितु सम अति हित जान

रामराज्य ।

अगले समय में सूबे अवध के जिसको अयोध्या कहते हैं राजा जब श्री रामचन्द्र हुये जैसा चाहिये न्याय दक्षता और सुविचार के साथ वे प्रजाओं को पुत्र के समान पालन करते थे। प्रति दिन प्रातःकाल महाराज अपने मंत्रियों के साथ सभा मण्डप में विराजते थे। और लक्ष्मण उनके छोटे भाई द्वार पर रहकर (कार्य्यार्थी) अर्थात् मायलों को आदर के साथ महाराज के हुजूर में लेजाते थे। महाराज आप उनका [अभियोग] अर्थात् फरियाद सुनकर मंत्रियों की राय लेकर ऐसा इन्साफ करते थे कि जिससे प्रजा को बड़ा संतोष होता था । यहां तक कि महाराज के न्याय से दण्डित को भी प्रसन्नता होती थी उनके राज में तो चोर का नाम भी न रहा। और प्रजा लोग सब तरह के सुख और समृद्धि से पूर्ण होकर प्रफुल्लित रहते थे। उस समय क्या शहर क्या गांव की ऐसी अवस्था हुई कि न कभी कोई बीमार होता और न कोई थोड़ी उमर का बूढ़े के सामने मरता था। छल की बात और अकाल मृत्यु तो संसार से उठ गई।

महाराज रामचन्द्र ने अपनी युवा अवस्था के प्रारम्भ ही में पिता का बचन मान कर चौदह बरस तक बनवास किया था। और उन्हीं दिनों में रावण जो लंका का राजा था महाराज की प्यारी स्त्री सीता को छल कर ले भागा वे उसको मार कर महारानी को घर लाये। वह तो परम

पतिव्रता थी और महाराज को अपने प्राण से भी अधिक प्रिय थी परन्तु महाराज प्रजाओं के मनोरंजन करने में यहां तक तत्पर थे कि जब उन सबों ने सीता का रहना रावण के घर में अनुचित समझा तब महाराज अपनी पतिव्रता स्त्री को परित्याग करके उसके वियोग में जन्म भर दुखी रहे। महाराज रामचन्द्र कैसे सत्यवादी और दृढ़ प्रतिज्ञ थे इस उदाहरण के लिये इतना ही कहना काफी है कि एक दिन किसी तपस्वी ने उनके पास आकर कहा कि मैं आप से कुछ गुप्त बात चीत किया चाहता हूं परन्तु उस समय जो वहां और कोई आदमी आवेगा तो उस को त्याग करना होगा। महाराज इस प्रतिज्ञा के अनुसार तपस्वी से बात करते थे कि इसी अरसे में लक्ष्मण को किसी ज़रूरत के लिये महाराज के सन्मुख जाना पड़ा। महाराज ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार ऐसे अपने प्यारे भाई जन्म के साथी लक्ष्मण को परित्याग किया।

इसके बाद कई बरस तक प्रजा का पालन करके जब महाराज ने स्वर्गारोहण किया उस समय प्रजा लोग अधीर होकर कहने लगे कि हा, रामचन्द्र सा राजा इस धरती पर न हुआ और न होगा। वे हम लोगों के सिर्फ राजा न थे बरन अति स्नेही पिता थे। जो अब दुःख हम लोगों पर पड़ेगा तो कौन हमारी रक्षा करेगा क्षुधा से व्याकुल होने पर कौन हम लोगों को अन्न देवेगा। अविनीत होने पर कौन हम लोगों को विनीत करेगा। और बिपत आने पर कौन हमारी सहायता करेगा।

महाराज के राज्य में रहकर अब दूसरे के अधीन रहना केवल दुःखही है। हाय कह नहीं सकते कि हम सबों ने कितना दुःख महाराज को दिया है। उन्हीं ने हम लोगों के मनोरञ्जन के लिये लक्ष्मी रूपा पतिव्रता सीता का भी परित्याग किया। क्या इस पाप से हम लोगों की मुक्ति हो सकती है नहीं प्राणान्त प्रायश्चित्त करने से भी इस पाप से छूटने में सन्देह है। और अब इस संसार में महाराज के बिना रहना हमलोगों का निष्फल है इस लिये आओ हम सब महाराज ही के साथ चलें क्योंकि हम लोगों का सांसारिक सुख महाराज ही तक रहा फिर अब क्यों इस पापमय संसार में रह कर दुःख भोगें।

प्रजा लोगों ने ऐसा विलाप और परिताप किया कि पागलसे हो गये और वे सब अति शोक के कारण सरयू में डूबकर वैकुण्ठ को सिधारे। जैसे असंख्य गौ एक साथ किसी नदी में तयरती हैं और जैसा वह नदी उस समय देख पड़ती है उसी तरह से सब पुरवासी सरयू में देख पड़ते थे इसी लिये सरयू को " गोप्रतारतीर्थ " कहते हैं जो अब तक संसार में प्रसिद्ध है।

॥ गुरुभक्ति ॥

दोहा।

एकहि अक्षर शिष्य को जो गुरु देत बताय।
धरती पर सो द्रव्य नहिं देकर उरिण उतराय॥

आयोध धौम्य।

अगले समय में आयोध धौम्य नाम एक ऋषि था जिस

के शिष्य का नाम आरुणिक था। एक दिन ऋषि ने उसको धान के खेत में बांध बान्धने के लिये भेजा। यद्यपि उसने वहां जाकर उसके बान्धने में बड़ी कोशिश की पर पानी का ऐसा तोड़ था कि जिस से वह उसको बांध न सका। तब वह सोचने लगा कि गुरु ने मुझे यहां बान्ध का पानी रोकने के लिये भेजा। जो मैं इसको न बान्धूगा तो सब पानी निकल जाने से धान के होने में बड़ी हानि होगी और गुरु की आज्ञानुसार न करने से मैं भी पाप का भागी हूंगा। तब लाचार होकर वह आप उस जगह पर लेट गया उसके लेट जाते ही पानी बन्द हो गया।

जब संध्या हुई और वह कुटी पर न गया तब उसका गुरु अपने जी में चिंता करने लगा कि क्यों अब तक आरुणिक नहीं लौटा फिर वह और चेलों को साथ लेकर उस खेत पर गया और उसको इस तरह से पुकारने लगा कि 'बेटा आरुणिक तुम कहां हो?'।

वह अपने गुरु का पुकारना सुन कर बोला कि महाराज मैं बान्ध बान्धता हूं जो यहां से उठूंगा तो मेंड़ तोड़ कर सब पानी निकल जायगा। यह सुन कर गुरु ने वहां जाकर देखा कि वह आप मेंड़ पर पड़ा है उसकी यह दशा देख कर और गुरु के काम में उसको ऐसा तत्पर जानकर वह उस पर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि बेटा अब मैं आज्ञा देता हूं उठो। तुम्हारे न्याय और गुरु भक्ति को कोई नहीं पा सकता क्योंकि मेरी आज्ञा पालने के लिये तुम ने इतना दुःख उठाया है। तुम ने केदार खंड

का (भेद) अर्थात उद्धार किया इस लिये तुम संसार में 'उद्दालक' के नाम से प्रसिद्ध होगी बेटा उठो अब अपने घर जाव ।

॥ मातृ पितृ भक्ति ॥

दोहा ।

जो दुखसुत पालन सहतपितुनितसत्य हिं धार ।
सो भू मण्डल हूं दिये नहीं तासु निस्तार ॥

भीष्मदेव ।

राजा शान्तनू जो कुरु बंश के थे उनकी पहिली स्त्री से एक लड़का जिसका नाम देवव्रत था पैदा हुआ । यद्यपि उस लड़के ने अनेक शास्त्रों को पढ़ा था परन्तु विशेष करके शस्त्र विद्या में अति पारदर्शी हुआ । उसकी विद्या, बुद्धि, सत्यवादिता, जितेन्द्रियता आदि समीचीन गुणों को देखकर प्रजा लोगों की प्रीति उस राजकुमार पर अधिक हुई ।

महाराज को उस पुत्र के सिवाय कोई और सन्तान न था । इस लिये महाराज को और दो एक पुत्र के होने की इच्छा जी में हुई । एक दिन महाराज जब शिकार करने के लिये निकले थे राह में राजा दास की कन्या को जिसका नाम सत्यवती था देखकर उनको वह इच्छा और अधिक हुई और उस राजकुमारी से विवाह करने की अभिलाषा उनके जीमें हुई । परन्तु देवव्रत सा सब गुणों में पूरा लड़का रहते हुए दूसरा विवाह करना अनुचित समझ कर महाराज ने अपनी इच्छा किसी पर प्रगट

नहीं किया और आप घर में आकर बड़े खेद में रहने लगे परन्तु अति विश्वासी प्रधान मंत्री ने महाराज के मनोगत अभिप्राय को जाना।

देवव्रत सदा अपने पिता के पास रहता था। वह अपने पिता को खेद में देखकर सोच में हुआ। परन्तु उसके पूछने से महाराज के खेद का कारण कुछ भी न खुला। वह बड़ा पिता का भक्त था इस लिये दिन दिन पिता को अत्यन्त खेद में देख कर खौफ में आया और उसका कारण जानने के लिये अतिउत्सुक हुआ। वह अति बुद्धिमान था इस लिये जब उसने देखा कि पिता अपने ज़ुबान से खेद का कारण न कहेंगे तब उसने प्रधान मंत्री के पास जाकर उस कारण को धीरे से पूछा और कहा कि मालूम होता है कि मैं ही पिता के खेद का कारण हूं। नहीं तो मैंने पूछा फिर वे क्यों नहीं बोले? मैं उन का पुत्र और भक्त दास हूं मुझसे किसी बात के कहने में क्या दोष है वे मुझ से न कहें तो आपही दयाकर कहिए मैं करने को तैयार हूं।

यह सुनकर प्रधान मंत्री ने उत्तर दिया कि राजकुमार! आप ऐसे बुद्धिमान से कोई बात कब छिप सकती है आप इस बात को खूब जानते हैं कि महाराज अपने दुःख का कारण आप से कहने में लज्जित होते हैं। जैसे आप महाराज के लायक पुत्र हैं-ऐसे सब को नहीं होते। महाराज आप ऐसे पुत्र को पाकर अपने को बड़ा भाग्यमान समझते हैं। परन्तु आप राजा के एक ही पुत्र हैं।

एक आंख को आंख नहीं कहते क्योंकि उस एक आंख के न रहने से अन्धा होना पड़ता है। उसी तरह एक पुत्र को पुत्र न कहना चाहिए। क्योंकि उसके न रहने से कुलका वृद्धि को हानि होती है।! अतएव महाराज दो एक पुत्र और होने की इच्छा से अपना दूसरा विवाह किया चाहते हैं। परन्तु इससे आप असन्तुष्ट होंगे इस कारण नहीं करते और ऐसा न करने से एक पुत्र के रहने का सदा महाराज को मानसिक दुःख बना रहता है। देवव्रत ने इस बात को सुनकर और असल कारण को जान कर उत्तर दिया कि मंत्रीजी बिना मा का घर बन सा है। पिता का विवाह होने से मा घर आवेगी यह भी बड़ी खुशी की बात है। इस मे मैं असन्तुष्ट क्यों हूंगा। तो और जो काम मेरे पिता विचारेंगे वे सब मेरे दुःख के कारण हो सकते हैं। मैं आप से यह प्रार्थना करता हूं कि जहां तक जल्दी हो सके कन्या ठहरा कर आप इस मंगल को प्रारम्भ कीजिए। प्रधान मंत्री देवव्रत की ऐसी पुष्प समान मनोहर वाणी सुन कर अति प्रसन्न हो बोला। कि राजकुमार जैसी आप की बुद्धि, विवेचना, पितृ भक्ति आदि गुण सब प्रगट हैं वैसे हो आप हैं। मैंने अब इस बात को जाना कि महाराज के दूसरे विवाह के होने से आप दुःखी नहीं हैं इसलिए मैं चाहता हूं कि यहीं पर राजा दास की परम सुन्दरी कन्या जिसका नाम सत्यवती है उसके साथ महाराज का विवाह होवे। महाराज कि इच्छा भी उसी से विवाह करने की है यह मैं भी जानता हूं। यह सुनकर देवव्रत ने कहा। कि

जो पिता की ऐसी इच्छा है, तो आज ही राजा दास को बुलाकर विवाह ठहराना चाहिए।

राज कुमार की यह बात सुनकर प्रधान मंत्री ने राजा दास को बुलाकर महाराज से और कई एक मंत्रियों के सामने सब हाल कहा यह सुनकर राजा दास थोड़ी देर चुप रहे फिर सोच कर बोले कि मेरी कन्या का विवाह महाराज के साथ होने से सब प्रकार से मेरा बड़ा भाग्य है इस में कुछ शक नहीं परन्तु महाराज से विवाह होने में मेरे लिये कुछ दुःख भी है। राजकुमार ने पूछा कि क्या दुःख है ? इस पर राजा दास ने उत्तर दिया कि केवल आप दुःख के कारण हैं? देवव्रत ने घबराकर फिर पूछा कि क्यों मैं दुःख का कारण हूं तब राजा दास ने हाथ जोड़कर कहा कि राजकुमार मेरा अपराध क्षमा कीजिये। महाराज से मेरी कन्या का विवाह होनेसे वह आपकी सौतेली मा होगी मैंने बहुत जगह देखा है कि जिस घरमें सौतेली मा और सौतेला लड़का रहता है वहां कल्याण नहीं होता। सौतेला लड़का अपनी सौतेली मा का और सौतेली मा अपने सवतेले लड़के का परस्पर सदा दोष देखलाते है और प्रति दिन वे घर के द्रव्य को अपने अधिकार में लाने की चिन्ता में रहते हैं। सवतेले लड़के के प्रबल होने से सवतेला मा का सदा चिन्तारूपी अग्नि में जलना होता है। इस लिये मैं अपनी कन्या को आप ऐसे सुशील की सौतेली मा करना उचित नहीं समझता। देवव्रत इस बात को सुनकर चुप होगया। तब प्रधान मंत्री ने कहा कि राजा आप

मैं जैसा देखा है वैसा कहती हूं परन्तु मेरी अवस्था भी अ-
धिक हुई और मैंने भी बहुत ज़माना देखा है इस से जान-
ता हूं कि ऐसी भी बहुत स्त्रियां हैं जिनको सौतेले लड़के
के होने से कुछ कष्ट नहीं होता। सवतेली मा के (नीचा-
शया) अर्थात कुटिल होने से और सवतेले लड़के के क्रूर
होने से बहुधा लड़ाई होती है। परन्तु जो सवतेली मा
बुद्धिमती और उदार होती है और जिसमें बुरे भले का
ज्ञान, दया, धर्म, सनेह और पतिकी भक्ति होती है और
जो किसी तरह का दुःख अपने पति को नहीं दिया चाह-
ती और उसमें अपना मन लगाती है और जिन सवतेले
लड़कों में बुद्धि, विवेचना, सरलता, उदारता, धार्मिकता,
पितृपरायणता, होती है ऐसी सवतेली मा और ऐसे सव-
तेले लड़कों में विवाद कभी नहीं होता।

ऐसे पड़ोसी जो दूसरों को लड़ाते हैं अगर वे हज़ारों
तरह की चेष्टा परस्पर लड़ाने की करें तोभी उन की बुद्धि
विपरीत नहीं होती। मैं ने ऐसे सवतेले लड़कों को भी
देखा है कि जब तक कोई उन के मन को नहीं बिगाड़ता
तब तक वे सवतेली मा को अपनी जननी समझते हैं।
देवव्रत का तो अलौकिक स्वभाव है। आप की कन्या जैसी
देवरूपिणी है मैं समझता हूं कि वह वैसी शीलमान भी
होगी इस लिये आपकी कन्या और देवव्रत के एक जगह
में रहने से कुछ बुराई न होगी ऐसा मुझको विश्वास
होता है देवव्रतने कहा कि राजा दास मंत्री जी जैसा
कहते हैं इस के सिवा और कुछ कहना यद्यपि अनुचित

होगा, तोभी मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आप की कन्या निश्चय मेरी मा होगी। इस लिए उसको मैं कभी किसी तरह से दुःख न दूंगा आप इस बात को सुनिएगा कि देवव्रत ने कभी अपनी प्रतिज्ञा भंग न की।

राजादास इस बात को सुन कर प्रसन्न हो बोले, कि राजकुमार, आप के ऐसा कहने से मुझे संदेह होता है परन्तु मन की बात छिपाना न चाहिये इसलिये इसको प्रगट करता हूं। मेरी इच्छा यह है कि जो महाराज मेरी कन्या से विवाह करें तो मेरा नाती उत्तराधिकारी हो परन्तु आप सा बलवान सपूत, परमचतुर जेष्ठ पुत्र के रहते हुए ऐसा नहीं हो सकता और जब ऐसा न होगा तो मेरी लड़की के महारानी होने से क्या लाभ है। इस से बेहतर यह है कि किसी सामान्य पुरुष की पत्नी होकर वह अपने पति की सब सम्पति के अधिकार में अपने पुत्र को तो देखेगी यही मेरी प्रार्थना है।

इन बातों को सुन कर देवव्रत ने कहा, रजा मैं अपने पिता के लिये जान देसकता हूं यह तुच्छ राज्य किस गिनती में है। मैंने प्रतिज्ञा की है कि राज, मैं न लूंगा पिता के बाद आप ही का नाती राजा होगा और मित्र करने के बदले में सहायता करूंगा। देवव्रत की यह बात सुन कर सब सभा के लोग आश्चर्यित हुये और राजा दास तो अतिप्रसन्न हुआ परन्तु कुछ सोच कर फिर बोला कि राजकुमार आपकी प्रतिज्ञा सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ पर एक बात मैं और जानना चाहता हूं। आप की

अपने पिता की भक्ति और अलौकिक उदारता से राजको छोड़ दीजीयेगा परन्तु जब आप को पुत्र होगा तो क्या उस को भी छोड़ दीजियेगा? या उस को जेष्ट पुत्र जान कर बल पूर्वक राज दीजियेगा और प्रजा लोग भी उसका पक्ष करना उचित समझेंगे। इस से भी मेरे नाती को राज पाने में विघ्न होगा इसलिये मैं अपनी कन्या का बिवाह महाराज से करना उचित नहीं समझता आप मेरा अपराध क्षमा कीजिये। इस बात को सुनकर देवब्रत कुछ काल तक चुप रहा फिर वह बोला कि राजादास जिसलिये मैंने राज को छोड़ा उसी कारण मैं अपना बिवाह भी न करूंगा। आज से जब तक जीऊंगा ब्रह्मचारी होकर रहूंगा।

यह प्रतिज्ञा जिस को मैंने सबों के सामने की है जो सूर्य पूरब से पच्छिम उगे तो भी न टलेगी। देवब्रत की ऐसी भयंकर प्रतिज्ञा को सुन कर सभा के लोग एक बारगी धन्य २ कह कर प्रशंसा करने लगे कि आज तक हम सबों ने ऐसा पिता का भक्त न देखा और इस तरह की उदारता और निष्पृहता, नहीं सुना उस जगह इस बात का बड़ा कोलाहल हुआ। फिर प्रधान मंत्री सबों को आज्ञा करके कहने लगा कि किसी २ राजकुमार ने अपने पिता और चचा को बुराई करके आप राजा होने की चेष्टा की है। पर मेरे राजकुमार ने तो अपने पिता की प्रसन्नता के लिये राज को तुच्छ समझा और अपनी युवा अवस्था में सांसारिक सुख को अपनी ज़िन्दगी भर छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

मैंने कभी किसी को ऐसी प्रतिज्ञा करते हुए नहीं सुना अब आप का नाम भीष्म होना चाहिये। सचमुच ऐसा ही हुआ कि उस दिन से सब लोग उनको भीष्म देव कहने लगे। राजकुमार ने भी बहुत दिन तक बिना बिवाह और अकलंक रह कर इस तरह से अपनी प्रतिज्ञा को निबाहा कि आज तक संसार में सत्यवादी, धार्मिक, दृढ़प्रतिज्ञ, जितेन्द्रिय, लोगों के मोका बिले में उनका दृष्टान्त दिया जाता है और नाम उनका अब तक भीष्म देव लिखा जाता है।

॥ उड़ियाबालक ॥

जब उड़िया के देश में अकाल पड़ा था उस समय एक लड़का जो आठ नव बरस का था किसी गांव में भिक्षा मांगने के लिए गया। उस समय किसी के घर में अन्न नहीं था और भिक्षुक बहुत थे कोई किसी को भिक्षा नहीं दे सकता था। वह गरीब लड़का नारियली लेकर उस गांव में तमाम फिरा पर कहीं उसको कुछ न मिला। बाद इसके वह भूख से व्याकुल और थका हुआ एक ब्राह्मण के द्वार पर पहुंच कर लेट गया उसकी यह अवस्था देख कर ब्राह्मण के जी में दया आई। ब्राह्मण ने कहा कि तुम भिक्षा लेजा कर क्या करोगे? मैं कुछ भोजन तुम को देता हूं इसी जगह बैठ कर खालो। वह गरीब लड़का यह बात सुन कर आंखों में आंसू भरलाया और कहा कि बाबा यहां मैं नहीं खासकता जो आप मुझको कुछ दीजियेगा वह मैं अपने घर लेजाऊंगा। उस ब्राह्मण

ने कहा कि इतना भोजन तुम नहीं पासकते कि घर लेजाकर सबको इस लिये यहीं बैठ कर खाओ। लड़के ने फिर जवाब दिया कि-जो मिलेगा उसी को घर लेजाऊंगा। खाने बिना मरना मेरा अच्छा है पर अकेला यहां नहीं खासकता। तब ब्राह्मण ने अपने जी में सोचा कि यह क्या अन्न लेजाकर बेचता है? ऐसे भयंकर दुर्भिक्ष में कितनी स्त्रियां अपने लड़कों का हाथ पकड़े हुये और कितने लड़के अपने बूढ़े मा बाप को धोखा देकर और कितने अपनी स्त्रियों के हाथ मे खाने की चीज़ छीन कर अपना पेट भरते हैं। स्नेह' भक्ति का तो नाम न रहा बल्कि कोई इस समय किसी का खाना नहीं देख सकता और न कोई खाद्य खाद्य का बिचार करता जिसको जो कुछ जहां मिलता वह वहीं उसका खाकर अपना पेट भरता है। इस लड़के की चेष्टा से यह मालूम होता है कि जो यह थोड़ी देर तक न खायगा तो अवश्य मर जायगा देखो तिसपर भी नहीं खाता। इस का क्या कारण है कुछ जाना नहीं जाता यह सोच कर उस ब्राह्मण ने पूछा कि बालक क्यों तुम यहां नहीं खाते? घर पर तुम्हारा कौन है? अपना सब हाल कहो।

बालक ठंढा सांस भर कर रोने लगा फिर धीरज धर कर बोला कि इस अकाल के शुरू में मेरा पिता जब हम सभों को रक्षा अन्न वस्त्र से न कर सका तब वह इस दुःख के कारण कहीं चला गया नहीं मालूम होता जीता है कि नहीं। मैं दो भाई था कुछ दिन तक तो मेरी मा ने मकान का पत्थर ईंट आदि असबाब बेंच कर हम दोनों

को पाला। जब घर में कुछ भी न रहा तब वह हम दोनों भाइयों का हाथ पकड़ कर भिक्षा मांगने के लिये घर से निकली। इस अकाल में तो कुछ मिलता न था पर जो कुछ कभी मिलता पहिले हम दोनों को खिला कर जो कुछ उसमें बचता उस को आप खाती थी। जिस दिन कुछ न बचता वह फाका करती थी।

इस तरह से जब कुछ दिन बीता तो मुझको बड़ा दुःख हुआ और यह दुःख मा का मुझ से देखा न गया इस कारण अकेला भिक्षा मांगने के लिये निकला हूं। मुझको जो कुछ मिलता है उसमें तीन आदमी का निर्वाह नहीं होता एक दिन ऐसा हुआ कि जब मैं भिक्षा मांगने निकला और घरपर कोई खबरदारी करने वाला न था इस से मेरा छोटा भाई कहीं कुछ तमाशा देखने के लिये गया मा भी अज्ञानता के कारण उसकी तलाश न कर सकी। वह भूख से व्याकुल होकर इधर उधर फिरने लगा। जब मैं भिक्षा मांग कर घर आया और अपने छोटे भाई को न पाया तब मैं रोता हुआ उसको ढूंढने निकला। बहुत जगह उस को तलाश किया और लोगों से भी पूछा पर कहीं उसका पता न पाया कल एक पड़ोसी ने कहा कि मैंने देखा है कि नदी के किनारे पर एक मरा हुआ लड़का पड़ा था जिसको शृगाल और कुत्ते खाते थे। तब मैंने जाना कि वही मेरा भाई था। यह हाल मैंने अपनी मा से नहीं कहा क्योंकि जब वह सुनेगी तो अवश्य मर जायगी। यद्यपि उसने ढूंढने को कहा। पर मैंने उससे यह कहा कि उसको एक आदमी

ने प्रति दुःखी जानकर अपने पास रख लिया है इसके सिवा मेरी मा और कुछ नहीं जानती। यद्यपि उसका वहां रहना सुन कर भी उसको दुःख हुआ परन्तु मेरे कहने पर उसको कुछ विश्वास हो गया। उस दिन से जो कुछ भिक्षा में पाता हूं पहिले उस को देकर तब मैं खाता हूं। एक दिन अब मैं भिक्षा मांग कर घर गया और मा उसको खा कर संतुष्ट हुई तब उसने मेरे मुख को चूम कर और रो कर कहा कि बेटा तुम कितना मेरे लिये कष्ट उठाओगे जिस दयालु ने तुम्हारे छोटे भाई को रख लिया है वही अगर तुमको भी रख लेवे तो तुम भी वहीं जाकर रहो। मेरे भाग्य में जो होगा मैं भी भोगूंगी तुम दुर्बल हो गये अब भिक्षा मागने मत जाओ। मा की ऐसी पुष्प समान कोमल वाणी सुन कर मेरा कलेजा फट गया। कुछ उत्तर मुझसे न दिया गया घर के बाहर आकर एक पेड़ तले बैठ कर मैंने अति विलाप किया।

कल तो मैंने कुछ न खाया आज भी वैसही बीता फिरते २ इतना दिन चढ़ आया पर कहीं कुछ न मिला। आप दया करके मुझको जो कुछ दीजियेगा उस को घर लेजाकर मा को खिलाऊंगा आज जो वह कुछ न खावेगी तो निश्चय है कि मर जायगी मा के दुःख से बढ़ कर मुझे दूसरा दुःख नहीं है। इसतरह से वह बात कर रहा था कि इसी अवसर में उस लड़के का चेहरा बदल गया आंख बाहर निकल आई और उसका सिर जमीन की तरफ झुक गया। ब्राह्मण उस बालक की अलौकिक मातृ भक्ति सुन कर और उसकी

अवस्था देख कर जल्द कुछ खाना लाने के लिये घर में गया परन्तु जब वह खाना लेकर घर से निकला तो देखता क्या है कि वह लड़का मर गया।

भ्रातृ स्नेह।

सोरठा।

लालित नेह समान एक गर्भ संभूत जो।
सकलभांतिसनमानिहिलिमिलिरहियेबंधुसों १

स्विट्‌जरल्यांड एक पहाड़ी देश का नाम है। वहां जाड़े के मौसिम में बहुत बर्फ पड़ती है और उस पर लड़के लोग काठ की खड़ाऊं पहिन कर खेलते हैं। एक बार दो लड़के जो सगे भाई थे बर्फ के रास्ते पर खेलते २ बहुत दूर एक बन में निकल गये। जहां से रात हो जाने के कारण वे लौट न सके।

वहां स्वाभाविक ठण्ड तो पड़ती ही थी परन्तु रात के हो जाने से लड़के जितना डरते थे उतना हीं सर्दी से भी दुखी थे। बड़ा ८ बरस का था पर अति बुद्धिमान और चतुर था और छोटा तो कमसिन था और कुछ समझता न था इसलिये वह अति शीत के कारण यह कह कर कि भैया बड़ा जाड़ा लगता है रोने लगा। यद्यपि उसका बड़ा भाई भी सर्दी से व्याकुल हो रहा था तोभी वह उस को समझाता था परन्तु वह नहीं समझता था। रात हो जाने के कारण जब वे बन से बाहर न निकल सके तब बड़े ने विचारा कि यहीं कोई शीत रहित स्थान तलाश करना

इसलिये यह सोच करें एक पहाड़ की गुफा में जाकर देखा कि यहां ठण्ड कम है तब बड़े ने वहीं अपने छोटे भाई को ले जाकर और अपना सब कपड़ा उतार कर उसको सर्दी से बचाने के लिये ओढ़ा दिया। जब इस से भी उसका जाड़ा न गया तब उसने आप उसके ऊपर सो कर किसी तरह रात को बिताया। अगर वह इस तरह अपनी बुद्धिमानी से उपाय न करता तो थोड़ी देर में दोनों जाड़ा खा कर मर जाते। परन्तु भाग्य वस दोनों बचे। थोड़ी देर बाद उन लड़कों का पिता उनको ढूंढ़ता हुआ वहीं आया। और अपने दोनों पुत्रों को देख कर आनन्द से फूला न समाया और बड़े का छोटे पर अति सनेह देख कर अति प्रसन्न हुआ। परन्तु घर से बहुत दूर चले आने के कारण लड़कों पर खफा हुआ। फिर अपने दोनों पुत्रों को गोद में लेकर कभी छोटे का और कभी बड़े का मुंह चूमता हुआ वह अपने घर को गया।



॥ दया ॥

चौपाई।

जैसे अति प्रिय तर निज प्राना।
तैसहिं सकल जीव जग जाना॥
आपु सरिस सबकहं जिय जानी।
दया करहिं साधू अरु ज्ञानी॥
जे जानहिं जननी पर नारी।

पर धन बिषहूं ते विष भारी ॥
जाकर भाव एक रस सब पहं।
सोइपण्डितविज्ञानिमधनिमहं॥
आलस हीन जे पर भ्रम हारी।
सुन्दर गुणा गार उपकारी ॥
ऐसो जो गुण ज्ञान बिचक्षण।
जानहु यह ज्ञानिन कर लक्षण ॥

करुणामय पाल।

किसी गांव में एक अमीर आदमी था उसके बाग मे उसका एक नौकर जिसका नाम करुणामयपाल था रहता था वह लिखना पढ़ना तो कम जानता था परन्तु पालना जानवरों का भली भांति जानता था। उस बाग में ज़मीन खोदने का काम तो वह नहीं करता था पर बाग के मालिक ने जो कई एक पशु पक्षियों को पाला था वह उन का पोषण करता था। बहुत दिनों तक इस काम के करने से उसका जी इस में बहुत लगा। वह उन सब पशु पक्षियों की खबरगीरी करता और उनका आहार इकट्ठा करता था। प्रति दिन उन सबों के इस तरह पोषण करने से हंस, कबूतर, मोर, आदि पक्षी और गाय, मेढ़ा खस्सी, हरिन, खरगोश, कुत्ता, बिल्ली, नेवल, आदि पशु उससे यहां तक परचे हुए थे कि जब कभी वह कहीं बाहर जाता था उस समय वे भी उस के साथ जाने की चेष्टा करते थे। जब वह बाहर जाने के समय दरवाज़े को बन्द करता था तब सब पशु पक्षी उसके पास जाना चाहते थे।

और जब तक वह कुछ दूर नहीं चला जाता था तब तक वे उसी की तरफ देखते थे और जब वह लौटता तब कबूतर और मैंना आदि पक्षी उसके सिर और कन्धे पर उड़कर बैठते थे और हंस, बिल्ली, कुत्ते, नेवला आदि उसके पीछे २ दौड़ते थे और जैसे छोटे लड़के अपने पालने वाले के बस में रहते हैं और वह उनको प्यार करता है उनसे अधिक वे सब पशु पक्षी उसको मानते थे।

एक बार किसी ज़रूरत से पाल को कुछ दिन के लिये कहीं जाना हुआ इस कारण उसके पाले हुए पशु पक्षी उदास रहते थे उनमें से कुछ तो थोड़ी २ देर के बाद बोलते थे और बाज़े खाते भी न थे, पर जब पाल लौटा उस वक्त जैसे बाप या भाई किसी का जब परदेश से घर आता है और उसकी तरफ छोटे लड़के गोद में बैठने की इच्छा से आगे दौड़ कर जाते हैं और कोई उसकी गोद में कोई पीठ पर कन्धे पर कोई उसके सिर को पकड़ कर अपनी तरफ खींचता है उसी तरह सब पशु पक्षी भी करने लगें। और भी जैसे लड़के आपस में लड़ते हैं और मज़बूत लड़का कम ज़ोर को मारने के लिए उद्यत होता है और उसके डर से कम ज़ोर लड़का अपने मा बाप या भाई के पास जाकर छिपता है उसी तरह पशु पक्षी भी जब कभी आपस में लड़ते तो पाल के निकट आ कर रहते थे।

बहुत दिनों तक पशु पक्षियों के पालने के काम में रहने से पाल को यह विश्वास हुआ कि स्नेह, ममता, कृतज्ञता, आदि धर्म जैसे आदमी में होते हैं पशु पक्षियों

म भी होते हैं। और यह भी उसने समझा कि जैसे अपने शरीर पर चोट लगने से और इच्छा के विरुद्ध कोई काम होने से हृदय में दुःख होता है पशु पक्षियों को भी उसी तरह होता है। इस लिए पाल उनको कभी किसी तरह की तकलीफ न देता और जब किसी दूसरे को उनको दुःख देते देखता जहां तक हो सकता उसको मना करता था।

एक दिन उस बाग के मालिक ने अपने मित्र के निमन्त्रण करने की इच्छा से एक पाले हुए खस्सी के लाने के लिए एक नौकर को भेजा जो तलवार लेकर उस बाग में गया और वहां [illegible] एक बड़ा खस्सी पकड़ कर [illegible] के लिए ले चला यद्यपि [illegible] खस्सी चिल्लाता और [illegible]ता था तो भी [illegible] बेचारे को [illegible] तरह से उस मारने वाले के हाथ से छुड़ा [illegible] और पाल के दोनों पैरों [illegible] उस जगह [illegible] के कारण वह वहां से नहीं निकल [illegible] तब वह उस मारने वाले को रोक कर [illegible] बाग के मालिक [illegible] रोता हुआ गया और उसके हाथ [illegible] खस्सी का जो [illegible]।

एक कुत्ता जिसको पाल [illegible] था बीमार हुआ पर उस की बीमारी [illegible] इतनी नहीं कि उसका [illegible] कठिन था इसलिए उसको [illegible] एक [illegible] जगह में भेजवा, [illegible] और मुक्त [illegible]। कुछ [illegible] बाद फिर वह उस कुत्ते को अपने साथ लेकर उस बाग में जहां पाल रहता था आया। कुत्ते ने पाल को देखते ही

उसके पांव पर मुंह रख कर अपने पांवों को ऐसा फैलादि या कि मानों मरगया। उसकी यह दशा देख कर पाल अति दुखी हुआ।

एक दिन पाल के पाले हुए एक बैल को लाद कर कहीं लेजाने का काम पड़ा उस आदमी ने जितना को बैल लेजाना था इतना बोझ उस पर लादा जो वह नहीं लेजा सकता था यद्यपि कई बार बैलने उस बोझ के लेजाने की चेष्टा की पर जब वह न लेजा सका बैठ गया इससे उस लादनेवाले ने फिर अनेक तरह से उस बिचारे को छड़ी से पीटा कि वह व्याकुल हो गया। इसी अरसे में पाल वहां आया बैलने उस की तरफ आंखों में आंसू भरकर देखा इस से पाल के जी में दया आई और उस लादने वाले पर बहुत खफ़ा हुआ और तुरन्त उससे बोझे को कम कराया।

इसी तरह पाल जब अपने पाले हुए पशु पक्षियों को तकलीफ में देखता तब उसके जी में दया आ जाती थी। क्रम से उसकी दयालुता सब जीवों पर इतनी बढ़ी कि जब वह किसी जीव को दुःख में देखता उस वक्त मानो वह आप उस दुःख में है औरों को भी उसी तरह समझता था। जो आदमी पशु पक्षियों पर इतनी दया करता है वह आ दुख में मनुष्य को देखे तो उसके जी में कितनी दया होती होगी और वह उसको दुःख से छोड़ाने के लिए कितना उपाय करेगा इस विषय के अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।



अलंकार ।

दोहा ।

भू भूषित भूपाल सों नखत सुभूषण चन्द ।
नारी भूषण है पती विद्या सबहिं कविन्द ॥

नैयाइक पत्नी ।

एक दिन पण्डित मथुरानाथ जो बड़े नैयाइक थे उन की स्त्री किसी नदी में स्नान करती थी उस समय उस जगह एक रानी भी जिसके साथ कई दासियां थीं नहाती थी । निदान कुछ छीटा पानी का पण्डित जी की स्त्री के कपड़े के फींचने का रानी के बदन पर पड़ा । इस कारण दासियों ने उसका बड़ा अपमान किया। परंतु वह सावधान होगई कुछ न बोली यह देख कर दासियों को और गर्व हुआ । पण्डित जी की स्त्री के शरीर पर कोई भूषण न था पर उसके हाथों में रंगे हुये सूत के दो कंकण थे जो सोहाग के चिन्ह थे । दासियों ने उसकी तरफ इशारा करके आपस में कहा कि सखियों अहंकार मत करो देखो इस को रंगा हुआ सूतही धन है । यह सुन कर पण्डित की स्त्री ने क्रोध में आकर कहा कि देखो मेरे हाथ का यह रंगा सूत जिसका प्रकाश संसार को प्रकाशित करता है इसके गिरजाने से तुम्हारी रानी के ए सब सोने के गहने का प्रकाश उस अन्धकार को कभी दूर न कर सकेगा ।

पतिव्रता ।

सवैया ।

तिय देखै जबै पिय को दुख में ।
दुख में होवू आपहुं गात कपावै ॥
आनन्द चित्त लखै निज स्वामिहिं ।
भामिनि मोद प्रमोद बढ़ावै ॥
प्राण पिया परदेश गये निशि ।
बासर कामिनि काय घटावै ॥
अन्तहुं साथ चलै पति के दुहि ।
भांति पति व्रत शास्त्र जनावै ॥

एक बार पहिला एडवर्ड जो इङ्गलेण्ड का बादशाह था जुडिया देश में गया। वहां पर एक मुसलमान ने एक ज़हर भरी हुई छुरी उसको छाती में मारी। बादशाह अत्यन्त व्यथित और कातर होकर तुरत वहां से लौट आया। बड़े २ डाक्टर और हकीम बादशाह के उस ज़खम को देख कर सोच में आये पर उसके अच्छे होने की कोई तदबीर उनके ध्यान में न आई। अन्त में एक बहुत होशियार डाक्टर ने यह तजवीज़ की कि अगर कोई ज़खम के खून को जिसमें ज़हर है चूस लेवे तो अभी बादशाह की जान बचती है।

परंतु जो उसको चूसेगा उसके जीने में सन्देह है। डाक्टर की यह तजवीज़ सुन कर बादशाह की परम पतिव्रता रानी जिसका नाम इलियानर था अपने पति की जान बचाने के लिए अपने जीवन को तुच्छ समझ कर तुरत उस ज़खम के खून को चूसने के लिए उद्यत हुई। बादशाह ने रानी का यह साहस देख कर कई बार उसको

सना किया और कहा कि प्रिये संसार में अपनी जान से बढ़ कर कोई वस्तु प्रिय नहीं है, सो तुम मेरे लिये ऐसे अनमोल जीवन रत्न के देने में उद्यत हुई। मैं यह देख कर मेरा अन्तः करण द्रवी भूत होता है और तुम ऐसीही पति व्रता गुणवती स्त्री हो यह बात तो आज मुझे मालूम हुई। परन्तु इस समय जो काम तुम किया चाहती हो अच्छा नहीं है। इस के चूसने से मेरी जान की रक्षा होगी कि नहीं यह तो कुछ जाना नहीं जाता परन्तु ऐसा करने से तुम्हारी जान जावेगी इस में कुछ शक् नहीं।

बादशाह ने इस तरह से उसको बहुत समझाया परन्तु रानी ने न माना वह उन्मत्त की तरह अधीर होकर दौड़ी और बादशाह के पास बैठ कर उस जखम के खून को ऐसा चूसा कि उस में ज़हर न रहा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ऐसी अपार महिमा है कि दोनों बच गए और उनको कुछ भी हानि न हुई॥

हिन्दूसती।

हिन्दू के शास्त्र की आज्ञानुसार सात्विक में स्त्रियां अपने पति के मरने पर सती होती थीं सन १८२८ ई० में गवर्नर जेनरल लार्ड उईलियम वेन्टिङ्क साहिब बहादुर के वक्त में यह रीति उठा दी गई इसके पहले एक बार एक आदमी के मरने पर हुआ तुरत लोग उसको गङ्गा के किनारे पर लेगये वहीं जाकर उन लोगों ने देखा कि एक मुरदा कपड़े में लपेटा रक्खो पर है और एक अधेड़ स्त्री उस मुरदे के पास बैठ कर उसके प्राणों को इस तरह छू रही थी कि मानो

उसको अपने सिर की तरफ झुलाती है। वह मुरदा सड़ गया था और उसके शरीर से ऐसा दुर्गन्ध निकल रहा था कि कोई उसके निकट नहीं जासकता था। और जो लोग उस मुरदे के साथ गए थे उनमें से कुछ लोग दूर खड़े थे और कुछ लोग और कामों के लिए गये थे और उस आदमी के साथ के लोगों ने सुना कि यह स्त्री अपने पति के साथ (सहगमन) अर्थात् सती होगी यह सुन कर सब आश्चर्य के साथ दूर खड़े होकर उसको देखने लगे।

थोड़ी देर के बाद थानेदार दो सिपाहियों के साथ वहां पर आया। और उसने पता ठिकाना पूछ कर इस तरह से लिखलिया कि यह मुर्दा ज़िलह जेसोर के फलाने गांव का है, जाति का ब्राह्मण, उमर इतनी, दो दिन तप आई थी इस कारण मर गया। इसकी स्त्री सती होने की इच्छा से गङ्गातीर पर आई है जिसका नाम हिन्दूसती है। उमर इतनी, दो लड़के नाबालिग हैं थानेदार ने और भी जो उस स्त्री से पूछा उसने यह उत्तर दिया कि "मैं अपनी इच्छा से अपने पति के साथ मरने के लिए उद्यत हुई हूं. किसी के कहने से ऐसा नहीं करती हूं और न कोई इसके लिए मुझे प्रवर्तित करता है मेरे लड़के बहुत बिलाप करते हैं पहिले जो स्नेह मैं इन पर करती थी उसको अब छोड़ती हूं फिर थोड़े दिन के बाद इन की प्रीति भी मुझ से छूट जायगी। मैं आशीस देती हूं कि ए चिरंजीव रह कर संसार के कर्मों का निर्वाह करें। मुझको तुम लोग अब मत रोको और न देर करो। जहां तक जल्द मैं

अपने स्वामी के निकट जा सकूं वह उपाय करो। मेरा पति बहुत कष्ट पाता है और दो दिन से स्वर्ग के द्वार पर जाकर लौट आता है मेरे न जाने से वह वहां कभी नहीं जा सकता इस लिए देर मत करो। थानेदार यह सब लिख कर और उसको सती होने की आज्ञा देकर वहां से चला गया।

इसके बाद लकड़ी की एक ऐसी ऊंची बड़ी चिता जिस में दो आदमी सो सकें बनाई गई। और उस की चारो तरफ चन्दन की लकड़ी धूना आदि वस्तु और कुछ सूखी लकड़ी घी में डुबोकर रक्खी गई। और उस मुर्दे को नहला कर और अच्छे कपड़े में लपेट कर लोगों ने चिता पर सोला दिया। उस स्त्री ने भी गङ्गा स्नान करके अपने विवाह के समय की तरह अपना शृंगार किया लालरङ्ग की साड़ी और फूल की माला पहिनी हाथ में नया शंख लिया और पांओं में महावर और मांग में सिंदूर लगाया रंगा हुआ सूत अपने हाथों में लपेटा और उसने चन्दन घिस कर उस मुर्दे के शरीर में लगा कर माला पहिरादी। बाद इसके शास्त्र की विधि के अनुसार पूजा और मंत्र पाठ होने लगा।

गङ्गा के तीर पर एक बजरा बन्धा था और उसमें एक अङ्गरेज़ था वह बजरे की झिलमिली की राह से सब देख रहा था। जब यह उस साहिब से देखा न गया तब वह अपनी मेम के साथ वहां गया परन्तु उसको देख कर सब बोले।

वह साहिब बांगला जुबान अच्छी तरह जानता था इस लिये उसने उसी जुबान में उसी से कहा कि तुम सत मत डरो उस स्त्री से मैं कुछ पूछा चाहता हूं यह कह कर उसने उसको पुकार कर कहा कि मा यह तुम किस लिये क्या करती हो ? आत्मघात सब पापों से बड़ा है। मैंने सुना है कि हिन्दू के धर्म शास्त्र में यह लिखा है कि जो आत्मघात करता है उसको कभी अच्छी गति नहीं होती बल्कि बहुत काल तक उसको अन्धतामिस्र नर्क में रहना पड़ता है।

तुम क्यों अपनी इच्छा से यह महापाप करती हो? हिंदू के शास्त्र में जो विधान सती होने का लिखा है उस को विधि न कहना चाहिए बल्कि वह महा अविधि है।

परिवार लोग भी ऐसे निठुर होते हैं कि जो लोगों के हसने के डर से और अपने स्वारथ के लिये अज्ञानी स्त्री को सती होने की सलाह देते हैं और ऐसे बुरे काम को देखते हैं। जब तक पति जीता रहे उसकी आज्ञा में रहना स्त्री का धर्म्म ही है परन्तु जो अपने पति के मरने पर आप भी मरने को उद्यत होती है इस विषय में भ्रान्त और निठुर हिन्दू धर्म्म के सिवा और कोई कुछ नहीं कहता मरने के बाद यह जीव कहां जाता है और किस तरह रहता है यह किसी को मालूम नहीं हो सकता इस लिये वह पति जो मर गया है उसका फिर मिलना सम्भव नहीं है। तो फिर कौन अनिश्चित और असम्भव वस्तु के लिये व्यर्थ आशा रख कर इस अनमोल जीवन को जलती हुई आग में देवेगा ? और कौन

अकारण मरने के दुःख को सहेगा ? कौन परमेश्वर के सामने अपराधी होगा ? इस लिये मा अब शान्त हो और ऐसा मतवाली तुम्हारी यह अवस्था देख कर मेरा हृदय फटता है स्त्रियों की यह बात सुन कर उसने कहा कि बाबा तुम मेरे पुत्र के समान हो इसलिये इस काम में दखल मत दो प्राण देने से आत्मघात होता है और यह महा पाप है मैं भी जानती हूं पर धर्मशास्त्र में लिखा है कि पति के साथ सती होने से आत्मघात का दोष नहीं होता तुम मेरे शास्त्र को नहीं जानते इस लिये निन्दा करते हो। हिन्दू के शास्त्रों को उन ऋषियों ने जो भूत भविष्य वर्तमान के जानने वाले हैं रचा है। वे मनुष्य नहीं थे बल्कि परम दयालु भगवान के अवतार थे।

इस लिये उन का वचन वेद वाक्य के समान है। न वे निठुर और न स्वार्थी थे इसलिए कभी उनका वचन झूठा नहीं हो सकता। उनके सिद्धान्त के अनुसार रात और दिन होता है। चन्द्रमा और सूर्य में ग्रहण लगता और भूकंप होता है। मैंने पण्डितों से यह सुना है कि जो स्त्री पति की जलती हुई चिता में प्रवेश करती है वह अरुन्धती के तुल्य होकर मनुष्य के शरीर में जो साढ़े तीन करोड़ रोम हैं उतने बरसों तक अपने पति के साथ स्वर्ग में बास करती है और मा, बाप, और ससुर तीनों कुलों का उद्धार करती है पति कैसा ही पापी क्यों न हो परन्तु पतिव्रता उस के साथ जलकर उस को उस पाप से छोड़ाती है।

... पति के मरने पर पतिव्रता का उसके साथ जलनाही

धर्म है। इस लिये मेरे इस धर्म की रक्षा करने में बाबा तुम बाधक मत हो। साहिब उसकी ऐसी अचला भक्ति को देखकर आश्चर्यित हुआ और उससे और कुछ कहना नि- ष्फल समझ कर बोला कि मा देखो ये तुम्हारे दोनों लड़के अभी कमसिन हैं और बेबाप के होगये हैं पर जब तुम भी न रहोगी तो ये दोनों बे मा बाप के होकर बड़ी दुर्द- शा में पड़ेंगे और इनका क्या हाल होगा। कौन समय पर भोजन और प्यास लगने पर इन को पानी देवेगा, और को- न रोने पर इनको धीरज देवेगा और बीमार होने पर कौ- न इनको दवा करेगा जब तुम इन को छोड़ दोगी तो ये अति दुःख भोगेंगे यह समझ कर मेरा जी व्याकुल होता है।

पति के साथ न जलने को तो तुम महा पाप समझती हो पर मा क्या इन अनाथ बच्चों को छोड़ने में निठुरता नहीं है? क्या इसमे अधर्म न होगा? इस बात के सुनने से उस स्त्री के मन का भाव कुछ पलटा और उसके लड़के जो आंखों में आंसू भरे हुए उसके समीप खड़े थे उनकी तरफ दौड़ी और दोनों को गले लगाकर कभी बड़े और कभी छोटे का मुख बार बार चूमने लगी। और उसकी आं- खों से आंसू की धारा बह चली लड़के भी रोने लगे यह दे- ख कर उस के साथ के लोग भी रोने लगे। साहिब और मेम की आंखों में भी आंसू भर आया।

सब लोगों के शोक को देखकर वह स्त्री कुछ देर तक सिर झुकाए हुए चुपचाप खड़ी रही फिर सब लोगों को

आंसू भरके और अपनी आंखें बन्दकर-साहिब से उसने कहा कि साहब पति और पुत्र के साथ इस संसार में रहकर के सुख भोगना मेरे भाग्य में नहीं लिखा है और जो बातें लिखा है वह कभी नहीं हो सका। मेरे लड़के अब इतने छोटे नहीं हैं मेरे बाद थोड़े दिन तक तो इनको दुःख होगा फिर कुछ भी न रहेगा यदि मैं लड़कों के स्नेह से इस समय अपने पति के साथ न जाऊंगी तो लड़कों के लिये कुछ अच्छा होगा परन्तु मेरे लिये यह बुराई होगी कि बहुत दिनों तक मुझको पति के साथ स्वर्ग में रहने का सुख न मिलेगा। शास्त्र में लिखा है कि लायक पुत्र के सुख की अपेक्षा पति का सुख अधिक होता है। शास्त्र में जो लिखा है सो सब सत्य है। इतना कहकर उसने आकाश की तरफ देखा और कहा कि देखो मेरा पति मेरे जाने में देर जानकर इस सन्देह में पड़ा है कि यह आवेगी या नहीं प्राणनाथ ठहरो २ अब कुछ देर नहीं है मैं बड़ी निठुर हूं कि कि तुम बिन इतनी देर तक ठहरी रही अब न ठहरूंगी अभी तुम्हारे पास आती हूं यह कह कर वह चिता की तरफ दौड़ी और उसने अपने बड़े लड़के को चिता में आग देने की आज्ञा दी। और आप अपने पति के चरण में प्रणाम करके सात बार उस चिता की प्रदक्षिणा की और पति की बाईं तरफ जाकर बैठ रही और उसने उसके बायें हाथ को अपनी गरदन के नीचे और अपनी दहिनी भुजा को उसकी गरदन के नीचे रख कर उस सड़े दुर्गन्ध से भरे हुए मुर्दे को आलिङ्गन करके नेत्रों को बन्द कर लिया। सब

लोगों ने जब उस पतिव्रता को ऐसा करते देखा तब चारो तर फ से हरि २ कहकर उस सती की प्रशंसा करने लगे इसके बाद उसके पुत्र ने विधिवत अग्नि संस्कार किया। चिता के जलने पर आंच की असह्यता के कारण यदि कोई सती उठ भागे तो लोगों में उसकी बड़ी निन्दा होती है इस लिये लोग दोनों को इकट्ठा बान्ध देते हैं जिससे वह स्त्री न उठ सके यह समझ कर उसके साथ के लोग जब बांस लगा कर दोनों को एक साथ बान्धने लगे तब वह सती बोली कि सावधान २ तुम लोग मुझको मत बांधो तुम लोगों के लिये कुछ डर नहीं है मैं जैसी सती हूं तुम लोगों को आगे मालूम होगा यह वह कह रही थी कि उसका शरीर जलने लगा। लोग बहुत सा गुग्गुल, घी, राल आदि वस्तु उसके ऊपर डालने लगे चिता के जलने का धू २ शब्द होने लगा परंतु वह पतिव्रता एक बार भी न हिली थोडी देर में दोनों उस चिता में जल गये।

देखना चाहिये कि हिन्दू की स्त्रियों का कैसा अद्भुत धर्म था और शास्त्र पर कैसा दृढ़ विश्वास था पारलौकिक सुख में उनकी कैसी लालसा और सांसारिक सुख में कैसी अरुचि थी और अपने पति में उनकी कैसी असाधारण प्रीति थी। जब तक सती कर्म होता रहा तब तक वह साहिब भी इन सब बातों को अपने दिल में समझता हुआ वहां खड़ा रहा उसने चलने के समय अफसोस करके कहा कि अकृत्रिम सती धर्म अगर संसार में कहीं है तो खास करके हिन्दू की स्त्रियों में पाया जाता है।

प्रथम भाग समाप्तम्।

परिशिष्ट।

शिष्टाचार।

परिवारसम्बन्धी।

(मुरब्बी और शिक्षकों के देखने के योग्य)

१। लड़कों को लडकपन से भक्ति और नम्रता की शिक्षा देनी चाहिए। इस लिए परिवार के लोगों में एक नियम करना उचित है जिससे सदा सुबह के वक्त लड़के हाथ मुंह धोकर और साफ़ कपड़ा पहिर कर घर के स्वामी के पास अदब के साथ जावें और उसको प्रणाम करें।

२। लड़के अच्छी बातें सुनें इसके लिए चेष्टा करनी ज़रूर है। जब कोई बुजर्ग किसी लडके को शिक्षा देवे और वह लड़का उसकी शिक्षा के अनुसार न करे तो परिवार के लोगों को चाहिए कि उसको बारंबार उस काम के करने के लिए शिक्षा देवें और उस काम को उससे करावें।

३। लडकों को लड़कपन ही से काम करने की इच्छा अधिक हो ऐसी चेष्टा करनी उचित है। इस लिए उनको जलपान या भोजन कराने के समय गृहस्वामिनी आप वहां जावें और सब लड़कों में से जिसकी उमर अधिक हो उससे औरों को भोजन दिलावे। पहिले सब से छोटे को उसके बाद उस से बड़े को और इस तरह औरों को भी दिलवाना चाहिए कि जिससे बड़ा छोटे का आदर करे ऐसा अभ्यास उनको करा देना उचित है।

४। लड़कों को ऐसी भी शिक्षा देनी चाहिए कि उनके

को में लड़कोपन से दया उत्पन्न हो और दूसरों का संकोच करें। भिक्षुकों को जब कुछ देना हो तो लड़कों के हाथ से दिलाना चाहिए। भिक्षुकों को फेरना या उनको कटुवचन कहना लड़के या लड़कियों के सामने उचित नहीं है।

५। लड़कों के परिहास का स्वभाव छोड़ाने का विशेष यत्न करना चाहिए अगर वे कोई पशु या पक्षी पालें तो प्रति दिन उचित समय पर उसको अन्न जल देवें इसको भी शिक्षा देनी उचित है। लड़कों की अवस्था और बुद्धि के अनुसार उनको किसी २ काम के करने की शिक्षा देनी और उनके पास जाकर उस काम को देखनी भी चाहिए उनको पशु या पक्षी पालने न देना चाहिए क्योंकि वे लिखने पढ़ने के समय विघ्नद होते हैं। समय पर उठने, कसरत करने और पाठ अभ्यास करने और सोने के लिए एक ख़ास कायदा उन के लिए मुकर्रर करना चाहिये।

६। जाति विरोध अति दुःख का मूल है। परन्तु हम लोगों की पारिवारिक व्यवस्था ऐसी है कि लड़कपन ही से जाति विरोध प्रारम्भ होता है। बड़े और छोटे चाचा के लड़के आपस में राग द्वेष करना सीखते हैं इसलिये गृहस्वामी या स्वामिनी को चाहिये कि उनके राग द्वेष को छोड़ा देवें अर्थात सब स्थानों में बिना पक्षपात उनका इन्साफ करें और उनको खाना, कपड़ा, गहना आदि के देने में घर के मालिक को समदर्शी होना चाहिये। ख़ास करके लड़कों को देर तक विवाद करने देना न चाहिये।

७। लड़के बहुधा घर की चीज़ को ख़राब करते हैं।

इस लिये जहां तक हो सके उनको यह आदत जल्द छोड़ानी चाहिये। उनको खेलने के लिए ऐसी कोई चीज़ देनी चाहिये कि वे घर की चीज को खराब न करें बल्कि उनको ऐसा अभ्यास कराना उचित है कि मकान के बरतन आदि वस्तु की रक्षा और अपना २ पुस्तक और कपड़ा उचित स्थान पर रक्खें।

८। आत्मगौरव के कारण मनुष्य बुरे कामों से बचता है इस लिये पहिले से लड़कों के हृदय रूप क्षेत्र में आत्मगौरव का अंकुर रोपना चाहिये। बाप दादों का नाम और उनकी बड़ी २ कीर्ति लड़कों को बाल्यावस्था से बता देना उचित है उनको जाति और देश के प्रसिद्ध लोगों का नाम और उनकी नेकनामी भी जतादेनी चाहिये। लड़कों को पुराण और शास्त्रों के उपदेश और बड़े २ कामों के करने की शिक्षा भी देनी चाहिये।

९। लडकों का उत्साह भंग करना न चाहिये। इसलिये जब वे किसी काम के करने के लिये उद्यत हों तो उनको कभी रोकना न चाहिये अगर वे इच्छा के विरुद्ध भी कुछ करें तो उनको करने देना चाहिये और ऐसा उपाय भी करना चाहिये कि उनके जी में किसी तरह का दुःख न हो क्योंकि इच्छा अनुसार काम न होने से जी में दुःख होता है।

१०। बड़े काम की आशा रखने से प्रायः बड़ा फल मिलता है इस लिये लड़कों का उत्साह बढ़ाना चाहिये। ऐसा करने से एक दिन वे बड़े आदमी होंगे और अपने परि-

की अवस्था बढ़ावेंगी और अपने देश के लोगों का बड़ा उपकार करेंगे इस तरह की शिक्षा अगर लड़कों की बाल्यावस्था से दी जावे तो इससे उनको बड़ा लाभ होगा।

११। आत्म समाज सब धर्मों का मूल है। इसको जानने में प्रायः लड़कों का मन नहीं लगता। इसलिये ऐसा उपाय करना चाहिये कि जाति के लोगों की और अपने देश की रीति, नीति, का गुण और उसका फल उनको युवा अवस्था में देख पड़े। लड़कों को दूसरे देश के विजातीय मनुष्य के समान रूप और रीति नीति का अनुकरण करने देना न चाहिये और घर, द्वार (प्राचीर) अर्थात् कोट की दीवार, वस्त्र, आदि असबाबों में चूना, तेल सियाही आदि लगाना उनको उचित नहीं।

१२ लड़कों को करज़ लेने न देना चाहिये यदि कागज़, स्लेट, पेंसिल, कलम आदि वस्तुओं की ज़रूरत हो तो उन को लेने देना चाहिये परन्तु वे उधार लेकर जलपान न करें।

पड़ोसी सम्बधी शिक्षा।

१ अपने लड़कों को पड़ोसियों के लड़कों के साथ खेलने देना चाहिये, अगर किसी पड़ोसी के लड़के को अपना लड़का कोई खेलने को चीज़ या और कोई वस्तु देवे तो उस से खुश होना चाहिये और जो पड़ोसी का लड़का अपने लड़के को कुछ देवे तो अपने लड़के को ऐसा उपदेश देना चाहिये कि वह भी उसके बदले उसको कुछ देवे।

२ अगर अपने और किसी पड़ोसी के लड़के में कुछ विवाद हो तो बिना पक्षपात ऐसा इन्साफ करना चाहिये कि उन की तकरार छुट जाय ॥

अगर किसी पड़ोसी का लड़का बीमार हो जावे तो अपने लड़के के सामने उसके दुःख की चर्चा करनी चाहिये मगर कुछ सहायता की आवश्यकता हो तो उसको अपने लड़के से दिलवा देनी उचित है।

४ पड़ोसी के लड़के का कोई शुभ कार्य्य या उसकी उन्नति सुन कर अति प्रसन्न होना चाहिये और अपने लड़के को भी यथोचित आनन्द प्रगट करने की राह दिखा देनी उचित है। आपस का डाह महा पाप है इससे बचने के लिए अपने मन वच कर्म से चेष्टा करनी चाहिये इर्षा करना बहुत बुरा है क्योंकि यह पुश्त दरपुश्त नहीं चलती ॥

५ अपने और पड़ोसी के लड़कों का समकक्ष है इस लिये उस समकक्ष के मां बाप अपने लोगों के समकक्ष हैं, अतएव सपाठियों के मा बाप को मानना उचित है ऐसी शिक्षा भी लड़कों को देनी चाहिये।

६ पुर्षों और उनके समकक्ष व्यक्तियों का नाम लेकर पुकारना या उनके विषय में अनुचित कहना शिष्टाचार के विरुद्ध है। उन लोगों का आदर करना नीति शास्त्र का मुख्य उद्देश्य है इसलिये लड़कों को नीति के अनुसार शिक्षा देनी उचित है॥

७ बूढ़े चाहे जाति के हों या परजाति के उनका सन्मान न करना अनुचित है। किसी शिष्ठ को आते हुए देख कर

उस को आगे से दौड़ कर लेआना चाहिये और आदर के साथ उसको अच्छी जगह में बैठा कर जो कुछ वह कहे, उसे ध्यान देकर सुनना चाहिये।

आगन्तुक शिक्षा।

१ अगर कोई अपरिचित शिष्ट आवे और उसका नाम और आगमन आदि पूछना हो तो उससे संकोच के साथ पूछना चाहिये लड़कों को ऐसी शिक्षा पहले से देनी उचित है। 'जैसे महाशय आप कहां से आते हैं ? क्या मैं आप का समाचार अपने पिता के पास कहला भेजूं या मैं जाकर क्या उनसे कहूं दया कर कहिए।

२ घर का मालिक जब कुछ बात चीत किसी अपरिचित मनुष्य से कर रहा हो तो उस वक्त बिना पूछे, लड़कों को कुछ कहना न चाहिये क्योंकि यह शिष्टाचार के विरुद्ध है ऐसी शिक्षा भी लड़कों को देनी अति उचित है।

३ बड़ों की बात चीत में दखल देना उचित नहीं और वहां असावधान की तरह बैठा रहना भी भला नहीं इसलिये ऐसे वक्त में लड़कों को वहां न रहना चाहिये पहिले से इस की शिक्षा लड़कों को देनी उचित है।

४ राह में किसी शिष्ट को देख कर सिर झुकाए हुए और उससे कुछ दूर हट कर जाना चाहिये कि उसके शरीर का स्पर्श न हो अगर वह अपने से बड़ा या जाति में श्रेष्ठ हों तो उसको नमस्कार करना चाहिये। और मुसलमान या अंगरेज़ हो तो उसको सलाम करना उचित है।

५ जब कोई आफ़िसर या रईस ऊपर लिखी हुई जाति का पाठशाला में आवे तो दौड़ कर उसके पास जाना और सिर झुकाए हुए खड़ा रहना चाहिये और जब तक वह बैठनें को आज्ञा न देवे कभी बैठना न चाहिये। मगर शिक्षक जाति में उत्तम भी न हो तो भी उसको प्रणाम करना उचित है।

६ शिष्ट लोग सभा में जैसा व्यवहार करें उसको सावधान होकर आप भी करना चाहिये। जब सब लोग खड़े हों तो खड़ा होना और बैठें तब बैठना चाहिये।

७ जब किसी अपरिचित शिष्ट से मुलाकात करनी हो तो पहिले उसको आज्ञा लेकर तब उसके पास जाना चाहिये।

परन्तु ठीक समय पर हाज़िर होने में देर करनी न चाहिये। बिना बैठाये और न आप आसन लेकर बैठना चाहिये और कुछ कहना हो तो साफ२ और सावधानी से कहना और उसकी आज्ञा लेकर विदा होना उचित है। आने और जाने के समय यथोचित प्रणाम आशिर्वाद करना चाहिये।

साधारण।

१ सदा सच बोलना चाहिये झूठ बोल कर किसी विपतसे बचूंगा ऐसा न सोचना। क्योंकि झूठ बोलने वाले बहुधा आपद में पड़ते हैं।

२ बिना पूछे किसी की वस्तु लेनी चोरी करनी है इस

लिये किसी की साधारण वस्तु को भी खोटना न चाहिये, इस विषय में और कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं।

३ [अश्लील] अर्थात बेहूदगी की बातें कभी करनी न चाहिये। बल्कि इस बात की प्रतिज्ञा करनी उचित है। यह व्यवहार अपनी उमर के लोगों से भी करना उचित नहीं।

४ जहां बेहूदा नाच या गाना होता हो वहां न रहना न सुनना और उसको न देखना चाहिये।

५ जिस बात के सुनने से किसी के हृदय में दुख हो उस को लिख कर किसी का परिहास करना उचित नहीं।

६ अगर किसी से ऋण लो तो उसको ठीक समय पर अदा करो अगर वक्त पर अदा न हो सके तो उसके न दिये जाने का सबब महाजन के पास जाकर कहना चाहिये। कितने लोग ऋण लेकर भूल जाते हैं इस से बढ़ कर दूसरा पाप नहीं।

७ अपना बड़ाई आप न करनी चाहिये क्योंकि कोई इस को पसन्द नहीं करता इस लिये जब अपने विषय में कुछ कहना हो तो सावधान होकर इस तरह उस प्रसंग को बयान करना चाहिये कि जिससे कोई यह न समझे कि यह अपनी तारीफ करता है।

८ बुद्धिमान, विद्वान और सच्चरित्र अर्थात जिनका आचार व्यवहार उत्तम हो उनका संग करना चाहिये।

९ मन में बुरी बातें आने देनी न चाहिये क्योंकि उसके अनुसार कोई काम करने से बुरे काम से बढ़ कर तुम को पाप रूपी कीचड़ में फंसावेगी।

१० अगर तुम किसी धनी के लड़के हो और तुम्हारे साथ के पढ़ने वाले या कोई जाति के लड़के गरीब हों तो तुमको उनके साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये कि जिस से उनके जी में तुम्हारा धन गर्व किसी प्रकार प्रगट न हो अगर वे तुम्हारे मकान पर आवें तो उनको एक आसन पर बैठाना चाहिये आप गद्दी पर बैठ कर उनको नीचे कभी बैठने देना न चाहिये।

११ अगर बड़े लोग किसी तरह का अपमान भी करें तो भी उनके साथ विवाद न करना बरन चुप रहना ही उचित है।

१२ कोई किसी तरह की बात कहे तो उसका विरुद्ध वादी होकर अपना पौरुष प्रकाश करना किसी तरह उचित नहीं क्योंकि जब कोई कुछ कहता है तो उसमें प्रायः कुछ न कुछ (तथ्य) अर्थात उचित बात रहती ही है। इसलिये उस पर ध्यान देने से दूसरे का विरुद्धवादी होना नहीं पड़ता। ऐसा करने से सत्य ज्ञान का मार्ग साफ रहता है। आप दूसरे के साथ मिलना और दूसरों को अपने साथ मिलाने की चेष्टा करनी मनुष्यता है। सब वस्तुओं से स्वतंत्र होकर रहना मनुष्य का यह सदगुण नहीं है।

१३ जब आपस में कोई बात करता हो तो उसको छिप कर सुनना न चाहिये।

१४ बिना पूछे किसी का पत्र खोल कर पढ़ना उचित नहीं।

१५ दूसरे के काम में दोष लगाना या किसी दूसरे के दोष के प्रकाश करने में स्वयम् उद्यत होना न चाहिये।

परिशिष्ट समाप्तम्।

शुद्धिपत्र

कतावों का शुद्ध छपना बहुत कठिन है। इस पाण्डुलिपि में मैंने बहुत इच्छा की थी कि ग्रन्थ बहुत शुद्ध छपे पर किसी आकस्मिक कारण से मुझे कुछ दिन के लिए काशी में रहना पड़ा और इसी अरसे में ग्रन्थ छप गया अतएव सज्जन लोग भ्रम सुधार कर पढ़ेंगे और अज्ञात अपराध को क्षमा करेंगे।

अशुद्ध		शुद्ध		पृष्ठ	पंक्ति
अगूठी	...	अंगूठी	...	२	४
करन	...	करना	...	६	१२
की	...	को	...	७	७
म	...	मा	...	११	१२
दिना	...	दिन	...	११	२१
थोड़ी	...	थोड़ी	...	१५	१२
भगल	...	भगले	...	२१	६
विद्याथा	...	विद्यार्थी	...	२३	१
कोऊ	...	कोउ	...	२४	८
सब चीजां की		सब चीजों के		२५	१
कु	...	कुरी	...	२७	६
विद्यथियों	...	विद्यार्थियों	...	३०	१६
जमीदार	...	जमीदार ने		३८	२
इक्षा	...	इच्छा	..	३८	११
नायब का	...	नायब की	...	३८	१५

कसरत थी	कसरत थी	४०	३
बड़ा ...	बढ़ा ...	४१	२१
इच्छा से ...	० ...	४२	२२
जान ...	जान ...	४५	१६
ममहर ...	ममहर ...	५२	२१
दूंगा ...	दूंगा ...	५३	१२
पस ...	पेश ...	५४	२०
मुख ...	सुख ...	५५	१५
उसके ...	उसको ...	५८	१४
को ...	की ...	५८	८
[illegible] ...	इच्छा को ...	५८	२३
क्या ...	क्यों ...	६१	१२
सवतेला ...	सवतेली ...	६२	२०
रणा ...	राणा ...	६४	१६
तुच्छा ...	तुच्छ ...	६४	१७
ता अवश्य ...	तो अवश्य ...	६७	१५
आवश्यकत ...	आवश्यकता ...	७५	२२
एसीही ...	ऐसीही ...	७८	४
सब ...	सम ...	८१	११
की ...	० ...	८४	१६



(Extract from orders on the book)

The Hindi translation of the Bengali Nitipath by Pundit Jay Narayan Misra of the Patna Normal school is in my opinion a good Hindi Reader for schools. It contains lessons on morality and its language is correct and clear.

CHHOTU RAM TIWARI
Assistant Prof, of Sanskrit-
Patna College-

BANKIPORE,
The 1st Dec. 1882.

This book of Pundit Jay Narayan Misra seems to be a very valuable addition to the Hindi literature It is desirable that the author may receive the support of the public for the trouble he has taken in translating the book from Bengali.

ABDUL RAHIM
Deputy Inspector of schools
PATNA

BANKIPORE,
The 2nd, Dec,82.

यह किताब पण्डित जयनारायण मिश्र पटना नार्मल स्कूल की हिन्दी जबांदानीमें बहुत उमदो और माकूल बनी है मज़मून उसके नफीस कि उसके सुनने से दिल की कली खिल जाय एबारत सलीस कि उसके समझने में किसी तरह की दिक्कत न हो मुहावरा उसका दुरुस्त अहल ज़ुबान के मुआफ़िक यह किताब क्यों ऐसी न हो कि पण्डित जी ने उसके बनाने मे बड़ी मिहनत की है और बड़ी छान बीन से यह किताब बनी है मैंने शुरू से आखीर तक इस किताब को देखा है वर्नाक्युलर के इमतहान मे यह किताब जारी होने के लायक है।

द० अमीर अली
हिन्दस्तानी और पर्सियन टीचर
पटना नार्मल स्कूल

बांकीपुर
२ री दिसेम्बर सन १८८२

[इस पुस्तक की सर्टिफिकट इस पृष्ठ के पीछे देखो]

NOTICE

☞ सर्व साधारण को प्रगट हो कि जिस पुस्तक पर ग्रन्थकर्त्ता जयनारायण मिश्र हेड् पण्डित पटना नार्मल स्कूल के हाथ की दस्तखत हो उस को देखकर लेनेवाला यह किताब लेवे और जिस पर ग्रन्थकार के हाथ की दस्तख़त न रहेगी वह किताब चोरी की समझी जायगी जिसके ख़रीदने और बेंचनेवाले दोनो कानून के रू से दण्ड के योग्य समझे जायगें द० जयनारायण मिश्र

ता० २२-११ ८४] पटना नार्मल स्कूल बांकीपूर

CHARU PATHA.

OR

ENTERTAINING LESSONS

IN

SCIENCE AND LITERATURE

PART I.

TRANSLATED

BY

DURGA PRASAD MISRA

चारु-पाठ।

पहिला भाग।

जिसे

श्रीमन्महामहिम प्रभुवर महाशय श्रीयुत् बाबू भूदेव मुखो-पाध्याय सी॰ आई॰ ई॰ इन्स्पेक्टर स्कूल सूबे बिहार की आज्ञानुसार

दुर्गाप्रसाद मिश्र ने

श्रीयुत् बाबू अक्षयकुमार दत्त की "बंगला चारु पाठ" से अनुवाद किया।

—0—

PRINTED BY N. K. BANARJI

BRANCH BOODHODAY PRESS.

BANKIPORE.

1881.

First Edition 1000 Copies.

चारु पाठ ।

पहिला भाग ।



पहिला परिच्छेद

विद्या शिक्षा ।

विद्या एक अनमोल धन है। विद्या सीखने से भला बुरा विचार कर आदमी अपने और पराये के सुख दुख को बढ़ा घटा सकता है। चाहे नीच हो या ऊंच, अमीर हो या गरीब लड़का हो या वूढ़ा सभी को विद्या सीखनी चाहिये। पहाड़ी असभ्य और नीचों की जो ऐसी बुरी हालत है, विद्या न जानना ही इसका प्रधान कारण है। किस तरह देह नीरोग रह सकती है, किस तौर से लड़के बालों को पालन और विद्या सीखानी होती है; मा, बाप, भाई, बहिन, आदि नाते रिश्ते वालों से तथा अपने हित मित्र और साधारण लोगों से किस तरह का बरताव करना चाहिये; तथा किन नियमों से राज पालन और अपने देश की भलाई की जाती है; ये सब बातें सिवाय विद्या के और किसी सूरत से भी नहीं जानी जा सकती हैं। देखो अंगरेज आदि सुसभ्य जातियों ने विद्या के बल से अपनी कैसी उन्नति की है। ये लोग बड़े बड़े जहाज और धुएंकश बना कर धरती के सब हिस्सों पर जाते आते

और बनज व्यापार करते हैं। बहुत जल्दी चलने वाली रेलगाड़ी के सहारे से एक महीने का रास्ता एक दिन में घूम आते हैं, गुब्बारे (बेलून) पर चढ़ कर आसमान (आकाश) की सैर करते है। दूरबीन से सूरज, चन्द्रमा, तारे नक्षत्र को देख कर उनके आकार आदि को निश्चय करते है। बहुत तरह की कलें * बना कर बहुत अच्छे अच्छे कपड़े और दूसरी बहुत सी चीजें बनाते हैं; और बड़े बड़े लम्बे चौड़े साफ सुथरे रास्ता आदि बना कर अपनी सुख चैन को बढ़ती दिनों दिन करते जाते है। इन लोगों ने नदियों के ऊपर पुल और नीचे सुरंग ** बनाने और नदियों की धारा के ऊपर के पुलों पर से नदियों का जल बहाने में *** कैसी अनोखी कारीगरी दिखाई है। उन लोगों ने बुद्धि बल से पृथ्वी खोद कर नहर खंड करके एक समुन्दर से दूसरे समुन्दर को मिला दिया है † और पहाड़ों के नीचे अच्छी अच्छी लंबी चौड़ी सड़कें बना कर ‡ उस पर रेलगाड़ी दौड़ा कर शिल्प (कारीगरी) की अनोखी महिमा दिखाई है। विद्या सीखने से सुख भी बहुत होता

* जैसे आटे की कल, सूत की कल, तेलों की कल, सुरखी की कल इत्यादि।

** इंगलैंड में टेम्स नदी के नीचे एक बड़ा रास्ता है।

*** हिन्दुस्तान के पश्चिमोत्तर प्रदेश में गंगा की नहर पर बहुत उत्तम यही काम है।

† जैसे लोहित सागर के साथ भूमध्य सागर मिला है।

‡ जैसे भुगेर के पास विक्टर विक्टोरिया पहाड़ की सुरंग और आल्प नामक पर्वत श्रेणी के मानिस नाम पहाड़ की सुरंग।

है। पाठशाला में जो सब आश्चर्य और अद्भुत बातें होती थीं उन को याद करने से बाड़ी सुख और खुशी होती है। यहां से चन्द्रमा एक चांदी की थाली सरीखा देख पड़ता है, पर सच पूछो तो वह भी धरती का गोला है, उसमें बड़े बड़े पहाड़ हैं। सूरज यहां से इतना छोटा दिखायी देता है, परन्तु पृथ्वी से १४०७७२४ चौदह लाख सात हजार सात सौ चौबीस गुना बड़ा है। तारे देखने में बहुत छोटे जान पड़ते हैं, लेकिन उनमें से हर एक सूरज सा बड़ा है। आकाश मण्डल में कभी कभी दुमदार तारे धूमकेतु नाम नजर आते हैं, ये सब भी एक अद्भुत जड़ पदार्थ हैं। ये सब बड़े वेग से आसमान में घूमा करते हैं, जब हमलोगों के नजदीक आते हैं तो दिखाई देने लगते हैं। इन सब विषयों के पढ़ने वक्त मनमें सुख और आनन्द आप ही आप हुआ करता है।

पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े, आदि जानवरों की बातें जानने से भी बहुत खुश होता है। पुरुभुज नाम का एक कीड़ा होता है उसको काट कर चाहो जितने टुकड़े कर डालो वे सभी टुकड़े जुटे रहे पुरुभुज हो जाते हैं। शीत प्रधान (ज्यादा ठंढा) उत्तर समुद्र के किनारे सुफेद भालू होता है, उसको हमेशा बरफ पर रहना पड़ता है, इस लिये कृपानिधान भगवान ने उसके पैरों के तलुओं में रोएं बना दिये हैं। बीवर नाम का एक जानवर होता है, वह नदी पार पुल बनाने में बड़ा चालाक होता है। बया

एक छोटा सा पची है, वह कैसा अच्छा खोता बनाता है, और मधुमक्खी शहत का छाता ऐसा उमदा लगाती है कि जिसके देखने से आश्चर्य्य होता है।

पेड़, लता, घास, पात आदि के विषय की कैसी उत्तम उत्तम बातें उद्भिद् विद्या सीखने से जानने में आतीं हैं; और उनके मालूम होनेसे बड़ी खुशी होती है। मरु भूमी में एक तरह का पांथ पादप या मुशाफिर नाम वृक्ष होता है (१०) जिसके काटने से सुन्दर निर्मल पानी निकलता है, उस को पी कर मुशाफिर लोग प्यास बुझाते हैं। अमेरिका के दक्खिन हिस्से में गोपादप नाम एक तरह का पेड़ होता है, उसके फलसे बहुत बढ़िया मक्खन निकलता है, उसमें खाने की चीजें पकाने से अच्छी स्वादिष्ट बनती हैं। जिस तरह नर मादा के मेल से पशु पंछी आदि पैदा होते हैं उसी तौर से पेड़ वगैरह भी उपजते हैं। इस पुस्तक में इसका खुलासा ब्योरा आगे लिखा जायगा। इन सब विषयों को पढ़कर किस बुद्धिमान का मन प्रसन्न नहीं होगा पृथिवी के निर्जीव (बेजान) जड़ पदार्थों के गुण और सजीव (जानदार) के साथ उनका सम्बन्ध विचार करने से कितने आश्चर्य्य और अनोखे विषय जानने में आते हैं। हीरे और कोयले में कितना फरक मालूम होता है लेकिन ये दोनों एकही चीज हैं। एक जगह की एक ही मिट्टी से कई तरह के पेड़, लता, धास, पात आदि पैदा होते हैं; लाल, काले, पीले, नीले और सुफेद आदि बहुतेरे रंग बिरंगके कितनेही

सुन्दर फूल लगते हैं और खट्टे, मीठे कड़ुये, कसैले आदि रस वाले फल मूल और अनाज उपजते हैं।

देहमे हर एक स्थानका लेहू एकही सा है, परन्तु कैसा आश्चर्य है कि हड्डी मांस चर्वी और मस्तिष्क (मग़ज़) आदि सब अलग अलग पदार्थ उसी लेहू में पैदा होते हैं और उसी में बढ़ते रहते हैं। इन सब बड़े बड़े विषयों का और बादल, पानी, बिजली, बज़्र, ओला, बरफ, तथा सरदी, गरमी का बदलना आदि प्रत्यक्ष भांत भांत के पदार्थों का और दूसरे बहुत विषयों का ठीक ठीक तत्व जानने से जैसा आनन्द होता हैं वैसा सुख और किसी तरह से भी नहीं हो सकता, उसके आगे इन्द्रिय सुख तुछ जान पड़ता है।

जगत् सृजनकर्ता सर्वशक्तिमान परमेश्वर के इन सब कामों को देखने भालने से उस के अथाह ज्ञान अपार शक्ति और महिमा के हजारों उदाहरण प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं, और उंस में बड़ी भक्ति और प्रीति बढ़ कर भक्तों का अन्तः करण परम पवित्र और शुद्ध रसमें भींज कर आनन्दित होता है।

किसी २ पहाड़ के सिरे पर बहुत गहरा गढ़ा रहता है, उसमें से कभी कभो धूआं, राख, आग को लाट, पत्थर, कांदा, गरम जल, गली हुई धातें बड़े वेग से निकला करतीं हैं, उन्हीं पहाड़ों को आग्नेयगिरि या ज्वालामुखी कहते हैं। इस धरती पर कमोबेश २०० दोसौ ज्वाला मुखी पर्वत हैं।

उन पहाड़ों में से धूआं, राख, आग की लाट आदि निकलने को उस पहाड़ का अग्निउतपात बोलते हैं। वह अग्न्युत्पात बड़ा डरावना होता है। उस के देखने से अचम्भा होता है और अकल काम नहीं करती। उस से कितने ही गांव और शहर एक बारगी नाश हो गये हैं। यह आग का उपद्रव हमेशा नहीं होता; कितने ही ऐसे पहाड़ सौ सौ बरस तक आग नहीं निकालते कोई कोई थोड़े ही दिन ठहर कर फिर वैसे ही आग उगलने लगते हैं; और मालूम होता है कि कितने एक एकबारगी बुझ गये हैं। इन सब पहाड़ों से ऊपर लिखी हुई सब चीजें नहीं निकला करतीं जिन सब पहाड़ोंसे बहुत गली हुई धातें निकला करतीं हैं, उनकी गिनती जियादः नहीं हैं। राख, पत्थर, गरम पानी, कादा, ये सब चीजें बहुतेरे आग्नेयपहाड़ों से निकल कर गिरा करती हैं। जितने ऊंचे पर बरफ टिक सकती है उतने ऊंचे जो सब ज्वालामुखी पर्वत हैं, उनमेंसे और चीजों की अपेक्षा जियादः हिस्सा जल निकलता रहता है इस लिये बुद्धिमान लोग ठहराते हैं कि आग आदि निकलेने के समय बरफ़ गल कर जल का भाग बढ़ जाता है।

दक्खिन अमेरिकामें कोटापाक्सी नामका एक बड़ा ऊंचा ज्वालामुखी पर्वत है, किसी किसी वक्त उस पर्वतके गढ़े की और चारो तरफ की सब बरफ पिघल कर ऐसे जोर से बहती है कि उससे उसके पासके सैकड़ों शहर और गांव

डूब कर बिलट जाते हैं। एक दफे वहां से पैंतालीस कोस दूर का एक गांव इस उपद्रव से बिलकुल डूब गया था।

पदार्थ विद्या के जानने वाले इन पहाड़ों से आग निकलनेका जो कारण बतलाते हैं, सो सब लिखे जाते हैं। धरती का मध्य भाग बहुत गरम है। ज़मीन के ऊपर से जो जगह जितनी नीची है वह उतनी ही ज्यादा गरम है १५। १६ कोस नीचे सभी जगह तरल चीज़ों से भरी हुई है। नरियल के बीच का पानी जिस तौर से कठिन आवरण यानी छिलकों से ढका हुआ है, उसी तरह पृथ्वी के भीतर की तरल चीज़ें भी मज़बूत चादर से ढकी हुई हैं। धरती के भीतर की आग का समुन्दर भी कभी कभी डगमगा उठता है, और तरंगे आने लगती है उन्ही तरंगों के लगनेसे जमीन की कोई कोई जगह कांप उठती, फूल जाती और कभी २ फट भी जाती हैं। अगर वह तरंग जियादः न बढ़े, तो उसके ऊपर का कठिन पदार्थ थोड़ी देर तक कांप कर थंभ जाता है या कुछ देर तक फूला रहता है। अगर जियादः ज़ोर करे तो उन तरंगों के ऊपर की ओर जो सब चीज़ें रहती हैं तरंग की शक्ति से उछल कर पृथ्वी के ऊपर की तरफ़ आकर पहाड़ होकर रह जाती है। उसके बाद वही भीतर की तरल चीज़ें उसी पहाड़ को फोड़ कर निकलने लगती है उस जगह एक गढ़ा हो जाता है। इस तरह आग्नेयगिरि की उत्पत्ति होती है।

सन १५३८ ईसवी में इटाली के बीच में नेपल्स् नगर के पास एक नया ज्वालामुखी निकला उसका नाम नल गिरि है। उस बरस २७। २८ सेप्टेम्बर को वहां पर बीस घंटे के बीच में २० दफे भू कम्प हुआ। दूसरे दिन सूरज डूबने के दो घंटे बाद एक बड़ा गढ़ा हो गया और पत्थर, गली हुई धातें, पानी मिली हुई राख, और आग की लाटें निकलने लगीं नेपल्स् शहर में ढेर का ढेर राख गिरने लगीं, और पिडजोली नाम का जो शहर नज़दीक था, उस के रहने वाले शहर छोड़ कर भाग गये। वह सब गली धातु और पत्थर इकट्टा ढेर हो कर पहाड़ बन गया। वह पहाड़ २९९ हाथ ऊंचा और उसके ऊपर का गढ़ा २८० हाथ गहरा था।

बहुतेरे ज्वालामुखी पहाड़ समुन्दरके बहुत पास, थोड़े से बहुत दूर और कोई कोई समुन्दर के बीच ही में हैं। जब कोई ज्वालामुखी पहाड़ समुन्दर फोड़ कर उठता है तो उस से उसी तरह निकलती हुई चीज़ें जलके ऊपर तक निकल आती हैं। इसी तरह कितने ही टापू और समुद्र के पहाड़ निकले हैं। इस देश के लोग कहा करते हैं कि समुद्र में बाड़वाग्नि नाम की कोई विशेष आग है, यह बात समुद्र के किसी आग्नेय गिरि की आग देख कर (बनी) कल्पित हुई होगी।

यूरोप के बीच में इटाली देस का बिसुवियस, सिसिली टापू का एट्‌ना, आइसलंड द्वीप का हेक्लर, अमेरिका के

बीच में कोटा पाक्सी आदि थोड़े से ज्वालामुखी पहाड़ सब से बड़े और बहुत प्रसिद्ध हैं।

विसुवियस पहाड़ बहुत दिनों तक बुझा हुआ था पर सन ७८ ईसवी में उसमें भयंकर आग का उपद्रव होने से हर्कूलेनियस और पम्पियाई नाम के दो अच्छे अच्छे बहुत आदमियों से बसे बसाये शहर नाश हो गये। उस वक्त ऊपर लिखे हुए पहाड़ से जो बेसुमार राख के ढेर निकले उनके अंदर वे दोनों नगर एक बारगी छिप गये। सन १६३१ ईसवी में भी उस ज्वाला मुखी पर्वत का एक बार आग का उत्पात हुआ था उस में घड़ी घड़ी पर ७ बार धातु-निस्त्रव निकल कर वहां के नज़दीक के बहुतेरे गांवों को डुबा दिया था और उसके पास रेशिना नाम का एक शहर था वह बिलकुल जल गया था। बहुत दिनों के बाद सन १८७५ ईसवी में के डिसेम्बर महीने में फिर से आग के उत्पात होने का धोखा हुआ था पहिले भूकम्प हो कर पीछे ऊपर के गढ़े में से थोड़ी सी गली हुई धातु उठी थी लेकिन वह बाहर नहीं; निकली वहीं तक रह गई थी।

एट्ना नाम का आग्नेयगिरि भी बड़ा भयंकर है। सन १६६८ ईसवी में उसमें से बहुतायत से धातु निःस्त्रव। (गली हुई धातु आदि) प्रचण्ड बेग से निकलने से ७ कोस लम्बे, २ कोस चौड़े तक को सब जगह एकबार गी ढप गई थीं। उसमें उमड़े उमड़े मकानों के साथ ५००० बगीचे

और बहुत तरह के घर आदि और कटेनिया नाम के शहर का कुछ हिस्से इस धातु-निःस्रवमें एकबारगी डूब गये थे। पहिले बिसुबियस पहाड़ से जो सब पिघली हुई धातें निकलती हैं उनका बहाव ३। ४ कोस से लम्बा नहीं होता, परन्तु एटना नाम के पहाड़ का धातु निःस्रव का बहाव कभी ८, कभी कभी १०, और कभी कभी १५ कोस तलक दिखाई दिया है। हैल्का नाम के आग्नेयगिरि के उत्पात से उसके आस पास के बहुत से गांव एकदमसे नास हो गये हैं। सन१७८३ ईसवी में उसमें आग का बड़ा उत्पात होनेसे चारों ओर ५० कोस से भी ज़ियादः दूर तक राख के ढेर के ढेर गिरे, उस से बहुत नुक़सान हुआ था। हाल में सन१८७५ ईसवी के डिसेम्बरमहीने में और एक बारउससे ये सब चीज़ें निकलनी शुरू हुई थीं। कई बार भूकम्प हुआ था और उसके दक्खिन ओर के गढ़े से आग की लाट निकल ने से बहुत दूर तक तेज फैला था।

आग्नेयगिरिका उपद्रवकैसा आश्चर्य्य औरभयंकर काम है, यह बिना देखे अनुमान नहीं हो सकता। धुआं और राख निकल कर आसमान में छा जाती है और अंधेरा हो जाता है, बड़े बड़े बलते हुए पत्थर के टुकड़े बड़े झोंक से एक संग उड़ कर २। ३ हज़ार हाथ ऊंचे तक जाते हैं। १०। १५ कोस लंबा धातु प्रवाह बहकर चारो तरफ के शहर, गांव, जंगल, उपबन, खेत, आदमी, जानवर, और मकोड़े कीड़े आदि सभी जीवों को एकबारगी ढांक लेता है, बिज-

लों की आवाज़ सरीखा घोर गभीर शब्द सौ सौ कोस में क्षण पर क्षण सुनायी देता है। एक आदमी ने बिसुबियस पहाड़का यह उपद्रव देखा था उसने कहा है कि "एक बार ५००००० पांच लाख हवाई की तरह २। ३ हजार हाथ ऊंचे जा कर लाल रङ्ग गोल और जलते हुए पत्थर गिरने में जैसे देख पड़ते हैं, घण्टे भर में १२ सौ बार वैसी भय कर घटना हुई।" और उसने धातु-निःस्रव और उसके साथ के और कामों का हाल यों लिखा है, कि आग की नदियां, जगह जगह घोर अंधियाला, किसी २ स्थानमें कुछ चांदनीके द्वारा बहुत प्रकारकी झूठी सूरतों का देखाजाना बहुत डेरावनी आवाज़ और प्रचण्ड वेगसे चीजोंका निकलना ये सब बातें मैं कभी न भूलूंगा। ये सब भयकर काम मेरे जिगर में ऐसे समा गये हैं कि चित्त से किसी तरह हटने की नहीं।

दया।

पराये दुःख दूर करने की इच्छा होने के लिये, परमेश्वर ने हम लोगों को दया दी है। दया प्रधान धर्म्म है। जो किसी का उपकार करता है, वह जी में अति पवित्र और अनोखा अमोखा आनन्द अनुभव करता है, और जिसका उपकार होता है, वह आई हुई बिपद

छूट जाता है। ग़रीबों को रुपये पैसे देने ही से दया ज़ाहिर होती है और किसी सूरत से नहीं ऐसा नहीं। दयालु आदमी हजारों तरह से अपने जाति रिश्ते दोस्त मित्र और और साधारण आदमियों का दुःख दूर कर के परम संतुष्ट होता है। घराने के सब आदमियों को जहां तक सुख और स्वच्छन्दता बढ़ सके उसका यतन करना चाहिये। ज्ञान, उपदेश, धरम उपदेश, अच्छी बातचीत अच्छी सलाह देना आदि शुभ कामों से सभोंको सुखी करनेकी चेष्टा करनी उचित है; कठोर बचन और निठुर बरतावसे किसी दूसरेको वे काम दुखी न करना चाहिये, इसलिये ग़ुस्सा रोकना, बिनय और आदर करने का रस डालना मुनासिब है। किसी का सच्चा दोष कहने के वक़्त भी, मुंह से कोई कड़ी बात न निकालकर, दया और स्नेह भाव प्रकाश करना चाहिये। बीमार लोगों के घरों में और गरीबों के झोपड़ों में जाकर भरसक उन लोगों के दुख मिटाने का उपाय करना उचित है। ज्ञान और धर्म्म फैलाने के वास्ते सच्चे मन से चेष्टा करनी और सब साधारण की भलाई के कामों में हमेशः लगा रहना चाहिये। जो लोग ऐसे बरताव में समय बिता सकते हैं, उन्हीं को धन्य है, वे सबके प्यारे पात्र होजाते हैं। वे अनाथों के आशीर्बाद और भगवानकी प्रसन्नता लाभ करते हैं, उन्हींका आदमी का चोला सफल है।

समुद्री घोड़े।

ये सब प्रायः शीत प्रधान उत्तर महासमुन्दर में रहा-करते हैं। इनमें से अमेरिका के पास के किसी २ समुन्दर में बहुत से नज़र आई देते हैं। इन की देह बहुत बड़ी होती है, लम्बाई १२ हाथ और चौड़ाई ८ हाथ की होयगी। इनके साधारण शरीर का बोझ बीस या तीस मन होता है बढ़ने पर साठ मन तक होता है। परन्तु देह जैसी बड़ी रहती है, उसके बराबर सिर नहीं रहता। सिर और कांधा छोटे, आंखें चमकीली, नाक बड़ी चमड़ा प्रायः १ इंच मोटा, मुंह के दोनों तरफ हाथीदांत की तरह १ हाथ के दो दांत निकले रहते हैं। इन सब दांतों के द्वारा ये समुन्दर की घास पात और शंख सीप आदि उठाकर खाते हैं और समय समय पर इन दांतों को पहाड़ों में गड़ा कर वे खटके सोते हैं। बड़े दांत, बड़ी बड़ी नाक, और चमकीली आंखें होने के सबब ये सब बड़े डरावने दिखायी देते है। लेकिन ये देखने में जैसे भयंकर होते हैं सुभाव वैसा कठोर नहीं होता। उन मेसे किसी को मारे पीटे वा दिक़ दिये बिना वे किसी पर चोट नहीं करते। परन्तु यदि कोई उनको किसी तरह से छेड़े वा घेरे तो उनके क्रोध की सीमा नहीं रहती। इनके चमड़े दांत और तेल आदमियों के बहुत से कामों में आते हैं, इस लिये लोग नाव पर चढ़कर इनका शिकार करने जाते हैं।

तब ये सब गुस्से में भर कर बड़े ज़ोर शोर से गरजते और दांतों पर दांत पीसते रहते हैं, और दांतोंसे खींच कर शिकारियों की नाव डुबाया चाहते हैं, और कभी कभी बहुत से इकट्ठे होके नाव के नीचे जाकर उसे उलट भी देते हैं।

ये सब सदा इकट्ठे होकर दलबांधे रहते हैं। इनका आपस में ऐसा मेल जोल रहता है कि इनमें से किसी पर बिपत पड़ने पर और दूसरे सब उसके बचाने के लिये जान देने को तैयार हो जाते हैं। ऐसा देख पड़ा है कि समुद्री घोड़ा शिकारियों से चोट खाने पर एक बार जल में डूब जाता है, और डूब कर और घोड़े से को साथ लाकर उन की नावको आक्रमण करता है। ये सब जल थल दोनोंठोर रहते हैं। हिम प्रधान उत्तर देश के समुन्दर में बड़े बड़े टापू की तरह बरफ के ढेर तिराकरते हैं, कभी कभी उनके ऊपर ये चढ़े रहते हैं, और कभी कभी सूखी जमीन पर आ कर बनके भीतर चले जाते हैं। देखा गया है कि अगर कोई उन बरफके ढेरों पर मारने जाय, तो समुद्री घोड़ियां पहिले अपने बच्चों को पानीमें लेजा कर सम्हाल कर रख आती हैं। बाद फिर आकर मारने वालों का पीछा करती हैं। समुद्री घोड़ियां बिपतमें पड़ने से प्राण त्याग देती हैं, पर तौ भी बच्चों के बचाने में ज़रा भी ढिलाई नहीं करतीं बच्चों को भी मा पर ऐसी मुहब्बत रहती है कि मा के मरने पर भी उसको नहीं छोड़ते।

———

बीवर।

कोई कोई जीव अपने अपने रहने की जगह बनाने में बड़ी कारीगरी दिखाते हैं। मधुमक्खी का छाता, बये और चींवटी का घर ये सब सभी को विदित हैं, अमेरिका में बीवर नाम का एक जानवर होता है वह जिस हिकमत से घर बनाता है उस को सुनने से आश्चर्य्य होता है।

उन की देह कमोबेश १॥ हाथ लम्बी और ॥। पौन हाथ ऊंची और मोटे महीन दो तरह के सांवले रोओं से ढकी रहती है। इनके चार पांव और एक दुम होती है। पूंछ चींयटीं से ढकी रहती है दांत चूहों के दांतों के तरह, पर ऐसे कठिन, मज़बूत और धारदार होते हैं कि इन से लकड़ी तक भी काट सकती है पीछे के पांवों की उंगलियां मिली रहती हैं, पर साम्हने के पांव वैसे नहीं होते। ये जल और थल दोनों ठिकाने रहते हैं, और प्रायः एक तरह के जल के पेड़ों की जड़ और किसी किसी थल के पेड़ की छाल खाया करते हैं जाड़े के दिनों में घर से बाहर जा आ कर पेड़ों की छाल ला नहीं सकते, इस लिये गरमी के दिनों में बटोर रखते है गरमी के दिनों में घर से निकल कर हर जगह घूमते फिरते और जलाशय के पास किसी किसी पेड़ की छाया में सो रहते हैं। उस वक़्त जल के पेड़ों की जड़ और थल के पेड़ों की छाल के सिवाय और और घास पात और फल भी खाया करते हैं।

बीवर घर बनाने में बड़ी चतुराई दिखाते हैं। दो तीन सो बीवर इकट्ठे हो कर झील, तालाव, नदी, या खाल के किनारे घर बनाने लगते हैं। विशेष कर जिसके नज़दीक पेड़ रहता है, ऐसी जगह चुन लेते हैं। बहुत दूर से लकड़ी लाने में कष्ट होता है, इस वास्ते उस के पास के पेड़ को काट कर उस से घर बनाते हैं। ये सब झील और तालावों में भी रहते हैं, लेकिन सोतों से लकड़ियां आदि लाने में जियाद: तकलीफ नहीं होती, इस लिये बहुतेरे नदियों के तीर ही बसते हैं। जिन सब नदियों वा बनाई हुई नदियों यानी नहरों के सूखने की दुबधा रहती है, उनमें घर से थोड़ी दूर पर एक बांध बांधते हैं। अगर नदी का बहाव ज़ोर का न होरहता, सीधा बांध बांधते हैं, और यदि ज़ोर का होय तो टेढ़ा कर के बनाते हैं। क्यों कि टेढ़े पुल का पीछा बहाव की ओर रहने से वह सहज में टूटता नहीं। पहिले दांतों से पेड़ काट कर बिछा देते हैं, फिर जिस जगह पुल और घर बनाना होताहै, वहां टुकड़े टुकड़े कर के ले आते हैं। दांतों से उन पेड़ों के टुकड़ों को खींच लाते हैं, और साम्हने के पैरों से कादा और पत्थर ढोया करते हैं।

ये सब पेड़ों की टहनियां बालू और कादो से बांध तैयार करते हैं। एक एक बांध साठ, सत्तर हाथ लम्बा और ऐसा मजबूत होता है कि, आदमी बे खटके उसके ऊपर से जा आ सकते जिस जगह ये बराबर बहुत दिनों तक र-

हते हैं, बराबर मरम्मत करने के कारण उस जगह का बांध बड़ा मजबुत हो जाता है, और उस की लकड़ियों के टुकड़े समय पा कर अंकुरित हो जाते हैं, और उनसे डालें निकलने पर बड़े पेड़ मालूम होने लगते हैं, और किसी किसी जगह वे इतने ऊंचे हो जाते हैं, कि पंछी उनके ऊपर खोंते बना लेते हैं।

ये सब जिन चीज़ों से बांध बांधते हैं, घर भी उन्हीं चीज़ों से बनाते हैं। घरोंके ऊपर के भाग खिलान किये हुए और देखने में गुम्मज़ की तरह होते हैं। घर की दीवार और छत की मुटाई सदा तीन हाथ से जियादः रखते हैं। घर की ज़मीन जितनी ऊंची होने से नदी का जल भीतर न जा सके, उतनी ऊंची बनाते हैं घर के सब काम पूरे होने पर, बरफ गिरनी शुरू होने से मिट्टी लेपते हैं। बरफ गिरने तक ठहरने का कारण यह है कि बरफ से मिट्टी जमकर पत्थर सरीखी कड़ी हो जाती है, इस से हिंसक जानवर उसे तोड़ कर उन सभों को पकड़ नहीं सकते। एक एक घरों में बहुतेरे बीवर रहाकरते हैं दो से भी कम नहीं और तीससे ज़ियादः नहीं रहते। ऐसा सुनने में आया है कि, हर एक अपने अपने ठिकाने पर रहते हैं, कोई किसी की दखल की हुई जगह नहीं रोकता।

घरका दरवाजा नदी के तरफ़ रहता है। एक एक घर में बहुतसी कोठरियां रहती हैं, परन्तु प्रायः हरएक कोठरियों के दरवाज़े जुदे जुदे रहते हैं। एक आदमी ने

कहा है कि मैं ने बीवरोंका एक बड़ा घर देखा है, उसमें अंदाज़न बारह कोठरियां थीं। उनमें से दोतीन के सिवाय और सभी कोठरियों के दरवाज़े अलग अलग थे।

बीबर सब हर बरस अपने घरोंको मरम्मत करते हैं या कभी कभी पूराने घरोंको छोड़ कर नये घर बनाते हैं। घर मरम्मत करना होय तो शीतऋतु के शुरु ही में काम जारी कर देते हैं। और अगर नये घर बनाने होय, तो गरमीकी रुत के पहिलेही पेड़ काटना शुरु करके भादों महीने में घर बनाने लग जाते हैं और ठंड पड़ते ही तैयार कर डालते हैं। सुनने में आया है कि ये रात ही को सब काम करते हैं।

ये सब सदा साफ़ और सुथरे बने रहते हैं, अपने घरोंमें गू मूत आदि मैला नहीं रखते। पालने से बहुत पोस मानते हैं, हमेशः आदमियों के सामने रहा चाहते हैं, और जो जितना प्यार करता है, ये सब उससे उतना हिलमिल जाते हैं। इन के दो से कम और पांच से ज़ियादः एक दफे बच्चे नहीं पैदा होते।

जिन सब बीवरों का व्योरा लिखा गया है, वेसब अमेरिका के रहने वाले हैं। योरोप के किसी २ जगह में बीवर होते हैं परन्तु वेसब अच्छे घर बना ने में प्रसिद्ध नहीं हैं।

जवान आदमियों के प्रति उपदेश।

जवानी का समय बड़ा कठिन है। जवानी के शुरू हीं में सब इन्द्रियां प्रबल हो जातीं हैं मन की चाल तेज होती हैं और बहुत तरह के सुख भोग ने की

इच्छा होती रहती है। यह समय पाप और पुण्य दोनों के सन्धिकी जगह है। तुमलोग इस सन्धिकी जगह में खड़े हो; अतएव इस समय चेत कर अच्छी राह चलो। जिस तरह अन्धेके आगे सुन्दर तसवीरें और बहरे को अच्छी गीत किसी काम की नहीं, उसी तरह बिना उपदेश पाए हुए आदमी को भले उपदेश करने से कोई फल नहीं यह बात सच है, पर परमेश्वर ने तुम लोगों को संसार में निबहने के लायक होने के अभिप्राय से काम क्रोध आदि कई एक ख़राब गुन भी दिये हैं, परन्तु उन्हीं हीं ने तुम लोगों को उन सभों को दबाने के लिये सामर्थ्य भी दी है। खूब यतन ही से दबा सकोगे। अगर अकेलेमें इनमेंसे, किसी ख़राब वृत्तिका सचार होय, तो उसी घड़ी नेक चलन और शान्त आदमियों के समाज में चला जाना चाहिये, बुरे आदमियोंको संगति बुरी किताबोंका पढ़ना, छोड़ना चाहिये और निकम्मी बातोंके विचारनेमें प्रवृत्त न होना चाहिये, पाप रूप पिशाच नजाने कब मनमन्दिरमें प्रवेश करे यह कोई नहीं कह सकता? धन जाने में भारी विपद पड़ने में केवल धर्म्म ही आदमी का एक सहाय होता है, इन अमृत रूपी महावाक्यों को सभी दशामें याद रखना चाहिये। जो अज्ञानी आदमी परम पवित्र पुण्य के कामों को दुखदायी समझता है, वह कभी भी पुण्य से उत्पन्न सुख रूप अमृत पीने का अधिकारी नहीं होता।

दूसरा परिच्छेद।

झरना।

हर एक देस और हरएक जगहों में घूमने से, परमेश्वर के कितने ही आश्चर्य्य काम, कितनी ही विचित्र कीर्तियां नज़राई देती हैं। झरना इस देश के बहुत आदमियों ने नहीं देखा है। नदियां एक एक पहाड़ों के ऊंचे स्थान से निकल कर समुद्र में या वैसे और किसी जलाशय में जाकर गिरती है। पहिले किसी सोते से थोड़ा थोड़ा पानी निकलता है, फिर और और जलों के साथ मिल कर क्रम से बढ़ता रहता है। नदियां ज़मीन को ऊंचाई और निचाई के अनुसार किसी किसी जगह बड़े वेग से और कहीं कहीं धीमी बहती हैं, कहीं पर भयंकर चक्कर खा कर घूमती रहती हैं, और कहीं पर पत्थरों के ढेरों से टक्कर खा कर दो हिस्सों में बंट जाती हैं। जिन नदियों का बहाव चलते चलते किसी जगह साम्हने और दोनों ओर के पहाड़ों से रुक कर अटक जाता है उनका पानी वहां ही इकट्ठा होकर जिस तरफ़ पहाड़ सब से कम ऊंचा है, उसी ओर पहाड़ों को लांघ कर जाता है। वह बड़ा जलका जमाव बड़े जोर शोर से भयंकर आवाज करता हुआ एक बार सौ वा हज़ार २ हाथ नीचे गिर कर

आश्चर्य अनोखा और भयानक काम दिखाता है। इसीको जल-प्रपात यानी झरना कहते हैं।

एशिया, यूरोप, आफ्रिका, अमेरिका इन चारों हिस्सोंमें बहुत से झरने हैं। उन में से यूरोप में सुइजरलंड देस के झरने सब से ऊंचे हैं।

वहां भयंकर पानी के समूह पहाड़ों के ऊपर से भयानक वेग से गभीर गरजते हुए कहीं परंतो २००० और कहीं १५०० हाथ से नीचे गिरा करते हैं। परन्तु अमेरिका के सब झरने सब से अच्छे होते हैं। उन सब झरने को देखने से अचम्भा होता है। अमेरिका खण्ड में नायोगीरा नाम की एक नदी है, उसका झरना एक अद्भुत चीज़ है। उसका ज़ियादा बढ़ाव, बहुत प्रचण्ड झोंक, घोर गभीर गरजन, उठती हुई फेन का ढेर आदि देखने से अचरज होता है। उस नदी का जल जगह जगह पहाड़ों पर गिर कर ऐसा छितरा जाता है कि जिस के देखनेसे जी कांप उठता है।

उस झरने की ऐसी भयानक आवाज़ है कि उस से कान बहरे हो जाते हैं, और वहां पर एक तरह को बहुत सी फेन उठा करती है, वह बास्पमय बादल होकर ऊपर की तरफ़ उड़ जाया करती है। किसी किसी दिन अंदाज़न अठारह कोस दूरसे आवाज़ सुनायी देती है, और वह फेन राशि इतनी ऊंची उठती हैं कि प्राय: ३१ कोस से उसकी बास्प दिखायी देती है। किसी ग्रन्थ कर्त्ता ने

उस झरने का बिवरण लिखा है, "एकबारगी १००० तोपों में पलीता देने से जैसा भयंकर शब्द और जियादा धुआं उठता है, उस झरने में से भी उसी तरह का शब्द और वाष्प निकलती है।"

और उसकी फेन के ढेर पर सूरज की किरन पड़ने से ऐसी आश्चर्य सुन्दर सोभा होती है कि उसके देखने से मन मोहित हो जाता है आसमान के इन्द्रधनुष में जितने तरह के रंग देख पड़ते हैं, उस में भी वे सब नज़राई देते हैं।

एक पण्डित ने हिसाब कर देखा है, कि उस झरने से हर पल में २,१४,४८,००० दो करोड़ चौदह लाख अड़तालीस हज़ार मन पानी गिरा करता है।

एक एक जल-प्रपात के फेन समूह की सोभा कैसी मनोहर होती है। आमेरिकामें मिसोरी नाम की एक नदी है, उस के झरने के दक्खिन भाग में फ़क़त सुफ़ेद फेन का ढेर भरा हुआ है। उस फेनमय हिस्सों का परिमान प्राय ४०० हाथ का है। उसकी सब फेन ज़ोर से उछल कर प्राय १३५ हाथ ऊंची उठती हैं, और उठती उठती हज़ारों तरह के अनोखे आकार धारन करती हैं, और उस के ऊपर सूरज की किरन पड़ने से लाल नीले पीले आदि हर तरह के सुहावने रंग देख पड़ते हैं।

बिलायत का एक भ्रमण करने वाला अमेरिका के पासेक नाम नदी का झरना देखने गया था उसने वहां मनोहर काम देखा। उसने देखा, कि उसके फेन

के ऊपर सूरजको किरण पड़ कर ठीक इन्द्रधनुक का सा आकार बन गया है ।

आकाश में जैसे एक इन्द्रधनुष के नीचे और एक दूसरा दिखायी देता है, उस जगह भी उसी तरह देख पड़ता था और किरनों का इन्द्रधनुष जैसे तरह २ के रंगों से रंगा रहता है, उस झरने का इन्द्रधनुष भी उसी तौर का रंगा था। एक एक नदी के २ । ३ झरने भी होते हैं। इङ्गलेंड में डर्हाम प्रदेश के पच्छिम हिस्सों में टीज़ नाम की एक नदी है, उस का प्रवाह एक साम्हने पहाड़ में लग कर टकराने के कारण दो हिस्सों में बंट दो बड़े झरने बन गये हैं, और वही दोनों झरने कुछ दूर तक जुदे गिर कर फिर इकट्ठे मिल गये हैं । दोनों मिल कर बड़ा भयंकर रूप धारन करके बड़े बेग से गिरते है, और उस की सब फेन ऊपर उठ कर सोभा देती है। दुनियां में सैकरों झरने हैं। हिन्दूस्तान में और हिमालय और विन्ध्य आदि पहाड़ों में बहुत देख पड़ते हैं। झरने कैस आश्चर्य होते है, आंखों से बिना देखे यह अच्छी तरह अनुमान नहीं हो सकता ।

सन्तोष ।

कोई कोई ऐसे लालची होते हैं कि किसी तरह भी तृप्त होते नहींउन लोगोंका जितना रुजगार और इज्जत होती

जाती है, उसकी लालच रूपी आगकी लाट उतनीही भड़कती और उन लोगोंको बहुत तरह के उपद्रवोंमें डालती रहती है, वे लोग भरपूर धनवान होकर भी सदा चिन्ता और सोचमें दिन बिताते हैं। वे लोग यह नहीं जानते कि सन्तोष ऐसी झूठी चिन्ता की दवाई है। सन्तोष जैसा सुख देने वाला है, असन्तोष वैसा ही दुख देने हारा है। आदमी सभी हालत में सन्तोष-रूप पारसमणि के जरिये से सुख स्वरूप स्वर्ण लाभ कर सकता है। लेकिन बड़ी बुरी दशामें रह कर भी दुःख दूर करने का उपाय न करना सन्तुष्ट चित्त से बराबर कष्ट सहना न चाहिये। जिस हालत में रहने से अन्न वस्त्र के दुख से देह दुबली होती है, मैले, और भींजे छोटे घर में रहने से तनदुरुस्ती में फरक होती है और परिवार के बीच में किसी को बीमारी होने पर धन सम्पद् के न रहने से अच्छी तरह दवा कराना और लड़के लड़कियोंको अच्छी तरह विद्या सिखानी नहीं होता है, वैसी हालत में सन्तोष करके ये सब दुख मिटाने के लिये यतन न करना किसी तरह अच्छा नहीं। जिस अवस्था में रहने से हर तरह से परमेश्वर के नियमों को लांघनां पड़ता है, उस हालतमें सन्तुष्ट रहना कभी भी ईश्वर की इच्छा नहीं है। सन्तोष के यथार्थ लक्षण ऐसे नहीं हैं पर अपने अपने रुजगार और सामर्थ्य के मुताबिक मुनासिब काम से जितनी अच्छी दशा हो सकती है, उसी में सन्तोष करना और जिन सब बुरी होनहारों के

दूर करने की शक्ति नहीं है, उन में न घबरा कर धीरज धर के स्थिर भाव से संसार का काम निबाहना ही यथार्थ सन्तोष का लक्षण है, और ऐसा सन्तोष सुख का घर है।

धरती का आकार।

धरती का आकार गोल है। परन्तु सब तरफ़ से गोल नही है, उत्तर और दक्खिन की ओर कुछ दबा हुआ है। धरती बेहद और दर्पण आदि की तरह बराबर चिपटी मालूम देती है, और लड़के भी इसे ऐसी ही समझते हैं लेकिन ठीक ऐसी नहीं है। मेगीलन और ड्रेक नाम के दो नामी जहाजी जहाज़ पर चढ़ कर योरोप से चलकर क्रमसे पच्छिम की ओर चले थे।

जाते जाते थोड़े दिनों के बाद उन्होंने देखा कि जिस जगह से चलेथे, सारी पृथिवी की फेरी करके फिर उसी ठिकाने आ पहुचे। जो धरती की सीमा न होती, और दर्पण की तरह चिपटी, और तिकोनी, या चौकोनी, होती, तो कभी ऐसा नहीं होता।

अगर समुन्दर के किनारे खड़े हो कर दूर से कोई जहाज़ आता देख पड़े तो, पहिले उस के मस्तूल की नोक देख पड़ती है, फिर क्रम से सारा मस्तूल और बहुत नज़दीक आने पर, उस का जितना तला पानी में नहीं डूबा रहता, दिखाई देता है। इन बातों से बेशक जान पड़ता है कि

जो धरती गोल न होती तो, कदाचित ऐसा नहीं होता। जोतिसियों ने ठहराया है, कि पृथिवी की छाया चन्द्रमा पर पड़ने से, चन्द्रग्रहण होता है। सभों ने देखा होगा कि ग्रहण के समय चन्द्र पर जो छाया पड़ती है, वह गोल होती है। धरती का आकार यदि गोल न होता, तो उसकी छाया भी गोल न पड़ती। इन सब बातों से पृथवी गोल सिद्ध होती है।

बहुतेरों ने दूर देस जा आ कर के देखा है, कि जो पृथिवी के किसी प्रदेस से बराबर उत्तर की तरफ़ चलें तो मालूम देता है कि उत्तर की दिशा के सब तारे क्रम से आसमान के ऊपर उठते जाते हैं, और दक्खिन के सब तारे क्रमसे नीचे को उतरते और अदृश्य होते जाते हैं। और यदि क्रम से वैसे ही दक्खिन की ओर जांय, तो मालूम देता है कि दक्खिन की ओर के सब नक्षत्र क्रम से आसमान की ओर उठते जाते हैं, और उत्तर की ओर के नक्षत्र सब क्रम से आकाश के नीचे उतरते और छिपते जाते हैं भूमण्डल यदि उत्तर दक्खिन से केवले की तरह गोल न होता पर दर्पण की तरह बराबर चिपटा होता, तो कभी भी ऐसा मालूम न होता। और फिर पण्डितों ने निश्चय किया है कि, जो देस जितने पूरब हिस्से में बसा है, उस में उतने ही पहिले सूर्य्य उगता है, उसके बाद क्रम क्रम से पच्छिम प्रदेशों में उगता जाता है। पूरब के रहने वाले पच्छिम के रहने वालों से सूरज को पहिले

उगते और पहिले डूबते देखते हैं। धरती के ऊपर का हिस्सा गोल न होता तो ऐसा नहीं हो सकता था। इस से धरती गोल है यह सिद्ध होता है।

कु-संसर्ग।

अधरम पर नेकचलन साधु आदमियोंकी जैसी स्वभाव-सिद्ध घिना और बैर रहता है, उस का कम होना ही दोष है। बुरा संग इस दोष का एक प्रधान कारण है। अधरमियों के साथ सदा रहने की जिनकी इच्छा होती है, अधरम में जैसी घिना रहनी चाहिये, वैसी उन लोगों को कभी भी नहीं रहती। सुभाव सब के ऊपर प्रबल है परन्तु अभ्यास भी बड़ा प्रबल है जो साधुचित पुण्यवान आदमी पाप का छू जाना भी नहीं सह सकते कुसंग को विष की तरह छोड़ देते हैं, उनसे भी बहुतेरे सबबों से बुरे आदमियों के साथ रहना हो सकता है, और उस से उन की घिना अधरम पर घट जाती है और वे बहुत तरह के बुरे कामों में पड़ सकते हैं। इस लिये कुसंग छोड़ कर साधु के संग में रहना सभी तरह अच्छा है। साधु संग का गुण भी बड़ा आश्चर्य्य है। जैसे परम सुहावना पूर्ण चांद अपनी शीतल किरणें फैला कर धरती की सभी चीजों को बड़ी आश्चर्य्य और अनोखी सोभा में सोभित करता है उसी तरह परमेश्वर भक्त पुण्यात्मा लोग पक्की

बात चीत और अच्छे उपदेश से अपने अच्छे साथियों के अन्तः करण को अच्छा सुंदर धर्म्म का भूषण पहनाया करते हैं। उनके संग रहने में जिस आदमी को प्रीत और आनंद होता है, और जो अपना जी खुश और पवित्र रखने के लिये बहुत यत्न और प्रतिज्ञा करता है, वही आदमी अधरम को बदबू समझ कर छोड़ता है और धर्म्म के पवित्र सुखों को भोगने का अधिकारी हो सकता है। परम मनोहर फूल के बगीचों को साफ हवा वाले मकान में हमेशः रहने का जिस का अभ्यास रहता है, बदबूदार मैली कुचैली जगह में रहने से उसको जरूर घिना और अरुची होती है उसी तरह, जो आदमी आत्मा के आनंद और साधुसंग को अनमोल समझ कर उसके मिलने के वास्ते सदा यत्न करता है, और उसके पाने से, परम पवित्र आनन्द रस से भींगता है, वह आदमी सब बुरे कामों को घिनावन और छोड़ने लायक समझ करके, अपनी खराब प्रवृत्ति के रोकने में दूसरों की अपेक्षा अधिक समर्थ होता है इस में सन्देह नहीं।

पुरुभुज।

पुरुभुज नाम के कीड़े का ऐसा आश्चर्य्य सुभाव है कि, उसको काट के जितने टुकड़े किये जायं उनमें से हर एक टुकड़ा बढ़ कर एक नया पुरुभुज हो जाता है। पेड़ ल-

सर आदि कलम कर के गाड़ने से लगजाते और बढ़ते हैं, यह बहुत दिनों से सब जगह जाहिर है, लेकिन किसी जानदार को टुकड़े टुकड़े करने से उस का हरएक टुकड़ा जानदार हो जाता है, यह कोई कभी न जानता था। पर सन १७४० ईसवी में टेम्बली नाम के एक साहिब ने पुरुभुज का यह गुण जाहिर करने से लोगों को आश्चर्यित किया था।

इस विशेष जानवर को दो टुकड़े करने से, जिस टुकड़े में सिर रहता है उस से एक नई दुम निकलती है और जिस टुकड़े में दुम रहती है, उस से एक नया सिर पैदा होता है इसी तौर से दोनों टुकड़ों से सब अंग प्रत्यंग निकल कर हर एक टुकड़ा एक एक पुरभुज हो जाता है और और जानवरों के बच्चे पैदा होने की जैसी रीति है, पुरुभुज की वैसी नहीं है। इनके बच्चे पहिले इनके देह पर फोड़े की तरह निकल कर क्रम क्रम से बढ़ते हैं, और कमोवेश दो दिनों में उनकी सारी देह पूरी हो जाती और वे अपनी मा के शरीरसे छूट कर गिर पड़ते हैं। परन्तु कैसे आश्चर्य की बात है कि उस दूसरे पुरुभुजके गिरने के पहिले ही उस की देह में भी और एक पुरुभुज और कभी कभी उस तीसरे पुरुभुज की देह पर भी और एक पुरुभुजकी देह पैदा होती हुई देखपड़ती है। इसी तरह चार पुस्त आपस में इकट्ठे मिले हुए एकही दफे पैदा होते हैं।

इसके सिवाय इन सब कीड़ों की देह का परिमाण

निर्णय करना सहज नहीं है, कारण ये सब अपनी देह को ऐसी ढीली कर लेते और सिकोड़ लेते हैं, कि उसकी लम्बाई कभी कभी एक इंच और कभी कभी एक इंचका बारहवां हिस्सा हो जाती है। जियादा लम्बी होने से सूअर के रोए की तरह महीन, और सिकुड़ने से उस से मोटी हुआ करती है। इनके शरीर का बीच का हिस्सा गोल होता है। उसके एक ओर सिर और एक तरफ दुम रहती है। सिर के चारों तरफ ६।८।१० वा उससे भी जियाद: हाथ रहते हैं। हाथों से खाने की चीज़ ले कर खाते हैं, और जब जहां रहने की इच्छा होती है, तब उसी जगह दुम लपेट कर रहते हैं।

जितने क़िसमके पुरुभुज होतेहैं, सभी बहते हुए निर्मल पानी के बीच पत्थर जल के पेड़ या किसी तरहके लकड़ी के टुकड़ोंमें लगे रहते हैं। ये सब फनगे पकड़ कर खाते हैं। अगर जल भरे हुए कांचके बरतन में रख के उस का पानी बार बार बदला जाय और छोटे छोटे फनगे आदि खाने को इनको दिये जायं तो उस के बीचमें ये बहुत दिनों तक जीसकते हैं। ये बड़े लालची और उतावले होकर ऐसी जल्दी खाने की चीज़ें निगल जाते हैं कि खाये हुए पतंग आदि जीते हो पेट केअंदर जारहते हैं। और कभी कभी पेट के भीतर से भी फिर भाग कर बाहर निकल आते है। परन्तु एक दफे भागने से भी छुटकारा नहीं होता, पुरुभुज फिरसे उनको पकड़ कर खालेते है। ये जो सब चीज़ें खाते

हैं, उनके पाकस्थली में हज़म होने पर उनसे जो मल बनता है वह फिर मुहही से बाहर निकलता है।

ये सब कीड़े नदी आदि में रहते हैं। इस के सिवाय और कई तरह के पुरुभुज होते हैं। वे सब समुन्दर में रहते हैं इस लिये उन को सामुद्रिक पुरुभुज कहते हैं।

उनको टुकड़े कर के काटने से हर एक जुदे जुदे पुरुभुज होजाते हैं। मूंगा और स्पंज नाम के जानवर इसी किस्म के समझे जा सकते हैं।

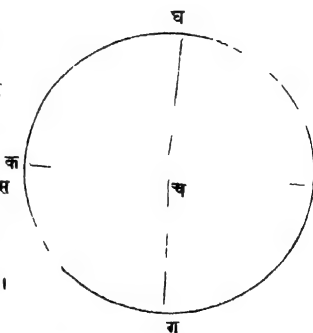
हमलोग जो मूंगा बरताव में लाते हैं, वह प्रवाल नाम के कीड़े का पांजर यानी पसली है। ये कीड़े समुन्दर में पैदा होकर किसी किसी जगह इकट्ठे हुए रहते हैं।

जो कलकत्ते में स्पंज बिकता है, और अंगरेज़ लोग सदा काम में लाते हैं, वहभी स्पंज नाम के जीव की पसली है। यद्यपि उसको जन्तु कहकर बर्णन किया, परन्तु यथार्थ में वह जीव या उद्भिज्ज है यह आज तक साबित नहीं हुआ। वह स्पंज उद्भिज की तरह हमेशः एक जगह में रहता है। और जानवर जिस तरह अपनी इच्छा के अनुसार जा आ सकते हैं, स्पंज में वैसी चलने की शक्ति का कोई शबूत नहीं पाया जाता है, और और जानवरों की देह टूटने और फटनेसे जैसी उनको तकलीफ़ होती है, स्पंज को वैसा क्लेश अनु भव होने का भी कोई चिन्ह आज तक नही देख पड़ा इन सब बातों से वे पेड़ के समान मालूम होते हैं।

किन्तु उन सबों की बनावट जानवरों के शरीर सरीखी होती है इस लिये वह जानवर या बनस्पति है यह निश्चय करना कठिन मालूम पड़ता है परन्तु आज काल के बुद्धिमान लोग उसे जानवर ही समझते हैं जिस जगदीश्वर ने जानवर और बनस्पति का स्वभाव मिलाकर ऐसे छोटे२ जीव आदि सिर्जा है उसकी बड़ी शक्ति और अनन्त गुण का भला कुछ ठिकाना है वह जन्तुओं का गुन बनस्पतियों को और बनस्पतियों का गुन जन्तुओं को दे सकता है उस को कोई बात कठिन नहीं।

पृथिवी का प्रमाण।

पृथ्वी का व्यास प्राय ३५०० कोस का है और परिधि प्राय ११००० कोस की है। *



जो चंत्र एक ही रेखा द्वारा परिवेष्टित है, और जिसके मध्य स्थानसे उक्तरेखा तक जितनी सरल रेखायें खींची जायं, सभी परस्पर बराबर है उसको वृत्त और जिस रेखा द्वारा परिवेष्टित है, उस को परिधि और वृतके मध्य स्थान को केन्द्र कहते हैं।

और जो रेखा केन्द्र भेद कर के जाती है और जिसके दोनो प्रान्त परिधि के दो स्थान स्पर्श किये रहते हैं उसे व्यास कहते हैं। इस जगह एक वृत्त का चित्र दिया है। क, ग, ख, घ, चिन्हित रेखा इसकी परिधि है, च, इसका केन्द्र; ग, च घ, और क, च ,ख, इसका व्यास है।

भूमण्डल क्याही आश्चर्य है, इसके केवल व्यास और परिधि के परिमान जानने से यह अच्छी तरह जाना नहीं जा सकता। अगर किसी ऊंची जगहमें खड़े हो कर चारो ओर चार कोस तक देखें तो, कितनी तरह की चीज़ें एक बारगी देख पड़ती हैं। कितने गांव शहर पेड़, झाड़, लतर फल फूल पत्ते, धान तिनके घास, और आदमी जानवर पंछी आदि बहुत तरह के जीव एकबारगी देख पड़ते हैं। इतनी ज़मीन पर चारो ओर घूम फिर आने में, प्राय: २५ कोस घूमना पड़ता है। सारी धरती के ऊपर का हिस्सा उस से प्राय: ९, ८०,००० गुना है। यदि हम लोग हर रोज़ दस दस घंटे जल्द चलते हुए हर एक घंटे में ज़मीन के एक ऐसे चौड़े टुकड़े को एक के बाद दूसरे को देखते जायं तो २६८ बरस बराबर बिना घूमे, पृथ्वी के ऊपर के भाग का सब हिस्सा देख नहीं सकते।

पृथ्वी यदि शून्य गर्भ अर्थात पोली होती, तो भी इसके ऊपर के भाग मात्रका परिमाण चारो ओर से देखने से अचम्भा होता लेकिन वह पोली नहीं है। इसके बीचमें मिट्टी, धात पानी आदि बहुतेरी चीज़ें भरी हुई हैं। दुनियांमें और ऐसी भारी चीज़ कोई नहीं है कि जिसकेसाथ उसकी उपमा दी जा सके। सीसीली द्वीप में एट्ना नाम का एक पहाड़ है। वह पहाड़ प्राय ७२५० हाथ ऊंचा है। उसका घेरा नीचेकी तरफ़ कमी बेश ५२ कोस और ऊपरको ओर प्राय: ४ कोस है। परन्तु पृथ्वी के आयतनके साथ मिलाकर देखने

से, उसका आयतन बहुत छोटा मालूम होता है। ऐसे ऐसे ३०,००,००,००० तीस करोड़ पहाड़ इकट्ठे रखने से भी पृथ्वी के बराबर नहीं होंगे। यदि वैसे तीस करोड़ पहाड़ कतार बांध कर रक्खे जांय, तो उनकी कतार की लम्बाई एक किनारे से दूसरे तक अंदाजन ५,१२,४०,००,०००, कोस फैली होगी। यदि जल्द चलने वाली सवारी पर चढ़ कर हर एक घंटे में दस कोस चलें तो उस पहाड़ की श्रेणी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाने में ६०,६०० साठ हज़ार छ सौ बरस से भी ज़ियादा समय लगेगा। इसलिये जिस भूमण्डलमें हम रहते हैं वह ऐसा बड़ा है कि समझ में नहीं आ सकता।

भूमण्डल के चार हिस्सों में से प्राय: तीन हिस्सों पर जल है और एक भाग स्थल है। स्थलभाग आदमी भूचर और खेचर जन्तुओं के रहने की जगह है वह स्थलभाग जिस बड़े जलराशि से घिरा हुआ है उसे महासमुद्र कहते हैं। समुद्र के उत्तर और दखिन बड़ी ठंढ है इसलिये वहां का पानी जम कर बरफ़ हो गया है। महासमुद्र कितना गहरा है यह अभी तक निर्णय नहीं हुआ है। अंदाजन ३५०० हाथ लम्बी मापने की रस्सी लटकाने पर भी थाह नहीं लगता मालूम होता है कि, गहराई सब जगह बराबर नहीं है, स्थलभाग की ऊंची नीची जगहों की तरह समुद्र में भी पहाड़ और गढ़े हो सकते हैं। पण्डित लोग अनुमान करते हैं, कि

अगर सारा समुद्र कहीं सूख जाय, तो अब पृथ्वी की जितनी नदियों का पानी जिस ज़ोर से उसमें गिरता है उन सबों का धारा बराबर बीस हज़ार बरस उसी वेग से बिना गिरे वह भर नहीं सकेगा।

यह जल स्थलमय भूमंडल ऊपर प्रायः पांच योजन तक हवा से घिरा हुआ है। जल के जानवर सब जैसे पानी में डूबे रहते हैं, हम लोग भी उसी तरह वायु-राशि में डूबे हुए हैं, धरती के एक हाथ प्रमाण लम्बी चौड़ी जगह के ऊपर कमोबेश साठ मन हवा ठहरी हुई है। जैसे पानी में डूबने से ऊपरके जल का बोझ मालूम नहीं होता, उसी तरह, उस हवा के ढेर में डूबे रहने के सबब से हम-लोगों के सिर के ऊपर की हवा का भार हमलोगों को कुछ भी जान नहीं पड़ता।

पेड़ लता आदि के उपजने के नियम।

हम लोग कोई नई चीज़ अचानक देखने पर आ-श्चर्य्य मानते हैं, परन्तु हमलोगों के चारों तरफ जो सब अद्भुत बातें सदा हो रही हैं, उन के निगूढ़ (छिपा हुआ तत्व निरूपण (विचार) करने के लिये वैसा यतन नहीं करते। पेड़ों में फूल फूलते हैं, और कई दिनों के भीतर ही उन फूलों से फल पैदा होते हैं, यह सभी देखा करते हैं। पर किस तरह यह काम पूरे होते हैं,

बहुतेरे इसका तत्व नहीं खोजते। जैसे नर और मादा के आपस के मेल से पशु और पक्षी आदि जानवरों के बच्चे पैदा होते हैं, पेड़ आदि के उपजने के नियम भी उसी तरह के हैं। इस विषय का विवरण सुनने से पढ़ने वालों को आश्चर्य होगा।

फूल की पखड़ी किसे कहते हैं, सभी जानते हैं। संस्कृत भाषा में उसका नाम दल है चारों ओर पखड़ी, उसके बीच में जो कितने एक महीन महीन सूतसे रहते हैं, उन्हें केशर कहते हैं। उन में जो सूत सब से मोटा होता है, उसे गर्भ केशर, और बाकी सब को परागकेशर कहते हैं। १ नं० एक फूल की तसवीर देखो। क, क, क, क, क, इसकी पखड़ी ख, ख, पराग केशर ग, गर्भ केशर; और घ, बीज का खजाना है

उसी बीज के खजाने में बीज रहता है, पहिले उसमें अंकुर उपजने की शक्ति नहीं रहती है। पराग-केशर के सिर पर जो धूल सी एक किसम की बुकनी रहती है, वही गर्भ केशर के सिर पर गिर कर बीज कोषों के बीजों को उपजने की शक्ति देती है। उस धूल की तरह चीज को पुष्परेणु कहते हैं। विचार कर देखने से, पराग केशर को पुरुष-स्वरूप और गर्भ केशर को स्त्री स्वरूप कहना पड़ता है। पराग केशर में जैसे रेणु रहते हैं, गर्भ केशर के सिर पर भी वैसी एक चीज रहती है।

बीज कोष के बीजों में अंकुर उपजने की शक्ति होने

के बारे में बहुतेरे फूलों में एक तरह की बड़ी मनोहर अद्भुत शक्ति देख पड़ती है, उस का व्योरा आगे लिखते हैं। जिस फूल का पराग केशर बड़ा और गर्भ केशर छोटा होता है, वह ऊपर मुंह को उठा रहता है और जिस फूल का गर्भ केशर बड़ा और पराग केशर छोटा होता है वह नीचे मुंह को झुका हुआ रहता है। इस में गर्भ केशर का शिरो भाग पराग केशर के शिरोभाग की अपेक्षा नीचा रहता है इसी लिये पराग केशर के रेणु सब सहज ही गर्भ केशर में गिर कर बीज कोष के बीजों में उपजने की शक्ति अच्छी तरह पूरी करते हैं ऐसी अच्छी चतुराई न होती तो, फूल से फल पैदा होने में बड़ा बखेड़ा पड़ता।

सभी फूलों में पराग केसर और गर्भ केशर दोनों नहीं होते हैं। बरन कितने एक फूलों में केवल पराग केशर होते हैं, और कितने एक फूलों में फ़क़त गर्भ केशर होते हैं। एक फूल के पराग केशर के रेणु दूसरे फूल के गर्भ केशर में पड़कर फल उपजाते हैं। वे फूल के रेणु ऐसे हलके होते हैं कि हवासे उड़ाये जा कर एक फूल से दूसरे फूलमें जासकते हैं, इसके सिवाय परमेश्वर ने इस बिषय को अच्छी तरह पूरा कर ने के लिये और एक तरहकी आश्चर्य्य चतुराइ कर रक्खी है। फूलों में मधु रहने के कारन मधु मक्खियां उन में मधु पीने जाती है, जब वे किसी पराग केशर वाले फूल पर बैठती हैं तब उस फ़ल के रेणु उनको

तीसरा परिच्छेद।

उष्णप्रस्रवण।

पृथ्वी की कितनी जगहों में कितनी ही अद्भुत चीज़ें हैं, और उन से कितने ही आश्चर्य्य व्यापार होते हैं। जगह जगह धरती के बीच से जो जलप्रवाह निकलते हैं उन्हे प्रस्रवण कहते हैं। जिन सब प्रस्रवणों का पानी स्वभाव से गरम रहता है, उन्हें उष्णप्रस्रवण कहते हैं। हिन्दुस्तान में बहुत जगहों सीताकुण्ड नाम के जो सब प्रसिद्ध उष्ण-प्रस्रवण हैं, वे सभी को मालूम हैं। पृथ्वी के और और हिस्सों में बहुतायत से उष्णप्रस्रवण हैं। विशेष कर आइस्-लेण्ड द्वीपमें जितने हैं, उतने और कहीं नहीं हैं, और वहां के थोड़े से प्रस्रवणोंका पानी ऐसी तेजीसे निकलता है, कि दूसरी किसी जगह का प्रस्रवण वैसी तेजीसे निकलते नहीं देख पड़ता। उनमें से ज़ियादा किसी किसी पहाड़ के नज़दीक की ज़मीन से, बहुत से पहाड़ों के पास से, और कई एक शिखर के पास से निकलते हैं। ३ नं० उष्णप्रस्रवण का चित्र देखो।

ऊपर कहे हुए द्वीप में जितने उष्ण प्रस्रवण हैं, उनमें से गयसेर नाम के ३। ४ प्रसिद्ध प्रस्रवण सब से प्रधान हैं। उनमें से भी महागयसेर और ननगयसेर दो विशेष प्रसिद्ध हैं,।

इस वृत्तान्त के शिरोभाग में सहागयसेर नाम के उष्ण प्रस्रवण का चित्रमय प्रतिरूप प्रकाशित हुआ है। वहां मिट्टी की दिवार से घिरा हुआ एक बड़ा कुण्ड है, जब ठहरा रहता है, तब उसका पानी बड़ा गरम और शीशे की तरह साफ़ और सदा जलीय वाष्प और थोड़े थोड़े बुल बुले उठा करते हैं। कुण्ड की परिधि अर्थात् घेरा अंदाजन सौ हाथ का है। परन्तु इसमें पानी ज़ियादह गहरा नहीं है। जब कुण्ड भरा रहता है, तब भी तीन हाथ से ज़ियादह जल नहीं रहता है। इसके बीच की जगह में अंदाजन ५४ हाथ गहरा एक कुआं है, वही कुआं ४ हाथ चौड़ा है, लेकिन मुंह के पास क्रम से फैलता हुआ कुण्ड के साथ मिल गया है। आग्नेय-गिरि के उपद्रव के समय जैसे गरम पानी जलीय वाष्पादि प्रचण्ड वेग से निकलते हैं, इस प्रस्रवण में भी बीच बीच में वैसा ही हुआ करता है। पहिले घनी घनी तोपों की आवाज़ की तरह घोर गम्भीर गरजन सुनाई देती है, उसी वक्त भू चाल होता है। उसके बाद ही कुण्ड का जल क्रम से गरम होता रहता है, जिसमें जल और वाष्पादि अकस्मात् उठ कर नाचने और गिरने लगते हैं।

वहां सब वाष्प (भाफ) इतने ऊंचे उठते हैं कि प्रायः आठ कोस से देख पड़ते हैं। इसी तरह जल और भाफ बार बार निकलने के बाद, एक प्रकाण्ड (फुहारा) जल प्रवाह लहर सी हवा में घिरा हुआ बड़े ऊंचे तक उठता

है। उस वक़ बड़ा अद्भुत महत् (बड़ा) व्यापार देखने मे अचम्भा होता है। बड़े बड़े भाफ के गुबारे घूमते हुए उठकर आसमान को छा लेते हैं, और उसके साथ ऊपर उठता हुआ जल प्रवाह कांपता हुआ फेन होकर कुछ हिस्सा वाष्प हो जाता है, और बाकी का हिस्सा धरती पर गिरकर अपूर्व (अनोखा) फेन की बरषा होती है।

दुनिया में इसके बराबर देखने में सुन्दर आश्चर्य व्यापार बहुत बिरल है। कुण्ड का पानी निकलने और उठने के समय बहुत तरह के मनोहर वर्ण धारण करता है। कभी कभी अच्छा नीला रंग कभी कभी उज्जल सब्ज़ रंग और ज़ियादा ऊंचे उठने मे शुद्ध सुफेद रंग की शोभा होती है। ऊपर जाती हुई धारें बहुत हिस्सों में बंटकर हज़ारों परम शोभा करने वाली सुफ़ेद रंग की जल धारा हो जाती हैं। उनमें से कितनी एक धारें ठीक सीधी उठती हैं, और कितनी एक धारें अच्छी तरह टेढ़ी गिरकर अनोखी शोभा करती हैं।

उन सब जलधाराओं का वेग ऐसा प्रबल होता है कि उनके ऊपर पत्थर फेंकने से सब पत्थर उसी वक़ ज़मीन पर न गिर के जल के तेज से ऊपर उठ जाते हैं। कुण्ड मे थोड़ी देर इस तौर से जल निकलकर ठहर जाता है, तब वह कुण्ड एक बारगी सूख जाता है, फिर आप से पानी निकलकर पहिले की तरह स्थिर रहता है।

इस कुण्ड का जल ऐसा गरम है कि आस पास के लोग

बिना आग के उस पानी में मांस पकाकर खाते हैं। वे लोग एक बरतन में ठंडे पानी के साथ मांस की पोटली डालकर उस कुण्ड के गरम पानी पर उस बरतन को रख देते हैं। इसी में मांस पक जाता है, आग की ज़रूरत नहीं होती।

कितने देशों में कितने आश्चर्य उष्ण प्रस्रवण हैं, उन्हें गिनना कठिन है। ऊपर कहे हुए आइसलैण्ड द्वीप ही में पास पास ऐसे दो अद्भुत प्रस्रवण मौजूद हैं कि जब उनमें किसी एक से पानी की धारें उठा करती हैं, तब उसके पास के दूसरे प्रस्रवण से ज़रा पानी भी नहीं निकलता, और उसके बाद जब वह दूसरे प्रस्रवण से पानी की धारें निकलने लगती हैं, तब पहिले प्रस्रवण से एक भी जलधारा नहीं उठती। इसी तौर से पारापारी दोनों कुण्डों का जल उछलकर परम कौतुक उत्पादन करते हैं। ये देखने से आपाततः अद्भुत मालूम होते हैं इसमें सन्देह नहीं।

समुन्दर के भीतर भी वैसे बहुत से उष्ण-प्रस्रवण मौजूद हैं। किसी किसी की जल-धारा ज़ोर से निकल कर समुन्दर के जल से भी ज़ियादा ऊंची उठाकरती है।

कोई कोई प्रस्रवण से पानी के साथ ऐसी दाह्य (जलने वाली) चीज़ें निकलती हैं कि आग के छू जानेही से बल उठती हैं। उसे देखने से मालूम होता है, कि पानी ही बलता है।

जिन प्रदेशों में अग्नेयगिरि हैं, अथवा पहिले किसी वक्त में थे, या जहां पर भूमि घटित और किसीतरह का स्वाभाविक उत्पात हुआ था, उन्हीं प्रदेशोंही में बहुत से उष्णप्रस्रवण देख पड़ते हैं। इस से मालूम होता है कि जैसे आग्नेय गिरि निकलते हैं, उष्ण प्रस्रवण भी उसी तरह पैदा होते हैं। भूतत्त्व विद् पण्डित लोग कहते हैं, कि धरती के भीतर अग्निमय महा समुद्र तरंग लगकर उस के ऊपर का आवरण जगह जगह फटकर छेद छेद होजाता है और पृथिवी के भीतर का गरम जल उन छेदों से निकल कर उष्ण प्रस्रवण बन जाता है। पृथिवी का अभ्यंतर बहुत गरम है। जिस जगह से जिस प्रस्रवण का पानी उठता है वह जगह जैसा गरम है उस प्रस्रवण का जल भी वैसा ही गरम हुआ करता है जिस जगह जल जितना गरम होने से खौलने लगता है, वह जगह अगर उससे जियादा गरम होय तो उस प्रस्रवण का जल निकलते ही भाफ होकर उड़जाता है।

ये सब अद्भुद विषय सर्व्वस्रष्टा सर्वज्ञ परमेश्वर ही की अचिन्त्य शक्ति और अनुपम कीर्त्ति प्रकाश करते हैं। उन्हों ने सृष्टि के समय में जिन चीज़ों को जो सब गुन दिये हैं, उन के वही गुणों द्वारा ये सब अति आश्चर्य व्यापार सम्पन्न हो कर उन्हीं की महिमा प्रचार करते हैं।

आत्मप्रसाद ।

निष्पाप रह कर सत् कर्म्म का अनुष्ठान करने से अन्तः करण में जो असका' संवलित अनिर्वचनीय सन्तोष का उद्रेक होता है, उसी को आत्म प्रसाद कहते हैं। आत्म प्रसाद अनमोल धन है। जो असङ्कुचित चित्त से कह सकता है कि मैं निरपराध और निष्कलंक रह कर परम पिता परमेश्वर के नियम सब प्रतिपालन करता हूं, सभी लोगों से अन्याय बरताव छोड़ कर बराबर न्याययुक्त व्यवहार में प्रवृत्त हू, प्रगाढ भक्ति और सातिशय श्रद्धा के साथ परमेश्वर के शरणापन्न हु, वह अप्राकृत आदमी है। उसका प्रशस्त चित्त अति आश्चर्य्य अनिर्वचनीय विशुद्ध सुख का मकान है। अपना निर्म्मल जल तुल्य पवित्र चरित्र पुनः पुनः पर्य्यालोचना करके परम परितोष पाता है। अगर उसका साधु व्यवहार सब आदमियों से छिपा रहे, ऐसे एक बार भी लोगों के मुंह से अपनी बड़ाई सुनने की सम्भावना न होय, तो भी वह अपने को धर्म्म रूप व्रत पालन से कृत कार्य्य जान कर अनुपम सुख सम्भोग करता है। दुखी का दुख मोचन विपत में फंसे हुए को बिपद से उद्धार करना, अज्ञान अन्ध को ज्ञान उपदेश देना आदि कोई आप की हुई क्रिया एक बार भी याद करने से जैसा परिसुद्ध आनन्द अनुभव होता है, अखण्ड भूमण्डल का आधिपत्य रूप दाम मिलने से भी, वह बेचा नहीं जा सकता। सब की भलाई करना हो दीन दयालु आदमी के मन की इच्छा है

इसलिये वह सभी का प्यारा हो सकता है। और अगर अज्ञान से ढका हुआ मूढ़ आदमी उस के काम के मतलब को बिना समझे द्वेष प्रकाश और अनिष्ट चेष्टा करे तो भी उसका क्या कर सकता है? गत-सर्वस्व होने से भी वह अधीर नहीं होता। उसने अपने हृदयरूप भण्डार में जो अनमोल सम्पत्ति इकट्ठी कर रक्खी हैं, उन्हें छूने को किसी को सामर्थ्य नहीं है।

—*—

दीप-मक्षिका।

जगदीश्वर ने कितनी जगह कितनी ही आश्चर्य आश्चर्य चीज़ें बनायी हैं और कितनी चीजों को कितने तरह के मनोहर शोभा से शोभित कर रक्खा है। इस देसके जानवरों में फ़क़त जुगनू अंधेरे में रोशनी करते हैं। अंधेरी रात में पेड़ों पर जुगनू बैठे हुए बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। जान पड़ता है कि अनगिनत हीरे के टुकड़े पेड़ों पर शोभा पा रहे हैं। पर इस पुस्तक के अन्तमें जो १० नंबर का एक चित्र लिखा है यह दीप मक्षिका का है किसी किसी दीप मक्षिका का इतना प्रकाश होता है कि उसमें मिहीन अक्षर भी पढ़े जा सकते है। कई एक दीप-मक्षिकाओं को लेकर एक लकड़ी के छोर पर बांध रखने से वह ठीक मसाल सा बलती मालूम पड़ती है। दीप-मक्षिका के मस्तक से बड़ा प्रकाश निकलता है। दीप-मक्षिकाओं का मस्तक बड़ा और खूब चिकना होता है

और इसमें कुछ लाल और हरे २ घिरे होते हैं। इस की देह माथ से अधिक सफेद होती है।

मेरियान नाम एक बीबी ने तितली की जातियों का वर्णन लिखा है। दीपमक्षिका के वर्णन में इन्हों ने लिखा है कि अमेरिका के किसी पुराने निवासी ने कितनी एक दीपमक्षिका पकड़ कर मुझे दी मैंने उन सबों को एक सन्दूक में बंद कर रख दिया उस समय मुझे यह मालूम न था कि न से ऐसा प्रकाश होता है। रात को सोने के समय कुछ शब्द सु पड़ा तो मैं झट खाट पर से कूद पड़ी और देखा कि उस सन्दूक में शब्द होता था उसे झट खोला तो क्या देखा कि इसमें आग भ भ बल रही है मैंने डर कर उस सन्दूक को झट भूमि पर फेंक दिया तो क्या देखता हूं कि उसमें की आग धरती पर कीड़ों सी रेंगने लगी तब तो मेरी घबराहट दूर हुई और जाना कि वे दीपमक्षिका ही आग सी चलती है तब तो उन को पकड़ कर फिर सन्दूक में रखा और इनके प्रकाश को बहुत देर तक देखती और सराहती रही।

दीपमक्षिका कई प्रकार की होती हैं। उनमें जिस प्रकारका चित्र यहां लिखा गया है वह सब से बढ़ के होती है। वह अमेरिका के दक्खिन भाग में होती है वहां विशेष करके सरि नाम देश में तो बहुत ही होती हैं। चीन देश में भी एक प्रकार की अच्छी दीपमक्षिका होती है पर वह अमेरिका वाली से छोटी होती है।

कई प्रकार की मछली आदि के पानी में रहने वाले जीवों की देह में भी प्रकाश होता है। उन की देह और उन की देहों से निकली हुई चीज़ों से कभी कभी ऐसा प्रकाश होता है कि समुद्र उजाला हो जाता है। किसी किसी बनस्पतियों में भी कभी कभी ऐसा प्रकाश होता है कि भारतवर्ष के कवि लोग उसका वर्णन काव्यों में लिखा है।

स्वदेश वृद्धि।

एकट्ठा मिलजुल के रहना जैसा मनुष्यों का स्वभाव है वैसा और किसी दूसरे जीव का नहीं। यद्यपि दूसरे जीव भी एकट्ठा रहना और आना जाना पसन्द करते हैं, पर जिस प्रकार मनुष्य सब बातों में एक दूसरे की सहायता चाहते हैं वैसा कोई दूसरा जीव नहीं चाहता। बिना दूसरे की सहायता के हम लोगों का कोई भी काम नहीं चल सकता। अन्न वस्त्र विद्या आदि जो कुछ हम लोगों को आवश्यकता की चीज़ें हैं, वे सब बिना किसी दूसरे के यत्न और सहायता के कभी नहीं मिल सकतीं। यहां तक कि जिस देश या गांव में हम लोग रहते हैं उसमें लोग जितना ही अधिक कारीगरी ज्ञान और धर्म से दृढ़ से रहते हैं उतना ही हम लोगों का सुख और धन बढ़ता है किसान लोग जो खेतीबारी के काम को भलीभांति सोच कर भले भले अन्न फल फूल न उपजावें तो ये सब हम लोगों

को कहां मिलें। ऐसे ही कारीगर लोग कारीगरी सीख कर हम लोगों के सुख की चीजें न तैयार करें और व्यापारी लोग दूर दूर देशों से व्यापार की चीजें न लावें तो हम लोगों के सुख की कोई भी चीज मिलना कठिन हो जावे। अपने देश में अच्छी पाठशाला और अच्छी पुस्तक न रहने से सम्भव नहीं कि लिखना पढ़ना अच्छी तरह बन पड़े। अपने देश के सर्वसाधारण लोगों में जो नाना प्रकार की खराब रीतियां प्रचलित रहती हैं तो यथार्थ धर्म्मपालन करना कठिन हो जाता है। जो कोई ज्ञानी धार्मिक मनुष्य सदा मूर्खों के साथ रहे तो वह कभी भी सुखी नहीं रह सकता पर जो वह अपने समान धार्मिक और ज्ञानी लोगों के साथ रहने से सुखी रह सकता है।

इसलिये मनुष्यों को चाहिये कि जन समाज में रह कर दूसरों की विद्या बुद्धि और धर्म्म आदि के बढ़ाने में अच्छा यतन करें। दूसरे जन्तु की तरह केवल अपने और अपने परिवार का भरण पोषण करके चुप बैठ रहना आदमी का काम नहीं है। हर रोज अपने अपने नित्य कर्म्म करके जो कुछ समय बचे, वह स्वदेश की वृद्धि करने में लगाना चाहिये। जिस में अपने देश के आदमियों का ज्ञान, धरम, सुख और स्वतन्त्रता बढ़े, बुरी रीतें सब उठकर अच्छी रीतें प्रचलित होय और राजनियम सुधरे और सत्य धर्म्म चले इसलिये श्रम करना उचित है। अपने परिवार प्रतिपालन की तरह अपने देस की वृद्धि करने

के लिये यत्न, परिश्रम और सोचना भी आदमी को ज़रूर है यह बहुतेरे मन में नहीं बिचारते। वे लोग दूसरे जीवों की तरह केवल लोभ काम आदि रिपुओं को चरितार्थ करने ही के लिये सदा व्यस्त रहते हैं। परम मंगल कर परमेश्वर ने भू मण्डल के और और सब जानवरों की अपेक्षा आदमी को बिशेष कर बड़ा बनाया है, उस के मुताबिक़ क्या काम करने हैं, यह सभी को एक बार चेत करना चाहिये। क्रम क्रम से मंगलोन्नति होय यही परमेश्वर का अभिप्राय है, और यही उन के सब नियमों का उद्देश्य (मतलब) है। इस परम मनोहर उद्देश्य के ऊपर ध्यान रख कर काम करना मुनासिब है। अपनी अपनी जीविका निर्बाह का उपाय चिन्तन करना जैसा आवश्यक है वैसे ही समय समय पर इकट्ठे होकर अपने देस के दुःख दूर और सुख पाने के लिये यतन और उपाय करना भी आवश्यक है।

पृथ्वी की चाल।

चारों ओर की बायुराशि समेत सारा भू मण्डल शून्य रस्ते में घूमा करता है। पृथ्वी देखने में ठहरी हुई मालूम होती है, लेकिन यह स्थिर नहीं है, हर घण्टे में प्रायः २९९०० कोस चल कर एक बरस में सूरज के चारों तरफ़ एक बार फेरी करती है। पृथ्वी की इस चाल को

वार्षिक गति कहते है। गाड़ी आदि के चलने के समय जैसे उसके चक्के घूमते जाते है, पृथ्वी भी उसी तरह आप ही आप घूमती हुई सूरज को फेरा करती है एक रात दिन में एक बार घूम आती है, इसी लिये इसे रात की चाल या दिन की चाल कहते है। पृथ्वी आप ही आप घूमती हुई, उस का जो भाग जब सूरज के सामने आता है, तब उस भाग मे दिन और और हिस्सों मे रात हो जाती है। एक बार घूम आने मे ६० दण्ड लगता है, इसी लिये दिनमान और रात्रिमान दोनों ६० दण्ड के होते है।

जिस ओर नाव चलता है, नाव पर चढ़े हुये आदमियों को मालूम होता है कि उनको उलटी तरफ किनारे के पेड़ आदि चल रहे है। उसी तरह धरती पूरब मुंह घूमती है, इस से मालूम होता कि, सूरज पूरब की तरफ़ उग कर पच्छिम की तरफ़ चला जाता है। लेकिन ठीक वह सूरज की चाल नहीं है। पृथ्वी की गति हो रही है इसी से मालूम होता है कि सूरज चलता है हमलोग बरस और दिन को बांट कर के ऋतु, महीना वार और पहर, दण्ड पल अनुपल आदि गिना करते है। पृथ्वी सदा बराबर वेग से घूमती और चक्र करती है इसी से हम लोग उसके बाकी होनहार कार रवाइयों का सब हिसाब कहसकते है और हमलोग अपने अपने काम का बन्दोबस्त करके वक्त पड़ने पर उसी तरह काम निवाह लेते हैं। पृथ्वी की

गति का ऐसा नियम न होने से रात शेष और कब सवेरा होगा और किस समय कौन ऋतु पलटे (बदले) गी कुछ नहीं जान पड़ता निदान काम काज और आचार व्यवहार के अच्छे नियम बांधने लायक नरहते। ऐसा होने से, खेती सौदागरी आदि बहुत तरह के कामों में बड़ा गोल माल होजाता और लोगों का काम चलना मुस्किल होता। इसलिये हम लोगोंको बड़ी खुशी करनी चाहियेकि पृथ्वी को बरसको और दिन को चाल के अच्छे नियम ठहरा करके कैसी आश्चर्य स्वरूप करने वाली चतुराई प्रकाश की है वे एक सूक्ष्म सूत से कितने ही तरह के कल्याण उपजाते हैं।



बन मानुष।

हिन्दुस्तान के महासमुद्र के बीच सूमात्रा, मालाका बोर्नियो आदि कई एक उपद्वीपों में बन मानुष पैदा होते हैं। इनलोगों की सारी देह मोटे रोओं से ढकी रहती है। परंतु सिर कन्धा और पीठ के रोयें जितने घने होते हैं बग़ल और पेटके रोयें उतने घने नहीं होते। गला छोटा लेकिन बहुत मोटा होता है। लड़कपन में सिर गोल और माथा कुछ ऊंचा रहता है परन्तु बड़ा होने से फिर वैसा नही रहता। कान छोटे नाक चिपटी, ओठ ऊंचे और पतले होते हैं। चिहरे पर कुछ नीलापन रहता

है। इनके हाथ इतने लम्बे होते हैं कि, खड़े होने से हाथ की उंगलियां ज़मीन से छुआ करती हैं।

शरीर की बनावट में आदमियों के साथ बहुत मिलता है, इसलिये इन्हें बन मानुष कहते है। हर एक हाथों में एक एक अंगूठा रहता है, उसी से वे सब खाने की चीज़ें लेकर पकड़ सकते हैं, और आदमियों के तौर पर और बहुत काम करने योग होते हैं। ये दोनों पावों से टेढ़े मेढ़े होकर चल सकते हैं सही, लेकिन अच्छे चालाक नहीं हैं। इन की देह का ढंग बिचार कर देखने से मालूम होता है, कि ये सब जंगल में रह कर फल खा के जियेंगी, इस मतलब से परमेश्वर ने इनको पेड़ों की डालों पर चढ़ने और फल तोड़ने के लायक़ हाथ पांव दिये हैं। ये सब लड़कपन में ठंडे होते हैं, लेकिन बड़े होने से जैसे बलवान होते है तैसे ही बधिक और कट्टर भी हो जाते हैं।

डाक्तर एबेल साहिब ने एशियाटिक रिसर्च नाम की किताब के पन्द्रहवें खण्ड में एक बन मानुष के बध करने का बिवरण प्रकाश किया है। उसके बल और साहस का बिषय सुनने से आश्चर्य्य होता है।

किसी जहाज़ के मल्लाहों ने सुमात्रा द्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में एक पेड़ के ऊपर एक बन मानुष को देखकर क्रम से उसके पास गये। वह उन लोगों को देखकर पेड़ से उतर आया, और थोड़ी दूर पर थोड़े से पेड़ इकट्ठे थे,

उसी ओर चलने लगा। कभी कभी आदमी की तरह सीधा होकर झूमता झामता चलने लगा, और बीच बीच में हाथ या पेड़ की डाल टेक कर जल्दी जल्दी चलने लगा। इसी तरह वहां आ कूदकर एक पेड़ की सब से ऊंची डाल पर चढ़ बैठा और फुरती से बन्दर की तरह सब डालों पर फिरने लगा मल्लाहों ने बार बार बन्दूक लेकर एक एक करके पांच गोलियां मारी। उस से वह बहुत कमज़ोर हो गया और एक पेड़ की डाल पर टासने लगा और लहू कय (वमन) करने लगा। मल्लाह लोग उसके पकड़ने के लिये उस पेड़ को काटने लगे। लेकिन आश्चर्य्य की बात यह है, कि वह पेड कटकर गिरताही है कि उसी वक्त वह बन मानुष और एक पेड़ पर चढ़ कर ऐसे झोंक से भागा कि मालूम हुआ कि उसका ज़ोर कुछ कम नहीं हुआ है। इसी तरह पारा पारी पेड़ों पर फिरने लगा, निदान उसके पकड़ने के लिये मल्लाहों को एक एक करके सब पेड़ काटने पड़े। इसके बाद कोई पेड़ पास न देखकर जमीन पर उतर आया तब मल्लाहों ने मिलकर उसे हरा दिया। अन्त में जब मरने लगा तब ऐसा एक बल्लम पकड़कर जहाज़ तोड़ डाला जो कि बड़े बलवान आदमी से भी नहीं टूट सकता था। उस बन-मानुष की देह कुछ कम पांच हाथ लम्बी थी।

अफ्रिका के बीच में किसी किसी जगह विशेष कर कांगो और आंगोला प्रदेस में और एक तरह के बन-मानुष

होते हैं, उन्हें शिम्पांजी कहते हैं। इस में एक शिम्पांजी के बच्चे की तसवीर ज्यों की त्यों प्रकाशित हुई है। शिम्पांजी के साथ आदमी जितना मिलता जुलता हुआ है और किसी जानवर के साथ उतना नहीं। यूरोप के बहुत आदमी अफ्रिका में आकर उन्हें देख गये हैं। वे लोग कहते हैं, कि वे सब आदमी की तरह दोनों पावों से खड़े होकर चल सकते हैं, बन में पेड़ों की टहनियां और पत्तों से घर बना कर इकट्ठे रहते हैं, और जब दूसरे साहसी और बधिक जानवर उन्हें पकड़ना चाहते हैं, तब हाथ में लकड़ी लेकर उन्हें धमकाया करते हैं। इन की सारी देह पर बड़े बड़े काले रंग के रोयें जितने घने हैं, पेट और बगल के रोयें उतने घने नहीं हैं। मुंह चौड़ा, कान लम्बा, नाक चिपटी। माथा नीचा, परन्तु भौं के ऊपर की हड्डा बहुत ऊंची है। पहले कहे हुए बन मानुष के हाथ और पांव जैसे वे मेल लम्बे हैं शिम्पांजियों के वैसे नहीं हैं। खड़े होने से उन के हाथ की उंगलियां प्रायः जांघ तक होती हैं। सुनने में आया है, कि यह जानवर बहुत कामों में बहुत तरह की बुद्धि चतुराई ज़ाहिर करता है। मांडर साहिब की बनाई हुई "ट्रेजरी अवनेचरल् हिस्ट्री" नाम के ग्रन्थ में एक शिम्पांजी पशु का वृत्तान्त लिखा है। वह अफ्रिका के बीच ननेज नद के पास से इंगलैण्ड में भेजा गया था। वह शिम्पांजी चाभी से दरवाज़ा खोलता और बन्द कर सकता था, और उसके सामने जो कोई कुछ करता, उसी

की नक़ल कर सकता था। सुनने में आया है, कि पहिले बड़ा क्रोधी था। यहां तक, कि जब पिंजरे में बन्द था, उस के तीन लोहे के डंडे तोड़ डाले थे। क्रोध होने से अपने बाल सब तानता और उखाड़ कर ज़मीन पर खिझलाकर बार बार लोटता था। आदमी आदमी के मिलने से जैसे आपस में हाथ मिलाते हैं, वह शिम्पांजी लड़कों को पास देखकर उनके हाथ पकड़ के ठीक वैसा ही करता था। सुनने में आया है, कि अफ्रिका से इंगलैण्ड लेजाने के समय जो कप्तान उस का पालन पोषन करते थे, उन्होंने कहा है, कि वह शिम्पांजी खाने के वक़्त आदमी की तरह बेधड़क छुरी, कांटा, चमचा, और गिलास काम में लाता था। जब जो चीज़ खाता था उसे हाथ से न खाकर कांटा, चमचे से खाना उसको अच्छा मालूम होता था।

शारीरिक स्वास्थ्य-विधान।

(तनदुरुस्ती)

देह धारी जीव के लिये तनदुरुस्ती से बढ़कर सुख की चीज़ और कोई नहीं है। शरीर टूटने पर, सारी दुनियां दुःख से भरी मालूम होती है। जैसे आसमान में बादल छा जाने से, पूर्णमासी के चान्द की किरण छिप जाती है, उसी तरह देह रोगी होने से शरीर और मन को किसी तरह का सुख नहीं होता, तब बहुत बड़ाई, बड़ा यश

बड़ी इज्ज़त, किसी से भी जो खुश और चिहरा प्रफुल्लित नहीं होता। बीमार आदमी सदा दुखी, सब विषयमें व्याकुल रहता और केवल बीमारी ही की फिक्रमें चिन्ता करता रहता है। कितनी तकलीफमें उसके दिन बीतते हैं। उसके दुख के दिन कितने बड़े मालूम होते हैं। सदा के रोगी आदमियोंको देह उनको एक बोझ सी हो जाती है। वे लोग हमेशा व्याकुल और सदा ही सकुचित चित्त रहते हैं। आहार विहार आदि शरीर रक्षोपयोगी सब कामों में आलसी होकर किसी सूरत से दुख में वक्त बिताना उन लोगों का नित्यव्रत हो जाता है। तन दुरुस्ती के लिये यतन न करना बुरा है ये सब प्रत्यक्ष दृष्ट इस बातके ठीक प्रमाण हैं।

परमेश्वर ने आदमी के मन के साथ शरीर का ऐसा नज़दीक का सम्बन्ध कर दिया है कि शरीर स्वस्थ और सबल रहने से, अन्तःकरण भी स्वस्थ और फुर्तीला रहता है, और अन्तःकरण प्रसन्न रहने से सुस्त शरीर भी फुर्तीला हो जाता है। तन दुरुस्ती दोनों के लिये उपकारी है, और अस्वस्थता दोनो के वास्ते अपकारी है। अन्तः करण दुखी होने से, देह दुबली होती है, और शरीर पीड़ित होने से, क्रोध रिपु प्रबल होता है, और दया भक्ति आदि कई एक अच्छी वृत्तियां कमज़ोर हो जाती हैं। जो लड़का सदा हसता रहता है, पीड़ित होने से, उसका सदा जो हटा और गुस्से में भरा रहता है। तब फिर

उसकी मनोहर मधुर हंसी देख नहीं पड़ती, और अर्द्धस्फुट मीठी बोली भी सुनाई नहीं देती। खूब भूख के समय गुन दायक चीज़ें न खाने से, शरीर बल हीन होने से मन भी ढीला होजाता है, और बहुत ज़ियादा खाने से शरीर और मन दोनों में ग्लानि होती है। शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की मिहनत करने में तकलीफ़ होती है।

किसी काम के वास्ते कड़ी धूप में देह पर पसीना बहते हुए बेचैनी के साथ रस्ता चलनेसे जो घबरा जाता है, परन्तु भोरके समय विश्व (दुनियां) पति के विश्व कार्य्य की परम आश्चर्य्य सौन्दर्य्य (सुन्दरता) देखने और अच्छी ठंडी हवा सेवन करने से मनमें परम परिशुद्ध आनन्द रस का संचार होता है। शारीरिक पीड़ा होने से कितने ही आदमियों की स्मरण-शक्ति घटती देख पड़ी है, और भला चंगा और स्वास्थ्य वृद्धि होकर कितने ही आदमियों की याद रखने की शक्ति पुष्ट हुई है। इसलिये जब शरीर के साथ मनका एक तरह का ऐसा पास का सम्बन्ध है, और शरीर भलाचंगा न रहने से, कर्त्तव्य कर्म्म सब ठहराई हुई रीत से पूरे नहीं हो सकते, तब जीवन रक्षा सुख साधन आदि सब बातों के लिये बदन के सुख के लिये यत्नवान रहना सब तरह से मुनासिब है। यदि प्रीत मन से परिवार पालन करना कर्त्तव्य होय, पराया उपकार करना उचित होय, परम पिता परमेश्वर की गहरी

सेवा और मन को लगाना मुनासिब होय, तो अपने शरीर को सुन्दर तरह भला चंगा और स्वाधीन रखना अवश्य है इसमें सन्देह नहीं, कारण यह है कि शरीर टूटने पर वह सब अवश्य कर्त्तव्य कर्म भली भांति पूरे करने में समर्थ नहीं हो सकते। यदि बड़े आदर योग्य बाप मा को क्लेशरूप आग की लहर में जलाना अधर्म होय, और अगर जान से ज़ियादा प्यारे लड़के लड़कियों को यथा नियम से पालन न करना बुरा काम होय, तो अपने भर एक देह के नियम न मानने से मरके वह सब कठिन बिपद डालनी ज़रूर अधर्म है इसमें शक नहीं। अपने तईं मार डालना महा पाप है यह सभी कोई मानते हैं। पानीमें डूबकर, आगमें जलकर, और फांसी आदि से एक बारगी जान देना और क्रम से शरीर के नियम लांघकर क्रम क्रम से देह नाश करना दोनों बराबर है, फ़क़त देरी और जल्दी यही विशेष है। इसलिये अच्छे दयावान परमेश्वर ने हम लोगों की तन दुरुस्ती के लिये जो सब अच्छे नियम बनाये हैं, उन्हें मानना सब तरह से कर्त्तव्य है, न मानने से पाप होता है। रोग और अकाल मृत्यु घटित जितने क्लेश हैं, वे सब परमेश्वर के बनाये हुए शारीरिक नियम लांघने के फल हैं। शरीर बिधान विद्या में जिन नियमों का अच्छी तरह हाल लिखा है, उनमें से इस जगह उदाहरण-स्वरूप कई एक प्रधान प्रधान प्रसंग लिखे जाते हैं।

परमेश्वर ने दूसरे प्राणियों को भी शारीरिक नियमों के अधीन किया है, और उन्हें उनके पालने लायक़ होने के लिये थोड़े से स्वभाव-सिद्ध संस्कार दिये हैं। वे सब वही सब स्वाभाविक संस्कार के अनुवर्त्ती होकर अपने अपने शरीर के काम निबाह कर भले चङ्गे शरीर से दिन बिताते हैं। इसलिये इस विषय में उनके बरताव पर ध्यान रख कर चलने से, बहुत तरह के उपकार हो सकते हैं। जिन विषयों में उनके शरीर के साथ हम लोगों के शरीर की प्रकृति मिलती है, उन विषयों में उनके बरताव हम लोगों को आदर्श स्वरूप समझने चाहियें। सविशेष ध्यान देकर उनके उन विषयों का व्यवहार देखने से, तन दुरुस्ती (शारीरिक स्वास्थ्य) के बारे में बहुत से उपदेश मिलते हैं।

१। इतर जानवर स्वभावतः साफ़ सुथरे रहते हैं। सभोंने चिड़ियों को बदन धोते और परों को साफ़ करते देखा होगा इसमें सन्देह नहीं। जब वे सब परों को साफ़ और सजाकर बिचरते हैं, वे कैसे सुन्दर सुहावने और फुर्तीले मालूम होते हैं। गृहस्थ के घर की बिल्लियां बदन के रोयें कैसे साफ़ और चिकने कर रखती हैं। गाय कितने यतन और आग्रह से बच्चे को चाटती है। घोड़ों की देह न मलने से, वे सब घास फूस और धूल पर लोटते हैं। जंगल के प्रायः सभी जानवर और पंछी साफ़ सुथरे रहते हैं। लेकिन आदमियों के मकान में रहने वाले उन जानवरों में इसका कुछ उलटा देख पड़ता है।

२। पशु पंछियोंको खानेकी चीज़ें खोजनेके लिये मिहनत पड़ती है, इस से उनको तन दुरुस्ती के वास्ते अंगोंको जितनी कसरत करने की ज़रूरत रहती है, वह आपही हो जाती है। ख़ास करके परमेश्वर ने उनके देह की प्रकृति के साथ (वाह्य वस्तु) बाहर की चीज़ों का ऐसा सम्बन्धकर दिया है. कि उनको ज़ियादा मिहनत भी न पड़े और अपनी शक्तिभर परिश्रम करने बिना काम भी न चले।

३। हरएक जानदार अपने अपने स्वभाव के मुताबिक थोड़ी सी निरूपित चीज़ें खाया करते हैं। जगदीश्वर ने जिस जिस जीव का जो खाना स्थिर कर दिया है, उसी से उनकी देह दुरुस्त और बलवान रहती है, वे सब आदमी की तरह बार बार ज़ियादा खा कर बीमार नहीं होते और अहितकारी चीज़ खाकर अकाल में कालग्रास में भी नहीं पड़ते।

जानवर सब परमेश्वर के दिये हुए संस्कार विशेष से इसी तौर पर सुख देने वाली चीज़ें व्यवहार किया करते हैं। आदमियों को उस तरह का अभ्रांत संस्कार नहीं है, परन्तु परमेश्वर ने उन लोगों को तेज़ बुद्धि शक्ति देकर उस बिषय का अभाव दूर कर दिया है। वे लोग अक्ल के ज़रिये शरीर का स्वभाव, हरएक अंगों का प्रयोजन और उनके काम की रीति जानकर शारीरिक नियम अलग कर सकते हैं, और उन्हें पालन करके उस सुख के सम्भोग करनेमें समर्थ होते हैं कि जिसका बर्णन नहीं हो सकता।

नीचे इस बारे में एक उदाहरण लिखा जाता है, जिसके देखने से यह बात साफ हो जायगी। हम लोगों की देह चमड़े से ढकी हुई है। हरएक रोयें के सूराख़ शरीर की हानिकारक (ख़राब) चीज़ें निकालने के लिये एक एक दरवाज़े हैं। जो हर रोज़ अंदाज़न तेरह छटांक निकला करता है। अगर रोयें के सूराख़ बंद होकर वे सब बुरी चीज़ें बाहर निकलने न पावें तो लहू के साथ मिलकर उसको बिगाड़ देती हैं। लहू बिगड़ने से शरीर रोगी हो जाता है। देह से जो पसीना निकलता है, उसका जलीय भाग भाफ होकर उड़ जाता है, बाक़ी भाग गाढ़ा होकर रोयें के सूराख़ को बन्द कर देता है। इस वास्ते उन्हें साफ़ रखने के लिये सब अंगों का धोना और मलना ज़रूर है। जो कपड़ा एक तरह का छेद वाला और साफ़ और सहज हो पसीना सोख सकता है, और जिस कपड़े के बीच से पसीना बाहर निकल सके वही पहनना चाहिये। नहीं तो शरीर मैला रहने से जैसा बिगाड़ होता है, बहुत गाढ़ा मैला कपड़ा पहनने से भी वैसाही होता है। चमड़ा रोयें के सूराख़ के रस्ते से जैसे शरीर की ख़राब चीज़ें बाहर निकाल देता है, उसी तरह बाहर की चीज़ें सोख भी लेता है। इसलिये शरीर को बिना मले धोये दो तरह की हानि होती है। एक यह कि, रोयें के सूराख़ बंद होने से बुरी चीज़ें सब शरीर से बाहर नहीं निकलतीं; और एक यह कि शरीर पर जो मैला रहता है, वह

शरीर के भीतर जाकर रोग उपजाता है। शरीर के चमड़े का यहसब गुण अवगुण चेतकर देखने से, देह और कपड़े साफ़ सुथरे रखने जरूरी मालूम होते हैं। जिन्होंने ये सब नियम जाने हैं, उन लोगों को चाहिये कि इन्हें पालन करें, छोटे आदमियों को वैसे ज्ञान की योग्यता नहीं है। इसी तौर से शरीरकी मांसपेशी, मस्तिष्क आदि का स्वभाव और प्रयोजन विचार कर देखने से मालूम होगा कि सुख करने के लिये शरीर और मनको अनतिशय चालना करना आवश्यक है।

किसी अंगको बहुत बिनाचलाये रखना मुनासिब नहीं, और किसी अंगको ज़ियादा खैंचल देना अच्छा नहीं। दोनोंही बुरा है, दोनों ही से देह दुबली और टूट जाती है। भले चंगे शरीरमें उत्साह के साथ शरीर और मनको अनतिशय चालना करने से अपने को स्वस्थ और स्वछन्द मालूम होकर जैसा पूरा आनन्द मालूम पड़ता है इन्द्रिय-सुखासक्त भोग बिलासी आदमियों को वैसा सुख नहीं मिलता। वेलोग जिसे इन्द्रिय कहते हैं, वह शारीरिक सुस्थता जनित विशुद्ध आनन्द की अपेक्षा बहुत तरह से (तुच्छ) नीच है।

संसार के चलन व्योहार में ऐसी शृंखला हुईहैं, कि प्राय सभी लोग (कसरत) अंग संचालन केवारे में पहिले कहे हुए दोतरह के दोषों में से किसी न किसी दोष में फंसे हुए हैं। अमीरों में से बहुतेरे मिहनत से हट कर

आलस रूप पानी में देह को स्वच्छन्दता को छोड़ देते हैं, ग़रीब लोग धन रुज़गार करने के वास्ते नियम से भी ज़ियादा मिहनत करके उमर घटा लेते हैं, और विद्यार्थी लोग बदन की कसरत छोड़ कर ज़ियादा मानसिक परिश्रम करके शरीर को दुबला और बूढ़ा करदेते हैं और उनमें से कोई कोई सदा के रोगी होकर बहुत तकलीफ़ से जनम बिताते हैं। प्रधान प्रधान विद्यालय (स्कूलों) के बहुत से लड़कों को विद्यालय में जाने के कुछ दिन बादही क्रम से दुबले होते देखते हैं। उनसब विद्यालयों के मालिक लोग लड़कों के शारीरिक नियमकी रक्षाके विषयमें अच्छी तरह नज़र नहीं रखते और स्कूलों के सब लड़कों को शरीर विद्या विधान पढ़ाना अपना काम नहीं जानते इसी से इस अनर्थ की उत्पत्ति हुई है।

अब विषय कर्म्म की जैसी रीति प्रचलित है, वह बहुत हानिकारक है। संसार के आदमी लोग दिन का ज़ियादा भाग केवल विषय के काम में बिता देते हैं, उनको ज्ञान और धर्म की अनुशीलन करने को फ़ुरसत नहीं मिलती, परन्तु आदमी की सभी प्रधान वृत्तियों को यथानियमों से चलना उचित है और थोड़ी देर आनन्द सुख करना भी चाहिये। इसके सिवाय किसी तरह से भी भलीभांति भले चङ्गे और सब तरह से सुखी नहीं हो सकते जब परम कारुणिक परमेश्वर ने कृपा करके गाने की शक्ति और हंसी खेल का अभ्यास दिया है, तब सच्चा सुख

सम्भोग करना बुरा नहीं है। उन्हें बुरे कामों में अर्थात् असत्कामों में बार बार लगाना ही अधर्म्म है। निर्दोष आमोद आनन्द स्वास्थ्य साधन के लिये बहुत उपकारी और सब तरह से उचित है।

इसी तरह परिपाक-शक्ति, रक्त संस्कार आदि बहुत से बिषयों का तत्व अच्छी तरह बिचार करके ऊपर लिखे हुए नियम सब बयान किये गये हैं। हर रोज़ थोड़ा खाना और टहलना उचित है, शरीर धोना और मलकर साफ करना और पहनने के कपड़े साफ़ रखने चाहिये, जो घर सूखा, बड़ा और साफ़ और जिसमें रात दिन साफ़ हवा बहा करती है, उसमें रहना योग्य है। सचराचर मादक सेवन करना कुछ ज़रूर नहीं है, हर रोज़ ६ या ७ घण्टे सोना चाहिये, मनमें किसी बात की इच्छा न करना और दुख न होने देना और आई हुई बिपतमें धीरज धरना चाहिये। ये सब नियम परमेश्वर की साक्षात् आज्ञा है। और साधारण सभी को ये सब शुभ दायक आज्ञा रक्षा करनेमें यत्नवान रहना उचित है। सब कोई ये सब नियम पालन कर सकें तो भूमण्डल में बीमारियां घट कर शारीरिक और मानसिक सुख के लाभ और उस से अनेक प्रकार सुखोन्नति के बिषयमें युगांतर उपस्थित होता है।



चौथा परिच्छेद।

जलस्तम्भ।

इस विषयका जो नक़्शा अन्तमें ११ नम्बरका लिखा गया है, उसे जलस्तम्भ कहते हैं। वह एक बड़ी अद्भुत असामान्य चीज़ है।

समुद्र की जिस जगह जलस्तम्भ उपजता है, उसके ऊपर भाग में आसमान में बादल रहता है। पहिले बड़े ज़ोर से घूमती हुई हवा आकर वहां का जल हिला देती है, चारों ओर से तरंगें सब उस जगह के बीच में बड़े वेग से आया करती हैं। प्रभूत जल और पानी की भाफ बहुत जल्दी ढेर हो जाती है, और एक भाफ का सूंड़ की तरह खम्भा पैदा होकर ऊपर उठता है, और भी वैसा ही एक सूंड़ बादल से उतर कर उसके साथ मिल जाता है। जिस जगह दोनों सूंड़ोंका मेल होता है, उस जगह का बिस्तार दो तीन फुट का रहता है। सुनने में आया है, कि जब जलस्तम्भ पैदा होता है, तब एक तरह का गम्भीर शब्द सुनाई देता है।

सब जलस्तम्भ बराबर लम्बे नहीं होते, एक एक की लम्बाई अंदाज़न १७५० हाथ की होती है। जलस्तम्भ का पहिया जैसा गोल देख पड़ता है, मध्य भाग वैसा नहीं है। इससे मालूम होता है, कि वह शून्य गर्भ अर्थात् पोला है। सदा एक जगह ठहरा नहीं रहता, जिस ओर हवा चलती है, उसी तरफ़ चला जाता है। परन्तु हवा न चलने से

भी इधर उधर हटता दिखाई देता है। बहुतेरे जलस्तम्भ झुक जाते हैं और छिन्न भिन्न हो जाते हैं। उसमें जो वाष्प राशि रहती है, वह निकल कर हवा के साथ मिल जाती है, या समुद्र के ऊपर बरस जाती है। जलस्तम्भ कितनी देर ठहरता है, उसका कुछ ठीकाना नहीं। कोई उपजकर छिन भर में नाश हो जाता है, कोई कोई प्रायः एक घण्टे तक बना रहता है। और कोई कोई थोड़ी देर तक देख पड़ता है, फिर आप ही छिप जाता है और फिर प्रगट होता है। इसी तरह बार बार उसका प्रगट होना और छिपना देख पड़ता है। कभी कभी ज़मीन के ऊपर भी जलस्तम्भ बन जाता है।

वह उत्पन्न होने के समय ज़मीन से कुछ भी नहीं निकलता केवल बादल से सांझ के समय वाष्प का सूंड़ उतरा करता है। एक बार फ़्रांसीस देसमें ऐसा वाष्पमय स्तम्भ देख पड़ता था, कि उसमें से गन्धक की बू निकली थी, बिजली की चमक हुई थी, और बहुत सा पानी बरसा था। वह स्तम्भ नदी, पहाड़ी, और ज़मीन के ऊपर से एक ही ओर चलने लगा, परन्तु सामने के पहाड़ों को लांघा नहीं किन्तु वेष्टन करता हुआ चला गया।

सन १८१८ ईसवी में इंग्लैण्ड के बीच में लांकेशेयर नाम की जगह में इसी तरह एक जलस्तम्भ हुआ था। वह जिस जगह गिरा था, उस जगह की ज़मीन १७५॰ हाथ, लम्बी और ५ हाथ नीची एकबारगी फट गई थी।

१७८२ शाके को २८ वीं सावन को सांझ के समय प्रायः १ बजे कलकत्ते के पास दो जलस्तम्भ पैदा हुए थे; एक पच्छिम को तरफ़ गंगा के ऊपर, दूसरा पूरब को ओर धापा नाम के जलभाग के ऊपर देख पड़ा था। उस समय आसमान में बहुत से बादल देख पड़े थे और उनको घनी घनी गम्भीर आवाज़ें सुनाई पड़ी थीं। जो जलस्तम्भ गंगा के ऊपर बना था उसके भीतरसे बहुत नंन्हें नंन्हें रेज़े यानी पानी के कण सब एक धार बंधकर बह रहे थे ऐसा मालूम होता था, वह अंदाज़न पांच मिनिट के भीतर ही मिट गया था।

जिस समय बिजली और वज्राघात ज़ियादा होता है, उसी वक्त जलस्तम्भ उपजता है, उसमें बिजली की चमक होती है, गन्धक की बू पाई जाती है, साथ ही साथ, तुफान, बरसा, और कभी ओले भी बरसते हैं। जिस जगह वह गिरता है, उस स्थान के घर पेड़ आदि टूट जाते हैं। ये सब अच्छी तरह सोच करके पदार्थ विद्यावित् पण्डितों ने बिचार किया है, कि बिजली जो चीज़ है, उसीके प्रभावसे जलस्तम्भ पैदा हुआ करता है।

जलस्तम्भ देखनेमें बड़े आश्चर्यका होता है। आसमान के बादल सब बिश्वपति के पृथ्वी रूप मकान के बड़े सुन्दर छत मालूम होते हैं, और जलस्तम्भ मानो सचमुच थंभे होकर उसे थांभे रहते हैं। इस देश के लोगों का ऐसी समझ है, कि स्वर्गाधिपति इन्द्रदेवका ऐरावत हाथी सूंड़ से

समुद्र का जल उठा कर धरती पर बरसाता है। मालूम होता है, कि किसी समुद्रके जलस्तम्भको देखनेसे यह अनुमान उत्पन्न हुआ होगा। सचमुच क्या सामान्य, क्या रमणीय, जगत के सभी व्यापार केवल अद्वितीय जगदीश्वर ही के काम हैं। सभी उनके नियमके अनुसार ठहरते हैं, और उनही की अति आश्चर्यवान महिमा जिसका बर्णन नहीं हो सकता प्रकाश किया करते हैं।

परमाणु।

सोना, रूपा, लोहा, पत्थर, पानी, हड्डी, मांस, नस, लहू आदि जितनी जड़ चीज़ें हैं, सभी नन्हें नन्हें परमाणुओं की ढेर हैं। यह जो सूरज, चन्द्रमा, तारे, नक्षत्र आदि विशिष्ट आश्चर्य जगत् है वह केवल कनोंका ढेर ही है। ओस की बून्दें और बालू के रवे जो इतने छोटे हैं, उनमें भी बहुत से परमाणु हैं। वे सब परमाणु ऐसे छोटे हैं कि आंखों से देख नहीं पड़ते त्वचासे छूए भी नहीं जाते और दूसरी कोई इन्द्री के द्वारा प्रत्यक्ष भी नहीं किये जा सकते।

आज तक कोई किसी चीज़ के परमाणुओं को परस्पर जुदा करके नहीं दिखा सका, परन्तु सब चीज़ों को बार बार बिभाग करके छोटी कर सकते हैं, इस से मालूम हुआ कि परमाणु बहुत छोटा चीज़ है इसमें सन्देह नहीं। सोने को पीट कर इतने पतले पत्तर बना सकते हैं कि, उन्हें

तीन लाख साठ हज़ार ऊपर तले रखने से, एक बुरुलमात्र मोटा होता है। एक भरी सोने का ६० कोस लम्बा तार बन सकता है। प्लाटिनम् नाम की एक धात होती है, उसका तार ऐसा पतला बन सकता है कि एक सौ चालीस तार एकट्ठा करने से रेशम के एक तार बराबर मोटा होता है और तीस लाख ऊपर नीचे रखने से एक बुरुल मोटा होता है। चांदी के तार के ऊपर सोना चढ़ाने से, वह सोना कितना पतला हो जाता है सो कहा नहीं जाता। मकड़ी जिस सूतसे जाला बनाती है उसके एक एक सूतमें छः छः हज़ार बहुत महीन सूत रहते हैं, इसलिये, ये सब पत्तर, तार, सूत आदि जिन कनों के ढेर से मिलकर बने हैं वे कन कितने नन्हें हैं बिचारिये। एक जल के बरतनमें थोड़ा सा नमक या चीनी मिलाने से सब पानी मीठा वा खारा होजाता है, इस से वह नमक और चीनी जल में घुल जाती है इसमें सन्देह नहीं। समुद्र के पानी में नमक है, पर देख नहीं पड़ता, समुद्र से बरतन में जल लेकर देखनेसे बहुत साफ़ मालूम होता है। उसमें ज़रा भी नमक दिखाई नहीं देता। परन्तु उस पानी को किसी बरतन में रखकर गरम करने से, उसके पानी का हिस्सा भाफ़ होकर उड़ जाता है और नमक उस बरतन में लगा रह जाता है। इस से निश्चय होता है, कि नमक के ऐसे छोटे छोटे हिस्से समुद्र के पानी में मिले रहते हैं कि हमलोगों को आंखों से दिखाई नहीं देते।

एक लोटे पानी में थोड़ा सा अलता घोलने से सब पानी लाल हो जाता है। जांच करके देखा गया है, कि एक रत्ती हरताल से पांच सेर पानी रंग जाता है। पानी में साबुन मिलने से जो बुलबुले उठते हैं, उनके ऊपरकी छाल ऐसी पतली हो सकती है, कि बुरुल के पचीस लाख हिस्से का एक हिस्सा भी नहीं होता हो।

जानदार चीज़ों में इस बिषय के बहुत से आश्चर्य्य उदाहरण पाये जाते हैं। जानदार का लहू पूरा लाल नहीं है, नाड़ियों के बीच में एक तरह की पानी सरीखी साफ चीज़ है, उसमें गोल गोल या अंडे की सूरत की बून्दें सब तिरा करती हैं। किसी महीन सूत की नोक के आगे आदमी का जितना लहू लगा रह सकता है, उसमें वैसी दस लाख बून्दे रहती हैं। कीटाणु नाम के कितने एक जानवर हैं, उनकी देह इस से भी छोटी रहती है। वे सब पानी, ओस, सिरका, और चाह, मिरच, गेहूं आदि बहुत तरहके अनाजों में, और सूल और पत्तोंके रस आदि बहुत सी चीज़ों में रहते हैं। साधारण पानी में ऐसे कीटाणु हैं, कि उन्हें करोड़ों को इकट्ठे करने से भी एक बालू के रवे बराबर नहीं होते। बहुत छोटी सूई के छेद बराबर जगह में हज़ारों एकबारगी तिर सकते हैं। एक योरोपियन पण्डित ने हिसाब करके देखा है, कि उन में से बहुतेरों की देह लम्बी चौड़ी ऊंची एक बुरुल का १,००,००,००,००,००,००,०० एक अंश भाग का २७ वां

भाग होता है जगदीश्वर को असाध्य कुछ नहीं है। हाथी, घोड़े, शेर, सिंह आदि की तरह इनके अंग प्रत्यंग आदि हैं, लहू और मांस पेशी भी हैं, और भूख प्यास, और पाक स्थली हैं, येसब इधर उधर बिचरते हैं और इनमें एक जात के दूसरी जात को खाजाते हैं। अणुवीक्षण * यंत्र से देखा गया है, कि एक कीटाणु और एक कीटाणु के पेट में चलता फिरता है। इनके शरीर कैसे हैं, इन्द्रियों के रस्ते कैसे हैं, और लहूकी गोल बूंदें कैसीसूक्ष्म हैं।

जैसे जीभ के साथ खाने की चीज़ नलगने से स्वाद नहीं मिलता, वैसेही गन्धद्रव्यके अणुसब घ्राणेन्द्रियमें नछूलाने से बू नहीं मालूम होती। बूदार चीज़के छोटे छोटे अणु चारों ओर को हवा में फैला करते हैं, वही नाकों के छेदों में जाने से व मालूम होती है। घर में कपूर रखने से वह क्रम से उड़जाता है। एक बड़ा घर आधीरत्ती प्रमाण कस्तूरी की बूसे २० बरसतक सुबासित था, इसपर भी जो उसका कुछ क्षय हुआ था ऐसा मालूम न हुआ। कस्तूरी के जो सब छोटे छोटे अणु जुदे जुदे होकर चारों ओर फैलते हैं वेही जो आदिम परमाणु हैं उसका क्या निश्चय है?

परमाणु गलते नहीं, जलते नहीं, और बिगड़ते भी नहीं। वे सब जैसे सृष्ट हुए थे, वैसे ही है। उनके आपस के संयोग से सब चीज़ें बनी हैं, और आजतक बनती

* अणु---सूक्ष्म, वीक्षण---दर्शन। जिस यन्त्र के द्वारा आंखों को अलक्ष अति सूक्ष्म जड़ चीजें सब देख पड़ें उसका नाम अणुवीक्षण।

हैं। इस भौतिक जगत में जितने कांड देख पड़ते हैं, सभी उन्हीं के संयोग और बियोगसे हुआ करते हैं। प्रबल तूफान, घोरतर पत्थर बरसना, भयानक दावानल, ये सभी उन्हीं आदिम परमाणुओं के काम हैं।



आत्म-ग्लानि ।

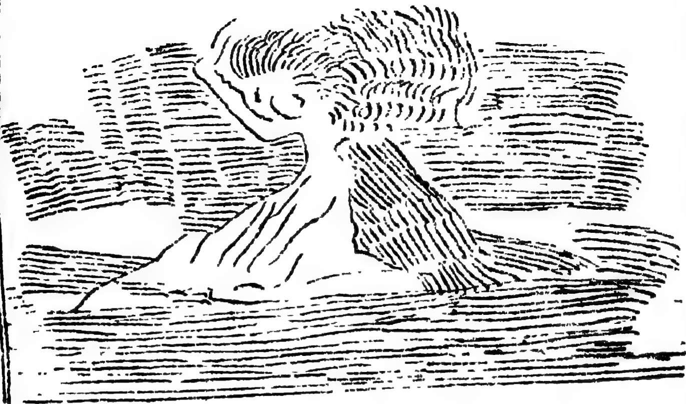
आत्म-प्रसाद जैसे पुण्य का अवश्यम्भावी पुरस्कार है, आत्मग्लानि और मतानुशोचना उसी तरह पाप अनुष्ठानका गुरुतर प्रतिफल है। जब कोई दुर्द्दान्त निकृष्ट (नीच) प्रवृत्ति प्रबल होकर धर्म्म प्रवृत्तियोंसे रोके जाने लायक नहीं रहती तब हम लोग उसे चरितार्थ करते हैं और पाप पिंजरेमें बन्द होजाते हैं। उस वक्त, धर्म्म प्रवृत्तियां ऊंची अवाज़से पुकार कर मना भी करती हों, तौभी हम लोग नहीं सुनते। परन्तु रिपु सब चरितार्थ होकर जल्दी निरस्त होजाते हैं, और तब गतानुशोचना रूप अन्तर्दाहा उद्रेक हुआ करता है। तब अपनाही आत्मा अपने को बहुत तरह से तिरस्कार करने को प्रवृत्त होता है। जिसने अपने कुव्यवहार से किसी का सुख-रत्न हरण किया है, अथवा बल और कौशल से किसी का धर्म्म रूप बिशुद्ध भूषण नष्ट किया है, उस के चित्त भूमी में उसकी मलिन मूर्ति स्पष्ट प्रकाशित होकर उसको व्याकुल किया करती है। मुझसे अमुक का सर्वस्वान्त हुआ है, वा अमुक का परिवार अमिट कलंक से कलंकित हुआ है अथवा संसारमें दुःखकी धारा इतनी बढ़ गई है, कि मैं न जनमता तो भूमण्डल में पाप प्रवाह अब से कुछ न कुछ ज़रूर कम रहता, ऐसा स्मरण और चिन्तन करना दुःसह यातना का विषय है। जो आदमी ऐसी आलोचना करने पर भी अंतःकरण स्थिर रख सकता है, उसका ज़िगर पत्थर है इसमें शक नहीं। जिसने किसी खराब स्वभाव के

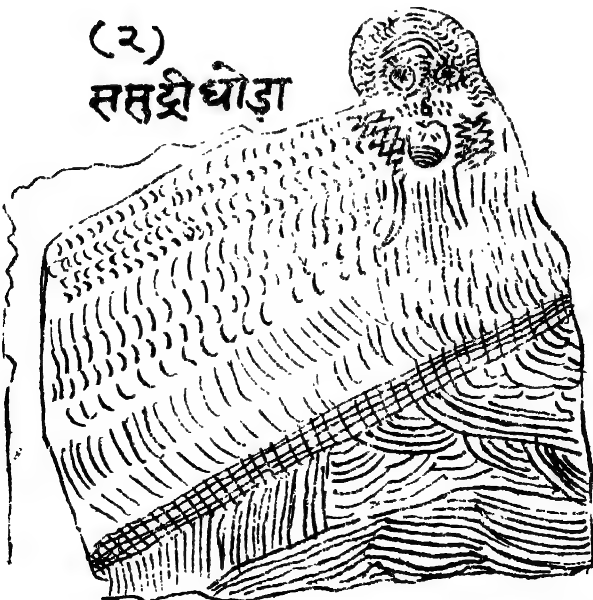
कारण अपने निर्मल चरित्र को कलंकित कर छल बिश्वास घात से किसी बिचारे गरीब मनुष्य की कुछ बुराई की है उसके मन की ग्लानि और आत्मग्लानि जनित बिषम यन्त्रणा चिन्ता करने से उसी प्रतारित दुखी आदमी को दया होती है। निद्रा जैसे परिश्रान्त-क्लान्त आदमी के अवसन्न शरीर में क्रम क्रम से आर्विभाव होकर उसके बेजानते धीरे धीरे आंखों को बंद कर देती है, उसी तरह पाप रूप पिशाच निःशब्द से पदसंचरण पूर्वक क्रम से अंतःकरण आकर्षण करके अवशेष में पूरा दखल कर लेता है। आमोद जिन सब पापों का प्रत्यक्ष फल स्वरूप प्रतीयमान होता है, उसके अनुष्ठान के समय उसी आमोद प्रमोद के साथ ही साथ ग्लानि उपस्थित हुआ करती है। जो श्रद्धा और यत्न के साथ कुछ काल धर्म्म रूप पवित्र-व्रत पालन करके, परिशेष में रिपु बिशेष के बशीभूत होकर पाप के रस्ते में पांव बढ़ाता है, वही जानता है, अधर्म्म अनुष्ठान करने से कैसी यन्त्रणा भोगनी पड़ती है। हम लोगों का अपना अंतःकरण हम लोगों को अधर्म्म के रस्ते से हटाने के लिये तिरस्कार किया करता है, परन्तु हम लोग वह उपदेश न मान कर जितना अत्याचार करते जाते हैं हम लोगोंका पाप आचरण अभ्यस्त होता जाता है, अभ्यस्त होने से ग्लानि और अनुताप जनित यातना क्रम से घट जाती है, कारण जैसे पत्थर के ऊपर बार बार तलवार मारने से तलवार की धार क्रम से

कम जाती है, उसी तरह बार बार पाप आचरण करनेसे निकृष्ट प्रवृत्ति सब प्रबल होकर धर्म्म प्रवृत्तियां सब कमजोर हो जाती हैं, इस से उन की तिरस्कार करने की शक्ति घट कर आदमी को केवल निकृष्ट प्रवृत्तियों के आधीन कर देती हैं। आदमी होकर रिपु परतन्त्र और सेवा में अनुरक्त और पुण्यजनित पवित्र सुख से वंचित होने की अपेक्षा दुर्भाग्य का विषय और क्या होगा।

संपूर्ण।

ज्वालामुखी (१)





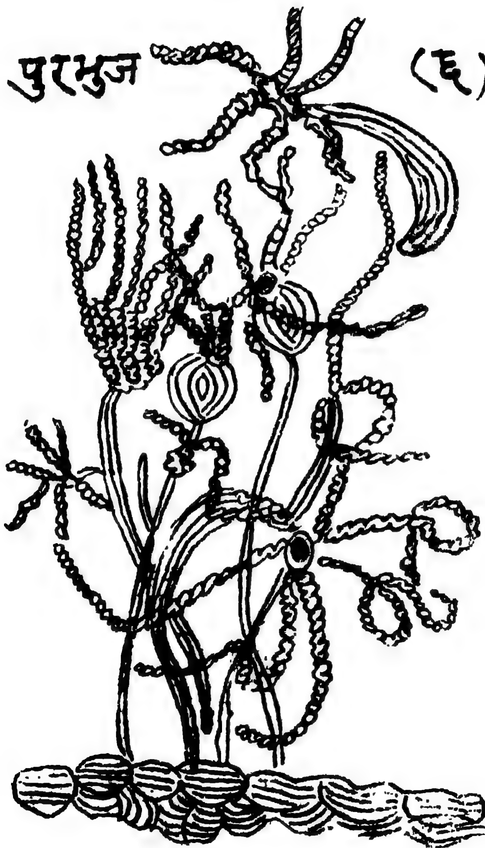
(२) समुद्री घोड़ा

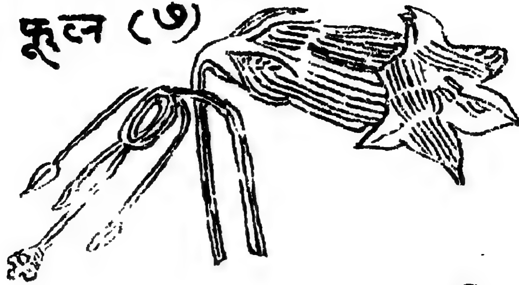

विवर
(३)

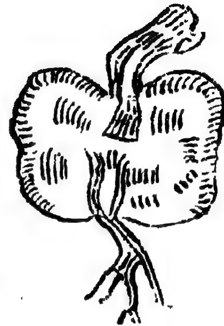

(४) झरना

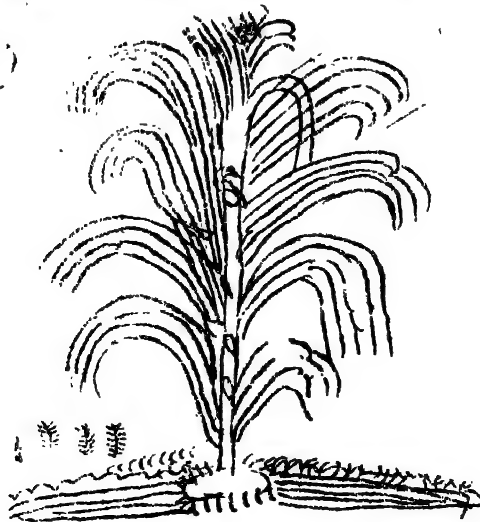
धरती (५)

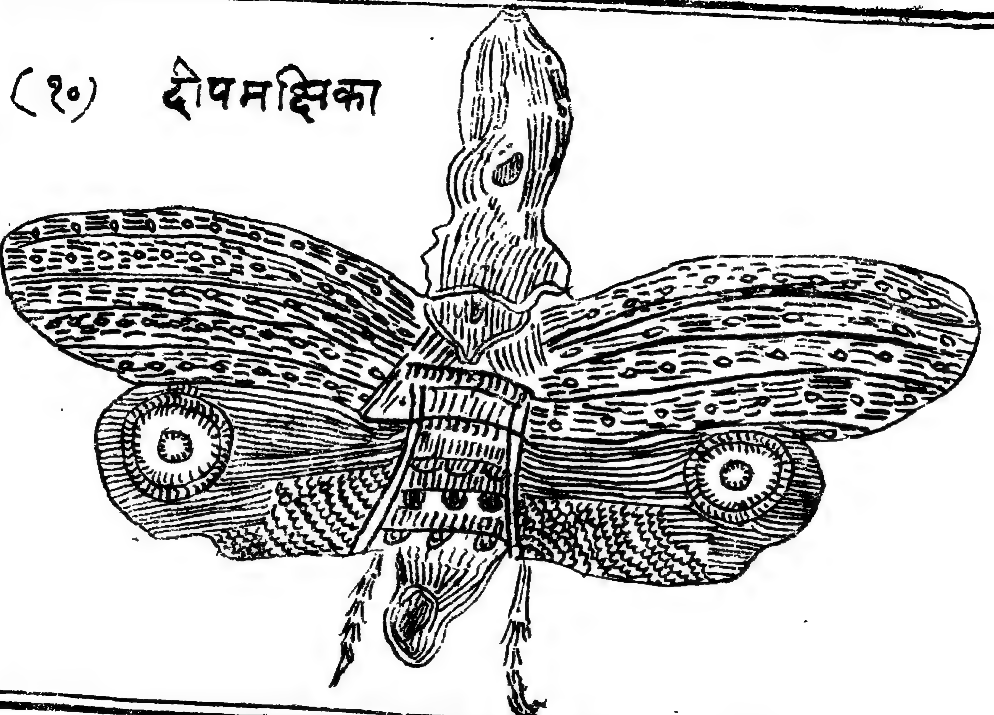





ফুল (৬)


(৭) বীজ


পূর্ণাবস্থা
(৮)

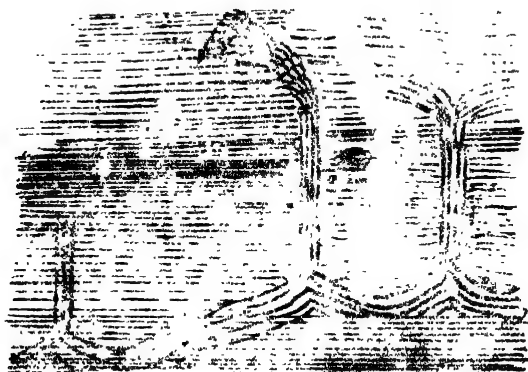


(१०) दीपमक्षिका

(११) बनमानस



(१२ जलस्तं



उचित वक्ता।

नामका हिन्दी अख़बार हर शनिवारको कलकत्ता बड़ाबाज़ार सूतापट्टीसे प्रकाशित होता है, दाम अग्रिम वार्षिक १॥) डाक महसूल समेत २।) है। जिन्हें इसका ग्राहक होना हो वे मुझे लिखें।

दुर्गाप्रसाद मिश्र।

सूचना।

यह पुस्तक (श्राद्ध पाठ) मेरे पास मिलेगी।

ठिकाना "उचितवक्ता" कार्य्यालय बड़ाबाज़ार

सूतापट्टी कलकत्ता।

दुर्गाप्रसाद मिश्र।

भाषाचन्द्रोदय

अर्थात्

भारतवर्षीय हिन्दी भाषा का व्याकरण

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

श्रीयुत विद्यातिरिक्त श्रीसाहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक
इन्स्ट्रक्शन बहादुर के मरिश्ते में
पण्डित श्रीलाल ने बनाया

इलाहाबाद
गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गया
सन् १८७१ ई०

7th Edition, 5,000 Copies.
Price per Copy, 4 Annas.

सातवीं बार ५००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ।) आने

भाषाचन्द्रोदय

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण

१ पाठ

व्याकरण विद्या से लोगों को शुद्ध और अशुद्ध शब्दों की विवेचना और उनकी योजना का ज्ञान होता है ॥

शब्दमात्र वर्णों से बनते हैं इसलिये पहिले शब्दों के मूल वर्णों का लिखना उचित है वर्ण अर्थात् अक्षर बुद्धिमानों के बनाये हुए संकेत हैं वे देश भेद से नाना प्रकार के हैं उन में से देवनागरी की वर्णमाला लिखते हैं ॥

देवनागरी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन दो भेद हैं प्रथम स्वर का वर्णन करते हैं ॥

स्वर उन्हें कहते हैं जिनकी सहायता पाकर मुख से व्यंजन का उच्चारण हो और आप केवल भी बोले जायं, मूल नौ स्वर हैं उनके स्वरूप नीचे लिखे हैं ॥

अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ

२ पाठ

उन नौ स्वरों में से पहिले पांच स्वरों के सवर्ण अर्थात् उन की जाति के पांच दीर्घ स्वर और हैं जैसा आ ई ऊ ॠ ॡ ॥

इस गत से चौदह स्वर हुए उनका क्रम यह है ॥
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ ये स्वर ह्रस्व और दीर्घ के भेद से दो प्रकार के हैं ॥

ह्रस्व स्वर

अ इ उ ऋ ऌ

दीर्घ स्वर

आ ई ऊ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ

ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जितना काल लगता है उसकी अपेक्षा दीर्घ के उच्चारण में अधिक काल लगता है—जैसा (अ) और (आ) को बोलकर देख लो ऐसे ही सब स्वरों के ह्रस्व दीर्घ भेद जानो ह्रस्व को एक मात्रिक और दीर्घ को द्विमात्रिक कहते हैं ॥

३ पाठ

स्वरों का तीसरा भेद प्लुत है उसके उच्चारण में दीर्घ से भी अधिक काल लगता है संस्कृत में प्लुत की पहचान यह है कि स्वर के आगे तीन का अंक लिख देते हैं बहुधा प्लुत सब भाषाओं में वहां आता है जहां कि दूर से किसी को बुलाते हैं ॥

वहां उस संज्ञा का अंतः स्वर तान कर बोला जाता है वही प्लुत कहाता है परंतु कभी २ अरे, अये, ओ, हे, आदि जो संबोधन के सूचक हैं उनके ही अंतः स्वरों को भी प्लुत बोलते हैं ॥

जैसा अरे, मोहना ३ यहां मोहना में ना का आ, प्लुत बोला जायगा वा अरे के अंतः स्वर के एकार को ही प्लुत बोलेंगे वा दोनों स्वरों को भी प्लुत कहेंगे ॥

स्वर के सिर पर ं ऐसा चिन्ह होता है तो उसे अनुस्वार कहते हैं जैसा (अं) बंधा गंधा यहां बंधा और गंधा इन में (ब)

और (ग) पर अनुस्वार नहीं किन्तु (अ) और (ग) के (अ) स्वर पर जानो ॥ स्वर के आगे की ऐसी : दो बिंदियों को बिसर्ग कहते हैं ॥

जैसा अः दुः क्षः

४ पाठ

ये सब स्वर निरनुनासिक और सानुनासिक भेद से दो प्रकार के होते हैं जो केवल मुख ही से बोले जाते वे निरनुनासिक कहाते हैं और जो मुख और नासिका से बोले जाते वे सानुनासिक हैं ॥

भाषा में सानुनासिक और निरनुनासिक की यह पहचान है कि निरनुनासिक तो वैसे ही लिखे जाते हैं जैसे ऊपर लिख आये हैं पर उनके सिर पर ँ ऐसा चिन्ह करने से सानुनासिक हो जाता है जैसे अँ इँ ऐसे ही सब स्वरों को जानो जैसे काँसा बाँस इत्यादि ॥

५ पाठ

इन में से अ ए ओ ये गुण और आ ऐ औ ये वृद्धि कहाते हैं जब वे अकार आदि स्वर केवल अपने ही स्वरूप से आते हैं तो उन्हें स्वर कहते और व्यंजन अर्थात् क आदि एक एक हल् अक्षर वा उनके संयोगी के साथ मिले हुए आते हैं तब उन्हें मात्रा कहते हैं और मात्रा होने में उनका स्वरूप भी पलट जाता है ॥

॥ आगे स्वरों के नीचे मात्राओं के स्वरूप लिखते हैं ॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो	ौ

६ पाठ

अथ व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	॥	क्ष	त्र	ज्ञ	॥	

व्यंजन उन अक्षरों को कहते हैं जिन में स्वर न हों, इसी से (क) आदि अक्षरों में (अ) स्वर केवल उनके उच्चारण के लिये है और उनका शुद्ध स्वरूप तो बिना ही स्वर है ॥

वर्णमाला में पीछे से, क्ष त्र, ज्ञ ये तीन अक्षर पढ़ाये जाते हैं वे वर्णमाला के अक्षरों के संयोग अर्थात् मेल से ही बन जाते हैं कुछ अलग नहीं हैं जैसा—क ष् मिलकर क्ष—त र् मिलकर त्र—और ज ञ् मिलकर ज्ञ होता है ॥

इन्हें वर्णमाला के साथ इसलिये पढ़ाते हैं कि इन में उन अक्षरों का कोई चिन्ह प्रकट नहीं होता जिनके संयोग से ये बने हैं इन्हें छोड़ और संयोगियों में मिलनेवाले अक्षरों का कुछ रूप दिखाई देता है जिस व्यंजन में स्वर नहीं होता उसके नीचे ऐसा ् चिन्ह कर देते और उसको हल् कहते हैं जैसा (क्) केवल व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सक्ता किन्तु जब उसकी आदि मे वा अंत में स्वर आता है तब ही उसका उच्चारण होता है जैसा आस् बास ॥

व्यंजन के साथ मात्रा मिलाने से व्यंजन का स्वरूप मात्रा सहित हो जाता है जैसा क का कि की कु कू कृ कॄ कॢ कॣ के कै को कौ कं कः ॥

७ पाठ

व्यंजन अक्षरों के सात बिभाग हैं ॥

क	ख	ग	घ	ङ	—	ये क - वर्ग — हैं ॥
च	छ	ज	झ	ञ	—	० च - वर्ग ॥
ट	ठ	ड	ढ	ण	—	० ट - वर्ग ॥
त	थ	द	ध	न	—	० त - वर्ग ॥
प	फ	ब	भ	म	—	० प - वर्ग ॥
य	र	ल	व	०	—	० ये अंतस्थ हैं ॥
श	ष	स	ह	०	—	इन्हें ऊष्म कहते हैं

क - वर्ग के अक्षरों को क-वर्ग्य वा कवर्गी कहते हैं ऐसे ही च - वर्ग्य वा चवर्गी आदि जानो य आदि श आदि अक्षरों की अंतस्थ और ऊष्म संज्ञा है ॥

८ पाठ

वर्णमाला के अक्षरों के उच्चारण के स्थान ॥

अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग : इतने अक्षर कंठ से बोले जाते और इसी से कंठ्य कहाते हैं ॥

इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालु अर्थात् दांतों से कुछेक ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते और इसी से तालव्य कहाते हैं ॥

ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालवे से भी ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं और ड ढ जैसे बोले जाते हैं वैसे ही ड़ ढ़ भी बोले जाते हैं परंतु इनके बोलने में जीभ का अग्र उलटा कर मूर्द्धा से लगाया जाता है इन सब को मूर्द्धन्य कहते हैं ॥

लृ लॄ त थ द ध न ल स ये दांतों पर जीभ लगाने से बोले जाते हैं इसी से इनको दंत्य कहते हैं ॥

उ ऊ प फ ब भ म ये होठों से निकलते हैं इसी से इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं ॥

ङ ञ ण न म ये अपने २ वर्गों के स्थान और नासिका से बोले जाते और इसी से अनुनासिक कहाते हैं ॥

ए ऐ ये कंठ तालु से

ओ औ ये कंठ और ओष्ठ से

व दांत और होठ से

और अनुस्वार नासिका से बोला जाता है ॥

६ पाठ

अक्षर के आगे (कार) आने से भी अक्षर का बोध होता है जैसा अ—कार कहने से अ जाना जाता है ॥

व्यंजन र- कार को रेफ बोलते हैं यह रेफ अगले जिस व्यंजन से मिलेगा उसके सिर पर रहेगा और उसका रूप ऐसा होगा जैसा स-र्व सर्व ॥

दो आदि हलों के मिलने को संयोग कहते हैं जैसा सत्य यहां त् य का संयोग है सच्च में च् च का ऐसे ही और भी जानो ॥

व्यंजन के संयोग में अंत के व्यंजन का तो पूरा और आदि के का आधा स्वरूप लिखा जाता है पर ङ छ ट ठ ड ढ ये संयोग की आदि में भी संपूर्ण ही से लिखे जाते हैं ॥

संयोग की आदि का एक मात्रिक भी द्विमात्रिक बोला जाता है मात्रा का अर्थ परिमाण है एक मात्रिक अर्थात् ह्रस्व के बोलने में जितने काल का परिमाण होगा उस से दूने काल

में दीर्घ बोला जायगा इसी कारण उसको द्विमात्रिक कहते हैं प्लुत को भी त्रिमात्रिक कहने का कारण यही है कि ह्रस्व के उच्चारण के काल से इसके उच्चारण में तिगुना काल लगता है॥

१० पाठ

संस्कृत में संयोगी की आदि का ह्रस्व स्वर सर्वत्र दीर्घ बोला जाता है परंतु भाषा में ऐसा कहीं होता है कहीं नहीं॥

भाषा में संयोगी की आदि का स्वर वहीं द्विमात्रिक बोला जाता है जहां कि एक ही अक्षर का द्वित्व हो जैसा कुत्ता यहां त् त् का संयोग है ऐसे ही भट्टा रस्सा सट्टा वर्गों के दूसरे अक्षर ख छ ठ थ फ का द्वित्व हो तो द्वित्व में से पूर्व के अक्षर को अपने २ वर्ग का पहिला अक्षर क च ट त प हो जाता है जैसा रख्खा रक्खा अछ्छा अच्छा गठ्ठा गट्ठा पथ्थर पत्थर॥

भिन्न अक्षर के संयोग से पूर्व का एकमात्रिक बहुधा भाषा में ह्रस्व ही बोला जाता है जैसा इन्हें उन्हें तुम्हारा परंतु कहीं २ दीर्घ भी बोला जाता है जैसा सत्रह इक्यावन बिस्वा आदि और संस्कृत के ऐसे शब्द जो भाषा में आते हैं उनके बोलने में कवि की इच्छा है भाषा की रीत पर बोले वा संस्कृत की रीत पर॥

जैसा सरस्वती शब्द के रकार की मात्रा दीर्घ बोलनी चाहिये परंतु भाषावाले कभी उसे ह्रस्व भी बोलते हैं॥

११ पाठ

प्रेम सागर का दोहा

युगल चरण सेवत जगत जपत रैन दिन तोहि॥
जगमाता सरस्वति सुमरि उक्ति युक्ति दे मोहि॥ १॥

इस दोहे में उक्ति युक्ति शब्दों में उ॰ और यु॰ द्विमात्रिक बोले जाते हैं कारन यह है कि वे संयोग की आदि में हैं परंतु इसी दोहे में सरस्वति शब्द में संयोग से पहिले रकार में एक भी मात्रा बोली जाती है क्योंकि इस रीति से उच्चारण न करेंगे तो इस दोहे की भाषा पूरी न होगी ॥

प्रथम अध्याय

१ पाठ

यद्यपि शब्द, आघात अर्थात् बस्तुओं के भिड़ने से भी होता है परंतु व्याकरण विद्या में बाचक शब्दों का बर्णन है इसलिये यहां उन्हीं शब्दों को जानना चाहिये जो मुख से बोले जाते हैं ॥

उच्चारणमात्र को शब्द कहते हैं वह केवल स्वर वा स्वर व्यंजन के योग से बनता है परंतु केवल व्यंजन से नहीं बनता ॥

ऋ ॠ ऌ ॡ ये स्वर और ङ ञ ण श ष क्ष ये व्यंजन भाषा के शब्दों में नहीं आते जिस शब्द में इन में से कोई अक्षर होगा वह अवश्य संस्कृत का होगा ॥

इस ग्रंथ में ऊपर के बर्णों के लिखने से प्रयोजन यह है कि भाषा में वैसे जो संस्कृत के शब्द आवें उन्हें भी शुद्ध लिख सकें ॥

भाषा में शब्दों के उच्चारण में स्वर संस्कृत की अपेक्षा थोड़े आते हैं अर्थात् ऋ ॠ ऌ ॡ ये चार स्वर नहीं आते इस से स्पष्ट है कि इस देश भाषा में अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ये ही दस स्वर उक्त स्वरों में से आते हैं परंतु इस भाषा में दो स्वर ऐसे आते हैं जिनका उच्चारण संस्कृत में भी

नहीं है जैसा ऐ, और औ, इनका उच्चारण (है) और (चौड़ा) इन में देखो ॥

शब्दों के दो भेद हैं एक वाचक दूसरा अपशब्द वाचक उसे कहते हैं जिसका अर्थ हो जैसा धन बन जन घोड़ा आदि ॥

अपशब्द उसे कहते हैं जिसका कुछ अर्थ न हो जैसा आंचू॥

भाषा के जिस शब्द के अंत में अकार आदि स्वर नहीं होते उसे हलंत कहते हैं जैसा धन बन आस बिकास पत्थर चाल इत्यादि परंतु कवि लोग इन्हीं को काम पड़े पे छन्द में अकारांत मान उसकी एक मात्रा गिन लेते हैं ॥

उदाहरण

बिघन बिदारन बिरद वर बारण बदने बिकास ॥
बरदे बहु बाढ़े बिशद बाणी बुद्धि बिलास ॥ १ ॥

इस दोहे में बहुत से हलंत शब्द हैं पर कवि लोग छन्द की मात्रा पूरी करने के लिये उन्हें अकारांत मानते हैं ॥

शब्द के अंत में हल् हो तो उसके नीचे हल् चिन्ह लगाने की कुछ आवश्यकता नहीं जैसा इस उस आदि हलंत के आगे (का) (को) आदि वर्ण वा कोई शब्द आवे तो हल् का चिन्ह कर देते हैं जैसा इसका इस्का उसको उस्को ॥

२ पाठ

हम प्रकृत बर्णन को छोड़ और प्रसंग में प्रवृत्त होगये थे अब फिर वही प्रकृत बर्णन करते हैं कि वाचकशब्दों के तीन भेद हैं संज्ञा, संकेतवर्ण, और क्रिया ॥

संज्ञा और क्रिया का अर्थ स्वाश्रय रहता है अर्थात् इनका अर्थ जानने में दूसरे की सहायता अवश्य नहीं होती जैसा

थन कहने से द्रव्य का बोध बिन दूसरे पद की सहायता के होता है ॥

ऐसे ही खाता है इस क्रिया का अर्थ भी दूसरे पद का सहायता बिना ही जाना जाता है परंतु संकेत वर्णों के अर्थ में दूसरे पद की सहायता अवश्य है संकेत वर्ण ये हैं ने, को, से, को, के लिये, से, का, की, के, में, पे, पर ॥

इन्हीं को बिभक्ति कहते हैं इन केवलों का अर्थ नहीं होता परंतु किसी पद के आगे वे आवेंगे तो सार्थ होंगे जैसा घोड़े ने लड़के को पहाड़ से इत्यादि जानो इन्हें छोड़ और भी संकेत हैं जिन्हें प्रत्यय कहते हैं प्रत्यय उसे कहते हैं जो कि आप इकल्ला अर्थ न देय और पद के संग आने से उसके पूर्व अर्थ में कुछ विशेषता देय इसके उदाहरण भाववाचक संज्ञा में देखना ॥

वर्ण संकेत पुल्लिङ्ग गिने जाते हैं

संज्ञा बस्तु के नाम को कहते हैं जैसा घड़ा, मिट्टी के एक प्रकार के बासन की संज्ञा है और मिट्टी का वही पात्र घड़े का अर्थ हैं इसी से घड़ा शब्द वाचक और मिट्टी का बासन वाच्य कहा जाता है ॥

३ पाठ

रूढ़ि, यौगिक, और योगरूढ़ि के भेद से संज्ञा तीन प्रकार की है ॥

रूढ़ि संज्ञा उसे कहते हैं जो किसी से निकली न हो जैसा मनुष्य हाथी घोड़ा बैल आदि-यौगिक संज्ञा उसे कहते हैं जो पदों के योग से बनाई गई हो जैसा अंगरखा अर्थात् अंग की रक्षा करने वाला निमोली अर्थात् नीम का फल ॥

सब भाषाओं में कुछ शब्द अवश्य रूढ़ि होते और वे ही योगिक शब्दों के बनाने में कारण होते हैं जैसा चौखूंटा यह चार और खूंट शब्दों के योग से बना है पर ये दोनों शब्द रूढ़ि हैं योगिक केवल दो संज्ञाओं से ही नहीं किन्तु संज्ञा और क्रिया के योग से भी बनता है जैसा घुड़चढ़ा गुलचला अंगरखा पनभरा आदि जानो रूढ़ि शब्द वह कहाता है जिसके कहने से वाच्य बिन तर्क समझा जाय जैसा हाथी घोड़ा आदि ॥

अंगरखा यह योगरूढ़ि है क्योंकि अंग और रखा इन शब्दों के योग से अंगरखा शब्द बना है और उस से शरीर के रक्षक अनेक कपड़ों में से एक प्रकार का बस्त्र विशेष समझा जाता है ॥

गुलचला घुड़चढ़ा आदि शुद्धयोगिक हैं ॥

संज्ञा पांच प्रकार की होती है जातिवाचक प्रकृतिनामवाचक गुणवाचक भाववाचक और संज्ञाप्रतिनिधि ॥

जातिवाचक संज्ञा उसे कहते हैं कि जिसके कहने से सामान्य करके उसके वाच्य के रूपमात्र का बोध हो जैसे पुरुष स्त्री घोड़ा आदि किसी ने कहा कि मैं सांप का बैरी हूं जहां देखता हूं वहां उसे जीता नहीं छोड़ता यहां सांप शब्द जातिवाचक है इसलिये उस से सांपमात्र जाने जाते हैं किसी विशेष सांप का बोध नहीं होता ॥

प्रकृतिनामवाचक विशेष नाम को कहते हैं जैसे देवदत्त यज्ञदत्त मनसाराम ॥

तत्वत: कोई संज्ञा प्रकृतिनामवाचक नहीं है क्योंकि किसी भी संज्ञा का एक ही अर्थ नहीं होता यथा देवदत्त यज्ञदत्त आदि नाम के और भी मनुष्य एकट्ठे हो जायंगे तो वे शब्द

भी जातिवाचक ही गिने जायंगे क्योंकि देवदत्त को पुकारने से सब देवदत्त बोल उठेंगे फिर क्योंकर वह संज्ञा प्रकृतिनामवाचक हो सक्ती है हां जहां तक उस नाम का और कोई मनुष्य उसके साथ में नहीं उस नाम को प्रकृतिनामवाचक कह सक्ते हैं तथा घोड़ा जातिवाचक है परंतु किसी मनुष्य को एक ही घोड़ा हो तो घोड़ा भाग गया यह कहते ही उसी एक घोड़े को समझ लेगा ऐसी जगह जातिवाचक भी प्रकृतिनामवाचक हो जाता है ॥

प्रकृतिनामवाचक उसी संज्ञा को कहते हैं जिस से विशेष करके एक ही वस्तु का ज्ञान हो परंतु ठीक प्रकृतिनामवाचक विशेषण लगाने से होता है जैसा घोड़ा जातिवाचक है पर काला घोड़ा उसकी अपेक्षा प्रकृतिनामवाचक है कदाचित् काले भी घोड़े बहुत से हों फिर काला घोड़ा भी जातिवाचक हो जायगा उन में से भी एक घोड़ा छांटकर कहना होगा तो और कुछ विशेषण लगाना पड़ेगा ॥

गुणवाचक उसे कहते हैं जिस से गुण पाया जाय जैसा काला, पीला, कोमल, कड़ा, खट्टा मीठा आदि ॥

गुणवाचक केवल नहीं आते किन्तु विशेषण होके किसी विशेष्य के साथ आते हैं जैसा मीठा पानी खट्टा नीबू आदि जानो ॥

संज्ञावाचक से भी गुणवाचक बनते हैं यथा बहुधा हलंत और अकारान्त संज्ञाओं के आगे वान् अथवा ई लगाने से गुणवाचक होता है जैसा गुणवान् और गुणी ये दोनों शब्द गुण शब्द से बने हैं कहीं २ ईकारान्त जातिवाचक को ह्रस्व करके या लगाने से गुणवाचक हो जाता है जैसा मट्टी मटिया

परंतु यह क़ायदा बहुधा वहां का है जहां अंत के ईकार में द्वित्व अक्षर मिला हो। धातुवाचक के अंक को ह्रस्व करके हकार लगा, आगे री बढ़ाने से गुणवाचक हो जाता है जैसा सोना सुनहरी रूपा रुपहरी वैसे ही और भी अपनी युक्ति से जानो॥

४ पाठ

संस्कृत में तो जातिवाचक और गुणवाचक शब्दों के अन्त में (त्व) और (ता) आने से भाववाचक होता है जैसा मृदुत्व मृदुता मनुष्यत्व मनुष्यता परंतु भाषा में पन, ई, स, प, ट, प्रत्यय होने से भाववाचक होते हैं जैसा भलापन भलाई॥

जिन पदों से, ई, स, पा, प्रत्यय होती हैं उनका आदि स्वर अर्थात् आदि अक्षर का स्वर ह्रस्व हो जाता है॥

ह्रस्व करने की यह रीति है॥

आ को	अ
ई ए ऐ को	इ
ऊ ओ औ को	उ

जिस शब्द के अंत में स्वर होता है उसके आगे तो (ई) प्रत्यय अलग ही रहती है जैसा भलाई परंतु हलंत से आगे ई आती है तो उसका अंत हल् ई में जा मिलता है जैसा राजपूत से (ई) प्रत्यय की तो राजपूती भाववाचक हुआ॥

मोटा से (ई) प्रत्यय करके मो के ओ को ह्रस्व करने से भाववाचक मुटाई हुआ॥

गुणवाचक	भाववाचक
पीला	पिलास
मीठा	मिठास

गुणवाचक	भाववाचक
बूढ़ा	बुढ़ापा
चिरपरा	चिरपराट
बामन	बमनेई

यहां ई प्रत्यय बामन से अलग ही रहती है बहुधा इन प्रत्ययों के आने से भाववाचक होता है॥

संज्ञाप्रतिनिधि के पांच भेद हैं सर्वनामवाचक निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक सम्बन्धवाचक परिप्रश्नवाचक इनका विशेष वर्णन सर्वनाम के प्रकार में लिखेंगे॥

ये संज्ञा लिङ्गभेद से नहीं पलटतीं॥

५ पाठ

भाषा में शब्दों के पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दो भेद हैं॥

भाषा में जिन शब्दों के जोड़े हैं उनका पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग जानने में कुछ विशेष कठिनता नहीं जैसा पुरुष शब्द पुल्लिङ्ग है उसके जोड़े का स्त्री शब्द स्त्रीलिङ्ग है ऐसे ही घोड़ा घोड़ी हाथी हथिनी आदि जानो, जिनके जोड़े का शब्द नहीं उनका लिङ्ग जानने की यह रीति है कि इकारान्त और तकारान्त शब्दों को छोड़कर बहुधा संज्ञा पुल्लिङ्ग है॥

६ पाठ

पुल्लिङ्ग के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग की रचना करने की यह रीति है॥

पुरुषवाची हलंत और अकारान्त शब्दों से ई प्रत्यय करने से स्त्रीलिङ्ग की रचना होती है॥

हलंत का तो अन्त हल् और अकारान्त के अकार का लोप होने पे उसका शेष हल् ई में जामिलता है जैसा ब्राह्मन ब्राह्मनी साला साली॥

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
नागर	नागरी
अहीर	अहीरी
नाला	नाली
बन	बनी

पुल्लिङ्गवाची शब्द के आगे नी प्रत्यय करने से भी स्त्रीलिङ्ग की रचना होती है जैसा जाट जाटनी सिंह सिंहनी पंडा पंडानी ॥

पुरुषवाची शब्द से प्रत्यय होने से भी स्त्रीवाचक होता है परंतु शब्द का अंत स्वर ह्रस्व हो जाता है जैसा पुटुवा पुरुष है पुटुवन स्त्री ऐसे ही और भी जानो ॥

नाई नाइन धोबी धोबिन और धोबन ये दोनों स्त्री लिङ्ग हैं लखेरा लखेरिन आनी प्रत्यय भी स्त्रीलिङ्ग की सूचक है सा भट भटानी ॥

द्वितीय अध्याय

१ पाठ

इस अध्याय में शब्दों की अवस्थाओं का बर्णन है ॥

एक एक शब्द की आठ २ अवस्था होती हैं उन अवस्थाओं की सूचक प्रत्ययों को विभक्ति कहते हैं उनका स्वरूप पृष्ठ १० में देखो उन आठों अवस्थाओं में एकबचन और बहुबचन होता है एकबचन से एक पदार्थ जाना जाता है और बहुबचन से दो आदि अनेक का बोध होता है जैसा घोड़ा एक बचन उस से केवल एक ही घोड़े का बोध होता है और घोड़े यह बहुबचन है इसलिये इस से दो आदि अनेक घोड़ों का ज्ञान होता है इसका बोध आगे पढ़ने से तुम्हें होगा ॥

उन आठों अवस्थाओं में शब्द की पहिली अवस्था कर्त्ता दूसरी कर्म तीसरी करण चौथी संप्रदान पांचवीं अपादान छठी सम्बन्ध सातवीं अधिकरण और आठवीं सम्बोधन है ॥

२ पाठ

१ कर्त्ता उसे कहते हैं जो क्रिया करे उसका कोई चिन्ह नहीं पर कहीं २ ने चिन्ह आता है ॥

२ कर्म उसे कहते हैं जिस पै कर्त्ता की क्रिया का संपात हो उसका चिन्ह को है ॥

३ करण उसे कहते हैं जिसके द्वारा कर्त्ता कार्य को सिद्ध करे चिन्ह उसका से है ॥

४ संप्रदान का अर्थ दान है उसके दो चिन्ह हैं को और के लिये ॥

५ अपादान विभाग को कहते हैं उसका भी चिन्ह से है ॥

६ सम्बन्ध योग को कहते हैं वह दो में रहता है जिन में से एक सम्बन्धी और दूसरा जातसम्बन्धी होता है परंतु सम्बन्धी की बिभक्ति का, की, के, ये जातसम्बन्धी ही से होते हैं और वह बिभक्ति समेत सम्बन्धी का बिशेषण होता है जैसा राजा का घोड़ा सम्बन्धी, राजा जातसम्बन्धी, इसी से बिभक्ति का चिन्ह का हुआ है और राजा का यह पद घोड़े की बिशेषता बताता है इसलिये बिशेषण भी है ॥

७ अधिकरण आधार को कहते हैं उसके चिन्ह, में, पै पर, हैं ॥

८ सम्बोधन का अर्थ यह है कि किसी को चिताकर अपने सन्मुख करना इसका कोई नियत चिन्ह नहीं है ॥

कर्त्ता आदि की सूचक बिभक्तियां

कारक	कारक बिभक्ति
कर्त्ता	o
कर्म	को
करण	से—करके
संप्रदान	को—के लिये
अपादान	से
सम्बन्ध	का—की—के
अधिकरण	में—पै—पर
सम्बोधन	o

३ पाठ

शब्दों के कारक बनाने में बिभक्ति के चिन्हों में तो कुछ विकार नहीं होता परंतु बहुधा शब्दों में बिभक्ति के और एक वचन बहुबचन के भी कारण विकार होता है उसकी रीतें आगे लिखते हैं ॥

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के कारण जो शब्दों के दो भेद कह आये हैं उन में प्रत्येक लिंग के शब्द हलंत और स्वरांत के भेद से दो प्रकार के हैं ॥

जिस शब्द के आगे कारक की बिभक्ति का योग किया जायगा उसी की कारक रचना हो जायगी ॥

प्रथम पुल्लिंग के हलंत शब्दों के कारकों की रचना लिखते हैं॥

पुल्लिंग हलंत शब्दों की कारक रचना करने में शब्द के आगे जिस २ कारक की बिभक्ति रक्खोगे वही एकबचन का कारक हो जायगा जैसे कि आगे बालक शब्द के एकबचन के कारक लिखे हैं ॥

कारक	एकबचन
कर्त्ता	बालक
कर्म	बालक को
करण	बालक से वा बालक करके
संप्रदान	बालक को वा बालक के लिये
अपादान	बालक से
सम्बन्ध	बालक का वा बालक की वा बालक के
अधिकरण	बालक में वा बालक पै वा बालक पर

४ पाठ

. हलंत पुल्लिंग के बहुबचन में कारक रचना की यह रीति है कि कर्त्ता का तो बहुबचन एकबचन वैसा ही होता है परंतु शेष कारकों के बहुबचन में शब्द से आगे सानुनासिक ओ अर्थात् ओं को लाते और उस में शब्द के अन्त हल् को जामिलाते हैं फिर उस से आगे बिभक्तियां लाते हैं यह रीति सर्वत्र जानो कि पहिले शब्द को आदेश करके फिर उस से आगे बिभक्ति लाते हैं ॥

बालक शब्द के बहुबचन के कारक ॥

कर्त्ता	बालक
कर्म	बालकों को
करण	बालकों से वा—करके
संप्रदान	बालकों को—के लिये
अपादान	बालकों से
सम्बन्ध	बालकों का—की—के
अधिकरण	बालकों में—पै—पर

शब्द की आठवीं अवस्था सम्बोधन है उसके सूचक, हे अरे, अये, ओ, ये संकेत, संज्ञा से पहिले आते हैं ॥

हलंत शब्द पुल्लिंग हो वा स्त्रीलिंग एकबचन के सम्बोधन में वैसा ही बना रहता है परंतु बहुबचन में ओ प्रत्यय होतो और अन्त का हल् ओ में जा मिलता है ॥

जैसा एकबचन	बहुबचन
सम्बोधन	सम्बोधन
हे बालक	हे बालको

५ पाठ

हलंत स्त्रीलिंग शब्द की कारक रचना में केवल इतना ही विशेष है कि कर्त्ता आदि के बहुबचनों में अन्त के हल् को एं वा ओं में मिला देते हैं और शेष रूप हलंत पुल्लिंग ही के समान होते हैं ॥

हलंत स्त्रीलिंग चील शब्द

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	चील	चीलें
कर्म	चील को	चीलों को
करण	चील से—करके	चीलों से—करके
संप्रदान	चील को— के लिये	चीलों को—के लिये
अपादान	चील से	चीलों से
सम्बन्ध	चील का—की—के	चीलों का—की—के
अधिकरण	चील में—पै—पर	चीलों में—पै—पर
सम्बोधन	हे चील	हे चीलो

आकारांत पुल्लिंग शब्द कर्त्ता के एकबचन में तो वैसा ही बना रहता है पर बहुबचन में और शेषों के एकबचन में

भी उसके अन्त के आ की जगह ए, और शेष बहुबचनों में ओं हो जाता है फिर उनके आगे बिभक्ति लाने से कारक होते हैं तथा सम्बोधन के बहुबचन में आ को ओ और एकबचन में ए ही होता है ॥

६ पाठ

लड़का शब्द के कारक

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्ता	लड़का	लड़के
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
संप्रदान	लड़के के लिये	लड़कों के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सम्बन्ध	लड़के का—की—के	लड़कों का—की—के
अधिकरण	लड़के में	लड़कों में
सम्बोधन	हे लड़के	हे लड़को

एकबचन में आकारांत स्त्रीलिंग शब्द से आगे केवल बिभक्तियां हो जाती हैं कर्त्ता के बहुबचन में शब्द के अन्त स्वर को सानुनासिक करदेते हैं और शेषों के बहुबचनों में शब्द से आगे ओं करके उसके आगे बिभक्ति लाते हैं और सम्बोधन के बहुबचन में ओ होता है ॥

स्त्रीलिंग आकारांत गैया शब्द

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	गैया	गैयां
कर्म	गैया को	गैयाओं को
करण	गैया से	गैयाओं से

कारक	एकबचन	बहुबचन
संप्रदान	गैया के लिये	गैयाओं के लिये
अपादान	गैया से	गैयाओं से
सम्बन्ध	गैया का—की—के	गैयाओं का—की—के
अधिकरण	गैया में	गैयाओं में
सम्बोधन	हे गैया	हे गैयाओ

७ पाठ

भाषा में कितने ही आकारांत पुल्लिंग शब्द ऐसे हैं कि जिन का कर्त्ता, कारक में एकबचन के समान बहुबचन भी होता है और शेष साधना स्त्रीलिंग के शब्दों से मिलती है वे इतने हैं काका नाना मामा भैया और आकारांत प्रकृतिनामवाचक जैसा मोहना रामा इत्यादि इन शब्दों के कारक आकारांत पुल्लिंग के कारकों के समान होने चाहियें थे जैसा काके को काकों को पर ऐसे नहीं होते किन्तु ऊपर जो रीति लिखी है उसी के अनुसार बनाये जाते हैं ॥

काका शब्द के कारक

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	काका	काका
कर्म	काका को	काकाओं को
करण	काका से	काकाओं से
संप्रदान	काका के लिये	काकाओं के लिये
अपादान	काका से	काकाओं से
सम्बन्ध	काका का—की—के	काकाओं का—की
अधिकरण	काका में	काकाओं में
सम्बोधन	हे काका	हे काकाओ

ऐसे ही

मामा को	मामाओं को
मोहना को	मोहनाओं को

परंतु दादा शब्द में दोनों रीतें

एकबचन	बहुबचन
दादा	दादे
दादा को	दादाओं को
दादे को	दादों को

ऐसे ही और कारकों में भी जानो ॥

८ पाठ

ह्रस्व इकारांत शब्द भाषा में नहीं हैं और हरि मति बुद्धि आदि जो बोल चाल में आते हैं वे संस्कृत के हैं उनके कारक कर्त्ता के बहुबचन को छोड़ दोनों लिंगों में एकसे ही होते हैं ॥

एकबचन के सब कारकों में और कर्त्ता के बहुबचन में इकारांत शब्द वैसा ही बना रहता है पर शेष बहुबचनों में शब्द से आगे यों लाते हैं फिर बिभक्ति करते हैं और स्त्रीलिंग में कर्त्ता के बहुबचन में शब्द से आगे यां होता है ॥

ह्रस्व इकारांत उकारांत शब्द हो वा दीर्घ ईकारांत ऊकारांत हो उसका, सम्बोधन के एकबचन में वैसा ही रूप बना रहता है पर बहुबचन में शब्द के आगे यो हो जाता है ॥

ह्रस्व इकारांत पुल्लिंग हरि शब्द

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	हरि	हरि
कर्म	हरि को	हरियों को
करण	हरि से	हरियों से

कारक	एकबचन	बहुबचन
संप्रदान	हरि के लिये	हरियों के लिये
अपादान	हरि से	हरियों से
सम्बन्ध	हरि का—की—के	हरियों का—की—के
अधिकरण	हरि में	हरियों में
सम्बोधन	हे हरि	हे हरियो

इकारांत स्त्रीलिंग बुद्धि शब्द

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	बुद्धि	बुद्धियां
कर्म	बुद्धि को	बुद्धियों को
करण	बुद्धि से	बुद्धियों से
संप्रदान	बुद्धि के लिये	बुद्धियों के लिये
अपादान	बुद्धि से	बुद्धियों से
सम्बन्ध	बुद्धि का—की—के	बुद्धियों का—की—के
अधिकरण	बुद्धि में	बुद्धियों में
सम्बोधन	हे बुद्धि	हे बुद्धियो

६ पाठ

दीर्घ ईकारांत पुल्लिंग शब्द सर्वत्र एकबचन में और कर्त्ता के बहुबचन में यथावस्थित ही बना रहता है और शेष बहुबचनों में ह्रस्व इकारांत शब्द के से रूप होते हैं अर्थात् शब्द से आगे यों का के अन्त ई को ह्रस्व कर देते हैं ॥

ईकारांत पुल्लिंग माली शब्द

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	माली	माली
कर्म	माली को	मालियों को

कारक	एकबचन	बहुबचन
करण	माली से	मालियों से
संप्रदान	माली के लिये	मालियों के लिये
अपादान	माली से	मालियों से
सम्बन्ध	माली का—की—के	मालियों का—की—के
अधिकरण	माली में	मालियों में
सम्बोधन	हे माली	हे मालियो

ईकारांत स्त्रीलिंग घोड़ी शब्द

स्त्रीलिंग के ईकारांत शब्द के रूप पुल्लिंग ही के ईकारांत शब्द के समान होते हैं पर कर्त्ता के बहुबचन में अन्त का ईकार ह्रस्व हो जाता और उस से आगे यां आता है ॥

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	घोड़ी	घोड़ियां
कर्म	घोड़ी को	घोड़ियों को
करण	घोड़ी से	घोड़ियों से
संप्रदान	घोड़ी के लिये	घोड़ियों के लिये
अपादान	घोड़ी से	घोड़ियों से
सम्बन्ध	घोड़ी का—की—के	घोड़ियों का—की—के
अधिकरण	घोड़ी में	घोड़ियों में
सम्बोधन	हे घोड़ी	हे घोड़ियो

१० पाठ

उकारांत और ऊकारांत शब्द पुल्लिंग हो वा स्त्रीलिंग एक बचन में और कर्त्ता के बहुबचन में वैसे ही बने रहते हैं पर शेष बहुबचन में अन्त उकार के आगे ओं हो जाता है और ऊकारांत हो तो उसे भी ह्रस्व करके फिर ओं कर देते हैं ॥

उकारांत पुल्लिंग भानु शब्द

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	भानु	भानु
कर्म	भानु को	भानुओं को
करण	भानु से	भानुओं से
संप्रदान	भानु के लिये	भानुओं के लिये
अपादान	भानु से	भानुओं से
सम्बन्ध	भानु का—की—के	भानुओं का—की—के
अधिकरण	भानु में	भानुओं में
सम्बोधन	हे भानु	हे भानुओ

ऊकारांत पुल्लिंग शालू शब्द

एकबचन	बहुबचन
शालू	शालू
शालू को	शालुओं को
शालू से	शालुओं से
शालू के लिये	शालुओं के लिये
शालू से	शालुओं से
शालू का—की—के	शालुओं का—की—के
शालू में	शालुओं में
हे शालू	हे शालुओ

उकारांत स्त्रीलिंग धेनु शब्द

एकबचन	बहुबचन
धेनु	धेनु
धेनु को	धेनुओं को
धेनु से	धेनुओं से
धेनु के लिये	धेनुओं के लिये
धेनु से	धेनुओं से
धेनु का—की—के	धेनुओं का—की—के
धेनु में	धेनुओं में
हे धेनु	हे धेनुओ

ऊकारांत स्त्रीलिंग झाड़ू शब्द

झाड़ू	झाड़ू
झाड़ू को	झाड़ुओं को
झाड़ू से	झाड़ुओं से
झाड़ू के लिये	झाड़ुओं के लिये
झाड़ू से	झाड़ुओं से
झाड़ू का—की —के	झाड़ुओं का—की—के
झाड़ू में—पर	झाड़ुओं में—पर

पांड़े और चौबे एकारांत पुल्लिंग हैं॥

एकारांत शब्द एकबचन और बहुबचन में भी वैसा ही बना रहता है उसके एकबचन के कारक तो केवल बिभक्तियों के योग ही से हो जाते हैं पर बहुबचन में शब्द के आगे ओं करके फिर बिभक्तियां रखते और सम्बोधन के बहुबचन में एकार से आगे ओ को कर देते हैं॥

एकबचन	बहुबचन
पांड़े	पांड़े
पांड़े को	पांड़ेत्र्यों को
पांड़े से	पांड़ेत्र्यों से
पांड़े के लिये	पांड़ेत्र्यों के लिये
पांड़े से	पांड़ेत्र्यों से
पांड़े का—की—के	पांड़ेत्र्यों का—की—के
पांड़े में	पांड़ेत्र्यों में
हे पांड़े	हे पांड़ेत्र्यो

संज्ञाप्रतिनिधियों में से पहिले सर्वनाम का
वर्णन करते हैं

सर्वनाम संज्ञा नाममात्र की बाचक होती है इसी से उसे सर्वनाम कहते हैं, जिस नाम को कहकर फिर उसके कहने का काम पड़ता है तो उसकी जगह सर्वनाम लाते हैं उस से वही संज्ञा जानी जाती है ऋौर उस से यही लाभ है कि बार बार कोई संज्ञा नहीं कहनी पड़ती इस से न तो विशेष बात बढ़ती है ऋौर न वाक्य कुढंगा होता है सर्वनामों की यह भी प्रकृति है कि वे पुल्लिंग ऋौर स्त्रीलिंग में एक ही से बने रहते हैं॥

२ पाठ

सर्वनाम के तीन शब्द हैं मैं तू ऋौर वह इन में से मैं ऋपने का बाचक है उसे उत्तमपुरुष कहते हैं तू प्रतिद्वंद्वी का (ऋर्थात् जो पुरुष साम्हने से बात करता है) बाचक है उसे मध्यमपुरुष कहते हैं ऋौर वह जो परोक्ष में ऋर्थात् मैं ऋौर तू को छोड़ तीसरे जन का बाचक है उसे ऋन्यपुरुष कहते हैं॥

लिङ्ग का उदाहरण

मैं था मैं थी तू था तू थी वह था वह थी

संज्ञा के पलटे में जो सर्वनाम आते हैं

उनका उदाहरण

देवदत्त कहता है उस जगह मैं था यहां देवदत्त के पलटे में मैं आया ॥

अरे यज्ञदत्त तू जा यहां यज्ञदत्त के पलटे में तू आया इस बिले में एक मूसा रहता है वह नित कपड़े कतरता है यहां मूसे के पलटे में वह आया है ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

उत्तमपुरुष की कारक रचना में कर्त्ता के तो एकबचन में मैं ही रहता है पर शेष कारकों के एकबचन में मैं को मुझ आदेश कर देते हैं परंतु संप्रदान और सम्बन्ध के बचन में मैं को मे होता है फिर उनके आगे बिभक्तियां होती हैं उन से मैं कर्म की बिभक्ति (को) को एक जगह ए हो जाता है और मुझ के झ को ए में मिला देते हैं तथा के लिये,—का—के—की—के ककार को र कर देते हैं ऐसा करने से उत्तम-पुरुष के एकबचन के कारक हो जाते हैं यथा ॥

कर्त्ता	मैं
कर्म	मुझ को मुझे
करण	मुझ से
संप्रदान	मेरे लिये
अपादान	मुझ से
सम्बन्ध	मेरा मेरी मेरे
अधिकरण	मुझ में

उत्तमपुरुष के बहुबचन में २ वंश में को हम और कर्म संप्रदान और संबंध की बिभक्तियों को एकबचन के से आदेश हो जाते हैं परंतु संप्रदान और संबंध में हम को हमा और (को) को ए आदेश होता है और बहुबचन में सानुनासिक भी होता है॥

हम उत्तमपुरुष बहुबचन

हम को हमें

हम से

हमारे लिये

हम से

हमारा–री–रे

हम में

४ पाठ

मध्यमपुरुष का कर्त्ता एकबचन में तू होता है और शेष एक बचनों में तू को तुझ आदेश हो जाता है परंतु संप्रदान और संबंध में तू को, ते, और बिभक्ति को उत्तमपुरुषवत् आदेश होता है तथा कर्म में एक जगह (को) को ए आदेश करके उस में तुझ के झकार को मिला देते हैं॥

मध्यमपुरुष के एकबचन के कारक

कर्त्ता	तू
कर्म	तुझ को तुझे
करण	तुझ से
संप्रदान	तेरे लिये
अपादान	तुझ से
सम्बन्ध	तेरा–री–रे
अधिकरण	तुझ में

मध्यमपुरुष के बहुबचन में तू को तुम होता है परंतु जहां (को) को एं होता है वहां तुम को तुम्ह करके (म्) को एं में मिला देते हैं, संप्रदान और संबंध में तू को तुम्हा आदेश होता है ॥

मध्यमपुरुष के बहुबचन के कारक

कर्त्ता	तुम
कर्म	तुम को तुम्हें
करण	तुम से
संप्रदान	तुम्हारे लिये
अपादान	तुम से
सम्बन्ध	तुम्हारा-री-रे
अधिकरण	तुम में

उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष के संप्रदान और संबंध में बिभक्ति के क को र हो जाता है इसी लिये मेरे के लिये तेरे के लिये तेरे का मेरे का बोलना अशुद्ध है क्योंकि ऐसा कहने में के और का दो बेर बोला जाता है कारण यह है कि के को रे और का को रा हो गया है ॥

मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष की उत्कर्षता के लिये तू और वह को आप हो जाता है उसके बहुबचन में कुछ बिशेषता नहीं और कारक सब हलंत पुल्लिंग के समान होते हैं ॥

कारक	एकबचन
कर्त्ता	आप
कर्म	आप को
करण	आप से

कारक	एकबचन
संप्रदान	आप के लिये
अपादान	आप से
सम्बन्ध	आप का
अधिकरण	आप में

दोनों के उदाहरण ये हैं कि अये बंशीधर जी आप का लड़का सुशील है (अथवा) कुन्दनलाल कहते हैं कि महाराज आप आकर सब को देखेंगे ॥

५ पाठ

आप, यह सर्वनाम निज का बाचक होके संज्ञा और सर्वनाम के कर्त्ता का विशेषण भी होता है जैसा मैं आप जाऊंगा तू आप आ वह आप रहेगा देवदत्त आप चला जायगा ॥

अपना, इस संज्ञा से निज का संबंध जाना जाता है और वह संबंधवान् का विशेषण होते हैं जैसा देवदत्त अपने घोड़े पे चढ़ा चला जाता है इस से यह समझा जाता है कि जिस घोड़े पे देवदत्त चढ़ा चला जाता है वह देवदत्त का ही घोड़ा है मैं अपनी रस्सी लाया, तू अपना लोटा ले, वह अपने घर में होगा ॥

अन्यपुरुष के कर्त्ता के एकबचन में वह, बहुबचन में वे तथा शेष एकबचन में उस और बहुबचन में उन और उन्हों आदेश होता है और जहां उन्हें आदेश होता है वहीं को बिभक्ति को ए भी बिकल्प करके पूर्ववत् सानुनासिक होता है परंतु बहुबचन में एं के परे सानुनासिक ओ का लोप करके शेष को एं में मिला देते हैं ॥

अन्यपुरुष के कारक

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	वह	वे
कर्म	उसको उसे	उनको उन्हों को उन्हें
करण	उस से	उन से उन्हों से
संप्रदान	उसके लिये	उनके लिये—उन्हों के लिये
अपादान	उस से	उन से उन्हों से
सम्बन्ध	उसका-की-के	उनका-की-के-उन्हों का-की—के
अधिकरण	उस में	उन में उन्हों में

यह, संज्ञाप्रतिनिधि निश्चयबाचक सर्वनाम है और बस्तु को प्रत्यक्ष करवाने के लिये आता है इसके कारक तो वह शब्द ही के तुल्य होते हैं परंतु इतना विशेष है कि कर्त्ता के एकबचन में यह बहुबचन में ये तथा शेष एकबचन में इस और बहुबचन में इन और इन्हों आदेश होता है॥

६ पाठ

निश्चयबाचक संज्ञाप्रतिनिधि के कारक

कारक	एकबचन	बहुबचन	
कर्त्ता	यह	ये	o
कर्म	इसको इसे	इनको इन्हों को इन्हें	
करण	इस से	इन से इन्हों से	
संप्रदान	इसके लिये	इनके लिये इन्हों के लिये	
अपादान	इस से	इन से इन्हों से	
सम्बन्ध	इसका-की-के	इनका-की-के-इन्हों-का-की-के	
अधिकरण	इस में	इन में इन्हों में	

वह और यह के कर्म आदि कारक के एकबचन के संग निश्चय के लिये (ही) अव्यय लाते हैं तो हकार का लोप करके सकार को शेष ई में मिला देते हैं जैसा उस ही को, इसकी जगह उसी को बोलते हैं ऐसे ही इस ही को, इसी को और बहुवचन में उन और इनके नकार को ही में मिला देते और ही को सानुनासिक कर देते हैं जैसा उन ही को उन्हीं को इन ही को इन्हीं को ॥

कोई, यह अनिश्चयबाचक संज्ञाप्रतिनिधि है इसका कर्त्ता कारक कोई होता है और शेष में कोई को किसी हो जाता है, इसके कारक एकबचन में ही होते हैं ॥

कर्त्ता	कोई
कर्म	किसी को
करण	किसी से
संप्रदान	किसी के लिये
अपादान	किसी से
सम्बन्ध	किसी का—की—के
अधिकरण	किसी में

६ पाठ

कौन, यह प्रश्नबाचक संज्ञाप्रतिनिधि है इसके कर्त्ता कारक के एकबचन और बहुबचन में कौन होता है और शेष एक-बचनों में किस और बहुबचनों में किन और किन्हें तथा (को) पूर्ववत् आदेश होता है ॥

कर्त्ता	कौन	कौन
कर्म	किसको—किसे	किनको किन्हों को किन्हें
करण	किस से	किन से किन्हों से
संप्रदान	किसके लिये	किनके लिये किन्हों के लिये
अपादान	किस से	किन से किन्हों से
सम्बन्ध	किसका-की-के	किनका-की-के किन्हों का-की-के
अधिकरण	किस में	किन में किन्हों में

क्या और कुछ ये प्रश्नबाचक अव्यय के तुल्य हैं इनके कारक नहीं होते ॥

जो, यह संज्ञाप्रतिनिधि संबंधबाचक है जहां जो का कारक होगा वहां वह वा सो का, कारक भी अवश्य होगा ॥

कर्त्ता के एकबचन और बहुबचन में जो होता है, शेष एकबचनों में जो को जिस और बहुबचनों में जिन और जिन्हों कर देते हैं और कर्म की बिभक्ति को पूर्ववत् आदेश होता है ॥

कर्त्ता	जो	जो
कर्म	जिसको जिसे	जिनको जिन्हों को जिन्हें
करण	जिस से	जिन से जिन्हों से
संप्रदान	जिसके लिये	जिनके लिये जिन्हों के लिये
अपादान	जिस से	जिन से जिन्हों से
सम्बन्ध	जिसका—की—के	जिनका-की-के-जिन्हों का-की-के
अधिकरण	जिस में	जिन में जिन्हों में

ऐसे ही सो के भी कारक जानो उसके एकबचन में तिस और बहुबचन में तिन और तिन्हों आदेश होता है पर कर्त्ता के एकबचन और बहुबचन में सो ही होता है ॥

	एकबचन	
कर्त्ता	सो	सो
कर्म	तिसको तिसे	तिनको तिन्हों को तिन्हें
करण	तिस से	तिन से तिन्हों से
संप्रदान	तिस के लिये	तिनके लिये तिन्हों के लिये
अपादान	तिस से	तिन से तिन्हों से
सम्बन्ध	तिसका-की-के	तिनका-की-के तिन्हों का-की-के
अधिकरण	तिस में	तिन में तिन्हों में

उस इस किस जिस तिस इनके सकार को तना आदेश करदेने से ये प्रमाण के बाचक हो जाते हैं जैसा उतना इतना कितना जितना तितना ॥

कर्त्ता आदि कारकों का वर्णन हमने किया अब जिस कर्त्ता में ने चिन्ह आता है उसकी विधि कहते हैं, को आदि बिभक्ति परे संज्ञा को पुल्लिंग वा स्त्रीलिंग के एकबचन बहुबचन में जो आदेश होते हैं वे ने के योग में भी होते हैं जैसा बालक ने बालकों ने लड़के ने लड़कों ने नदी ने नदियों ने आदि ॥

संज्ञाप्रतिनिधियों को भी ने के योग में अपने २ उक्त आदेश होते हैं जैसा उसने उनने उन्हों ने आदि जानो परंतु उत्तमपुरुष में मैं ने और हमने तथा मध्यमपुरुष में तू ने वा तैं ने और तुमने होता है, जिस कर्त्ता में कुछ चिन्ह नहीं होता उसे प्रधानकर्त्ता और जिस में (ने) होता है उसे अप्रधानकर्त्ता कहते हैं संज्ञाप्रतिनिधि शब्दों का सम्बोधन नहीं होता, संज्ञा वा संज्ञाप्रतिनिधि से आगे सादृश्य का सूचक सा आता है तो इसके योग में भी पूर्वोक्त आदेश होते हैं जैसा राजासा घोड़ासा मुझसा हमसा तुझसा तुमसा उससा उनसा उन्होंसा आदि जानो ॥

चतुर्थ अध्याय

अथ क्रिया प्रकरण

१ पाठ

वाक्य अर्थात् बात क्रिया से पूरी होती है और क्रिया धातु से बनती है इसलिये अब धातु का वर्णन करते हैं ॥

धातु उसे कहते हैं जिसके अर्थ से देह का वा मन का कुछ व्यापार अर्थात् हलना चलना आदि पाया जाय जैसा खाना करना होना बैठना सोचना आदि ॥

धातु दो प्रकार की है एक सिद्ध धातु दूसरी अनुकरण धातु; सिद्ध धातु तो करना इत्यादि हैं जैसो ऊपर लिखी हैं और अनुकरण धातु हिनहिनाना चिंघारना दंदनाना आदि हैं व्यापार के समुदाय को क्रिया कहते हैं ॥

धातु का चिन्ह भाषा में ना है अर्थात् जिस शब्द के अन्त में ना हो और उसका अर्थ व्यापार हो वही धातु कहाती है जैसा ऊपर खाना करना आदि लिख आये हैं यद्यपि कोना शब्द के अन्त में ना है परंतु उसके अर्थ में व्यापार नहीं पाया जाता इसलिये वह धातु नहीं किन्तु संज्ञा है ऐसे ही और भी जानो ॥

धातु दो प्रकार की होती है एक सकर्मक दूसरी अकर्मक, जिसकी कि क्रिया करने में कर्त्ता के व्यापार का फल दूसरे में जा हो उसे सकर्मक कहते हैं, जिस में व्यापार का फल होता है उसे कर्म बोलते हैं जैसा कुम्हार बासन बनाता है यहां कुम्हार कर्त्ता है उसका व्यापार मट्टी बनाना चाक घुमाना आदि है उसका फल बासन का बनाना है और वह सिद्ध रूप बासन में रहता है इसलिये बनाना यह धातु सकर्मक है ॥

जहां कर्त्ता का व्यापार और उसका फल दोनों कर्त्ता हीं में रहें वह अकर्मक होता है जैसा देवदत्त उठता है यहां देवदत्त कर्त्ता के उठने का व्यापार और उसका फल उठना ये दोनों बातें देवदत्त ही में हैं इसलिये उठना यह धातु अकर्मक है ॥

२ पाठ

सकर्मक धातु दो प्रकार की होती है पहिली एककर्मक दूसरी द्विकर्मक खाना यह धातु एककर्मक है क्योंकि इस क्रिया के व्यापार में उसी एक पदार्थ की अपेक्षा रहती है जो खाया जाय इसलिये वही कर्म है ॥

लेना यह द्विकर्मक है अर्थात् इसके दो कर्म हैं एक तो बस्तु जो ली जाय और दूसरा वह जिस से कि वह बस्तु ली जाय जैसा देवदत्त ने यज्ञदत्त से पोथी ली यहां यज्ञदत्त और पोथी दोनों कर्म हैं पर यह स्मरण रक्खो कि द्विकर्मक में दूसरा कर्म संप्रदान के रूप से आता है ॥

प्रेरणार्थक धातु की क्रिया में पूर्वावस्था से एक २ कर्म और भी बढ़ जाता है अर्थात् एककर्मक धातु द्विकर्मक, और द्विकर्मक धातु त्रिकर्मक हो जाती है जहां धातु द्विकर्मक वा त्रिकर्मक होती है वहां एक कर्म तो अपने चिन्ह से और दूसरा अपादान रूप से आता है और शेष तीसरा बिना चिन्ह धातु के संग मिल जाता है जैसा देवदत्त यज्ञदत्त से पोथी लिवाता है॥

अकर्मक धातु कहीं तो धातु के चिन्ह ना से पहिले अक्षर में आ लगाने से और कहीं आदि के अक्षर का स्वर दीर्घ करने से सकर्मक हो जाती है जैसा बढ़ना अकर्मक, बढ़ाना सकर्मक ऐसे ही गिरना गिराना मरना मारना चिरना चीरना, आदि में

दीर्घ स्वर हो तो उसे ह्रस्व करके मध्य के अक्षर में आ लगा देते हैं जैसा सूखना सुखाना कहीं पूर्व स्वर को गुणकर देते हैं जैसा घिरना घेरना फिरना फेरना और सोना को सकर्मक करो तो सुआना होता है, एककर्मक धातु के ना से पहिले अक्षर में आ लगाने और पूर्व स्वर को ह्रस्व करने से द्विकर्मक हो जाती हैं जैसा सूंघना सुंघाना चूसना चुसाना परंतु खाना एककर्मक धातु को द्विकर्मक करने में खिलाना होता है ॥

द्विकर्मक धातु के चिन्ह ना से पहिले वा करके और वा के पहिले अक्षरों का संभव हो तो अकर्मकवत् करने से प्रेरणार्थक क्रिया हो जाती है जैसा कटवाना मरवाना फिरवाना चुसवाना परंतु खाना की प्रेरणार्थक क्रिया खिलवाना होती है ॥

३ पाठ

प्रेरणार्थक करने में बहुधा धातु त्रिकर्मक हो जाती है आना रहना जाना आदि धातु सदा अकर्मक ही बनी रहती हैं न वे सकर्मक होती हैं न द्विकर्मक वा प्रेरणार्थक ॥

सीना यह एककर्मक है प्रेरणार्थक में द्विकर्मक हो जाती है और इसे प्रेरणार्थक करने की यह रीत है कि पूर्व स्वर को ह्रस्व करके ना से पहिले ला, वा लवा, कर देते हैं जैसा सिलाना वा सिलवाना ऐसे ही देना दिलाना वा दिलवाना आदि जानो ॥

ये सब क्रिया कर्तृप्रधान होती हैं अर्थात् कर्त्ता के लिंग बचन के अनुसार क्रिया का भी लिंग बचन होता है परंतु सकर्मक धातु हो तो सामान्य भूत क्रिया वा उसके योग की क्रिया में कर्म प्रधान हो जाता है—अर्थात् कर्म ही के लिंग बचन के अनुसार क्रिया का भी लिंग बचन होता है ॥

४ पाठ

धातु की क्रिया, भूत वर्त्तमान और भविष्यत् काल के भेद से तीन प्रकार की है भूत क्रिया उसे कहते हैं जो हो चुकी हो वर्त्तमान क्रिया उसे कहते हैं जो हो रही हो और भविष्यत् क्रिया उसे कहते हैं जो होने को हो ॥

क्रिया के भेद

हेतुहेतुमद्भूत १ अपूर्ण भूत २ सामान्य भूत ३ पूर्ण भूत ४ आसन्न भूत ५ संदिग्ध भूत ६ वर्त्तमान ७ विधि ८ संभावना ९ भविष्यत् १० प्रत्येक धातु की क्रिया के ये दश भेद होतें हैं ॥

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया वहां आती है जहां कार्य और कारण का फल भूत काल का कहना होता है ॥

अपूर्ण भूत उसे कहते हैं जिस में भूत काल तो पाया जाय परंतु क्रिया पूर्ण न हो गई हो ॥

सामान्य भूत काल उसे कहते हैं जिस से क्रिया की तो पूर्णता पाई जाय परंतु भूत काल की बिशेषता न पाई जाय ॥

पूर्णभूत उसे कहते हैं जिसकी क्रिया भी समाप्त हो गई हो और उस से भूत काल भी पाया जाय ॥

आसन्न भूत क्रिया से वर्त्तमान के पास का भूत काल जाना जाता है ॥

वर्त्तमान का अर्थ प्रसिद्ध है ॥

संदिग्ध भूत क्रिया से की हुई क्रिया का संदेह कहा जाता है ॥

बिधिक्रिया उसे कहते हैं जिस में क्रिया के कर्त्ता पै आज्ञा पाई जाय यह क्रिया केवल मध्यमपुरुष के लिये ही आती है ॥

संभावना की क्रिया से किसी बात की चाहना जानी जाती है ॥

भविष्यत् क्रिया होनहार कहने के लिये कही जाती है ॥

५ पाठ

क्रियाओं के बनाने की रीतें लिखते हैं

जानना चाहिये कि आकारांत क्रिया में लिंग और बचन के कारण भेद होता है जैसे क्रिया पुल्लिंग हो तो एकबचन में तो वह जों की तों बनी रहती है पर बहुबचन में एकारांत हो जाती है, स्त्रीलिंग हो तो एकबचन में तो अंत आकार को ई और बहुबचन में सानुनासिक ई अर्थात् ईं हो जाती है, कदाचित् कोई क्रिया दो आकारांत क्रियाओं से बनी हो तो दोनों पै लिंग और बचन का चिन्ह रहता है परंतु स्त्रीलिंग की क्रिया के बहुबचन में ईकार तो दोनों ही के आकार को होता है पर अनुनासिक का चिन्ह चाहे दोनों पर दो चाहे केवल पिछली ही पर दो और जिस क्रिया का न के साथ योग होगा वह निषेधबाचक होजायगी ॥

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के बनाने की रीति

धातु के ना को ता कर देने से हेतुहेतुमद्भूत क्रिया हो जाती है जैसा होना धातु के ना को ता करने से होता हुआ यही वह क्रिया पुल्लिंग की बनी ऐसे ही सर्वंच जानो कि पहिले पुल्लिंग की क्रिया बनती है फिर उस से स्त्रीलिंग की क्रिया उक्त रीति से बना लेते हैं सब क्रियाओं के रूप लिंग और बचन समेत आगे लिखेंगे ॥

६ पाठ

अपूर्णभूत क्रिया के बनाने की रीति

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे था आने से अपूर्णभूत काल की क्रिया हो जाती है जैसा होता था ॥

सामान्य भूत क्रिया के बनाने की रीत

धातु के चिन्ह ना का लोप करने से हलंत शेष रहे तो उसके अन्त में आ करने से बहुधा सामान्य भूत क्रिया हो जाती है जैसा मारा, पढ़ा परंतु करना की सामान्य भूत क्रिया किया, और रखना की रक्खा होती है धातु के ना का लोप करने से शेष आकारांत रहे तो उसके आगे या करने से वह क्रिया बन जाती है जैसा खाना की खाया पढ़ाना की पढ़ाया इत्यादि, परंतु जाना की क्रिया गया होती है, एकारांत वा ईकारांत शेष रहे तो उसे ह्रस्व करके उसके आगे या कर देते हैं जैसा लेना लिया पीना पिया और ओकारांत शेष रहे तो उस के आगे अलग आ किया जाता है जैसा पोना पोआ सोना सोआ खोना खोआ परंतु होना की क्रिया हुआ होती है ॥

इन पुल्लिंग क्रियाओं को स्त्रीलिंग करने में केवल इतनी विशेषता है कि अन्त के आ और या को ई होजाती है, उस से पहिले हल् हो तो उसे ई में जा मिलाते हैं और स्वर हो तो ईकार को अलग बना रहने देते हैं जैसा मारा मारी पढ़ाया पढ़ाई गया गई पोआ पोई परंतु इकार से पहिले ईकार हो तो दोनों इ और ई मिलकर दीर्घ ई हो जाती है और उस में ऊपर के हल् को मिला देते हैं जैसा किया, की, लिया, ली, दिया, दी, पिया, पी आदि जानो ॥

इस क्रिया की यह विशेषता है कि सकर्मक धातु के विषय में कर्त्ता का ने चिन्ह आवेगा और क्रिया का लिंग बचन कर्म के अनुसार होगा परंतु लाना की क्रिया में ये दोनों बातें नहीं होंगी जैसा वह चिट्ठी लाया ऐसा होगा और रीत के अनुसार करते तो होता उसने चिट्ठी लाई ऐसे ही जिस धातु के अन्त

में चुकना वा सकना का योग हो उसकी क्रिया में भी यही बिधि जानो और अकर्मक धातु के विषय में कर्त्ता बिना ने चिन्ह के आवेगा और क्रिया का लिंग बचन कर्त्ता ही के अनुसार होगा यह भी जानो कि इस क्रिया के योग से जो और क्रिया बनेंगी उन में भी कर्त्ता और लिंग बचन की यही रीत रहेगी ॥

७ पाठ

पूर्ण भूत क्रिया के बनाने की रीत

धातु की सामान्य भूत क्रिया के आगे था का योग करने से पूर्ण भूत क्रिया हो जाती है जैसा हुआ था किया था ॥

आसन्न भूत क्रिया के बनाने की रीत

बर्त्तमान क्रिया में जिसे आगे बनावेंगे तीनों पुरुषों के अलग २ चिन्ह होते हैं जैसे कि आगे के चक्र में लिखे हैं॥ अकर्मक धातु की तो सामान्य भूत क्रिया के आगे

पुरुष	एकबचन के चिन्ह	बहुबचन के चिन्ह
उत्तमपुरुष	हूं	हैं
मध्यमपुरुष	है	हो
अन्यपुरुष	है	हैं

कर्त्ता के अनुसार इन चिन्हों के आने से आसन्न भूत क्रिया हो जाती है परंतु सकर्मक में ये चिन्ह कर्म के अनुसार आते हैं अर्थात् कर्म जिस पुरुष का होगा उसके ही चिन्ह आवेंगे कर्त्ता का कुछ भी बिचार न किया जायगा ॥

संदिग्ध भूत क्रिया के बनाने की रीत

सकर्मक धातु में ये चिन्ह सामान्य भूत क्रिया के आगे कर्म के पुरुष के, और अकर्मक में कर्त्ता के पुरुष के अनुसार होते हैं जैसा हुआ होऊं क्रिया हो ॥

पुरुष	एकबचन के चिन्ह	बहुबचन के चिन्ह
उत्तमपुरुष	होऊं	होवें
मध्यमपुरुष	हो	हो
अन्यपुरुष	हो, वा, होवे	होवें

बर्त्तमान क्रिया की रीत

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे, वे ही हूं आदि चिन्ह जो आसन्न भूत क्रिया में लिख आये हैं रखने से बर्त्तमान क्रिया हो जाती है जैसा होता करता हूं ॥

८ पाठ

बिधि क्रिया के बनाने की रीत

धातु के चिन्ह ना का लोप करने से जो शेष रहता है वही मध्यमपुरुष के एकबचन की बिधि क्रिया होती है उसी के आगे ओ कर देने से बहुबचन की हो जाती है परंतु शेष हलंत हो तो उस हल् को ओ में मिला देते और स्वरांत हो तो ओ को अलग रखते हैं होना की बिधि क्रिया एकबचन और बहुबचन दोनों ही में हो, होती है लेना और देना की बिधि क्रिया के बहुबचन में एकार का लोप करके ओकार में पूर्व हल् को मिला देते हैं जैसा मार, मारो, हो, होवे, खा, खाओ, ले, लो, दे, दो ॥

संभावना क्रिया के बनाने की रीत

धातु के चिन्ह ना का लोप करने से हलंत शेष रहे तो उसको इन स्वरों में मिलाने से और स्वरांत शेष रहे तो ऊं और ओ को छोड़ के शेष स्वरों में व मिलाने वा ए को य और एं को यं कर देने से अपने २ पुरुष की क्रिया हो जाती

पुरुष	एकबचन के चिन्ह	बहुबचन के चिन्ह
उत्तमपुरुष	ऊं	एं
मध्यमपुरुष	ए	ओ
अन्यपुरुष	ए	एं

है जैसा मारूं मारें स्वरांत शेष का उदाहरण खाऊं खावें वा खायं जावें वा जायं होना धातु में इतनी और भी बिशेषता है कि एक पक्ष में एं का लोप और हो को सानुनासिक कर देते हैं जैसा हम हों, होवें, होयं ॥

लेना और देना के ए का लोप करके ऊं आदि स्वर में शेष को मिला देते अथवा जिन स्वरों में सामान्य से कह आये हैं उन में व मिला देते हैं जैसा लूं लें वा लेवें लेवे लो इत्यादि ॥

६ पाठ

भविष्यत् क्रिया के बनाने की रीत

भावनार्थ क्रिया के आगे गा कर देने से भविष्यत्काल की क्रिया हो जाती है जैसा होऊंगा होंगे होवेंगे होयंगे ॥

पूर्वकालिक क्रिया के बनाने की रीत

धातु के चिन्ह ना का लोप करके शेष के आगे, के, कर, करके, लगा देने से पूर्वकालिक क्रिया हो जाती है जैसा होके, हो कर, हो करके ॥

बहुधा क्रियाओं में था हूं है हैं होऊं होवे होवें हो। ये होना धातु के रूप आते हैं वे केवल भी कर्त्ता की सत्ता अर्थात् विद्यमान होना बताने के लिये आते हैं, था से कर्त्ता का होना भूत काल में जाना जाता है, हूं, है हैं, इन से कर्त्ता की वर्त्तमान अवस्था जानी जाती है जैसा मैं तू वह था हम तुम वे थे ऐसा कहने से जाना जाता है कि वे कर्त्ता भूत काल में थे॥

मैं हूं हम हैं तू है तुम हो वह है वे हैं इस प्रकार कहने से कर्त्ता की वर्त्तमानता पाई जाती है॥

ये क्रिया जिस क्रिया के साथ आती हैं उनका भी वैसा ही काल हो जाता है॥

१० पाठ

जिन क्रियों के बनाने की रीत लिख आये हैं उनके रूप अब लिखते हैं॥

विद्यार्थियों के सीखने के लिये अकर्मक होना धातु की क्रिया के रूप नीचे लिखते हैं॥

हेतुहेतुमद्भूत काल

पुरुष कर्त्ता

एकबचन	
मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते

स्त्री कर्त्ता

मैं होती	हम होतीं
तू होती	तुम होतीं
वह होती	वे होतीं

अपूर्णभूत काल की क्रिया

पुरुष

एकबचन	बहुबचन
मैं होता था	हम होते थे
तू होता था	तुम होते थे
वह होता था	वे होते थे

स्त्री

मैं होती थी	हम होतीं थीं वा होती थीं
तू होती थी	तुम होतीं थीं वा होती थीं
वह होती थी	वे होतीं थीं वा होती थीं

सामान्य भूत काल की क्रिया

पुरुष

मैं हुआ	हम हुए
तू हुआ	तुम हुए
वह हुआ	वे हुए

स्त्री

मैं हुई	हम हुईं
तू हुई	तुम हुईं
वह हुई	वे हुईं

पूर्णभूत काल की क्रिया

पुरुष

मैं हुआ था	हम हुए थे
तू हुआ था	तुम हुए थे
वह हुआ था	वे हुए थे

स्त्री

मैं हुई थी	हम हुईं थीं वा हुई थीं
तू हुई थी	तुम हुईं थीं वा हुई थीं
वह हुई थी	वे हुईं थीं वा हुई थीं

११ पाठ

आसन्न भूत क्रिया

पुरुष

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
तू हुआ है	तुम हुए हो
वह हुआ है	वे हुए हैं

स्त्री

मैं हुई हूं	हम हुई हैं
तू हुई है	तुम हुई हो
वह हुई है	वे हुई हैं

संदिग्ध भूत क्रिया

पुरुष

मैं हुआ होऊं	हम हुए होवें
तू हुआ होवे	तुम हुए हो
वह हुआ होवे	वे हुए होवें

स्त्री

मैं हुई होऊं	हम हुई होवें
तू हुई होवे	तुम हुई हो
वह हुई होवे	वे हुई होवें

वर्त्तमान काल क्रिया

पुरुष

मैं होता हूं	हम होते हैं
तू होता है	तुम होते हो।
वह होता है	वे होते हैं

स्त्री

मैं होती हूं	हम होती हैं
तू होती है	तुम होती हो।
वह होती है	वे होती हैं

१२ पाठ

बिधि क्रिया

पुरुष स्त्री कर्त्ता।

तू हो।	तुम हो।

संभावनार्थ क्रिया।

पुरुष स्त्री कर्त्ता।

मैं होऊं	हम होवें
तू होवे	तुम हो
वह होवे	वे होवें

भविष्यत् क्रिया

पुरुष

मैं होऊंगा	हम होवेंगे
तू होवेगा	तुम होगे
वह होवेगा	वे होवेंगे

स्त्री

मैं होऊंगी	हम होवेंगी
तू होवेगी	तुम होगी
वह होवेगी	वे होवेंगी

पूर्वकालिक क्रिया

होके	होकर	हो करके

१३ पाठ

सकर्मक करना धातु की क्रिया

हेतुहेतुमद्भूत

पुरुष

मैं करता	हम करते
तू करता	तुम करते
वह करता	वे करते

स्त्री

मैं करती	हम करतीं
तू करती	तुम करतीं
वह करती	वे करतीं

अपूर्णभूत पुरुष

मैं करता था	हम करते थे
तू करता था	तुम करते थे
वह करता था	वे करते थे

स्त्री

मैं करती थी	हम करती थीं
तू करती थी	तुम करती थी
वह करती थी	वे करती थीं

सामान्यभूत क्रिया

पुरुष कर्म

मैं ने वा हम ने तू ने वा तुम ने उसने वा उन्हों ने	क्रिया	मैं ने वा हम ने तू ने वा तुम ने उसने वा उन्हों ने	क्रिये

स्त्री कर्म

मैं ने वा हम ने तू ने वा तुम ने उसने वा उन्हों ने	की	मैं ने वा हम ने तू ने वा तुम ने उसने वा उन्हों ने	कीं

१४ पाठ

पूर्णभूत काल क्रिया

पुरुष कर्म

मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	क्रिया था	मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	क्रिये थे

स्त्री कर्म

मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	की थी	मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	की थीं

आसन्नभूत क्रिया

पुरुष कर्म

मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	क्रिया है	मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	क्रिये हैं

स्त्री कर्म

मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	की है	मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	की हैं

संदिग्धभूत

पुरुष कर्म

मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	किया हो।	मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	किये हों।

स्त्री कर्म

मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	की हो।	मैं ने हम ने तू ने तुम ने उसने उन्हों ने	की हों।

१५ पाठ

वर्त्तमान क्रिया

पुरुष कर्त्ता

मैं करता हूं	हम करते हैं
तू करता है	तुम करते हो।
वह करता है	वे करते हैं

स्त्री कर्त्ता

मैं करती हूं	हम करती हैं
तू करती है	तुम करती हो।
वह करती है	वे करती हैं

विधि क्रिया

पुरुष स्त्री

तू कर	तुम करो

संभावनार्थ क्रिया

पुरुष स्त्री

मैं करूं	हम करें
तू करे	तुम करो
वह करे	वे करें

भविष्यत् क्रिया

पुरुष कर्त्ता

मैं करूंगा	हम करेंगे
तू करेगा	तुम करोगे
वह करेगा	वे करेंगे

स्त्री कर्त्ता

मैं करूंगी	हम करेंगी
तू करेगी	तुम करोगी
वह करेगी	वे करेंगी

पूर्वकालिक क्रिया

करके	कर कर	कर करके

१६ पाठ

प्रेरणार्थ करवाना धातु की क्रिया

हेतुहेतुमद्भूत

मैं करवाता	हम करवाते
तू करवाता	तुम करवाते
वह करवाता	वे करवाते

स्त्रीलिंग की क्रिया पूर्ववत् जान लो।

अपूर्णभूत क्रिया

मैं करवाता था	हम करवाते थे
तू करवाता था	तुम करवाते थे
वह करवाता था	वे करवाते थे

सामान्यभूत क्रिया

मैं ने हम ने	करवाया	मैं ने हम ने	करवाये
तू ने तुम ने		तू ने तुम ने	
उसने उन्हों ने	करवाई	उसने उन्हों ने	करवाईं

पूर्णभूत क्रिया

मैं ने हम ने		मैं ने हम ने	
तू ने तुम ने	करवाया था	तू ने तुम ने	करवाये थे
उसने उन्हों ने		उसने उन्हों ने	

आसन्नभूत क्रिया

मैं ने हम ने		मैं ने हम ने	
तू ने तुम ने	करवाया है	तू ने तुम ने	करवाये हैं
उसने उन्हों ने		उसने उन्हों ने	

संदिग्धभूत क्रिया

मैं ने हम ने		मैं ने हम ने	
तू ने तुम ने	करवाया हो	तू ने तुम ने	करवाये हों
उसने उन्हों ने		उसने उन्हों ने	

वर्त्तमान क्रिया

मैं करवाता हूं	हम करवाते हैं
तू करवाता है	तुम करवाते हो
वह करवाता है	वे करवाते हैं

विधि क्रिया

तू करवा	तुम करवाओ

संभावनार्थ क्रिया

मैं करवाऊं	हम करवावें
तू करवावे	तुम करवाओ
वह करवावे	वे करवावें

भविष्यत् क्रिया

मैं करवाऊंगा	हम करवावेंगे
तू करवावेगा	तुम करवाओगे
वह करवावेगा	वे करवावेंगे

पूर्वकालिक क्रिया

करवाके	करवाकर	करवाकरके

१७ पाठ

ये सब ऊपर के उदाहरण कर्तृप्रधान क्रिया के हैं अर्थात् उन में सामान्यभूत क्रिया और तज्जनित क्रियाओं को छोड़ के शेष क्रियाओं के लिंग, बचन कर्त्ता ही के अनुसार होते हैं ॥

अब कर्मप्रधान क्रिया कहते हैं, उस में क्रिया का लिंग, बचन कर्म के आधीन होता है, कर्म जैसा रानी ने लड्डू खाया राजा ने मेवा खाई ॥

कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान के सिवाय एक कर्म क्रिया भी होती है, उस में कर्त्ता नहीं आता किन्तु कर्म ही कर्त्ता रूप से आता है उसके बनाने की यह रीति है कि सकर्मक धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे जाना धातु लगा देते हैं उसी की क्रिया कर्म क्रिया कहाती है जैसा क्रिया जाता ॥

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया

मैं तू वह	किया जाता की जाती	हम तुम वे	किये जाते की जातीं

अपूर्णभूत क्रिया

मैं तू वह	किया जाता था की जाती थी	हम तुम वे	किये जाते थे की जाती थीं

सामान्यभूत क्रिया

मैं तू वह	किया गया की गई	हम तुम वे	किये गये की गईं

पूर्णभूत क्रिया

मैं तू वह	किया गया था की गई थी	हम तुम वे	किये गये थे की गई थीं

आसन्नभूत

मैं किया गया हूं	हम किये गये हैं
तू किया गया है	तुम किये गये हो
वह किया गया है	वे किये गये हैं

संदिग्धभूत

मैं किया गया होऊं	हम किये गये हों
तू किया गया होवे	तुम किये गये हो
वह किया गया होवे	वे किये गये होवें

वर्त्तमान

मैं किया जाता हूं	हम किये जाते हैं
तू किया जाता है	तुम किये जाते हो।
वह किया जाता है	वे किये जाते हैं

विधि क्रिया

तू किया जा	तुम किये जाओ

संभावनार्थ क्रिया

मैं किया जाऊं	हम किये जावें
तू किया जावे	तुम किये जाओ
वह किया जावे	वे किये जावें

भविष्यत् क्रिया

मैं किया जाऊंगा	हम किये जावेंगे
तू किया जावेगा	तुम किये जाओगे
वह किया जावेगा	वे किये जावेंगे

१८ पाठ

सकना और चुकना धातु परतंत्र हैं अर्थात् इनकी क्रिया अलग नहीं आती किन्तु जब ये दूसरी धातु के साथ मिलती हैं तो क्रिया की रचना होती है जिस धातु के संग इनका योग होता है उसके धातु चिन्ह ना का लोप हो जाता है जैसा मार चुकना खा चुकना मार सकना ऐसी धातु की क्रिया से कर्त्ता की सामर्थ समझी जाती है ॥

मार सकना

हेतुहेतुमद्भूत

मैं तू वह	मार सकता	हम तुम वे	मार सकते

मार चुकना

मैं तू वह	मार चुकता	हम तुम वे	मार चुकते

इसी रीत से शेष क्रियाओं के भी रूप जानो।

इनको छोड़ और कई धातु हैं जो और धातुओं के संग मिलके आती हैं इनके योग से पहिली क्रिया के करने में कर्त्ता की सामर्थ्य समझी जाती है जैसा वे की गढ़ना छप्पर छा दिया पढ़ लेता है पढ़ देता है ऐसी धातु का अकर्मक और सकर्मक होना पहिली ही धातु से समझा जाता है अंत की धातु यद्यपि सकर्मक भी हो पर पूर्व धातु अकर्मक होगा तो वह योग धातु भी अकर्मक ही होगी जैसे सो लिया बैठा दिया, कहीं पहिली धातु पूर्व कालिक क्रिया में भी आती है जैसा उसे चिट्ठी लिख दी अर्थात् चिट्ठी लिख के दी ॥

योग धातुओं में लेना देना रहना जाना, ये सब धातुओं के अंत में आती हैं, इनके सिवाय पढ़ना आदि और धातु भी योग में आती हैं जैसा चौंक पड़ना गिर पड़ना जिस क्रिया के संग न, वा नहीं आता है उसका निषेध जाना जाता है जैसा मैं न करूंगा वा नहीं करूंगा परंतु निषेध के लिये बहुधा विधि

क्रिया के साथ मत लाते हैं जैसा मत कर और न कर भी बोलते हैं विधि क्रिया की जगह धातु का भी प्रयोग करते हैं जैसा तू वा तुम करना निषेधार्थ में मत करना वा न करना ॥

इतिक्रियापदम्

१६ पाठ

धातु से केवल क्रिया ही नहीं किन्तु कर्तृवाचक कर्म-वाचक भाववाचक और क्रियाद्योतक ये चार संज्ञा भी निकलती हैं ॥

कर्तृवाचक संज्ञा

धातु के आगे वाला वा हारा लाकर उसके चिन्ह ना के आको ए कर देते हैं जैसा करनेवाला करनेहारा स्त्री हो तो करने वाली करनेहारी ये संज्ञा, किसी संज्ञा का बिशेषण होके आतीं और जिसका बिशेषण होतीं उसका कर्तापन अपनी क्रिया की अपेक्षा जतलाती हैं ॥

कर्मवाचक संज्ञा

कर्मवाचक संज्ञा के बनाने की यह रीत है कि सकर्मक धातु की सामान्यभूत क्रिया ही कर्मवाचक संज्ञा होजाती है जैसा मारा मारी क्रिया की अथवा सामान्यभूत क्रिया के आगे हुआ लाते हैं जैसा मारा हुआ मारी हुई किया हुआ की हुई कर्मवाचक संज्ञा का रूप क्रिया का सा दीखता है परंतु वह क्रिया नहीं है उसे संज्ञा कहते हैं जिस संज्ञा का यह बिशेषण होती है वह संज्ञा इसकी अपेक्षा कर्म रूप होती है परंतु अकर्मक धातु की ऐसी संज्ञा कर्तृवाचक ही होती है जैसा मारा हुआ ॥

भाववाचक संज्ञा

बहुधा धातु के चिन्ह ना का लोप करने से जो शेष रह जाता है वही भाववाचक संज्ञा होती है जैसा मार पीट लूट चाह भाववाचक संज्ञा भी धातु का अर्थ देती है जो लूट का अर्थ है वही लूटने का भी अर्थ है ॥

कहीं २ धातु के ना का स्वर दूर करने से भाववाचक होता है जैसा लेन देन खान पान कहीं धातु के चिन्ह ना का लोप करके अंत में आव लाते और शेष के अन्त हल् को उस में मिला देते हैं जैसा चढ़ाव कटाव फिराव और कहीं शेष के अन्त को केवल आ में मिला देते हैं जैसा घेरा फेरा ऐसे ही और भी जानो ॥

क्रियाद्योतक संज्ञा

हेतुहेतुमद्भूत की क्रिया के तुल्य क्रियाद्योतक संज्ञा होती है जैसा होता करता और उसके आगे हुआ लगाने से भी क्रियाद्योतक संज्ञा होजाती है जैसा मारता हुआ लेता हुआ आदि जानो ॥



पांचवां अध्याय

१ पाठ

पद योजना का क्रम

पिछले लिखे हुए को पढ़ने से विद्यार्थियों को पद की शुद्धता और अशुद्धता का तो ज्ञान होगया होगा परंतु वे उन पदों को यथा योग्य जोड़ भी सकें इसलिये अब पद योजना की रीति लिखते हैं ।

प्रथम विशेष्य विशेषण का बर्णन करते हैं

मुख्य संज्ञा को विशेष्य कहते हैं और उसके गुणवाचक को विशेषण जैसा मतवाला हाथी यहां हाथी मुख्य संज्ञा विशेष्य है और उसका गुण बतानेवाला मतवाला पद है वही विशेषण है ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

गुणवाचक शब्द जब तक किसी जातिवाचक वा प्रकृति नामवाचक वा भाववाचक अथवा संज्ञाप्रतिनिधि के संग नहीं आवेगा तब तक उसके अर्थ की योजना न होगी जैसा किसी ने कहा कि मोटा, यहां गुणवाचक है जब तक इसका कोई विशेष्य न होगा तब तक यह निःप्रयोजनसा रहेगा और जब कहा कि मोटा बैल वा मोटा कपड़ा वा मोटा सूत तो इतना कहने ही से उसकी योजना हो जायगी इसी लिये गुणवाचक शब्द का कोई लिंग वा बचन नियत नहीं किंतु विशेष्य के ही लिंग और बचन के अनुसार उसका भी लिंग और बचन होता है जैसे विशेष्य पुल्लिंग होगा तो विशेषण भी पुल्लिंग होगा और वह स्त्रीलिंग होगा तो उसका विशेषण भी स्त्री लिंग होगा ऐसे ही बचन भी जानो जैसा अच्छा घोड़ा अच्छे घोड़े अच्छी घोड़ी अच्छी घोड़ियां आदि ॥

२ पाठ

यह भी जान रखना चाहिये कि पुल्लिंग विशेष्य का आकारांत विशेषण हो तो उसके आ को ए हो जाता है परंतु कर्त्ता के एकवचन में विशेषण आकारांत ही बना रहता है जैसा कि ऊपर लिख आये हैं अच्छा घोड़ा अच्छे घोड़े, विशेष्य के और कारकों में सर्वत्र आकारांत विशेषण एकारांत हो जाता है जैसा अच्छे घोड़े से अच्छे घोड़ों से परंतु अच्छों घोड़ों से ऐसा कभी नहीं बोला जायगा ॥

स्त्रीलिंग बिशेष्य का आकारांत बिशेषण सब कारकों में ईकारांत ही होगा जैसा अच्छी घोड़ी अच्छी घोड़ियां अच्छी घोड़ी को अच्छी घोड़ियों को बहुबचन का चिन्ह बिशेषण में नहीं होता अच्छियां घोड़ियां अच्छियों घोड़ियों को ऐसा कभी न बोलेंगे ॥

एक विशेष्य के जितने आकारांत विशेषण होंगे उन सब के लिये यही रीति है जैसा बडा मोटा लट्ठा बड़े मोटे लट्ठे बड़े मोटे लट्ठे को बड़े मोटे लट्ठों को आकारांत को छोड़ और विशेषण सदा वैसे ही बने रहते हैं सुन्दर लड़का सुन्दर लड़के सुन्दर लड़के को सुन्दर लड़कों को ॥

विभक्ति को मान कर विशेष्य को आदेश हो वा न हो परंतु विशेषण आकारांत होगा तो उसे आदेश अवश्य होगा जैसा भला बालक भले बालक भले बालक को भले बालकों को ॥

संज्ञाप्रतिनिधि विशेषण होके आवेगा तो उसे वचन के अनुसार आदेश होंगे जैसा उस घोड़े पे उन घोड़ों पे ॥

३ पाठ

सु—अति—कु—अ—अन—नि—निर्—दुर्—आदि— अव्यय विशेषण होके पद के पहिले आते हैं, सु उत्तमता के लिये अति विशेषता के लिये जैसा सुजन, अति बलवान, कु दुर् निन्दा के लिये जैसा कुघाट, दुर्जन, शेष निषेध के लिये जैसा अधर्मी अनरीत निगुन, निर्लज्ज ॥ —कर्तृवाचक और कर्मवाचक संज्ञा के विशेषण होती हैं जैसा मारनेवाला देवदत्त मारनेवाले देवदत्त को मरे हुए सांप ने मरे हुए सांप को क्रियाद्योतक संज्ञा जिस पद का विशेषण होती उसके वाच्य की क्रिया बताती है जैसा दौड़ते हुए घोड़े पै यहां दौड़ता हुआ जो क्रियाद्योतक पद है वह अपने विशेष्य घोड़े की क्रिया को बताता है ॥

गुणवाचक पद क्रिया के भी विशेषण होते हैं जैसा घोड़ा धीरे चलता है अर्थात् घोड़े की क्रिया जो चलना है वह धीरी है इसी कारन धीरे यह शब्द चलना क्रिया का विशेषण हुआ ऐसे ही सुन्दर लिखता है यहां सुन्दर पद लिखना क्रिया का विशेषण हुआ ॥

४ पाठ

गुणवाचक पद तो विशेषण होता ही है परंतु कहीं २ संज्ञा भी संज्ञा का विशेषण हो जाती है पर उसे उद्देश विधेय भाव कहते हैं उन में विशेष्य उद्देश और गुणवाचक बिधेय कहाता है वहां क्रिया का लिंग बचन उद्देश के लिंग बचन के अनुरोध से होता है अर्थात् उद्देश पुल्लिंग होगा तो क्रिया भी पुल्लिंग और वह स्त्रीलिंग होगा तो क्रिया भी स्त्रीलिंग होगी बिधेय का चाहे जो लिंग रहो, ऐसे ही बचन में भी

जानो जैसा इस कुंड का पानी कीचड़ हो गया यहां पानी का मैलापन गुण कीचड़ पद से जाना जाता है परंतु कीचड़ गुणवाचक नहीं किंतु संज्ञा है इस कारन यहां उद्देश विधेय मात्र हुआ और उद्देश पानी है इसलिये उसी के लिंग वचन के अनुसार क्रिया का भी लिंग वचन हुआ ऐसे ही पूरियां सूख कर काठ हो गईं यह भी जानो ॥

५ पाठ

अब वाक्य की रचना लिखते हैं

कर्त्तृप्रधान वाक्य

कारक समेत संज्ञा पद और क्रिया के योग से वाक्य बनता है यद्यपि वाक्य में सब कारक आसक्ते हैं परंतु उस में कर्त्ता और क्रिया का होना अवश्य है और क्रिया सकर्मक हो तो उस वाक्य में कर्म को भी रक्खो यह बात कर्त्तृप्रधान क्रिया की है पदों की योजना का यह क्रम है कि वाक्य की आदि में तो कर्त्ता अन्त में क्रिया और शेष कारकों की आवश्यकता हो तो उनके बीच में रक्खो परंतु पद सब ऐसे शुद्ध होने चाहियें कि जिनके अर्थ का आपस में सम्बन्ध हो क्योंकि पद अनमिल होंगे तो उनकी योजना से कुछ भी अर्थ न निकलेगा और वह वाक्य भी अशुद्ध ठहरेगा ॥

शुद्ध वाक्य

राजा ने वाण से हरिण को मारा

इस वाक्य में राजा कर्त्ता, वाण करण, हरिण कर्म, और मारा सामान्य भूत क्रिया है ये सब पद शुद्ध हैं और एक पद का अर्थ दूसरे के अर्थ से मेल रखता है इस कारन संपूर्ण वाक्य का यह अर्थ हुआ कि राजा के वाण से हरिण का मारा जाना ॥

६ पाठ

असंबद्ध वाक्य

बनियां वसूले से कपड़े को सींचता है

यद्यपि इस वाक्य में सब पद कारक समेत शुद्ध हैं परंतु एक पद का अर्थ दूसरे किसी पद के अर्थ से मेल नहीं रखता इस कारन वाक्य भरे का कुछ अर्थ नहीं हो सक्ता इसी लिये ऐसे वाक्य को अशुद्ध कहते

कर्मप्रधान वाक्य

कर्तृप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्त्ता का होना अवश्य है वैसे ही कर्मप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्म का होना अवश्य है कर्त्ता की कुछ अपेक्षा नहीं होती क्योंकि वहां कर्म ही कर्त्ता के रूप से आता है और जिन कारकों का प्रयोजन होता है उन्हें कर्म और क्रिया के बीच में रखते हैं जैसा घोड़ा मारा गया इस वाक्य में मारा गया यह कर्मप्रधान भूत सामान्य क्रिया है और घोड़ा कर्म, कर्त्ता के रूप में है, इन दो ही पदों से यह वाक्य पूरा हुआ है और कारकों की आवश्यकता होती है तो उनकी भी योजना कर लेते हैं जैसा आटा चक्की से पीसा जाता है पहाड़ पै से पत्थर गेरा गया ॥

वाक्य में जिस पद का विशेषण हो उसको उसी पद के पहिले रखना चाहिये क्योंकि ऐसी रचना से वाक्य का अर्थ तुरन्त दीख आता है और विशेषण अपने २ विशेष्य से पहिले नहीं हों तो दूरान्वय के कारन अर्थ समझने में कठिनता पड़ती है ॥

सविशेषण वाक्य

निर्द्दई सिंह ने अपनी पैनी डाढ़ों से इस दीन हरिण को चाब डाला ॥

७ पाठ

दूरान्वयी वाक्य

बड़े बैठा हुआ एक लड़का छोटा घोड़े पे चला जाता है ॥

इस वाक्य का अर्थ बिन सोचे नहीं जाना जाता परंतु इसी में विशेषणों को अपने अपने विशेष्य के साथ मिला देने से इसे देखते ही अर्थ समझ में आ जाता है यथा ॥

एक छोटा लड़का बड़े घोड़े पे बैठा चला जाता है यद्यपि ऐसे वाक्य अशुद्ध नहीं कहाते पर क्लिष्ट होते हैं ॥

क्रम से क्रियाओं के

उदाहरण

प्रथम हेतुहेतुमद्भूत का उदाहरण

मैं विद्यावान् होता तो ऐसी बात क्यों कहता

कार्य्य कारण का फल कहने के लिये सदा हेतुहेतुमद्भूत ही की नहीं किन्तु और काल की भी क्रिया आती हैं जैसा मैं जाता हूं तो लाता हूं अथवा जाऊंगा तो लाऊंगा ॥

अपूर्णभूत क्रिया का उदाहरण

देवदत्त यज्ञदत्त को पढ़ाता था वह न्हाता था

अपूर्णभूत का अर्थ पहिले बतला चुके हैं कि भूत काल की क्रिया पूरी न हो चुकी हो यथा देवदत्त यज्ञदत्त को पढ़ाता था यहां यह बात प्रत्यक्ष है कि यज्ञदत्त को देवदत्त कर्त्ता के पढ़ाने की क्रिया भूत काल की है और पूरी नहीं हो चुकी ॥

सामान्यभूत

मैं हुआ ॥ तू सोआ ॥ वह गया ॥ उसने काम किया ॥ घोड़ी ब्याई ॥ उसने चिड़िया को पकड़ा ॥

सामान्यभूत क्रिया पास के और दूर के दोनों भूत कालों को जतलाती है जैसा मैं ने आज दो घड़ी दिन चढ़े रोटी खाई, बिक्रम राजा बड़ा प्रतापी हुआ जिसके राज्य में सब प्रजा सुखी रही ॥

पूर्णभूत

पूर्णभूत क्रिया को भी सामान्यभूत की जगह बोलते हैं जैसा मैं ने रोटी खाई वा खाई थी ॥ उसने पोथी लिखी थी ॥ उसने पेड़ सींचे थे ॥ वह रहा था ॥ वे गये थे ॥ चीलें उड़ी थीं ॥

आसन्नभूत

उसने कूआ खोदा है ॥ लड़की ने रोटी खाई है ॥ लड़के ने खिलाने तोड़े हैं ॥

आसन्नभूत क्रिया उस जगह बोली जाती है जहां बर्त्तमान से थोड़े ही काल पहिले की क्रिया कहनी होती है जैसा मैं ने रोटी खाई है तथा क्रिया का कर्त्ता और कर्म तो बर्त्तमान हों और वह क्रिया हो चुकी हो तो वहां भी आसन्नभूत क्रिया बोली जाती है जैसा देवदत्त ने इस शाला को बैठाया है इसलिये वही इसका प्रबन्ध करेगा ॥

संदिग्धभूत

मैं सोया हेऊं ॥ उन्हों ने खाया हो ॥ पानी पड़ा हो ॥

संदिग्धभूत क्रिया वहां बोली जाती है जहां भूत काल तो निश्चय हो पर क्रिया का सन्देह हो जैसा देवदत्त ने पेड़ काटा हो तथा किसी धातु की भूत सामान्य क्रिया के आगे होना धातु की भविष्यत् क्रिया लाने से भी संदिग्धभूत क्रिया होती है जैसा ॥

प्रश्न तेरे लड़के ने मेरी लकड़ी तोड़ा थी ॥
उत्तर तोड़ी होगी ॥

वर्त्तमान

वह बातें बनाता है ॥ मैं मिट्टी का घोड़ा बनाता हूं ॥ राजा राज करता है ॥

विधि क्रिया का उदाहरण

तू वहां जा ॥ तुम सवेरे ही अपने काम पे लगो ॥

सम्भावनार्थ क्रिया

मैं राजा होऊं ॥ तू पानी ले आवे ते। अच्छा करे ॥ उसका उद्योग लग जावे ते। बड़ा आनन्द होवे ॥

भविष्यत् क्रिया

लुहार की भट्टी में आग होगी ॥ कल वह कलकत्ते के। जायगा ॥ वे आवेंगे ॥

पूर्वकालिक क्रिया का उदाहरण

जिस क्रिया के समाप्त करके दूसरी क्रिया में कर्त्ता प्रवृत्त होता है वह क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहाती है ॥

उदाहरण

देवदत्त पगड़ी बांधके बाहर के। गया यहां पगडी का बांधना पूर्व क्रिया और जाना उत्तर क्रिया है ऐसे ही सर्वत्र जाने। ॥



छठा अध्याय

१ पाठ

संज्ञा के कर्त्ता आदि कारक, क्रिया पद का बनाना और वाक्य की योजना के क्रम का भी वर्णन तो किया परंतु अब यह लिखते हैं कि वे कारक कौन २ अर्थ में और किस क्रम से आते हैं ॥

कर्त्ता का वर्णन

क्रिया का व्यापार करनेवाला कर्त्ता कहाता है, वह प्रधान और अप्रधान दो प्रकार का होता है उसका वर्णन भी पहिले कर आये हैं जैसा प्रधान कर्त्ता बालक और अप्रधान कर्त्ता बालक ने, बहुधा क्रिया का कर्त्ता प्रधान आता है परंतु सकर्मक धातु की सामान्य भूत क्रिया और उसकी योगज क्रिया का कर्त्ता अप्रधान होता है ॥

प्रधानकर्त्ता का उदाहरण

गुरू विद्यार्थियों को पढ़ाता है ॥

२ पाठ

अप्रधानकर्त्ता का उदाहरण

गुरू ने शिष्य को पढ़ाया वा पढ़ाया था वा पढ़ाया है परंतु अकर्मक धातु और लाना सकना चुकना की सब क्रियाओं का कर्त्ता प्रधान ही होता है ॥

उदाहरण

लड़का पिटता है वा पिटा वा पिटा था मनुष्य घोड़ा लाता है वा लाया वा लाया था बैल घास को खा सकता है वा न खा सका वा खा चुका जहां प्रधानकर्त्ता आता है वहां क्रिया का लिंग बचन कर्त्ता ही के अनुसार होता है ॥

उदाहरण

वह पुरुष जाता है ॥ वह लड़की रोती है ॥

अप्रधानकर्त्ता की क्रिया का लिंग बचन कर्म के अनुसार होता है जैसा लड़के ने रोटी खाई लड़की ने पानी पिया परंतु कर्म के आगे कर्म का चिन्ह को होगा तो सामान्य भूत क्रिया पुल्लिंग ही एक बचन होगी कर्म स्त्री लिंग हो वा पुल्लिंग ॥

उदाहरण

लड़के ने लड़की को उठाया वा लड़कियों को उठाया केवल संज्ञा और संख्या ही कहनी होती है तो प्रधान ही कर्त्ता लाते हैं जैसा घोड़ा गाड़ी एक दो तीन ॥

३ पाठ

कर्म का वर्णन

पहिले कह चुके हैं कि कर्म उसे कहते हैं जिस में कर्त्ता की क्रिया के व्यापार का फल हो, उसकी चिन्ह को है, जैसा बड़ही लकड़ी को काटता है यहां बड़ही कर्त्ता, लकड़ी कर्म और काटना क्रिया है, कर्त्ता की क्रिया काटने का व्यापार कुल्हाड़ी आदि का चलाना है उसका फल अलग कटना अर्थात् अगल होना है और वह लकड़ी में रहता है इसलिये वह कर्म है ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

यह भी नियत नहीं, कि जिस पर से आगे को चिन्ह हो वही कर्म हो क्योंकि बहुधा को चिन्ह का लोप करके भी कर्म लाते हैं जैसा वह रोटी पकाता है वा रोटी को पकाता है दोनों रीति से ठीक है ॥

द्विकर्मक धातु के दो कर्मों में से एक मुख्य कर्म होता है और दूसरा अमुख्य ॥

एक कर्मक से जो धातु द्विकर्मक होती है उसकी एक कर्मक अवस्था का कर्म मुख्य और दूसरा अमुख्य होता है उन में से अमुख्य कर्म का तो चिन्ह, से और कहीं को भी आता है और मुख्य कर्म के चिन्ह का लोप हो जाता है जैसा देवदत्त पोथी को पढ़ता है यहां पढ़ना धातु एक कर्मक है और उसी को द्विकर्मक किया तो हुआ यज्ञदत्त देवदत्त को पोथी पढ़ाता है॥

४ पाठ

देवदत्त घोड़े को फेरता है यज्ञदत्त देवदत्त से घोड़ा फिरवाता है जो स्वाभाविक द्विकर्मक धातु होती है उसके कर्म की भी यही रीति है जैसा देवदत्त यज्ञदत्त को पैसा देता है देवदत्त यज्ञदत्त से रुपया मांगता है॥

प्रेरणार्थक क्रिया में पूर्वावस्था का कर्त्ता कर्म हो जाता है उसका चिन्ह कहीं को, और कहीं, से आता है और पहिला कर्म भी बना रहता है एक दूसरे से क्रिया करवावे उसे प्रेरणा और क्रिया करवानेवाले को प्रेरक कर्त्ता कहते हैं जैसा देवदत्त यज्ञदत्त को पैसा देता है अब इसी को प्रेरणार्थक करो तो उसके लिये प्रेरक कर्त्ता और आवेगा जैसा शिवदत्त देवदत्त से यज्ञदत्त को पैसा दिलाता है, बैल गाड़ी को खींचते हैं देवदत्त बैलों से गाड़ी खिंचवाता है॥

क्रिया में दो से अधिक कर्म होते हैं तो उन में एक तो मुख्य कर्म होता है और शेष कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान के रूप से आते हैं पर वे अगले पण्डितों के अनुसार कर्म कहे जाते हैं जैसा देवदत्त यज्ञदत्त से पेड़ कटवाता है यहां यज्ञदत्त और पेड़ दो कर्म हैं उन में से यज्ञदत्त करण है॥

देवदत्त यज्ञदत्त को पैसा देता है यहां यज्ञदत्त सम्प्रदान है ॥

देवदत्त यज्ञदत्त से पैसा लेता है यहां यज्ञदत्त अपादान है ॥

कर्मप्रधान क्रिया का कर्म प्रधान कर्तावत् होता है जैसा रोटी खाई जाती है छुरी सुधारी जाती है ॥

करण कारक

जिसके द्वारा क्रिया सिद्ध हो उसे करण कहते हैं उसका चिन्ह, से वा करके है ॥

उदाहरण

राम ने रावण को बाण से मारा था

यहां मारना क्रिया की सिद्धि बाण के द्वारा होती है इसलिये बाण करण है ॥

५ पाठ

मनुष्य बुद्धि से ईश्वर को पहचानता है यहां ईश्वर को पहचानना बुद्धि के द्वारा होता है इसलिये बुद्धि करण है ॥

जिस शब्द के आगे, से चिन्ह आता है वह करण भी होता है जैसा मिट्टी से मटका बनता है ॥

साथ के अर्थ में भी से चिन्ह आता है जैसा देवदत्त से मेरा बैर है अर्थात् देवदत्त के साथ बैर है ॥

गुण की विशेषता जताने के लिये भी से चिन्ह आता है जैसा देवदत्त से यज्ञदत्त छोटा है वा बड़ा है ॥

हेतु से आगे भी से चिन्ह आता है जैसा सांप से डर होता है प्राप्ति से प्रसन्नता होती है मित्र के मिलने से सुख होता है निरादर से क्रोध होता है पढ़ने से विद्या आती है ॥

सम्प्रदान

दोनों धातु का मुख्य कर्म सम्प्रदान होता है उसका चिन्ह, को, वा, के लिये है जैसा देवदत्त यज्ञदत्त को धन देता है वा यज्ञदत्त के लिये धन देता है ॥

तादर्थ्य से भी ये चिन्ह आते हैं जो वस्तु किसी प्रयोजन के लिये हो उसे तादर्थ्य कहते हैं जैसा यह आटा रोटी के लिये वा रोटी को रक्खा है घास घोड़ों को वा घोड़ों के लिये धरी है वह मिलने को वा मिलने के लिये आया था ॥

अपादान

अपादान उसे कहते हैं जिस से कुछ अलग किया जाय और उसी से अपादान का चिन्ह, से होता है जैसा बादल से पानी गिरता है पहाड़ से नदी निकलती है ॥

६ पाठ

सम्बन्ध

सम्बन्ध का थोड़ा सा तो वर्णन पहिले कर आये हैं परंतु अब विशेष करते हैं ॥

नीचे जो शब्द लिखे हैं वे नित्य सम्बन्धवान् हैं अर्थात् उनके पहिले सम्बन्धक के अवश्य आता है ॥

सम्बन्धवान् गुण

ऊपर नीचा तला पहिला आगा पीछा बायां दाहना बीच बाहर भीतर बिन साथ सहित संग कारन पास लिये मध्य साम्हने सन्मुख इत्यादि और अंग बाचक जैसा हाथ पांव ॥

जैसा उसके ऊपर नीचे और उसका हाथ पांव आदि जानो कार्य कारण में भी सम्बन्ध होता है जैसा पीतल का लोटा यहां पीतल कारण और लोटा कार्य है कारण सम्बन्धक होता

है स्वामी सेवक में भी सम्बन्ध होता है जैसा राजा का मंत्री अंग और अंगी का भी सम्बन्ध होता है जैसा देवदत्त का हाथ पीपल का पत्ता ॥

केवल धातु वा भाववाचक के प्रयोग में सकर्मक धातु के कर्म का, को चिन्ह नहीं किन्तु सम्बन्ध का चिन्ह, का आता है जैसा रोटी का खाना पानी का पीना गांव की लूट वा गांव का लूटना ॥

धातु और भाववाचक के योग में कर्त्ता से आगे भी सम्बन्ध का चिन्ह आता है जैसा नदी का चढ़ना वा चढ़ाव सम्बन्ध के चिन्ह का लोप हो जाता है तो उसे मान कर जो आदेश होता है वह बना रहता है जैसा लड़के बिन घर सूना अर्थात् लड़के के बिन घर सूना ऐसे ही मनुष्यों बिन क्या मेला ॥

७ पाठ

अधिकरण

अधिकरण आधार से कहते हैं उसके चिन्ह, में, पै, पर हैं जैसा लोटे में जल भरा है वृक्ष पर वा पै पक्षी बैठे बोल रहे हैं ॥

रूपवान् ही नहीं किन्तु अरूपवान् वस्तु भी अधिकरण होती है जैसा मेरे मन में ईश्वर का डर है दिन में पानी पड़ा था वा आकाश में सूर्य्य है ॥

कहीं पै पर आने से अधिकरण का पास अर्थ समझते हैं जैसा कूए पै वा पर भीड़ है अर्थात् कूए के पास भीड़ है ॥

नित्य, सम्बन्धवान् शब्दों में से बिन, लिये, कारण, इन्हें छोड़कर शेष शब्द अधिकरण के वाचक हैं उनके अधिकरण चिन्ह, में, का तो लोप हो जाता है पर उसे मानकर आदेश

होता है वह बना रहता है जैसा, आगा पीछा आदि शब्दों से अधिकरण का चिन्ह, में करने मे वे शब्द आगे में पीछे में ऐसे हो जायंगे फिर में का लोप करने से आगे पीछे ऐसे रह जायंगे ऐसे ही और भी जानो ॥

८ पाठ

उदाहरण

घर के आगे दीवा रक्खो अर्थात् घर के आगे में दीवा रक्खो चौबारे पै मोर नाचता है परंतु ऊपर के योग में सम्बन्ध का चिन्ह, के बना रहता है जैसा घर के ऊपर कान है जिस समुदाय में से निर्धारण करना होता है उसके आगे अधिकरण के चिन्ह, में, बीच, मध्य, ये आते हैं जैसा जीवों में मनुष्य उत्तम है चलनेवालों के बीच घोड़ा शीघ्र गति है पशुओं के मध्य सिंह बलवान् है ॥

कहीं चिन्ह समेत अधिकरण भरे का लोप हो जाता है पर उसे मान जो आदेश होता है वह बना रहता है जैसा उस सेठ के बड़ा धन है अर्थात् उसके घर में बड़ा धन है यहां चिन्ह समेत अधिकरण घर में इतना है उसका लोप होगया ॥

कितनी ही धातुओं की क्रिया के करने में कर्त्ता को अधिकरण की आकांक्षा रहती है जैसा नाव तीर पै लगी और लगना धातु की क्रिया का अधिकरण कोई धातु ही हो तो उसके अधिकरण चिन्ह में का लोप हो जाता है पर आदेश बना रहता है जैसा घोड़ा दौड़ने लगा अर्थात् दौड़ने में लगा ऐसे ही देवदत्त खाने लगा ॥

लगना के अधिकरण की धातु सकर्मक हो तो उसके कर्म का चिन्ह, को आवेगा जैसा वह घोड़े को मारने लगा परंतु

अधिकरण रूप धातु के आगे अधिकरण का चिन्ह में आता है तो कर्म की जगह सम्बन्ध हो जाता है जैसा घोड़े के मारने में लगा पेड़ के काटने में लगा ॥

सम्बोधन

सम्बोधन का अर्थ चिताना है और जहां सम्बोधन आता है वहां मध्यम पुरुष की योजना होती है जैसा हे देवदत्त तू आ तात्पर्य्य यह है कि सम्बोधन मध्यम पुरुष के लिये आता है कर्त्ता अवश्य प्राणी ही हो सकता है पर कवि लोग जड़ वा चैतन्य में उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष वा अन्य पुरुष की कल्पना करलेते हैं जैसे पशु पक्षियां के प्रसंग से कहानियां बनाते हैं तो वे लिखते हैं कि बहुत से पक्षी एक जाल में फंस गये और जिस पक्षी की बुद्धि से जाल में आये थे उस से कहने लगे कि तेरी बुद्धि ने सब को दुख दिया, उन में एक बृद्ध पक्षी था सो बोला; अब आपस में थूक बिलोने से कुछ नहीं होता किन्तु ऐसा उपाय करो कि जिस से इस आपत्य से छूटें ऐसी कथा कविजन, लोगों के उपदेश के लिये बना लेते हैं क्योंकि पशु पक्षियों को मैं तू का ज्ञान नहीं होता ॥



सातवां अध्याय

वाक्य का वर्णन तो पहिले कर ही चुके हैं अब वाक्यों को मिलाकर बार्त्ता बनाने का क्रम लिखते हैं; जिन वाक्यों में आपस में मेल होता है उनके मिलने से बात पूरी होती है उन में बहुधा इन अव्ययों का काम बहुत आपड़ता है॥

अव्यय

(और पुनि फिर ही भी हां कि वा यद्यपि जो तो जों तों पर परंतु न नहीं मानो जानो जैसा वैसा ऐसा कैसा क्योंकि अब कब जब तब क्या क्यों कुछ) आदि॥

ये अव्यय एक वाक्य को समाप्त करके दूसरा कहते हैं तो उनके बीच में आते हैं जैसा उसने रोटी खाई और पानी पिया वा एक क्रिया में जितने एकसे कारकों की योजना हो सके उनके बीच में वा एक विशेष्य के अनेक विशेषण हों तो उनके बीच में, और लाते हैं जैसा राजा ने सिंह और सूअर और हरिण को गोली से मारा वा काले और पीले बादल उठे॥

एक क्रिया के पीछे जो दूसरो क्रिया की जाती है उसकी आदि में फिर पुनि ये अव्यय आते हैं जैसा देवदत्त ने रोटी खाई फिर वा पुनि पानी पिया॥

जिस पद वा वाक्य के अन्त में, ही आती है उसके अर्थ का निश्चयपन जाना जाता है जैसा रात ही में पानी बरसा था, (ही) कारक चिन्ह के और क्रिया के पहिले भी आतो है जैसा उसने तुझ से ही पूछा वा मुझ ही से पूछा॥

भी अव्यय वहां आता है जहां पूर्व वाक्य से विशेपता कहनी होती है जैसा देवदत्त को बुलाओ और यज्ञदत्त को भी बुलाओ॥

क्यों क्या कुछ, प्रश्न में आते हैं जैसे तू वहां क्यों जाता है अथवा तेरा क्या नाम है ॥

एक दूसरे से कुछ कहे और उस बात को दूसरा अंगीकार करे वहां, हां बोला जाता है जैसा देवदत्त यज्ञदत्त से कहता है तू मुझ से ब्यौहार करेगा वह कहता है हां ॥

कि, यह उन दो वाक्यों के बीच में होता है जहां कि उत्तर वाक्य पूर्व वाक्य से सम्बन्ध रखता है अर्थात् जहां पिछले वाक्य को पहिले वाक्य के साथ मिलाने से बात पूरी होती है जैसा मैं चाहता हूं कि मेरे मित्र प्रसन्न रहें ॥

वा, अनिश्चय में आता है ॥

यद्यपि, अव्यय पूर्वोक्त की न्यूनता जतलाने के लिये आता है जिस वाक्य में यद्यपि होगा उसके उत्तर वाक्य में पर वा परंतु भी होगा जैसा इस पुर में देवदत्त यद्यपि धनवान् है पर यज्ञदत्त का नाम प्रसिद्ध है ॥

जो, तो, सम्बन्ध वाचक अव्यय हैं जो, प्रतिज्ञा के साथ और तो अनुमान किये गये के साथ आता है जैसा जो पानी अधिक बरसता है तो अन्न भी अधिक उत्पन्न होगा ॥

मानो, यह अव्यय उत्प्रेक्षा के लिये आता है एक वस्तु को और वस्तु ठहराना उत्प्रेक्षा कहाती है जैसा चांदनी ऐसी खिल रही है मानो धूप है ॥

प्रश्न में सब काल की क्रिया आती हैं और बहुधा प्रश्न ही की क्रिया के काल के अनुसार उत्तर की क्रिया का भी काल होता है, बहुधा प्रश्न के, क्या कौन कोई कुछ क्यों ये चिन्ह आते हैं जैसा वह क्या करता है वह कुछ लेगा, परंतु क्या यह कहीं निषेध का वाचक भी आता है जैसा तू क्या बुरा काम

करता है अर्थात् बुरा काम मत कर, क्या यह विशेषता का वाचक भी आता है जैसा उसने क्या अच्छी बात कही थी अर्थात् बहुत ही अच्छी बात कही थी, यह क्या बुरा पानी है अर्थात् बहुत ही बुरा पानी है, कौन यह शब्द सन्देह के प्रश्न में आता है जैसा तू कौन है, और कहीं झिड़की देने की जगह में भी बोला जाता है जैसा हमारी बात में बोलनेवाला तू कौन है॥

कोई, चैतन्य के प्रश्न के लिये आता है जैसा यहां कोई मनुष्य है कोई अच्छा तोता हो तो लाओ॥

कुछ, यह बहुधा अचैतन्य के प्रश्न में आता है जैसा यहां कुछ आटा दाल मिलता है कुछ ईंधन है॥

परंतु अनियत संख्या कहने के लिये भी कुछ आता है जैसा इसके पास कुछ घोड़े हैं, कुछ मनुष्य हैं, क्यों यह हेतु पूछने के लिये आता है जैसा तू क्यों रोता है अर्थात् रोने का कारण बता॥

जिस वाक्य में क्या, और न, वा नहीं भी आवें उसे वक्रोक्ति कहते हैं जैसा क्या तुझे खाने को न मिला था अर्थात् मिला था ईश्वर क्या हमारा पालन न करेगा अर्थात् करेगा तात्पर्य्य यह है कि जिस वाक्य में दो निषेध होते हैं उस में एक भी निषेध नहीं रहता क्योंकि वहां निषेध का निषेध हो जाता है जैसा यह अधर्मी है इस कहने से जाना जाता है कि बिन धर्मवाला, और जब कहें कि यह अधर्मी नहीं है, तो नहीं यह पहिले निषेध का दूर करनेवाला होगा इस से यह अर्थ हुआ कि यह धर्मी है॥

जिस वाक्य में जो का कारक होगा उसके उत्तर वाक्य में वह वा सो का कारक अवश्य होगा और पूर्व वाक्य उत्तर वाक्य

का हेतु होगा जैसा जो किसी का बुरा नहीं करता वह सज्जन है जो चढ़ता है सो गिरता है जिसकी देह में पोड़ा होती है उसे आनन्द कहां ॥

प्रश्न के उत्तर में बहुधा पूरा वाक्य कहा जाता है जैसा

प्रश्न तू किसका बेटा है ॥

उत्तर मैं देवदत्त का पुत्र हूं ॥

परंतु कहीं केवल हां कहने से ही उत्तर पूरा हो जाता है जैसा प्रश्न तू वहां गया था उत्तर हां, यहां केवल हां कहने ही से जाना जाता है कि गया था ॥

जिस क्रिया वा जिस कारक का प्रश्न हो केवल उसी की क्रिया वा प्रश्न के कारक कह देने से उत्तर हो जाता है जैसा प्रश्न क्या करता है उत्तर सोता हूं ॥

प्रश्न क्या खाता है उत्तर रोटी ॥

प्रश्न सिंह को किस से मारा, उत्तर खड्ग से इत्यादि सब कारकों के उत्तर जानो ॥

प्रश्न और उत्तर की बहुधा एक ही काल क्रिया होती है परंतु कहीं और काल की क्रिया में भी उत्तर दिया जाता है जैसा प्रश्न तू आज हमारे घर आवेगा उत्तर आप चलिये मैं आया वा आता हूं यहां प्रश्न में तो भविष्यत् काल की और उत्तर में सामान्य भूत वा वर्त्तमान काल की क्रिया बोलते हैं, उत्तर में ऐसी क्रिया उतावल के लिये आती है ॥

तुल्य सामान्य सम सदृश ये भी नित्य सम्बन्धवाचक हैं ये उपमान और उपमेय का सम्बन्ध जतलाते हैं और जिस पद के आगे ये आते हैं उसके सम्बन्ध का चिन्ह का, को, के हो जाता है ऐसे ही, बिन कारण के योग में भी जानो ॥

उपमान उसे कहते हैं जिसकी बड़ाई हो जाती है ॥

और उपमेय उसे कहते हैं जिसकी बड़ाई किया चाहते हैं जैसा यह पीतल सोने के तुल्य है यहां सोना उपमान पीतल उपमेय और तुल्य शब्द उपमा का जतलानेवाला है ऐसे ही और शब्दों को भी जानो ॥

जैसा, यह दृष्टांत के लिये आता है जैसा पृथ्वी ऐसी गोल है जैसी नारंगी ॥

श्लेष उसे कहते हैं जिसके दो आदि अर्थ हों ॥

श्लेष का उदाहरण

गुण के अवलंब से मनुष्य शिखर पै चढ़ता है इस वाक्य में गुण शब्द के दो अर्थ हैं गुण रस्सी और विद्या दोनों को कहते हैं॥

समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन आदि शब्द मिल के एक शब्द हो जाता है अर्थात् प्रति शब्द के कारक चिन्ह का लोप होके एक शब्द बन जाता है और उन शब्दों के कारकों का अर्थ बना रहता है जैसा खैरसार, इस में खैर और सार दो शब्द हैं उनकी पहिली संख्या यह थी खैर का सार परंतु सम्बन्ध के का, चिन्ह का लोप करने से खैरसार एक शब्द हो गया ऐसे ही खचीपाड़ा गंगादास राजाखेड़ा आदि पदों में सम्बन्ध के पद का लोप जानो घुड़चढ़ा अर्थात् घोड़े पै चढ़नेवाला पनभरा पानी का भरनेवाला गुलचला गोली का चलानेवाला इसे तत्पुरुष समास कहते हैं ॥

विशेष्य विशेषण के योग से जो एक पद होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं जैसा महाजन अर्थात् बड़ा मनुष्य ॥

बहुब्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में कहे हुए शब्दों को छोड़ किसी और ही पद की प्रधानता हो जैसा मृगनयनी

अर्थात् मृग कीसी आंखें जिस स्त्री की हों पिकबयनी कोयल कोसी जिस स्त्री की वाणी हो ॥

दस से आगे संख्या वाचक शब्द भी यौगिक हैं अर्थात् दो दो शब्द मिलके होते हैं परंतु एक से ले दस तक के वाचक शब्द यौगिक नहीं ॥

संख्याओं के समास में बहुत से पदों की अलटा पलटी होती है जैसा दस से आगे एक आदि आठ तक के योग में दस को रह, पर चार के योग में, दह और छः के योग में लह हो जाता है और एक दो तीन चार पांच छः सात आठ को क्रम से ग्या बा, ते, चौ, पंद, सो, सत्त, अठा, आदेश होते हैं और मध्य पदों का लोप हो जाता है एक आदि पूर्व और दस उत्तर पद होता है ॥

जैसा ग्यारह का अर्थ है एक से युक्त दस इन में से मध्य पद से और युक्त का लोप करने से रहे एक दस इन्हें अपने अपने आदेश कर दिये तो सिद्ध पद ग्यारह हुआ ऐसे ही बारह तेरह चौदह पन्द्रह सोलह सत्रह अठारह ॥

दहाइयों के पद बनाने का क्रम

दो आदि से गुने हुए दस दहाई कहाते हैं उन में भी मध्य पदों का लोप होता और दो आदि गुण पूर्व पद और दस उत्तर पद होता है दहाई के दो तीन चार पांच छः सात आठ नौ गुणकों के क्रम से बी ती चाली पंचा सा सत् अस् नव् आदेश होते हैं तथा पांच गुणक तक के योग में दस को स और छः आदि के योग में ठ, तर, सी, वह, ये आदेश होते हैं और मध्य पदों का लोप हो जाता है ॥

बीस का अर्थ है कि दो से, गुणे दस इन में से मध्य पदों का लोप करने से रहे दो दस फिर इन्हें अपना अपना आदेश कर दिया तो हुआ बीस ऐसे ही तीस चालीस पंचास साठ सत्तर अस्सी नव्वह आदि शेष संख्याओं की बनावट भी अपनी युक्ति से जानलो ॥

सो से आगे बड़ी गिनती में जो बड़ी संख्या होती है वह पहिले और छोटी संख्या उत्तरोत्तर बोली जाती है जैसा पांच सहस्त्र तीन सो पंचास ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

॥ दोहा ॥

भाषा चन्द्रोदय भयो जग के बीच अनूप ।
ता प्रकाश सूझें परें छोटे मोटे रूप ॥ १ ॥
बिना पढ़े व्याकरण के हुओ चहे परवीन ।
पण्डित मंडल बीच जो सो नर हो छबि छीन ॥ २ ॥
शाब्दिक के मुख बचन को कैसे कोउ डुलाय ।
जस दृढ़ जड़ तरु ना हले पवन झकोरे पाय ॥ ३ ॥
यह मैं निश्चय करि कहों सुनो जु तुम दे कर्ण ।
विद्यावारिधि तरन को लखो नाव व्याकर्ण ॥ ४ ॥
तजके सब ही काम को धरु विद्या में ध्यान ।
विद्या तें नर जग लहैं त्रिपद कीर्त्ति धन धाम ॥ ५ ॥

इति भाषाचन्द्रोदय

BEHAR DURPAN.

बिहार-दर्पण ।

अर्थात्

बिहार के कई एक प्रसिद्ध मनुष्यों का जीवनचरित्र ।

जिसको

श्री ५ युत आनरेबुल बाबू भूदेव मुख्योपाध्याय सी, एस, आई, के आज्ञानुसार महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह क्षत्रियपत्रि का सम्पादक तालुकेदार रेपुरा ने बड़े परिश्रम से संग्रह किया ।

१८८२

लेंच "बोधोदय" छापाखाना, बांकीपूर ।

बाबू नवकुमार बानुरजी ने छापकर प्रकाश किया ।

Price per copy. 12 annas

मूल्य प्रति पुस्तक ।॥/ डाकव्यय ∕)

बाबू रामदेनी सिंह की बनाई बिहार दर्पण नाम पुस्तक ऐसी हिन्दी में है कि झट लोगों की समझ मे आजाय इस में लोगों के ऐसे जीवन चरित लिखे हैं कि जो मनोहर और शिक्षा दायक हैं संक्षेप इस पुस्तक का विषय स्कूल के लड़कों के लिये बहुत उपकारी है। कोई पुस्तक अभी तक हिंदी मे ऐसी नही बनी इस कारण इस के बनानेवाले को जहां तक होसके उत्साह देना चाहिये ।

छोटूराम तिवारी ।

संस्कृत प्रोफिसर पटना कालिज मेम्बर पटना एडूकेशन कमीटी, बिहार स्कूल बुककमेटी, और सेन्ट्रेल—कमिटी कलकत्ता।

मार्च १८८२

भूमिका ।



आज कल हिन्दी भाषा में अनेक पुस्तकें बनती जाती हैं और उनसे कुछ न कुछ लोगों का लाभ भी होता है। पर अपर भाषा की अपेक्षा हिन्दी भाषाओं में अब भी पुस्तकें बहुत कम हैं। इसी बात को सोच कर अनेक उदार पुरुष इस भाषा में पुस्तक रचते वा रचवाते हैं और यथा शक्य उसमें सहायता भी देते हैं। आनरेबुल भूदेव मुखोपाध्याय ने विहार के प्रसिद्ध लोगों का जीवन चरित विहार के लोगों का हित बिचार लिखने की आज्ञा कई एक लोगों को दी थी परन्तु यह काम किसी से न हुआ। जब इस बात को उक्त महाशय ने मुझसे कहा तो मैंने इस को सिर माथों पर लिया। और अपने मन में सोचा कि बिहार के राजे महाराजे वा गुणी लोग जिन के पास मैं पत्र भेज दूंगा वे लोग निःसंदेह इस में सहायता करेंगे पर यह कल्पना मेरी निरी थोथी ठहरी। यहां तक की निज मित्र गण के भेजने और बाज़२ जगहों में खुद दो दो महीना रहने पर भी कुछ पता न लगा। पर मेरा संकल्प यह था कि मैं अवश्य इस काम को पूरा करूंगा अतएव विशेष परिश्रम और द्रव्य खरच करने पर भी बहुत कुछ संक्षेप हाल हाथ लगा। विशेष क्या लिखूं २ बरस परिश्रम करने पर यह पुस्तक तैयार हुई है। यदि इससे किसी को कुछ भी लाभ हो तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूंगा।

इस में के लिखे हुए जीवन चरित्रों के अनुसार राजा महाराजा, बाबू, दीवान, व्यापारी, साधु, पण्डित, पहलवान, कवि, उद्योगी क्या हिन्दू क्या मुसलमान वा क्या शिष्य जो लोग ध्यानपूर्वक देखेंगे और काम करेंगे तो आशा है कि सब प्रकार से सुख पावेंगे और सुखपूर्वक अपने समय को बितावेंगे। यदि यह बात न हो तो मेरी मूर्खता है।

इसबार प्रूफसीट देखने में बहुत सी गलतियां रहगई हैं। विद्वज्जन क्षमा करेंगें २रीबार सुधार दी जांयगी।

रामदीन सिंह।



बिहार दर्पण।

बिहारदर्पण।

राजा नारायण मल्ल देव बहादुर का जीवन चरित्र।

ये पुरुष पम्मार वंश में विक्रम, भोज, उदयादीत, जगदेव, आदि के समान गिने जाते हैं। यथार्थ में उत्साही, साहसी, धीरता, बीरता, न्याय, निपुणता आदि गुणों का ये नमूना थे। और भोजपुर में पम्मार वंश वालों का राज्य का नींव भी इन्हीं की दी है। डुमरांव, बकसर, जगदीशपुर आदि इन्हीं के वंश में हैं। महाराजा सांतनु साही जब से उज्जैन से आकर भोजपुर में रहे तब से राज्य पद इनह के वंश वाले को नहीं था। हां मार पीट कर राजा कहलाते थे पर नारायण मल्ल ने यथार्थ में राज्य पद पाया॥

उग्रसेनि साही के जेठ पुत्र का नाम होल साही था। होल साही के ३ पुत्र हुए। नारायण साही, रुद्र प्रताप, कीर्ति साही। इन तीनों मानों त्रिदेव ही हुए। नारायण साही लिखने पढ़ने में बहुत मन लगाया और समयानुसार शस्त्रविद्या में भी एकही हुए अपने पिता होल साही के मरने के बाद नारायण साही ने बिहार के सूबेदार के साथ जिस जिस लड़ाई में गये फतह किये। यह हाल

देखकर सब कोई नारायण साही को चाहने लगे । शाहजहां बादशाह ने नारायण साही को बोलाया और बहुत कुछ पारितोषिक और मल्ल का पदवी दिया । नारायण मल्ल जब दिल्ली में थे तब तक इनके छोटे भाई प्रतापरुद्र साही ने भोजपुर में एक ऐसा माकान बनाने लगे कि जिस से बढ़ कर शायद ही कोई मकान ठहरता । इस मकान का नाम उन्हीं ने नवरत्न रक्खा था और तय्यार भी होगया था लेकिन बिहार के सूबेदारने भेजा होकर उस मकान को तोड़ने और रुद्रप्रताप साही के मारने के लिये भोजपुर पर चढ़ाई की । उस समय रुद्रप्रताप साही ने देखा कि इस समय सूबेदार से लड़ना अच्छा नहीं है क्योंकि नारायण साही दिल्ली में हैं और जो कुछ हम लोगों की भलाई है सब लड़ाई करने से मिट जायगा । यह सोच कर भोजपुर से उत्तर दर्या में उतरना चाहता था कि उनका पाला हुआ एक पच्छी भोजपुर में छूट गया इसलिये उन्हीं ने वहां से पच्छी के ममत्व पर चले आये लोगों ने मना भी किया कि जब आप इतना बचाये तो पच्छी के लिये क्यों नाहक लड़ाई बिसाहते हैं पर रुद्र प्रताप साही ने कहा कि पाले हुए पच्छी पर पुत्रवत् ममता करना ही मेरा मुख्य धर्म्म है । जब वह मकान पर पहुंच गये और पच्छी को लेकर चले तब तक मुसलमानों की फौज पहुंच गई। रुद्रप्रताप साही (प्रताप रुद्र साही) से जंग हुआ आखिरकार मारे गये । कुछ दिन के बाद जब नारायण मल्ल यहां आये और यह समाचार सुने तो निहायत क्रोध के आग में भड़क उठे

परंतु शीघ्र ही शाहजहां बादशाह की खबर आई कि तुम सूबेदार से मत लड़ो यहां चले आओ उसका बदला अर्थात् रुद्र प्रताप साही के मारने वाले को दंड मैं दूंगा। नारायण मल्ल शाहजहां बादशाह की आज्ञानुसार दिल्ली में चले गये। और बादशाह के यहां रहने लगे। बादशाह ने इनकी सत्यता देखकर इनको अपने साथ बराबर रखने लगा। यहां तक की जब महल में जाता तो इनको डेवढ़ी पर बैठा देता। एक दिन शाहजहां बादशाह जब महल में जाने लगा तो तो नारायणमल्ल को डेवढ़ी पर बैठा गया और कहा कि मैं आप को स्वामी भक्ति का हाल जानता हूं इसलिये आप को यह काम सौंपता हूं देखिये आज तक कोई हिन्दू इस काम पर नहीं रक्खा गया क्यौं कि यथार्थ में आप ऐसे नौकरों का मिलना दुर्घट है। इस पर नारायण मल्ल ने हाथ जोड़ कर कहा कि गरीब परवर मैं तो किसी लायक नहीं हूं पर यह आपको दी हुई बड़ाई भी व्यर्थ न होगी। इतना सुनकर शाहजहां तो महल में चला गया और नारायण मल्ल वहां पर पहरा देने लगा। इसी समय में एक पुरुष खोजा के वेश में आया और महल में चला गया नारायण मल्ल ने अपने जी में विचार किया कि यह खोजा नहीं मालूम होता है। और यदि पुरुष है और महल में जाता है तो बड़ी हानि होगी क्योंकि स्त्री और पुरुष को कभी एकांत में बैठना या रहना उचित नहीं है, और यह पुरुष है, और महल में बराबर जाता है यदि कोई बुराई हुई तो मेरी स्वामी भक्ति न रही।

यह सोचकर कहा कि जो हो कल कुछ मैं इस से पूछूंगा कि तुम कौन हो यही बात ठहराकर दूसरे दिन जब खोजा महल में जाने लगा तो नारायण मल्ल ने पूछा कि तुम कौन हो? बिना पूछे कहां जाते हो? इतनी बात को सुनकर खोजा ने कहा मैं खोजा हूं बादशाही महल में जाता हूं तू कौन है जो मुझ से नाहक छेड़ छाड़ करता है। नारायण मल्ल ने कहा कि तुम कोई हो पर मैं विना बादशाह की आज्ञा के न जाने दूंगा इस लिये छेड़छाड़ करता हूं। खोजा ने कहा रे डेवढ़ीदार तू मुंह सम्हाल-कर नहीं बोलता क्या नहीं जानता कि मैं बादशाही मह-ल का खोजा हूं तुम्हारा नाम क्या है? नारायण मल्ल ने कहा कि मेरा नाम नारायण मल्ल है खोजा ने हंसकर कहा कि मारायल मल्ल नाम है तबतो इतनी ढिठाई करता है नारायण मल्ल इन बातों पर कुछ ध्यान न देकर केवल इत-ना ही कहा कि तुम अब महल में मत जाओ क्योंकि मेरी आज्ञा मानना यह नहीं है यह बादशाही हुक्म है बादशाह ने मुझ से कहा है कि तुम डेवढ़ी पर रहो और पहरा दो इसलिये मैं कभी नहीं जाने दूंगा। दूसरे मैं कपटियों का प्राण नाशक हूं। और तुम जैसा कपट का वेष बनाये हो वह तो मैं जानता ही हूं। पर इन बखेड़ों से मुझे क्या प्रयोजन आज से तुम महल में मत जाओ। इस बात को सुनकर अत्यन्त क्रोधित होकर खोजा महल में चला और कहा कि देखें तो मुझे कौन रोकता है। नारा-यण मल्ल फिर भी कहा कि कुशल चाहते हो तो मत जा-

औ मैं स्वामी के लिये आज तुम को मार दूंगा निदान खोजा और भी दो चार गालियां सुनाई तब भी इन्हों ने कहा कि अब भी कुशल चाहते हो तो महल में मत जाओ पर खोजा ने दला नारायणमल्ल दो चार बार रोका पर न माना निदान नारायण मल्ल ने तलवार देखाया कि अब मैं मार दूंगा इस पर भी न माना तो नारायण मल्ल ने उसका सिर काट लिया। यह सब वृतांत जब महल में पहुंचा तो शाहजहां बादशाह ने अत्यन्त क्रोध होकर आया और पूछा कि किसने खोजा को मारा नारायण मल्ल ने हाथ जोड़ कर कहा कि पृथ्वी नाथ मैं ने इस खोजा का बध किया है। शाहजहां बादशाह ने बहुत रंज होकर पूछा कि तुमने क्यों इसको मारा। इसका कारण बताओ नहीं तो अभी फांसी दिलवा दूंगा। नारायण मल्ल ने कहा मैं आप का दास हूं आप जो चाहिये कीजिये पर बुराई फैलेगी इसलिये इसको मारा। इस बात को सुन कर और भी बादशाह रुष्ट होकर कहा कि तुम बड़े नटखट और कायर और अधर्मी हो क्योंकि कहते हो कि बुराई रोकने के लिये इस को मारा और अपने को बीर बतलाकर भी निरापराध खोजा का बध किया नारायण मल्ल ने कहा कि पृथ्वीनाथ मैं क्षत्री हूं कभी खोजा पर शस्त्र नहीं उठाता पर यह खोजा नहीं है इस लिये इसको मारा। बादशाह ने कहा यह तो बड़ा झूठा मनुष्य मालूम होता है क्योंकि खोजा को कहता है कि यह खोजा नहीं है। इन सब बातों को सुनकर नारा-

यणमल्ल ने कहा कि मेरी ढिठाई क्षमा हो तो कुछ प्रार्थना करूं इतना कह कर तुरन्त ही खोजा का कपड़ा अलग कर दिया तो बादशाह ने देखा कि सचमुच खोजा नहीं और यह देख कर बहुतही लज्जित हुआ प्रथम तो चाहा कि नारायणमल्ल को फांसी दिलवा देना चाहिये पर फिर बिचार किया कि ऐसा खैरखाह नौकर न मिलेगा और यथार्थ में मेरी भलाई की है। ऐसा सोच समझ कर बहुत प्रसन्न हुआ और नारायणमल्ल से कहा कि तुम जो मांगोगे उसको मैं दूंगा। नारायणमल्ल ने पहले तो कहा कि आप की इतनी कृपा जो है वही मेरे लिये सब है पर बादशाह ने नहीं माना और कहा कि कुछ न कुछ मांगो। तब नारायणमल्ल ने हाथ जोड़ कर कहा कि मुझे यह तलवार जो आप के हाथ में है दीजिये शाहजहां बादशाह ने सोचा कि यह लालच में आकर तलवार मांगा है क्योंकि इस तलवार में २ लाख रुपये की मूठ है इस लिये इन्हों ने इसी को मांगा। तुरन्तही पूछा कि तुम तलवार चाहते हो या मूठ। नारायणमल्ल ने सोचा कि यदि कहूं कि मूठ क्या तलवार से अलग है जो आप पूछते हैं कि मूठ लोगे या तलवार पर यह उत्तर इस समय नहीं देना चाहिये क्योंकि बादशाह मुझे लालची समझ कर यह बात पूछा है और इसका ध्यान तो इन्हें है नहीं कि यह कोई वस्तु न मांगकर केवल तलवार मांगा है। इस लिये उचित है कि तलवार ही मांगना चाहिये कहा कि पृथ्वीनाथ मुझे तलवार दीजिये मैं मूठ नही चाहता तब बादशाह ने तलवार और

राजा की पदवी देकर बिदा किया। इस तलवार को भोजपुरवाले कत्ती कहते हैं। नारायणमल्ल ने कहा कि पृथ्वीनाथ मैं आप का सेवक हूं मुझे राज्य से क्या प्रयोजन पर बादशाह ने न माना तब नारायणमल्ल ने कहा कि इस राज्य मे बहुत कुछ बखेड़ा उठेगा क्योंकि राजा मुकुटमणि देव सिंह बहादुर वहां पर राज करता है और वह हम लोगों का शत्रु है तो इसमे और भी बखेड़े होंगे। बादशाह ने सूबेदार के नाम से पत्र लिख दिया कि इस को भोजपुर का राजा बनाया है देखो कोई इससे लड़े भिड़े नहीं नारायण मल्ल ने आकर भोजपुर में एक प्रसिद्ध गांव बसाव में राजधानी बसाया। नारायण मल्ल का वह तलवार जो शाहजहां बादशाह से मिली थी आजतक महाराज कुमार बाबू बाला गोविन्दा सिंह के पास डुमरांव में है।

राजा नारायण मल्ल ने बहुत से लड़ाइयों में बादशाह के ओर से गये थे परंतु जिन जिन लड़ाइयों में गये कहीं सुलह कहीं जोरावरी से अवश्य काम सिद्ध किये। नारायण मल्ल का संक्षेप हाल बिहार के तवारिख में भी लिखा है "उद्वत प्रकाश" में लिखा है कि शाहजहां ने मनसव दार का भी खिताव (उपाधि) दिया था। 'कुंअर विलास' 'लगनसारणी' में भी नारायणमल्ल का कुछ हाल लिखा है। नारायणमल्ल ने हर जगह की लड़ाइयों में जय पाया परइन के परबल शत्रु हयहोवंशियों ने कभी इन से मुंह न मोड़ा आखिर कार लाचार होकर इन से मेल ही करते बना।

राजा नारायण मल्ल देव बहादुर ने अपनी प्रजाओं को बहुत प्रसन्न रक्खा और बार बार प्रजाओं को बुलाकर शिक्षा देते थे अर्थात् कहते थे कि धन धर्म विद्या आचार और सत्कर्म, इन्हीं से लोग बड़े होते हैं, बड़े होने की सदा इच्छा करो जो बड़ों की संगति करते, उनकी राह चलते और बात मानते हैं वे सदा सुखी रहते हैं जो हितकी बातें नहीं सुनते मनमानी करते हैं वे बिपत्ति में पड़ते हैं बड़ों के साम ने उनसे ऊंचे आसन पर अकड़ बैठना, बहुत जोर से हंसना, डपट कर बोलना, वेश्याओं के तरफ देखना बहुत अनुचित है, जो दूसरों का सन्मान करते हैं उनका बड़ा आदर होता है, धनी गुनी गुरू बूढ़ा और अनाथ बिदेशी इनका सेवा करना धर्म है, अपनी शक्ति भर किसी को हानि न करना चाहिये, दूसरों को हानि करना बड़ा पाप है किसी दूसरे की बस्तु पर कभी जी मत चलाओ, अपनी कमाई पर संतोष करो, सन्तोषी सदा सुख पाते हैं, दूसरे का धन जन बल विद्या या उदय देख कर सिहाना बहुत बुरा है, सिहाने वाले कभी सुखी नहीं रहते, जो संपत चाहो तो आलस नींद भय और क्रोध कम करो और परिश्रम से अपनी बुद्धि विद्या बढ़ाओ, परिश्रम का करना मनुष्य का धर्म है, परिश्रम से लोग बड़े बड़े काम करलेते हैं, परिश्रमी कभी आलसी रोगी और दरिद्र नहीं होते, सब से मेल रक्खो मेल से लोगों के बड़े बड़े काम निकल जाते हैं मेल सहायता की जड़ है। अपनी शक्ति भर दूसरों की सहायता करो कि समय आने पर वे तुम्हारे सहायक होवें

छोटे बड़े सब के काम सहायता से निकलते हैं, क्रोध मत करो, क्रोधी पीछे से बहुत पछताते हैं, लोभ बुरा है, अधिक लोभ करने से थोड़ा भी नहीं मिलता, छल करना बहुत बुरा है, छली का विश्वास कहीं कोई नहीं करता, झूठ बोलना बड़ा पाप है, झूठे की बात कहीं कोई नहीं पतियाता, काम विचार कर करो, बात साफ और समझ कर कहा करो कि पीछे धोखा न हो, काम सावधान होकर धीरे से करो जल्दी करने से बिगड़ जाता है। इत्यादि उपदेश कर रहे थे कि किसी ने कहा कि पृथ्वीनाथ ९०० मुसलमानों ने आकर आपके देश में बहुत उपद्रव मचाते हैं और प्रजाओं की बहू बेटी की पतिव्रत धर्म्म को नष्ट करते, ब्राह्मणों के जोरावरी मुसलमान बनाते, जूते से चन्दन को मिटा देते, मुंह में थूक डाल देते गायों को मारते, मन्दिरों को ढाहते, नगरों में आग लगाते फसल को नष्ट करते, मुखिया मुखिया आदमियों के सिर काट कर पेड़ों में लटकाते, बागों को कटवाते, दूध पीते हुए बच्चों को मारते ब्रह्मपुर के शिव और आप की राजधानी को लूटने के लिये चले आते हैं : नारायणमल्ल ने सुनकर एकबारगी अचम्भे में आ गये और कहा कि इस समय बचा जाना बहुत अच्छा होगा पर फिर कहा कि ये दुष्ट सब मेरी प्रार्थना को न मानेंगे और तुरन्त अपने बान्धवों अर्थात् उज्जैनों के यहां पत्र भेजना शुरू किया और रात भर में अपनी प्रजाओं और बान्धवों को इकट्ठा कर कहा कि भाइयो मेरी समझ में संसार के सब आदमी आपस में भाई हैं, क्योंकि एक माता पिता से उत्पन्न हैं अर्थात स्वयंभू मनु

और सतरूपा से सबकी उत्पत्ति है, उनमें जो भेद देख पड़ता है सो ऊपर का है यथार्थ में भेद नहीं है क्योंकि शरीर, मन, बुद्धि, उत्पत्ति, विनाश, सुख, दुख, हानि, लाभ, हर्ष, शोक, लोभ, मोह ये सब को बराबर हैं, केवल भिन्न२ देशों में रहने के कारण भिन्नता है, देखिये इसी देश के रहनेवालों में जल वायु के कारण कितनी भिन्नता देख पड़ती है, पंजाबी (पंजाब के रहने वाले) बंगालियों (बंगदेश के रहने वाले) से मन्दराजी (मन्दराज के रहनेवाले) नैपालियों (नयपाल के रहने वाले) से कश्मीरी (कश्मीर के रहने वाले) ओड़ियों से [उड़िया के रहनेवाले] नहीं मिलते, जब एक ही देश में इतना भेद है, तो दूर२ के रहने वालोंमें क्यों न होगा, आदमियों के खाना, पीना, रहन, पहिरावा और शरीर के रंग रूप व्यवहार विद्या, ये सब देशों के अनुसार होते हैं यह भूल है जो व्यवहार के भेद हो जाने से मनुष्यों में भेद समझने लगते हैं यदि अपना भाई किसी दूर देश में जाकर कुछ दिन रहे, और उसका रंग रूप और पहिरावा बदल जाय तो क्या उसे अपना भाई नहीं समझियेगा, यह केवल देश और व्यवहार का भेद है, कि हिन्दू (आर्य्य) मुसलमान, मुग़ल, चीनी हबशी रूसी आदि जिन देशों में गरमी अधिक पड़ती है वहां के लोग काले और जहां अधिक सरदी वहां के गोरे होते हैं, इसलिये सब मनुष्य अपने भाई हैं, भाइयों में प्रेम रखनेसे संसार में बहुत सुख और सहायता मिलती है, जहां एक मनुष्य दिन को अकेले जाने में डरता है वहां चार मनुष्य इकट्ठा होकर अं-

धेरी रात में बे धड़क चले जाते हैं, डरते नहीं, ऐसे ही यदि सब मनुष्य सब के साथी रहें तो कभी किसी को कहीं डर नहीं रहे. ऐसे प्रियपात्र सहायक बंधु को जो भिन्न समझकर बैर भाव रखते हैं उनकी बड़ी भूल है। मैं यह कभी नहीं चाहता हूं कि किसी से बैर करूं पर लाचारी मुसलमानों से लड़ना ही पड़ा पर एक बार सेनाध्यक्ष से इस विषय में पत्र भेज कर देखूं कि मेल करता है या नहीं। यों कह कर एक पत्र अपने हाथ से लिखा कि मैं आप के लायक नहीं हूं. बैर व्याह प्रीति समान से होती है मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी सेना को समझा दीजिये कि वे लोग इस उपद्रव को छोड़ दें नाहक प्रजाओं के। सताने से क्या फल। यह पत्र में लिख कर भेजवा दिया। और अपने बान्धवों और प्रजाओं को कहा कि यदि वे नहीं मानें तो होगा क्या ? लड़ाई तो करने ही पड़ेगी आप लोग इस समय में मेरी सहायता कीजिये सभों ने शपथ खाई कि लड़ाई में हम लोग कभी न भागेंगे जहां आप को पसीना गिरेगा वहां हम लोग अपना सिर देने के लिये तैयार होंगे। नारायण मल्ल ने कहा कि जब लड़ाई हो तो यह उपाय कीजिये कि एक हूं मुसलमान बच कर न जाय। यों कह कर बहुत से दरजियों को बुलाकर मुसलमानी कपड़ा सिलाना शुरू किया और बायांबंदी कपड़ा बहुत से सिलवा लिये। और सब सामग्री लड़ाई की भी उपस्थित कर लिये। जब इनका पत्र सेनाध्यक्ष के पास पहुंचा तो पत्र लेजाने वाले आदमियों का दहना हाथ कटवा

लिया और पत्रोत्तर में लिखा कि मैं कभी नहीं अपनी सेना को इस उपद्रव से रोकूंगा। कल देवराढ़ (जगदीशपुर से सवा कोस पश्चिम एक गांव है) में चतुर्भुज जी के मंदिर को गिरा कर परसों ब्रह्मपुर में आकर शिव की मूर्ति को काटकर तुम्हारी राजधानी पर चढ़ूंगा। जब नारायण मल्ल ने अपने आदमियों का दहना हाथ कटा देखे तभी से क्रोध के आग में भभक उठे और पत्र पढ़कर तुरंत ही कहा कि अब जो कोई मेरा साथी हों उन्हें उचित है कि ब्रह्मपुर की लड़ाई में चल कर साथ दें। इतनी बात के सुनते ही सबों ने तय्यारी की पर नारायण मल्ल ने बहुत से आदमियों और अपने लड़के, कक्कुलती और प्रबल सही को बसांव में रखकर आप ब्रह्मपुर के लड़ाई में चले दरजियों से जो कपड़े सिलवाये थे उन्हें अपने सरदारों को पहिना कर कहा कि आप लोग मुसलमानों के वेश में चलिये और जब उनकी फौज़ आवे तो अली अली करते और यह कहते कि आज ब्रह्मेश्वर नाथ को गिराकर काफ़िर नारायण मल्ल को मारिये और जब वे लोग जानें कि मेरी ही फौज़ है जब मिल जाय तो माहाबीर महाबीर कहकर मारना शुरू कीजिये यही उपाय करके बिलकुल मुसलमानों को मारिये सबों को यही सिखा कर दृढ़ किया। और एक पत्र भी मुसलमानों को लिखा कि काफ़िर नारायण मल्ल को मारने और ब्रह्मेश्वर नाथ के मंदिर के तोड़ने लिये जो आप चढ़े हैं इसलिये मैं भी आपको सहायता के लिये ५०० मुसल मानों के साथ लेकर आता हूं हुक्म हो तो तावेदार

हाज़िर हो मेरा नाम अस्करी हुसेन है और मैं गाज़ीपुर से आता हूं इस पत्र को पढ़ कर सेनाध्यक्ष बहुत प्रसन्न हुआ और लिखा कि आप ब्रह्मपुर में ठहरिये मैं तीसरे पहर को मिलूंगा और काफ़िरों को पूरी सज़ा दूंगा। यह पत्र जब नारायण मल्ल के पास आया तो पढ़कर कहा कि अवश्य ब्रह्मेश्वर नाथ की कृपा से एक एक मुसलमानों को मार अपनी तबिअत को प्रसन्न करूंगा। जब तीसरे पहर का समय आया तो नारायण मल्ल ने अपनी सेना समेत आ-कर मिले सेनाध्यक्ष तो जाना कि अस्करी हुसेन आये और इसी धोखे में अचेत था कि नारायण मल्ल ने बमबम कर मारना शुरू किया कहते हैं कि सांझ होने तक बिल्कुल मु-सलमानों को मार बड़े धूम धाम से ब्रह्मेश्वर नाथ का पूज-न किया और जय का डंका बजाते हुए अपनी राजधानी में आये। किसी कबि ने ठीक कहा है

दोहा —प्रगटै बुद्धि संकेत में, जाको सो बुद्धिमान।
तरत आपदा कोटि बिधि, यह बिनु संशय जान ॥ १ ॥
जहां न गोली तीर गति, नाहिं चलै तरवारि।
तहां बुद्धि युत बुद्धि तें, सकत आपदा टारि ॥ २ ॥
युद्ध समय लोहो यथा, सोने सो अधिकाइ।
तथा सर्व्वदा बुद्धि सब, सम्पति तें सर साइ ॥ ३ ॥
जहां न बायू जा सके, सूर्य्य किरन न समाय।
बुद्धिमान निज बुद्धि तें, तहऊं करें उपाय ॥ ४ ॥

उसी दिन से आज तक भोजपुर के उज्जैनों में बांयाबंदो कपड़ा पन्हते हैं और जय सूचक चिन्ह मानते हैं।

नारायण मल्ल ने सब भाइयों और प्रजाओं को धन्यबाद दिया और कहा कि यह आप ही लोगों की कृपा है कि मैंने इस लड़ाई में जय पाई नहीं तो कभी संभव नहीं था कि इन दुष्ट मुसलमानों से धन धरती और इज़्ज़त बचती आशा है कि आप लोग सर्बदा मेरी सहायता इसी प्रकार से कीजियेगा। सबों ने कहा कि पृथ्वीनाथ यह आप हमलोगों की बड़ाई करते हैं हमलोग आप ही के प्रताप से बचे नहीं तो जैसे अनेक लोगों ने इन दुष्टों के उपद्रव से पंचत्व को प्राप्त हुए वैसेही हम लोग भी होते हमलोगों को उचित है कि सदा माता पिता के समान आप को समझे, तन मन से आप का कल्यान मनावे, आप की आज्ञा में रहे, जिस भांति आप स्वस्थ और सुचित रहें वैसा उपाय सदा करें क्योंकि आप ही के सुख से हम लोग सुखी और दुख से दुखी हैं। जब आप के प्रयोजन पड़े तो धन बल अन्न हाथी घोड़ा ऊंट और बुद्धि से सहायता करें शास्त्र में राजा को देवता के समान मानना लिखा है। राजा बिना प्रजा, पति बिना कामिनी चंद बिना यामिनी, सूर्य्य बिना कमल चंद बिना कोई लाज बिना कुलस्त्री, विद्या बिना अभ्यास नदी तीर के पेड़, दीप बिना भवन घृत बिना भोजन पंथ बिना साथी प्रतीति बिना प्रीत सरदार बिना सभा जल बिना कूप ये सब प्रशसनीय नहीं है। नारायण मल्ल ने बहुत भांति से लोगों को सन्तोष देकर बिदा किये। और सबों ने आनंद पूर्वक आकर अपने अपने यहां नारायण मल्ल की प्रशंसा की और कहा कि ऐसे बुद्धिमा-

न, विद्वान् शीलवान् राजा का होना हमलोगों का भाग है।

एक दिन नारायण मल्ल शिकार खेल कर चले आते थे रास्ते में देखा कि एक बूढ़ा ब्राह्मण लंगड़ाते चला जाता है पर वाई से चला नहीं जाता था तुरंत अपना घोड़ा दे-कर बिदा किया और आप पैदल अपनी राजधानी में चले आये। इनके यहां हरएक प्रकार के गुनियों का बड़ा मान होता था अनेक गांव ब्राह्मणों को दिये जो आज तक उन लोगों के वश में चला जाता है। प्रजाओं के हित के लिये हरएक गांवों में कूआ बावली अनेक खोदवाये पथिकों के लिये ठांवें ठांवें सदाबर्त बैठलाये अनेक पाठशाला स्थापित किये नियुद्धशिक्षा के लिये देश देशान्तरों से पहलवानों को बुलाकर प्रजाओं को सिखाये जहां तहां नदियों में पुलबं-धाये जंगलों में सड़कें बनवाये हिंसक जंतुओं का नाश क-रवाये अनेक बैद्यों के नौकर रखकर प्रजाओं के हित के लिये गांव गांव में रखवाये, शत्रुओं के रोकने के लिये जहां तहां गढ़ बनवाये फ़ौज़ को रक्खे निदान राजा में जो जो गुन होना चाहिये वे सब नारायण मल्ल में बर्तमान था।

एक दिन नारायणमल्ल ने अपने लड़के कतुलती जिनका प्रसिद्ध नाम राजा अमरेश सिंह बहादुर भी था और परवल साहि को बुलाकर कहा कि संसार का यह नियम देख पड़ता है कि घर गांव इलाका और देश आदि के व्यवहार च-लाने के लिये एक प्रधान रहता है वह सब को यथायोग्य स-मझकर मानता है। जो एक देश का मालिक होता है उसे राजा कहते हैं। राजा को कोई बनाता नहीं वह आप

अपने प्रताप से बन जाता है राजा का धर्म्म है कि अपनी प्रजा को पुत्र के समान सदा पाले और बढ़ावे, यदि राजा नीति से चलता है, तो प्रजा बढ़ती और सुखी रहती है, और जो अनीति से चलता है तो प्रजा दुखी होती और उजड़ जाती है, अंत को राजा आप भी जैसे कि बरषा का पत्थर खेती को नाश कर आप भी गल जाता है। राजा का धर्म है कि प्रजा के हित के लिये सदा उपाय सोचा करे और उनको भली भांति नियम से चलाने के लिये दूत सेना खज़ाना (कोश) क़िला हथियार बुद्धिमान सभासद आदि सामग्री रक्खे, प्रजा से धन लेकर सदा उस के हित कामों में लगावे, कचहरियों में बैठकर प्रजा का दुख सुने और अन्यायी को बिचार कर उचित दण्ड दिया करे प्रजा के धर्म्म धन विद्या जीविका व्यापार आदि की सदा रक्षा करे, व्यर्थ कभी क्रोध न करे प्रजा की बस्तु पर कभी जी न चलावे इत्यादि धर्म्म स्मृतियों में लिखा है। आप लोग उसका ध्यान में रखिये। इन बातों को सुनकर फिर राजकुमारों ने कहा कि पिता और भी कुछ नीति की बातें कृपा कर बतलाइये। तब नारायण मल्ल ने बहुत प्रसन्न होकर कहा कि सबसे पहले परमेश्वर को पहचानिये प्रत्येक बिषय की मीमांसा करने का अभ्यास कीजिये, जो उपदेश किसी दूसरे को कीजिये उस का आचरण पहले आप कर लीजिये, अपने बित से बढ़कर काम मत कीजिये, जिस प्रकृति का जो मनुष्य हो उसका वैसाही सत्कार कीजिये, हरएक मनुष्य का स्वत्व पहिचानिये, जो भेद कहने के योग्य न हो उसको कभी मुंह से न निकालिये,

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री को आपत्ति में पहिचानिये, मूर्ख, अज्ञानि, वेश्या, कपटी, अविश्वासी, मनुष्य के संग से दूर रहिये, बुद्धिवान्, ज्ञानवान्, कुलवान् से मित्रता कीजिये, अच्छे कामों में जितना हो सके परिश्रम कीजिये, जब कोई बात कहिये तो सप्रमाण कहिये, जवानी के दिन बड़े भयानक है इन में अच्छा काम करना परम पुरुषार्थ है, किसी मनुष्य से भौंचढ़ाकर बात मत कीजिये चाहे शत्रु हो या मित्र, गुरू की प्रतिष्टा पिता से अधिक कीजिये क्योंकि वह आत्मा को पवित्र करता है आमदनी से अधिक खर्च मत कीजिये, सब कामों में बीच की चाल चले जाना अच्छा है। यदि कोई आपसे बड़े आवें तो उठकर बैठाइये और भली भांतिसे आदरसत्कार कीजिये, यदि कोई अतिथ आवे तो उस का अच्छा सत्कार कीजिये सबसे मिठा बानी बोलिये, अपनी आंख और जीभ को सब समय अपने बस में रखिये, अपनी पड़ोसी को अपने समान समझिये कभी क्लेश मत दीजिये, अपना कपड़ा और शरीर को शुद्ध रखिये जिस से आरोग्य और प्रतिष्टा हो, अपनी संतान को विद्या और बिनय सिखाइये जिससे लोक और परलोक में आनंद हो, जब किसी सभा में कुछ कहना चाहिये तो पहले भली भांति से समझलिये कि यह बात किसी के मत वा आचार के बिरुध तो नहीं है।

कोई बात ऐसी मत कहिये जिस से उस सभा के लोगों को घृणा वा अप्रसन्नता हो, न्याय कर्त्ता को उचित है कि न्याय की बात कहे चाहे वह किसी पक्ष के प्रतिकूल हो,

जहां पर बहुत लोग बैठे हों, वहां यह बात समझिये कि सब हमारे अनुकूल वा सब हमारे सधर्मी वा सब न्याय परायण वा सब मित्र हैं। क्षुधा से कभी अधिक खाना न चाहिये बहुत जल पीना, बिषम भोजन (बिना भूख या भूखमार या अपथ्य खाना) करना मल मूत्र के बेगको रोकना दिन में सोना रात में जागना इन्हीं कुसंयमों से रोग पैदा होता है। जिस बात को आप अपने लिये बुरा समझते हैं उसे औरों के लिये भी हितकारक मत समझिये, किसी के वस्तु पर लालच मत कीजिये, थोड़ा बोलना बहुत सोचना आवश्यक के अनुसार सोना, विशेष ग्रंथों को देखना, गुनियों का आदर करना, निज धर्म्म को मानना परिश्रम को करना, समय को अमोल रत्न समझना, किसी को भलाई में भांजी न मारना, बिना पूछे न बोलना, किसी की निन्दा न करना, उदारता को उत्तम समझना, आलस्य न करना किसी पुरुष को किसी दूसरे के आगे लज्जित न करना, किसी दूसरे के नाम का पत्र न पढ़ना, अपनी प्रशंसा न करना, स्त्रियों के समान बहुत संवार के न रहना, सदा सचेत रहना, ऐसा भूषण न पेहनना जो स्त्रियों को उचित हो, प्रत्येक कार्य्य में शीघ्रता न करना, पाहुने के आगे किसी मनुष्य पर क्रोध न करना, पाहुने से कोई काम न कराना बने तो आप उसका काम करना, किसी काम वा लाभ के लिये अपनी प्रतिष्टा न घटाना, किसी वस्तु का झगड़ा अपने ऊपर न डालना, धनं, छुरी, अंगुठी, शस्त्र, कुलवान् विद्वान मित्र को साथ रखना,

संसार में अपने को दीन और बिनीत बनाये रखना, ईश्वर से सदा सच्चा रहना अपनी इन्द्रियों को दमन करना, बड़ों की सेवा और छोटों पर कृपा करना, सब किसी का न्याय और सहायता करना, किसी को क्लेश न देना, दीन दुखियों से दाता होकर यथोचित बर्ताव करना, मित्र और मिलापियों को उपदेश करना, बटोहियों से क्रूरता के साथ न बर्त्तना, मूर्खों से घृणा करना और वे कुछ कहें तो चुप रहना, अपनी जीविका की जहां तक होसके उन्नति करना, जब तक द्रव्य से काम निकलै तब तक प्राण को भय में न डालना, धरोहर में गड़ बड़ न करना, झूठ कभी न बोलना, अपने में कुछ उत्तम न हो, तो मा बाप वा कुल का घमंड न करना, जो बात असंभव है उसपर संतोष करना, लोभ जड़, आपत्ति को, और क्रूरता जड़ उपकार की आशा न रखना, अव्यवस्थित चित पुरुष से शत्रुता को समझना जब तक जीना तब तक अपनी बुद्धि करना, औरों को बिपत्ति को देखकर शिक्षा पकड़ना, बिपत्ति के समय संतोष करना और हाय हाय न करना, नित्य संध्या के समय में सोचना की आज कितनी नई बातें मैं ने सिखी। किसी मित्र से जो बस्तु उसको आवश्यक की हो न मांगना, सुचित समय में मनोरंजन पुस्तक को पढ़ना, जीविका में इतना लिप्त न रहना जिस से ईश्वर को भूल जाना, ये सब बातें बुद्धिमानी की निशानी है।

जिस काम को आप अभी तक पूरा नहीं किये यह मत समझिये कि होगया। जब कुछ कहना चाहिये तो ऐसी

अच्छे प्रकार से सोच लीजिये कि यह बात कहूं वा न कहूं बोलने में इतनी जल्दी मत कीजिये जितने सोचने में। जो काम आज करना चाहिये उसे कल के भरोसे मत छोड़िये। अपने से बड़ों के साथ हंसी मत कीजिये। बड़ी पदवी के मनुष्य के आगे बहुत स्वल्पाक्षरों में बात कीजिये पर इतना स्वल्पाक्षर भी मत बोलिये कि जिस से वक्तव्य बिषय नष्ट हो जाय। सर्व साधारण से ऐसी रीति से बात चित्त मत कीजिये कि वे आप का अपमान करने लगें। किसी आतुर का काम आप के हाथ वा कर्तव्य से हो सके तो आलस्य मत कीजिये। जो कोई मूर्खता की बात हो गई हो, तो उसे भली भांति से याद रखिये कि जिस से फिर भी वैसी मूर्खता न हो। प्रति दिन रात को सोने के लिये जब पलंग पर जाइए तो पहले गणना कर लिया कीजिये कि आज कितनी मूर्खता और अशुद्धियां मुझसे हुईं जिससे दूसरे दिन उतनी न होने पावें।

यदि आप से कोई अच्छा काम हो गया हो, तो भूल जाइये क्योंकि उसका स्मरण रखने से अभिमान उत्पन्न हो-ता है। शत्रु की भी बुराई मत कीजिये बने तो उपकार ही कीजिये। उपकार किसी के साथ करना मानो उस को जन्म भर के लिये दास बना लेना है। बुरे मनुष्य का उप-कार से सामना करना ऐसा है। मानो उसे उपकार की काल कोठरी में जन्म भर बंधुआ कर रखना है। भलाई करके भूल जाइये पर जिसके साथ भलाई कीजियेगा वह न भूलेगा। अपनी द्रव्य को अपने परिवारों से ऐसा छि-

पाकर न रखना चाहिये कि मरने पर उन लोगों के हाथ न लगे। अभिमानी पुरुष को कोई अच्छा नहीं कहता चाहे वह चक्र वर्ती राजा ही क्यों न हो। लोक विरुद्ध काम न करना क्योंकि लोकापवाद दुर्निवार है। अपने ही प्रयोजन पर दृष्टि रखना अपने ही अर्थ से अर्थ रखना झूठी लल्लो पत्तो इन सब को छोड़ देना, ऊटपटांग, उलाहने से भरी और मन भेदी बात कभी सभा में न कहना, किसी मनुष्य वा सेवक को समझाना हो, तो एकांत में बुलाकर समझा देना। अंग हीन आदमी को जैसे लंगड़ा, लूला, गंजा, बहरा, कुबड़ा, राजरोगी आदि को सेवक न रखना, जो कहीं से कोई पत्र आया हो, तो सब काम छोड़ कर पहिले उसको पढ़ना, किसी के भोजन करने के समय उसके ओर दृष्टि न करना, जो बात मुंह से निकल गई वह अब उसके अधिकार में नहीं है। स्त्रियों को आभूषण स्त्रियां और पुरुषों का आभूषण पुरुष पहने, जब तक हो सके लड़ाई वा झगड़ा न करना, मेल मिलाप में सदा सुख है। क्रोध करने के समय उसका परिणाम विचार लीजिये। ऐसा बरताव न करना कि लोग अकिंचित समझें, नगर शासन कर्ता और विचार कर्ता से मैत्री रखना, इस आशा से विद्या न सिखना कि इससे केवल द्रव्य वा संसारी सुख मिलेगा किन्तु अपने को मनुष्य, बुद्धिमान बनाने के लिये विद्या सिखना। मूर्ख की यह पहचान है कि बहुत बोलता और बिना विचारे उत्तर देता है। न इतनी क्षमा करना, लोग बेडर हो जांय, और न इतना कोप कि लोग विरक्त हो जायें। शासन कर्त्ता

बिना शासन देशका शत्रु है। वह धन उत्तम है जिस से प्रतिष्ठा बनी रहे। सब से बड़ा क्लेश मूर्खता है। जो पुरुष विश्राम को नहीं चाहता वह बहुत क्लेश पाता है।

हरएक बात पर हंसने वाले और घृणा करने वाले को मूर्ख कहते हैं। बुद्धिमान् को संकेत मात्र बहुत होता है और मूर्खों को दण्ड देने की अवश्यकता होती है। इत्यादि नीतियों को सिखाकर कहा कि आप लोग इन बातों पर ध्यान दीजियेगा तो आशा है कि कभी भूल चूक न होगी। और अशिर्वाद देकर नारायण मल्ल अन्तःपुर में चले गये और कलुलती और परबल साही ने इन बातों को भली भांति से पालन किया।

नारायण मल्ल को शिकार खेलने की बड़ी शौक थी एक दिन १६२८ ई॰ में दवा के जंगल में (बिहियांके आस पास में है) अकेले शिकार खेल ने गये थे किसी दुष्ट ने अचानक गोली से मार दिया। जब यह खबर बंशाव में पहुंची और प्रजाओं को मालूम हुई तो एक बारगी अनाथ हो गये। जिन लोगों ने इस खबर को सुना ऐसा कोई नहीं था जो अश्रु पात न किया हो। इन के बेटों ने भलीभांति से श्राद्ध क्रिया किया नारायण मल्ल का नाम आज तक लोग नहीं भूलते और भलाई के साथ याद करते हैं। मानो आज भी नारायण मल्ल जीते हों नारायण मल्ल का चित्र देखने लाइक आज भी श्रीमान् राजकुमार बाबू बालगोबिन्दा सिंह के पास रक्खा है सच है। दोहा। यशभागी जो जन अहै, सोई

जीअत जग माहिं। मरो अहै सोई मनुज, है कलंक भी जाहिं ॥२॥

आज तक लोग यही कहते हैं धन्य होली साही थे जिन के राजा नारायण मल्ल पुत्र हुए सत्य है।
धन्य धन्य सब कोई कहताही। भो प्रसिद्ध जगमें सुत जाही॥

बाबू अचल साही का जीवन चरित्र

इनकी जन्म भूमि मौज़ा साइन परगना तिसारा तप्पे भदशाला जिला मुज़फ़्फ़र पुर में थी। इनका जन्म १६२३ ई० में हुआ था।

यह जात के जैथरिया भूमिहार थे। इनके पिता का नाम बाबू साना साही था। इनके एक छोटे भाई बाबू त्रिभुवन साही थे। बाबू अचल साही अपने बाप की ज़मींदारी २ हज़ार रुपये की पाई थी। परन्तु अपने साहस से पटने आकर अपने चाचा (जो पहले चकलेदार थे) बाबू धरणीधर साही के काम पाने की दर्खास्त की और चकलेदारी पाई इन्हों ने अपनी चतुराई से चकलेदारी की तहसील पहले से ७ लाख रुपये बढ़ाई। और प्रजाओं को सुख भी भली भांति से दिया ये संस्कृत के बड़े उत्साही थे। जब इन्हों ने देखा कि मुसलमानों के समय में संस्कृत विद्या की क़दर नहीं है। और प्राय ब्राह्मण लोग मूर्ख होते जाते हैं यदि कोई पढ़ा भी तो थोड़ा व्याकरण या ज्योतिष या जप, पाठ, पूजा आदि और बहुत पढ़े तो भी

मद् भागवत पढ़कर कथा कहने लगे। कदाचित् कोई पूर्ण पण्डित हुआ तौभी कोई आदर नहीं करता। इसलिये इन्हों ने यह एक युक्ति निकाली कि जो कोई ब्राह्मण संस्कृत पढ़ना प्रारंभ करे उसे १ले साल एक बीघा धरती २रे साल दो बीघे इसी प्रकार ५० वर्ष तक जो कोई पढ़े वह ५० बीघे धरती पावेगा। इस नियम से अनेक मनुष्य विद्वान् हो गये। और पाठकों को यह आज्ञा थी कि जहां तक जल्द में विद्यार्थि पढ़कर तय्यार होंगे प्रति विद्यार्थियों की विद्या देख के आप लोगों को पुरस्कार दिया जायगा। इसलिये पाठक लोग भी बहुत ध्यान देकर पढ़ाते थे।

इस बात के सिवाय इनकी प्रशंसा विशेष कर यह भी है कि इनके समय में जो लोग गौ पोसते थे उनको हुक्म था कि प्रति गौ के लिये एक बीघा धरती सरकार से मिलेगी और अधिक गौ पोसने से कुछ लाभ भी नहीं और यही बात बहुत सी प्रजाओं को समझाई भी गई कि अधिक गौ पोसने से सेवा नहीं हो सकता और जब सेवा न हो तो गौ मर जायगी तो रुपया भी नुकसान हुआ और नाहक गौ का प्राण भी गया इसलिये अपना पौरुष देख कर काम करना चाहिये। इसी प्रकार से साधारण लोगों के उपकार के लिये तन मन से भिड़े थे और अपने काम अर्थात् चकलेदारी को भी बड़ी उन्नति की जिससे इनका स्वामी भी इनसे बहुत प्रसन्न रहे और ये अपने समय में एक नामी आदमियों में गिने गये।

बाबू विधाता सिंह का जीवन चरित्र ।

इन के पिता का नाम बाबू खुशहाल सिंह था। इन की जनम भूमि एक छोटा सा गांव तारणपुर नाम है। यह गांव पटने से दक्खिन कोई चार कोस पर पुन:पुना नदी के बांये कनारे बसा है। विधाता सिंह के जीवन चरित्र के १ले इस बात का जानना बहुत आवश्यक है कि उनके गांव का नाम तारणपुर क्यों पड़ा। कहते हैं कि राजा मान सिंह का एक सेनापति भैलाई सिंह नाम क्षत्री था वह पुन:पुना नदी की रम्यता देखकर वहां पर रह गया। इस वीर पुरुष के पांच लड़के थे उनके नाम ये थे तारा सिंह, लकवा सिंह, नाद सिंह, कच्छा सिंह, लंका सिंह, इन पांचों में से हर एक ने एक२ गांव बसाया। तारा सिंह ने तारणपुर लकवा सिंह ने लखनपार, नादसिंह ने नाद कच्छा सिंह ने कछुअड़ा (कछूअड़ा) और लंका सिंह ने लंका, भैलाई सिंह गढ़नरवर का रहनेवाला था इसलिये उसको इस देश वाले नरवरिया इसी नाम से यह क्षत्री बोल गये अर्थात् नरवरिया कहलाने लगे। आज कल तो कोई कोई इन लोगों को नरवरिया वैश्य भी कहते हैं पर यथार्थ में मेरी समझ में ये लोग वैश्य नहीं है क्योंकि गढ़नरवर से आने के कारण नरवरिया कहाने लगे तो फिर वयस कैसे होसकते कदाचित् कोई कहे कि नरवरिया नाम के क्षत्री तो नहीं होते तो इस में यह प्रमाण है कि गांव के नाम से बहुत से क्षत्री बोले जाते हैं जैसे पम्मार लोग उज्जै-

न से आने के कारण उज्जैन कहाते हैं जो डुमरांव जगदीश पुर आदि में प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार गौतम लोग जो कनावर या कंडाडीह से आकर हरिहरक्षेत्र या दाना पुर के आस पास में हैं अब कंडवार कहाते हैं। और इसी प्रकार अमेठी से आकर जो लोग कहीं कहीं बस गये हैं अब वे लोग अमेठिया क्षत्री बोले जाते हैं यथार्थ में जो ये अमेठी के है तो बगोछिया हैं इसी प्रकार देव के महाराज जो मेवड़िया कहाते हैं अपने को राणा बताते हैं और मेवाड़ से आने के कारण मेवाड़िया कहाते हैं ऐसे ही सूर्य्यबंशी लोग जो ज़िला बस्ती के परगना महुली में बसते हैं महुलियार कहे जाते हैं। ऐसे ही छपरा के इलाके में जो दीचित क्षत्री हैं नव गांव में बसने के कारण नवतनी बोले जाते हैं ऐसे ही अनेक क्षत्रियों के नाम उनके गांव के कारण पड़ गये हैं तो इससे स्पष्ट मालूम हुआ कि नरवर से आने के कारण वे लोग यहां नरवरिया क्षत्री बोले जाने लगे।

बिधाता सिंह इसी नरवरिया में सम्बत् १७३८ में उत्पन्न हुये और सर्वदा अपने पिता की आज्ञा में तत्पर रहते थे।

बिधाता सिंह के बाप ने भली भांति से लड़िकाई में इनको पढ़ाया लिखाया नहीं था। पर हां कुछ अपने काम लायक हिन्दी पढ़ाया था। पर इनको लड़ना भिड़ना अच्छी रीति से सिखलाया था। कहते हैं कि बिधाता सिंह कसरत में बड़ा निपुण था। गोली चलाना तीर चलाना तो ऐसा जानता था कि घोड़े पर चढ़े और भर मैदान दौड़ते हु-

ए निशान करिआनो को मार देते थे और अपने समय में ये अद्वितीय पुरुष थे।

एक दिन बिधाता सिंह ने एक कवि के मुख से यह दोहा सुना।

विद्या सम जग में सुनो, और वस्तु नहीं भाइ।

धन विद्या में कौन बड़, विद्या कह कविराइ॥ १॥

इस दोहे को याद कर अपने मन में सोचने लगा कि जब विद्याही नहीं तो कुछ नहीं। यह सोच कर पढ़ने लगा पर कई एक साथियों ने कहा कि "प्रथम वैश्य विद्या नहीं, दूजे धन नहिं भूरि। तीजे भी जो तप नहिं, चौथे में क्या धूरि „

इसको सुनकर बिधाता सिंह ने कहा।

करत करत अभ्यास को, जड़ मति होत सुजान।

रसरी आवत जात ते, सील पर परत निशान। १।

और पढ़ने लगे कहते हैं कि थोड़े दिनों में परिश्रम द्वारा अच्छा विद्वान् हो गया।

बिधाता सिंह पढ़कर सत्य बोलना, नम्रता से रहना, परोपकार करना, ऐक्यता करना, शिक्षा देना, अच्छे अच्छे मनुष्यों की संगति करना, आदि सद्गुणों को स्वीकार किये इसी समय में एक बार बड़े जोर शोर से अकाल पड़ा और चारो ओर हाहाकार मच गया उस समय इनकी अवस्था २२ वर्ष की थी।

अनेक गरीबों ने अन्न के दुःख से इस संसार को त्याग किया। बिधाता सिंह ने सोचा कि यदि पुनःपुना नदी में एक उत्तर से दक्खिन बांध बान्धा जाय तो पुनःपुना नदी

के दोनों ओर धान भली भांति से होगा। पर इस काम में रुपये और और वस्तुओं की बहुत कुछ अवश्यकता थी और वे वस्तु इनके पास न थी। पर बिधाता सिंह ने कहा कि चलो इस देहात के लोगों से तो कहें वे लोग क्या इसका प्रबन्ध करते हैं। और अपने से उन लोगों के यहां जा जा कर इकट्ठा किया और दुष्काल (काहत) का हाल कह सुनाया इसके बाद बान्ध बान्धने का भी हाल कहा इस पर सब लोगों ने बड़े आनंद से उनकी बात को स्वीकार किया और उसी दिन बांध बांध ने लगे। कहते हैं कि ३००० आदमी से अधिक इस काम को करते थे पर तो भी कुआर के महीने में इस नदी का पानी इतने वेग से बहता था कि सब आदमी निराश हो गये और कहा कि इतने आदमियों से पुनःपुना में बान्ध कभी नहीं बन्धेगा। तब बिधाता सिंह ने कहा कि इतने आदमियों से बांध की कौन कहे बड़े २ काम हो जांयगे आप लोग धीरज धरिये मैं इसका बंदोबस्त करता हूं। यह कहकर कुछ आदमियों के साथ लेकर जहां तहां से बांस ताड़ आदि को काट लाये और चहला गाड़ कर उस पर मसूरिया जनेर का बोझ में मिट्टी देकर उस पर रखना प्रारंभ किया जब इस से भी न रुका तो पटने से बोरा मंगाकर उसमें बालू भर कर मुंह बन्द करवाकर दिया। जब इस से पानी रुक गया तो फिर मिट्टी आदि देकर बांध बांधागया बांध बांधकर लाखों बीघे धरती पटी और बहुत धान हुआ इस से इस देहात के लोग आनंद से रहने

लगी और बिधाता सिंह की बुद्धि की बड़ी ही प्रशंसा हुई।

एक दिन बाबू बिधाता सिंह को सांप काटा इस पर कई एक आदमियों ने कई तरह के दवा बताई पर बाबू साहब ने केवल जहां सांप काटा था वहां पर चोखी छुरी से काट कर लोहू निकालकर गार दिया और कहाकि सांप काटने का दवा सबसे यह पक्का है पर काटने के समय इतनी बात और भी याद रखनी चाहिये कि और कोई अंग कटा हो या घाव हो तो उसमें यह लोहू न लगने पावे जो लोहू लग जायगा तो उसका बचना बहुत ही कठिन हो जायगा।

एकबार पुनःपुना नदी की बाढ़ बड़े धूम धाम से आई और किनारे के गांवों को तहस नहस कर दी इसके सिवाय अपने किनारों के बाग बगीचा धान पान आदि बस्तुओं को भी जड़ पेड़ से उखाड़ डाली। इस के बाद तुरंत ही लोगों ने घर द्वार बना लिया पर २रे साल भी वही हाल हुआ। यह देख बिधाता सिंह ने सोचा कि यदि यही हाल रहा तो बहुत हानि होगी और इस देश बासियों को बड़ा ही दुःख भोगना पड़ेगा और इस के सिवाय कोई आदमी नदी के आसपास में घर द्वार भी न बना सकेगा। यह सोच कर फिर भी आस पास के लोगों को बुलाकर कहा कि भाई ऐसा उपाय करना चाहिये जिस से सब कोई सुख से दिन काट सके। नहीं तो देखिये कि इस नदी की बाढ़ से कितनी हानि हुई जो हर साल यही हुआ तो इस से बढ़कर कोई दुःख हम लोगों के लिये न होगा। इसलिये ऐसी तद

और करनी चाहिये कि एक बांध बहुत ऊंचा पुनःपुना के किनारे पर बांधा जाय जिससे पानी रूक जाय। इस बात को सबों ने मानी और बांध बांधकर इस बिपति से छूटे। इस बात को देखकर दूसरे लोगों ने भी (पुनपुना आदि नदियों में) उसी प्रकार बांध बांधा और उस बिपत्ति से छूट कर सुख से रहे। एक बार भादों के महीने में मकई, रहर आदि जिन्स तैय्यार थे और इसी समय बड़े ज़ोर शोर से टिड्डी दल का दल आकर बैठा यह हाल देख किसानों ने झट पट बाबू बिधाता सिंह को खबर दी। इस पर बाबू बिधाता सिंह ने चूना नवसादर तीन तीन तोले ५ सेर पानी में घोलकर छींटना प्रारंभ किया कि इस के तेज़ से बिल्कुल टिड्डी उड़ गईं और यह कहकर चले आये कि अब ये सब भाग जायगी। और यथार्थ में ऐसा ही हुआ।

बाबू बिधाता सिंह के समय में अकाल बार बार पड़ता गया और उसी से इन्हों ने एक ऐसी युक्ति निकाली कि जिससे इस देश में करोड़ों मन धान अकाल के समय में भी बराबर होता है। अकाल में जब लाखों आदमी भूखे मरते थे और चारो ओर हाहाकार मच गया था तब इन्होंने देखा कि बिना अन्न के क्या हो सकता है यह सोच बिचार कर १ले इन्हों ने इनारा खोदवाया जब इस से भी मनसा सिद्धि न हुई तब पोखरा खोदवाया पर इससे भी कुछ बिशेष लाभ न हुआ तब पुनःपुना नदी से सिकन्दरा खोदवाय तो इस से कुछ उस साल धान हो गया। पर बिधाता सिंह ने सोचा कि इस से कब तक काम चलेगा कोई ऐसी

युक्ति हो कि जिस मे बराबर चाहे बर्षा थोड़ा हो या बहुत पर धान हो। एक दिन अपने मन में बिचारा कि जैसे तलाव है उसी प्रकार के जो और कोई चीज़ बनाया जाय तो थोड़ा पानी बर्षने पर भी धान होगा, ऐसा अपने मन में ठीक ठाक कर फिर भी आस पास के लोगों को इकट्ठा कर अपनी अभिलाषा कह सुनाई इस पर सबों ने कहा कि यह बात बहुत ही भली होगी और इस काम को जहां तक जल्दी हो करना चाहिये। बिधाता सिंह ने कहा कि हां अब इस काम में देर करना ठीक नहीं। लोगों ने चन्दा किया एक प्रकार का गहरा खोदा गया नाम उसका अहरा रक्खा गया जब से यह काम हुआ कई एक बार अकाल पड़ा पर कुछ उन लोगों को इसका दुःख न हुआ इसके देखा देखी मगध देश में हर एक जगह अहरा बन गया। जिस से करोड़ों बीघा धरती सींची जाती है अंगरेज़ी नाहर के तुल्य कहे तो कुछ अचरज नहीं। इस काम को करने से बिधाता सिंह बड़ा नामी हो गया क्या राजा क्या प्रजा एक बारगी इसको चाहने लगे। यहां तक कि शाह जहां बादशाह ने चाहा था कि ये बुद्धिमान पुरुष मेरे यहां रहता तो बहुत अच्छा होता और बिधाता सिंह ने भी चाहा था कि वहां दरबार में जाकर रहूं। पर उसी समय औरंगजेब ने शाहजहां को क़ैद कर खुद बादशाह बन बैठा था इसी सबब वहां जाने से रुक गये। लोग कहते हैं औरंजेब ने भी इनको बुलाया था पर ये शिवाजी के हाल-क़ैद होने का सुनकर नहीं गये।

लोग कहते हैं कि पइन जो नदी से काटकर खंधा (बधार) में लगाया गया है वह भी इन्ही का निकाला है। इस के सिवाय इन्हों ने और भी एक बड़ा भारी काम किया जिस से आज तक लोग इन को बड़े चाव भाव से याद करते हैं। धान के खेत में (यह केवल किवाल वा केवाल मिट्टी में होता है) खेसारी, बूंट (चना) बोने की रीति इन्हीं ने निकाली है १ले जिस खेत में धान होता और कोई वस्तु नहीं बोई जाती थी पर इन्हीं ने तो जांच कर धान के खेत में मसूरी, केराव आदि बोने की भी रीति निकाली। इस से किसानों को बहुत कुछ लाभ हुआ अर्थात् जब धान पकता नहीं तभी उसी खेत में कुआर (आश्विन) में खेसारी, बूंट, मसूरी, केराव आदि जैसा जगह हुआ वैसा बोदेते हैं और पकने पर धाम काट कर एक फ़सल और भी काट लेते हैं और आननंद पूर्वक अपने परिश्रम से बचते हैं और एक के जगह दो फ़सल काटते हैं आज कल यह रीति बिहार के पटना आदि आस पास के शहरों में भली भांति से फैली है।

एक बार बिधाता सिंह ने लहसून के जावा को लेकर उसमें जव डाल के दस पांच जगह गाड़ दिया। कुछ दिन के बाद २रे प्रकार का पेड़ पत्ता रंग रूप गन्ध सब होगया। उसी को आज कल लोग गदेना कहते हैं और आज तक लहसून के जावा में जब गाड़ने से वह होजाता है अब तो गदेना का बीया से भी होता है इस प्रकार से दोनों तरह से लोग बोते हैं। इस देश वाले की राय है कि गदेना उत्प-

न्न १ले संसार में नहीं था पर बिधाता सिंह ने ही इसको अपनी उक्ति युक्ति से निकाली। यदि १ले यह नहीं हो औ-र किसी पुस्तकों में न पाई जाय तो यही इनके उत्पन्न कर-ने वाले हैं सब कोई इस बात को मानेंगे।

बिधाता सिंह बराबर शास्त्र के देखने में अपने समय को बिताते थे। ठीक है दो०— काव्य शास्त्र आनंद में, पंडित को दिन जात। मूरख के दिन निंद में, कलह कर-त उतपात" और नाना प्रकार के शास्त्रों के देख गये। और अच्छे २ कवियों से मुलाकात भी किये थे अर्थात् अपने स-मय में जिस २ को सुने कि अच्छा पंडित कवि हैं जा कर मुलाक़ात को। १ले इन्हों ने अनन्य कबि से मुलाकृत की और २ कवितें उनसे लिखवाये।

करम की नदी जामें भमर के भौंर परें लहरें मनोरथ की कोटिन गरत हैं। काम सोक मद महा मोह सो मगर तामें क्रोध सो फनिन्द जाको देवता डरत हैं॥ लोभ जल पू-रन अखंडित अनन्य भने देखौं वार पार ऐसो धीरना धर-त हैं। ज्ञान ब्रह्म सत्य जाके ज्ञानको जहाज साजि ऐसे भ-व सागर को बिरले तरत हैं॥ १॥ बैष्णव कहत बिष्णु बस-त बैकुण्ठ धाम शैव कहत शिवजू कैलास सुख भरे हैं। कहैं राधा बल्लभी बिहारी वृन्दाबन ही में रामानंदी कहैं राम अवधमें न टरे हैं॥ एतो सब देव एक देसिक अनन्य भने हम तुम सब आप ठौरन क्यों धरे हैं। चेतन अखंड जामें को-टि ब्रह्मण्ड उड़ें ऐसो परब्रह्म कहा पुरिन में परे हैं॥ २॥

बिन भेदन भेदन जानै कछू मति के अनुसार लही सो

लही। नहिं बेद पुरान की रीति कछू अनरीति की टेक नहीं सो गही। समुझायो नहीं समुझै गुरु को गुरु को अपमान लही सो लही। यह तामस ज्ञान अनन्य भनै पुनि मूरख गांठि गही सो गही॥ ३॥

फिर आदिल कबि, अबदुल रहिमान, आकूबखां कबि, अनवर खां, अजीत सिंह, इन्दुकबि, इन्द्रजीतत्रिपाठी, उदय नाथ, केशव राइ, कृष्ण कवि, कुन्दन कबि, काशी नाथ, कल्यान कबि, केवलराम, कनक कबि, गिरिधर कबि, गोपाल शरण, गोपाल दास, श्री गुरु गोबिन्द सिंह, गोबिन्द कबि, चन्द कबि, चिन्तामणि, जगत सिंह, जैदेवकबि, देबीराम, परसोतम कबि, बुढराव, बिहारी कबि, बाग्न कबि, बुधराम कबि, बैताल कबि, मोती राम, मीररुस्तम कबि, मति राम, मंडन कबि, रनछोर, रसिकबिहारी, राणा राजसिंह, लालकबि, लालबिहारी, शंभुकबि, श्री गोबिन्द कबि, सबलसिंह, सदासिब, हरिबंश मिश्र, आदि से बहुत छंद किये थे॥

बिधाता सिंह ने देशाटन भी अच्छी रीति से किया था और जैसा चहिये वैसा किया था अर्थात् ऊपर लिखे हुए कबियों द्वारा ऐसा कोई देश न था जहां यह सिपारिस द्वारा अच्छी रीति से काम न चलाये हों। पहले यह जिस देश में जाते थे वहां के राजा, कबि, पंडित, से मुलाक़ात कर दश पांच दिन रहकर वहां के चीज़ों से जानकार होते थे। बिशेष कर पहले ये पुस्तकालय देखते थे फिर उन पुस्तकों में कुछ लिखवाते कुछ पढ़ते थे। फिर देवालय, धर्म्म स-

म्बन्धी समाज, ईश्वराराधनस्थान, उस नगरका घेरा, कचहरी (विचारालय) प्राचीन खंडहर, पाठशाला, तर्कबितर्क, वक्तृता, राजमंदिर, बागीचा, शस्त्रालय, बाज़ार, खिलौना, घोड़दौड़, बाणचलाना, अखाड़ा, कवाइत, नाटक आदि को देखता था तथा मिलान करता था कि अमुक जगह से यह वस्तु यहां अधिक क्यों है। वहां यह वस्तु ऐसी होती थी यहां ऐसी क्यों तथा सब का हेतु भी मालूम करता था। यात्रा के समय में इन्हों ने अनेक देश और तीर्थ स्थान को भ्रमण किये और मत मतान्तर का व्यौरा भी भली भांति से जाना। यह अपना समय देशाटन में तो बहुत लगाया पर नई बातें भी इतनी सिखी जिसका वर्णन होने में बड़ा भारी ग्रंथ होगा॥

इसी प्रकार नाना देशों से घूमकर अपने गांव में पहुंच कर अनेक देशोंके अन्न, फल,फूल पेड़,तरकारी, लत्तर आदि लगाकर उन्नति करना चाहा और बहुत कुछ उन्नति कर भी चुके थे। बिधाता सिंह की इच्छा थी कि पुनपुना और दरधा के संगम पर एक मेला स्थापन करें क्योंकि कीकट देश में पुनपुना नदी पुनीत है और यहां पर दरधा मोरहर का संगम भी हुआ है और एक बांध भी किसी का बनवाया है। चैत रामनौमी और सतुआनी के कुछ लोग इकट्ठे भी होते हैं तो यहां ऐसा प्रबंध करना चाहिये जिस से एक भारी मेला लग जाय और मैं यहां संगम पर (कोलो, कमरजी, जमालपुर, पालाकी, शाहलादपुर, ये पांचों गांव त्रिमुहानी पर है) बिधातेश्वर नाम एक देवी

का देव महा देव को थापित करें तो बहुत अच्छा हो पर बिना ऐक्यता के यह होना असंभव है। ऐसा सोचबिचार कर बहुत लोगों को बुलाया और कहा कि भाई संसार में जो काम दश पांच की राय से होती है वह बहुत दृढ़ होती है इसके सिवाय ऐक्यता एक ऐसी वस्तु है जिस से जो कुछ चाहिये वह हो सकता है यह तो बहुत छोटी सी बात है। इस बात को सुनकर सभों ने स्वीकार किया और मेला का प्रबंध किया तब से बराबर रामनवमी और सतुआनी को मेला लगने लगा इस मेले में घोड़ा, बैल आदि सब वस्तु बिकता था और बिधाता सिंह के जन्म भर यह मेला भली भांति लगगया था*। पर कईएक कारणों से शिवका स्थापन न हुआ।

* यह मेला १८२५ ई० में उखड़ गया और आज तक फिर नहीं लगा। इस मेला के टूटने का हेतु यह है कि इसका स्थापण करता बाबू बिधाता सिंह तारणपुर के थे और तारणपुर, लखनपार ककुअड़ा के नरवरिया राजपूत इस के हिफ़ाज़त करते थे १८२५ ई० में सतुआनी में मेला लगा और नाच हो रहा था कि इस में कोली के राजपूतों (प्रतिष्ठानपुरी बैश्य) और फतहपुर के राजपुतों (कुंभी) से झगड़ा हुआ इस पर फतहपुर वाले कोली वाले को लड़ाई में हटाये यह सब दोहाई नरवरिया के दोहाई नरवरिया को दे कर तारणपुर वाले के शरणागत हुये इस पर लखनपार, तारणपुर और ककुअड़ा के नरवरिया लोगों ने इसकी सहायता की इस पर लड़ाई प्रंभ गई पर लोगों के

एक बार पन्मार नाम गांव जो तारणपुर से कोस भर पच्छिम है वहां पर एक मुसलमान ने एक सांढ़ को धर कर बकरीद में मारना चाहा था बिधाता सिंह ने जाकर भय प्रीति के साथ छोड़ा लाये यदि बिधाता सिंह न रहते तो हज़ारों सिर इस सांढ़ के लिये गिरते॥

इस प्रांत में विधातासिंह बड़े नामी थे और तहसील या वसूल जो कुछ होता था सब इन्हीं के जड़िये से एकबार तहसीलदार ने आकर बाबू बिधातासिंह को तलाश किया पर उस समय नहीं थे इसलिये इन के लड़के और भतीजे कन्हू सिंह और माया सिंह को धरकर ले गया। जब यह खबर बाबू बिधाता सिंह को मालूम हुआ तो तहसीलदार के पास गये पर तहसीलदार ने बहुत कुछ जोर जुल्म करना चाहा बिधाता सिंह बहुत लाचार हो कर बिगड़े और कहा कि नाहक इस मेले में हमलोगों का प्राण जाता अथवा दूसरे के प्राण लेते इसलिये ऐसा प्रबन्ध करे कि अब से मेला में हम लोग न जांय और जांयगे तो अवश्य हम लोगों को कभी न कभी लड़ाई में भिड़ना पड़ेगा। दरगाही सिंह नाम के एक चची ने कहा कि अवश्य यह मेला झगड़ा का मूल है। निदान उसी दिन से यह मेला उखड़ गया। और बिधातासिंह का करतव्य का फल इन दुष्टों ने एक बारगी धो डाला। यह मेला अब भी जो लगाया जाय तो बहुत रमणीय हो। पुनःपुना और मोरहर के संगम देखने लाइक मैदान में है और क्या स्वच्छजल वहां पर है॥

अनेक मुसलमानों को मार कर आप भी मारे गये। इनकी बहादुरी देखकर सूबेदार ने कहा कि ऐसे जो चार आदमी मेरे पास रहते तो हज़ार आदमी का काम न रहता और बहुत पछतावा किया कि इनके लड़के और भतीजे को छोड़ दिया और २०० गांव बहादुरी देख कर देता था पर लोग न लिये। बिधाता सिंह के मरने पर एकबारगी हाहाकार मचगया यह बिचारे पुनपुना मोरहरके सङ्गम पर सम्बत् १७८८ में मारे गये। बिधाता सिंह सामयिक कवि भी अच्छे थे। कई एक दोहे उन के यहां पर लिखे जाते हैं।

दोहा।

मूरख सों कछु पूछिये, उत्तर देहैं काह।
क्रोध बिबस दुर्बाद कहि, सुजन हृदै को दाह॥ १॥
भांग पियत दारू पियत, अरु जो शास्त्र बिहीन।
प्रश्नोत्तर नहिं पाय कर, गारी सुनहिं प्रवीन॥ २॥
पण्डित मूरख प्रश्न तें, समुझि परत हैं भीत।
कोमल बचन सुनाय इक, एक कहत बिपरीत॥ ३॥
प्रश्नोत्तर जब बनत, नहिं दुष्टन सो सुन भाय।
कहीं गंवार तिन्ह विप्र कों, मन में अति हर्षाय॥ ४॥
लाज न लागत निन्द कहिं, बोलत सबहिं गंवार।
याते कवि बुध कहहिं तिहिं, मद्यपि हृदय बिचार॥ ५॥
प्रथम पढ़हु विद्या सकल, और करहु कछु ध्यान।
कृषि कर्म बानिज में हो सब सजग सुजान॥ ६॥

दिवान झब्बू लाल का जीवन चरित्र।

इनका जनम सन् ११६२ फसली अर्थात् १७५७ई० में हुआ था। इनके बाप का नाम लाला साहो राम दास था। इनकी जन्मभूमि ज़िला सारन परगना कसमर में एक मौज़ा नया गांव है। यह गांव हरिहरक्षेत्र अर्थात् सोन पुर से ३ कोस पच्छिम महीनदी के किनारे पर बसा है। अक्सर दूर वाले इस गांव को नयागांव डुमरी कहते हैं। दिवान झब्बू लाल के जीवन चरित्र के १ले इस बात को जान लेना भी अवश्य है कि इस गांव का नाम नया गांव क्यों पड़ा। राजपूतों में एक जाति शरनिहा बोले जाते हैं और उनके शर निहा बोले जाने का यह कारण है कि जब से उन लोगों ने सारन को जीता तब से शरनिहा कहलाते हैं १ले ये लोग करमवार कहलाते थे। ये लोग डुमरी में रहते हैं इसी लिये उस गांव का नाम सरनिहा डुमरी भी हैं क्योंकि डुमरी कई एक है एक तो बांकीपुर से ४ कोस दक्खिन है और २रा छपरा से ५ कोस पूरब है ३रा एक जगदीशपुर के आस पास में है डुमरी के पास १ले यही एक गांव बसा और उसके आस पास में कोई गांव नहीं था इसलिये लोग नया गांव कहने लगे बस यही कहाते२ नया गांव नाम पड़ गया। यहां लाला साहो रामदास अपनी वृत्ति अर्थात् पट वारीगिरी से काल क्षेप करते थे। समयानुसार झब्बू लाल को फ़ारसी अरबी पढ़ाना शुरू किया। झब्बूलाल लिखने पढ़ने में बहुत निपुण हुए "कुल सपूत जानो परो, लखि

सब लक्षण गात। होनहार बिरवानकी, होत चीकने पात” इस कहावत के अनुसार इन का भविष्यत में होना सब किसी के दृष्टि में बैठ गया। फारसी अरबी पढ़ने के बाद संस्कृत भी कुछ पढ़ लिये। और भाषा में काव्य भी करने लगे आज तक इन को बनाई होली लोग गाते है।

इन की चतुराई से बेतिया का राज्य राजा बीरकेश्वर-सिंह बहादुर को हाथ लगा इसी लिये इन को राजा ने अपने यहां की दीवानगीरी का काम दिया और कहा कि यह राज्य मेरे सन्तानों के अधिकार में रहेगा और दीवानगीरी का काम आप के सन्तानों में रहेगा और यही बात यथार्थ में आज तक बेतिया वाले मानते हैं। दीवान झव्वू लाल ने बेतिया के राज्य को बहुत बढ़ाये और स्वामी भक्ति से प्रत्येक कामों में बहुत उन्नति की इसलिये यह बड़े नामी हुए। ये सदा कामों में तत्पर रहते थे यह हाल देख कर राजा बीरकेश्वर सिंह भी उन पर बहुत प्रसन्न हुए और जी जान से मानने लगे।

दीवान झव्वूलाल बेतिया में बड़ा दान करते थे इस से और भी नाम फैल गया सच है “ज्यों ज्यों द्रव्य लुटाई, त्यों त्यों जस बिस्तार” और नया गांव में एक बहुत बड़ा सदा-वर्त्त भी था। इस में दीवान झव्वूलाल २४०००, रु० साल देते थे। दीवान झव्वूलाल ने अपने बेतन को दान के सिवाय और बहुत सोच समझ कर खर्च करते थे यहां तक कि धीरे धीरे ८४०००, रु० को आमदनीकी जगह खरीद ली। और कभी एक पैसा भी किसी से अकोड़ (घुस) नहीं ली

और प्रजाओं को भी पुत्र से अधिक मानते थे और कहते थे कि देखो यह सब विद्या का फल है कि मैं ऐसा हो गया ठीक विद्या ऐसाही रत्न है। कवियों ने विद्या की बहुत कुछ बड़ाई की है।

विद्या की प्रशंसा।

दोहा।

पुच्छ सींग बिनु सोइ पशु, जो नर विद्याहीन।
तृण न चरै पशु भागसे, यह विधि चरित प्रवीन॥ १॥
जाके विद्या दान तप, धर्म शील नहिं ज्ञान।
सो नर धरती भार है, घूमत मृगा समान॥ २॥
बनचर पशु को साथ भल, बन पहाड़ में जाय।
नहिं मूरख के सङ्ग सुख, स्वर्ग सदृश गृह पाय॥ ३॥
आहार नींद मैथुन बिषै, मनुज पशुन सम जान।
मनुजहि प्रभु अधिकहि दियो, विद्याफल वर ज्ञान॥ ४॥
जो नर या क्षिति पर रहत, बुधि विद्या कर दीन।
उनको सुजन समाज में, गिनत पशुन से हीन॥ ५॥
जीवन शून्य अविद्य को, बन्धुहीन दिशि शून्य।
बिनु सुत को सूनो सदन, दारिद को सब शून्य॥ ७॥
गुण बिनु सुन्दरता गई, विद्या बिना बिबेक।
भोग धर्म बिनु धन गयो, शील बिना कुल टेक॥ ८॥
विद्या सम नहिं मित्र जग, शत्रु मूर्खता जान।
स्नेहपात्र नहिं पुत्र सम, दैवो धन बलवान॥ ९॥
नहिं विद्या सम चक्षु वर, नहिं सत सम तप कोइ।
नहिंन राग सम दुख जगत, सुख न त्याग सम कोइ॥ १०

मान महो मर्याद जग, यौवन रूप अनूप।
भजन बिना भूषित नमत, लङ्क भूप अनुरूप ॥ ११ ॥
रूप जग्यो यौवन जनम, बड़े बंश सबिलास।
विद्या भजन सुसन्धि बिनु, कुसुमनि गन्ध पलास ॥ १२ ॥
विद्या भजन बिवेक बिनु, कहा भयो बर बंस।
विद्या सजन प्रभाव तें, होत कुबंश प्रशंस ॥ १३ ॥
विद्या सोई सरस है, जहं बितपत्ति विवेक।
सो विवेक रघुनाथ को, भजन प्रभाव अनेक ॥ १४ ॥
धन विहीन जन हीन नहिं, धन काके थिर होइ।
बिद्या भजन विहीन मति, हीन जानिये सोइ ॥ १५ ॥
गुण तें गुरुता बंश को, मन गुणि लीजे राम।
पूजैं सब बसुदेव को, बासुदेव के नाम ॥ १६ ॥
कविता नृपता दुहुन में, देखो बड़ो विशेष।
नृपता नृप के देश में, कविता देश विदेस ॥ १७ ॥
रसही रस जल बुन्द घट, पूरण जौन प्रकार।
त्योंहीं विद्या धर्म धन, बाढ़त लगे न बार ॥ १८ ॥

सवैया।

शब्द सुधामृत मे परिपूरण, शास्त्र मनोहर वाक्य पढ़ावे।
ज्ञान बिचार करैं निशिवासर, जो वह निर्धन ह्वै दुख पावे।
सो जड़ता नृप को कहिये, जेहि राज बसे न गुनो गुनगावे
खोटनहींमणिकोजानहीं, मणिकोपरखेंसोईमूढ़कहावे ॥ १९
विद्या समान नहीं जगमें धन, दूसर राज धनादि बखाना।
दानदिये अधिकाय सदा, जगतीतलबीच विचित्र खजाना।
चौर हरे न बटे न हटे, कछु काम परे तो करे बल नाना।

कोकवि पार लहेउपमा, जोकरै सब भांतिसदा कल्याना २०

दोहा। नहिं धनके रोके रुकैं, जोबुध शास्त्र निधान।
कमल नाल के तागतें, बंधेन गज बलवान॥ २१॥
कमलन के बनबीच ज्यों, हंसन को सुख होय।
कोपि देव वह लेइ हरि, तौनहिं संशय कोय॥ २२॥
नीर छीर बिलगावनो, कीरति बिमल प्रधान।
ताको कोउनहिं हरिसकै, यह निश्चय करि जान॥ २३॥
तिमि बुधको मनमानकरि, बहुधन देइन देइ।
बिद्या जनित प्रमोद मुख, नहिं कोऊ हरिलेइ॥ ४॥

सवैया।

शोभान देइ बिजायट बाहु में, हारहु चन्द्र समान सजाये।
फूल की माला बनाइ लसै, तन धोयकै चन्दन स्वच्छ लगाये।
पानहु खाय सुबस्त्र धरैं, भल सूंघै सुगन्धहु बार बढ़ाये।
बाग बिभूषणहीन न सोहत, सारं अलंक्रत जात नसाये २५

छप्पै।

बिद्या नरको रूप, भूपआदर सरसावै।
बिद्या धनअति गुप्त, आप को आप रखावै॥
बिद्या गुरू महान, भोग सुख करत परमहित।
बिद्या देश बिदेश, बीच में होत मातु पित।
बिद्या इष्ट समान है, सदा देह रक्षा करत।
बिद्या रत्न बिहीननर, धरती में पशु सम चरत। २६।

सवैया।

जाके छमा तेहि ढालनचाहिये, क्रोध रहै तो न शत्रु को कामा।
जाके कुजाति समीप बसै, नहिं आगको काम सोई दुख धामा।

औषध काज नहीं जो सुमित्रहु, दुर्जन हो सोइ सर्प्प के ठामा ।
शीलभयेतोनभूखणकारज,राजहुक्याजोसुविद्याभिरामा।२७।
दोहा । अन्ध पंगु कुबर बहिर, अरु गूंगा सुत होउ ।
मूरख पुत्र न देय बिधि, यह मत शास्त्र निचोउ । २८ ।

चौपाई ।

फल बिनु वृक्ष पुत्र बिनु नारी ।
धेनु दूध बिनु होत खुआरी ।
तिमि सुरूप उत्तम कुल जाता ।
विद्या हीन न सोहत गाता । २९ ।

दोहा ।

विद्या युत सुबरण सदृश, जहां जाय तहां मान ।
मूर्ख दुखी निज नगर महं, चह रह देश बिरान । ३० ।

श्लोक ।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते
कांतेव चाभिरमयत्यपनीय दुःखम् ।
कीर्त्तिंश्च दिक्षु बितनोति तनोति लक्ष्मीः
किञ्चिन्न साधयति कल्प लतेव विद्या । ३१ ।

अर्थ ।

अर्थात् विद्या माता के समान रक्षा करती है और पिता के समान हित में लगाती है और स्त्री के समान आनंद देती और दुःख को दूर करती है और चारों दिशाओं में कीर्ति को बढ़ाती है और लक्ष्मी का बिस्तार करती है यह विद्या कल्पलता के समान क्या क्या नहीं देती । अर्थात् सब पदार्थ को सिद्ध कर सक्ती है ॥

दोहा। विद्या पढ़िये चित्त दे, विद्या से धन धाम।
गौरवता जग में लहै, सुख कीरति अरु नाम। ३२।
सुख चाहै विद्या पढ़े, विद्या है सुख हेतु।
भवसागर के तरन को, विद्या है दृढ़ सेतु। ३३।
विद्या धन सम और नहिं, जग में कहत सुजान।
विद्या ही से मनुज लघु, होवे भूप समान। ३४।
द्रव्यवान अरु भूमि पति, लहै मान निज गांउ।
देखो विद्यावान नर, मान लहै सब ठांउ। ३५।
चोर न चोरी कर सके, नहीं नृपति के साध।
बन्धु भाग नहिं ले सके, विद्या धन निर्बाध। ३६।
लघु जन ह्वं संसार में, गाये जात सुजान।
विद्या से जहं तहं सदा, पावत हैं सम्मान। ३७।
अनायास जो धन चहैं, सब तजि विद्या सीख।
नहीं दीन ह्वै जगत में, मांगत फिरि हैं भीख। ३८।
विद्या ही से पाइये, बड़े बड़े अधिकार।
लोक और परलोक में, सब सुख यह निरधार। ३९।
विद्या है निर्मल सुयश, है पुनि परम सुबन्धु।
विद्या है पर दैव अरु, विद्या है सुख सिन्धु। ४०।
विद्या उत्तम द्रव्य है, विद्या धनद निकेत।
परम मित्र विद्या भनो, विद्या करत सुचेत। ४१।
भाग हीन नर को परम, आश्रय विद्या जान।
विद्या से संसार में, गुरु पद लहै समान। ४२।
युवा वृद्ध वय में मनुज, सुख चाहै अधिकाइ।
विद्या धन संचय करै, बालक पन से जाइ। ४३।

उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पै होय।
परो अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय॥ ४४॥
तजकै सब ही काम को, धरु विद्या में ध्यान।
विद्या तें नर जग लहै, विषद कीर्ति धनधान॥ ४५
नहिं धन धन है बुध कहैं, विद्या वित्त अनूप।
चोरि सकै नहि चोरऊ, छोरि सकै नहिं भूप॥ ४६
विद्या मिलवै भूपतिहि, सरिता सिन्धु समान।
तापर अपनो भाग फल, भोग करै मतिमान॥ ४७
सर्ब दर्ब तें दर्ब अति, विद्या दर्ब अनूप।
धन देनो खरचत अछय, अर्चत ज्ञाते भूप॥ ४८
विद्या विनयहि देति है, बिनय ख्याति अनुकूल।
ख्याति भये धन धरम सुख, ताते विद्या मूल॥ ४९
रूप प्रतिष्ठा सुयश धन, भोग योग नृप गेह।
बन्धु मित्र सब करति है, विद्या हरि पद नेह॥ ५०
संसय हरै अनेकधा, अनदरसो दरसन्त।
सब को विद्या नैन जेहि, नहिं तेहि अन्ध कहन्त॥ ५१
विद्या बिनु सोहै नहिं, छबि यौबन कुल मूल।
रहित सुगन्ध सजै न बन, जैसे सेमर फूल॥ ५२

कुण्डलिया।

विद्या जन को रूप है, गुप्त महाधन सोय।
अर्थ भोग यश सुख सदा, याते अद्भुत होय॥
याते अद्भुत होय, विदेशहुं मान करावै।
गुरुओं को भी गुरू, भलो विद्या जेहि आवै॥
कहै बिहारी विप्र, बड़ो आदर दे विद्या।

नृप पहं धन नहिं पूजा, पूजा आवै जेहि विद्या ॥ ५३

माता सम रच्छा करति, पिता तुल्य उपदेश।
प्यारी इव सुख देयकै, नाशति सकल कलेश ॥
नाशति सकल कलेश, देश मों यश फैलावै।
धन जन धाम धरासब, सहजहिं आनि मिलावैं।
कहै बिहारी बिप्र, कौन असि बस्तु पाता।
कल्प वृच्छ इव जाके पास, अहै यह बिद्या माता। ५४।

बिद्या सम अरु धन नहीं, एहि जग दूजो कोय।
जाके सीखेते सदा, बड़ो उन्नती होय।
बड़ो उन्नती होय, चोर न चुरावहि जाको।
भाई सकैन बांटि, नृपहु ले सकै न जाको।
कहैं बिहारी बिप्र, क्षिप्र राजा हु मिलावति बिद्या।
वा जन को जा पास, अहै यह गुन बर बिद्या। ५५।

गुन दुइ हैं संसार मों, शास्त्र तथा इक शस्त्र।
वृद्ध अवस्था होत जब, नष्ट होय गुण अस्त्र॥
नष्ट होय गुण अस्त्र, हंसहिं सब लोग बीर पर।
देत बिनय बिद्या अरु, होत वृद्ध करमान अधिक तर।
कहै बिहारी बिप्र, योग्य जन ह्वै लहि यह गुन।
पावहिं धन सुख धर्म, अहै जाको बिद्या गुन॥ ५६॥

दान तपस्या सूरता, बिद्या अरु बहु अर्थ।
जो नर नहि पैदाकियो, जनम्यो जग मो व्यर्थ।
जनम्यो जग मों व्यर्थ, यज्ञ जिन्ह नाही कीन्हा।
क्षमा धीरता सत्य, ज्ञान तप काहु न चीन्हा।
कहै बिहारी बिप्र, आठ यह धर्म बखाना।

छमा आदि षट, लोभ हानि अरु सुंदर दाना ॥ ५७ ॥

श्लोक ।

सुकुले योजयेत् कन्यां पुत्रं विद्या सुयोजयेत् ।
व्यसने योजयेच्छत्रु मिष्टं धर्मेण योजयेत् ॥ ५८ ॥

दोहा ।

कन्या सत कुल ब्याहिये, विद्या सुतहि पढ़ाइ ।
शत्रुहि पीड़ै मित्र कहं, धर्महि देइ लगाइ । ५९ ।

श्लोक ।

रूप यौवन सम्पन्ना विशाल कुल सम्भवा: ।
विद्या हीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका ॥ ६० ॥

सोरठा ।

विद्या बिन कुल मान, यदपि रूप यौवन सहित ।
सुमन पलास समान, सोह न सौरभ के बिना । ६१ ।

श्लोक ।

एकेनापि सुपुत्रेण विद्या युक्ते न साधुना ।
आल्हादितं कुलं सर्वं, यथा चंद्रेण शर्वरी ॥ ६२ ॥

सोरठा ।

एकहु सुत जो होय, विद्या जुत औ साधु चित ।
आनन्दित कुल सोय, यथा चन्द्रमा से निशा ॥ ६३

श्लोक ।

कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी ।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम् ॥ ६४

दोहा । बिन औसरहू देत फल, कामधेनु सम नित्त ।
मातासी परदेश में, विद्या संचित वित्त ॥ ६५

श्लोक।

विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥ ६६

दोहा।

विद्या मित्र विदेस में, घर तिय मीत सप्रीत।
रोगिहि औषध अरु मरे, धर्म होत है मीत॥ ६७

श्लोक।

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुघा धेनुः सन्तोषो नन्दनं वनम्॥ ६८

दोहा।

तृष्णा वैतरणी नदी, जमस्वरूप है रोख।
कामधेनु विद्या अहै, नन्दनबन सन्तोख॥ ६९

श्लोक।

गुणो भूषयते रूपं, शीलं भूषयते कुलम्।
सिद्धि भूषयते विद्यां भोगो भूषयते धनम्॥ ७०॥

दोहा।

रूपहि गुण भूषित करे, कुल कर सील प्रकास।
विद्या भूषित सिद्धि करि, धन लहि भोग विलास॥ ७१॥

श्लोक।

किं कुलेन विशालेन विद्याहीनेन देहिनाम्।
दुष्कुलं चापि विदुषो देवैरपि सुपूज्यते। ७२।

दोहा।

विद्या हीन विशालहू, कुल मनुजन केहि काज।
दुष्ट कुलहु विद्वान को, पूजित देव समाज॥ ७३॥

श्लोक ।

विद्वान् प्रशस्यते लोके विद्वान् सर्वत्र गौरवम् ।
विद्यया लभते सर्वं विद्या सर्वत्र पूज्यते ॥ ७४ ॥

दोहा ।

विदुष प्रसंसित होत जग, सब थल गौरव पाय ।
विद्या से सब मिलत है, सब थल सोइ पुजाय ॥ ७५ ॥

श्लोक ।

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्या हीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ ७६ ॥

दोहा ।

रूपि यौवन सम्पन्न हूं, जनित कुलहु अनुकूल ।
सोहुन विद्य बिनु रहित, गन्धटेसु जिमि फूल ॥ ७७ ॥

श्लोक ।

धन हीनो न हीन श्च धनिकः स सुनिश्चयः ।
विद्या रत्नेन यो हीनः सहीनः सर्व वस्तुषु ॥ ७८ ॥

दोहा ।

हीन नहीं धन हीन है, निश्चय सो धन मान ।
विद्या रत्न बिहीन जो, सकल हीन तेहिजान ॥ ७९ ॥

श्लोक ।

येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न गुणो न धर्म्मः ।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥ ८० ॥

दोहा ।

धर्मसील गुण नाहि जेहि, नहि विद्या तप दान ।
मनुज रूप भुवभार तेहि विचरत मृग करिजान ॥ ८१ ॥

श्लोक।

लोभश्चे दगुणेन किं पिसुनता यद्यस्ति किं पातकैः।
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।
सौजन्यं यदि किं गुणैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः।
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना॥ ८२

सवैया।

लोभ तवै कस ऐगुन आनदुजो कस पाप जबैलुतराई !
सत्य रहै तपते तब कामन शुद्ध वृथा तब तीरथ जाई॥
सील हुई फिरिका गुणऔर कहाभिन भूषन जो महिताई।
बेद भयो धनते तबका मृतु कौन जबै अप कीरतिछाई॥८३॥

दोहा।

विद्या मित्र बिदेस में, घर में नारी मित्र।
रोगिहि औषधमित्र है, मरे धर्म है मित्र॥ ८४॥

ये अपने ज़ात के लोगों का बहुत आदर मान करते थे। कहते हैं कि नया गांव इनके साथ कोई चार सौ से ऊपर भाई खाते पीते थे एक दिन खाने के समय एक भाई छूट गया। यह खबर सुनकर दीवान झब्बूलाल ने आज्ञा दी कि आज से खाने के समय ढिंढोरा बजाया जाय जिस से सब लोग इकट्ठे हो जांय। उस दिन से खाने के समय में बराबर ढिंढोरा बजाया जाता था॥

एक दिन एक श्री वास्तव कायस्थ मुनशी बिरजा सिंह खास इन्हीं के बिरादरी भाई ने क्रोध होकर इनके घर में आग लगा दी और कहा कि इनको अन्न धन रहकर क्या होगा जो हमारे घर के सभी लोग खाने पहनने को दुख पा

ती है। यह बात देख कर दीवान झब्बू लाल के नौकर चाकर उनको मारने के लिये तयार हुए। यह सुनकर दिवान झब्बू लाल ने रोका और मुन्शी बिराजा सिंह को बुला कर समझाया और ३० मन अनाज देकर बिदा किया। इसी एक बात से समझना चाहिये कि ये अपने परिवार पर कैसा स्नेह रखते थे। और क्रोध तो इनके शरीर में छू ही नहीं गया था।

ठीक ही है 'सज्जन हैं सुअंबतरु' सरस सदा रस हेत।
ये इतने पाहन हनें, वे उतने फल देत॥

इस समाचार को सुनकर कई एक आदमियों ने दिवान झब्बू लाल से कहा कि आप ने अच्छा नहीं किया जो इस दुष्ट को दण्ड नहीं दिया। इस पर इन्हों ने कहा कि मुन्शी बिरजा सिंह ने आग लगा दी अच्छा किया जिस से सदा इस बात को हमें ध्यान रहे कि जिस में कोई भाई को दुःख न हो और अपने कुल को क्लेश कभी नहीं देना चाहिये।

ठीक है।

"कुल क्लेश ते जगत में, सुखी भयो ना कोइ।
करो बिरोध सुग्रीव सों, गयो बालि जिमि खोय। १।
कुल क्लेश ते निशि दिना, सदा मानिये शंक।
तनक बिभीषण के कलह, छन में टूटी लंक। २।"

एक दिन किसी ब्राह्मण ने आकर कहा कि दीवान जी मेरी लड़की का ब्याह है। कृपा कर ५) रुपया आप देते तो बहुत कुछ काम चलता। इस बात को सुनकर दीवान झब्बू लाल ने पूछा कि आप की लड़की के ब्याह में कितना

रुपया खर्च लगेगा उसने कहा कि पृथ्वी नाथ कोई ७००, रु० लगेंगे। इन्हों ने हर्ष पूर्वक एक कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिया कि अमुक ब्राह्मण को ७००, रु० लड़की के ब्याह में दिया गया और तुरंत दिलवा दिया॥

दीवान झब्बू लाल ने श्री जगन्नाथ, गया, काशी, प्रयाग आदि तीर्थों में बहुत रुपया जमा कर दिया है जिनके ब्याज से आज तक वहां इनके नाम से भोग लगता है। एक आम का बाग इनका लगवाया ज़िला चम्पारन थाना केश्रिया हुसैनी गांव में लक्खा बाग नाम का है। उसका फल जिसको इच्छा होता है खाता है कुछ रोक टोक नहीं है और यह बाग़ खासकर इसी काम के लिये लगाया गया था।

ये शारीरिक नियम भी बहुत रखते थे जिससे सर्वदा आरोग्यता से भी रहे अर्थात् नित्य ही प्रातःकाल जल पीते थे और मध्यान में तक्र और सांझ को दूध पीते थे। और शराब को बहुत बुरा जानते थे यहां तक इस के छोड़ाने के लिये अनेक बार पंचाइतो की थी और इनके समय में बहुत से श्री वास्तव कायस्थों ने शराब पीना छोड़ भी दिया था॥

इतना धन होने पर भी यह अपने हाथ से रोटी बनाते थे और उसी को अपने काम में लाते थे। एक दिन एक आदमी ने पूछा कि दीवान जी आप के अनेक रुपये तो इधर उधर खर्च होते हैं क्यों आप अपने हाथ से इतना दुख सहकर रोटी बनाते हैं। इस पर इन्हों ने कहा कि भाई

इसमें कुछ हानि नहीं बल्कि बहुत कुछ लाभ है क्योंकि जब हम ऐसा न करेंगे तो और गांव के भाई न करेंगे और यदि कोई आदमी करेगा भी तो लोग हंसेंगे कि यह गरीबता से करता है और मुझे यह बात कोई न कहेगा देखिये औरंगज़ेब बादशाह अपने हाथ हाथ से कुरान लिख कर और टोपी सीकर बेचता था कहिये जब उसका यह हाल था तो मेरी गिनती कौन है।

ये उदार पुरुष अनेक बाग़ बग़ीचा लगवाये और कई एक तलाव, बावली, इन्दारे आदि सड़कों पर खुदवाये थे। जिसे राहियों को आराम हो।

ये सन् १२४४, अर्थात् १८१७ ई० में परलोक को सिधारे इनका काम बड़े धूमधाम से हुआ था। ज़िले शारन और चम्पारन में ऐसा बिरला हो कोई होगा। जिसने इनका नाम और काम न सुना हो। साधुओं के स्थान और राज धानियों में सर्वत्र इनका नाम फैला है। और मालूम होता है कि आज भी यह जीते हैं। ठीक ही है।

'प्रगट रहत या जग बिषे, जब लग नर को नाम।
तब लगि वह स्वर्गहि बसे, सुनत अप्सरा गान॥,,

श्रीमन् महाराजकुमार बाबू शिवप्रकाश सिंह देव बहादुर का जीवन चरित्र।

इनकी जन्म भूमि ज़िला शाहाबाद (आरा) परगना भोजपुर राजधानी डुमरांव में हैं इन के जीवन चरित्र के

पहले यह बात जान लेना अवश्य है कि इस गांव का नाम डुमरांव क्यों पड़ा ? लोग अनुमान करते हैं कि पहले यहां डोमों का राजा था इस लिये इस गांव का नाम डुमरांव पड़ा अब उसी का अपभ्रंश डुमरांव हो गया। मेरी समझ में डुमरेज़ीन नाम एक सती का स्थान है इसी से शायद इस गांव का नाम डुमरांव पड़ा और आज तक लोग डुमरेज़ीन को पूजते भी हैं जो हो पुराने कागज़ों में इस राजधानी (डुमरांव) का नाम होरिल नगर भी लिखा है। इस नगर को होरिलसाह जब से आबाद किया तब से होरिलनगर नाम पड़ा यह बात महाराज कुमार बाबू बाल गोबिन्द सिंह क्रत "लग्नसारिणी,, में लिखा है। इन का जन्म १७८७ ई० में हुआ था ये महाराज जयप्रकाश सिंह बहादुर के सहोदर भ्राता थे। बड़े चमत्कार पुरुष हो गये हैं। संस्क्रत और भाषा भली भांति जानते थे प्रथम जब ये डुमरांव में रहते थे तब "सतसंग बिलास,, "लीला रस तरंगिणी,, "भागवत तत्वभास्कर,, "वेदस्तुति की टीका" "उपदेशप्रवाह" इन ग्रन्थों को रच कर वैराग्य का संचार होने पर घरबार त्याग कर काशी में जाकर श्री गोस्वामी तुलसीदास क्रत बिनय पत्रिका की टीका राम तत्वबोधिनी' अति ही मनोहर बनाये और जब तक जीते रहे तब तक सर्बदा परपिकार में लगे रहे अन्त समय में २५०००) रु० देशोपकारी कामों में लगाने के लिये गवर्न्मेंन्ट को दिये उसी रुपये से गवर्न्मेंन्ट ने बाराणसी बरूणा का पुल बनवाया। इसी प्रकार से बिल्कुल द्रब्य को खर्च किया॥

महाराज जानकी प्रसाद सिंह बहादुर के मरने पर इनके पुत्र बाबू रामेश्वर बक्स सिंह और महेश्वर बक्स सिंह से राज्य के लिये बखेड़ा हुआ और किसी प्रकार से न मिटती उक्त महाशय आकर महेश्वर बक्स सिंह को राज्य दिया॥

इनके समय में इनकी बनाई हुई पुस्तकें ऐसी ख्यात हुई कि दूर दूर के लोगों ने आकर लिखवाने लगे यथार्थ में इनकी बनाई हुई पुस्तकें बहुत अच्छी हैं। ये महाशय १८४६ ई० फागुन कृष्णाष्टमी चंद्रवार को काशी में सुर लोक सिधारे।

राय शाह बाबू बनवारी लाल बहादुर का जीवन चरित्र।

इनके बाप का नाम किसुन प्रसाद शाह था। जात के अगरवाले बनियां थे। पटना बखशी महल्ला में इनकी जन्म भूमि थी। किसी कारण से बनवारी लाल छपरा दौलतगंज में जाकर रहने लगे। १८५६ ई० में एक खैराती असपताल रोगियों के हित के लिये बनवाये। इस असपताल में जितने रोगी आते हैं बिलकुल दवा खैराती पाते हैं और खाने को भी मिलता है। इस असपताल का लागत १००००) रु० है। और १८६८ ई० में एक सराय २ लाख रुपये लगाकर बनवायी उस सराय में अब तक सदावर्त दिया जाता है। सराय के समीप एक तालाब ८००००) रु० लगाकर बनवाये। इस सराय आदि के लिये १०२७२६)

रु० सरकार अङ्गरेज़ बहादुर के यहां जमा कराये हैं इसी रुपये के सूद मे खर्च चलता है। एक पुल २५०००) रु० लगाकर बनवाये हैं। १८५७ ई० में जब भोजपुर में श्री मन्महाराज कुमार पम्मार वंशावतंश जगदीशपुराधीश कुंअरसिंह बहादुर और अमर सिंह बहादुर बिगड़े थे तो इन्होंने सरकार अंगरेज़ को रसत दिया था उसी खैरखाही के बदले १८७१ ई० में राय बहादुरी का खिताब पाया। यह उदार पुरुष १८७३ ई० में निस्संतान मरा और बाकी धन अंगरेज़ बहादुर को हाथ लगा। यह बनियों में बड़े नामी आदमी गिने गये। सच ही है बनियों के लिये बहादुरी का खिताब मिलना क्या थोड़ी बात है ये बिचारे यह पद अपने समय में पाये।



महाराज राम कृष्ण सिंह देव बहादुर का जीवन चरित।

इनकी जन्म भूमिसारन में एक गांवरूसी है। इनके पिता का नाम बाबू कैलाश पति सिंह था। और ये जात के एकसरिया बाभन थे। इन के जीवनचरित्र के १ले यह बात जान लेना बहुत जरूर है कि ये एकसरिया बाभन क्यों कहलाते हैं। लोग कहते है कि पण्डित बर जगन्नाथ दिक्षित नामक एक ब्राह्मण कन्नौज से आकर एकसार गांव में (यह गांव छपरा के इलाके में हैं) रहा इसलिये इस देशवाले एकसरिया ब्राह्मण और दिक्षित भी कहने लगे

उसी का अपभ्रंश अब एकसरिया बाभन होगया है। यथार्थ में येलोग कन्नोजिया ब्राह्मण है।

बाबू कैलाशपति सिंह बड़े धनाढ्य थे और इनकी बाबू आनी कईएक पीढ़ी से चली आतीहै। बाबू कैलाश पत्ति सिंह के दादा (परपितामह) बाबू विश्वनाथ सिंह ऐसे नामी पुरुष होगये हैं कि आजतक उनकी भलाई सबलोग गाते हैं और बाबू कैलाश पति सिंह के पिता बाबू त्रिवेणी सिंह भी एकही पुरुष थे पर अपनी लड़की महाराणी इन्द्र जीत कुमारी के व्याह टिकारी के राजा मित्रजीत सिंह के लड़के राजा हित नारायण सिंह से बड़ीधूम धाम से किया था और इसी से कर्ज़दार हो गये थे और अपने लड़के बाबू कैलाशपति सिंह के व्याह भी कसबे शिवहर (त्रिहुत में है) के राजा यदुनन्दन सिंह के भाई बाबू राधामोहन सिंह (यह जात के जैथरिया बाभन थे) की लड़की से बड़े धूम धाम से की इसलिये अत्यंतही ऋण-ग्रस्त होगये इनके और इनके बड़े भाई बाबू जगत पति सिंह के मरने पर सब काम बाबू कैलाशपति सिंह के माथे पड़ा यह पुरुष बहुत धीरमान थे अतएव किसीप्रकार से अपनी ज़मीदारी बचाये थे। यह हाल देख कर बाबू राधा मोहन सिंह ने बहुत कुछ सहायता की। और अपनी लड़की को कभी कभी विशेषकर शिवहर में रखते थे। और लड़का न रहने के कारण और भी जी जान से मानते थे। महाराज रामकृष्ण सिंह का जन्म सम्वत् १८७८ आश्विन शुक्ल द्वादशी रविवार को शिवहर में हुआ था। इनके जन्म के समय में

बाबू राधा मोहन सिंह ने बहुतही उतसाह से खर्च किया था चार बर्ष तक शिवहर में रहकर फिर इसी में आये। यहां आनेपर बाबू कैलासपति सिंह ने पंडित श्रीकांत जी को बुला कर नाम करण आदि कर्म किया। और लगे पढ़ने थोड़े हि दिनों में हिन्दी, फारसी पढ़कर संस्कृत पढ़ने लगे और सांगीत बिद्या कसरत घोड़े पर चढ़ना आदि को भली भांति सिखा। इन सब गुणों के देख कर बाबू कैलाशपति सिंह ने इनका व्याह प्रताप टांड़ (चिहत में है) के ज़मींदार बाबू राम गुलाल सिंह के लड़की मे किया। इसके थोड़े ही दिनों के बाद बाबू राम कृष्ण सिंह श्रीकान्त पंडित से दिक्षा लेकर बहुत अच्छे २ महात्माओं का साथ किया पहले यह काशी में अपने मामा काशी नरेश महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह बहादुर के यहां बहुतदिन तक रहकर अयोध्या को सिधारे। वहां रंग महल नामक स्थान में डेराकरके राम मंत्रका पुराचरण करने लगे और इस जप में बहुत कुछ क्लेश उठाये अर्थात् प्रात:काल उठकर शौचादि कर्म करके जपकरने को बैठें तो चारबजे दिन में उठें और भोजन की यह रीति रकवा कि पुराचरण के पहले रोज़ एक तोला चावल और आध सेर दूधका तसमई बनाके वही दिन रात में चारबजे खाते थे। २रे दिन दो तोला ३रे तीन इसी प्रकार १२ वें रोज़ बारह तोला खाते थे। बारह दिन में वह पुराचरण समाप्त होता था बाद फिर उसको प्रारंभ करते थे इसी प्रकार बारहवें दिन समाप्त करते थे इस प्रकार बहुत काल

तक इस रीति के पूराचरण करके श्री मद्राघव दास के पास बहुत विधि से प्रश्नोत्तर कर घर बार त्यागने की इच्छा प्रगट की परंतु राघवदास ने बहुत कुछ समझाया बुझाया और कहाकि आप को राज्य मिलेगा आप क्यों उदास होते हैं इसपर इन्होंने न माना। इसी समय में एक पत्र राघव-दास जी के नाम से बाबू कैलाश पति सिंह का आया कि आप तुरंत ही राम कृष्ण सिंह को भेजदीजिये यदि उनके आने में देरी होगी तो हमलोग आप के शरण में हाजिर होंगे इस पत्र को पढ़कर राघव दास जी इनको कसी भेज दिये। यहां कुछ दिन रहने के बाद राणी इन्द्रजीत कुमर ने इनको टिकारी में बोलाया लिया। उस समय राजा हित-नारायण सिंह पटना में रहते थे। और राणी राज काज को चलाती थी। परंतु बुद्धिमान आदमी कोई पास उस सम-य नहीं था इसलिये कभी२ बहुत कुछ हानि होती थी। राणी ने कई एक काम इनको सौंपा और यह उन कामों को भली भांति से सधाये। तब कुछ दिन इनको राणी ने राज का मुन्तज़िम मोक़र्रर किया इनकी चालाकी देखकर राणी राजा और प्रजा बहुत खुश हुए। राजा हितनारा-यण सिंह ने राणी इन्द्रजीत कुमर से कहा कि राम कृष्ण-सिंह बड़े लाइक़ हैं और राज काज को अच्छी रीति से च-ला लेते हैं मेरी इच्छा है कि इनको कर्ता पुत्र लें आपकी क्या इच्छा है? राणी इन्द्रजीत कुमारी ने भी इस बात को खुशी से क़बूल की। और कहा कि कोई अच्छे समय में इनको कर्ता पुत्र बनाइये। इस मनोर्थ के थोड़े ही काल

में अर्थात् सन १२६८ फ़सली कुआर में महाराज हितनारा-सिंह मर गये। राम कृष्ण सिंह ने अग्निसंस्कार कर टिकारी में आये और श्राद्ध कर्म को पूरा किये। इसके बाद राम कृष्ण सिंह को लेकर महारानी इन्द्रजीत कुमर पटने में आयी और अच्छे २ लोगों बुलाकर सबके सामने राज्याभिषेक कर दस्तावेज़ कर्त्ता पुत्र का रजिष्टरी तामील कराके राज्य भार इनको सपुर्द कर आप परमेश्वर की आराधना करने लगी। एक दिन महारानी इन्द्रजीत कुमर ने राजा राम कृष्ण सिंह को बुलाकर कई एक बातें सिखलायीं और कहो कि आप सदा इन बातों को याद कर राज काज को किया कीजिये तो आशा है कि सुख पूर्वक आप का समय बित जायगा।

चोरी करने वाला परस्त्री गमन करने वाला, बुरी बात बोलने वाला बलात्कार कर्म करने वाला, दंड आदि से मारने वाला, ये सब जिस राजा के राज्य में नहीं है वह राजा इंद्र लोक को पाता है। अपने राज्य में इन्हीं पांचों का निग्रह करने वाला राजा राजाओं में साम्राज्य अर्थात् मंडलेश्वर कहलाता है। राजाओं को उचित है कि प्रति दिन इतने काम को देख लिया करे अर्थात् कौन काम जारी हुआ और उसमें कितना पूरा हुआ और कितना बाक़ी है जो बाक़ी हो उसपर तत्पर होय। वाहन अर्थात् हाथी घोड़ा रथ गाड़ी पालकी सब रिष्ट पुष्ट तयार है या नहीं आय अर्थात् आज कितनी आमदनी आई और व्यय अर्थात् क्या ख़र्च हुआ। कोष (ख़ज़ाना) आकर (खानि) प-

रम यत्न चोरों के निग्रह में राजा रक्खे क्योंकि चोरों के निग्रह से यश और राज्य की बढ़ती होती है। राजाओं को चाहिये कि माली ऐसा व्यवहार रक्खें अर्थात् माली सात तरह का व्यवहार रखता है वैसाही राजा लोग भी रक्खें।

१म प्रयोग। माली १ले अपनी फुलवारी के हाता को मज़बूत करता है कि २रा कोई उस हाते के भीतर न आवे। इसी प्रकार राजाओं को चाहिये अपने सरहद्द सीमा को दुरुस्त निर्बिवाद किये रहें जो २रा कोई दबा नहीं ले। पद्म पुराण में लिखा है कि एक तिल बराबर धरती जिस राजा के सामर्थ्य रहते हुए २रा कोई दखल करले तो वह उद्यम साहस बीरता हीन राजा नरक को जाता है।

२रा प्रयोग। माली अपनी फुलवारी में अनेक तौर का गुल्म लता बिटप फल फूल को लगाता है। इसी प्रकार राजाओं को चाहिये कि अपने राज्य में हरेक जाति की प्रजाओं को बसावे।

३रा प्रयोग। माली अपने रोपे हुए पेड़ों को बढ़ने और पुष्ट होने के लिये सिंचता है। ऐसेही राजाओं को चाहिये कि अपना द्रव्य लगाकर प्रजाओं को सुखी रक्खे।

४था प्रयोग। रोपे हुए अनेक वृक्षों में से माली अच्छे२ पेड़ों को रखकर दुख दाई कंटक निष्फल वृक्षों और घास पत्तों को उखाड़ कर साफ़ करता है। इसी प्रकार राजाओं को चाहिये कि अपने राज्य में निष्प्रयोजन दुष्ट बुद्धि दुष्टा चरण अर्थात् अधर्म्मी चोर, पर स्त्री गामी मिथ्याबादी २रे के

घर में आग लगाने वाला, बिष देने वाला डांका देनेवाला बदमाश, बद्ज़ात, बद्फ़ैल, प्रजाओं को दण्ड देकर उखाड़ देवे।

५म प्रयोग। जब बाग़ सिजिल होकर पेड़ बढ़ता है और एक पेड़ २रे को दबा लेता है तब माली उस बढ़े हुए वृक्ष के लंबे२ डालों को काट कर सीधा कर देता है। इसी प्रकार राजाओं को उचित है कि सर्ज हुए प्रजाओं में से एक २रे को दबा न ले यदि ऐसा देखे तो उस दुष्ट प्रजा को धन धरती छीन छान कर सिजिल करे कि फिर वह किसी प्रजा को न सतावे।

६ठां प्रयोग। जब पेड़ फूलता फलता है तब माली फल रक्षा में सचेत रहता है इसी प्रकार राजाओं को उचित है कि जब देश आबाद होजाय तो चोर आग, अकाल आदि से प्रजाओं को बचावे।

७म प्रयोग। जब बागीचा फल फूल फल के तय्यार होता है, तो माली उस फल फूल को तोड़ कर अपना मनोरथ पूरा करता है। इसी प्रकार राजाओं को चाहिये कि जब मुल्क आबाद होजाय तो प्रजाओं से हर एक तौर से नजर सलामी तलबाने जुरबाने टिक्स माल गुजारी आदि ऐसा ले जिसमें प्रजा के तकलीफ नहो इस प्रकार से जो राजा बर्ताव करेगा वह सुखी रहेगा। इसी प्रकार अनेक बातें सिखाकर और इनकी चतुराई देख कर आनंद से रहने लगी॥

राम कृष्ण सिंह की बुद्धिमानी तो सब पर प्रगट है कि

इन्हों ने अपनी बुद्धि होसे राज्य पद पायेन तो टिकारी के राज्य से क्या इन्हें कोई सम्बन्ध था ? जब ये राजपद पाये तो और भी नम्रता धारन की और राज्य पद का कुछ भी अहंकार न आया। और राजा प्रजा को बहुत प्रसन्न रक्खा। ये आज्ञा देदिये कि जो प्रजा या दुखी लोग अपनी दीनताई कहने के लिये मेरे पास आवे उन्हें कोई रोक टोक न करे कहते हैं कि इन के समय में प्रजा ऐसी प्रसन्न हुई कि अपने बाप से अधिक मानने लगी। जिस को जो कुछ कहना सुनना होता था सब राम कृष्ण सिंह से कहता था और यह शंका मिट गई कि महाराजा साहिब हम लोगों के दुख सुख को न सुनेंगे इसी से महाराज रामकृष्ण सिंह पर प्रजाओं की बहुत प्रीति बढ़गई। सन् १२७२ फसली चैत राम नौमी में अयोध्या जी में जाकर एक मंदिर का नींव दिलवाये और वहां से आकर फिर १२७५ में मंदिर तय्यार होने पर अयोध्या जी में जाकर बड़े उत्साह से सीता राम जी की मूर्ति स्थापन की इस उत्सव में लाख रूपये से अधिक खर्च किये। और ३६००) रु० सालीना उस में मंदिर के खर्च केलिये देना कबूल किये और टिकारी में आकर जनक पुर के महंत श्री जनक कुमारी शरण जी के सात हजार रुपया देकर प्रार्थना किये कि आप इस रुपये को ले जाइये और मंदिर बनवाना शुरू कीजिये पीछे से मैं और रूपया भेजूंगा और बड़े सम्मान के साथ उन को बिदा किया॥

महाराज राम कृष्ण सिंह की उदारता और खैर खा-

को देखकर पामर साहब कलक्टर ज़िले गया ने कमिश्नर बेली साहब को लिखा कि रियासत टिकारी के राजा राम कृष्ण सिंह को महाराज बहादुर की पदवी देना चाहिये इस बात को बेलीसाहब ने लेफनेंट बंगाल को लिखा इस पर लार्ड नार्थ ब्रूक साहबने महाराज बहादुर का खिताब देना स्वीकार कर बेली साहब को लिखा कि आप उनको महाराज बहादुर का खिताब दे दीजिये इसी के अनुसार कमिश्नर बेली साहब बिहारके बड़े बड़े प्रतिष्ठित मनुष्यों और ज़िलेके हाकिमों के साथ गया में जाकर राम कृष्ण सिंह को महाराज बहादुर का खिताब दिया और बहुत कुछ प्रशंसा किया और कहाकि आप ऐसे बुद्धिमान् मनुष्य आज कल सूबेबिहार में बहुत थोड़े पाये जाते हैं मैं आशा करता हूं कि आप जैसे अपनी उन्नति को ऐसे ही बिहार के उन्नति के लिये यत्न करेंगे और गवर्न्मेंट का सच्चा हितैषी बने रहेंगे। यह कहकर कमिश्नर साहब वहां से बिदा होकर चले आये और महाराज राम कृष्ण सिंह बहादुर अपनी राजधानी टिकारी में आकर अपनी प्रजा ओं को लालन पालन में समय बिताने लगे।

१२८१ फसली में बिहार के इलाके में जब अकाल पड़ा तो इन्हों ने बड़ी उदारता के साथ प्रजाओं और भूखों की सहायता की कई एक लाख रुपये लगाकर जहां तहां सदाबर्त्त दिलवाये और प्रजाओं के मालगुज़ारी भी बहुत कुछ छोड़ दिये जिससे इनको बिशेष कीर्त्ति हुई।

टिकारी से पूरब धर्म्मशाला मौज़े में एक महादेव का

मंदिर स्थापन किया जिससे यह सन्देह लोगों को मिट गया कि ये विष्णु और शिव में अन्तर नहीं समझते हैं इस मंदिर के बनाने में भी बहुत कुछ खर्च किये और सदा इसी प्रकार से मंदिर आदि बनवाते रहते थे एक मंदिर और छपरा से पश्चिम गोदना * में बनवाये हैं यह मंदिर भी देखने लाइक है।

महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर के कोई लड़का न था पर दो लड़की थी एक नरहन के बाबू नेम नारायण सिंह से व्याही थी और दूसरा सरमोरा के बाबू अम्बिका प्रसाद सिंह से व्याही थी बड़ी तो मर गई पर छोटी के इन्हों ने अपने राज्य का वारिस बनाया और यह लिख दिया कि मेरी राणी के बाद बाबू अम्बिका प्रसाद सिंह के जो लड़का होगा वही राज्य का मालिक होगा॥

महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर की राणी का नाम राजरूप कुंअरि है और यह अपनी छोटी लड़की राधेश्वरी किशोरी को जो बाबू अम्बिका प्रशाद सिंह व्याही है बहुत कुछ चाहती थी अतएव बाबू अम्बिका प्रसाद सिंह बराबर टिकारी में रहते थे और इन को महाराज रामकृष्ण सिंह बहुत कुछ नीति शिक्षा देते थे। और सभासदों को इकट्ठा कर सनातन धर्म्म का उपदेश करते थे।

एक बार एक बैरागी ने आकर कहा कि मैं आपका यह हाल सुनकर कि कि बवासीर की बीमारी है आया हूं आज्ञा हो तो दवा करूं महाराज रामकृष्ण सिंह ने कहा

* शायद गौतम आश्रम का अपभ्रंश गोदना हो।

कि मैं आप का दवा खाऊंगा बैष्णव ने दवा दिया और दो चार दिन के बाद जगन्नाथ जी चला गया यह कह गया कि मैं चार महीने के बाद आऊंगा महाराज साहिब ने जाने के समय सौ रुपया और एक दुशाला देकर बिदा किया। वह बैष्णव फिर चार महीने के बाद आया और कहा कि मैं तो नहीं आता पर आप को कह गया था कि मैं आऊंगा इस लिये आया यदि नहीं आते तो असत्य का भागी होते कहा है कि सत्य ऐसा कोई तप नहीं है। किसी ने कहा भी है। दोहा।

सत्य नाव करि जो चढ़े, यह भव सिन्धु अपार।
आप बचे अरु और को, देवे पार उतार॥

और भी कहा है।

चौपाई।

सत्य मूल सब सुकृत सुहाए, बेद पुरान बिदित मनु गाए॥

इस पर महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि आप ऐसे बिद्वज्जन जब इसका निर्वाह न करेंगे तो कौन करेगा इसी प्रकार बहुत वार्तालाप होने के बाद फिर महाराज उस बैरागी को डेरा दिलवाये और दवा खाना शुरू किये पर उस बैरागी ने एक दिन इनको दवा में ज़हर घोलकर देदिया जब यह दवा पी चुके तो इनको कुछ संदेह हुआ पर किसी से कहा नहीं आखिरकार घड़ी दो घड़ी के बाद जीभ लड़खड़ा गई और तबियत जब बहुत बेचैन हुई तो पंडित अयोध्या प्रसाद मिश्र चिकित्सक को बुला कर यह बिलकुल हाल कह सुनाये और क-

हा कि अब मैं नहीं बचूंगा जब यह खबर महाराणी इन्द्रजीत कुंवरि को पहुंची तो वह दौड़ी हुई राज सभा में चली आई अनेक हकोम डाक्टर वैद्य तब तक इकट्ठे होगये दवा देना लोगों ने शुरू किया और उस बैरागी को लोगों ने धरकर महारानी साहिबा के पास लाये महाराणी साहिबा ने हुक्म दो कि इसको कोठरी में अभी बन्द करो कहते हैं कि महाराज रामकृष्ण सिंह को पहरभर दिन चढ़े से और होते होते चेत हुआ तब सब लोगों को जी में जी आया अब अच्छी रीति से इनको आराम हुआ तो लोगों ने कहा कि इस बैरागी को मार देना चाहिये किसी ने कहा कि पुलिस में भेजो पर रामकृष्ण सिंह ने कहा इनका कुछ दोष नहीं है और चार सवार को बुलाकर कहा कि इनको आप लोग गया तक पहुंचा आइये और उस बैरागी को १०० ,) रु० बिदाई और एक जोडा दुशाला देकर कहा कि आप मेरा अपराध क्षमा कीजिये क्योंकि मेरे लिये आप को इतना क्लेश उठाना पड़ा और हाथी पर चढ़ाकर बिदा किया॥

इस बात के सुनकर लोगों ने कहा कि रामकृष्ण सिंह यह काम अच्छा न किये कि इस दुष्ट को बिना दंड दिये छोड़ दिये पर किसी विद्वान ने कहा कि धन्य है महाराज की क्षमा को जो शत्रु से भी मित्रता करते हैं साधु इन्हीं को कहना चाहिये॥

किसी ने कहा कि जहर अच्छा नहीं था न तो महाराज चट पट लोट जाते किसी ने कहा कि महाराज रामभक्त हैं इसलिये इनको ज़हर असर नहीं किया किसी ने

कहा कि पं० अयोध्या प्रसाद मिश्र ने बहुत जल्द में इसका प्रबंध किया इसलिये बच गये पर एक कवि ने कहा कि भाई मेरी समझ में तो यह है कि भले मनुष्य को संसार में भलाई होता ही है यो भक्तवर तुलसी दास जीने कहा भी है।

'कंस करी ब्रजबासीन पै करतूति कुरीति चली न चलाई।
पंडु के पूत सपूत कपूत सुजोधन भो कलि छोटो छलाई।
कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई।
ठीक परतीत कहै तुलसी जग होइ भलो को भलाई भलाई। १।

और कबीर ने भी कहा है।

दो०।

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोको फूल के फूल हैं, ताको है त्रिसूल॥ १॥

एक बार महाराज रामकृष्ण सिंह हरिहर क्षेत्र में आये औ डेरा दिये पर इनके डेरे के नज़दीक पादड़ियों ने आकर इनके मतकी निंदा करना शुरू की इन्होंने बहुत नम्रताई से हाथ जोड़ कर कहाकि आप २रे जगह जाकर जोकुछ कहना हो कहिये पर पादड़ियों न माना तो २रे जगह डेरा दिये जब पादड़ियों ने वहां जाकर भी वेद पुराण स्मृतियों पर शंका किये तो येभी भली भांति से 'राम परीक्षा" "कृष्ण परीक्षा" "गुरू परीक्षा" "शिव-परीक्षा" "मतपरीक्षा" आदि को खंडन किये और जहां तक हो सका बादबिल परशंका किये वे पर सब बातें यहां बिस्तार भय से नहीं लिख सकते हैं॥

महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर हिन्दुस्तान के सब तीर्थको एकबार घूम आये थे और अपने धर्म्म में बड़े आरूढ़ थे। यह समय को एक अमूल्य पदार्थ समझते थे, और इस प्रकार से काम में लाते थे कि एक छन भी व्यर्थ नहीं जाता था प्रति रविवार के सभा होती थी जिस में अनेक प्रकार संका समाधान किया जाताथा संस्कृत बिद्या के लिये ब्राह्मणों को जागीरे दीगई और जहां वैष्णवों के मंदिर बनवाये गये। बहुत दिनों से यह झगड़ा चला आता थाकि बाभन (भुंहार) कौन वर्ण हैं महाराज रामकृष्ण सिंह ने निश्चय करवाये कि बाभन ब्राह्मण का अपभ्रंश है॥

महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर को बवासीर की बीमारी थी इस से वह बहुत लाचावार रहते थे बीमारी होने पर भी यह ऐसे मुस्तैद थे किशायद बीरला हो कोई निरोगी ऐसे मुस्तैद होगा। बड़े२ पंडित कबि गुण वान बिद्यवान इनके साथ रहते थे। और सब को महाराज खुश रखते थे। जिस बड़े आदमी पर बिपत्ति पड़ती उसकी सहायता ये अवश्य करते थे। ऐसा शायद कोई होगा जो अपना मनोरथ महाराज रामकृष्ण सिंह से कहा हो और पूरा नहीं हुआ हो। एक दिन महाराज रामकृष्ण सिंह माघ के महीने में कहीं चले जाते थे देखाकि एक गरीब लड़का जाड़ा से कांप रहा है पूछाकि तुम कौन जात हो कहाकि मैं ब्राह्मण हूं और जिस गांव में मैंरहताहूं वहां कोई ऐसा दयावान् नहीं जो मेरा खबर ले महाराजा साहिब अपना सब कपड़ा उस को देदिये और आप उघार हो चले आये।

ऐसेही एक दिन यह घोड़े पर चलेजाते थे कि एक भूखा मनुष्य आकर कहाकि आज मुझे ३ दिन खाये हुए होगया यदि कृपा करमुझे कुछ देते तो मैं अपनी क्षुधा को सांत करता यह बात सुनकर महाराजा साहिब ने अपनी अंगूठी उसको दे दी और कहा जाओ इसी को बेच के खाना यदि कोई पकड़े तो मेरे पास चले आना।

महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर ने रानी इन्द्रजीत कुंअरि से एक मंदिर मथुरा में ३ लाख रुपया लगाकर बनवाये थे और बड़े उत्साह के साथ उस में ठाकुर जी का स्थापण कराये महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर यद्यपि वैष्णव थे पर नीचे लिखे हुए मतों का भेद को भली भांति जानते थे। सधना पंथी, कबीर पंथी, नानहक पंथी, दादूर पंथी, खाकी, बैरागी, नागा, मूलकदासी, रैहदासी, चरण दासी, सेनाई, मीराबाई, सखीभाव, माधवी, हरिश्चन्द्री, योगी, ऊर्ध्वबाहु, आकाश मुखी, गूदड़, रूखड़, सूखड़, कड़ा लिंगी, शाक्तिक, दक्षिणाचारी, बादक्षिणी, बामी वा बामीचारी वा वाम मार्गी वा कौल आदि, कानचेली, करारी, अघोरी, गाणपत्य, सौर, बाबा लाली, प्राण नाथी, साध, संतनामी, शिवनारायणी, शून्यवादी, जैनी, दिगंबर, ढोंढिये, बौद्ध, दोनों ब्रह्मसमाजी, मुहमदी, ईसाई आदि। इनमें से अनेक मत वाले तो इनहके यहां रहते थे। और ये किसी से द्वेष भाव नहीं रखते थे तब तो एकता थी नतो एक एक बात में अकाश में उड़ते तब तो खूबही एकता करते। सच है जो बड़े होते हैं वे सब का यथा योग्य सनमान करते हैं॥

ये महाराज सदा परोपकार में लीन रहकर १२८२ फसली कुआर पूर्णमासी को ज्वर से पीड़ित हुए और ४ थी बदि कातिक को परलोक सिधारे मरने के समय में बहुत कुछ दान पुण्य किये एक कबि ने जो वहां वर्त्तमान था यह काव्य किया है।

दोहा।

पक्ष लोक निधि चन्द्र (१९३२) युत, सम्वत कार्तिक मास।
सोमवार तिथि चार में, कृष्ण पाख सुभ कास ॥ १ ॥
गये लोक साकेत में, करि सब को अचेत।
पंच रचित को त्याग करि, ज्ञान विराग समेत ॥ २ ॥
महाराज पदवी सहित, राम कृष्ण जिहि नाम।
कलिमल दल को दलि गये, सिया राम के धाम ॥ ३ ॥
दुइ तरुनी इनकी रही, छमा कीर्ति जिहि नाम।
कीर्ति रही जगती तले, छमा गई पर धाम ॥ ४ ॥
बंधू तीन इनके रहे, सत्य शील संतोष।
इन्ह भैयन सों कहि गये, करबि मातु परतोष ॥ ५ ॥
एक बहिन इनके रही, दया लही बड़ शोक।
ताहि राखि निज मातु पै, आपु गये परलोक ॥ ६ ॥
कौशिल्या मंदालशा, नीति सुमाता तीन।
श्री महारानी जी भई, चौथी मातु परवीन ॥ ७ ॥

कबित।

बैठि हरि मंदिर में प्राणायाम तीनि किये लिये हिये लाय सीता राम गहि पानी सों। जै जै रघुबीर सीयकांत धीर धरि कहैं सहै पीर भारी लखि भैना अकुलानी सों॥

लच्छन मगाय गाय लच्छन समेत द्विज देवन को दियो दान मानी मनमानी सो। बार बार जोरि कर बिनै औ प्रणाम किये श्री गुरु औ संतन को माता महारानी सो॥ ८॥ राज तोय मुद्रा दिये लच्छन बिचच्छन को बच्छन समेत गाय कच्छन भराय कै। भच्छन के हेत दिये अन्न दान दीनन को खीनन के खेत दिये दच्छिना मिलाय कै। हेम सिंह आसन पै आसन कराये दिये शाल ग्राम दान वाक्य वैदिक बनाय कै। सीता राम प्रीत दिये ग्राम द्विज पंडित को पूजे पद कंज हरि भक्त हिये लाय कै॥ ९॥ बैठे कुशासन पै सासन करि इन्द्रिन को धारे कंजासन नहीं त्रास जम राज को। धबु वाँण चन्द्रिका सुमुद्रिका लिखाय अंग उर्द्ध पुंड्र चंद बिंदु औ के सुभ साज को॥ सरयू औ गंगा जल पान करि बार२ ध्यान करि सीता राम रासके समाज को। ब्रह्म मंडलो के बीच ब्रह्मबेला पाए गये ब्रह्म रंध्र ह्वै के लोक ब्रह्म रघु राज को॥ १०॥

दोहा।

भक्त राज महा राज को, लीला ललित ललाम।
पढ़ै सुनै अनुमोद युत, तेहि मंगल प्रद राम॥ ११॥

निदान रामकृष्ण सिंह बहादुर के मरने पर इनको मा (महाराणी इन्द्रजीत कुंअरि) बहुत घबराई लोगों ने समझाया बुझाया तो कुछ धीर धरी फिर राम कृष्ण सिंह ने आप भली भांति को और बराबर इनके अफ़सोस में रहीं इधर प्रजा लोग भी बहुत अनाथ हो गये और वैष्णव लोग एकबारही अचेत हो गये। और कहने लगे कि ऐसा भक्त इस

समय में होना बहुत दुर्लभ है और अनेक प्रकार से महाराज का गुणानुबाद करके सब लोग जहां तहां अपने स्थान को प्रस्थान किये।

यथार्थ में महाराज रामकृष्ण सिंह बहादुर भूमिहारों में एक रत्न हो गये हैं और इनको भलाई आज तक लोगों के चित्त पर भली भांति से चित्रित हैं।



श्री भक्तवर शंकर दासजी का जीवन चरित्र।

इनका मकान परगना गोआ मौज़ें इसुआ पुरमें है। इन के पिता का नाम पंडित शोभा चौबे* था। ये जाति के कनौजिया (कान्यकुब्ज) ब्राह्मण थे। इन का जीवन चरित्र "रसिक प्रकाश भक्त माल" में बिस्तार पूर्वक लिखा है। इसीलिये यहां थोड़ा लिखा जाता है।

शंकर चौबे द्वारिकादि तीर्थ यात्रा करने के लिये घरसे चले थे पर किसी कारण से लौट कर घर पर चले आये। यहां कुछ दिन रहने के बाद कुछ भाषा पढ़ लिये थे। इन की बुद्धि बड़ी तेज थी कहते हैं कि तुलसी दास कृत "मानरामायण" और "गीतावली" "दोहावली" "कबितावली" (कबित रामायण) "बरवे रामायण" "बिनय पत्रिका" "छंदावली" "सतसई" "रामशलाका"

* चतुर बेदी से चौबे बना है जैसे त्रिबेदी वा त्रिपाठी से (तिवारी तिवाडी वा तिवाड़ी) और द्विवेदी से दुबे बना है ऐसेही चतुर बेदी से चौबे बना है अर्थात् चारों बेदों के पढ़नेवाला ब्राम्हण

" हनुमान बाहुक " " जानकी मंगल " "पार्वती मंगल " " रोला छंद " "झूलना " आदिको कंठस्थ किये थे और संस्कृतमें " गीतगोबिंद " " बाल्मीकि रामायण " " श्रीमद्भागवत " इनको कंठ था। लोग कहते हैं कि लड़कई में " मानस रामायण" और " दोहावली " याद करके बेप्रयास दोहा चौपाई बनाने लगे। एक दिन किसी बिद्वान् ने यह श्लोक इनके सामने पढ़ा।

श्लोक।

उद्यमं साहसन्धैर्य्यं बल म्बुद्धिः पराक्रमः।
षडेते यस्य तिष्ठन्ति तस्मा द्देवोपि शङ्कते ॥ १ ॥

यह सुनकर इन्होंने कहा कि इस श्लोक का अर्थ क्या है? तब उस बिद्वान ने कहा कि उपाय और साहस, धीरज और बल, बुद्धि और पराक्रम ये छः जिस में दृढ़ होते हैं उस मनुष्य से ईश्वर भी शंका करता है। इस श्लोक का यही अर्थ है। इस पर शङ्कर चौबे ने जल्द में यह दोहा बनाय कर पढ़ दिये

दोहा।

उद्यम साहस धैर्य्य बल, बुद्धि पराक्रम जाहि।
ये छः जेहि उर बसत है, देव शंककरु ताहि ॥ १ ॥

तब उस बिद्वानने अपने जी में सोचा कि यह लड़का तो बहुत भारी कबि और पंडित होगा क्योंकि जब लड़काई में यह हाल है तो आगे क्या होगा फिर सोचा कि शायद किसी ने इस दोहे को पहले ही बनाया हो और भी तो श्लोक पढ़कर उसका अर्थ कहें देखें यह दोहा बनाता है या नहीं फिर उस ने इस श्लोक को पढ़ा —

मातरम्पितरम्पुत्रं भ्रातरंच गुरूंस्तथा।
लोभाविष्टो नरो हन्ति स्वामिनम्वा सुहृत्तमम्॥ १॥

जब शंकर चौबे इस श्लोक को सुन गये तब उस ने कहा कि इस श्लोक को दोहा में बनाओ शंकर चौबे ने नम्रता पूर्वक कहा कि इस श्लोक का अर्थ मुझे नहीं मालूम होता अगर आप कृपाकर इस दीन जन को बता दीजिये तो मैं आपको गुरू मानूंगा और फिर मुझ से जो कुछ बन पड़ेगा कह सुनाऊंगा तब उस ने कहा कि तुम संस्कृत जानते हो या नहीं? इन्होंने कहा कि नहीं तब उसने कहा कि दोहा क्यों बनाते हो और एक शब्द का २रा अर्थ क्यों करते हो तब इन्होंने कहा कि मैं संकृत नहीं जानता हूं पर श्रीमद् गोस्वामी तुलसी दास कृत ग्रन्थों का अर्थ पढ़ा है उसी के सहायता से दोहा बनाता हूं। तब उसने कहा इस श्लोक का यह अर्थ है "मनुष्य लालच में अपने मा, बाप, लड़के भाई, गुरू मित्र, और मालिक को भी मार डालता है। फिर कहा अब इसका दोहा बनाओ। इन्होंने शीघ्रता से यह दोहा कहा —

दोहा

लालच बस जननी जनक, पुत्र भ्रात गुरु जान।
मित्र स्वामी को बधत है, अस कह नीति सुजान।

यह चालाकी देख कर उस विद्वान ने कहा कि यदि तुम पढ़ते तो इस संसार में एक ही होते और मैं क्या कहूं तुम्हारा लक्षण देखने से मालूम होता है कि तुम बड़े प्रसिद्ध विद्वान् बुद्धिमान कवि होगे क्योंकि आज तक मुझे ऐसे चालाक लड़के देखने ही में न आये। इस बालावस्था में जब

इतनी बुद्धि और बोलचाल सुधरा है, तो आगे तुम्हारी बुद्धि बहुत बढ़ेगी पर मेरी यही राय है कि तुम संस्कृत पढ़ो पढ़ने से क्या फल होगा यह जब पढ़ जाओगे तो आप ही आप मालूम हो जायगा पर देखो बिना बिद्या के मनुष्य पशुके बराबर हैं। बिद्या बहुत उत्तम बस्तु है, इससे मनुष्य नामी हो जाते हैं व्यास बसिष्ट गौतम, अंगिरा, कणाद, आदि का नाम है, बिद्या से बंश भी उजागर हो जाता है देखो व्यास कौन थे। बड़े बड़े राज दरबारों में पहुंच हो जाती है, बिद्या मनुष्य का परम सुन्दर अटल धन है, इस से धन, धर्म, बिनय, यश और प्रतिष्ठा बढ़ती है इस के समान और कोई हितकारी बस्तु नहीं। यह सदा देश परदेश में साथ रहती और हित की बातें बतलाया करती है, इसे कोई छीन नहीं सकता, यह २रों को देनेसे बढ़ती है सब देशों में मनुष्यों की वृद्धि होने का यही असल कारण है। यह जाति और देश दोनों को बढ़ाती हैं; गुनी को सब लोग मानते और उन से अच्छी २ बातें पूछा करते हैं, बिद्या की चाव कम होनेपर लोग मूर्ख हो जाते आपस में प्रेम घट जाता, बिश्वास उठ जाता, बैर बढ़ता सहायता कम होजाती, कारोबार घटजाते, लोग दुखी हो जाते अन्न बस्त्र नहीं मिलते, इस लिये ऐसी उत्तम बात के उपराजने में आलस बहुत बुरा है, बिद्या अनेक भांति की हैं उनमें से किसी एक बिद्या के सीखने से मनुष्य अपने जीवन भर सकुटुम्ब सुखी रह सकते हैं, तात्पर्य्य यह है कि सदा सुख को देने वाली बिद्या ही है उसे

तुम जी लगा कर पढ़ो, कहते हैं कि शंकर चौबे के मन में यह बात बहुत पसन्द आई परन्तु शंकर दास ने अपने से पूछा कि मैं पढ़ने जाऊं तब उसने कहा कि तुम यहां पर खेती बारी वा जजमान के काम को देखो पढ़कर क्या होगा क्या संसार में सब लोग पंडित हो हैं भाषा पढ़ लियो यही बहुत है पढ़ने से धन नहीं होता है कहावत पर सिद्ध है कि "पढ़े फारसी बेंचे तेल देखोरी कुदरत को खेल,, शंकर चौबे अपने मनमें सोचा कि अपने पिता को कुछ बोध कराना बहुत अच्छी बात है फिर सोचा कि पुत्र का धर्म्म है कि पिता की आज्ञा में रहे इस लिये खंडन करना अच्छा नहीं है। फिर उस विद्यावान् ने देखा कि शंकर चौबे तो कहीं पढ़ने नहीं गया यह बात अच्छी नहीं है तब उसने सोभा चौबे से कहा कि शंकर चौबे को पढ़ने के लिये बनारस भेज दो उसने कहा कि पढ़कर क्या होगा अपने जजमानों के काम चलाने लायक तो पढ़ हो लिया है फिर इसने कहा कि पढ़कर पंडित हो जायगा तो बहुत कुछ रुपया पैसा पैदा करेगा फिर सोभा चौबे ने कहा कि माना कि पंडित हो जायगा धन पैदा करेगा पर इससे क्या मेरे यहां तो कोई धनवान नहीं हुए जैसे सब लोग हैं वैसे मैं भी रहूंगा फिर उस विद्यावान ने बड़ी नम्रताई से कहा कि भाई धन विना जीवन वृथा है तब सोभा चौबे ने कहा यह तो ठीक कहते हो तब उस विद्यावान ने कहा देखो संसार में धन की महिमा प्रत्यक्ष है। धनवान को सब कोई अच्छा लगाते हैं। धन ही से सब काम होते हैं इससे मालूम होता है कि धन

बहुत उत्तम बस्तु है, गृहस्थों के सब काम प्रायः इसीसे निकलते हैं इसके एर फेर से सब कोई अपना निर्वाह करते है। संसार में व्यापार का मूल धन है। इसके बिना लोग दरिद्र अथवा कंगाल कहलाते हैं, कंगाल का घर बाहर कहीं आदर नहीं होता, जहां जाता वहां हलका समझा जाता। हित अनहित हो जाते अपने पराये का सा व्यहार करने लगते हैं, बोलने पर लोग चिढ़ उठते वा नकल बनाने लगते हैं चारों दिशा अन्धेरी लगती बुद्धि मंद हो जाती, मन उदास रहता, परिचय वाले सामने आ जाने पर मुंह फेर लेते, बात नहीं पूछते, कोई भला काम नहीं बन पड़ता, इच्छा कभी पूरी नहीं होती, जो सदा ललाया करता है पहुना आने पर बहुत ही लज्जा होती, समाज में सदा सिर नीचा रखना पड़ता है। यथार्थ में कुटुंबी को बिना धन बड़ा कष्ट होता है। धन से अपने और पराये दोनों के काम निकलते हैं धन से मनुष्य चतुर कुलीन और नामी समझा जाता है इससे बहुत से दोष पच जाते है लोग सदा धनी का आसरा करते और मुंह देखा करते हैं। धन से सुख की सब सामग्री मिलती हैं, देश परदेश सब जगह इस से सुपास मिलता है इस लिये ऐसी उपकारी बस्तु के उपराजने में सदा परिश्रम करना उचित है, किसी के पास जा कर कुछ मांगना बुरा है मांगने के समय मनुष्य हलका हो जाता और काम भी उसका उससे नहीं निकलता, अपने परिश्रम से कमा कर खर्चना ठीक है, इत्यादि बातें जब कह गया तब सोभा चौबे खुश होकर शंकर दास को बनारस में पढ़ने के लिये भेजा।

शकर चौबे अपने परिश्रम के द्वारा बहुत जल्द में संस्कृत विद्या पढ़ लिये पर इनको विशेष ग्रंथों के देखने की इच्छा थी इसी कारण से यहां बहुत दिन रह गये और ये बड़े बड़े पराचीन ग्रंथों को देख गये और शास्त्री की पदवी भी पाये फिर अपने घर पर आकर अपने पिता के पास हाजिर हुए।

इनकी विद्या की प्रशंसा सुन कर आस पास के बहुतेरे लोगों ने इनको चाहने लगे और ये बहुत कुछ पैदा भी किये। सच है।

गुण वारे सम्पति लहै, गुन बिन लहै न कोय।
काढ़े नीर पताल सों, जो गुन युत घट होय॥ १॥

यह बात सोभा चौबे के मन को बहुत बलाया और इनके विद्या के प्रताप से बहुत कुछ सुख पाये।

संयोग से शकर चौबे के देह में कोढ़ की बीमारी हो गई तब यह चिरान * में आकर गंगा सेवन करने लगे और गंगा के वर्णन में बहुत कबिता किये। बराबर गंगा जी में नहाते और गंगा का रज लगाते थे और खान पान शुद्ध-

* चिरान छपरा से ३ कोस पूर्व है यहां पर गंगा सरयू और सोनभद्र का सङ्गम है। चिरान नाम पड़ने का कारण वहां वाले यह बतलाते हैं कि जब से मोरध्वज राजा के समय आरा में राहा चीरा गया तब से यह चिरान बोलता है पहले लोग चिरान ही को बड़ा नगर मानते थे और प्रसिद्ध भी यही था पर जब से दुलारी बीबी ने छपरा में आ कर रहीं तब से छपरा प्रसिद्ध हो गया अर्थात माझी के राजा की एक बहन थी जिस का नाम दुलारी बीबी था वह माझी से आ कर गंगा सेवन करती थी वहां पर उस ने एक गांव बसाया और उस का नाम दुलारी छपरा रक्खा इधर अंगरेजी अमलदारी में वहां सारन का सदर मुकाम होने से लोगों ने छपरा छपरा कर के प्रसिद्ध कर दिया पर दूर वाले चिरान छपरा अब भी बोलते हैं।

ता से करते थे इस से कुछ बीमारी थम गई थी पर देह में कीड़ा भी पड़ गया था जो कीड़ा घाव में से गिर पड़े उसे ये उठा कर घाव में ही रखते थे और रात दिन रघुनंदन राज किशोर का भजन करते थे। और कहते थे कि 'कर्म प्रधान बिश्व करि राखा। जो जस करै सो तस फल चाखा,। जैसा काम वैसा परिणाम है अर्थात् जैसा किया है वैसा फल पाता हूं इस में संदेह क्या ईश्वरेच्छा से साल दो साल के बाद कोढ़ की बीमारी छूट गयी तो यह अपने घर पर आये और अपना व्याह किये कुछ दिन के बाद एक लड़का पैदा हुआ नाम उसका इन्हों ने जीवा राम चौबे रक्खा वे बड़े पंडित कवि भजनानंदी हुए हैं रसिक प्रकाश भक्त माल इन्हीं का बनाया है और पद में अपना नाम जुगल प्रिया रक्खा है महाराज राम कृष्ण देव बहादुर इन्हीं से भक्ति तत्व पाये थे और जो जान से इनको मानते थे।

जीवाराम चौबे को नाम करणादि संस्कारों के बाद पढ़ाना शुरू किये कुछ दिन के बाद शंकर चौबे को एक लड़का और हुआ तब ये इसुआपुर से कोस भर के लगभग एक गांव 'अगवथर, में आकर रहने लगे और कुछ दिन के बाद अपने परिवार समेत आकर अगवथर में रह गये। शंकर चौबे की विद्या देख कर सारन मुज़फ़्फ़रपुर और चम्पारन, पटना के जिले के लोगों ने इनके शिष्य होना विचार किया ये बिचारे इस काम से बहुत डरते थे पर लोगों ने इन से शिष्य किसी न किसी प्रकार से हुए तभी से आजतक हज़ारों गांव से अधिक के लोग इनका शिष्य

हैं जिन से इन दिनों उन के घरवालों की जीविका निर्वाह होती है। शंकर चौबे अपने काम धंधा से छुटी पाकर अपने समय को शास्त्र के चर्चा में बिताते थे यह रात दिन में केवल पहर भर सोते थे और अपना काम सधाकर भजन साधारण लोगों के उपकारार्थ सीधी बोली में बनाते थे "राम माला" नाम एक ग्रंथ इन्हों ने बनाया जिस में एक सौ आठ खंड है और प्रत्येक खंड में एक सो आठ भजन है अर्थात् सम्पूर्ण पुस्तक में ११६४ भजन है। इस पुस्तक में साधारण लोगों के उपकारार्थ अच्छे अच्छे विषय है। इसके सिवाय शिव, शिवा, गंगा, जमुना आदि के महात्म में बहुत भजन, कवित्त, सवैया, छंद, सोरठा, दोहा, चौपैया, पादाकुली आदि बनाये है।

शंकर चौबे बृद्धावस्था में अपने घर का काम काज बड़े बेटे जीवाराम को सौंप कर चिरान में चले आये और गंगा सरयू के संगम पर रहने लगे और हरि भजन करने लगे इस लिये यहां वाले अर्थात् चिरान वाले अब शंकर दास कहने लगे तब से यह शंकर चौबे के बदले शंकर दास कहलाने लगे। यहां आकर शंकर दास ने मतमतांतर का निर्णय अच्छी रीति से किया था अर्थात् भागवत मत, षड्बिध बैष्णवमत, पंचरात्रागम मत, बैखानस मत, कर्महीन बैष्णव मत, हैरराय गर्भमत, अग्नि वादिमत, सौर मत, महा गणपति मत, नव नीत गणपतिमत, उच्छिष्ट गणपति मत, स्वर्ण संतान गणपति मत, शक्ति मत, महालक्ष्मीमत, वाग् देवतामत, वामाचार मत, कापालिक

मत; कापालिकेक देशिमत, चार्व्वाक मत, सौगतमत, जैनमत, बौद्ध मत, मल्लारिमत, बिश्वक्सेन मत, मन्मथ मत, कुबेर मत, इन्द्र मत, यममत, बरुणमत, शून्य मत, लोक मत, गुणमत, सांख्यमत, योगमत, पीलुवादमत, कर्म्ममत, चंद्र मत, राहु मत, क्षपणक मत, पितृ मत, सिद्ध मत, गंधर्व मत, भूत बैताल मत, गरुड़ मत, मुद्गम्मद मत, आदि का नेह जान भेद जान भेद भली भांति से गये थे और सर्वदा रघुनाथ ही का ध्यान करते थे। इससे निश्चय हुआ कि ज्ञानियों से अपने मत को छोड़ना अभिष्ट नहीं है।

लोग कहते हैं कि एक बार शंकर दास सरजू (सरयू वा देवा वा देवहा वा घाघरा घर्घरा, घघरा) नदी में नहा कर अपने स्थान पर आते थे तो एक मुसलमान खैनी खा-कार थूक फेंका वह थूक इन पर पड़ गया इसलिये ये बिचारे जाकर फिर नहाये यह हाल देखकर उस दुष्ट मुसलमान ने फिर इन के देह पर थूक दिया ये जाकर नहाये इसी प्रकार से ये नहाकर आये और वह इनके देह पर थूक दे। जब सेतीस बार हो गया और बिना क्रोध किये ये नहा के चले आवें तो फिर उसने इनके देह पर थूका जब फिर ये नहाने को चले तो वह मुसलमान इनके पांव पर गिर पड़ा और कहा कि मेरा अपराध क्षमा हो मैंने बहुत बड़ा अपराधी हूं इन्हों ने कहा कि आप का अपराध क्या आप के कृपा से तो मैं परम पुनीत सरयू नदी में ३७ बार नहाया इस पर उस मुसलमान ने कहा कि महाराज मैं बड़ा अप-

राधी हूं कसूर क्षमा हो। शंकर दास ने कहा कि भाई अपराध तुमने तो कुछ किया नहीं क्षमा क्या करें अच्छा यदि अपराध किये होंगे तौभी मुझे मालूम नहीं कि क्या कसूर किये हो जाओ मैं क्षमा करता हूं।

कहते हैं कि उसी दिन से उस मुसलमान ने घरबार त्याग कर फ़कीर हो गया।

एक बार एक आदमी ने इनकी परीक्षा के लिये रास्ता पर एक थैली में कुछ रुपया रख कर उसके ऊपर यह लिख दिया कि जो कोई संतोषी हो वह इसे अपने काम में लावे शंकर दास की जब थैली पर दृष्टि पड़ी और उसको पढ़े तो बड़े आश्चर्य में आये कि जो कोई संतोषी होगा वह अपने काम में क्यों इसको लावेगा आखिर इन्हों ने यही निश्चय किया कि किसी विद्वान ने परीक्षा के लिये यह ढंग रचा है चले गये। इस थैली को कई एक आदमियों ने देखा और आकर शंकर दास से सम्पूर्ण हाल कह कर कहा कि महाराज आप बड़े संतोषी हैं उसे अपने काम में लाइये शंकर दास ने कहा कि भाई जो संतोषी होगा वह क्यों अपने काम में लावेगा यह काम असंतोषियों का है। मैं ऐसा काम कभी न करूंगा इतना कहकर एक दोहा बनाये।

नाम अर्थ के साथ हो, करनी भी कछु होय।
करनी जो तेहि हाय नहिं, कूकर कहिये सोय॥

पच्छिम से एक राजा हरिहर देव आया था शंकर

दास का हाल देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि महाराज जो यहां जो साधु आते जाते हैं उनके भोजन के लिये १०००) रु० लीजिये और फिर मैं घर पर जाकर कुछ प्रबंध करेंगे। यह सुनकर शंकर दास ने उस महाराज को बहुत कुछ आदर सन्मान किया और कहा कि आप की इस भक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हुआ पर मुझे रुपया की कुछ अवश्यकता नहीं और अब मैं घरबार छोड़कर यहां आया हूं कुछ धंधा नहीं करता हूं रुपये बिना काम बिगड़ेगा इस लिये आप से यह प्रार्थना है कि आप इस रुपये को लेकर लूले लंगड़े अंधे अपाहिजों को दे देवें तो बहुत अच्छा हो आखिरकार महाराज यही काम किये पर शंकर दास रुपया न लिये। ये क्षमावान् पुरुष सम्बत १८०६ में ८० वर्ष की अवस्था में परलोक को सिधारे।

शंभु साह सेठ का* जीवनचरीत्र।

इनको असल जन्मभूमि पूर्णिया में लोग बताते हैं और फिर कुछ दिन तक ये मुजफ़्फरपुर और कुछ दिन मुंगेर में रहे पर विशेष कर छपरा में रहे अतएव बहुत से लोग छपरा ही इनकी जन्म भूमि मानते हैं इन के पिता का नाम हरदेव दास था। ये बहुत गरीबी के साथ अपनी जिन्दगी को काटते थे यहां तक कि बार बार फांका पड़ते थे देह में रक्त का लेस तक नहीं था कोई आदमी इस

* सेठ श्रेष्ठ शब्द का अपभ्रंश मालूम होता है।

का बंदोबस्त नहीं कर सकता था जिससे सुख पूर्वक काल-क्षेप हो। इसी दुर्वस्थामें शंभु साह का जन्म सम्वत १७२३ में हुआ। इनके माता पिता किसी प्रकार से इनका पालन करते थे। न रहने का घर न बैठने का दरवाजा खाने पीने का कोई बंदोबस्त ही नहीं और इस में तीन आदमी का निर्वाह करना। इस देश का चाल है कि जो कुछ काम करते हैं वे पुरुष ही लोग स्त्री किसी के यहां काम करती नहीं और करती है तो नीचों की स्त्री और शंभुसाह लड़के ही ठहरे होता है क्या? तीन सेर मजदूरी हरदेव दास को मिलता था इसी में कपड़ा बनाओ नून तेल तर-कारी लकड़ी सब सामग्री इसी में करो कहां कैसे काम चले हा ऐसी बिपत्ति ईश्वर किसी को न दे। इसी प्रकार शंभुसाह कोई ११ वर्ष के हुए और कहने लगे कि मैं कुछ काम करूंगा तब हरदेव दास * खाने कपड़ा पर एक बनिये यहां रख-वा दिये। उस बनिये के यहां एक ब्राह्मण रसोईदार रहता था उसी से कैथी वर्णमाला और कुछ देशी हिसाब सम-यानुसार पढ़ते थे और अपने काम को बड़े चालाकी के साथ करते थे। एक दिन की बात है कि जिस बनिये के यहां यह नौकर थे उस का लड़का खेल रहा था कि एक भैंस बहुत जोर शोर से दौड़ी हुई चली आती थी यह देखकर शंभु साह ने उस लड़के को छापलिया और इस आपत्ति से उसके बचाया यह समाचार सुनकर उस बनिये ने इन को

* दास का पदवी शूद्र का है और ये लोग अपने को वयस लगाते हैं शायद पहले लोग शूद्र ही हों समयानुसार अपने को वयस कहते हैं।

१००, रु० इनाम दिया यह उस रुपये को लेकर अपने बाप हरदेव दास के पास गये और रुपया दिये। तो हरदेव दास ने बहुत कुछ घबड़ाये कि शायद इस ने चोरी कर रुपया न लाया हो पर जब पूछा तो निश्चय हुआ कि यह रुपया इस ने कोई बुरे काम से न लाया किन्तु अच्छे काम से लाया है तब तो बहुत कुछ सराहना किया और उपदेश दिया कि बेटा ऐसे कामों को करोगे तो अवश्य संसार में बड़े प्रतिष्ठा पाओगे और नेक आदमी को सब कोई चाहता है इन बातों को सदा स्मरण रक्खो अर्थात् रुखीबात किसी से बोलना न चाहिये कड़ी बात किसी को नहीं सोहाती, मधुरी बातों से सब प्रसन्न रहते हैं। भेंट होने होने पर सब से हंस कर बोलना चाहिये। कोई प्रतिष्ठित मनुष्य अपने यहां आवे तो उसे उठकर आगे से लेना कुशल प्रश्न पूछना स्वागत कहकर आसन देना बने तो अतरपान तम्बाकू आदि आदर की वस्तुओं से सन्मान करके प्रीति से बात चित्त करना और जाने के समय द्वारतक उसके साथ आकर पहुंचा जाना यह बड़ों की रीति है। अभिमान से बोलना अपने को बड़ा समझना सब की निंदा करना, बहुत अनुचित है। नम्रताई को सब सराहते हैं। चतुराई जिस से लोक परलोक सुधरे पुरुष वही है जो संपति बिपत्ति में धीर धरते हैं सपूत वही हैं जो अपनी कमाई से कुटुंब पालते हैं सेवक वही है जो मालिक के काम को अपना काम समझे धर्म्म वही है जो हृदय से हो स्त्री वही है जो सदा अपने पति के आज्ञा में रहे इत्यादि अनेक बात सिखाकर

कहा कि अब तुम कौन काम करोगे। शंभु साह ने हाथ जोड़ कर कहा कि यदि आज्ञा हो तो मैं कुछ व्यापार करूं क्योंकि श्रेष्ठ पुरुषों का वाक्य है।

व्यापारे बसते लक्ष्मीस्तदर्द्धं कृषि कर्मणि।
तदर्द्धं राजसेवायां भिक्षायां न कदाचन॥ १॥

अर्थात् व्यापार में पूरी लक्ष्मी बसती है इस से आधी खेती के काम में इस से आधी राजा की नौकरी में और भीख में कभी नहीं बसती। और संसार में अधिक करके लोगों का निर्वाह व्यापार ही से चलता है जो पदार्थ एक जगह उपजता अथवा बनता है उसे २री जगह लेजाने से उस की अधिक चाह होती है इसलिये व्यापारियों को देशांतर माल लेजाने से नफ़ा मिलता है। इस लिये मेरी इच्छा है कि व्यापार करूं। हरदेव दास ने कहा कि व्यापार करने के लिये बहुत कुछ रुपया चाहिये मेरी इच्छा है कि तुम तब तक बुद्धिमानी के साथ दूकान करो तो बहुत अच्छा हो इस बात को शंभु साह ने मानलिया और पहले नून तम्बाकू गुड़ की दूकान की और बुद्धिमानी से काम करने लगा पहले कुछ दिन इनकी दूकान न चली क्योंकि यह एक ही दाम कहते थे पर कुछ दिन के बाद जब प्रगट होगया कि ये एक ही दाम कहते हैं तो सब से अधिक इनकी दूकान चली और यह थोड़े ही दिनों में अनाज का ब्योपार किये इसमें भी कुछ लाभ हो गया जब इससे इनका मन बढ़ा तो तुरंत ही कपड़ा कागज़ की दूकाम की और अपने माता पिता को कारबार से रोक कर सब काम आप ही करने लगे। और

अब तो कई एक नौकर भी इनके यहां रह गये पर क्या हो यह तो सब कोई जानते हैं कि जो आदमी जैसा होता है उस को वैसा काम देना उचित है यह एक नौकर के भरोसे पर बहुत कुछ काम छोड़ दिये थे और उसको तम्बाकू पीने का अभ्यास था। एक दिन तम्बाकू पी रहा था कि अकस्मात् नींद पड़ गई और आग उड़कर दूकान में लग गई इस से बिल्कुल दूकान जल गई और सब वस्तु नष्ट होगई। हरदेव दास बहुत घबराये पर शंभु साह ने धैर्य्य धरकर कहा कि पिता जी इस में सोच करना व्यर्थ है अब ऐसा काम करना चाहिये कि जिस से फिर ऐसा भूल न हो और बचे हुए वस्तुओं को फिर व्यापार द्वारा बढ़ाइये। यद्यपि शंभुसाह ने बहुत कुछ यत्न किया पर हरएक कामों में घाटा उठाना पड़ा। यह फिर भी बहुत तकलीफों के साथ छपरा में आकर रहने लगे और कारबार जारी किये। थोड़े ही दिनों के बाद कुछ लाभ होने से फिर इन्हों ने शोरा का कारखाना जारी किया कहते हैं कि इस में बहुत कुछ लाभ हुआ तब फिर इन्हों ने बंगाले से नमक मगाना शुरू किया इस में भी कुछ लाभ हुआ फिर इन्हों ने छपरा के इलाके से शोरा, सरसो, तिसी, चिनी, आदि खरीद कर बंगाले में भेजने लगे और बंगाले से नमक, कसइली, नारियर आदि मंगाने लगे कहते हैं कि साल दो साल के अन्तर में २८ नावें इन को चलने लगी और देश देशांतर में आदमियों को भेज कर तिजारत का प्रबंध करने लगे जो चीजें जहां को बहुत यत से होती थी मंगाते थे दिल्ली, लखनौ, बनारस, आगरा,

पटना, ढाका, उज्जैन, इंदौर, मथुरा अजमेर, जैपुर, जोधपुर, भरतपुर, भागलपुर, प्रयाग, कानहपुर आदि शहरों के प्रसिद्ध २ वस्तुओं को मंगाते थे और जो वस्तु वहां खर्च होती थी उसको यहां से भेजते थे इस व्यापार से लोग कहते हैं कि शंभुसाह ने ३ लाख रुपया इकट्ठा किया और सामर्थ्य भर अपनी दूकानें जहां तहां रखनेमें बाज़ न आया। इसी प्रकार से यह अपार व्योपार को यहां तक किये कि लोग कहते हैं कि ६७ लाख रुपया इकट्ठा कर लिये और सेठ कहलाने लगे। आज कल बहुधा लोग ऐसे पाये जाते हैं कि रुपया तो इकट्ठा करते हैं पर जाल फरेब के साथ और ये बिचारे कभी किसीसे एक पैसा तक बेइमानीसे न लिये।

यह तो स्पष्ट ही है कि ये कैसे निर्धन और सहायता हीन थे पर देखना चाहिये कि व्यापार के द्वारा कहां तक बढ़ गये और इस बढ़ने पर कौन कौन काम किये वे सब आगे लिखे जांयगे।

इनको अपनी बिती हुई दशा याद थी इसलिये ये किसी गरीब को नहीं सताये बल्कि जितने भूखे प्यासे लूले, लंगड़े आते थे सब को खिला पिलाकर आप खाते पीते थे जो कोई गरीब भाई वा और कोई इनके यहां आता था उस को दश पांच रुपया देकर न बिदा करते थे बल्कि ऐसा कोई धंधा वा राह बतादेते थे जिस से वह बिचारा अपना जिन्दगी भली भांति से काट लेता था और हरेक आदमियों को जहांतक बनता था यही उपदेश करते थे कि गरीबों को पालो इनको धंधा लगाओ लूले लंगड़े को खाने पीने को दो।

इनके यह नियम था कि जो कोई गरीब दुखी आवे उसे खास अपने पास बुलाकर जो कुछ देना होता था देते थे और बहुत से लोगों को अपनी दशा कह कर व्यापार के पंथ पर भी चलाते थे। इनके बुद्धि भी लाइक प्रशंसा के है। जिस बात को एक बेर सुन जाते थे यह कभी भूलता नहीं था। एक बार ये दुर्गा पाठ सुनते थे लोग कहते हैं कि कि सुनने के साथ ही याद हो गया॥

एक बार इन्होंने लकड़ी का रोज़गार किया इस में भी बहुत कुछ लाभ किये और फिर रहरी के खूंटी को मंगाकर बिकवाते थे इस में भी अत्यंत ही लाभ हुआ। इसके बाद लोग कहते हैं कि कुछ गांव भी किसी महाराज से ठीका लिये थे इसमें भी बहुत कुछ लाभ हुआ। कुछ नौकरों को रख कर बूटवल से घोड़ा मंगवाये थे इसमें तो सब से बढ़ कर लाभ हुआ इस लाभ के होने से सरेसा वा सरईसा से (तिहुत में यह एक परगना है) घोड़ा और बकुछर से बच्छा मंगाकर हरिहर क्षेत्र, ब्रह्मपुर, भृगुआश्रम (ददरीक्षेत्र) आदि मेलाओं में भेज कर अत्यंत रुपये कमाये लोग कहते हैं कि दिनाज पुर आदि से हाथी मंगाकर भी बिकवाये थे। इस के सिवाय जौन जौन काम किये थे सब में भली भांती से लाभ उठाये और व्यापार करने में कोई बाज़ न आये और सर्वदा व्यापार में लीन ही रहते थे। दासों को सदा प्रसन्न रखते थे। जहां तहां के राजा महाराजाओं को बराबर इन्हीं के यहां से सौदा जाता था। और सब कोई इनको कहे

हुए बात को सत्य मानते थे और इनकी सत्यता पर बि-
श्वास रखते थे।

इनका एक लड़का भगवान दास नाम करके था जिस
ने छपरा में भगवान बाजार बसाया है और बराबर शंभु
साह के आज्ञा में रहता था। शंभु शाह अपने पिता को
जैसा चाहिये वैसा सुख दिया और ये उनके ज़िन्दगी भर
उनके आज्ञानुसार रहा। मरने पर काम क्रिया भी बड़े
धूम धाम से किया॥

लोग कहते है कि शंभु साह ऐसे कोमल थे कि यदि
कोई गाली भी दे तो वे इसको हंस के भुला देते थे॥

ये कवि पंडित को भी बहुत मान करतेथे और रात दिन
ग़रीबों को ऐसे२ उपदेश बताते थे जिस से उसकी ग़रीबी
दशा सुधरे। ये उदार पुरुष १७८० ई० में परलोक को
सिधारे और इस असार संसार में अपनी चांदनी सी कीर्ति
छोड़ गये॥

पंडित नाथ पाठक का जीवन चरित्र।

इनकी जन्मभूमि ज़िले गयामें जहानाबादसे ३कोस दक्खिन
एक छोटासा गांव मुहम्मदपुरमें है। यह गांव इतना छोटा
और अप्रसिद्धहै कि शायद जहानाबाद के रहनेवाले लोग
इसका नाम जानते होंगे। ये जात के साफुहियो ब्राह्मण थे
लिखने पढ़नेमें बहुत चतुर थे लोग इनकी जोजो कहानियां
कहते हैं वेतो बिश्वास लायक है नहीं परहां यह अलबत्ता

है कि ये प्रसिद्ध पंडित थे। टिकारी का राजा मित्रजित सिंह के यहां रहते थे। एक बार किसी प्रसिद्ध दिग्‌बिजयी पंडित को शास्त्रार्थ में परास्त किये थे तभी से इनका नाम और भी प्रसिद्ध होगया। इनके टिकारी रहने से और जहां तहां के पंडितों से मुलाकात होने से चातुरता अधिक होगई थी। ये विद्यार्थियों के पढ़ाने में बहुत कुछ जी लगाते थे इसलिये इनके साथ कोई २०० से ऊपर विद्यार्थि रहते थे और ये विद्यार्थियों के खाने पीने का प्रबंध इधर उधर के रईसों से चंदा करके कर लिये थे। बाद इस के ये अपने घर पर आकर पाठशाला बनवाये जो आजतक उन्हीं के नाम से बोला जाता है अर्थात् नाथ पाठक की पाठशाला कहलाता है। इन के एक लड़का लक्ष्मी नारायण पाठक थे जो नीच जातियों संगतिमें पड़कर लिखने पढ़नेमें कुछ जी नहीं लगाते थे और बिरहा, आल्हा, खेमटा, दादरा, बारहमास, चतुर्मासा, झूलन, मलार, सावनी, कजली, लावनी, ठुमरी पूर्बी आदिको गाया करते थे। इन की यह दशा देखकर पंडित नाथपाठकजीके तबिअत निहायत चिंता ग्रसित हुई खानेपीने पहरने आदिका सब सुख फिका लगने लगा और बहुत चिन्ता हुई यहांतक की रातको नींद नहीं पडती थी और यही ख्याल रहताथा कि किस उपाय से इस को पढ़ावें। एक दिन किसी मित्र ने कहा कि पाठकजी आजकल आप क्यों चिंतित रहते हैं इस का कारण कुछनहीं मालूमहोता कि क्या है कृपा कर बताइये तो मुझ से जहांतक होगा मैं कोशिश करने में बाज़ नहीं

आऊंगा। नाथ पाठक ने कहा भाई बात बहुत कठिन है और इस का होना बहुत कठिन है इसलिये मैं आप से क्या कहूं कहा नहीं जाता जब उसने बहुत हठ किया तो इन्हों ने कहा कि भाई मेरा लड़का नीचों के संगति में पड़ कर बिगड़ गया पढ़ने लिखने में ध्यान नहीं देता बराबर इधर उधर अहीरों के साथ घूमता फिरता है और मैं पढ़ने के लिये कहता हूं तो सुनी अनसुनी कर देता है मैं मार पीट इसलिये नहीं करता हूं कि अवस्था अब उसको लग भग सोलह वर्ष की होगई शायद कहीं चला जाये तो क्या करूं इसलिये चिंतित रहता हूं कहिये क्या किया जाय तब उस ने कहा कि मैं इसका कुछ उपाय बताऊंगा इससे बढ़कर लोग मूर्ख हुए हैं पर सुधारने वाला ने सुधार लिया है। इस बिषय को मैं एक कथा कहता हूं आप ध्यान देकर सुनिये।

मगध देश में एक बिजय केतु राजा परम धार्मिक और विद्या रसिक था उसके पुत्र का नाम बंशभूषण था सो राज-पुत्र का चित विद्या पढ़ने में न लगता था राजा ने उसके पढ़ाने का बहुत उपाय किया परन्तु कुछ गुण कारी न हुआ जब वह राजपुत्र कुछ बड़ा हुआ तब जो कोई बिद्वान उसे विद्या पढ़ने के लिये शिक्षा करने को जाता उसे बाण से मार देता इस प्रकार कितने मनुष्यों को उसने घायल किया राजा को इस बात की बड़ी चिंता हुई कि यह राजपुत्र विद्या से हीन हुआ किसी समय राजा अयोध्या में गया था वहां उसने प्राज्ञमणि त्रिपाठी से राजपुत्र की सब व्यवस्था कही तब प्राज्ञमणि ने कहा कि मैं राजपुत्र को विद्या पढ़ाऊंगा

परन्तु मेरा भेद किसी से न कहियेगा सो किसी समय प्राज्ञमणि राजा विजय केतुकी राजधानीमें गया और उसने देखा तो राजपुत्रकी रुचि गोली खेलनेमें विशेष थी तब प्राज्ञमणि भी राजपुत्र के साथ गोली खेलने लगा जब कुछ दिन में उस से चित्त मिल गया तो प्राज्ञमणि ने राजपुत्र से कहा कि सब गोलियां एक सी होती हैं यह अच्छी बात नहीं गोलियां पृथक् २ प्रकार की हों और उनके नाम भी अलग २ होने चाहियें और उनमें ऐसे चिन्ह हों जिन से सब पहचानी जा सकें और कई गोलियों का एक वर्ग होना चाहिये सो इस बात को राजपुत्र ने अंगीकार किया तब प्राज्ञमणि ने बहुत सी गोलियां बनवा के उनपर रंग से एक एक अक्षर बनवा दिया और पांच २ गोलियों का वर्ग ठहराया और एक एक वर्ग की गोलियों को एक थैली में रक्खा जैसे (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) पांच अक्षरों की पांच गोलियां एक वर्ग की ठहरीं ऐसाही (चवर्ग) (टवर्ग) (तवर्ग) (पवर्ग) (यवर्ग) (शवर्ग) (अवर्ग) की गोलियां बनवाई और खेलने के विधान में भी कुछ अधिकता की और जिस गोली पर जो अक्षर बनवाया था उस गोली का वही नाम हुआ जैसे एक गोली का नाम (क) और २री का (ख) इसी प्रकार उस विद्वान ने मात्रा सहित और मिले हुए अक्षरों की गोलियां बनाईं कुछ दिन के पीछे उन गोलियों के खेलते २ संपूर्ण अक्षर लड़कों की दृष्टि पर चढ़ गये परन्तु वे अक्षरों की गोलियों का नाम समझते थे एक दिन प्राज्ञमणि ने एक श्लोक लिख के उसी खेल के स्थान में फेंक दिया उसको

किसी लड़के ने पाया उसने राजपुत्र को दिया और कहा कि इस पत्र में बत्तीस गोलियों के से चिन्ह बने हैं राजपुत्र भी उस पत्र को देख अचंभित हुआ और प्राज्ञमणि से पूछने लगा कि यह क्या बात है कि इस में बहुत से गोलि-के चिन्ह बने हैं प्राज्ञमणि बोला कि इन्हीं गोलियों के चिन्हों को पत्र पर लिख देने से बहुत सी बातें बन जाती हैं जैसे इस पत्र में हैं तुम उसे पढ़ो तो मैं इस को युक्ती बतलाऊं यह बात सुन राजपुत्र गोलियों का स्वरूप समझ अक्षरों का उच्चारण करनेलगा और उसमें यह श्लोक लिखा था॥

*रूप यौवन सम्पन्ना: विशाल कुल सम्भवा:।
विद्या हीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इवकिंशुका:॥ १ ॥

जब श्लोक का स्वरूप जान पड़ा तो राजपुत्र ने कहा कि यह मेरी समझ में नहीं आता मुझे समझाइये प्राज्ञमणि बोला कि इसका अर्थ यह है कि सुन्दर रूप और सुन्दर अवस्था और सुन्दर कुल वाला मनुष्य विद्या हीन होने से नहीं सोभित होता जैसे बिना सुगंध ढाक का फूल। यह सुन राजपुत्र को बड़ी ग्लानि हुई और कहने लगा कि हाय मैंने विद्या नहीं पढ़ी तब प्राज्ञमणि ने सब भेद की बात कह दी कि मैंने केवल तुम्हारे पढ़ाने के लिये गोलियों के द्वारा अक्षर सिखाया है अब तुम शीघ्र शास्त्र को पढ़ सकते हो यह बात सुन राज पुत्र उस विद्वान के चरण पर गिर के धन्यबाद करने लगा कि आप हमारे परम उपकारक गुरु हैं मैं आप से उरिण नहीं हूं क्योंकि आपने ऐसा उपाय किया कि मेरा खेल भी नहीं रुका और विद्या

पढ़ने के योग्य मुझे बना दिया और अनायास सम्पूर्ण अक्षरों को सिखाया अब वह उपाय कीजिये कि शास्त्रों में भी मेरी प्रवृत्ति हो। इतनी कथा कह उस मनुष्य ने कहा कि इस बातको सोचिये तो कैसेकैसे लोग सुधरगये हैं आप भी कोई ऐसो ही उपाय कीजिये तब नाथ पाठक ने इस बात को सुन कर कहा कि मित्र आप ने उपाय तो अच्छा बताया अब मैं उसे सुधार डालूंगा। यह कह कर नाथ-पाठक ने "सारस्वत" को बिरहा बनाना शुरू किया जब एक बिरहा बना कर अपने लड़के को दिया तो उसने बड़े चाव भाव से याद किया तब नाथ पाठक ने सम्पूर्ण सारस्वत को भाषा छंदों में बना कर याद कराये और लक्ष्मीनारायण पाठक ने भली भांति से याद किया। जब अर्थ उदाहरण आदि भली भांति से आ गया तो नाथ पाठक ने सब हाल लक्ष्मीनारायण पाठक से कह सुनाये ये बिचारे उन के पाओं पर गिर पड़े और कहा कि पिता का जो कुछ धर्म है आपने मेरे साथ को अब जो आज्ञा हो मैं करूं कहते हैं कि नाथ पाठक ने उन को पढ़ने को कहा ये बिचारे खुशी पूर्वक पढ़ कर बड़े भारी पण्डित हुए और फिर जाकर टिकारी के राजा मित्रजितसिंह के यहां रहने लगे और नाथ पाठक सूचित हो कर अपने काम को करने लगे। नाथ पाठक की इस चालाकी का हाल सुनकर राजा मित्रजितसिंह ने हजार रुपया इनाम दिया और अपने यहां के पण्डितों से पण्डितवर का उपाधि भी दिलवाया। ये राज्य मान पण्डित सम्वत् १८४० में परलोक को सिधारे।

कवि राज चंदनराम का जीवन चरित्र।

इनकी जन्म भूमि ज़िला आरा परगना आरा में अम्बा नगर में है। ये ज़ात के बंदीजन थे। इनके वंश वाले सर्वदा से काव्य करते चले आते थे। और वास्तव में यही इन लोगों की जीविका थी। चन्दन राम के परपितामह देवसिंह थे। और इनके पितामह श्री हरिकृष्ण सिंह थे और इसके पिता का नाम कवि राजाधिराजसाहब राम था। साहबराम को अनेक राजाओं से अनेक प्रकार की उपाधि मिली थी ऐसेही किसी राजा के सभा में बहुत से कवियों के परास्त करने से कबिराजाधिराज की उपाधि मिली थी। इन्हीं ने 'रसदीपिका' आदि तीन पुस्तक बनाये हैं। अब इनका हाल छोड़ कर चन्दन राम ही का हाल लिखते हैं। चन्दन राम का जनम सम्वत् १७८६ चैत शुक्ल राम नौमी के हुआ था। साहब राम ने इनको बालावस्था में खेल कूद के बदले अच्छी२ मन बहलाव की बातें सिखायी और थोड़े ही दिनों के बाद 'अमर कोष' और 'धनंजय कोष' पढ़ाकर 'लघुकौमुदी'। पढ़ाया जिस समय चन्दन राम पाठशाला में पढ़ते थे उस समय कई एक विद्यार्थि इनके साथ पढ़ते थे। पर उन लोगों से इन्हीं ने परिश्रम द्वारा अपनी विद्या को बहुत बढ़ाया। इनके साथ वाले विद्यार्थि जब सो जाते थे तब भी ये कोई ४ वा ५ घड़ी तक पढ़ते रहते थे। और प्रातः काल में भी सब से पहले उठकर अपनी पाठ याद कर लेते थे। इस उपाय से अपने साथियों से दो.वर्ष

के अन्तर में बहुत बढ़ चढ़ गये । 'सिध्यान्तकौमुदी' पढ़ने के बाद 'छन्दोमंजरी ॥ 'वृत्तरत्नाकर' पिंगल पढ़कर न्याय में 'तर्कसंग्रह' 'कारिकावली' 'कुसुमाञ्जली' आदि देखकर 'अग्निपुराण' 'गरुडपुराण' 'मत्स्यपुराण' 'मारकण्डेयपुराण, 'विष्णुपुराण' 'शिवपुराण' 'रामाश्वमेध' 'लिङ्ग पुराण' 'देवी-भागवत, "बाल्मीकीरामायण" "हरिवंश" "महाभारत" "शंकर दिग् बिजय" "मनुस्मृति" "याग्यवल्क्य स्मृति" "पाराशरस्मृति" "वशिष्टस्मृति" "व्यास स्मृति" "गौतम स्मृति" "तिथिनिर्णय" "धर्म सिन्धु" "निर्णय सिन्धु" आदि को पढ़कर तब अपने पिता के आज्ञानुसार बनारस में गये और वहां "भाव प्रकाश" "सुश्रुत" "चरक" "लोलिम्ब राज" "बाग्भट्ट" "चक्रदत्त" "माधव निदान" "शार्ङ्गधर संहिता" "योग चिन्ता मणि" "मदन पाल" आदि को देख भाल कर अपने घर चले आये और यहां प्रसिद्ध वैद्यों में गनाये पर इनके पिता राजाधिराज कविराज साहब राम ने इस व्यापार में रोका और कहा कि अबही तुम कुछ दिन और पढ़ो विद्या पढ़कर केवल रुपया प्राप्त करना यह फल नहीं है किन्तु इसका अनंत फल है अतएव अब तुम शीघ्र पढ़ो, यह कहकर "रघुवंश" "मालती माधव" "मुद्रा राक्षस" "मृच्छकटिक" "विक्रमोर्वसी" "शकुन्तला" "हनुमन्नाटक" "मेघदूत" को पढ़ाकर कहा कि बेटा थोड़े दिन और विद्या भ्यास करो और अब मेरा अन्त समय आया सो श्री हरि का सेवन बनारस जाकर करूंगा । और तुम १९ बरस के हुए इस पर भी जब घर का काम धंधा न चेतोगे

तो कब चेतोगे अच्छा अब मैं जाता हूं पर इन बातों को अवश्य याद रखना और कभी इसको उलटा न करन॥

सज्जनों को संगति स्वीकार करना और विज्ञों की शिक्षा पर ध्यान देना, किसी की बुराई न करना, जहां तक हो २रे की भलाई करना, ऐसी जगह न जाना कि जहां लांछन लगे, अच्छा चाल चलन और छोटे बड़े का विचार रखना, थोड़े में सन्तोष करना, प्रिय वाणी बोलना, नम्रता रखना, शत्रु को मित्र बनाना, मूरख को शिक्षा देना, मार्ग च्युत को उपदेश से मार्ग पर लाना, बिपतिकाल में धैर्य्य रखना, धन के अभाव में सन्तोष रखना, विभव के समय में भी रघुनंदन राजकिशोर का ध्यान धरना और परोपकार करना, ईश्वर और मृत्यु को सदा स्मरण रखना, जो तुम किसी को उपकार करो और जो तुम्हारा अपकार करे इन दोनों को ध्यान में न लाना, काम करने के पहले उसका परिणाम बिचारना, कहना सो करना, स्वार्थ की मित्रता, सूम की सेवा, स्त्रियों से प्रीति युवावस्था की सुन्दरताई, थोड़ी प्रशंसा में प्रसन्नता, इन पांचों को तुच्छ जानना,। २रे की हानि से लाभ समझना, दंभ से अपने को धार्म्मिक समझना, दीर्घ सूत्रता और सुख में रहकर विद्या पाने की अभिलाखा करना ये तीनों मूर्खता के लक्षण हैं। अग्नि ऋण, रोग, शत्रु, इन चारों को थोड़ा नहीं समझना।

इसी प्रकार अनेक बातों को सिखा कर आप बनारस को चले गये। कवि साहब राम के बनारस जाने के बाद थोड़े दिन घर पर रहकर कवि चंदन राम भी बनारस

गये और जब तक साहब राम जीते रहे तब तक वहां रह-कर अपने पिता की सेवा किये और मरने पर दग्धादि क्रि-या करके अपने घर पर आये। यहां आकर इन्होंने घरका काम काज भली भांति से निबाहा और एक छोटा सा ग्रंथ शिव जी के बर्णन में अमात्रिक हरस्तुति, बनाया। इस छो-टी सी पुस्तक में एक हूं मात्रा नहीं है इसलिये अमात्रिक हरस्तुति नाम भी रक्खा।

कुछ दिन के बाद चंदन राम ने मन में ठहराया कि देशाटन करना और कवियों से मुलाक़ात करना बहुत अच्छी बात है। यह सोचकर चले तो पहले प्रसिद्ध कवि कालिदास के पुत्र उदय नाथ त्रिवेदी बनपुरा वाले के पास गये कहते हैं कि उदयनाथ त्रिवेदी (कविंद) ने इनको राजा हिम्मति सिंह देव बहादुर अमेठी वाले से जान पहचान करवा दिया और ये कुछ दिन अमेठी में रह भी गये लोग कहते हैं कि उदय नाथ त्रिवेदी ने एक ग्रंथ बनाकर राजा हिम्मतिसिंह देव बहादुर को दिया इस पर प्रसन्न हो कर राजा ने कविंद की उपाधि दी उसी समयमें चंदन राम ने बहुत कुछ राजा साहिब की प्रशंसा की तो इनको भी कवि राज की पदवी दी। कोई कोई कहते हैं कि राजा गुरुदत्त सिंह ने इनको कबिराज की उपाधि दी कोई कहते हैं कि भगवंतराईखीची ने कविराज की पदवी दी कोई कहते हैं कि महाराज गजसिंह आमेर ने कविराज की पदवी दी जो हो इसका निश्चय होना कठिन है कि कौन महाराजा इनको कबिराज की पदवी दी पर यह निश्चय मालूम

होता है कि कबिराज पद्वी इनको उदय नाथ त्रिवेदी के जरिये से मिला था॥

अमेठी से चलकर किशोर कवि, कृष्ण लाल से भेंट कर खुमान कवि चरखारी वाले से मुलाकात की और खुमान जी कबिताई से बहुत प्रसन्न हुए और वहां पर रह गये कुछ दिन रहने के बाद चन्दनराम ने खुमान जी से पूछा कि महाराज आप दोनों नेत्रों से सूर हैं और कविता करते हैं भला यह तो बताइये कि ये आंखें आप की अब मारी गई है वा एले ही से हैं खुमान जी ने कहा भाई मैं जन्म का अन्धा हूं पर एक सन्यासी के कृपा कटाक्ष से मैं काव्य करता हूं कुछ दिन एक सन्यासी यहां आकर रहे मैं उन की सेवा की तो वे मुझे काव्य करने की रीति बता दिये और इस अनाथ दीन जन को सनाथ किये। चन्दन राम वहां से बिदा हो कर चन्दनराय से मुलाक़ात कर दत्त, पद्माकर, धीर, वेनी कबि, भंजन कबि, मान कबि आदि से मुलाकात कर अपने घर पर लौट आये।

चन्दनराम ने एक बार नंददास कृत "नाममाला" और "अनेकार्थ" को शुरू से आखिर तक पढ़गये तो मालूम हुआ कि इस ग्रन्थ में भाषा जानने वाले को विशेष सहायता मिलती उसी समय मन में यह ठान लिये कि मैं भी एक कोष बनाऊं जिस से भाषा जाननेवाले को बिशेष लाभ हो यह सोच कर इन्हों ने एक ग्रंथ "नामार्णव" और दूसरा "अनेकार्थ" बनाया "नामार्णव" बहुत परिश्रम के साथ बनाया गया है इस सम्पूर्ण ग्रन्थ में ३४६

दोहा सोरठा मिला कर है पर ३३५ दोहे में केवल नाम लिखागया है बाकी में कवि ने अपना पता ठिकाना लिखा है "नामार्णव" याद करने में भाषा और संस्कृत दोनों में बहुत कुछ सहायता मिलती है भाषा में तो आज तक ऐसी पुस्तक कोई तैयार नहीं हुई। बिशेषता तो यह है कि इस ग्रन्थ के देखने से यौगिक अनेक प्रकार के शब्द बनाने आप से आप आ जाता है जिस से कवियों को कविताई करने में बहुत ही सहायता मिलती है। यह ग्रन्थ सब किसी के पढ़ने के लायक है। नामार्णव सम्वत् १८६६ में बना है। उस में यह दोहा लिखा है।

सम्वत् छ ऋतु पुरान, माधव कृष्ण त्रयोदशी।
मंगलवार सुजान, तासु समय पूरण भयो॥

"नामार्णव" के सिवाय "अनेकार्थ" भी देखने लायक है। इस में कवि ने बड़ी चमत्कारी के साथ संस्कृत के अनेक कोषों से इकट्ठा कर एक शब्द के अनेक २ अर्थ दोहों में इस अभिप्राय से बनाया है कि जिस के पढ़ने से लोग हिन्दी संस्कृत के कठिन से कठिन शब्दों और श्लेषों का अर्थ बहुत सुगमता से जान लें। यह पुस्तक हिन्दी और संस्कृत पढ़ने वाले को अवश्य संग्रह करने योग्य है। चन्दनराम ने अनेकार्थ में ३ बिभाग किये है १म भाग में एक में वा २ वा ३ दोहे में एक शब्द का अर्थ लिखा है और २रेमें एक दोहेमें दो शब्दका अर्थ लिखा है और ३रेमें एक दोहे में चार शब्द का अर्थ लिखा है। यह अनेकार्थ सम्वत् १८६६ में बना है। उस में यह दोहा लिखा है

सम्वत् रस ऋतु नाग ससि, आस्विन दशमी स्वच्छ।
ससि सुत बासर को भयो, अनेकार्थ अवलच्छ॥ १॥

अनेकार्थ का कई एक दोहा यहां पर लिख देता हूं जिस से उस की उत्तमता जानी जाय।

हरि शब्दार्थ दोहा।

सूर्य्य शुक्र के हरि किरिणि, इन्द्र हरित हरि भेक।
हय कपि यम बिधु बिष्णुहरि, जल अलि पवनअनेक १
श्रवण कमल धन शर धनुष, हरि कुरंग नभ काम।
पावकपय गिरि गजकनक, भिक शुक अहि हरिनाम २

सारंग शब्दार्थ।

पावक पंकज पीक पट, धन धनु घन घट चोर।
कनककठिन कुचकोरकरि, नभनगनव निसि नोर ९०
दादुर द्विज दृग दीप द्युति, बिधु बिष बीना बच्छ।
मदन मयुर मृदु मृग मधुप, गोहय हरि धनु श्वच्छ ९१
तारा तरुणी तन तड़ित, तरणि तेज ऋतु राज।
अर्थ अहै सारंग के, चौआलिस कबिराज॥ ९२॥

ऐसे ही दोहों मे यह अनेकार्थ भूषित है। कबिवर चन्दनराम कईएक राजधानियों में गये थे और उन राजधानियों से बहुत कुछ धन दौलत हाथी घोड़ा लाये थे ये घर पर आकर विद्यार्थियों को पढ़ाते थे और उन लोगोंके भाजनके लिये बक्सर, डुमरांव, जगदीशपुर, हरदी, मझौली, बलिरामपुर, बिजयपुर आदि से दो सौ रुपये महीने के चन्दा कराये थे और इसी से विद्यार्थियों का भली भांति से निर्वाह होता था।

ये बड़े दयालु थे इन के समय बयसवारे में और अवध के इलाके में अनेक छत्री लोग अपनी लड़कियों को जन्मते ही मार डालते थे चन्दनराम ने सोचा कि इन लोगों को साधारण तौर से जो शिक्षा दी जाय तो इस से कुछ लाभ नहीं इस लिये वहां पर रह कर इन्हों ने जीवहिंसा का निषेध शास्त्रों से किया जब वे लोग इस बात को स्वीकार कर लिये तो इन्हों ने लड़कियों के मारने का दोष कह सुनाया कहते हैं कि इन के समय में यह बात विद्वानों के यहां उठ ही तो गई और इन के जीते जी तक यह बात बंद रही। चन्दनराम कविही नहीं थे किन्तु देशहितैषी भी थे। ये जिस राज्य में रहते थे वहां पर अवश्य उन्नति करते थे। इन की इच्छा थी कि जिस से देश की बुराई छूटे और भलाई बढ़े और इसी चिन्ता में बराबर रहते थे। एक बार एक मूर्ख ने चन्दनराम से कहा कि मैं अपने लड़का को फारसी पढ़ाता था वह मर गया इस लिये अब मैं अपने घर भर में किसी को फारसी नहीं पढ़ने देता हूं क्योंकि वह मुझे सहती नहीं। चन्दनराम ने सोचा कि इस को ऐसा उदाहरण देना चाहिये कि जिस से ये अपने यहां फारसी पढ़ाने का बन्दोबस्त करें। चन्दनराम ने उस से पूछा कि भाई तुम क्यों नहीं पढ़ाते हो उस ने कहा यह विद्या मुझे सहती नहीं। चन्दनराम ने फिर पूछा सहती का अर्थ मैं नहीं समझा मुझे कृपापूर्वक बता दीजिये उस ने कहा कि फलती नहीं। यह सुन कर चन्दनराम ने कहा कि अगर आप को चार बेटे वा बेटी हों और व्याह के

समय मर जांय तो क्या व्याह आप को न सहैगा और आप शेष लड़के या लड़कियों का व्याह न कीजियेगा यह तो साफ मालूम होता है कि व्याह आप न कीजियेगा यह सुन कर बिचारा चुप हो गया और तुरत ही अपने लड़के को पढ़ने के लिये मियां जी के पास भेज दिया।

इसी प्रकार से चन्दनराम ने कई एक आदमियों को भ्रमजाल से छोड़ाया और अपना यश फैलाया। ये सुशील पुरुष सम्वत् १८७० में परलोक को सिधारे।

शंकर दत्त झा का जीवन चरित्र *।

इनकी जन्म भूमि ज़िला भागलपुर परगना कबखंड मौज़ा गडौल वा गड़ौल में है। ये ज़ात के मैथिल ब्राह्मण थे। इनके पिता बहुत ग़रीब थे। यहां तक की शंकर दत्त झा लड़कपन से ले कर १५ बर्ष तक भैंस की चरवाही करते थे। १६ वें बर्ष की अवस्था में इस काम को छोड़कर दर्भंगा के इलाक़े बंगरहटा नामक गांव में आये और यहां बाबू राधेकृष्ण सिंह के यहां २) रु० महीना पर प्यादा के काम पर नौकर हुए यहां इनको कुश्ती को शौक़ हुई और बचे हुए समय को इस काम में लाने लगे। जहां जांय वहां इसकी चिंता सदा बना रहे रात दिन इसी का-म में ध्यान लगा रहता था काम कोई करें पर हर वक़्त इसकी चाह रहती थी। बंगरहटा मौज़ा में कुश्ती के बिशेष

* तिरहुत में ओझा को झा कहते हैं। इस प्रकार के ब्राह्मण में मैथिल एक प्रकार के ब्राह्मण हैं।

जानने वाले आदमी नहीं थे क्योंकि यह विद्या ऐसी नहीं है कि सब किसी को आवे या हज़ार या दो हज़ार रुपये ख़र्च करने से मिल जाय। इसके लिये देश देशांतर घूमना और अपने समय को इसी चर्चा में बिताना और कुश्ती जानने वाले की टहल करना इत्यादि बातें हो तो अलबत्ता कुछ हाथ लग सकती है। यह विद्या बड़े २ राजाओं को भी विशेष परिश्रम के साथ मिलती है पर साधारण को कौन बतावे। २रे आज कल के अमीर लोग इस विद्या को या सिपाहगिरी को हलकी समझते हैं और इसके हासिल करने में इज्जत जाने का डर दिखलाते है तिस पर भी चिहुत में तो इसकी विशेष चाल है। हां राजपूताना, बैसवारा पच्छिम के राजाओं में और सरोवार या ग़ाज़ीपुर भोजपुर में इसकी कुछ रिवाज़ है, शंकर दत्त झा इसके लिये बहुत चिंतित थे और जो कुछ रुपया पैसा हाथ आता था उसे नटों को देकर कुश्ती सिखते थे। यह तो सब किसी पर प्रगट है कि नट लोग बहुत तो दो चार दाव पेंच कुश्ती का जानते हैं इसपर भी किसी को बताते नहीं। क्योंकि यदि वे बतावें तो इससे उनकी जीविका जाय २रे गंवारों ने यह बात सोच ली है कि जो चीज़ें गुरु को आता है उसे वह अपने चेले को बतावे पर सब नहीं एक तो अवश्य उस में छिपा रक्खें और यही बर्ताव लोग करते हैं सोचने की बात है कि यदि १०० चीज़ें किसी के पास हो और उसमें उन्नति को कौन कहे एक एक क्रमशः हीन होती जाये तो अवश्य थोड़े दिनों में वे लोप हो जायगी यह बात विशेष

कर कुश्ती, गानविद्या में पाई जाती है और इसकी कोई * तब तक पुस्तक नहीं बनी थी जिस से शृंखला बद्ध इस का आना सबको सम्भव हो तिसपर कहिये शंकरदत्त झाको यह विद्या कैसे हाथ लगे। तीन बरस बगरहटा में रहने के बाद एक दिन अपने मन में सोचा कि इस इलाके में एक गांव नरहन है वहां के बाबू परमेश्वरी प्रसाद सिंह इस विद्या में निपुण हैं वहां चलकर उनसे इसकी प्रार्थना की जाय शायद वे मेरी चिंता को छोड़ावें। कहते हैं कि नरहन में आकर ये रहने लगे। और जो जो काम इनको करनेको सौंपा गया उसे भली भांति किये। इनके कामों से प्रसन्न हो

* कुश्ती का अब कई एक पुस्तक बन चुकी पर सबसे उत्तम पंडित नरदामोदर शास्त्री कृत नियुद्धशिक्षा १ला २रा भाग है अब तक ३रा भाग नहीं बना है पर जो दोनो बना है उस में नीचे लिखे हुए विषय देखने योग्य है।—कसरत, दंड, बैठक, जोड़ी (मुग्दल) करेला, गदा वा समतोला, बाहु, पंजा, दौड़, नाल, मलखम, उड़ी, मलखम्भ गड़ा मलखम्भ लटकौवा मलखम्भ बेतका मलखम्भ, पकड़, खड़े दाव, धक्का, कंजा, पेरउटान, झटका, पंजा तोड़ बैठक, गर्दन तोड़, गर्दन घुमाव, दस्ती, बाहु तोड़, धोबी पछाड़, बाहु मरोड़, झोली, हाथ बांध कर टांग मारना, कहुनी उड़ान की टांग, मुर्डीबांध, गर्दन बांध, कहुनी उड़ान की डुब, पंजा मरोड़ कहुनी उठाव, गंगलोड़ा, तिपाई वा कैचीबांध के यग, पिछाड़ का कमचर मोखी, पीछे से चैर खींच कर टांग, हलके सामने का गर्दन मरोड़, गर्दन मरोड़ की टांग, बागरा, बगली लंगोटखोलुआ, सीनातोड़, मोजे की टङ्गड़ी, पीठ पर का सीमा, भीतरी पांव की थाप, पछाड़ भुज या बाहु घुमाव, गोदी या गर्दन पाव हाथ बंध, कसकी गोदी, कमर सलाई, एक लत्ती छपाई वा घोड़ा, उखाड़ या घोड़ सवार वा पैर चढ़ान, तबक फाड़, उधार वा उखेड़, तबक फाड़की टंगड़ी वा टेवल, खड़ा दसरंग या हनुमन्त ध्वज, झोका या झाड़, तमच्या की टांग, पाट की

कर बाबू परमेश्वरीप्रसाद सिंह ने पूछा कि तुम सुख से रहते हो। इतनी बात को सुन ये बिचारे हाथ जोड़ कर कहा हे करुणासिन्धु पेट तक तो भरती नहीं और सुख को कौन कहे। पर हां यह अलबत्ता है कि आप के यहां यह गुलाम रहता है तो अवश्य सुख होगा। क्योंकि किसी ने कहा है दो०—महा बिटप को सेइये, सुख उपजे अवनीस। जो न क्रम बस फल मिले, छांह रहे तो सीस॥ १॥

इस दोहे को सुन कर बाबू परमेश्वरी प्रसाद सिंह ने अपने सामने खिलाने लगे और कुश्ती को सिखाने लगे। शंकरदत्त झा का मन कुश्ती में खूब लगता था इस लिये बहुत जल्द में इस विद्या में प्रवेश कर गये और बराबर बाबू परमेश्वरी प्रसाद सिंह के साथ रहने लगे। बाबू परमेश्वरीप्रसादसिंह ने भी जहां तहां के रईसोंसे मुलाकात

टंगड़ी, डिबिया टंगड़ी, कमर की टंगड़ी, गर्दन की टांग, कूदे की टांग, सामने की खड़ी बैठक पिछली बैठक, कलाजंग या चित पछाड़, लंगोट या काढ़नी, झटका वा गर्दन झाट, आवना, चक्कर वा मोहड़ा घुमाव; एक दस्ती, मुंह तोड़, हाथ तोड़, हाथ का चढ़ाव, चरखे का गलखोडा, छाती के डंडे, पीठ के डंडे, एक टांग, पेट के डंडे वा हाथी मुद्गार, झोंका टंगड़ी का, एक हत्थी हलक, हाथ मरोड़ कलाजंग, ठोकरें, दुगर्दनिया बैठक, इमान परसम उखेड़, लपेट कलन्दर बाव, फिरकी वा दसरंग, आगेकी उखेड़, मीजा, कचकी उखेड़ नकी, सामने के पट्ट, बाल सांगड़ा बगली, कमर बंध वा मसका, पट्ट पछाड़, पट्ट बैठक, एक पट्टा बांह मरोड़ का झोंका, बांह का लचका, घोड़ा पलाण, आदि इस में एक एक के अनेक भेद हैं और इन सबों के तोड़ भी लिखे गये हैं। आज तक ऐसी पुस्तक किसी भाषा में नहीं छपी थी बड़े परिश्रम के साथ बनाई गई है। बल्कि पं० दामोदर शास्त्री के जीवन का फल यही है।

कराये और कुश्ती में अच्छे शौक दिलाये । इन का देह तो सुडौल था ही था और परिश्रम करने से अच्छा हो गया शङ्करदत्त झा पहलवानों में गिनाने लगे कई एक जगह पर कुश्ती भी पछाड़े और जहां तहां से इनाम भी पाये ।

एक बार १२६८ फसली में बाबू परमेश्वरी प्रसाद सिंहके साथ हरिहरछेत्र के मेले में गये और वहां गवरनर जनरल लौर्ड नाथ ब्रुक और नेपाल के सरजंग बहादुर आये थे । जब ये लौर्ड नौर्थ ब्रुक से मुलाकात कर जंगबहादुर के यहां गये और वहां कुश्ती हो रही थी कि सरजंग बहादुर ने बाबू परमेश्वरी प्रसाद सिंह से पूछा कि आप के साथ भी कोई पहलवान हैं । इन्होंने शंकरदत्त झा को सब हाल कह गये । इसपर उन्हों ने इन की परीक्षा ली और बाबू परमेश्वरी प्रसाद सिंह से कहा कि आप इनको मुझे दीजिये कहते हैं कि बाबू परमेश्वरीप्रसादसिंह ने सरजंग बहादुरके कहने से शङ्करदत्त झा को उनके साथ कर दिया पर इन को इच्छा ऐसे परिश्रमी मनुष्य को अपने यहां से भेजने को न थी ।

सरजंग बहादुर शंकरदत्त झा को बहुत आदर मान करते थे खाने पीने के सिवाय २०० बिगहा जमीन जागीर इनको दिये थे अब वह ज़मीन इन के लड़के वाले के कब्जे में है ।

सर जंग बहादुर जहां जहां गये वहां २ शंकरदत्त झा को साथ लेते गये इससे और भी इनका नाम परसिद्ध हो गया भारतवर्ष में ऐसे बहुत थोड़े राजा महाराजा ठहरेंगे जो शंकर दत्त झा को कुश्ती की प्रशंसा न सुना हो और इनके

जीवन चरित्र सुनकर अचंभे में न आये हों। सच किसी ने कहा है।

दो०।

जिन ढूंढा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ
मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ॥

ये बीर पुरुष ४५ वर्ष के होकर १८८१ ई० में परलोक को सिधारे॥

---*---

ठाकुर कवि का जीवनचरित्र।

इनकी जन्मभूमि छपरा महल्ला साहबगंज में है। ज़ात के मधेसिया कान्दू थे। इनके बाप का नाम गोपी नाथ साह था। यह अपनी जीविका हलुआई के काम से चलाता था। गोपी नाथ साह ने ठाकुर साह को कुछ हिन्दी पढ़ाया था। इसके बाद में ठाकुर ने थोड़ा सा संस्कृत भी पढ़ लिया था। साधु महात्मा, कवि, पंडित के संग करने और अपने कारोबार करने मे बहुत अच्छा सुसील परिश्रमी हो गये थे। ठाकुर साह अपने काम काज में बहुत चतुर हो गये और इतनी उन्नत्ति की जिसमे पूर्व की दरीद्रता छूट गई। अनेक प्रकार के मिठाई, अंचार, तरकारी आदि बनाते थे जिससे सब कोई चाह के इन्हीं के यहां खरीद करते थे। विशेष दूकान चमकने की यह कारण है कि ठाकुर साह एकही दाम लोगों से कहते थे जिससे सब कोई बिना भाव पूछे इनके यहां से सौदा खरीद लेते थे।

यह तो पहले मैं लिख आया हूं कि ठाकुर कवि पंडित गुनियों की संगति में रहते थे। अबयह कब हो सकता है कि जो जिसके संगति में रहे, और उसका गुण कुछ न कुछ उसको असर न करे। यह तो प्रसिद्ध ही है कि "सठ सुधरे सत संगति पाई। पारस परसी कुधातु सुहाई॥ निदान कवियों की कविता देखकर ठाकुर के जी में यह लालसा हुआ कि मैं भी कुछ काव्य करूं तो अच्छी बात है। यह लालसा रखकर कुछ दिन उन्होंने पिंगल के कई एक ग्रंथ पढ़कर एक भजन बनाया॥

भजन।

गिरि गिरि पड़त स्याम कनियांते। बेमर कच तरिवन झकझोरत दै ससि कहत नंद रनियांते। अति अनरसे अनरसा लावहु देहु मंगाई ठाकुर बनियांते॥ १॥

इसके बाद ठाकुर कवि पजनेश के संग रहकर बहुत कुछ काव्य करते थे पर यह उसके साथ ही था कि अपने धंधा में हानि न करते थे अर्थात् धंधा के सिवाय में काव्य करते थे॥

एक पंडित मालवा देश के राम चंद्र नामक छपरा धर्म्म नाथ के स्थान में कथा कहते थे। यह पंडित इतनी मिठाई से कहते थे कि कोई ३०० से ऊपर आदमी इकट्ठे होते थे। कहते हैं कि कथा कहने के समय में औरतें भी बहुत इकट्ठी होती थीं पर विशेष करके माड़वारियों की स्त्रियां। यह हाल माड़वारियों को बहुत बुरा लगा ठीक है जो जैसा होता है २रे को भी वैसाही जानता है।

माड़वारियों ने मिलकर बिचार किया कि ऐसा कोई प्रबंध हो कि पं० राम चन्द्र यहां से जांय। इसी बात को सोच विचार एक दिन पं० राम चन्द्र को सबों ने नेवता दिया कि आज मेरे यहां भोजन कीजिये जब बिचारे भोजन करने गये तो सबों ने इनको धरकर बड़ा मार मारा और बहुत से गहना वगैरह लाकर कहा कि यह चोर है मेरे घर में चोरी करता था इसको बांधकर पूलिस में भेजो आखिरकार पूलिस में रपोट भेजा पूलिस ने आकर तहकीकात की तो वहां सब माड़वाड़िये ठहरे साबूत हो गया कि ये चोरी करते थे और माड़वारियों ने पूलिस को कुछ घूस देकर मिला लिया फिर क्या कहावत है कि एक तो भूत दूसरे नेवता पूलिस ने मजिस्ट्रेट साहब के पासभेजा उसने पूछा कि तुमने चोरी को इसपर यह बिचारे बोले कि जै बिट्ठल जो जै बिट्ठल जी यही इनके इष्ट थे साहब कहा कि यह पागल है इस लिये इसको वर्षभर क़ैद करो यह हाल जब ठाकुर को मालूम हुआ तो बड़ा खेद हुआ क्योंकि उनसे ये कुछ पढ़े था बहुत दौड़ धूप को लेकिन कुछ काम न आया। इधर तो ठाकुर गुरू के वियोग में एक पल को कल्प सम जानते थे और उधर पं० रामचन्द्र ने जेहलखाने में हजारों मनुष्यों को रामभक्त बना दिये। जब प० राम चन्द्र साल भरके बाद छूटकर आए तो ठाकुर को बहुत कुछ सन्तोष दे कर अपने देश को चले गए। और कहा कि जैसी आप को बुद्धि है वैसी हो जो सज्जनों की सङ्गति मे रहो तो बेशक आप पण्डित हो जाइयेगा पर मेरी यही

आशा है कि कुरीतों के छोड़ाने का जहां तक यत्न होसके वहां तक आप बाज़ न आइयेगा। और साधारण मनुष्यों के जहां तक सहायता हो सके कीजियेगा।

जब पं॰ रामचन्द्र जी अपने देश को गए तो ठाकुर ने हनुमान सिंह से कुश्ती का सीखा और देशों के सुधारने के लिये ऐसे २ भजन बनाए कि जिस से साधारण लोगों का बहुत कुछ लाभ हुआ उस में दो भजन यहां लिख देता हूं जिस से साफ मालूम होगा कि ये हरिभक्त और देश शुभचिंतक थे।

होली।

कलि के खल खेलत होरी। होत प्रात लबनी भरि तारी, घर घर खरी सुओरी। पीवत खात ललात परस्पर, जूता लात मचोरी। नगन होइ बमन करोरी॥ १॥ बहुत जतन से अज्या लायो, नभ पर प्राण हतोरी। मेड़ पकारी के भाग लगावत, जल चर भक्ष करोरी। दया नहीं लागे खोरी॥ २॥ ठौरठौरमें जमनी नाचत वा सङ्ग भोगकरोरी। बाजी नर पद ताण हार गल, खरपर हरखी चढ़ोरी। मुंह मसि तेल चभोरी॥ ३॥ रहित उछाह डेरात रंगसे, थोड़ गुलाब परोरी। ठाकुर जम जब प्राण निकलिहैं, देहीं नरक में बोरी। प्रथम हैं गिनती मोरी॥ ४॥

भजन।

हरि मोहि सेवरी सेवक कीजे। पादोदक प्रह्लाद दैत्य को, निश्चर नफर करीजे। गणिका अनुग अजामिल अनुचर, गीध गुलाम गनीजे॥ १॥ दास करो रवि दास कबिर

को, सुपच पक्की बीजै। ठाकुर ठौर ठाढ़ होइबै को, सदन सदन मोहि दीजै ॥ २ ॥

ये कुछ दावा भी करते थे। इस मे जो कुछ रुपया पैसा आता था उसे अच्छे कामों में लाते थे। प्रायः दावा खैरात ही देते थे। जो दाम लेते थे सो भी लोगों से कह देते थे कि भाई इस में इतना खर्चा पड़ा है और मैं इतना अपना परिश्रम के बदले लिया है। एक कथा इन की प्रसिद्ध हैं जिससे साफ मालूम होता है कि ये लोभी न थे। एक बार कोई रईस सैर करने के लिये आये थे। उन को खांसी की बीमारी बहुत दिनों से थी और बहुत कुछ दवा बीरो करा के हार गये थे पर कुछ कम नहीं होती थी। ठाकुर कवि को उसने मुलाक़ात करने के लिये बुलाया जब ये गये तो समाचार पूछने के बाद उस रईस ने सब अपनी बीमारी का हाल कह सुनाया। ठाकुर साहब ने कहा कि अवश्य आराम हो जायगा और आठ आना पैसा मांग लिया और घर पर आ कर गिलोपलाट बना कर भेज दिया जब उस रईस ने खाया तो दस पांच दिन के बाद कुछ आराम मालूम हुआ फिर उस ने ठाकुर साहब को बुला कर कहा कि अब मैं जाऊंगा मुझे कुछ और दवा बना दीजिये इन्हों ने उस दवा को उस रईस को बना दिया जाने के समय में उस ने २०००) रु० ठाकुर को दिया पर इस ने फिर आठ आना के सिवाय एक पैसा न लिया और कहा कि इस रुपये से आप एक पाठशाला बैठवा दीजिये वा विद्यार्थियों को दे दीजिये तो मैं इस से बहुत प्रसन्न होऊंगा ॥

एक बार एक मनुष्य इन के पास आया और कहा कि भाई मुझे श्वेत कुष्ट की बीमारी है मैंने एक वैद्य से कहा कि इस का दवा दीजिये तो उस ने कहा मुझे ५००) रु० दो मैं २००) रु० देता था पर कहा मैं पांचसो से एक पैसा कम न लूंगा। इस लिये मैं उस से दवा न कराया अगर आप को इस का दवा मालूम हो तो बताइये कि कितने रुपये खर्च में होगा ठाकुर कबि ने कहा कि आप दो चार चीजें मंगा दीजिये खर्चा तो इस में एक पैसा न होगा। उस ने जो जो चीजें ठाकुरसाह ने बताया मंगा दिया और ठाकुर साह ने उसी समय उस को दावा बना दिया कहते हैं कि महीना सवा महीना के अन्दर में श्वेत कुष्ट की बीमारी सब छूट गई छूटने पर उस ने २००) रु० ठाकुर कबि के पांव पर रख दिया और कहा कि आप इसे लीजिये ठाकुर कबि ने बहुत नम्रता से कहा कि आप अमीर आदमी हैं मुझे जो कुछ दीजिये वे सब स्वीकार हैं परन्तु मेरी इच्छा पूरी करना यही आप का अभिप्राय है। मैं आप को दवा बताता हूं आप के पास जो लोग आवें उन को दवा खैरात में दिया कीजिये और यह २००) रु० गरीब विद्यार्थियों को और पाठशाला के लड़कों को या अनाथ भूखा, लूला, लंगड़ा या बिचारे अपा हिजों को दीजिये इन्हीं कामों से मैं प्रसन्न बल्कि आप का दास हो बना रहूंगा। छपरा के इलाके में ऐसा कोई न ठहरेगा जो ठाकुर कबि की बनाई चीजें (कबित्त, भजन आदि) न जानता हो या इन के भलाई के कामोंसे इनको याद न करता हो ये बड़े परिश्रमी

थे देखिये अपने कामों के सिवाय अनेक भलाई किये और छोटे आदमी हो कर इतना नाम पैदा किये कि शायद कोई अमीर या धनी किये हों। पराए का उपकार करने के लिये तो गुलाम से भी अधिक हाजिर रहते थे। मसखरे भी एक ही थे। ऐसे २ हंसी की बातें भी लोगों को बताए जिस में सिवाय शिक्षा के और कोई खराब बातें न हों।

इन के एक साथी लाला हरनाथ सहाय थे जो इन के सहायता से "काशी खंड" को भाषा में बनाए हैं। ये बिचारे संवत् १८२८ भादों शुक्ला तीज को ज्वर के बीमारी में परलोक को सिधारे।

महाराज गोपाल शरण सिंह देव बहादुर का जीवनचरित्र।

इन की जन्मभूमि ज़िला आरा राजधानी बक्सर में है। ये बड़े प्रसिद्ध बिद्वान हो गये हैं लिखे पढ़े आदमियों में ऐसे बहुत थोड़े होंगे जो इन की बनायी हुई तुलसीदास कृत मानस रामायण की टीका न देखा हो और यही इन के नाम को फ़ैलने का कारण भी है पं० शिव लाल पाठक एक ब्राम्हण इनके यहां रहते थे उन्होंने रामायण के बनाने में सहायता दिया था। इन के लड़के बाबू उदय प्रकाश सिंह ने भी बिनयपत्रिका की बहुत अपूर्व तिलक बनाये हैं।

लोग कहते हैं कि रामायण की टीका अर्थात् "मानस मुक्तावली" लिखवा कर ५०० प्रति बटवा दिये थे और

फी पुस्तक के लेने वालों को २५) मुद्रा दिये थे। इन्हीं ने संस्कृत बिद्या पढ़ने वाले बिद्यार्थियों को १०००) रु० दिये थे और जहां तक होता था बिद्यार्थियों को उत्साह को बढ़ाते थे। जितने लङ्गड़े लूले भूखा जाते थे सब को प्राण समान मानते थे। कवियों की बहुत खातिरदारी करते थे अपने धर्म्म पर बहुत आरूढ़ थे। इन की जिन्दगी इसी ग्रन्थावलोकन और परोपकार में बिती।

—※—

महाराजा पूर्णमल्ल सिंह का जीवनचरित्र।

इन के जीवनचरित्र के १ले यह जान लेना अवश्य है कि इन को राजधानी का नाम गिद्धौर क्यों पड़ा।

महाभारत में बनपर्व्व के ८४ अध्याय के ८४ श्लोक में यह लिखा है कि "ततो गृध्र वटं गच्छेत् स्थानं देवस्य शूलिन: आर्यात भस्मनातत्र सगम्य वृषभ ध्वज" यही गृध्रवट शब्द का अपभ्रंश होकर गिद्धौर हो गया है अर्थात् गृध्र + पक्षी को भाषा में गिध कहते हैं और बट + वृक्ष को बर + को गाछ, तब गृध्र + बठ, का गिध + बर, हुआ पीछे होतेर गिद्धौर कहने लगे ※ अब यह परगना गिद्धौर प्राय: बीस कोस लंबा आठ कोस चौड़ा ज़िला मुंगेर के सबडिविजन जमूई में है, जमूई एक छोटी सी बाज़ार (जिसमें डिपोटी मैजिसट्रेट और मुन्सिफ़ रहा करते हैं) गिद्धौर की राजधानी मौज़ा पतसंडा से तीन कोस वायुकोण किउली नदी के बांय कनारे बसी है।

※ जैसे तिल की बरी को तिलबरी नहीं कहकर तिलौरी कहा करते हैं।

इस परगने में सब से बड़ा पहाड़ गृध्रकूट* वा गिधाच-ल वा गिद्धौर का पहाड़ पतसंडे से चार कोस पश्चिम परगने के बीचों बीच से उठ पश्चिम सीमा होता हुआ ज़िला गया तक चला गया है, इसके एक घाटी में (जिस्का नाम कुण्ड घाट है) जैनियों का बहुत पुराना छोटा२ दो मन्दिर है' इस से दो कोस दक्खिन एक और भी मन्दिर है, इसे जन्म-स्थान कहते हैं, जैनी लोग इन स्थानों को बड़ा तीर्थ सम-झते हैं और हर साल वहां का यात्रा किया करते हैं।

दूसरा गंडीघाट का पहाड़ जिसपर "ग्रेटट्रिगोनो मैट्रि-कैलसर्वे का स्टेशन २४ = ४६ = ५२, उत्तर अक्षांस, और ८६ = ३० = ४०, पूर्व देशान्तर पर पाता है इसे प्राय: छ: कोस पूर्व कुछ अग्निकोण को झुकता बना है।

नदियों में सब से बड़ी किउली (जिसे पुराण में किल-विषी और मगधदेश का पूर्व सीमा लिखा है) गृध्रकूट के दक्खिन पीठ से निकल पूर्व हो बहुत सी नदी नालें को साथ ले प्राय: सत्तर मील उत्तर को बहती गंगा से जा मि-ली, दूसरी बरनर परगना चकाई से चल राजाडूमर पहाड़ को तोड़ती फोड़ती प्राय: बारह कोस बह जमुई से एक को-स दक्खिन किउली से मिल गई।

तीसरी उलाई जिस्के दहिने किनारे पतसंडा राजधा-नी बस्ती है पूरब से पश्चिम प्राय: चौदह कोस बहती जमूई से दो कोस उत्तर मिली से मिली है।

* इस पहाड़ के सिखर पर अभी तक बहुत से गिद्ध रहते हैं इस लिये गृध्रकू नाम पुराणों में लिखा है।

इस परगने में कई एक गढ़, मकान, और देवालय का चिन्ह जिस्का कुछ पता नहीं लगता दिखाई देता है, एक गढ़ मौज़े इन्दपे में जिसे राजा इन्द्रद्युम्न का बनाया कहते हैं, जमूई से एक कोस दक्खिन प्राय: डेढ़ मील के घेरे में ईंट और मिट्टी का ढेर पड़ा है कभी२ इसमें शिवलिङ्ग और कई एक देवताओं की प्रति जिस पर जैनी अक्षर खुदे होते हैं मिला करते हैं, इस गढ़ के बीच में एक बहुत ऊंचा मिट्टी का ढेर है इसे साहबान अङ्गरेज़ ने सन १८७६ ईस्वी में खोदकर देखा तो कहा कि यह गढ़ जैनियों के समय का है जो जो चिन्ह इसमें मिले हैं सब जैनियों के मकान में हुआ करता है।

८१६ वर्ष पहिले इस देश में बर्हेलिये वा दुसाध राज्य करते थे सम्वत् ११२३ में राजा विक्रम सिंह चन्देल अगोरीबरदो से यहां आए और श्री वैद्यनाथ जी के कृपा से, निंगूरिया नामी दुसाध राजा को मार राज्य ले लिया तब से आज तक बराबर इन्हीं के वंश में राज्य चला आता है, इस राज्य के आधीन परगनात चान्दन, चकाई, विस्तहजारी, और बहुत से फुटकर महाल हैं।

———※———

इन्हीं के वंश एक महाराजा पूर्णमल्ल सिंह हुए हैं जिनकी कीर्ति देश देशान्तरों में आज तक विदित है। वीरता, धीरता, न्याय निपुणता का ये नमूना थे। वैद्यनाथ जी का जो कुछ प्रबंध है वे सब उन्हीं का है। लोग कहते हैं कि पहले जङ्गल में जो जात्री आते थे कोल भील सौंतार

(सौंताल)* आदि लूट लेते थे २२ जो लोग यहां दर्शन के लिये आते थे उन को रास्ता में खाने पीने का भी प्रबंध कुछ नहीं था और रहने वगैरह में भी बहुत कष्ट होता था। इन सब बातों का प्रबंध इन्होंने किया अर्थात् ठावें ठावें सदाबर्त बैठलाये और कोल, भील, सौंतालों को भी मार पीट कर शांत किये सम्वत् १५१७ में बैद्यनाथ जी का मंदिर भी बनाये और कुछ श्लोक भी उनके समय का मंदिर में लिखा है इस कीर्ति से इनकी यश आज तक भारतवर्ष में फैल रहा है॥

बाबू हित नारायण सिंह जी का जीवन चरित्र।

इन का जन्म सम्वत १८६० में हुआ था इनका घर तारणपुर में है इन के पिता का नाम बाबू तालेवर सिंह था। यह जात के नरवरिया क्षत्री थे। बाबू तालेवर सिंह ने इन को हिन्दी पढ़ाने के लिये गुरू जी के पास बैठाया। पढ़ने लिखने में ये बहुत कुछ ध्यान देते थे। हिन्दी पढ़ कर फारसी पढ़ने लगे कहते हैं कि परिश्रम कर थोड़े ही दिनों में इस विद्या में भी निपुण हो गये। इस के बाद अपनी इच्छानुसार कुछ संस्कृत भी पढ़ लिये। इन को चित्त भक्ति में बहुत लगी थी इस लिये तुलसीदास कृत "मानस रामायण" को अधिक देखते थे। जब इसका अर्थ भली भांति से न लगा तो महंत रामचरण दास कृत रामायण के टीका को अयोध्या से

* इन्हीं लोगों के नाम से सौंताल परगना बोला जाता है।

लिखवाये औ बक्सर के महाराज गोपाल शरण सिंह देव बहादुर क्रत "मानस मुक्तावली" को मंगवाये जब इस से भली भांति से अर्थ मालूम होगया तो संस्कृत पढ़ने की रुचि और भी बढ़ी। कुछ दिनों में संस्कृत में अच्छे निपुण होगये और सब पुराण स्मृतियों को देख भाल कर अपने समय को इसी बात में बिताने लगे। स्मृतियों के देखने से इन्हों ने बहुत सी बात ऐसी पाई कि जो इन के देश में उस के बिपरीत काम में लाई जाती थी। इस से इन के मन में शंका हुई कि इन बातों को छोड़ना चाहिये। इन्ने अपने मन में सोचा कि बिधवा स्त्री का व्याह नहीं होता है यह तो बड़ा अन्धेर है और पाराशर स्मृति में लिखा भी है कि बिधवा व्याह होना चाहिये। पर इस देश में यह कहावत लोग कहते हैं यह ठीक है कि नहीं।

दो०। बिधवा व्याह ही चहत है, बिधवा सुत जो होइ। अथवा माता तासु को, गयो और पह होइ॥ १॥
इन्हें अधिक रुचि रहत है, बिवा व्याह कर भाइ। हंसत श्रेष्ठ कुल जगत में, संशय कछु नहिं आइ॥ १॥

लगे विचारे स्मृतियों के देखने और बड़े २ पण्डितों से पूछने तो निश्चय हुआ कि बिधवा व्याह किसी श्रेष्ठ कुल में नहीं होता और न किसी शास्त्र की आज्ञा है जो बाक्य लिखा है उस का अर्थ ही २रा है अथवा शूद्र बर्णशङ्करों के लिये यह बात लिखी है और यदि यह बात अच्छी होती तो क्यों ब्राह्मण क्षत्री वैश्यों में जारी न होता और शूद्रों के यहां जारी हो इस से निश्चय हुआ कि बिधवा व्याह

यथार्थ में नहीं होना चाहिये इस के निषेध के लिये हज़ारों प्रमाण उक्त बाबू साहिब ने इकट्ठा किये थे पर इसकी विशेष चर्चा इस लिये न चली कि इस को तो सब कोई निषेध ही लगाते थे। हां कोई २ वर्णशङ्कर वा शूद्र लोग इस के चलाने में लगे हों तो कुछ अचंभा नहीं है क्योंकि वे लोग अपने ऐसा दूसरों को भी बनाया चाहते हैं कि और भी उनलोगों का तात्पर्य्य है कि मैं इस कर्तव्य से नामी होऊंगा पर इस के विपरीत सब दुर्नामी हो जाते हैं।

कुछ दिन के बाद बाबू हित नारायण सिंह ने समाज के सुधारने पर ध्यान दिया। पहले तो इस देश में एक यह रीति प्रचलित थी कि कोई बीमारी हो तो लोग कहें कि भूत लगा है और झाड़ने फूकने के लिये ओझा* को बुलावें यह रीति स्त्रियों में भी फैली जाती थी इस को इन्हों ने बड़े परिश्रम से छोड़ाया और सब के हृदय में यह बात जमा दिये कि भूत कोई चीज़ नहीं है। पर ओझा लोग आश्विन दशहरा में अपने घर पर अपने मरेहुए पितरों और देवी, हनुमान, भैरो ब्रम्ह आदि को खेलाया करते थे और वहां एक बड़ा हजूम होता था कई एक ओझा लोग जमा होते थे कोई कहता था मुझ पर हनुमान आये हैं कोई कहता कि मुझ पर भैरो आये हैं इसी प्रकार बहुत बखेड़ा होता था पर यह उसे कम करवाये और सब के हृदय पर यह बैठाये कि भला हनुमान आवें तो कुछ प्रण तो करों

* भूत झाड़ने वाले को ओझा कहते हैं।

वे क्या उत्तर देते हैं निदान एक ओझा लगा देह डुलाने कूदने फांदने और कहने कि मैं हनुमान हूं इस पर इन्हों ने पूछा कि महाराज लंका मे रामचन्द्र के साथ कितने बन्दर थे यह सुन कर बिचारा घबराया और चुपके कान ऐंठ के कहा कि अब मैं जाता हूं तब से सब को निश्चय हुआ कि झूठमूठ लोगों के ठगने के लिये यह उपाय सब करते हैं।

इन के गांव में और इस गांव के आसपास में एक यह रीति भी प्रचलित थी कि लोग सन्यासी से गुरुमुख होते थे आप तो अपने गुरु के जूठन वा गुरु का छूआ पानी नहीं पीते थे और गुरु इन के ऐसे कि इन के यहां खावें पीवें कुछ हरकत नहीं। इस बात को इन्हों ने दिखाया कि आप लोगों को उचित है कि गुरु का जूठा खावें पर आप लोग सन्यासी का छूआ नहीं खाते हैं कि वे लोग सब जातों के यहां खाते हैं यथार्थ में ये लोग सन्यासी नहीं हैं बल्कि यह तो एक जातच्युत लोग है सन्यासी लोग काशी में रहते हैं उन लोगों की चाल चलन इन लोगों से बिल्कुल जुदा है क्योंकि ये लोग सादी व्याह करते हैं और घर द्वार रखते हैं इन्हें क्यों सन्यासी कहें ये लोग तो सत्यानाशी हैं कि सब लोग एक बारगी इन के कहने अनुसार सन्यासियों से शिष्य होना छोड़ दिया और ब्राम्हणों से शिष्य होने लगे।

लोग कहते कि तारणपुर आदि नगरों की क्षत्रियों की यह चाल थी कि भूमिहार लोग का नारिअर ये लोग पीते थे और भूमिहार इन लोगों का हित नारायण सिंह ने कहा कि भाई यह कोई अच्छी रीति नहीं है इस को

छोड़ना ही उचित है। इस पर कई एक आदमियों ने कहा कि जो जो बातें आप कहते जाइयेगा उस को हम लोग करते जांयगे यह कुछ नहीं है भुमिहारों में नारियर हुक्का होने से आपस में ऐक्यता है इस को छोड़ना सरासर भूल है। पर इन्हों ने ऐसी रीति से समझाया कि लोगों को छोड़ते ही बना।

बाबू हित नारयण सिंह ने देखा कि तम्बाकू पीने में एक तो जात जाती है २रे वैद्यक के सम्मति अनुसार इसमें कई एक औगुन भी है। एक बार किसी ने आकर कहा कि एक गांव में एक आदमी तम्बाकू पीता था कि आग लग गई उस से गांव जल गया इस बात को सुनतेही बाबू हितनारायण सिंह ने लोगों को बुला कर इस का औगुन वर्णन करने लगे १ ले तो कहा कि देखिये इस से जात जाती है क्योंकि एक आदमी २रे के मुंह की लगाई हुई नारियर पीता है। कहिये इस में दोष है कि नहीं आखिर लोगोंने माना और तम्बाकू पीना छोड़दिया।

खैनी तम्बाकू जो लोग खाते थे उन्हें भी बहुत समझा बुझाकर कम करवाये ऐसेही गांजा भांग आदि को जानो। कुछ दिनों से यह चाल हो गई है कि बाज़ २ जगहों में लोग अब उष्णा चावल काम में लाते हैं पर यह रीति आज तक प्रतिष्ठित ब्राम्हण, क्षत्री, वैश्य लोगों में नहीं फ़ैला है। बाबू हित नारायण सिंह ने देखा कि शायद धीरे २ यह रीति हम लोगों में भी फ़ैल जाय तो क्या अचम्भा है इस लिये पहले ही से इस का खण्डन करने लगे जो लोग उष्ण

चावल अपने व्यवहार में लाते थे उन से अक्सर कहा करते थे कि उष्णा चावल खाने में जात नहीं रहती क्योंकि हम लोगों में जब यह रीति है कि रसोई के चौके में कोई अन्न जाति के मनुष्य आ जायं तो रसोई छूई जाती है फिर उष्णा चावल तो भात के तुल्य है फिर इस को सब जात छूते हैं इस को खाना क्या है अपनी जाति को तिलांजली देना है। इस बात को सुन कर सब लोगों ने कहा कि ठीक है इसी लिये आज तक किसी अच्छे आदमी के यहां उष्णा चावल का व्यवहार नहीं होता है।

एक अनोखी रीति इस इलाके में यह है कि जो लोग चिढ़ते हैं उन्हें अक्सर लोग चिढ़ाते हैं। लखना नामक एक गांव जो पटना से करीब ५ या ६ कोस दक्षिण है वहां अहीर या अहरन से कोई पूछे कि लखना की राह बताओ तो वह जीजान से चिढ़ कर लड़ने को तैयार हो जाता है। यह हाल देख कर अब जितने मसखरे वा दिल्लगीबाज़ हैं वे पटना, शाहाबाद, सारन, मुजफ़्फ़रपुर, दर्भङ्गा, मुंगेर, गया आदि इलाके के अहीर, अहीरन से पूछते हैं कि लखना की राह बताओ। इस से वे सब बहुत चिढ़ते हैं। इसलिये कई एक जगहों में बड़ी घनघोर लड़ाइयां हुई हैं। ऐसे ही शाहाबाद (आरा) के इलाके में एक गांव बबूरा है जिस में महरोर क्षत्री रहते हैं वहां वाले से कोई कहे कि बबूरा का बूंट तो वे लोग भी चिढ़ते हैं। इसी प्रकार फफदर नाम एक गांव जो शाहाबाद के इलाके जगदीशपुर से ४ या ५ कोस पश्चिम है वहां बैश्य क्षत्री रहते हैं वे सब

जफ़दर के नून के नाम से चिढ़ते हैं। और पटना के इलाके में बेगमपुर के आसपास बैरिआ नाम गांव है वहां के लोग भी बएरिया की राह के नाम से चिढ़ते हैं। और भी बिसुन पुरा के लोग बजर परीसियरामवा में और सारन के इलाके में एक गांव मलखाचक है वहांवाले गुलर के नाम से अर्थात् मलखाचक का गुलर और भी एक गांव मलखानक के आस पास में है जिस का नाम रसेनचक है वहां वाले करिअवाघाट के नाम से चिढ़ते है। इस के सिवाय मुज़फ़र पुर के इलाके में एक गांव पट्मोल है जिसमें विशेष कर कायथ (कायस्थ) लोग रहते हैं और वहां वाले पट्मोल के घाड़ा के नाम से और चमरहरा नाम एक गांव है वहां वाले अन्धेरेपार लगाव राम के नाम से और निहृत के रहने वाली स्त्रियां अगर दो आद्मी दो बगल में चले आयें तो वे सब बहुत चिढ़ती और कहती है कि मेरी इज्जत को इस बद्माग ने खराब कर दिया इन बातों को देख कर लोग और भी बहुत ही चिढ़ाने लगे पर इस का फल बहुत बुरा होता है अर्थात् आनन्द के बदले झगड़ा होता है। इस बात को बाबू हितनारायण सिंह ने बहुत कुछ रोका और कहा कि ऐसी हंसी न करनी चाहिये जिस से झगड़ा हो और उनके समय कुछ कम भी था पर अब फिर चिढ़ाने वाले की बड़ी धूमधाम है।

किसी २ आद्मी के यहां यह रीति थी कि शादी व्याह गमी आदि उत्सवों में लोगों को भात बांट जाता था और उस भात को औरतें खाती थी। बाबू साहब ने कहा कि

भला यह तो सोचने की बात है हम लोग तो चौका दे कर खांय और हम लोगों की स्त्रियां २ के घरका भात जो मिठाई सा बांटा जाता है खांय ये कौन अच्छी रीति है। * इतनी बात को सुन कर सब लोगों कहा कि यह रीति तो शायद किसी २ के यहां हो इस को छोड़ना ही उचित है। सबों ने अपने २ यहां इस बात को रोकवा दिया।

यह तो सब कोई जानते हैं कि जैसी बिपति आजकल क्षत्रियों पर है वैसी और किसी जातों की नहीं। इस का कारण यह है कि जितने जात हैं सब अपने अपने धन्धा में लगे हैं पर क्षत्रियों में यह बात नहीं है देखिये ब्राम्हणों को लिखे पढ़े नहीं तो भीख मांगना तो कहीं गया नहीं। वैश्योंको भारी व्यापार न हुआ तो नोन तम्बाकू का व्यापार तो अवश्य ही होगा। शूद्रों का जहां जाइये वहां ही उन लोगों का रुजगार लगा है बाकी क्षत्रियों को कोई धन्धा नहीं क्योंकि लड़ाई भिड़ाई रही नहीं कि सिपाहगीरी में लोगों को भरती हो बाकी रह गया खेती इस की तरकीब भी भली भांतिसे लोग न जानते और उदास पड़ रहते हैं। इन में से मगह के क्षत्रियों में से बहुत गरीब लोग हल भी चलाने लगे इस बातको देखकर बहुत ब्राम्हण लोग प्रायश्चित लगाने लगे और देश के देश हंसने लगे। तो बाबू हित

* इस में यह होता था कि जौन जात का भात होता था वही भात बांटता था। जैसे ब्राम्हण की ब्राम्हण क्षत्री की क्षत्री। बाज़ २ यह कहते हैं कि चौका के बदले पानी छिड़क कर भात बांटते थे इस लिये कोई दोष नहीं मानते थे।

नारायण सिंह ने अपने मन में सोचा कि ये गरीब बिचारे क्या उपाय करे जिस से बचे मनुस्मृति में साबित किये कि बिपति में हल जोतना मना नहीं तब तो बिचारे गरीबों की जी में जी आया।

मगध में शूद्रों और वैश्यों में यह रीति जारी है कि वे सब तारी पीते हैं और इस का नशा मदिरा के तुल्य होता है। एक दिन बाबू हित नारायण सिंह ने देखा कि एक आदमी तारी पी कर झूमता झामता चला आता है जब इन के सामने आया तो कई एक गालियां भी सुनाई बाबू साहब ने तो उस समय कुछ न बोले पर अपने खिदमतगार से कहा कि देखो यह पुनःपुना नदी में पार उतरता है तो जूता निकालता है या नहीं खिदमतगार उसी समय उस आदमी के के साथ होलिया जा के देखा तो वह पुनःपुना नदी के पार उतरने में जूता उतार लिया यह हाल उस आदमी ने आकर बाबू हित नारायण सिंह से कहा तब इन्हों ने कहा कि धर लाओ आखिर में धरवा कर बड़ा मार मरवाये और कहा कि "ढोल गंवार चोर पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी,, और उस बिचारे को गाली देने की बान हीं छूटी बल्कि यह डर नीचों के मन में समाया कि यदि अब कोई किसी आदमी को गाली देगा तो अवश्य बाबू हितनारायण सिंह पीटेंगे कहते है उस दिन से नपण पी के गाली बकने का बान ही लोगों को छूटा।

जो लोग फारसी पढ़ते है अक्सर किताब के पन्नों में थूक

लगा कर उलटा करते हैं यह चाल मुसलमानों के देखा देखी फैल गया है बाबू हितनारायण सिंह ने दिखाया कि देखिये जिस किताब में मियां साहब थूक लगा कर उलटते हैं उन्हीं में उन के चेले जो हिन्दू (आर्य्य) कहलाते हैं वे भी उलटते हैं कहिये इस में जात कहां है। इस बात को सबों ने माना और जो लड़के फारसी, उर्दू पढ़ते थे शीघ्र उन से प्रायश्चित करायी गयी और उस दिन से इस रीति को तिलांजली दी गई।

अंगरेजी पढ़े लिखे सब कान पर पर का कलम रखते थे इस बात को भी उन्हीं ने छोड़ाया पर आज कल तो यह रीति ऐसी फैली कि जिसका छोड़ाना अत्यन्त कठिन है।

कुछ दिनों से इस देश में यह एक बड़ी बुरी रीति चली आती है जिस से भारतवर्ष की पूरी अवनति हो रही है कि बालवस्था में व्याह करना देना क्योंकि इस से लड़कों की तबियत लिखने पढ़ने में नहीं लगती पूरे ऐयास बन जाते हैं संतान ठीक नहीं होता किसी बात में उत्साह नहीं रहता स्वरूप बिगड़जाता आलसी हो जाते कोई काम नहीं कर सकते और रात दिन व्यर्थ हंसी ठट्ठा में समय बिता देते हैं। वैद्यक शास्त्र में भी १८ वर्ष की अवस्था में व्याह करने को लिखा हैं पर आज कल उसके बिपरीत ७ या ८ या ६ वर्ष में व्याह कर लेते हैं और उसी का फल है कि सन्तान मरे ऐसे होते हैं कि लड़ाई का नाम सुनते ही घर का राह देखते हैं बाबू हितु नारायण सिंह ने इस के लिये बड़ी कोशिश की कि अगर व्याह होय भी तो १६ वर्ष से कम

उमर वाले लड़के को नहीं हां लड़कियों को ८ या ९ वर्ष की अवस्था में अवश्य व्याह कर देना चाहिये।

इसदेश में एक और भी रीत बड़ी बुरी किसी २ अज्ञानियों के सबब से चली है कि लड़का छोटा और लड़की बड़ी से व्याह कर देते हैं इस से बढ़कर और अनर्थ क्या होगा शास्त्र में लिखा है लड़की से लड़का दूना होना चाहिये और स्पष्ट लिखा है कि पुरुष से स्त्रियों को आठ गुना काम होता है इसपर यह हाल कि लड़का ५ वर्ष के तो उसकी स्त्री पन्द्रह वर्षकी स्त्रीक्या वह तो उसके माता ठहरी कहिये क्यों न इज्जत बिगड़ने का खौफ़ हो ऐसे काम करके भी अपने को श्रेष्ट कहना कहिये यह काम किसका है। इस बात की बहुत सी बुराई देखा कर छोड़ा दी पर आज तक यह रीति जड़ मूल से न गई॥

जैसे त्रिहुत में एक एक ब्राह्मण कई एक व्याह करते हैं वैसे ही धनी लोग भी दो चार व्याह कर लेते हैं और नाहक अपने और अपनी नायकाओं तबिअत को क्लेश में डालते हैं। इसका खंडन भी बाबू साहब ने खूब किया और इस रीति को छोड़ाया॥

यह रीति और और युगों में भी थी पर मेरी समझ में अच्छी नहीं क्योंकि आज कल भी जो हाल त्रिहुत का सुना जाता है उसमे कैसी ग्लानि होती है अर्थात् एक आदमी एक से लेकर सौ व्याह कर लेते हैं और यहां तक तो उन्हें फुरसत नहीं मिलती कि घर पर सब को बुलालें अपने नैहर ही में छोड़ देते हैं बहुत हुआ तो दो चार या दस

बर्ष पर एक बार जाकर मुलाक़ात की और इस पर भी अपनी नायका या ससुर साले से रुपया मांगने लगे लोग कहते हैं कि यदि रुपया न मिला तो अपनी नायका से मुलाक़ात भी नहीं करते रूसकर घर पर चले जाते हैं, वाह क्या कहना है पति होकर पालन करना वा पत रखना तो दूर रहा अपनी अपनी नायका ही से द्रव्य मांगने लगे कहिये क्या वे कमाई करती थी जिससे द्रव्य हाथ लगै इस से तो बिहतर हो कि अपनी नायका के (जो लोग दस पांच व्याह करते हैं,) कह दें कि तुम बेश्या ब्रति कर मुझे रुपया दो तो अच्छा हो इस से तो साफ़ यही मतलब मालूम होता है।

मुझे न मालूम जो लोग अपनी लड़की को ऐसे आदमी को दान देते हैं क्या मनुस्मृति आदि को नहीं देख लेते कि कन्या दान कैसे पुरुष को देना चाहिये। लोग यह भी कहते हैं कि त्रिहुत में जो लोग जात में अच्छे होते हैं उन्हीं का अधिक ब्याह होता है यहां तक की अस्सी बर्ष के उमर में ब्याह होता है वाह ब्याह क्या ये तो चिता को लकड़ी लगी पर यह भी मालूम हुआ कि यह रीति त्रिहुत में केवल ब्राह्मणों ही में है अन्य जाति में नहीं। इस में जो लोग कुछ जात में दबे हैं उनका ब्याह ही होना असंभव है सौराष्ट जो दर्भंगा से कोई १६ मील उत्तर है साल में एक बार मेला लगता है वहां पर ब्राह्मणों की लड़कियां बेंची जाती और खूब ही रुपये हिलारे जाते हैं इस बिक्री में केवल यही बात है कि जान पहचान वाले ब्राह्मणों के

हाथ लड़की बेची जाती अगर यह न रहता तो और भी रुपये हाथ लगते। कहिये यह चाल ब्राह्मण की हो यह तो मेरी समझ में नीच से नीच का काम है पर क्या हो उस देश की यह रीति ठहरी तो लोग कैसे छोड़ें। देखिये इसमें कैसी हानि होती है कि एक ओर तो सौसौ ब्याह हो और दूसरी ओर एक ब्याह होना संभव नहीं यह केवल मूर्खता का कारण है।

जो लोग अधिक ब्याह करते हैं अवश्य उनकी नायका दुख पाती है इसमें कुछ संदेह नहीं अगर कोई कहे कि बड़े बड़े राजा महाराज कई एक ब्याह करते थे तो इस से क्या उनकी नायका का भी वही हाल होगा। राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद ने भी अपनी किताब इतिहास तिमिरनाश तीसरा खंड में लिखा है कि बहुत सी रानियां बनाना यही आगे मानों सारे सुख का मूल समझा गया था महाभारत में एक एक राजा की हजारों रानियां लिखी हैं कुरुक्षेत्र के मैदान में लड़ाई की राति को भी देखो पांडवों के सेनापति धृष्टद्युम्न के पलंग के गिर्द कितनी रानियां बैठी हैं हमारी समझ में यही स्त्रियों की बहुतायत बहुतों को बिरक्त होकर जंगल में चले जाने का कारण हुई और इसी बहुतायत के कारण स्त्री जो पुरुष का अर्द्धांग है कवियों ने निन्दनीय ठहरायी लेकिन हमको रामायण की एकबात बहुत पसंद आयी उसमें लिखा है कि हनुमान ने लंका में रावण को बहुत सी रानियों के दर्मियान सोता हुआ देखा और रामचंद्र ने केवल एक सीता से काम रक्खा पस अब भी जिन्हें

रामचंद्र की पैरवी मंजूर है एक ही स्त्री पर संतोष करते हैं और जो रावण बना चाहते हैं बहुतों को हविस में पड़-कर खराब होते हैं सब से अधिक विवाह पुराणों में कृष्णचंद्र के लिखे हैं पर देखो परिणाम क्या हुआ कृष्ण के बाद बहुतों को भील लूट ले गये कुछ कुरु क्षेत्र पहुंच के जल गयीं बाक़ी जंगल में जा रहीं ॥

इस देश में कनौजिया ब्राह्मण और राजपूतों में यह रीति चली आती है कि लड़के वाले लड़की वाले से बहुत कुछ रुपया लेते हैं तो लड़के का व्याह करते हैं इस रीति को प्रचार होने से बड़ी बुराई हुई क्योंकि जो लोग कुलीन हैं और धन कर के हीन हैं जो लाचारी से अपनी लड़की को किसी ग़रीब लड़के से व्याह देते हैं क्योंकि उनके पास इतना धन नहीं जो अच्छे कुलीन धनी के यहां व्याह करें दूसरे जो लोग अकुलीन भी हैं वे रुपया के ज़ोर से अच्छे कुलीन के यहां व्याह कर लेते हैं। इस बात के लिये भी बाबू साहब ने कोशिश किया पर यह काम न हुआ क्योंकि यह तो सब कोई जानते हैं कि लोभ से आदमी कौन बुरा काम नहीं करता सच है।

दोहा।

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ कभी नहिं कीजिये, याते नरक निदान। १।

इस बात से सब कोई उदास हो गये पर यह कोई न सोचा कि इस काम से सब किसी को लाभ है। क्योंकि आज तक देखा जाता है कि अच्छे से अच्छे धनी लोग

दो चार लड़कियों के व्याह करने मे दरिद्र होजाते हैं॥ आज कल जो लोग लड़के का व्याह करते हैं थोड़ा दहेज़ लेने में अपनी हीनता समझते हैं मगर यह कोई हीनता की बात नहीं है मेरी सम्मति मे जो जो लोग रुपया का क़रार कर लड़के का व्याह करते हैं उनकी बड़ी भूल है। क्या जाने इसी मे क्षत्रियों में लड़की मारने की रीति निकली हो॥

कई एक जगह यह बात देखी गई है कि जो लोग लड़के का व्याह करने जाते हैं अगर वहां पर कुछ रुपया पैसा दान दहेज न मिला तो आपस में थूका फ़ज़ी-हती करके चले आते हैं या दान दहेज़ लेने के लिये भात नहीं खाते कहीं लड़की को रोकसदी नहीं करते कहीं अपने लड़के को कहते हैं कि इसको घरपर जाकर मार देंगे कहीं वहां से रोकसदी कराकर गांव के बाहर जाकर छोड़ देते हैं। इन लोगों को बाबू हितनारायण सिंह ने बहुत समझाया कि देखिये इस में इज्जत किसकी जाती है निदान जहां जहां ये बातें थी उनके समझाने से छूट गई॥

व्याह होने के बाद तुरंत ही लोग स्त्रियों के नैहर में भेज देते हैं और फिर नैहर जाकर दो चार वर्ष वह रह जाती है इस बात को भी बाबू साहब ने छोड़ाया कि बाल्यावस्था में स्त्री माता पिता के और जवानी में पति के और वृद्धा वस्था में लड़के के बस में रहे फिर जवानी में स्त्रियों को कभी नैहर न जाने देना चाहिये यह बात लोक वेद दोनों से सिद्ध हो सकती है कि स्त्री जहां रहे तहां पति के

आधीन फिर नैहर जाने देने से क्या प्रयोजन अगर जाय भी तो दस पांच दिन रहकर चले आवे।

इसी प्रकार जो स्त्रियां तीर्थ आदि में जाती थी वा घर से बाहर होती थी उसे भी ये रोकवाये और यथार्थ है कि स्त्रियों को घर से बाहर न होने देना चाहिये क्योंकि इसमें अनेक बुराई है धर्म्मशास्त्र और नीतिशास्त्र दोनों से यह बात मना है।

बाबू हितनारायण सिंह की ऐसी भी राय थी कि जो लोग परदेश जांय और दस पांच वर्ष वहां रहें तो अपनी स्त्री को भी वहां बुला लें पर इस देश वाले अपनी हठ बुद्धि से इस बात को न छोड़ा।

जब से मुसलमानों का यहां राज्य हुआ तब से इस देश में मुहर्रम होना प्रारंभ हुआ और मुसलमानों के देखा देखी हिन्दू लोग भी इसको करने लगे। अब तो मुहर्रम के समय बहुत जगह औरतें लहठी, चूरी, चूंदरी, नहीं पेन्हती, मांग नहीं टिकाती, टिकुली नहीं साटती, पान नहीं खाती मानो उसके पति ने परलोक को सिधारा हो और वह बिधवा बन बैठी हों, और पुरुषों में लोग पाइक बनते गले में बधी पेन्हते हैं हाय हुसेन हाय हुसेन करते हैं पहलाम होने पर खिचरी खाते हैं दरवाज़े पर ताज़िया के आने पर एक लोटा पानी और तिलचौरी गिराते हैं मानों अपने पित्रों का तर्प्पण करते हैं इस रीति को बाबू साहिब ने एकबार्गी छोड़ा दिया।

ऐसेही लोग मुसलमानों के कई एक देवता को पूजते थे

उक्त बाबू साहिब ने इस रीति को छोड़ाया।

यह तो सब कोई जानते हैं कि वेद पुराण, धर्म्मशास्त्रों में गौ की महिमा बहुत कुछ लिखी है पर न जाने कब से मगधदेशमें यह एक रीति चली आतीहै बैलको लोग खोजा बनाते हैं यद्दपि यह रीति कहीं २ फैली है सो भी ब्राह्मण क्षत्रियों में नहीं पर तारणपुर में एक शख्स जिसका नाम बाबू बख्श सिंह था उस ने एक बैल को खोजा बनवाया यह बात सुनकर बाबू हितनारायण सिंह ने एक प० जिसका नाम श्याम लाल मिश्र था उससे सब हाल कहकर कहा कि आप इस बात को छोड़वाइये और इन लोगों को पतिया दीजिये जिससे और कोई यह काम न करे इस बात को श्याम लाल मिश्र ने स्वीकार किया और पतिया दिया। यह बात सुनकर बख्स सिंह बिगड़े और कहा कि मैं प्रायश्चित नहीं करूंगा पर जब सब लोगों ने इनके साथ खाना पीना छोड़ दिया तो लाचार होकर प्रायश्चित किये और उस दिन से आज तक कोई इस बात को न किया।

इसी प्रकार एक और रीति पटने के इलाके में आज तक जारी है लोग उसे अरई कहते हैं। हलवाहे लोग डंटा में एक लोहे का टेकुए सा लगा लेते हैं और जब बैल नहीं चलता है तो उसी से खोभते हैं यह रीति तमाम पटना के इलाके में जारी है और सब लोग जानते हैं कि गौ की रक्षा करना कैसा पुण्य है दूसरा इस रीति को छोड़ाने में भी कुछ दाम कौड़ी नहीं लगता केवल हलवाहों के डांट

छपट देने से यह रीति छूट जाती पर कौन ध्यान देता है कहने के लिये तो सब कहते है पर करने के लिये कोई उद्यत नहीं होता इस बात को देखकर बाबू हितनारायण सिंह ने कहा कि यह रीति तो ब्राह्मण क्षत्रीका नहीं है हां चंडाल चमार कसाईकी अवश्य है और इसको अवश्य छोड़ना चाहिये यह बात को बाबू हितनारायण सिंह ने बाबू झब्बू सिंह से कहा कि भाई ऐसी कोई युक्ति करो जिस से यह रीति छूटे। इस बात को सुनकर बाबू झब्बू सिंह ने कहा कि इसके छोड़ाने में तो कोई बड़ी बात ही नहीं रहिये मैं गांव के सब लोगों को इकट्ठा करता हूं और आप इसको कथा निकालिये बस यह मिट जायगी कहते हैं कि उसी दिन बाबू झब्बू सिंह ने सब लोगों को इकट्ठा किया और बाबू हितनारायण सिंह ने इस बात की बुराई कह सुनाई सभों ने कहा कि आप ठीक कहा इस रीति के छोड़ने में ही भलाई है और सब लोगों ने अपने२ हलवाहों को मना कर दिया कि अब से कोई अरई मत दो। कहते हैं कि उस दिनसे अरई देना छूट ही तो गया अब कहीं२ यह रीति रह गई है जो विद्वानों की तनक दृष्टि पड़ने से छूट जायगी।

कई एक जगह में यह रीति है कि ब्याह के समय में लोग धोबी का डंटा पूजते हैं यह रीति सारन के इलाके सरनिहा डुमरी में है। इसी के देखा देखी फैलने के संदेह से बाबू हितनारायण सिंह ने इसको भी खंडन किया।

किसी किसी जगह यह भी रीति है कि अपने लड़के

को जीने के लिये बुरे बुरे नाम रखते हैं किसी के हाथ एक पैसा या एक कौड़ी पर बेच देते हैं और कहते हैं कि यह लड़का तुम्हारा हो गया इस बात को भी बाबू साहब ने छोड़ाया॥

ब्याह और ग़मी में लोग इतना ख़र्च करते हैं जिससे निहायत तंग हो जाते हैं बाबू हितनारायण सिंह ने इस बात पर भी बहुत बहस किया था कि इसमें इतना ख़र्च करना बुद्धिमानों का काम नहीं है क्योंकि जितना ख़र्चा ब्याह में करते हैं उतना ही जो बर या कन्या को दे दीजिये तो उससे बहुत कुछ लाभ हो इनके समय में कुछ कम हो गया था पर अब तो फिर उसी प्रकारसे ब्याह में ख़र्च करने की रीति जारी है।

बाबू हितनारायण सिंह की यह राय थी कि जो रीति कुल परम्परा से चली आती है और उस का प्रमाण शास्त्रोंमें लिखा है उसको बहुत पुष्ट करते थे और जो रीति शास्त्रोंमें नहीं लिखा और अच्छे अच्छे लोग उस को निंदा करते हैं तो उसको यह जड़ मूल से उखाड़ने के लिये कोशिस करते थे। एक बार एक कबीर पंथी इनके यहां आया और लगा कहने कि घट ही में गंगा घटही में जमुना हैं सब तीर्थ घटही में है तीर्थों में जाने से क्या प्रयोजन और सब तीर्थों का विशेष कर निंदा भी किया। इन सब बातों को सुनकर बाबू हितनारायण सिंह ने उन को कहा कि चलिये अब भोजन कर आइये तो लेक्चर दीजियेगा। ये विचारे खुशी से खाने गये। बाबू हित नारायण सिंह ने

जलेबी खाने को दिया और कहा कि आप खाइये पानी मंगा देता हूं कहते हैं वे जब आधी जलेबी खा गये तो मारे प्यास के छटपटा गये और कहने लगे कि कृपा कर पानी मंगाइये न तो प्राण जाता है तब तो बाबू हित नारायण सिंह ने कहा कि महाराज अभी आप ने कहा है कि "कहते हैं करते नहीं, वे तो बड़े गंवार। आखिर धक्का खाहिंगे, साहिब के दरबार") तो फिर यों बदल गये अभी तो कहा है कि घटही में गंगा और घटही में जमुना हैं फिर पानी का क्या काम है यह सुन कर वह लज्जित होगया और कहा कि आप पानी मंगादीजिये अब कभी ऐसा न कहूंगा तब पानी मंगाये तो पी कर संतुष्ट हुआ और उस दिन से ब्रह्म ज्ञान का कथना छोड़ दिया।

यह तो मैं अभी लिख आया हूं कि बाबू हितनारायण सिंह बुरी रीति को छोड़ाने में बहुत कुछ उपाय करते थे। सारन के इलाके में ब्राह्मणों और कहीं२ राजपूतों में यह रीति है कि बदले में व्याह में होता है। यह रीति मथुरा में भी है। बाबू हितनारायण सिंह ने कहा कि इससे बुरी रीति क्या होगी बहन को दो और उसके बदले में दूसरे की बहन से व्याह करो या अपनी भतीजी को दो तो अपना व्याह करो इत्यादि बहुत से औगुन दिखाये और विद्वान लोगों ने इस बात को उठा भी दिया॥

एक बार एक बुढ़िया बधपुर नाम गांव में जो तारणपुर से कुछ दूर पच्छिम है नदी में पानी भरने गई थी। पांव फिसल गया और राति के समय था बहुत कुछ रो पुकार

को पर कौन सुनता और निकालता है वह बूढ़िया बराबर बराबर इसी प्रकार बही चली आती थी और हजारों आदमी इसपार उसपार तमाशा देख रहे थे पर ऐसा साह सी कोई न था जो नदी में कूदकर उसे निकाले। जब यह बुढ़िया तारण पुर के सामने आई तो बाबू हितनारायण सिंह निकालने के लिये तत्पर हुए। गांव के सब लोग इन को पागल कहना शुरू किये पर ये बिचारे कूदकर निकाल ने को गये वह बूढ़िया इन के झोंटा पकड़ ली जिस से यह निश्चय होगया था कि अब हितनारायण सिंह भी डूबेंगे पर इनको तैरना भली भांति से आता था इस लिये आप बुढ़िया दोनों बच गये। जब यह बुढ़िया नदी से निकली तो लाखों धन्यवाद इनको दिया और सब लज्जित हो कर अपने घर चले गये। सच है। सवैया।
क्षत्रिय सोइ कहवाइबे जोगु है जो क्षत सोजु बचावन हारो।
नाहिं तो कायरता पकरै अकरै पर लानत आन हजारो।
क्षत्रियता त्रियता में बिभेद रह्यो कहा केवल चोलन धारो।
देखतहूं दुख दुःखिन के द्रव होत हियो नहिं हाय तुम्हारे१

एक बार तारणपुर में आग लगगई थी और उस समय हवा भी बहुत ज़ोर से बहती थी। इसी बिपति में एक लड़का और एक औरत एक घर में घिर गई थी यह हाल सुन कर बाबू हितनायण सिंह कूद कर दोनों को निकाल लाये पर इन के तमाम देह में फोले उठ आये और अच्छे होने की आशा भी न थी पर दवा के जरिये से बहुत जल्द में आराम हो गये।

एक दिन बाबू हित नारायण सिंह पटने गये थे। और वहां पर कई एक पुस्तकें देखने में आई इनके पास जो कुछ रुपया पैसा था इससे उन पुस्तकों को खरीद लिये पर पास में कुछ भी न बचा। यहां तक कि वहां से चलने पर राह में इन को इतनी भूख सताई कि राह में खेसारी का साग खा कर भूख को सांत किये। इसी एक बात से समझना चाहिये कि इन को पुस्तकों पर कितनी प्रीति थी। ये संस्कृत, फ़ारसी, अरबी, बङ्गला, भाषा आदिकी अनेक पुस्तकों को इकट्ठे किये थे और सर्वदा अख़बारों को देखा करते थे और काहते थे कि जो लोग अख़बार को चलावें उनको सहायता देना अवश्य है क्योंकि इस से देशकी बहुत कुछ तरक्की होगी॥

एकदिन ये कहीं से चले आते थे राह में किसी एक अनाथ को देखा कि जो बीमारी से अत्यन्त पीड़ित है उस को अपने यहां उठा लाये और यथायोग्य उस का सेवा किये जब बीमारी छूटगई तो उसको घर पर भेजवा दिये॥

बाबू हितनारायण सिंह महाजनी भी करते थे पर जिन लोगों को रुपया देते थे उस में सूदतक न लेते थे बल्कि जितने रुपये देते थे उस में भी वह जिसप्रकार से देताउसी प्रकार से लेते थे। और कभी किसी का रुपये के लिये कष्ट न देते थे॥

पटना के इलाके में जो खेत बटाई पर है उस में प्रायः नौअत के हिसाब से मालिक और रयत लेती है अर्थात ९ पसेरी मालिक और ७ पसेरी असामी पर ये बिचारे

आसामियों के ८पसेरी कभी २हेते थे इसी से अकसर ज़मीदार लोग इनसे रंज रहते थे। बल्कि लोग कहते थे कि हमलोग चाहते हैं ग्यारह पांच अर्थात् ग्यारहपसेरी मालिकलें और ५पसेरी आसामी वहां पर आप यह रीति जारी करते हैं कहिये कि यह कैसी बात है। पर हितनारायण सिंह यही कहते थे कि गरीबों से इसी प्रकार लेना चाहिये और कभी आसामियों का गला न घोटना चाहिये।

बाबू हितनारायण सिंह ने देखा कि गणित विद्या जो आज कल पढ़ाई जाती है उसमें लड़कों को विशेष परिश्रम पड़ता है और जल्द में आता है नहीं इस लिये ऐसी कोई किताब बनाई जाती कि जिस से लड़कों और पाठकों को सुभीता होता। आखिर यह बात ठहराई गई कि गणित विद्या को इस क्रम से लिखना चाहिये कि और लिखने के समय उन रीतियों को लिखना चाहिये जो केवल जोड़ से हो जाते हैं फिर व्यवकलन के नीचे भी उन रीतियों को लिखना चाहिये जो केवल व्यवकलन से होते हैं फिर ये दोनों अर्थात् व्यवकलन संकलन से जो रीतियां हों उन को उस के नीचे रक्खे और इसी सङ्कलन, व्यवकलन, गुणा, भाग में समस्त गणित को लिख दे जिस से पढ़ने वाले को सुभीता हो और आसानी से गणित विद्या आ जाय।

वैद्यक में भी यह चाहते थे कि कोई ऐसी पुस्तक लिखी जाय जिस से साधारण सब लोग लाभ उठावें अर्थात् उसमें ऐसी ऐसी औषधियां लिखी जांय तो केवल एक या दो

अथवा तीन वस्तु के योग से तैयार हो और औषधि भी परीक्षित हो जिस के पढ़ने से सब कोई अपना काम चला लें। और इसी प्रकार कुछ लिख भी गये थे पर उस का कुछ पता ठिकाना नहीं मालूम हुआ कि वह ग्रन्थ क्या हुआ। ये कुछ अंग्रेजी भी जानते थे और कमिसरी आदि को देख कर यही कहते थे कि यह विद्या जब हिन्दी भाषा में उलथा हो कर साधारण लोगों के काम में आवेगी उस को पढ़कर लोगोंसे कहते थे कि देखो जिसको हम लोग देवता समझते और तत्व जानते थे किस बुद्धिमानी से अंग्रेजों ने उस को और का और ही साबित किया है।

यह परिश्रम बहुत करते थे और इसी से इन का देह सुडौल हो गया था। ये बारबार सब को उपदेश करते थे कि कसरत करने देह आरोग्य रहता है। कसरत करने से किसी काम में आलस नहीं होता। कोई रोग भी असर नहीं करता दूसरे भोजन का स्वाद भी कसरत करने ही से मिलता है। कसरत करने से काम करने का अभ्यास बना रहता है निदान कसरत से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं है।

आज कल जो लोग अपने को अमीर या बाबू या धनी लगाते हैं उन को यह सम्मति है कि मेरे घर की स्त्री कोई काम न करें और यही बात सब के यहां है भी पर बाबू हित नारायण सिंह की यह राय थी कि स्त्रियों को सीना फाड़ना और तरकारी, आचार, घर का काम काज या पढ़ना बहुत उत्तम बात है केवल इस बात का लिहाज

रखना ज़रूर है कि स्त्रियों को घर के बाहर न होने देना चाहिये।

बाबू हित नारायण सिंह जी जान से पाठशाला, और अखाड़ा की उन्नति चाहते थे इसमें जहां तक इन से बनता था बाज़ नहीं आते थे। नित्य सांझके समय, भक्तमाल, इतिहास, स्मृति, पुराण को सुनाते थे और उस का अभिप्राय भली भांति से कहते थे। बैदक पढ़ने के लिये बहुत प्रकार से लोगों का शिक्षा देते थे और कहते थे कि इस से शरीर को सुख होता है और धन कमाने के लिये भी इस से बढ़ कर और कोई उपाय नहीं है क्योंकि इस में प्रायः ऐसी २ वस्तु काम में लाई जाती हैं जो हर जगह मिल सकती हैं।

इनके तीन लड़के हैं पहले का नाम बाबू गदाधर सिंह २रे का नाम बाबू ठाकुर दयाल सिंह ३रे का नाम बाबू रामचरन सिंह। इन में बाबू गदाधर सिंह पढ़ने लिखने में जी नहीं लगाते थे और बराबर खेल कूद में अपने समय को बिताते थे। पासी सब तार पर लबनी लटका के घर आवे तब ये गुलेल से फोड़ दें इस से वे सब निहायत तंग हो गये और खोज करने लगे कि कौन फोड़ जाता है पर कुछ पता न लगा ऐसे ही जो लड़के गुड्डी उड़ाते थे उसे भी गुलेल से घर पर बैठ कर फाड़ दें पनभरन के घड़ा को फोड़ दें इन सब बातों को सुन कर बाबू हित नारायण सिंह बड़े सोचमें हुए और गुरु जी के यहांसे उठाकर मियां जी के यहां पढ़ने के लिये बैठाये दिये। मियां जी गदाधर सिंह को सुधारने के लिये बहुत कुछ उपाय किया और

गदाधर सिंह भी एकाद दिन महटिया गये। एक दिन मियां जी ने कहा कि तम्बाकू चढ़ाओ। गदाधर सिंह ने तम्बाकू चढ़ा लाये तब से मियां जी रोज़ उन से तम्बाकू चढ़वाने लगे। एक दिन बाबू गदाधर सिंह ने कुछ कसूर किया इस पर मियांजी ने बड़ा मार मारा तब तो गदाधर सिंह बहुत नम्रतासे कहा कि अब मैं ऐसा काम न करूंगा पर मन में सोचा कि अब इन को छकाना चाहिये। एक दिन मियां जी ने कहा कि तुम अमावट ले आओ गदाधर सिंह अमावट घर से ला कर गुरू जी को दिये। इस ने जूता के सुखतला जो मुलायम था उस पर आम के रस से अमावट बनाये और मियां जी को दे गये मियां जी तो समझे कि रोज अमावट दे जाता है आज भी अमावट दे गया होगा एक साथी जो उन के यहां आया था कहा कि भाई अमावट खाओ, लगे दोनों जने तो अमावट खाने तो वह चाम का अमावट टूटता नहीं वहां पर कई एक आदमी बैठे थे उन सबोंने कहा कि भाई यह कैसा अमावट है जो टूटता नहीं। एक आदमी ने हंस कर कहा कि मियां जी चाम तो नहीं है उस पर मियां जी बिगड़े और कहा कि तुम बड़े नालायक बदतमीज आदमी हो बोलने को ढङ्ग तो जानते हो नहीं हो वह बिचारा चुप हो गया पर यथार्थ में यह चाम ठहरा तब तो मियां जी गदाधर सिंह पर टूटे लेकिन इन्होंने साफ कहाकि मैं क्या जानूं। जैसा घर पर मिला वैसा लेआया घर पर लोगों ने कहा कि अमवट खरीदा गया था शायद वहां हो का ऐसा हो

कौन जाने पर यह सब कोई कहा कि गदाधर सिंह असावट नहीं बना सकता तौभी मियां जी गदाधर सिंह को खूब ही पिटा। गदाधर सिंह अपने मनमें यह ठहरा लिये कि जो कुछ हो पर मियां जी को छकाना चाहिये जब घर पर गये तो थोड़ा सा कवाच्छ का पत्ता लेते आये जहां मियां जी सोते थे वहां पर रख दिये। मियां जी जब रात को पलंग पर सोये तो देह में नोचने लगी आखिर कार इस में बहुत दुख पाये भीत में देह रगड़े इस से तमाम पीठ फूट गया और यह हालत मालूम हुआ कि पलंग पर कौन कवाछ को रखा था।

पर सन्देह किये कि यह काम गदाधरसिंहका है इसी से गदाधर सिंह को मारा और कहा कि अब ऐसा काम करोगे तो पीठ का खाल खींच लूंगा गदाधर सिंह अपने मन में निश्चय किये कि अब इनको भली भांति से छकाना चाहिये घर पर गये तो बारूद लेते आये मियां जी ने कहा कि तम्बाकू चढ़ाओ जब तम्बाकू चढ़ाने गये तो चिलम में नीचे कुछ तम्बाकू रखकर ऊपर से बारूद रख गोल टिकिया लगाकर मियां जी को पोने के लिये दिये मियां जीने हुक्का में दम लगाया तो तम्बाकू नहीं सुलगा था लगे मुंह से फूकने इतने में बारूद पर जो आगकी गरमी पहुंची तो एक बार उड़ कर मियांजी को दाढ़ी और मूछें बिल्कुल जल गईं और लड़के सब हंसने लगे गदाधर सिंह वहां से भाग गये जब यह हाल बाबू हितनारायण सिंह को

मालूम हुआ तो बड़े दुखी हुए और मियां जी ने तो उसी वक्त अपने घर की राह ली।

इधर गदाधर सिंह मियां जी के पास से भाग कर गये तो दो भैंस के पूंछ बांध दिया और एक डण्टा भैंसको मारा कि वे सब भाग चली और एक दरख्त तर जा कर ठहरी कि दोनों की पूंछें उखड़ गई। वहां से आगे चल कर स्यार की माद में आग लगा दिया और इसी प्रकार अनेक उपाधि करने लगे। बाबू हित नारायण सिंह ने धर कर मंगवाये और कुछ मार पीट न किये लोगों ने कहा कि बिगड़ा लड़का है अगर इस को यह खूब मारे तो क्यों नहीं सुधर सकता है पर मारपीट करते ही नहीं सुधरेगा क्या बल्कि और बिगड़ जायगा। बाबू हित नारायणसिंह ने सोचा कि।

जो रीझै जेहि भांति सों, ताको प्रथम रिझाउ।
पीछे युक्ति विवेक से, अपने मत पर लाउ॥

यह सोच कर देखा तो गदाधर सिंह की तबियत हंसी में खूब लगती थी इन्हीं ने ऐसी ऐसी हंसी की बात कहने लगे कि गदाधर सिंह सब खेलों को छोड़ कर रोज़ हंसी की बातें सुनने लगे एक दिन बाबू हित नारायण सिंह ने कहा कि ऐसी अनेक बातें संस्कृत फारसी में लिखी हैं अगर जो तुम संस्कृत फ़ारसी पढ़ते तो लाखों बातों को जान जाते और ऐसी बहुत सी चीज़ें बना भी सकते। कहते हैं कि गदाधर सिंह इस बात को सुन के पढ़ने लगे और थोड़े ही दिनों में अपने काम काज लायक पढ़ भी

लिये। इस बात को सुन कर सब लोग अचंभे में आये कि गदाधर सिंह पढ़ गये। पर इस बात के अचंभे में न आये कि इन्हों ने किस ढंग से पढ़ाये।

बाबू हितनारायणसिंह यह बात बराबर कहते थे कि नीचों से सर्वदा बचना चाहिये क्योंकि अब वे समय न रहे कि जिस में वर्ण विचार हो और अंगरेज़ी अमलदारी होने से सब धान बाईस पसेरी अर्थात् सब बराबर होगये बल्कि नीच ही लोग बढ़ चढ़ भी गये तो इन के एक दो बात परहेज भी करना हम लोगों को उचित है क्योंकि समय देख कर काम करना बहुत अच्छी बात हैं। क्योंकि सरकारी कर्मचारी लोग यही जानते हैं कि ब्राह्मण क्षत्री ही वैश्य शूद्र पर ज्यादती करते हैं पर यह नहीं जानते कि यही लोग आज कल हद्द से ज्यादा परहेज करते हैं। इसलिये सब किसी को उचित है कि खल और कांटा से बचा कर रहना ही भला है और न तो भली भांति से जूता से मुंह तोड़ना ही भला है। सच है कि किसी कवि ने कहा है कि

दो०।—खल कांटा इन दुहुन को, है जग दोइ उपाय।
जूतन ते मुंह तोड़िबो, रहिबो दूर बचाय।

आज कल यही हाल देखने में आता है शहरों में दूकानदारोंसे कुछ कहो तो चट गाली देदेते है, कुछ छिनसे बोलो वह भी अलग फटकारती है भले मनुष्योंको कहीं भी गुजड़ बिना गम खाये नहीं हो सकता।

बाबू हित नारायण सिंह दिल्ली, लखनो, बनारस, आगरा, कलकत्ता, ढाका, उज्जैन, इन्दौर, मथुरा, अजमेर,

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, चित्तोड़, बीकानेर, जैसलमेर, अलवर, भरत पुर, धौल पुर, नागपुर, भागल पुर, गया, कानपुर, फर्रुखाबाद, इटावा, रुड़की, लाहौर, मुलतान, श्रीनगर, पिसावर, नगरकोट, कोट कांगड़ा, सरहिन्द, पानीपत, करनाल, मेरट, मिरजापुर, सागर, होसङ्गाबाद, आदि शहरों और तीर्थों में घूम आये थे ।

ये सालिगराम को पूजन और सन्ध्या पूजा पाठ भी विशेष किया करते थे । एक दिन यह पूजा करते थे कि एक आदमी ने आकर कहा कि महाराज दानापुर में एक पूलिस का सिपाही बहुत जोर जुल्म करता है और जो कोई अनजान आदमी पेशाब करता है उसे मना नहीं करता और धर कर जब कुछ लेता है तो छोड़ता है नहीं तो धर कर साहब के पास ले जाता है और इस प्रकार से इस ने बहुत आदमियों को तंग कर चुका और करेगा । बाबू हित-नारायण सिंह ने सोचा कि ऐसा कोई उपाय करना चाहिये कि जिस से इस दुष्ट को बान छूटे । आखिर एक आदमी को बुलाकर कहा कि तुम दानापुर जाओ और सड़क पर पेशाब करना जब सिपाही दौड़कर धरने आवे तो वहां से थोड़े दूर पर और हटकर पेशाब करदेना जब कुछ मागे तो न देना और जब साहब के पास लेजाय तो साफ कह-देना कि मैं गंवार आदमी हूं क्या जानूं कि कहां पेशाब करना चाहिये कहां न मैं तो देखा कि सिपाही जो इस काम से जानकार होगा वह यहां पेशाब करता है तो मना न होगा इस लिये वहां पर पेशाब किया जब

साहब कहे कि तुम झूठे हो तो कहना कि चलकर देखिये कि मैं कहां पेशाब किया है और सिपाही कहां पेशाब किया है तो जहां तुम गुप्त रीति से पेशाब करो वहां सिपाही को बता देना जब साहिब देखेगा तो अवश्य उस को सजा होगा। कहते हैं वह आदमी बाबू हित नारायण सिंह के कहने अनुसार दानापुर में आया तो वही हाल हुआ जो बाबू साहब बता गये हैं। साहब खुद आकर देखा और सिपाही भी यही कहा था कि खुद चलकर देखिये मैं कहां पेशाब किया है साहब देखा तो मालूम हुआ कि दो आदमी का पेशाब दो जगह किया है तब तो पुलिस के सिपाही से पूछा कि एक यही पेशाब किया है या और कोई तब तो वह चुप हो गया साहिब ने उस वक्त इस को तो छोड़ दिया और उलटा सिपाही को सजा दिया। तब से बिचारे गरीबों का इस दुष्ट के हाथ से गला छूटा।

एक बार यह पटना आये थे और इन का एक मित्र फौजदारी में पकड़ा गया था जब इन को वह देखा तो रोने लगा। बाबू साहब ने उसका नाम अपना कहा और कहा कि मित्र मेरे नाम से तुम पकड़े जाओ अर्थात् उस का नाम भगवान सिंह था और इन का नाम हित नारायण सिंह था तो कहा कि भगवानसिंहके बदलेमें हित नारायण सिंह धरे जांय पुलिस वाले ने पूछा तुम्हारा क्या नाम है इन्हों ने कहा कि भगवान सिंह और जिस को हम लोग पकड़े हैं उस का कहा हित नारायण सिंह तुरन्त पुलिस वाले ने इस को छोड़ दिया और हित नारायण सिंह को पकड़

लिया। उस वक्त झूठमूठ को बाबू साहब रुपया देते थे कि मुझे छोड़ दो पर पूलिस वाले ने न छोड़ा जब दारोगा के सामने ले गया तो दारोगा ने देखा कि यह तो बाबू हित नारायण सिंह हैं उठ कर बैठाया और सिपाहियों से पूछा कि तुम ने किस को पकड़ लाया है यह भगवान सिंह नहीं यह तो बाबू हित नारायण हैं इस काम से तो तुम जेहलखाने में जाओगे बाबू हित नारायण सिंह ने भी हंस कर कहा जनाब देखते हैं कि नहीं यह मुफ़त में मुझे पकड़ लाये हैं। यह सुन कर बिचारे सिपाही सब चुप हो गये और ये अपने घर पर चले आये।

बाल्यावस्था से ही इन को पुस्तकें देखने को बड़ी सौक़ थी यहां तक कि रास्ता में चले जाते थे और पुस्तकों को पढ़ते थे। कोई नई पुस्तक जब इन के हाथ में आ जाय तो जबतक शुरू से आखिर तक न देख जाते थे तब तक खाना पीना कुछ अच्छा नहीं लगता था। रसोई खाने के लिये जब बैठते थे तब भी एक आदमी पुस्तकों को पढ़ कर सुनाया करता था। इसी से यह ऐसे पण्डित हो गये थे कि इन के तुल्य बिहार प्रान्त में दूसरा कोई न था। ये संस्कृत, बंगला, अंगरेज़ी, उर्दू, फारसी, अरबी, पंजाबी, गुजराती महाराष्ट्री मैथिलाक्षर और देश देशके अक्षरों और बोलियों को जानते थे इसी से यह बहुत सी बातें भी जान गये थे सच है कि जब तक पुस्तकों को वृद्धि न हो तब तक बिद्या को वृद्धि नहीं हो सकती है।

एक वस्तु का नाम आल है जिस का रंग होता है उस

की खेती जिस के वंश में पहले होता था वही अब भी करता है उस का असल गर्ज़ यह है कि वे सब इस बात को उड़ा दिये हैं कि जो लोग आलू की खेती करते हैं अवश्य मर जाते हैं और यही बात दो चार जगह शायद हो गई है इस लिये इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता बाबू हित नारायण सिंह ने कहा कि यह कोई बात नहीं है यह उन लोगों का काम है जिस के यहां इस की खेती होती है कि ऐसा कहने से और कोई इस काम को न करेगा यह क्या है जो करेगा वह मर जायगा। यह तो कोई काल है नहीं ? और बहुत लोगों को उत्साह दिया कि आपलोग इस की खेती कीजिये तब तो लोगों ने आलू की खेती की और उस से कुछ न बिगड़ा तब से यह सन्देह मिट गया कि आलू के खेत जो करता है वह मर जाता है। तब से आलू की खेती सब कोई करने लगे।

बाबू हित नारायण सिंह चाहते थे कि खेती बारी के कामों में उन्नति की जाय और बहुत सी अंगरेज़ी पुस्तकें भी मंगा चुके थे कि उल्था हो और देशीय लोग जो जो कहावतें इस विषय में कहते थे सब को इकट्ठा भी किये थे जिसमें से कई एक यहां पर लिखी जाती हैं जिससे साधारण लोगों को बहुत कुछ सहायता मिल सकती है।

नक्षत्र विधि से कृषी कर्म साधन। कृतिका इस नक्षत्र में चीना बोया जाता है।

१—जब देखिहहु खरची के हीन। जानि कृतिका बोइहहु चीन। पाख तीन में होइ तयार। एहि में कछु

संसय नहिं यार। दो०। कृतिका चौना बोइये, होत भली बिधि मीत। भाखत है कीसान सब, जेहि के एहि पर प्रीत।

२—रोहिणी—इस नक्षत्र से ही बर्षा काल गिनते हैं। इस नक्षत्र में उड़द, मक्का, (मकई) मड़ुआ, धान (साठी बोड़ा छोड़ कर) पटुआ बोते हैं। इस में यह कहावत प्रसिद्ध है। "उड़द मक्का मड़ुआ धान। रोहिणी में सब बोओ किसान"

३मृगशिरा—इस नक्षत्र में मगह में किसान लोग हल नहीं चलाते और जहां चलाते हैं वहां इस नक्षत्र के आदि में ८ दिन नहीं चलाते। और कहुआष्टक कहते हैं पर एक कहावत प्रसिद्ध है। "रोहिणी मृगसिरा बो मक्का, उड़द मड़ुआ देओ न टक्का" इस से मालूम होता है कि कहीं२ उड़द, मड़ुआ, मक्का बोते हैं। पर मगह में कहीं मृगसिरा में लोग नहीं बोते। इस नक्षत्र में बर्षा होने से सर्पादिक विषयले जन्तुओं की बृद्धि और कपास ज्वार का नाश होता हैं।

४—आर्द्रा में साठी बोई जाती हैं। "अदरा में जो बोवे साठी। दुःख को मारी निकारै लाठी। अदरा में जो मेघ घनेर। ज्वार कपास होय बहुतेर। बोओ बाजरा कभों न भाई। यामें धोखा खात सदाई।

५—ऐसे ही कई एक कहावत है जो मिले जुले नीचे लिखा है। "पुष पुनरबस बोये धान। असलेखा के दो दिन परमान। बोओ बाजरा आये पुख। फिर मन माने भोगो सुख। "मघा के बरसे माता के परसे" जो कहीं मघा

बरसे जल। सब नाजों में होंगे फल। "जो कहीं पुरवा पानी देवे। सब जिन्सों को को कीड़ा लेवे। पुरवा में मत रोपो भइया। तीन धान और तेरह पइया॥

"जब बरसैगी उत्तरा। नाज न खाहैं कुत्तरा।"

उतरा उत्तरा दै गये, हस्त गये मुख मोर।

जाय जो कहिये चित्त सो, लाओ समय बहोर।

"जो बरसे पुनरबस स्वात। चले न चरखा बजे न तात।

इत्यादि अनेक कहावतें और कृषि कर्म सम्बन्धि चिजों को इकट्ठे किये थे।

इस बात को तो सारे भारतवर्ष के लोग जानते हैं कि भादों सुदि चौथ को लोग चांद को देख कर कलंक मिटाने के लिये दूसरे से गाली सुनना अथवा मार खाना अच्छा समझते हैं। यही नहीं बल्कि अपने वैरियों से वैर साधने के लिये यह समय पाकर ढेला से मार देते अथवा उसके छान छप्पर को तोड़ देते ढेला, ईंटा, पत्थर का बरषा करते हैं इस से कितने आदमियों का अंग भंग हो जाता और ये लोग चुपचाप अपने घर में बैठ कर हंसते हैं। इस रीति को छोड़ाने के लिये बाबू साहिब ने बहुत कोशिश की और इन के समय छूट भी गया था। ये लोगों से कहे कि भाई दशम स्कन्ध भागवत में लिखा है उस कथा को इस कलंक मिटाने के लिये सुनिये यह कौन अच्छी बात है इसके सिवाय फागुन के महीने में रात भर औ पंचमी से लेकर पूर्णमासी तक लोग गाओं में घूमते थे और नीच जातियों को गाली

गाते होलईआ, कबीर बोलते और दंगा मचाते थे बाबू हित नारायण सिंह ने इसे भी बहुत समझा बुझा कर कम करवाये और यह ठहराया कि यह तिहवार शूद्र का है ब्राम्हण, क्षत्री, बैश्य का नहीं हैं अतएव इसमें लोग शूद्राचरण करने लगते हैं हम लोगों को (ब्राह्मण, क्षत्री, बैश्य) उचित है कि राखी, दशहरा, दीपमालिका में अपनी रीत्यानुसार काम करें। होली में हम लोगों को कभी शरीक होना न चाहिये।

सावन भादों के महीना में जब धान की रोपनी होती है तो रोपने वाली स्त्रियां राहियों को गालियां देती और कादों मे लेटाती हैं इसे भी बाबू हित नारायण सिंह ने लोगों से कह सुन कर कम करवाये।

इस देश में व्याह के समय कसबी सभा में गाती और भाव बताती है उस में भी बाप बेटा गुरू पुरोहित आदि बैठे रहते हैं और अन्य स्त्री को अन्य पुरुष लगा कर गालियां गाती हैं और उस में जितने मूर्ख हैं वे बिचारे हंसते और खुश होते हैं उसे देख कर बाबू हित नारायण सिंह बड़े सोच में हुए और कहा कि इस से बढ़ कर बेवकूफी क्या होगी उस पर एक प्रहसन बना कर लोगों को कह सुनाये इस से इस की रीति कुछ कम हो गयी थी पर यह एक बारगी जड़ मूल से न गई।

अंगरेजी पढ़े लिखे लोगों में इस बात की विशेष चर्चा है, कि पहले, कागज़, कांच होता ही न था यह तो करीब ००वर्ष के लग भग से प्रचलित हुआ है बाबू हितनारायण

सिंह ने इस को साबित की कि नहीं यह हिन्दुस्तान में बहुत दिनों से चला आता हैं और इस में बहुत कुछ सबूत भी दिये इसी प्रकार बालमीकि का समय वररुचि का समय, रामचन्द्र का समय, बेद बनने का समय आदि को अंगरेजों के सम्मति के बिपरीत सिद्ध किये थे।

कायस्थ कौन वर्ण हैं और खत्री कौन वर्ण हैं इस का निश्चय भी बाबू हित नारायण सिंह ने किया था।

बाबू हित नारायण सिंह बराबर अपने वर्ण अर्थात् क्षत्रियों को शिक्षा देते थे हमलोगों को उचित है कि अपने इष्ट मित्रों को सहायता करें देखिये पहले स्त्रियां अपने जी जान पर खेल कर अपने पति, धर्म्म, राज्य को रक्षा की है और हमलोग तो पुरुष हैं सब प्रकारसे रक्षा करनी चाहिये इस में कुछ कसर न लाना चाहिये तवारिखों में कूर्म देवी जो पट्टन को राज कुमारी और राजा सोमरसी चित्तौड़ वाले की रानी थी यह पतिब्रता स्त्री अपने पति के मरने पर अपने पुत्र के सामर्थवान होने तक सब राज काज को बड़ी बुद्धिमानी और निपुणता पूर्वक चलाई और अम्बर के नजदीक कुतबुद्दीन शाह को पराजय कर घायल की और सीगर की लड़ाई में काम आई इसके सिवाय रानी पद्मावती का हाल यों लिखा है कि वह हमीर सिंह चौहान राजा सिंहलद्वीप की लड़की थी। अत्यन्त सुन्दर होने के कारण उस का नाम पद्मावती रक्खा गया क्योंकि हम लोगों के यहां चार प्रकार की स्त्रियों में से सब से बढ़ कर पद्मिनी को लिखा है यथा नाम तथा गुण इस का नाम है इस का

ब्याह भीम सिंह* से हुआ था। दिल्ली के बादशाह अला-उद्दीन ने इस स्त्री की सुन्दरता सुन कर १२७५ ई० में चित्तौड़ पर चढ़ाई की और जब कोई उपाय अपनी अभिलाषा पूर्ण होने का न देखा तो महाराणा भीम सिंह से विनय पूर्वक कहला भेजा कि अगर आप अपनी सुन्दरी के दर्शन सीसे की ओट से करा दीजिये तो मैं सन्तोष कर दिल्ली को चला जाऊंगा और मेरी आप की मित्रता बनी रहेगी। उस समय में शायद परदा करने की रीति नहीं थी वा राजा ने मित्र जान कर इस बात को कबूल कर लिया। अलाउद्दीन राजपूतों की सत्यता और धर्म पर भरोसा कर थोड़े से आदमियों के सङ्ग गढ़ में चला आया और रानी का दर्शन कर चित्त की अभिलाषा पूर्ण की लौटते समय महाराणा भीम सिंह से बहुत कुछ निवेदन किया कि मेरे लिये आप को इतना क्लेश हुआ अब क्षमा कीजिये, मेरी आपकी आगे की मित्रता रहेगी। महाराणा भीम सिंह ने देखा कि बादशाह अलाउद्दीन ने मुझ पर विश्वास किया कि अकेला मेरे क़िले में चला आया इसलिये मुझे भी चाहिये कि इस के पहुंचाने के लिये थोड़ी दूर जाय। बादशाह ने कहा कि आप अब लौट जाइये तब महाराणा साहिब ने कहा कि मैं थोड़ी दूर और चलूंगा। बादशाह के मन में तो पहले ही से अपना अर्थ साधने के लिये छल था बातों ही बातों में अपना लशकर

* इस का नाम रतन सेन भी कई एक किताबों में लिखा है।

तक राणा साहिब को ले आकर कैद कर लिया और निर्लज्ज हो कर कह दिया कि जब तक तुम अपनी रानी पद्मावतीको मुझे न दोगे तबतक मैं तुझे न छोड़ूंगा। उस समय राणा भीम सिंह ने अपने मन में कहा कि सच है शत्रु को मित्र जानना अपने लिये काल बिसाहना है।

गिरधर कविराय ने भी कहा है। कुंडलिया। बैरी बंधुआ बानिया ज्वारी चोर लबार। बिभिचारी रोगी रिनी नगर नारि को यार। नगर नारि को यार भूल परतीत न कीजै। सौ सौ सौहैं खाय चित्त एको नहिं दीजे। कह गिरधर कबिराय घरै आवे अनबैरो। हित को कहे बनाय जानिये पूरो बैरो।

जब यह खबर रानी पद्मावती ने पाई तो अपने चाचा और भाई को सम्मति करने के लिये बुलाई और कहा कि ऐसी कोई उपाय होना चाहिये कि जिस में महाराणा साहिब बन्दी से छूटें और मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा न लगे तब तो उन लोगों की यह राय ठहरी कि पद्मावती शाह के साथ बहाना कर के राना को उस बिश्वास घाती के पंजे से निकाल लावे रानी पद्मावती ने बादशाह को कहला भेजा कि आप खाइयों के बाहर लशकर उठा लावे मैं अपनी सब सखी सहेलियों समेत आप के पास आती हूं उस ने प्रसन्नता पूर्वक यह शर्त स्वीकार कर के लशकर में सिपाहियों को आज्ञा कर दी कि रानी पद्मावती आती हैं कोई मनुष्य किसी प्रकार का उपद्रव वा निरादर वा किसी स्त्री का परदा खोल के न देखे रानी और उसकी सहेलियों

की सवारी के लिये सात सौ परदेदार डोलियां तैयार की गई, जिन में हर एक के भीतर एक एक शस्त्रधारी रणबीर क्षत्री और बाहर छ: छ: डोली के कहारोंके भेषमें बादशाह के लशकर में चले, एक बड़े तम्बू के अन्दर डोलियां उतारी गई पद्मावती बादशाह से बिनती की कि एक बार मुझे महाराणा साहिब का दर्शन करने दीजिये फिर मैं आप की होजंगी। इस बिनती को स्वीकार कर बादशाह ने हुकुम दिया कि आध घंटे में मुलाकात कर लो। जब राणा साहिब पद्मावती से मुलाकात करने गये तो रानी पद्मावती और रण कर्कश क्षत्रियों ने कपट रूप त्याग करके बादशाह के लशकर को मारना शुरू किया और ऐसी घबड़ाहट डाल दी कि किसी को होश हवास न रहो किसी के पास तलवार है तो ढाल नहीं किसी के ढाल है तो तलवार नहीं पाओं मे जूता सिरों मे पगड़ी तक न रही आदमी इतने मारे गये कि कुछ गिनती न रही। क्षत्रियों ने ऐसी बीरता दिखाई कि बादशाही फौज क्षण मात्र भी सन्मुख न ठहर सकी बिशेन बंशावतंश मध्यावली देशाधीश* महाराज धूमसेन न रहते तो अलाउद्दीन उस समय जीते जी दिल्ली न पहुंचते। महाराज धूमसेन बहुत बहादुरी के साथ अनेक कष्ट सह कर बादशाह का प्राण बचाया।

* यह तो बहुधा लोग जानते होंगे कि बिशेन क्षत्री मुनिबंश हैं अब यह प्रगट करना कि किस मुनिसे है बिशेन क्यों कहलाने लगे। ब्रम्हा के पुत्र भृगु के बंश में परसुराम

अलाउद्दीन को इस प्रकार एक स्त्री से काम करने की बड़ी लाज थी, दिन रात इसी चिन्ता में डूबा रहता था कि किस उपाय से चितौड़ गढ़ फतह करूं सन् १३०३ ई० में फिर सेना सम्हाल कर चढ़ाई की और इस बार इस के सिपाहियोंने भी बड़ी बहादुरी दिखाई पर जब क्षत्रियों के सामने पड़े तो बातों बात में खेत आने लगे परन्तु इस वक्त भी महाराज धूमसेन की बहादुरी से पांव नहीं उखड़ने पाई जब क्षत्रियोंने देखा कि अब बल और साहस म्लेच्छों के टीडी दल के सामने कुछ काम नहीं करता और न कोई ऐसी उपाय, इस दुष्ट म्लेच्छ राजा से प्रतिष्ठा बचने का है तो अब क्षत्रित्व इसी में है कि तलवार हाथ में लेकर रण में कट मरें यह सोच विचारकर जुहार (जिस का नाम सुन कितने कादरों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं करने को उद्यत हुए किले को अंदर से गुफा में प्रचंड आग लगा कर अपनी २ स्त्रियों को बुला कर कहा कि सिवाय अग्नि

द्रोणाचार्य्य और वत्स इत्यादि बहुतसे ऋषि मुनि आचार्य्य हुए तदनन्तर मयूरभट्ट हुए जो ककराडीह में (अब ज़िला आज़मगढ़ में सरयू नदी के दाहिनी ओर मझौली से अनुमान छः या सात कोस पर है) तपस्या करते थे। मयूर भट्ट ने अपने तीन बिवाह (एक कन्नौज के किसी कुलीन ब्राह्मण की कन्या से २रा अयोध्या के रघुबंशी क्षत्री के घर और ३रा सोमवंश की लड़कीसे) किये और इन स्त्रियों से तीन पुत्र हुवे अर्थात पहली से नागेश्वर भट्ट जिस के बंश में पयासी के

के प्रतिष्ठा बचाने को और कोई उपाय दृष्टिगोचर नहीं होता कल हम सब स्वर्ग में आप सब से मिलेंगी । इतनी बात को सुनकर सब क्षत्रियानियां पद्मावती समेत दहकती अग्नि में प्रवेश कर गईं और उन के पुरुषों ने उन का एक एक कपड़ा अपने शरीर पर रख कर केसरिया बागे पहन कर क़िले का फाटक खोल दिया और लड़ाई में इस बहादुरी से मारे गये कि जिस की कथा याद कर आज भी क्षत्री गण का वही जोश हो जाता है । जब लड़ाई में चित्तौड़ वाले सब के सब मारे गये तो बादशाह पद्मावती के मिलने की अभिलाषा में फूले न समाते हुये क़िले के अन्दर आया और उस के देहों पर धुवां उठते हुए देख हाय मार कर रह गया और विशेष रंज हो कर जो स्त्री पुरुष क़िले में बचे थे भेड़, बकरी के समान काट डाला और घर, क़िला, बाग बगीचा आदि को तोड़वा दिया केवल उस मन्दिर को न तोड़वाया जिसमें रानी पद्मावती रहती थी ।

मिश्र हैं जो इस सरवार देश के अति प्रतिष्ठित ब्राह्मण हैं २री से बिश्वसेन जिसके वंश में बिशेन क्षत्री हैं और ३री से बक्कसाहि जिस से बगौछिहा भूमिहार हैं और तीनों वत्स्यगोत्र कहलाने लगे । बिश्वसेन अपने पिता मयूर भट्ट के आशीर्वाद से सरयू के इस पार अर्थात् परगना सलेम पुर मझौली में आये और भरों से लड़कर (जो पहले इस देश में राज्य करते थे) राज्य छीन लिया और क़िला बनवा कर उस स्थान का नाम मध्यावली और मध्यपल्ली रक्खा (जिसका

वह गुफ़ा जिस में रानी पद्मावती जल कर भस्म हो गई है अब राजपूतों का एक तीर्थ स्थान हैं। जो लोग यहां आते हैं जी जान से पद्मावती की प्रतिष्ठा करते हैं। अलाउद्दीन खिलजी चित्तोड़ से लौट कर जब दिल्ली में आया तो महाराज धूमसेन को मल्ल की पदवी दी। उसी समय से मझौली के महाराज मल्ल कहलाने लगे और आज तक लोग मल्ल ही लिखते हैं। अब सोचना चाहिये कि अपनी इज़्ज़त के लिये पद्मावती ने कैसी बहादुरी दिखलाई और अन्त में आग में खुशी पूर्वक जल गई। इस के सिवाय एक स्त्री की कथा यों लिखी है कि अकबर ने अपने महलों में मीना बज़ार लगवाया था जिस में राजपूतों और मुसलमानों की स्त्रियों की लड़कियां बुलाई जाती थीं और खुद अकबर स्त्री का रूप धर कर उन के रूप यौवन देखता था और जिस को चाहता पकड़ कर पति भंग करता था, इस समाचार को सब कोई जान गये थे परन्तु किसी को शक्ति न थी कि

अपभ्रंश अब मझौली हो गया) और अपने बड़े भाई नागेश्वर भट्ट को नगर और पयासी ग्राम और छोटे भाई बक्क साहि को मरहे चौरा दिया जब विश्वसेनने अपनी वीरतासे इस राज्य को भरों से ले लिया तब उस समय के बादशाह ने इन को बड़ी प्रशंसा की और महाराज्य की पदवी दी। कहते हैं कि धीरे धीरे यह राज्य इतना बढ़ा कि इस की सीमा पूर्व पटना पश्चिम अयोध्या उत्तर नैपाल की अमलदारी और दक्षिण सरयू नदी ठहराई गई, पर पीछे इस

मुंह से भाप निकालें सब लोहू का सा घूंट पी कर रह जाते थे एक दिन इस ने इन प्रधान स्त्रियों में से राजा मेवाड़ की बेटी को पसन्द किया और अपनी दासियों को आज्ञा कर दी कि जब मेला हो चुके तब इस सुन्दरी को किसी तरह पर मेरे पास ले आना। अकबर की आज्ञानुसार वे कुटनियां राजकुमारी को भुला कर वहां ले गई जहां अकबर अकेला बैठा हुआ इस का बाट जोह रहा था। राजकुमारी को देख कर शीघ्र उठ खड़ा हुआ तब उस वीर स्त्री ने बादशाह का दुष्ट विचार समझ कर जूड़े में से एक तीक्ष्ण छुरी निकाल अकबर की छाती पर तान कहा कि बस अभी शपथ कर कि फिर मैं राजपूतों की कुलवंती पतिव्रता स्त्रियों को कुदृष्टि से न देखूंगा नहीं तो अभी मैं तेरा प्राण लेती हूं इस बात को सुन कर तीन बार शपथ की और कर जोड़ कर कहा अब मैं ऐसा काम कभी न करूंगा तब वह घरपर आई और अपने पति के सिवाय

कुल के महाराज दान में ऐसे तत्पर हुए कि बहुत पृथ्वी ब्राह्मणों और २रे वर्णों को दे दी। महाराज बिश्वसेन ही के नाम से उन के बंश वाले बिसेन कहलाने लगे। इन के पुत्र महाराज वीरसेन हुए और इसी प्रकार से एक के पीछे २रे राज्य करने लगे १८वीं पीढ़ी में महाराज धूमसेन हुए हैं। बिसेन में आज कल ३ राज्य हैं मझौली, कालाकांकर भिनगा

यह भेद किसी से न कहो। ऐसे हो अनेक स्त्रियां अपनी पतिव्रता धर्म्म, राज्य आदि को बचाई है हम लोग तो पुरुष हैं जो न बचावे वह औरत से भी हीन है।

इन बातों से साफ प्रगट हुआ कि बाबू हित नारायण सिंह जो जान से देशोपकार करने में तत्पर थे और बहुत कुछ कर भी चुके थे पर लोग यह शंका करेंगे कि इन को किया किराया यह बात न हुई तो यह है कि प्रेरक यही थे फिर तो अनेक मित्रों ने इन को सहायता की कि जिस में यह अपने काम को पूरा किये। ये कुछ काव्य भी करते थे पर इस तरफ ध्यान विशेष न दिये बाल्यावस्था में कुछ काव्य किये थे उस में से थोड़े यहां पर लिख भी देता हूं।

दोहा।

उठहु कृपा करि भ्रात गण, जो क्षत्री कुल होय।
नेक बिलम्ब न करहु अब, गये सबै सुख खोय ॥ १ ॥
देव पितर भारत दुखी, कष्टित गऊ अधिकाय।
हाय चान के बान अब, दियो सबै बिसराय ॥ २ ॥
क्षत्री कुल में जनम ले, कियो नहीं उपकार।
माता पिता कुल को अहे, तास तुम्हें धिरकार ॥ ३ ॥
लाज न लागत कहन में, क्षत्री शब्द बिचार।
नाम अर्थ के पाइ कै, करु जग में उपकार ॥ ४ ॥
ना तो क्षिय कहिबो करो, याते भलो सुहाय।
अब क्षत्री के कहन में, गई मरजाद बिलाय ॥ ५ ॥
सूर्य्य चन्द्र ऋषि बंश भृगु, अपर गऊ ते जोय।

देखु बिचार उचारि अब, कौन कहां हो सोय ॥ ६ ॥
रीत प्रीत के भूलि कै, दास जगत के होइ।
कर जोरे दिन काटनो, दुर्लभ जग में होइ ॥ ७ ॥
नाम अर्थहिं ठीक करो, एक जीव सब होय।
जात तुरत दुख भाजि के, या भारत ते रोइ ॥ ८ ॥
तुम्हें बिना कछु चलत नहिं, या जग के सुनु काम।
याते सब को कहत हौं, उठो त्यागि बिसराम ॥ ९ ॥
क्षत्री राज कुल जो अहै, सोचो मन ठहराय।
गोहत्या के देखि के, क्यों न तरस उर आय ॥ १० ॥
ऐसेहि निस दिन बितत है, यवन करत उतपात।
दुखित आर्य्य गण होत हैं, तस हृदय बहु भांत ॥ ११
अति दुख भारत होन तें, हठि राहु सब भाइ।
क्यों न मिलत सब आप में, टै दुख बिबिध बहाइ ॥ १२
प्रथम बढ़हु बिद्या बिबिध, देश रीति को देखि।
ब्यामादिक शस्त्रादि में, हो पुनि सजग विसेखि ॥ १३
गोरमिन् ते अर्ज करि, कल पर लावहु ध्यान।
बिबिधि हुनर या देश में, फैलावहु मति मान ॥ १९ ॥
बने यहां पर बस्तु जो, ताकर करु सनमान।
अपर देश के बस्तु तें, होत यहां अति हान ॥ २० ॥
कृषि कर्म बानिज्य पुनि, शिल्प अधिक उर आन।
अङ्गराठिन को रीत पर, सजग होहु मति मान ॥ २१
बंग बासि के देखि करि, बिद्या बहु फ़ैलाइ।
निज भाषा में रचहु पुनि, ग्रंथ बिबिधि चित लाइ २२
फूट प्रथम तुम त्याग दो, यामें कछु नहिं स्वाद।

ऐसे ही पुनि बेर को, देहु खेत महं खाद ॥ २३ ॥
भटकैया तुम खाहु मति, चुक चखहु मति मीत।
धोखा व्यञ्जनहू तज्यो, बड़ा हीन पर प्रीत ॥ २४ ॥
राज काज दरबार में, निज भ्रातन कहं राख।
जिनके उन्नति के किये, पूरे तव अभिलाख ॥ २५ ॥
अपर वर्ण के राख के, आजकाज महं आप।
बढ़त ऋण सब राज में, होत महा संताप ॥ २६ ॥
अपर बर्ण के उच्च पद, देत इनहिं लघुराज।
याते होइहिं अन्त में, समझो महा अकाज ॥ २७ ॥

दारू सम या देश में, ताको जान सुजान।
निशा दीव में तुल्य है, कहत सकल मति मान ॥ १ ॥
याही पिअन के ठौर में, जो कहूं दृष्टिहुं जाइ।
देखि घिन्न मन होत है, कहत हृदय सकुचाइ ॥ २ ॥
याही पिअन के जात को, नाम यहां कहि देत।
जेहि समझत में चेति हैं, पंचम बरण अचेत ॥ ३ ॥
और बहुत से जात हैं, ब्राह्मण क्षत्री त्यागि।
याही पियन में रहत हैं, सकल श्रेष्ठ गति त्यागि ॥ ४
घर जोरू के बस्त्र के, बदले में धरि देत।
पी कर के अनुराग बस, गाली सब को देत ॥ ५ ॥
तेहि इनाम के नाम को, कहत देखि करि भ्रात।
जूता लात चपेट मुख, देत इनहीं जग तात ॥ ६ ॥
बमन करत जहं तहं रहत, बकत भूत अस भाइ।
याहू पर छोड़त नहीं, तो भी श्रेष्ठ कहाइ ॥ ७ ॥

पिअत एक ही पात्र में, यमन दुसाध चमार ।
कायथ कोल कहार अरु, नहिं कछू जात बिचार ॥ ८
दिन २ या के होत हैं, उन्नति जग में मान ।
पंचम वर्ण हो करत है, सुनो सकल दै कान ॥ ९ ॥
जात भ्रष्ट कर सोच नहिं, तारो हो सो काम ।
सभा बैठि के बनत हैं, चलो परम ललाम ॥ १० ॥
आप गये कर सोच नहीं, संग और को लेत ।
जो मन में आवत रहे, बकत कछुक नहीं चेत ॥ ११ ॥
कबहूं ब्राह्मण बनत हैं, कबहूं जग के ईस ।
दारू तारी पान करि, माथे चढ़े खबीस ॥ १२ ॥
दाम गांठ के खोइ के, करत खराबो आप ।
बैठ न देत न सुजन तेहि, देखत उर सन्ताप ॥ १३ ॥
याते मैं बजेत अहो, सुनो सकल दै कान ।
प्यारो तारो त्यागि को, राखो घर धनवान ॥ १४ ॥
कहा लाभ यामें कहां, हानि बहुत है भाइ ।
हित नारायाण याहि को, निंदत है सुनु भाइ ॥ १५ ॥

——*——

अपने यहां के काम काज के सिवाय में यह कामों को किये और को उन्नति भो खूब ही को । इन में जितने गुनो जन थे सब प्रकार प्रसन्न थे ।

ये १२७३ अर्थात् १८६६ ई० में परलोक को सिधारे और अपनी कीर्ति से सब सज्जनों को सुख दिये । यह एक ऐसे प्रसिद्ध मनुष्य हो गये हैं जो आगे के समय में रहते तो आचार्य्य कहलाते ।

बाबू अकल्ल सिंह का जीवन चरित्र।

इन के बाप का नाम हरजन सिंह था। जात के खाती राजपूत थे इन की जन्मभूमि जिला मुज़फ़्फ़र पुर परगना हाजी पुर में तालुके रूपस में है। हरजन सिंह अत्यन्त गरीब थे। यहां तक कि रहने का घर द्वार अच्छा न था। मज़दूरी कर के किसी किसी प्रकार से अपना दिन काटते थे। सो भी नहीं मिलता। दियर में जो एक जाति तिअर हैं और मछली आदि को मार कर अपना निर्वाह करते हैं उन्हीं लोगों के यहां यह छान छप्पर छाते थे। और वे सब चबेना भूंज कर खाने को देते थे। यह ऐसे विचारवान थे कि उस बर्तन में उस चबेना को न खाते थे और न अपने पास कोई बर्तन था जिस में खांय तो जांघ तोड़ कर उस पर चबेना रख कर खाते थे। इसी दशा में १८७२ ई० में अकल्ल सिंह का जन्म हुआ। हरजन सिंह बड़े तकलीफों के साथ इन को पाला पोसा। जब ये बड़े हुये तो बे कहे सुने एक दिन कहीं चले गये। यहां लोग बड़े सन्देह में हुए कोई कहता था भर पेट खाने को न मिलता था इस लिये चले गये कोई कहता था इस दुख को न सह सके इस लिये चले गये कि कोई कहता था कि अपने मा बाप का दुख देख कर चले गये निदान उन के जाने पर अनेक प्रकार के तरक लोग करने लगे पर यथार्थ में अपने मा बाप के दुख छोड़ाने के लिये पर देश को चले गये।

कुछ दिन के बाद अकल्ल सिंह ने परदेश से घर पर

लौट आये और ६ बैल जो कुछ रुपये पैसे पैदा किये थे उस से खरीद लाये। और यहां पर खेती करने लगे। उस समय रूपस में चौधरी रघुबीर सिंह नामक एक क्षत्री था उस ने इनसे कहा कि मैं ज़िला पटना के इलाके मौज़ा सदीसो पुर के दिवान शिवसहाय लाल के पास जाता हूं तुम भी मेरे साथ चलो। कुछ तुम्हारे लिये भी कहूंगा जिस से आशा है कि नौकरी वहां हो जाय। अकल सिंह चौधरी रघुबीर सिंह के कहने से दिवान शिवसहाय लाल जी के पास आये पर चौधरी रघुबीर सिंह ने कुछ इन के बारे में न कहा। चलने के समय इतना कह दिया कि तुम रोज़ दिवान जी के कचहरी में आया करो। उस दिन से अकल सिंह ने दिवान जी के पास जाने लगे एक दिन दिवान जी ने पूछा तुम्हारा क्या नाम है और यहां तुम किस लिये रोज़ आते हो। इन्हों ने अपना सब समाचार कह सुनाया उसी समय दिवान शिवसहाय लाल ने इन को नौकर रख लिया। तब से ये बराबर उक्त दिवान जी के साथ रहने लगे। दिवान शिवसहाय लाल दमामी बंदोबस्त में नौकर हो गये तो तालुके रूपस को खरीद लिया और अकल सिंह को चार आने बीघे के हिसाब से थोड़ी धरती दे दिया और कहा कि तुम खेती करो। अकलसिंह नौकरी छोड़ कर खेती करने लगे। एक दिन दिवान शिवसहाय लाल को १२००) रुपये की ज़रूरत हुई तो किसी प्रकार से अकल सिंह ने रुपये को इकट्ठा कर दिया इस पर खुश हो कर दिवान शिवसहाय लाल ने रूपस को चार आने आठ

आनेके हिसाब से खेती करने के लिये लिख दिया तब तो अकल्ल सिंह ने खेती को और भी बढ़ाया यहां तक कि ५०० बीघा खेती करने लगे और६०००मन से ऊपर अनाज पैदा होने लगा। इस खेती के जरिये से अकल्ल सिंह ने कई लाख रुपये जमा किये और अपने बाप बाबू हरजन सिंह को बहुत सुख दिये। इनके पांच लड़के थे चुन्नीसिंह, सुखराम सिंह, सुखलाल सिंह, पंचम सिंह महादेव सिंह इन सब को भी अकल्ल सिंह ने खेती करने का उत्साह दिया और तदनुसार ये सब खेती को बढ़ा कर १२५०) बीघा कर दिये जिस से करीब १५ हज़ार मन अन्न तैयार होने लगा फिर ७ मौज़ा खरीद किया गया ये बिचारे अपने भाई बन्धुओं को बहुत अदरमान करते थे। इसी से आज तक इनका नाम सबको स्मरण है।

इनके ऐसा परिश्रमी आदमी बहुत कम मिलेगा। ये १८३६ई० में परलोक को सिधारे।

राय बाबू शिवगुलाम शाह बहादुर का जीवन चरित्र।

शिवगुलाम शाह के दादा का नाम सबूर शाह और बाप का नाम जयगोपाल शाह था। जात के कलवार थे जिस को इस देश में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बहुत नीच गनाते हैं। कलवारका छुआ पानी कोई ब्राह्मण क्षत्री नहीं पीता। ये लोगों का शराब की दूकान आदि जीविका है। जयगोपाल

शाह तम्बाकू को दूकान करते थे और इसी हेर फेर से दस पांच हजार रुपये को पूंजो इकट्ठी कर लिये थे। जब शिव-गुलामशाह का जन्म हुआ तो इन्हों ने फ़ारसो और हिन्दो पढ़ाया। शिवगुलाम शाह ने तिजारत को बहुत कुछ तरक्की को जिस से लाखों रुपये इकट्ठे होगये और हर एक प्रकार के रोज़गार करने लगे कोठो चलने लगो नमक, सोरा, चीनो, शक्कर भूरा (बुरा) सरसों तोसी आदि को तिजारत से बहुत कुछ लाभ उठाये। आज कल क्या पहले ही से बाभन (भूमिहार) चत्री बहुत गाफिल रहते हैं इसी से तो इस हालत में पहुंच गये मुज़फ़्फ़रपुर के इलाके में एक ज़मींदार को ज़मींदारी सरकारी मालगुज़ारी किस्त पर न चुकाने से नोलाम हुई उसको शिवगुलाम शाह ने खरीद लिया। जब इस ज़मींदारी में बहुत कुछ लाभ हुआ तो इसने कई एक ज़िला में ज़मींदारी खरीद कर ली यहां तक को ज़मीन को आमदनी लाख रुपये से अधिक का हो गया और इन्हों ने अपनी तिजारत को घटा दिये ज़मींदारी में विशेष ध्यान दिये। लोग कहते हैं कि यह किसी ब्राह्मण चत्री से जो इन के इलाके में रहते थे कभी कुछ भी ज़ोर जुल्म नहीं किये थे और सदा उनसे प्रीति भाव रखते थे बाज़२ लोग तो कहते हैं कि राजपूतों के डर से न बोलते थे क्योंकि क्षत्रियों में अब तक ऐसी बात है कि उन से कोई ज़ोर जुल्म करे तो वे सब अपने प्राण को तृण समान समझ कर बदला तो अवश्य चुका लेते है पर मेरी समझ में यह कहना गलत है क्योंकि आज कल अंगरेज़ो राज्य से क्षत्रियों

का कुछ बस नहीं है आज कल तो औरही और लोगों की तूती बजती है यह शिवगुलाम शाह की मेहरबानगी थी।

शिवगुलाम शाह चाहते थे कि मेरी गणना अच्छे आदमियों में हो और इस का बन्दोबस्त भी करते थे। और सब बात ऐसेही हुई भी ब्राह्मण तो इनके यहां भोजन भी करने लगे पर एक बात धोखे मे ऐसी हुई कि जिससे शिवगुलाम शाह को जन्म भर ग्लानि न मिटी। वह यह है कि शिव गुलाम शाह के लड़के का नाम महाबीर प्रसाद शाह है इन के ब्याह को यह चाहते थे कि बिधवा से न हो क्योंकि साधारण लोग यही कहते है कि बिधवा ब्याह करने को वही कहता है वा करता है जो बिधवा के लड़का हो वा उसकी माता कुलटा हो वा उसके कोई सम्बन्धि इस काम में हो जैसे बहिन, बेटी, फुफु आदि वह इसका प्रचार चाहता है वा करता है क्योंकि ये लोग चाहते है कि मेरेही सा दूसरा भी हो जाय वा इस ग्लानि से कि कोई अच्छा आदमी बिधवाब्याह वाला को वा वर्णशंकर को या बिधवा ब्याह करो ऐसा कहने वाले को आस पास में बैठता नहीं बल्कि सब कोई देखकर हंसी करते हैं और जो कुछ न कहने को वह कह डालते है सच है जो बात लोक से विरुद्ध है वा उसको श्रेष्ठ लोग निन्दा करते हैं उसको करना बुद्धिमान का काम नहीं है। पर महाबीर प्रसाद शाह का ब्याह मुजफ़्फ़रपुर के इलाके में धोखा से एक बिधवा स्त्री से हो गया इस से शिवगुलाम शाह बड़े सोच में हुए लोग कहते हैं कि ये ग्लानि से ज़हर खाने को चाहते थे.

पर लोगों ने कहा कि आत्मघात करना बड़ा पाप है तब भी न माने पर ईश्वरेच्छा से महाबीर प्रसाद शाह की नायका मर गई तो बिचारे इस चिन्ता से छूटे ।

ये अपनी चतुराई से अपनी रियासत को बहुत कुछ बढ़ाये कहां दूकान दारी छोरी थी कहां लाखों रुपये की ज़मीन की आमदनी हुई ।

लोग कहते हैं कि एक बार ये हरिहर क्षेत्र में पालकी पर चढ़े चले जाते थे उस समय महाराजकुमार बाबू कुंअर सिंह बहादुर की सवारी भी निकली दैवात् राह में मुलाक़ात हो गई तो शिवगुलाम शाह ने इनको सलाम न किया यह हाल देखकर बाबू कुंअर सिंह के सिपाहियों ने उन को पालकी को तोड़ दिया और बड़ा उपद्रव किया पर शिवगुलाम शाह ने बहुत कुछ क्षमा की यहां तक सरकार में नालिश भी न किया लोग तो कहते हैं कि डर के मारे नालिश न किये पर यह भूल है क्योंकि गवर्न्मेंट के यहां अवश्य इसका कुछ बिचार होता ।

१८५७ ई० में जब बाबू कुंअर सिंह अंगरेज़ों से बिगड़ कर भोजपुर में अंगरेज़ी अमलदारी उठा दिये और उनके साथ सरकारी सिपाहियों ने भी दी उस वक़्त छपरा में शिवगुलाम शाह ने अंगरेज़ों को कुछ सहायता की (दाल चावल आंटा घी से) इस से सरकार ने प्रसन्न होकर राय बहादुर को उपाधि दी पर आम लोग राय बाबू शिवगुलाम शाह बहादुर कहते हैं ।

राय शिव गुलामशाह बहादुर बड़े उदार पुरुष थे । ये

दश रुपये के पैसे रोज़ गरीबों को बांटते थे। और हरेक प्रकार के गुनियों का आदरमान करतेथे रातदिन परोपकार और प्रजापालन में तत्पर रहते थे एक बार अकाल पड़ा तो इन्हों ने लाखों रुपये लगाकर एक नाहर चिरान से गांधा तक बनवाया जो आजतक वर्तमान है। सदाव्रत बिठलाये चिरान के गढ़ को खोदवाकर बहुतसी मूर्तियां निकलवाई और उनके पूजन केलिये ब्राह्मणों को मुकर्र किये और बहुत से प० को बुलाकर सभाकरवारी एक बार श्री दयानन्द सरस्वति स्वामी से शास्त्रार्थ करने के लिये ब्राह्मणों को इकट्ठे कियेथे पर दयानंद सरस्वति स्वामी के सन्मुख शास्त्रार्थ में ठहरना या उनको उक्ति युक्ति करने में कौन ठहर सक्ता है बड़े२ ईसाई मुहम्मदी, बौध मतवाले आदिको तो कुछ व्यवसाय नहीं फिर इन साधारण ब्राह्मणों से क्या हो सकता है एक एक दो दो बातों में तो स्वामी जी इन लोगों को चपेट मारें। लोग कहते हैं कि ब्राह्मणों ने तालो बजादिया था कि दयानंद सरस्वति स्वामी हारगये। मैं यह नहीं कह सकता हूं कि दयानन्द सरस्वति स्वामी न हारेंगे परमैं यहतो अवश्य कह सकता हूं कि ऐसे बुद्धिमान विद्वान, और परोपकारी पुरुष आज काल इस भारत वर्ष में थोड़े हैं और लोग चाहे इन्हें जो कहैं चोर, जुआरी, लम्पट, सब कहैं पर है तो आजकल दयानदही है न तो सब स्वार्थी हैं राय शिव गुलाम शाह बहादुर इस बातको लखगये कि ब्राह्मणों ने व्यर्थ इनके साथ गोल माल कर दिये हैं फिर

स्वामी जी के शिष्टाचार भली भांति से किये और जाने के समय बहुत दूरतक साथे साथ गयेथे।

शिवगुलाम शाह ने एक पोखरा और पंचदेवता का मंदिर बड़े धूमधाम से सम्वत् १९२२ में अपनी जन्मभूमि गुलटेन गंज में बन वाये थे जिसके ऊपर हिन्दी, संस्कृत, बंगला, अंगरेज़ी में सन् लिखा है।

शिवगुलाम १८७३ई० में सोन पुर * (हरिहर क्षेत्र) में त्रिभुआनी पर प्राण त्यागकिये और अपनी इज्जत को यहां तक बढ़ाये कि एक अदनी दूकान दारी से डेढ़ लाख रुपये की रियासत हासिल की और अपनानाम भी अच्छी रीति से किये।

शाह मत अली खां।

इनकी जन्मभूमि ज़िला सारन में माझी नाम एक गांव में है। यह गांव हिन्दुस्तान भर में बहुत प्रसिद्ध है इसके प्रसिद्ध होने का कारण यह है कि छपरा के आस पास में एक ब्राह्मण बिष्णु देव पांडेय रहते थे जब ये मर गये तो इनकी स्त्री जिसका नाम गंगा देवी या गंगोपंडाइनथा मांझी में इनके साथ सती हो गई सती होने के बाद उस चिता से एक बड़ का दरख़्त निकला और इतना बड़ा हुआ कि कबिर बड़ को छोड़ कर हिन्दुस्तान भर में ऐसा दूसरा बड कोई नहीं है। इस बड़ का बखान राजा

* सोना राय चत्री ने इस गांव को बसाया है इसी से इस गांव का नाम सोनपुर पड़ा।

शिवप्रसाद सितारे हिन्द भूगोलहस्तामलक में भी लिखा है। गंगोपडाईन सम्वत् १६०० के लगभग में सती हुई है उसके चौरे को अब लोग पूजते हैं, और बड़ा मान करते हैं। बड़ का बहुत हिस्सा दरया में गिर पड़ा तथापि यह देखने लाइक है।

शाहमतअली खां अच्छी रीति से पढ़ लिख कर हिन्दू और मुसलमानों को एक सा समझते थे और हिन्दुओं के मत को बुरा न कहते थे इसका कारण यह है कि किसी ब्राह्मण ने इनको भली भांति से निश्चय करा दिया था कि अपने२ मत के अनुसार सब कोई एक ही ईश्वर को पूजता है इसमें द्वेष मानना उचित नहीं है। एक बार किसी हिन्दू ने मुसलमानों पर कुछ ज़ोर ज़ुल्म किया था वह दुखित मुसलमान शाहमतअली खां के पास जाकर नालिश किया इन्हों ने बहुत कुछ समझाया कि आपस में ऐक्यता रखना बहुत लाभ दायक है। और उस हिन्दू को भी बुलाये और लगे दोनों को समझा के कहने कि सुनो भाई तुम लोगों का हाल देखकर मुझे बहुत खेदित होना पड़ता है कि उस दुष्ट शत्रु को जिसने हमारे अधिकार छिनवाये, हमको दीन दशा में पहुंचा दिया हमारे लाखों करोड़ों बान्धव के सिर सेंतसेंत कटवाये हमसे गांव गांव भिक्षाटन करवाया, भांति भांति से हमको नष्ट कर डाला, कर रहा है, और (यदि रहा) करता ही जायगा निकाल डालने के बदले सब लोग अन्त: कारण में स्थान दिये हुए हैं। आश्चर्य है कि उसकी क्रूरता स्त्रियां छोटे२ लड़के, और

मूर्ख तक भली भांति जानते हैं, पर उसने कोई ऐसा मंत्र सीख लिया है कि उसे सब अपना परम मित्र और नित का साथी समझते हैं वह अनैक्य (नाइत्तिफ़ाक़ी) है। शोक की बात है कि २रों को सब समझाते हैं पर आप उस से बचने की सामर्थ्य नहीं रखते। और उसी के भाई बन्धु और पुत्र पौत्रादि द्वेष (हसद) कपट (कीनः) निज स्वारथ (खुद ग़रज़ी) और विरोध (अदावत्) आदि को अपने भाई बन्धु इत्यादि कुटुम्ब समझते हैं। इन दिनों संस्कृत और फ़ारसी पर जहां तहां छेड़ छाड़ हो रही है, और हिन्दू और मुसल्मान अपने२ पक्ष पर जी खोल खोल कर लड़ रहे हैं, पर हमको अब् तक इसका कुछ लाभ नहीं देख पड़ता। न फ़ारसी के होने से मुसलमानों की वह दशा जो सिकन्दर लोदी और औरङ्गज़ेब् आदि बादशाहों के अधिकार में थी हो जायगी, और न संस्कृत होने से हिन्दुओं का परलोक सुधरेगा वा राम, कृष्ण, और विक्रमादित्य, भोज आदि का स्वाधीन राज्य पलट आवेगा। इस बात को मतों से भी कुछ समबन्ध नहीं है, जिस में बीरता पूर्वक लड़ने, प्राण देने, या जिहाद करने से आप लोग स्वर्ग बास और जन्नत् में हूरों के संग बिहार करेंगे। मेरी समझ में तो इसमें हानि ही हानि दिखाई पड़ती है। फिर इस व्यर्थ पक्षपात (तअस्सुब) का कभी कुछ उत्तम फल मिलना है ? हा ! देश हितैषी (हिन्दू और मुसल्मान्) जनों के न्याय भी इस विषय में पक्ष रहित नहीं देख पड़ते, दूसरे को कौन॰कहे ? हम सब हिन्दू और मुसल्मान्

न्यायाधीशओर विद्वानों ओर धनाढ्य महाशयोंसे यह पूछते है कि क्या यह समय ऐसा है कि आप लोग देशोपकारादि ओर आपस में मेलजोल बढ़ाने के विरूद्ध जो हजारों बर्ष से परस्पर चला आता है ओर जिस्से असंख्य लाभ हो सक्ते हैं। ऐसी झूठ मूठ की लड़ाई में काल व्यतीत करें ? क्या आप के वह दिन वर्तमान हैं, कि जैसे चाहिये पक्षको निबाह दीजियेगा ? कभी नहीं फिर क्यों अपने ही हाथों से अपने पांव में कुल्हाड़ी मारते हैं ? क्यों अपनी करनी से आप ही नष्ट हुये पर भी नष्ट होने का उपाय करते हैं ? इसमें कुछ संदेह नहीं कि मुसलमानों ने अपने अधिकार में अत्याचार कर के हिन्दुओं को बहुत सताया। पर क्या हो ? वह समय ही वैसाथा ? हिन्दु लोग भी मुसलमानों को दुःख देने में क्या उठारखते वा रखे हैं पर मुसल्मान बली ओर हिन्दू निर्बल थे अतएवकुछ न कर सके। तो क्या अब उसका बदला इन्हीं बातों से ले सकते हैं ? यह भी ठीक है कि अब तक कोई२ प्रत्यक्ष गोबध आदि कर के हिन्दुओं को कुढ़ाना ही अच्छा समझते है। परइस का फल क्या होता है। लड़ाई झगड़ा करके दो चार वा दश पांचको मारे वा अथवा मारें जायं, जुर्माना दें, कैद हों, ओर फांसी पड़ें, देशान्तर में भेजें जायं पर इस से क्या हिन्दुओं के सामने कोई गोबध करसक्ता है कभी नहीं। फिर उत्तम उपाय क्या हैं ? यह उपाय है, कि जब हम ओर वे दोनों बर्ग भलीभांति जानते हैं कि अब दोनों में कोई स्वाधीन नहीं रह गया, जो वज्र हृदय एक की हानि पहुंचाकर आप बड़े बनने के अभि-

लाषी थे, मिट्टी में गल पच गये, वह समय " गया वक्त फिर हाथ आता नहीं " होकर कोसों पीछे छूट गया, और हज़ारों वर्ष से ये दोनों वर्ग इकट्ठे रहकर परस्पर मीठे और दूधकी भांति मिलजुल कर सहोदर भाइयों से अधिक हो गये, तो एक वर्गको हानिको अपनी हानि और लाभ को अपना लाभ समझकर आपुस में ऐसे नियम करलें कि कोई किसी को बुरा न समझे यदि अपनी क्रूर प्रकृति ऐसा न करने दे, और हठ धर्मी और अनैक्य का छोड़ना ही मत के विरुद्ध समझाजाय, तो दोनों को समझाने, और सीधे ढर्रे पर पहुचाने वाली गवर्नमेंट तो है ही है। इस बात को सुनकर वे दोनो प्रसन्न होकर घर चलेआये और आपस का बैर भाव छोड़ दिये।

शाह मत अली खां मक्का भी गये थे और साधु फ़क़ीरों के हज़ारों घोड़े, हाथी, ऊंट दिये थे जिस से आज तक इनका नाम तमाम हिन्दुस्तान में फैला है। इसके सिवाय ब्राह्मण मुसल्मानों को जागीरें भी बहुत कुछ दिये थे और ऐसा कोई न था जो इन से प्रसन्न न हो तात्पर्य यही है कि ये हिन्दू मुसल्मान को एक सा समझते थे कभी किसी बात में मुसल्मान का पक्ष न किये।

एक बार एक आदमी को सांप काट लिया था और उस वक़्त कोई दवा बीरो या छूरी भी न थी जिस से काट कर लोहू निकाला जाता और वह आदमी एकतालाबपर बैठा था शाहमतअली खां कहीं से चले आते थे सब हाल पूछकर घोड़े से उतर पड़े और लगाम से कसकर नसों को

बांध कर जोंक लगा दिये इस से वह आदमी बच जायगा।

शाहमतअली खां साधु और फकीरों के लिये बहुत कुछ प्रबंध किये थे। एक बार यह अंधे के भेष में एक सराय में गये और खाने को मांगा पर न मिला दूसरे दिन उस सराय के प्रबंध कर्त्ता को बुलाकर पूछा कि हमें मालूम हुआ कि रात को एक अंधा साधू गया था उसे खाने को न मिला यह सुनकर उस ने कहा कि नहीं गरीब परवर ऐसा कब हो सकता है आखिर यह सब हाल कह गये तब तो लज्जित हुआ और ये उस को निकाल कर दूसरे को भरती किये। बराबर सब को जांचते थे कि अपने काम में यह तत्पर है या नहीं।

शाहमतअली खां की बड़ाई आजतक लोग करते हैं। कहते हैं कि ऐसे मुसल्मान इस प्रांत अर्थात सूबेबिहार में कोई नहीं हुआ है। यह फुलवारी और मनेर पटना शाह अर्जनीके दरगाह, बिहार, नदरा की दरगाह(१)संडागिर को कबर (२) रजोलीकीशाह साहब को तकिया (३) आदि स्थानों में घूम आये थे आज तक इनको भलाई लोग भूलते नहीं जो लोग इनके राज्य में थे बहुत प्रसन्न पूर्वक अपनी जीविका निवाह करते थे। ये १८१८ई० में परलोक को सिधारे।

---

१ यह ज़िला गया थाना अंतरी के इलाके में है।

२ यह स्थान गया थाना जहांनाबाद के इलाके में है।

३ यह भी ज़िले गया में है। लोग कहते हैं कि ३०१ बर्षको आग इस धूई है जो हो।

सय्यद शेरअली का जीवनचरित्र ।



इन के बाप का नाम सय्यद मुराद था । इन की जन्मभूमि मौज़ा फ़रिदपुर परगना इक़िल थाना जहानाबाद ज़िला गया में है । सय्यद मुराद के पांच लड़के थे उन में से ३रे शेरअली थे। इनका जन्म १७८७ ई० में हुआ था। शेरअली लड़काई में पढ़ने के लिये मेरट चले गये और वहां पर अरबी और फ़ारसी पढ़कर अपनी जन्मभूमि फरिदपुर लौट आये। यहां आने के बाद थोड़े ही दिन घर पर रह कर दिल्ली चले गये वहां पर एक अंगरेज़ ने इन से अरबी और फ़ारसी पढ़ने लगा और नौकर भी रख लिया और बहुत कुछ आदर मान भी करता था यहां तक कि जब कलकत्ते आने लगा तो इन को भी साथ ही लेते आया। और कलकत्ते में मुदर्रिसी के काम पर बहाल करवा दिया। एक और अंगरेज़ को फ़ारसी अरबी पढ़ने को बहुत शौक़ था। उसने इनको अपने साथ दिल्ली में ले आया और बहुत कुछ इनाम दिया। कुछ दिनों के बाद इनको शिरिस्तदारी का काम दिलवाय दिया। इन्हों ने इस काम को बहुत अच्छी तरह से अंजाम किया। इनकी गंभीरता और सहनशीलता देख कर दिल्ली के जितने अमीर रईस थे सब प्रसन्न रहते थे। और अंगरेज़ लोग तो इन के काम से ऐसे प्रसन्न हुए कि सब चाहते थे कि ऐसे ही आदमी नौकर रहता तो बहुत कुछ सरकारी काम इन्तज़ाम पाता। एक अंगरेज़ ने

इन से कहा कि आप मेरे साथ चलिये मुझसे जहां तक बनेगा आप के लिये उठा न रक्खूंगा। इन्होंने उसको बात मान ली और उसके साथ २५ वर्ष के उमर में मुजफ़्फ़रपुर में चले आये और यहां अफ़ीम के शिरिश्तेदार हुए। उसी समय में पटने के एक अमीर की ज़मीदारी इट्टे के दिन मालगुज़ारी न देने से नीलाम होता था। उस अंगरेज़ ने रुपया देकर इनके नाम से कोई २५ हज़ार रुपये की आमदनी की जमीदारी बहुत थोड़े रुपये में नीलाम ले लिया और इनको दे दिया। इन से थोड़े थोड़े कर रुपया अदा किया पर इनकी उसने अच्छी रीति से ज़मीदारी की नीव दिलवा दिया। इसके सिवाय उसने लार्ड एमहर्स्ट से कलकत्ते ले जाकर मुलाक़ात कराई और बहुत कुछ प्रशंसा भी किया। इसके बाद उसने विलसन साहब से मुलाक़ात करवाई। जब लार्ड बेंटिक आये तो जाकर उनसे भी इनको मुलाक़ात कराया गर्ज़ उससे जहां तक बना वहां तक इन के भलाई करने में बाज न आया। सय्यद शेरअली ने अपनी ज़मीदारी को बहुत कुछ बढ़ाया और अपने काम को भी भली भांति से किया।

सय्यद शेरअली का मित्र हिनरी कारटर साहिब बहादुर सी० बी० थे। जिनकी भलाई आज तक गोरखपुर, आज़मगढ़, बनारस वाले भूलते नहीं। इनसे मित्रता होने का कारण वही अंगरेज़ था जिसने इन को दिल्ली से मुज़फ़्फ़रपुर में लाया था।

कुछ दिन के बाद ये बहुत सी जमीदारी खरीद लिये यहां-

तक की पचास हज़ार रुपये की आमदनी हो गई। फिर मुज़फ्फरपुर से बदल कर सारन में चले आये और वहां भी इन्होंने बड़ा नाम पैदा किया। लोग कहते हैं कि वृहस्पति के दिन ये जितने अंधे लूले लंगड़े आते थे सब को दुअन्नी, चौअन्नी देते थे जाड़े के दिनों में हजारों कम्बल देते थे जो काम आज का हो उसे कल के करने के लिये कभी न छोड़ते थे। अपने मत पर बहुत आरूढ़ थे पर साथ ही इस के हिन्दुओं के मत से भी वैर नहीं रखते थे ठीक है

दोहा। जेकरतार बड़े किये, मग पग धरैबिचारि।
बालक ज्यों सौमिलो चले, बोलैरोसनिवारि॥

ये १८५५ ई० में पिन्शन लेकर घरपर आये तीन माकान बड़े भारी बनाये। एक फरिदपुर में और २रा पटने महल्ला लोदी काटरा में ३रे मुजफ्फरपुर महल्ले कन्हौली गंज में बनाये। इनके दो लड़के और ७ लड़कियां थी बड़े धूमधाम से सातों का विवाह किये और जो जो चीजें चाहिये सब को दिये।

१८५७ ई० में यह किसी काम के लिये बक्सर गये थे, और वहां हो सुने की भोजपुर के लोग बिगड़गये और दानापुर में चालिसवांपलटन भी बिगड़ गयी। बिचारे किसी २ प्रकार से भाग कर जिले गाज़ीपुर में आये और वहां से चले तो मालूम हुआ कि भेड़िया* के बाबू सिंधा सिंह बिगड़ कर बलवामचाये हैं वहां से किसी २ प्रकार से पटने में आये और यहां बहुत चिंता में हुए कि देखें क्या

*भेड़िया जिसको कुलपत कपरा भी कहते हैं जिले गाजीपुर परगना बलिया में है। अब तो जिला बलिया हो गया।

होता है। तुरंत ही अपनी जन्म भूमि को गये वहां भी न ठहर सके वहांसे पटना आये फिर धोर्जे के फेंट बान्ध कर किसी किसी प्रकारसे मुजफ़्फ़रपुर गये वहां बहुत दिनों तक रहकर बहुतसे अच्छे काम किये। ये बिचारे प्रत्येक गुरु बार को अन्धे लंगड़े लूलों को अठन्नी चौअन्नी दुअन्नी बांटते थे। १८५८ ई० ३० मार्च मोताबिक २४वीं माह शावान १२७५ हिजरी को मुजफ़्फ़रपुर महल्ला कान्हौली गंज में इस असार संसार को त्यागकर परलोक को सिधारे।

सय्यद शाह मुजीबुल्लाह साहिब का जीवनचरित॥

इन की पैदाइश (१०९८ हिजरी * में) मोकामफलवारी में है। यह जगह सूबेबिहार में लाइक देखने के है। पटने से थोड़ा पश्चिम है। यहां के लोग बड़े कामील और विद्वान् होते हैं। २० वर्षकी अवस्था में इन्हों ने कुल इल्म हासिल किया। यह मुरिद शाह इमादुद्दीन कल्लंदर साहब

* अरब देश में मक्का नाम शहर का रहनेवाला एक मनुष्य मुहम्मद था। उसीने मुसलमानों का मत चलाया है जब वह मक्केसे मदीने को गया तब से इस हिजरी संवत् का प्रारंभ हुआ और यह संवत् मुहर्रम अर्थात् जिस महीने में ताज़िये निकलते हैं उसी महीने से पलटता है और हिजरी संवत् में मुहर्रम आदबारह महीने हैं। उनके

अलएहोर रहमत फुलवारी के थे। इनका तरीक़ा दरवेश और मज़हब हनफी था। और इनके समय में बराबर तरक्की पीरीमुरीदी का जारी था। और कुल काम खोदा के भरोसे होता था। एक रोज में १०) से अधिक खर्च खानकाह का जारी था। इनका इन्तकाल (अन्तकाल) सन् ११८१ हिजरी में हुआ।

इन के मुरीद बहुत लोग हुए जिसका पूरा वर्णन करना बड़ा मुशकिल है। आपने बारहवीं रबीउल्अव्वल फातहे दोदजदहुम अपने नबीका शुरू किया जो इस वक्त तक बहुत तरक्की के साथ होता है। और बहुत बड़े दूरके लोग आते और तीन रोज़ अर्थात् १०वीं, ११वीं, १२वीं रबीउल् अव्वल को मेलेमें रहते हैं। कुल लोगों को योग्यता देखकर खाने को खाना मिलता है। और आपका मुए मुबारक अपने नबी साहिब एक मुक़ाम शहोर से मिला।

नाम ये है। मुहर्रम, सफ़र, रबीउल् अव्वल, रबी उल् सानी, जमादि उल् अव्वल, जमादि उल्सानी, रज्जब, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज १२। अमावस के पीछे जिस दिन दूज का चांद निकलता है उसी दिन हिजरी एक महीना पूरा होता है। उस के २रे दिन से २रा महीना शुरुअ होता है इस प्रकार से मुहर्रम आदि महीनों का आरंभ जानो। मुहम्मद सन् ५६८ ई० में पैदा हुए कई एक किताबों में सन् ५७० ई० में इनको पैदाइश लिखी है।

और आपने हर महीने को ११वीं तारीख में ज्यारत मुकर्रर किया जिस में बहुत लोग अपने सादत के वास्ते आते थे। और इस वक्त तक बराबर गद्दी चली जाती है। एक के बाद एक गद्दी पर बैठते हैं। और कुल फुलवारी (थोड़े से हिस्से छोड़ कर) आपकी अवलाद से आबाद है। शाहआलम बादशाह आकर शाह मुजीबुल्लाह से मुलाक़ात की और बड़ी खातिरदारी की चलनेके वक्त पूछा कि मुझ को बादशाहत मिलेगी या नहीं। इस पर शाह साहिब ने कुछ उत्तर न देकर अपने गद्दीसे उठाकर एक गुलाब का फूल दिया और कहा कि यही हुकुम तुम्हारे वास्ते है। बादशाह बाहर आये और जो लोग वहां हाजिर थे कहा कि अब मुझे मुल्क नहीं मिलेगा। लोगों ने पूछा कि आपने कैसे जाना कि नहीं मिलेगा। कहा कि शाह साहिब ने मुझको गुलाब का फूल दिया इसका समय नहीं था। पर उन्हों ने दिया इस से यह निकलता है कि मेरी बलाद होगी मगर अब मुल्क दखल नहीं होगा।

इस पर मीरन ने कहा आप कुछ चिंता मत कीजिये ऐसे आदमियों के धोखे में हिम्मत न हारना चाहिये हिम्मत हारने से कैसे राजा लक्ष्मण सेन बंगाले का राज्य नष्ट किया। इसपर शाह आलम ने पूछा कि उसका हाल क्या है। इन्हों ने कहा कि सन् ११२३ ई० में लक्ष्मणेय बंगाले का जन्मत ही राजा हुआ। ८० वर्ष की अवस्था में नदिया (नवद्वीप) में गंगा सेवन करता था उस वक्त में बख्तियार खिलजी १८ सवार के साथ नदिया को घेरा राजाको

इच्छा न थी कि नदिया को छोड़ें पर ब्राह्मणों ने कहा कि शास्त्र में लिखा है कि अब मुसलमानों की जय होगी । वाह क्या ही अच्छी बात राजा के लिये कही । कहिये उस वक्त राजा लड़ता तो बख़ुतियार खिलजी से क्या बनता पर ब्राह्मणों ने के बात मानने का यही फल हुआ कि राज्य भी हाथ से गया। ऐसे ही आप शाह साहिब के बात को जानिये और बाबर के हिम्मतको चित्त पर आनिये । बाबर से जब सांगा राणा लड रहा था बयाने और फ़तहपुर सीकरी के बादशाही आदमियों को मार हटाया। बाबर के साथियों को दिल सुस्त पड़ गया । इसी समय में काबुल से एक नामी ज्योतिषी ने आकर यह कहा कि मंगल सामने हैं बाबर के फ़ौज की बरबादी होगी इस बात को सुनकर बादशाही फौज़ डर गई पर बाबर कुछ न डरा और अपने सिपाहियों से कहा कि भाई बेइज्ज़ती के साथ पीठ दिखाने से तो रन में सन्मुख होकर मर जाना बिहतर है। सबों ने कुरआन की कसम खाई कि मर जायेंगे पर पीठ न दिखावेंगे । यों कहकर लड़ाई में सब गये और खूब घनघोर लड़ाइयां हुई आख़ीर बाबर ने फतह पाई । अगर यह भी बंगाले के राजा लखमनियां ऐसा करता तो क्यों नहीं मारा जाता इसलिये लड़िये फतह होगी लेकिन लड़ाई में अंगरेज़ों ने फतह पाई और मीरन के माथे पर बिजली गिरी इससे वह मर गया बादशाह ने कहा कि शाह साहिब का कलाम झूठ नहीं है । यों ईश्वरेच्छा से जो हो ।

एक बार कासिम अलीखां भी आये थे उसे भी यह अ-

हुत समझाये कि आप अंगरेज़ों से मत लड़िये लेकिन वह न माना और अपनी करनी का फल पाया।

सय्यद शाहअली हबीब साहिब का जीवनचरित्र॥

यह परपोते शाह मुजीबुल्लाह साहिब के थे। इन को पैदाइश कसबे फुलवारी सन् १२४८ हिजरी में हुआ। और १८वर्ष की अवस्था में यह गद्दी पर बैठे। २० वर्ष की उमर में कुल विद्या लौकिक और पारलौकिक पढ़ लिये। और अपने खानदान के कुल बातों की तरक्की किये और १२९५ हिजरी में इन्तकाल (अन्तकाल) किये। उनके मरने आदिका सन् साधारण लोगों को याद है और यह लोग कहा करते हैं।

"चू बफ़ीर दौस रफ़्त मुरसिद मां"
"अज़ तपेहिज़्र उस्त दिल बिरीयां"
"सन् मिलाद व जान सीनो व उमर"
"वा वेसालश कुनम व खलफ बयां"
"शुद शमसुज़ ज़ुहा सन् मिलाद" १२४८। हिजरी
"जानशीनी चिराग दीं बरखां" १२६८। ,,
"बदर रौशन ज़माह दां उमरश" ४६।
"ब अज़चिरागे कमाल नकल मकां" १२९५ ,,

हबीब साहिब ने परदादा शाह मुजीबुल्लाह साहिब

के क़ब्र पर एक बहुत बड़ा खूब सूरत गुम्बज़ याद गार अपना बनवाया, यह गुम्बज़ लाइक देखने के हैं। गुम्बज़ के अंदर तोगड़ा कुरआन शरीफ के आयत बहुत उम्दा तरासा हुआ शीशे के चौखटों में लगा हुआ है। और चारों कोनो पर गुम्बज़ के चार बैज़े सीमुर्ग़ लटका हुआ है। एक मज़ार गुम्बज़ अंदर हलके या बाग़ के है। और कुल क़ब्र बुजुर्गान खानदान और मुरिसान इस खानदान के है। वह सफाई और खर्च से अलग २ चबूतरा हर क़ब्र का बना हुआ है। जहां लोग वक्त मेले रब्बीउल अव्वल में बहुतायत से जमा होते हैं यह जगह भी सूबेबिहार में दर्शनीय हैं। एक मकान खान काह भी बहुत बड़ा बनाया है कि मेले के समय में किसी को तकलीफ (दुःख) न हो। इस प्रकार लोग जेवार और ज़िले और दूसरे सूबे के आते हैं जो लगभग ५००० के होते हैं सब को उसी मकान में डेरा रहता हैं और बहुत आराम के साथ लोग उस में रहते हैं। इस में जो लोग जैसा रहते हैं उन के इज्ज़त के बमोजिब खाना मिलता है। मसजिद ऊपर एक घरम घड़ी भी आपको बनवाई है जिस को आवाज़ फुलवारी मे आध कोस चारो तरफ जाता है। ये इल्म शायरी में भी पूरा दखल रखते थे इन की बनाई एक बहुत बड़ी दीवान है जिसका नाम दीवान असर है जो सन् १२९६ हिजरी में छपी है लाइक देखनेके हैं कलाम बहुत उम्दः और सलीस है और मजामीन और मजमुन बहुत उम्दः और पाकीजह हैं जिस से जाहर होता है कि बहुत बड़े साहिब

कामाल का यह कलाम है और उलुम में भी रिसाला बहुत तसनीफ किये हैं। जिनमें से एक रिसाला "उसूवहसन" और "नेमत उजमा" रिसाला अकीद में सुन्नियों के है, २रा रिसाला आवा है दुलनुमा के निवाज फरज़ होने के बारे में लिखा है। सूबेबिहार में और और जगहों से यहां खर्च ज्यादा और आमदनी कुछ नहीं है क्योंकि मनेर, शाह अर्ज़ानी के दरगाह वग़ैरह में कुछ ज़मीन लाखराज के तौर पर है मगर यहां कुछ नहीं है। केवल मुरीद लोगों की मदद है। आपने फ़ारसी अरबी पढ़ाने के लिये एक मदरसा कायम किया इस में २० आदमियों को खाना पीना कपड़ा वग़ैरह सब सामान मिलता है जिसमें ग़रीबों के लड़कों को बड़ा लाभ पहुंचता है।

मजहब इनका हनफी और तरीका सुफीए कादरी था।

श्री गुरु गोविन्द सिंह का जीवनचरित्र।

श्री नानक महाशय ने नानाधर्म शास्त्र आलोड़न करके जो नवीन धर्मपंथ प्रवर्त्तित किया उसमें पूर्वमें जिन जिन्होंने दीक्षा ली थी वे योगी समान शान्त और धीर भाव से अपने धर्म शास्त्र के अनुसार कार्यों के आचरण में तत्पर थे पश्चात् समय के फेरफार से मुसलमानों के अत्याचारों से उन के शिष्य परम्परा के कलेजे जलने लगे अत्याचार यथा पशुओं के समान बध, नित्य नूतन उद्भावित युक्ति से प्राणदण्ड, नाना विध उत्कट उत्पीड़न इत्यादि। निदान वैसे दुःख को

स्थिति में उनमें से एक ऐसा महा पुरुष खड़ा हुआ जिसने कि अपने दल तथा जातिको तादृश असह्य यन्त्रणा देख अतिशय उत्साह और प्रयास के साथ उसके निराकरण के लिये कटि बांधो। उसकी शूरता, साहस, और पराक्रम के साथ हो शिष्यों ने बल पकड़ा और अत्याचार निवारण के लिये जातोय भाव जैसा कुछ चाहिये कि एक दूसरे के लिये प्राण पर्यन्त त्याग देवे उनके बोच हो चला। सो जिस पुरुष के उभाड़ने से शिष्यों ने दृढ़ता पकड़ो उसका नाम गुरुगोबिन्द सिंह प्रख्यात है ॥

इतिहासों में शिष्यदलों की सहानुभूति शूरता, पराक्रम और दृढ़ प्रतिज्ञा के जो उदाहरण पाये जाते हैं तिनका मूल उक्त महाशय हो को समझना चाहिये क्योंकि उन्होंने हो पहिले पहिल शिष्यों के मध्य से आपस का बिलगाव दूर किया यहां तक कि उन्हीं को उत्तेजना के द्वारा ब्राह्मण चण्डाल, हिन्दू मुसलमान ये भो उच्च नोच बुद्धि बिसराके परस्पर भ्रातृ भाव से बर्ताव करने लगे। शिष्यों के समाज में गुरुगोविन्द सिंह के सदृश तेजस्वो और पराक्रमो दूसरा नहीं तथा सब जाति को एक जाति कर लेने के प्रयत्न में उन्हीं के तुल्य अन्य कोई नहीं जंचता। सन १५३८ ई० में गुरु नानक सिंह का देहान्त होने पर अङ्गद नामक महन्त शिष्यों के सङ्घ के प्रधान हुए अङ्गद के पोछे अमर दास जो तिनके पोछे रामदास जो उनको गद्दो पर बैठे चौथे गुरु का नाम अर्जुन मल्ल था अर्जुन मल्ल के समय पर्यन्त जितने महन्त उस सम्प्रदाय के हुए सभों में से अर्जुन मल्ल को नानक के प्रव

र्त्तित धर्मशास्त्र के ज्ञान में अच्छा अधिकार था। अर्जुन मल्ल-जी ने शिष्य सम्प्रदाय के धर्म ग्रन्थों को सङ्गृहीत करके यथोचित विधिबद्ध किया। इन्हीं के समय में जहांगीर बादशाह का बेटा खुसरो बापसे बिरोधी होके पञ्जाब में जा रहा और शिष्यों को अपने धर्मशास्त्रानुसार आचरण करने में अनुमति देदीथी। यह जहांगीर से सह्य नहीं हुआ क्रोधान्ध हो उसने अर्जुन मल्ल को पकड़वा मंगाके कारा-बद्ध कर रक्खा। निदान उसी बन्दी में दुरन्त यातना भोगते अथवा बधिकों की प्रचण्ड कुल्हाड़ी की चोट से उन महा-शय का प्राण नाश हुआ। अर्जुन मल्ल के अनन्तर उन्हीं के पुत्र हरगोविन्द आ गद्दीपर बिराजे। पिता की तादृश खेद-प्रद हत्या के ऊपर से हरगोविन्द ने अपने मन में मुसल्मानों के सङ्ग बहाबैर बांधा। आज पर्यन्त जो शिष्य सङ्घ परम साधु भावसे समस्त व्यवहार करता आता था अर्जुन मल्ल के मारेजाने से उस को सब साधुता भूल गई। बदला चुकाने की प्रवृत्ति उत्कट हो पड़ी। दल बल साजके हरगोविन्द की उत्तेजना से मुसल्मानों के बिरुद्ध युद्ध पर शिष्यगण उतारू हुए। इस के पहिले और कभी शिष्यों ने संग्राम नहीं मांड़ा (ठाना) था। हर गोविन्द सिंह सर्वदा दो खड्ग बांधे र-हते थे कोई उसका हेतु पूछता तो इस के यही उत्तर देते कि एक खड्ग पिता के अपघातक के बधार्थ और दूसरा मुस-ल्मानों के राज्योच्छेद के लिये धारण किये हूं।

हरगोविन्द के पांच पुत्र थे। गुरुदत्त, सूरत सिंह,

तेग़बहादुर, (१) अनराय, और अटलराय जेठा बेटा बाप के जीते ही मरगया। अनन्तर के दो पुत्र निस्सन्तान मृत्यु को प्राप्त हुए। अवशिष्ट दो जन मुसल्मानों के दारूण उत्पीड़न से प्राण लेके पञ्जाब के उत्तर पर्वतों में जा छिपे थे। गुरुदत्त के दो पुत्र दाहर मल्ल और हरनाम। तिन में से हरनाम ने हर गोबिन्द की गद्दी पाई। सन् १६६१ ई० में उनका अन्तकाल होने पर उनके दो पुत्र रामराय और हरे कृष्ण के बीच गद्दी के लिये झगड़ा पड़ा किसी ढङ्ग से झगड़ा न निपटा तब दोनों दिल्ली दरबार में अभियोग के लिये आये। औरङ्गजेब ने शिष्य समाज के ऊपर भार अर्पण किया कि वह जिसे चाहे दोनों में गुरु चुन लेवे। सो समाज ने हरे कृष्णजी को निर्द्धारित किया। दैवात् दिल्ली छोड़ने के पूर्वही सन् १६६४ ई० में शीतला से हरे कृष्ण का परलोक हो गया। अनन्तर उन के छोटे आजा (पितामह) तेग़बहादुर शिष्यों के गुरु की पदवी ली। इन तेग़बहादुर ही के पुत्र गुरु गोबिन्द सिंह जी सन् १६६१ ई० में पटना नगर के बीच जन्मे।

हरगोबिन्द के सदृश तेग़बहादुर कष्टसहिष्णु तथा परिश्रमशील थे। जिस समय शिष्यों ने उनको गुरु की गद्दी पर बिठलाया उस समय तेग़ बहादुर ने नम्रता से कहा था कि मैं हर गोबिन्द जी के अस्त्रों के धारण करने का उपयुक्त पात्र नहीं हूं सो जो कुछ हो। बिरोधी रामराय ने प्रतिस्पर्द्धा के परबश होके बिरूद्ध दल खड़ा करके तेग़ बहादुर को बन्दी कर लिया पर दो वर्ष पीछे जयपुर के राजा जयसिंह

(१) तेग़ = खड्ग, बहादुर = बीर, तेग़बहादुर = खड्गयुद्ध में कुशलबीर।

जी के कहने सुनने से छोड़ देना पड़ा। तेग़बहादुर कुछ दिन आसाम, पटना, इत्यादि स्थानों में ठहरे रहे। अनन्तर पञ्जाब को चले गए। पञ्जाब जाने उपरान्त फिर वे दिल्ली पति बादशाह की कोप दृष्टि तले पड़े अतएव बादशाह की सेना उनपर चढ़गई और बन्दी कर लाई बादशाह (औरङ्गज़ेब) ने उन के प्राण दण्ड की आज्ञा दी।

दिल्ली जाते समय तेग़बहादुर जी ने अपने पुत्र गोबिन्द सिंह के हाथ में अपने पिता (हरगोबिन्द) का सौंपा हुआ खड्ग देके कहा कि मेरा शव मरने उपरान्त शियाल कुक्कुर आदि न चोथने पावें और किसी न किसी समय इस खड्ग के द्वारा बादशाह से प्रतिशोध तुम लीजियो। यों बोलके गुरु की गद्दी गोबिन्द को दी। गोबिन्द ने पिता के शव की सुरक्षा दुर्घट बूझके केवल अन्तिम आदेश को पूरा करने की प्रतिज्ञा की। पुत्र की प्रतिज्ञा सुनने से तेग़बहादुर अदीन मन दिल्ली को चले गए। वहां सन् १६७५ ई० में घातक के हाथ औरङ्गज़ेब की आज्ञानुसार मारे गए उन के शव को औरङ्गज़ेब ने खुली सड़क पर अपने मतानुसार मूर्त्ति पूजक को तादृश कदर्थना योग्य जान के फिंकवादी॥

जिस समय तेग़बहादुर की मृत्यु हुई उस समय गोबिन्द जी की अवस्था केवल पन्द्रह वर्ष की थी। हृदय बिदारक हत्या पिता की की गई इसी परसे गोबिन्द का मन मुसल्मानों पर अति शत्रु भाव से भर गया तथा उसी के साथ स्वजाति के सङ्कट की स्थिति पर उनका ध्यान जाके उन्हीं के चित में स्वदेश की दुर्दशा और अधःपात पूर्णरूप से

झलकने लगा। यहां तक कि उनके जीवन का यही मुख्य फल उन्हें जंचा कि मुसल्मानों का बिनाश करके स्वदेश का उद्धार जैसे बने तैसे किया चाहिये। और तिसका सबसे बढ़के यही उपाय सूझा कि पहिले पृथक् २ स्थित लोगों को एक बड़े सम्प्रदाय के अन्तर्गत करके सभी को एकता सूत्र में सम्बद्ध कर लेवें परन्तु अवस्था छोटी होने तथा मोगल राज काजियों की सावधानता के कारण गोबिन्द के पक्ष में पिता की मृत्यु के अनन्तर तुरन्त अभीष्ट सिद्धि का पथ प्रशस्त न था। निदान वे एक नीच जाति के मनुष्य के हाथ से पिता का मृतकलेवर मंगवा के उसकी सद्गति कर के आप यमुना तीर के पहाड़ी प्रदेश में जा बसे। वहां उनका समय आखेट, पारसी भाषा सीखने, तथा स्वजाति के गौरव सम्बन्धी कथानकों के श्रवण में व्यतीत होता था।

मोगलों का महाराज्य औरङ्गजेब के समय परिपूर्ण ओज पर था। औरङ्गजेब ने कल, बल, छल करके अनेकों को अपने राज्य के भीतर कर लिया था। जिन कई बड़े पराक्रमियों के राज्यों को पूर्व से स्वाधीनता बची चली आई थी औरङ्गजेब के समय में नाना कारणों और घटनाओं से वे सब भी विशृङ्खल और अन्तःसार शून्य से हो पड़े थे। इधर प्रताप सिंह के पर लोक गमन करने अनन्तर राजपूतों का राज्य निस्तेज उधर महाराष्ट्रों का जो नूतन स्थापित राज्य था शिवजी बीर के बिना, बिना माथे का हो गया था। औरङ्गजेब के समय में केवल एक शिवजीमहाराज[illegible]पनी स्वाधीनता जीवते जीव अटल बनाना रक्खी

थी परन्तु देशके दुर्दैववश उनका परलोक पहिले ही होजाने से औरङ्गजेब का राज्य निष्कण्टक और बेखट के होगया। शिवजी को मृत्यु के पश्चात् औरङ्गजेब के प्रताप के नीचे सभी दब गये। धन्य हैं गोबिन्द सिंह जी जिन्हों ने ऐसे दुर्धर्ष मोगल साम्राज्य की अभ्युन्नति और प्रताप के समय में साहस पूर्वक शिर्षों की एक नूतन राज्य सत्ता की चुनौती डाली।

यमुना तीर वर्ति पर्वतीय प्रदेश में छिपिर गोबिन्दजी ने लग भग बीस वर्ष की वयपर्यन्त समय बिताया। इसी अन्तर में उन्हीं ने कितने एक शिष्य कर लिये। पश्चात् पञ्जाब में खुले जा बसे और उन्हीं शिष्यों के सङ्ग अपने जीवन के उद्दिष्ट कृत्य के साधन में बद्ध परिकर हुए। शिक्षापाने के कारण उन का अन्तः करण असङ्कीर्ण और बहुत कुछ देखने भालने तथा परीक्षासे उनकी विचार शक्ति मार्जित थी। कर्तव्य के समाधान का उन्हें बहुत कुछ ध्यान था॥

इसी से उनका आशय अतिशय उच्च था। इस समय उनकी दृष्टि सब ओर से खिंच के केवल सबकी एकता में लाना और प्रसङ्ग पर स्वार्थ त्याग से असङ्कुचित रहना इन्हीं दो बातों पर पूर्ण रूपसे पड़ी थी अतएव अविचल अध्यवसाय पूर्वक तथा अकथ्य सहिष्णुता सहित अपने मनोरथ के साधन में सन्नद्ध थे। उन्हों ने शिर्षों के हृदय में एक अनोखे तेज का बीज बो दिया जिससे उन के बीच साहस का अच्छा सञ्चार हुआ। मानो मृतक सरीखे शिष समाज के तन में प्राणसा पड़न आया। बस उसी उत्कर्ष के आश्रय से वेखे

प्रबल पराक्रमी मोगल के महाराज्य ही में बास करते उस (महाराज्य) के उच्छेद साधन में क्रत सङ्कल्प थे। और बड़ी कठिनता तो इस बात की थी कि उस समय हिन्दुओं के धर्म सम्प्रदाय के बिपरीत सब जाति को एक में करलेवें तो भी वे अपने उद्योग से पराङ्मुख न थे।

गोबिन्द जी साहसी और स्वजाति बत्सल थे तथा इति कर्तव्यता की वुद्धि उनके चित्त में जागरित रहा करती थी। पृथिवी की पीठपर अतिशय पापाचरण देख वे सर्वदा मन का दुःख प्रकाश करते और विधर्मियों के अत्याचारों से आप सी सभों का जीवन सङ्कटमय सोच करने से भ्रकुटी कुटिल मुख उनका देखने में आता था। उनका सिद्धान्त था कि मानव जाति साधना के बल से अति महत् क्रत्यों का सम्पादन कर सकती है और स्वजातिका उद्धार जो इस समय अति गुढ़ क्रत्य है उसको सिद्ध करने के लिये मन की सजीव उमङ्ग के साथ चित्तका अव्याहत उभाड़ दोनों अति आवश्यक हैं और सम्प्रति जैसे हो तैसे उन्हीं को जड़ बंधने के लिये पूर्ण उद्योग करना उचित है। तिसका अवसर भी यही है। गोबिन्दजी को प्राचीन ऋषियों के सदा चरण और बीर योद्धाओं के पराक्रम सर्वदा स्मरण रहा करते थे तथा पृथिवी के शिक्षा पथ के कण्टकों का परिहार पूर्वक नवीन निष्कण्टक पथ प्रवर्तित करने का उनका मानस था। बरन इसी हेतु लोगों के चित में बद्धमूल निरर्थक कुसंस्कारों के उन्मूलन में वे अतिशय प्रयत्नशील थे। शिष्यों के मन में समयोपयोगी ते[illegible]ता आदि गुण बढ़ाने निमित्त उन्हों के

सन्मुख अगाड़ी के महात्माओं को कथाएं सुनाया करते थे। कि देवगणों ने कैसा२ कष्ट अंगीजके दैत्यों का पराजय किया। योगी और सिद्ध लोगों ने किस ढङ्ग से औरों को अपने अलङ्ग प्रवण कर लिया देखा बाबा गोरख नाथ वा रामानन्द जी ने कैसा करके अपना नूतन पथ प्रचारित किया। और मुहम्मद ने कितनी२ बाधा विपत्तियां उठा के अपने को भगवान् के घर का प्रेरित बोल के लोगों के मनको अपनी ओर खींच लिया। निदान इसी भांति की बातों के वर्णन में बहुधा उनका समय अति बाहित होता था। वे अपने को सर्व्व शक्तिमान भगवान् का एक सेवक कहके प्रकाश करते और लोगों को समझाया करते थे कि ईश्वर किसी एक नियत लौकिक चाल के वशवर्ती नहीं है और न उस के यहां का कोई पठाया हुआ ग्रन्थ है। हृदय को सुधाई और सिधाई जहां भागवान् देखते वहीं वास करते हैं।

गोविन्द जी इसी प्रकार से अपना मत प्रचार करते थे और उसी के योग से दिन२ शिष्य मण्डली की अभ्युत्थान शक्ति संवर्द्धित हो चली। गोविन्द जी श्रम स्वीकार करके वेदाध्यन करते और बड़े यत्न से वैदिक तत्वों को ढूंढ़ते तथा कर्म्म काण्डका गहन ध्यान करते थे। और श्रुति स्मृति पुराणादिकों के उदार सदुपदेशों से शिष्यों के हृदय में धर्म्म बुद्धि परिपुष्ट किया करते थे। उन वीर का उद्योग न केवल धर्म्म पर्य्यालोचना में परि समाप्त था किन्तु शारीरक बल बढ़ाने के कार्य्यों में वे कभी विमुख न थे। लोग कहते हैं कि वे नयना पहाड़ पर जाके अर्जुन की नाई तेज बल, और वीर्य्य

उपार्जन के लिये गाढ़ तप भी करते थे। ऐसे आत्म संयम और एकाग्र चिन्ता ही से शिष्य समाज में गोबिन्द जी का मान सम्भ्रम क्रम से विशेष बढ़ता गया।

गोबिन्द जी के नूतन मत के मूल में शिक्षा इतनी बातों की थी जिसे कि वे शिष्यों को एकत्र करके सुनाते थे। "प्रभु परमेश्वर को सर्वान्तःकरण से सेवन करना उचित है। किसी जड़ द्रव्य को सर्वशक्तिमान् भगवत् के स्थल में अभिषिक्त करके सर्व सृष्टि कर्ता के महात्मय का भागी करना अनुचित है। सभी को चाहिये कि सरल हृदय हो के सर्वतो भाव से भगवान् के भरोसे रहें सब कोई एक प्राण होके एकता सूत्र में सम्बद्ध रहे। शिष्यों की मण्डली मध्य जाति धर्म वा जाति विवेक कुछ नहीं है। किसी को कुल मर्याद की ओर लक्ष्य न दिया जायगा। इस सङ्घ में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, पण्डित, मूर्ख, भले, बुरे सब परिगृहीत किये जासकते हैं। एक पंक्ति में बैठके एक पाक अन्न सब खा सकते हैं। सब शिष्यों का कर्तव्य है कि तुर्कों का विनाश प्राणप्रयत्न से करें और सबको उचित है कि एक दूसरे का तेज और साहस बढ़ाने के आशय से आपस को तद्विषयक चर्चा में सचेत रहा करें।" पहिले पहिल जिस दिन गोबिन्द जी ने उक्त विधि शिक्षा दी शिक्षा की समाप्ति में सब के सामने उन्हों ने एक ब्राह्मण और एक क्षत्रिय तथा तीन शूद्र जातीय जनों के जो कि उन के अच्छे विश्वस्त थे देह पर चीनी का रस (शर्बत) छिरकके उन्हें ख़ालसा (१)

(१) "खालसा" यह शब्द अरबी का है उस का अर्थ शुद्ध विमुक्त, जिस भूमि पर किसी दूसरे का स्वत्व नहीं निष्केवल अपनी है उसको खालसा कहने की रीति है। गुरुगोबिन्दजी ही से शिष्योंका साधारण नाम "खालसा" और उपाधि सिंह हुई है।

नायक कहा। और कौशल तथा युद्ध परिचायक " सिंह " ऐसी उपाधि उनको नियत कर के उन्हीं के सङ्ग आनन्द मनाया और आप भी उन्हों ने अपनी " सिंह " उपाधि धारण की।

गोबिन्द सिंह उक्तयुक्ति से जाति गत वैषम्य (वापार्थक्य) दूर कर के सब किसी को एक समान भूमि में लाने में समर्थ हुए। तथा सभी के हृदय में एक नये प्रकार की जीवनी शक्ति और नूतन तेज का बीज उन्हों ने रोप कर दिया। जाति भेद तोड़ देने से उच्चवर्ण वाले शिष्यगण पहिले तो कुछ कुड़कुड़ाये परन्तु गोबिन्द सिंहजी के दबदबे और कार्य पटुता के वश उनका असन्तोष थोड़े ही दिनों में विलीन हो गया। शिष्य समुदाय गुरु के अनिर्वचनीय तेज की महिमा देख कुछ भी चूंचां न करके केवल उपदेश अनुसार आचरण में तत्पर हुए। वे एकेश्वर वादी होके आदि गुरु नानक और उन के उत्तराधिकारियों पर यथोचित सम्मान सूचित करने लगे। राजपूतों के तुल्य " सिंह " उपाधि से उत्साहित होके वीरों के उचित वेश की सज्जा सजने लगे। अर्थात् अस्त्र शस्त्र बांधे हुए योद्धाओं का ढङ्ग अङ्गीकार किया मूंड़ और दाढ़ी के बाल तथा मूंछ नहीं मुंड़ाते थे। नील रङ्ग के वस्त्र (२) पहिनते थे। आपस में नमस्कार की पद्धति उन की यों थी " वाह गुरु जी का खालसा वाहगुरु जी की फतह " अर्थात् गुरु जी का इष्ट

(२) गोबिन्द सिंह के स्थापित अकाली नाम शिष्य सम्प्रदाय के लोग अद्यावधि नीलवर्ण ही के वस्त्र परिधान करते हैं।

सिद्धि हो जयपताका उन्हीं के हाथ लगे। गोविन्द सिंह ने गुरु मठ नामक एक सङ्घ कल्पित किया जहां एकत्र होके शिष्यगणों को पञ्चाइत हुआ करै। अमृत सर में वह समाज बैठा करता था जिस में कि शिषों को मण्डली में से समस्त कुसंस्कारों का मूलोच्छेद हो जावे। तथा शिषा दल भीतरी वा बाहिरी शत्रुओं के दमन में अटल रहै और थोड़े में वह जैसे एक प्राणता सहानुभूति (सम दुःख सुख वेदना) आदि जातीय जीवन के सुख की मूल बातें हैं उन से युक्त रहै यही गुरु मठ बैठने का मूल उद्देश्य और उपदेश्य था॥

गोविन्द सिंह जीने यों नवीन उपकरण सामग्री संग्रह करके नूतन शिषा समाज धीरे २ सङ्गठित किया। तथा उस नव जात समाज में राज नीति सम्बन्धी बातों के विषय धीरे २ साधारण तन्त्र से शासन किये जाने की पद्धति चलाई। जो शिषा मण्डली आपस में अनमिली दूर२ घोरपूर योगी के समान संयम से पहिले समय बिताती थी वही अब एक चित हो के साधारण तंत्र की प्रणाली के प्रणयन में प्रवृत्त हुई। फलतः यहांपर यह कहा जासकता है कि गोविन्द सिंह जी के जीवन में उद्दिष्ट कार्यों में से उक्त कार्य इस समय सुसिद्ध हो गया। यद्यपि उससे बढ़के जो उत्कट कार्य्य था उसकी सिद्धि अभी नहीं हुई थी पर उसका समय आ गया। उन्होंने पराक्रमशाली मोग़ल राजकाजियों के मध्य अस्त्र शस्त्रों से सज्जित खालसा लोगों को सिंह की उपाधि देके बढ़ा दिया था इधर हिन्दू पण्डितों के उधर धर्मान्ध विधर्मी पीरों के विरुद्ध हिन्दू और मुसल्मान दोनों को एक दल

मुक्त कर लिया था यही पर सम्राट् की पलटन का विध्वंस उन्हीं से साधित नहीं हुआ था मनो वैधक मरते समय पिता का वचन चेत पड़ा प्रतिज्ञा पूर्ण करने को मन उमड़ा सो समयातिपात न करके पितृघाती अत्याचारी मुसल्मानों के विरुद्ध झगड़ा खड़ा किया॥

भारतवर्ष के सम्पूर्ण प्रान्तों वा विभागों में मोग़लराज्य एकसा दृढ़ बद्ध मूल न था। अन्तर्विद्रोहादि नाना कारणों से मोग़ल साम्राज्य में प्रायः गड़बड़ मची रहा करती थी। मोग़ल महाराज्य की नीव डालने वाले बाबर ने निरुद्वेग राज्य नहीं करने पाया था उन के पीछे उनके बेटे हुमायूं ने पठान वंशी शेरशाह सूर की शूरता से निकाल बाहर होके देशान्तर में सोलह वर्ष व्यतीत किया था। अकबर ने गंभीर राजनीतिज्ञता तथा रण दक्षता के प्रभाव से पचास वर्ष के लगभग भारतवर्ष का राज किया उन्हीं की युक्ति और चतुराई से हिन्दू और मुसल्मानों के मध्य में एक प्रकार से जाति गत वैरभाव बहुत कुछ शिथिल हो गया था। तौ भी उन्हीं के पुत्र सलीम के अयथा आचरण तथा बङ्गदेश में उत्पन्न विद्रोह के दमन में उन्हें भी बड़ी कुछ झंझट उठानी पड़ी थी शाहजहां ने जीवित ही राज सिंहासन के ऊपर से अपने पुत्रों का झगड़ा देखा। परिणाम में सब में से औरङ्गज़ेब ने जयी होके निष्ठुरता से उनको कारागृह में डाल रक्खा। औरङ्गज़ेब धर्मान्धता और कुटिलता पूर्वक आचरणों से इतिहास के बीच प्रसिद्ध बादशाह है। उसकी कठोर राजनीति पर से बहु संख्यक लोगों का मन उससे

हट गया था और उसको बुराई चाहने लगे थे। अकबर की हिन्दू और मुसल्मानों को परस्पर भ्रातृ भाव से मिला देने का जो यत्न था सो सब निष्फल करके औरङ्गजेब ने भाड़ में झोंक दिया। अपने सन्देही स्वभाव धर्मान्धता और क्रूरताचरण से आपही आप औरङ्गज़ेब ने अपने बहुतेरे बैरी बना लिये। एक ओर से दुर्गादास स्वजाति के अपमान जनित अमर्ष से उत्तेजित होके लड़ पड़ा दूसरी ओर से शिवजी विधर्मियों के शासन से जलभुन के उमंड़ खड़ा हुआ। और उसी की सहायता से निस्तेज दबे महाराष्ट्रों के प्राण में भी तेज का सञ्चार हुआ। सम्प्रति गोविन्द जी का उमडाव जाटों के जमाव से सतेज होके पृथक् एक राज्य स्थापित होने में परिणत होने चाहता था। बिचार करके देखा जावे तो शिषों ने उटपटांग अपना बल विक्रम दिखाने का समय नहीं सोचा और न उन्होंने हठ से शिर उठाया किन्तु मुसल्मानों के द्वारा निपट उत्पीड़न उन्हें असहन कर दिये था।

उक्त बिध कठिन कार्य्य की साधना के फलीभूत होने के मानस से गोविन्द जी ने शिष्यों का भिन्न२ फड़ किंवा तड़ करके एक२ शिक्षित दल सैन्यों का संकलित कर लिया। और प्रत्येक दल के लिये बहुत करके सर्व बिश्वासू बड़े२ शिष्य को सेनापति बनाया। तद्भिन्न गोविन्द सिंह ने सीखे हुए कुछ पठानों का सैन्य ल्याके एकत्र कर लिया। सतलज और यमुना के बीच पहाड़ों की कटियों पर तीन दुर्ग निर्माण किये गये। नाहन के समीप "पवन्त" नामक स्थान

पर उनकी एक छावनी थी। तथा उन्हीं के पिता जी के बसाये हुए आनन्दपुर माखवाल को अपने हाथ में करके वहां भी टिकान बना लिया। गोविन्द जी का तीसरा ठिकाना चम्पकुमार जो कि सतलज के तीर है। पहाड़ी देशों के बीच बसके मोग़लों की सेना के सङ्ग सहज में संग्राम किया जा सकेगा इसी आशय से गोविन्द सिंह जी इन [उक्त] दुर्गों में निवास के लिये सब बातों के विषय सुपास के आयोजन तथा सुव्यवस्था पूर्वक सैन्य समूह संग्रह करके वहां के मोग़ल सर्दारों पर चढ़ाई करने की सज्जा में चेष्टावंत हुए। निदान पहिलेपहिल सन् १६८८ ई० में विधर्मी मोगलों के साथ समर करने को वे पूर्ण रूपसे सन्नद्ध हुए पूर्व में जो धर्म प्रचारक वा धर्मोपदेशक बन के नाना स्थानों से शिष्य संग्रह किया करते थे अब उन्हीं को युद्ध और सैनिकों के ऊपर स्वामित्व स्वीकार करके सङ्कटों में बचाव की चिन्ता से दुर्गों का सुप्रबन्ध करने का काम उठाना पड़ा।

प्रथम युद्ध गोविन्द सिंह जी का नाहन के सर्दार के साथ हुआ। गोविन्द की सेना में जो पठानों की पलटन थी वेतन चढ़ा है कहके गोविन्द की सम्पत्ति को लूटने की कुमन्त्रणा से वह स्वजाति के सैन्य में जा मिली तो भी अन्त में गोविन्द जी की विजय प्राप्त हुआ। शिष्यों के गुरु की पहिली ही चढ़ाई में जय श्री देख अनेकर लोग बाहिर से उनके दल में आमिले। श्रीनगर के वायव्य और जम्बू के दक्षिण में नादौन का राज्य है। नाहन के जय के थोड़े दिन पीछे वहां (नादौन) के राजा भीमचन्द को एक अन

मोग़ल सर्दार मीयां खां के सङ्ग लडाई हुई। जम्बू के राजा मीयां खां के पक्ष पर हुए। तब भीमचन्द ने अपनी सहायता के लिये गोविन्द सिंह को बुलाया ये झट दौड़े और जाके मोग़लों को उनके सहायक के साथ मार हटाया। और भगे हुए बैरियों का पीछा किया। मीयां खां तथा जम्बू के राजा कठिनता से सतलज पार भागके प्राणों से बचे।

मीयां खां के सङ्ग संग्राम के पीछे दिलेर खां का बेटा गोविन्द सिंह के ऊपर चढ़ आया। पर शिष्यों की युद्धपटुता से उसे विफलप्रयास होके झखमार लौट आना पड़ा। दिलेर खां ने पुत्र के कचिया जाने पर रुष्ट होके हुसेन खां के साथ बहुत दल बल जमा करके भेजा पहिले तो हुसेन खां ने शिष्यों को हटाके उनके कुछ दुर्ग अधिकार कर लिये पर अन्त में वह शिष्यों के हाथ से हारा और मारा गया। उस युद्ध में गोविन्द सिंह उपस्थित न थे केवल उनके सेवकसमुदाय ने बड़ा पराक्रम करके विजय लाभ किया।

गोविन्द सिंह तथा उनके शिष्यों का तथा विध बढ़ाव चढ़ाव देख औरङ्गज़ेब छका। लाहोर और सरहिन्द के अध्यक्षों (नवाब) के सविशेष यत्नपूर्वक उनके दबाने के लिये कठिन आज्ञा लिखी। सम्राट् की उक्त कठिन आज्ञा अनुसार अब बड़ी धूमधाम से दिलेर खां ने सन् १७०१ ई० में गोविन्द सिंह की सेना पर आक्रम किया। औरङ्गज़ेब का बेटा मुअज़्ज़िम उन्हीं का अधिनायक होने को निकला। यह सुन गोविन्द सिंह के सैन्यगण ने भय भीत होके पस्त के

पहाड़ों में जाके आश्रय लिया। गोविन्द सिंह ने उनका कितना भी तर्जन भर्त्सन किया पर विरोधियों का एका एकी सामना करने का शिष्यों का हियाव न हुआ। केवल ४० जन गुरु के लिये प्राण परित्याग करने को उतारु थे। गोविन्द सिंह आनन्दपुर में मोग़लों की सैन्य से पकड़े गये उनकी माता और स्त्री उनके दो बच्चों को लेके सरहिन्द को भागीं पर पश्चात् दैव दुर्घटना से वे दोनों बच्चे मुसलमानों के हाथ में पड़के बड़ी निर्दयता पूर्वक बध किये गये। इधर गोविन्द सिंह रात्रि की बेला मोग़लों की सेना की असावधानता से छिपके भाग कर चम्पकुमार को चले गये।

मोग़लशत्रु सैन्य ने चम्पकुमार जा घेरा उस सैन्य में खोजा मुहम्मद और नरहर खां दोनों सेनापति नियुक्त थे। युद्ध आरंभ होने के पूर्व दोनों सेनापतियों ने गोविन्दसिंह को दूत भेजा कि तुम आप आके अपने को हमारे हाथ में देदेओ। दूत का कथन सुनके गोविन्द सिंह के पुत्र अजित सिंह ने अतिशय कुपित हो ऊंची नीची सुनाके उलटे मुंह दूत को बिदा किया। निरादर के साथ दूत के लौट आने पर बड़ी अस्पर्द्धा से दोनों दलों के बीच घोर संग्राम हुआ। अजित सिंह सातिशय पराक्रम प्रकाश पूर्वक रणशायी हुए। गोविन्द सिंह जय की कुछ भी आशा न देख अन्धेरी रात में चम्पकुमार छोड़ कहीं अन्यत्र चल देने के विचार से गुप्त निकले। मार्ग में उन्हें दो जन पठानों ने देख पाया। उन दोनों पठानों की पहिले गोविन्द सिंह ने कुछ भलाई की थी उसी का स्मरण करके उन्हों ने उनको बहुत कुछ सहा-

थता की। निदान गोविन्द सिंह किसी प्रकार चम्पकुमार से चलके बिलोलपुर को पहुंचे। वहां पर पीर मुहम्मद नाम एक मुसलमान से उनकी भेंट हुई। जिस समय गोविन्द सिंह कुरान को अध्यापक से पढ़ रहे थे उस समय पीर महम्मद उनका सहाध्यायी था। पीर मुहम्मद सौहार्द तथा सुजनता से गुरु भाई के ऊपर पूरी अनुकूलता की। गोविन्द सिंह उस मुसलमान के साथ खाना पीना करके सङ्गही भेष बदल भाटिण्डा को गये। वहां पर शिष्य संवरण सज्जा करके उनके निकट आये सो उन्हीं की सहायता से गोविन्द ने मोगलों को युद्ध में परास्त करके हांसी और फीरोज पुर के मध्यवर्ती दमदमा नामक स्थल को जा पहुंचे। जहां पर गोविन्द सिंह ने मोगलों के सैन्य को मार हटाया उस स्थान, का नाम 'मुक्तसर' आज लों प्रसिद्ध है।

इसी समय अर्थात् दम दमा में जब डेरा किये थे गोविन्द जीने एक बिचित्र नाटक और एक धर्मग्रन्थ निर्माण किया गोविन्द सिंह शिष्यों को गुरुसंख्या में दशम गिने जाते हैं, इस लिये उन का विरचित ग्रन्थ शिष्यों के बीच, दशम पादशाह का ग्रन्थ' इस नाम से चलित हैं। गोविन्द सिंह जी ने जितने युद्ध किये तिन सभों का बर्णन उक्त बिचित्र नाटक में यथा बिभ किया है। निस्संशय वह बर्णन अति ओजो गुण से परिपूर्ण और हृदय का उद्दीपक है। जिस समय गोविन्द जी एकान्त बास कर के ग्रन्थों की रचना में लगे थे उस समय औरङ्गज़ेब ने उन को अपने पास उपस्थित होने के लिये आग्रह पूर्वक लिखा सो गोविन्द सिंह ने

अस्वीकार करके पत्रोत्तर पूर्वक लिख भेजा कि मैं बादशाह के ऊपर किसी प्रकार से विश्वास नहीं बांध सकता। खालसा लोग अब भी बादशाह के किये हुए अनाचार का बदला लिये बिना नहीं छोड़ेंगे पश्चात् नानक जी के प्रचारित मत के मूल में संस्कार की कथा के साथ अर्जुन और तेग बहादुर का हृदय विदारक बध वर्णन और अपने सन्तान हीन हो जाने का उल्लेख करके कहा कि अब किसी पार्थिव पदार्थ पर मेरी स्पृहा न रही ईश्वर चित्त हो के मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। भारत के महाराजाओं के अद्वितीय इस सम्राट की क्रोध दृष्टि से किसी से मैं डरने का नहीं, ऐसा साहस पूर्ण उत्तर पाने पर भी औरङ्गजेब ने फिर भी अपने पास भेंट के लिये आने का आग्रह किया इस बार गोविन्द सिंह ने अङ्गीकार किया परन्तु उनकी भेंट होने के पूर्व ही औरङ्गजेब का परलोक होगया।

सन् १७०७ ई० पहिली फरवरी को औरङ्गजेब का देहान्त हुआ उसके पीछे उसका बेटा 'मुअज्जम' बहादुर शाह के उपनाम से सिंहासन पर आसीन हुआ। बहादुर शाह जिस समय दक्षिण में अपने भाई कामबख्श के साथ संग्राम में था वहीं उसने गोविन्द सिंह को अपनी सेना के लिये बुला भेजा। गोविन्द के पहुंचने पर मुअज्जम ने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें अपना सेनापति नियत किया। सेनापति का पद पाके गोविन्द ने अपने शिष्य समूहों को सुशृङ्खला करने का विचार बांधा उसी काम के लिये एक दिन किसी पठान से कुछ घोड़े मोल लिये। मोल के लेने देने में कुछ कहा कहा-

वत हो पड़ी पठान के मुंह से कुछ अपमान सूचक वचन उच्चारण होते ही क्रोध में आके गोविन्द ने उसे मार डाला। पठान के बेटे ने पितृ हत्ता के ऊपर बड़ा बैर मनमें रक्खा। एक दिन सुयोग पाके उसी पठान के बेटे ने गोविन्द के डेरे में घुस के उनपर हथियार की चोट की। निदान उसी से महाशय का देह वियोग सन् १७०८ ई० में गोदावरी के तीर नादेर नाम स्थान में अकालिक हुआ। क्यों कि उस समय आपकी वय केवल ४८वर्ष की थी।

सच पूछोतो उक्त महाशय ही शिष्य समाज के बीच जीवन शक्ति के मूल स्रोत हैं क्यों कि उभाड़ में शिष्य गण बड़े प्रख्यात हुए। गुरु नानक, केवल मत के प्रवर्तयिता उल्लिखित हैं पर गुरु गोविन्द धर्म सम्बन्धी सङ्घ के मध्य एक प्राणता का सञ्चार करने के साथ राजनीति पूर्वक शासन पद्धति के विषय शिष्यों को स्वाधीन करने वाले कहे जाते हैं। उन का लक्ष्य बहुत ही कुछ बड़ा था। तथा कार्य के साधन में अतिशय पटुता उन्हें भागवान् ने दी थी। मन के सङ्कल्प की स्थिरता में अद्वितीय थे और असामान्य शूर वीर थे। सब को एक धर्म में लाने तथा एकताके सूत में बांधने के कार्य में उन का प्रयास चिन्तन करने वाले के चित्त में उन की सातिशय उदारता उद्भासित होती है। जातीय जीवन का गौरव उन्हें अच्छा सूझा था सब एक चित्त एक प्राण भये विना इस निर्जीव भारत का कदापि उद्धार साधन होने वाला नहीं है यह उन्हें यथावत् जंच गया था। उसी को सिद्ध लिये उन्हों ने क्या हिन्दू क्या मुसल्मान सभी को

एक में करलेने का विचार ठाना था। और ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्य शूद्र चारों जाति के शिष्यों के बीचसे वर्ण भेद उठादिया था और सम्राट् औरङ्गजेब के प्रत्युत्तर में गर्वपूर्वक लिख पठाया था कि "तुम हिन्दुओं को मुसल्मान करते हो मैं मुसल्मानों को हिन्दू करूंगा। तुम अपने को सुरक्षित समझते होओ तो मत समझो सावधान, हमारे गोरैया पंछी श्येन (बाज़) को मार गिरावेंगे" तेज: शाली शिष्यों के गुरु की अपरोक्ष भविष्य वाणी अन्यथा नहीं हुई किन्तु सत्य वैसा ही हुआ कि उन्हीं को मन्त्र शिक्षा के बल से सचमुच गोरया ने श्येन के दांत खट्टे करदिये थे।

शिष्यों के समाज में हर गोबिन्द जी हथियार धारण की धारा के प्रवर्तक हैं सत्य किन्तु गोबिन्द जी उसी हथियार धारण में ऐसा कुछ जादू डाला कि समस्त शिष्य समाज तेजस्वी साहसी, लड़ाके होके आज इतिहास में परिचित तथा आदरणीय गिने जाते हैं। हरगोबिन्द का हथियार धारण केवल आत्मरक्षा भर के लिये था गोबिन्द सिंह का समस्त भारत वर्ष को एकता सूत्र में बांधने के लिये स्वीकृत था। हरगोबिन्द के हथियार थोड़े लोगों मे थोड़े स्थलों में चलाये गये पर गोबिन्द के हथियार सर्व जाति के लोगों मे कहां २ नहीं चलाये गये। गोबिन्द सिंह तरुण ही मारे गये वे यदि और कुछ दिन जीते तो और भी न जाने कितने महत् कार्य न कर जाते। मुहम्मद मक्के से भाग के मदीनामें जो न जा बचते तो पृथिवीका इतिहास और ही कुछ रूप धारण किये होता। गोबिन्द सिंह जो अपने अभिनिवेश की सिद्धि में उत्सुक न होते तो शिष्यों का नाम जो आज अतिगौरव से इतिहासों में गृहीत होता है

कौन पूछता। फलतः गोविन्द सिंह ने थोड़ीही अवस्था में अल्प समय के बीच जो कुछ करगये और किसी से होना दुस्साध्य समझना चाहिये क्योंकि देखो उन्हीं के उत्तेजन से उभड़े हुए शिष्यों के दलों ने कैसा कुछ जीव पाके बल पकड़ा कि मृत प्राय चेष्टा विहीन भारत में शूरों का नाम रख लिया था। उन्हीं के कारण रामनगर और चिलियान वाला जो किसी गिनती में न थे पर आज इतिहास में सादर पठित हैं। संक्षेप यह है कि श्री गुरु गोविन्द जी का पञ्चतत्व जनित भङ्गुर कलेवर काल के कवल में कलित हुआ सही परन्तु तौभी वे आप 'सजीवतियशोयस्य कीर्तिर्यस्य सजीवति' इसन्याय से आज भी जगत् में जीवमान हैं। जन कोलाहल से पूर्ण समृद्ध नगरी का कालान्तर में ध्वंस होके वह निर्जन अरण्य में परिणत हो जावे किम्वा अन जाने अनदेखे विदेशी विपक्ष वृन्द शत्रुओं के दुर्गम राजप्रासादों पर चढ़के अपनी जय पताका टांग देवें अथवा भारी भवंर और लहरें लेती हुई बड़ी२ लम्बी चौड़ी नदियां चुल्लक पानी के नाम से रह जावें वा तनिक चुल्लक पानी गड्ढे बढ़के बुड़ाव वाली भयानक वेगवती नदी का आकार धारण कर धवल फेनों के मिष से अट्टहास सा करते हुए समुद्र में जा मिलें तो भी गोविन्द सिंह जीकी बरिआई, इति कर्तव्यता की बुद्धि, और उदारता की कथा पृथिवी मण्डल का मण्डन होके अब विलुप्त होने वाली नहीं है। किन्तु स्पृहणीय जातीय गौरव के प्रस्ताव में इतिहास के बीच आप का पूज्य पवित्र नाम स्वर्णाक्षर से अङ्कित रहेगा॥

इति।

क्षत्रियपत्रिका।



नामक मासिक पत्रिका अनेक उत्तम विषयों से अर्थात् इतिहास, परिहास, उपान्यास, जीवनचरित्र, काव्य, कोष, नाटक, रूपक, वैद्यक, नीति, धर्मशास्त्र, गणित, गान, विज्ञान नियुद्ध, शिल्प आदि से पूरित होकर प्रतिमास, की शुक्ला दशमी को छपती है। इस में सब से बढ़कर उत्तमता तो यह है कि जिस विषय में हाथ लगाया जाता है उसे पूरा करके तब २रे विषय को प्रारम्भ किया जाता है और वह, ४ विषय सालभर के अन्दर में पूरा कर दिया जाता है प्रतिमास डेमी साढ़े आठ फार्म अर्थात् ६८ पेज छपती है जिन्हें इस के ग्राहक होने की इच्छा हो वे मुझे या इस के एडिटर महाराजकुमार बाबू रामदीन सिंह जी के पास पत्र भेजें। मूल्य डाक व्यय समेत ६ ।/) आना है।

"खड्गविलास" प्रेस, मुरादपुर नईबसती।	साहबप्रसाद सिंह, मनेजर क्षत्रियपत्रिका।



'खड्गविलास' छापाखाना।



मुरादपुर नईबस्ती, बांकीपुर।



इस छापेखाने में संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी और फारसी सब तरह छापे का काम बहुत साफ़ और सुन्दर होता है। क्योंकि सब अक्षर सुन्दर और नये, स्याही बहुत उत्तम, अक्षर योजना करने वाले (कम्पोज़िटर) और छापने वाले (प्रेसमैन) आदि कर्मचारी सब निपुण, इस के सिवा मेरी भी विशेषदृष्टि रहती है। अतएव जिन साहिबों को पुस्तक, बिल, चिट्ठी, दाखिला, चेक, इश्तिहार आदि छपवाना हो छपवावें। बहुत सस्ते दामों में काम निर्वाह होगा। जिन साहिबों को छपाई आदि का हाल जानना हो वे मेरे पास पत्र लिखें।

साहबपरसाद सिंह मनेजर।



MANUAL OF HISTORY.

(ANCIENT.)

पुरावृत्तसार ।

श्रीयुत श्रीभूदेव मुखोपाध्याय सी० आई० ई०
बिहार स्कूलों के इन्सपेक्टर की आज्ञानुसार
उन के बनाये हुए बंगला पुरावृत्तसार से

मुन्शी गोबिन्द चन्द्र सिंह ने

हिन्दी में उल्था किया ।

श्रीयुत् पण्डितवर छोटूराम त्रिपाठी संस्कृत
प्रोफ़ेसर पटना कालेज ने शुद्ध किया ।

श्रीकाशीनाथ भट्टाचार्य्य ने छापके प्रकाश किया ।

हुगली । — बुधोदय-छापाखना ।

१८७९ ।

MANUAL OF HISTORY

(ANCIENT.)

पुरावृत्तसार ।

Translated into Hindi

BY

GOVINDA CHANDRA SINGHA.

Revised and corrected by Pundit Chhotu Ram Tivary

Sanskrit Professor Patna College

HOOGHLY.

Printed by K. N Bhattacharje

BUDHODOY PRESS

1878.

पुरावृत्तसार।

पहला अध्याय।

कोई आदमी आपसे आप अपने जनम का वृत्तांत नहीं जान सक्ता। जब तक हम लोग अपने मां बापसे न सुनें कि हमारा जन्म किस तरह हुआ और अब हमारा सिन कितने बरस का है तब तक हम लोग इस बिषय में कुछ भी नहीं जान सके इस से यह बात पाई जाती है कि मनुष्य की सृष्टि का बिवर्ण कभी किसी के द्वारा से प्रकाश नहीं हो सक्ता है। जब तक ईश्वर आप ही हम लोगों को इस का हाल न बताये तब तक हम लोग कुछ भी नहीं जान सकते इस कारण हरजाति के लोगों को जो कुछ इस बारे मालूम हुआ है सो उनके धर्म की पुस्तकों से मिला है। युरोप के पंडितों ने कहा है कि ईश्वर ने पृथ्वी की सृष्टि करने के कुछ रोज़ बाद एक स्त्री और पुरुष को पैदा किया

जो पुरुष पैदा हुआ उस का नाम आदम था और उस की स्त्री का नाम हौआ बहुतेरों के मतसे यह बात मालूम होती है कि उस दम्पती का जनम ४००४ चार हज़ार चार बरस पहले ईसा के जनम के हुआ था ये दोनों किसी अच्छे बाग़ीचे में रहते थे। उस समय दुख का कुछ नाम भी न था लेकिन जब इन्हों ने ईश्वर की आज्ञा न मानी तभी से इन को दुनिया का दुख भोगना पड़ा। प्राचीन समय के लोग उस काल का वर्णन करते थे कि वह अवस्था सब अवस्थाओं से उत्तम थी हिन्दुओं के पुराण में सत्ययुग का हाल जैसा लिखा है वैसा ही सब धर्मवालों की पुस्तकों में पाया जाता है। यूनानवाले इसको सुवर्णकाल कहते थे और क्रस्तान लोगों के बायेबिल और मुसल्मानो के क़ुरान के रूसे मालूम होता है कि इसी समय में बाबा आदम और मामा हौआ अदन के बग़ीचे मे रहते थे। सत्ययुग आदमियों की पहली अवस्था थी। जैसे आदमी लोग लड़कपन की सब बातें भूल जाते हैं केवल दो एक बड़ी बड़ी बातें यादरहती हैं वैसे ही सत्ययुग के इतिहास पर ध्यान देने से दो एक बहुत प्रसिद्ध बातें मालूम होती हैं। उन में से जल-प्लावन (सैलाब) का वर्णन सब से अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं कि किसी समय में असुर लोगों ने जन्म लेकर सनातन धर्म की जड़ उखाड़ने शुरू किया जब पृथ्वी मनुष्यों के पाप कर्म बढ़ जाने के कारण से उनका भार न सह सकी तो परमेश्वर ने

इस पृथ्वी को जल में डुबा कर सारे लोगों को नाश कर दिया। प्राचीन समय के बड़े बड़े लोगों ने जो कुछ इसके बारे में कहा है वह नीचे लिखा जाता है। हिन्दुओं के पुराण में लिखा है कि भगवान ने मच्छ अवतार लेकर बैवस्वत मनु को एक जहाज़ बनाने का हुक्म दिया वेमनू हरजानवर का एक एक जोड़ा और सात मुनियों को साथ लेकर जहाज़ पर सवार हुये उस के बाद पृथ्वी जलमें डूबगई। अगले समय के कैलडिया लोगों के इतिहास में यह लिखा है कि आदम की दसवीं पीढ़ी में जलप्लाब हुआ था उस समय में योसुथ्रिस नामी एक धर्मातमा राज करता था उस ने जयाने नामी किसी देवता की आज्ञा से जिस की मूरत मछली और आदमी की सी थी एक जहाज़ तैयार किया और तब हर जानवर का एक एक जोड़ा और अपने भाई बन्दों को साथ लेकर जहाज़ पर सवार हुआ बाद इसके दुनिया पानी में डूब गई। मिसर लोगों से भी इसका हाल कुछ पाया गया है उन सभों कि मत से, ईसोरिस नाम एक आदमी को ईश्वर ने जल-प्लावन में रचा कर के बचाया था। साइरिया देश में एक खाई है उसको देखकर वहां के रहनेवाले यह कहते हैं कि इसी खाई से जल-प्लावन का पानी पाताल में चला गया इससे यह मालूम होता है कि साइरिया के आदमी भी जल-प्लाब का हाल जानते थे। चीन के लोग भी पुराने जातियों में है उन के शास्त्र में लिखा है कि एक समय चीन देश में भारी जल-प्लाब हुआ था

इस बिपत से एक आदमी पूयानस् नाम वाल बच्चे समेत बच गया था और सबके सब डूबकर मर गये, लेकिन चीनी लोग यह कहते हैं कि भारी जलप्लाव सारी दुनिया में नहीं हुआ था । यूनानियों ने दो जल-प्लावन का हाल लिखा है लेकिन वे दोनों विशेष जगहों में हुये थे । इस जल-प्लावन से सारी पृथ्वी डूब गई थी इस का हाल कुछ भी नहीं लिखा । इन दो जल-प्लावन में से पहले में एक ओगाईजस और दूसरे में डियूकेलियन बच गया था । फ़िनिशिया लोगों के प्राचीन समय का इतिहास मिला है लेकिन उसमें जल-प्लावन का कुछ हाल नहीं लिखा । कृस्तान लोगों के बायेबिल में यह लिखा है कि नू या (नूह) और इनके तीन बेटे शेम, हेम, जाफ़ित, अपनी स्त्री समेत ईश्वर की कृपा से एक बड़े जहाज़ पर सवार होकर बच गये । बायेबिल की टीका बनानेवाले यह कहते हैं कि यह जल-प्लावन २३०० दो हजार तीन सौ बरस ईसा के पहले हुआ था ॥

दूसरा अध्याय।

जुदे जुदे रंग आकार व्यावहार और भाषा के थोड़े लोगों को एक जगह देख ने ही से इस बात के जान्ने की इच्छा होती है कि इन भेदों का क्या कारण है, पंडित लोग आज तक इस प्रश्न का उत्तर सभों के मत के अनुसार न देसके लेकिन आज कल के पंडितों ने इस का कुछ हाल लिखा है वह यह है कि आदमी ५ पांच जातियों में बांटे गये हैं उनमे एक का नाम कौकेशियन। इन लोगों का रंग गोरा सिर गोल माथा चौड़ा नाक बड़ी और ऊंची मुख-कोण बड़ा इसी तरह से बहुत से सौन्दर्य्य के चिन्ह है यह लोग बुद्धि और धर्म में और जात के लोगों से बढ़चढ़ के हैं उत्तर में स्कौटलेंड़ और दखिन में हिन्दूस्तान इन दोनों के बीच के रहने वाले कौकेशियन हैं। दूसरी जाति के लोग मुग़ल कहलाते हैं इन लोगों का रंग पीला नाक छोटी गाल ऊंचा सिर ठीक गोल नहीं दोनों और कुछ चिपटा मुख कोण कुछ छोटा है। मुग़ल लोग कैकेशियन लोगों से बुद्धि कम रखते हैं उत्तर मेरू के नज़दीक जितने देश हैं और पच्छिम तूरस से लेकर पूरब जापान तक जितने देश हैं इन सभों में मुग़ल लोग रहा करते हैं तीसरी जाति का नाम मलाये इन सभों का रंग भूरा नाक बड़ी माथा ऊंचा मुंह बड़ा मसगुरा कुछ

बाहर निकला हुआ मुख कोण मुग़लों से छोटा यह लोग बिलकुल मूर्ख नहीं है धर्म के बारे में समझ इन लोगों की कम है पूरब के प्रायद्वीप और उसके निकट के द्वीप में रहते हैं। चौथी जाती को आमेरिक कहते हैं। इन सभों का रंग लाल सिर छोटा और नांक तोते के ठोरके ऐसा सिर के ऊपर का भाग ऊंचा और नीचे का भाग चिपटा इन लोगों को कोई विद्या जल्द सिखाई नहीं जा सक्ती है ये लोग अपने दुश्मनों से बदला लिया करते हैं और अमरीका के सब जगहों में रहा करते हैं आजकल कैकेशियन लोगों नें यूरोप से वहां जा कर उन लोगों को वहां से निकाल दिया है पांचवां जाति का नाम ईथियापियाइन इन लोगों का रंग काला नांक छोटी, छोटा माथा बाल गुरचुआ होंट मोटा इन लोगों का भुजा किहुनी से पहुचें तक बहुत बड़ा होता है ये लोग बहुत मूर्ख होते हैं अफ़िरिका के मध्य-भाग और हिन्द के समुद्र के टापूओं में रहा करते हैं॥

तीसरा अध्याय।

भाषा के भेदों का हाल।

देखने में यह मालूम होता है कि हर जाति के लोगों की भाषा भिन्न भिन्न है, एक जाति के मनुष्य दूसरी जाति के मनुष्यों की बात नहीं समझ सकते हैं। जो केवल बंगला जानता है वह अंगरेज़ी नहीं समझ सकता, और जो अंगरेज़ी ही जानता है वह कभी बंगला या फ़ारसी का एक अक्षर भी नहीं समझ सकता है। लेकिन पण्डितों ने यह ठहराया है कि आदमियों में जितनी तरह की भाषा चलतीं हैं सब कैएक मूल भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं। उन मूल भाषाओं के अवान्तर भेद से और सब भिन्न भिन्न भाषा उत्पन्न हुईं हैं। अचम्भे की बात यह है कि मनुष्यों के स्वाभाविक जाति भेद के अनुसार उनकी भाषा में भेद हुए हैं। ऊपर कही हुईं मूल भाषाओं में से एक का नाम ईरानी है। कोई कोई इस को हिन्दू-यूरोपीय कहते हैं। यह भाषा आज कल किसी एक ख़ास देश में प्रचलित नहीं है। लेकिन इसके अनेक लक्षण बहुत सी प्रचलित भाषाओं में देख पड़ते हैं। ईरानी, या हिन्दू, यूरोपीय भाषा की कैएक प्रधान शाखा ये है (१) संस्कृत जो इस देश में प्रचलित है (२) जेन्द प्राचीन पारसी लोगों

में चलती थी (३) लाटिन प्रसिद्ध रूम लोगों की भाषा। (४) ग्रीक प्रसिद्ध युनानी लोगों की भाषा (५) स्लावनिक रूस के इलाके के बहुत देशों की भाषा। (६) लेटिस लिथूयानिया प्रदेश की भाषा। (७) गथिक इसी से जरमन भाषा उत्पन्न हुई है। (८) कोलटिक यह भाषा रूमी लोगों के समय में यूरोप की बहुत सी जगहों में प्रचलित थी। इन सब भाषाओं में के अनेक शब्दों का मूल एक ही समझा जाता है। देश भेद के कारण उन का उच्चारण भिन्न भिन्न सुन पड़ता है। लेकिन किस भाषा के उच्चारण में क्या विशेष है इसका भी नियम पण्डितों ने किया है। जो किसी भाषा का एक शब्द बोला जाय तो पण्डित लोग सहज ही बतासकेंगे कि उस शब्द का उच्चारण दूसरी भाषा में किस तरह से हो सकता है। ईरानी भाषा की एक और प्रकृति यह है कि किसी शब्दका कोई दूसरा अर्थ करने में उसके पहले या पीछे दूसरा शब्द मिलाया जाता है। वह मिला शब्द प्रधान शब्द के साथ मिलकर उसकी विभक्ति या उपसर्ग समझा जाता है।

ककेसीय जाति के अन्तर्गत के एक और जाति हैं उन की भाषा पूर्वोक्त ईरानी जाती की भाषा नहीं है। उन की भाषा का नाम शेमेटिक है। साइरीय,प्राचीन आबिसिनीय, फ़िनिसीय अरब, और यहुदी वा हिब्रु ये सब भाषा इसी प्रकार की हैं। शेमेटिक भाषा के प्राय: सब शब्द धातुओं से बनते हैं। लेकिन उन सब धातुओं के साथ विभक्ति

मिलने से दूसरे रूप नहीं हो जाते हैं। बहुत सी जगहों में धातु के अन्तर्गत बर्णों के रूपान्तर हो जाने से दूसरा अर्थ होजाता है। शेमेटिक जाति की भाषाओं के सब धातु प्राय तीन हल वर्णों के जोग से बनते हैं। केवल एक असंयुक्त वर्ण से कभी नहीं बन सकते हैं। यह भाषा शेम के वंश मे प्रचलित है इस लिये इस का नाम शेमेटिक है।

और एक प्रकार की भाषा उसका नाम तुराणी वा तातार है। इस बात के बहुत चिन्ह पाये जाते हैं कि इस भाषा के बोलनेवाले लोग किसी समय में युरोप के बहुत पश्चिम हिस्से से ले हिन्दुस्तान के दक्षिण हिस्से तक रहते थे। हम लोगों के दक्षिण देश में जो तामिल भाषा आजतक प्रचलित है वह तुराणी भाषा से निकली है। उन असभ्य जंगली लोगों की भाषा जो हमारे देश की किसी किसी जगहों में रहते हैं तातार भाषा के सदृश है। तुराणी भाषा में कुछ विशेषता नहीं देख पड़ती है, इस की क्रियाओं का प्राय रूपान्तर नहीं होता। शब्दों के भी रूप भेद अधिक नहीं होते हैं।

चीनवालों के आचार व्यवहार जैसे दूसरे जाति के लोगों से भिन्न हैं वैसे ही उनकी भाषा भी दूसरी किसी जाति की भाषा के समान नहीं है। उनकी भाषा एक वर्णात्मक है अर्थात् शेमेटिक भाषा के मूल शब्दों में से बहुत से शब्द जैसे तीन वर्णों के जोग से बने हैं चीनवालों के मूल शब्द ऐसे नहीं हैं। किन्तु वे-

वल एकही वर्णात्मक हैं। चीन की भाषा में क्रिया, गुण, और द्रव्य बाचक तीन प्रकार के पृथक पृथक शब्द नहीं हैं। उस मे सब शब्द द्रव्यवाचक हैं। वे सब द्रव्यबाचक शब्द उच्चारण की विशेषता से कभी तो क्रिया बाचक, और कभी गुण बाचक होते हैं। इस भाषा को तुराणी भाषा की पुरानी अवस्था का रूप कह सकते हैं।

और एक प्रकार की मूल भाषा का नाम आफ्रिक है। इस प्रकार की भाषा आफ्रिका में प्रचलित है। इसकी प्रकृति शेमेटिक, और इरानी इन दोनों से कुछ भिन्न है। लेकिन किसी किसी अंश में इन दोनों के साथ आफ्रिक भाषा मिलती है। इस लिये पण्डित लोग आफ्रिक भाषा को इन दोनों प्रकार की भाषाओं के बीच की समझते हैं। प्राचीन मिस्र लोगों की भाषा आफ्रिक भाषा के अन्तर्गत समझी जाती है। आमेरिक जाति की मूल भाषा ऊपर कही हुई सब भाषाओं से भिन्न है, इसको बहुवर्णात्मक कहते हैं, इस लिये कि यद्यपि इस भाषा में विभक्ति का जोग नहीं देख पड़ता तोभी बहुत से मूल शब्दों को एकट्ठा मिलाके दूसरा अर्थ निकालना इस भाषा की प्रकृति मालूम होती है, यह भाषा अमेरिका के प्राचीन रहने वालों में प्रचलित थी। आज तक इस भाषा की प्रकृति अच्छी तरह से मालूम नहीं हुई है।

चौथा अध्याय।

अनेक देशों में मनुष्यों का संचार।

अगिले अध्याय में भाषाओं के भेद की जो व्यवस्था दिखलाई गई है, किसी प्राचीन जाति के इतिहास में उसका कोई साफ़ वर्णन नहीं है। "बाइबल" में लिखा है कि जलप्लावन के कुछ बरस बाद "नोया के सन्तान "टाइग्रिस" और "यूफ्रिटिस" नदियों के बीच "सिनार" नाम किसी स्थान में जाकर वहां एक नगर और बड़ा कीर्तिस्तम्भ बनाने लगे। तब ईश्वर ने उन लोगों की भाषा जुदी जुदी बदल दी, इसीलिये वे लोग अलग अलग सम्प्रदाय बनाकर हर तरफ़ गये। इस प्रकार से मनुष्य लोग अनेक जातियों में बट गये। बहुत से लोग कहते हैं,कि यह बात ईशा के १९९६ (उनैस सौ छेयानवे) बरस पहले हुई थी। "बाइबल" ग्रन्थ को मूल प्रमाण मान कर और दूसरी प्राचीन जातियों के इतिहास की सहायता से आज कल के पाण्डित लोगों ने यह ठहराया है, कि प्राचीन समय में आदमी लोग नीचे लिखी हुई चौहद्दियों के बीच के देशों में रहा करते थे। उत्तर "ककेशस्" पहाड़ और "मिडिया" पश्चिम "लिबिया" और "ग्रीस" और दक्खिन "इथियोपीया" या "हाबेश" इस के बाद हर पीढ़ी में आदमी लोग अपने रहने

को जगह चारो तरफ़ बढ़ाने लगे। इस तरह आज कल लोग सारी पृथिवी में फैलगये हैं। आदमियों के इतिहासों को देख भाल कर पण्डितों ने यह ठहराया है कि किसी भी देश का आदिम ठीक विवरण नहीं मिल सकता है। किसी एक देश को कहो उस देश का इतिहास देखने भालने से यही मालूम होगा कि आज कल जो लोग वहां वसते हैं, वहां उनके आने के पहले अवश्य किसी दूसरी जाति के लोग रहते थे। अगर उन पहली जातियों का कोई इतिहास मिले तो उस से भी मालूम होगा कि उन लोगों के भी पहले कोई प्राचीन जाति वहां रहती थी उन जाति यों का कोई इतिहास मिलता नहीं। केवल कई एक समाधि निर्म्मान, उन का भाषा के कुछ शब्द, वा उन लोगों के वहुत भद्दे अस्त्र शस्त्र आदि रह गये हैं। लेकिन वेई लोग आदि निवासी उस देश के थे, इस में कोइ प्रमाण नहीं। पृथिवी में सव जगह यही हाल है। उसके कुछ उदाहरण देते हैं।

"आमेरिका" खण्ड बहुत थोड़े समय से जाना गया है, "कलम्बस" नाम एक प्रसिद्ध नाविक ने १४९२ वरस इशा के वाद पृथिवी के इस हिस्से को "युरोप" वालों को जानाया था। "युरोप" वालों ने "आमेरिका" में जाकर पहले पहल असभ्य और लाल रंग वाले "इन्दियन" लोगों को देखकर यह समझा था कि वे सब से पुराने वहां के रहने वाले हैं।

लेकिन उस के बाद उस देश को बहुत सो जगहों में बड़े बड़े क़िले, दिवार, और समाधि स्थान देख पड़े। 'इन्डियन' लोग कहते हैं कि वे सब चीज़ें देवताओं की बनाई हुई हैं। इस से यह मालूम होता है, कि "इन्डियन" लोगों के पहले भी किसी सुसभ्य जाति के लोग "आमेरिका" में रहते थे। उन के वंश के नाश होने के बाद "इन्डियन" लोग रहने लगे।

आज कल "युरोप" के पश्चिम और उत्तर प्रदेश में "जर्म्मन" लोग बहुत प्रबल हैं। उन के पहले वहां "केल्टिक" जाति के लोग रहते थे। "जर्म्मन" और "केल्टिक" ये दोनों "ककेसीय" जाति के लोग हैं, और उन की भाषा की प्रकृति इरानी भाषा कीसी थी। आज कल बहुत सी जगहों में इन दोनों जातियों के लोग सम्पूर्ण रूप से मिल गये हैं, लेकिन "केल्टिक" लोगों के भी पहले "युरोप" में दूसरी जाति के लोग रहते थे इस बात के बहुत से प्रमाण पाये जाते हैं। वे सब लोग "ककेसीय" न थे, लेकिन 'मोगल' जाति के थे।

'एशियां' में भी बहुत सी जगहों में ऐसी बात देख पड़ती है। हमारे देश के दक्खिन हिस्से में 'मोगल' जाति की कोई भाषा प्रचलित थी यह पहले ही कह आये हैं। आज कल भी जो सब असभ्य और 'चोआड़' जाति के लोग जंगल और पहाड़ों में रहते हैं, वे भी 'ककेसीय' जाति के लोग नहीं हैं। लेकिन हिन्दू लोग ककेसीय जाति के हैं, इस से मालुम होता है कि

उन के आनेके पहले भी इस देश में मनुष्य रहते थे, पर इसका भी ठिकाना नहीं लग सकता है कि हिन्दु लोग कितने प्राचीन हैं।

'आफ़्रिका' की बहुत सी जगहों में 'ककेसीय' जाति के लोग देख पड़ते हैं। और उस खण्ड के सब से दक्खिन के हिस्से में जो 'हटेनटड्' लोग रहते हैं, वे भी 'मोगल' जाति के हैं। इससे यह अनुमान होता है कि पहले पहल 'मोगल' जाति के लोग वहां आये और उसके बाद 'ककेसीय' और युरोपीय' लोग वहां रहने लगे। इस विवरन के पढ़ने से यह मालूम होता है कि किसी भी देश का आदिम वृत्तान्त यथार्थ नहीं मिल सकता है, पर इस से यह नहीं समझना चाहिये कि आदमी लोग पृथिवी में अनादि काल से रहते हैं। भूतत्ववित पण्डितों ने यह ठहराया है कि किसी समय में यह पृथिवी आदमियों के रहने योग्य नथी। इस से यह निश्चय है कि उस समय के अनन्तर मनुष्य की सृष्टि हुई। पर उस समय को कितने दिन हुए यह ऐसी युक्तियों से ठहराना कि सब के मन में आजाय किसी प्रकार सम्भव नहीं।

दूसरा प्रकरण।

पहला अध्याय।

मनुष्य समाज।

हमलोग लड़कपन से अपने प्रयोजनीय और सुखदाई पदार्थों से घिरे रहते हैं इस कारण अभ्यास के पड़ जाने से नहीं जान सकते कि ये पदार्थ कितने यत्न और परिश्रम से बनते हैं। उन में से हर एक के बनाने में प्राचीन समय में मनुष्यों की कितनी बिवेचना कितना परिश्रम और कितना समय लगा है उसका कुछ ठिकाना नहीं। देखो लोहा हमलोगों के बहुत काम में आता है। लेकिन अनेक जातियों के लोग बहुत दिनों तक लोहे का व्यवहार नहीं जानते थे। नमक जो ऐसे काम की चीज़ है कि जिस के बिना हमसबों के बहुत सी खाने की चीज़ें नहीं बन सकती हैं। बहुत देशों के लोग नहीं बनाने जानते थे। और किसी किसी देश के लोग ऐसे मूर्ख थे कि आग का भी व्यवहार नहीं जानते थे। उस समय उनकी कैसी अवस्था थी

अनुमान से कुछ जाना जा सक्ता है उसका कुछ विशेष बर्णन नहीं पाया जाता है। जब आदमी लोगों ने कुछ चतुर हो कर धनुष वान आदि दो एक अस्त्र बनाने सीखा और रहने की जगह बनाने जाना। और जब उन लोगों को यह भी मालूम हुआ कि कौन चीज़ खाने के योग्य है और कौन चीज़ नहीं और आपस में बात चीत करने के लिये एक प्रकार की भाषा बनी उसके बाद आदमियों की जो जो अवस्था होतीं गईं उनका कुछ बर्णन इतिहास में पाया जाता है।

बहुत से लोग इकट्ठे हो कर एकही बार बड़े बड़े राज्यों के शासन की रीति नहीं निकाली किन्तु पहले केवल एक एक बंश के लोग सब एक एक जगह रहने लगे। एक बंश के लोग अपने पिता या दूसरे किसी प्रधान आदमी की आज्ञा [illegible] काम किया करते थे। उस समय मनुष्य शीकार [illegible] अपने दिन काटते थे और किसी एक जगह में घर बना कर नहीं रहते थे। लेकिन शीकार के द्वारा दिन काटना बहुत कठिन होता है। किसी किसी दिन शिकार की चीज़ नहीं पाने से उपवास करना पड़ता है। और बार बार ऐसी बात होने से आदमी लोगों को इसका उपाय खोजना पड़ता है और तब यह बात अनायास मन में आती है कि कुछ पशुओं को पाल रखने से लोग ऐसे कष्ट से बच सकते हैं। इस प्रकार आदमी लोग पशुपालने सीखते हैं। इस प्रकार के मनुष्य अपने

अपने बंश के सरदार के अधीन रह कर इधर उधर घूमा करते हैं। इस लिये उनकी शासन रीति को कुलतंत्रता अर्थात् कुल बंधेज कह सक्ते हैं।

पशुओं के पालन से जितने लोग अपने दिन काट सक्ते हैं उन से अधिक लोग खेती बारी करने से जी सक्ते हैं। देश और प्रकृति के भेद से यह ज्ञान किसी किसी जाति के लोगों मे शीघ्र हो जाता है। और इस कारण वे लोग दूसरी जगह घूमा नहीं करते पर किसी उपजाऊ जगह में रहने लगते है। ईस अबस्था में पहले लोग कुल तंत्रता के अधीन रहते हैं। पर बहुत सी जगहों मे ऐसी अबस्था जल्द बदल जाती है। किसी एक बंश के लोगों की संख्या बढ़ जाने से या बहुत प्रबल और बहुत दुराभिलाषी होने के कारण वे दूसरे बंश के मनुष्यों पर चढ़ाई करते हैं और उनको हरा कर अपने अधीन करलेतें हैं। इस तरह से तीन चार बंश के लोग एकत्र होने पर उनका सरदार राजा कहलाने लगता है। इसी तरह से आज कल के बड़े बड़े राज्य बने हैं। इस अबस्था में राजालोग लड़ाई के द्वारा बहुत लाभ देख कर सदा लड़ाई में लगे रहते हैं। इस लिये राज्य सब धीरे धीरे बढ़ते जाते हैं।



दूसरा अध्याय।

शासन-याने हुकूमत।



जैसे हिलमिल एकट्ठा रहना यह आदमियों का स्वभाव है वैसे ही किसी एक प्रकार के धर्म्म कर्म्म का अनुष्ठान करना भी उनका स्वभाव है। यह स्वभाव धीरे धीरे प्रबल होने से इन्ह में कुछ बिद्वान ज्ञानी और बिशुद्ध चित्त के लोग हो जाते हैं। वे और दूसरे लोगों को धर्म्म का उपदेश करते हैं। और उनके शिष्य लोग उनके बस में रहते हैं। जितने दिनों तक राजा लोग धर्म्म पर चलते हैं उतने दिनों तक वे लोग उनकी तरफ रहते हैं। पर जब राजा दुष्ट होता है तो वेई पुरोहित लोग राजा से बिगड़ जाते हैं। इस तरह राजा और पुरोहितों में कहीं२ बड़ी लड़ाई हुई। जिस में पुरोहितों ने बहुत सी जगहों में जय पाई। और जिन सब देशों में पुरोहितों के साथ राजों का प्रगट झगड़ा नहीं होता था वहां राजाओं को पुरोहितों के मत के अनुसार बहुत काम करने पड़ते थे। बहुत प्राचीन समय में केवल पुरोहित ही लोग साधारण प्रजा के सहायक थे अगर-वे लोग नहीं रहते तो दुष्ट राजाओं के उपद्रव से और नित्य की लड़ाई से प्रजा एक दम से बरबाद होजाती। राजाओं के उपद्रव दूर करने का और एक उपाय था। पहले यह कह आये हैं कि एक बंश के आदमी लोग दूसरे दूसरे बंश के लोगों को अपने आधीन कर अपने बंश के सरदार को

सब प्रजाओं का राजा बनाते थे। पर यह बात नहीं समझनी चाहिये कि ये लोग दूसरे बंश के लोगों पर अपनी बड़ाई नहीं दिखलाते थे। वे लोग राजा के बंश से उत्पन्न हुए थे और इन्ही की सहायता से राजा ने राज्य पाया था इस लिये वे लोग राजा से बहुत सी ज़मीदारी लिया करते थे। और ऐसा नियम बनवाते थे कि जिससे राजा इन्हीं लोगों को राज्य के बड़े बड़े अधिकारों को देता था और इन्हीं से राज्य के बिषय की सल्लाह लेता था। ये सब लोग 'कुलीन भूमि-अधिकारी' के नाम से प्रसिद्ध थे। इन लोगों से प्रजाओं की बड़ी भलाई होती थी। राजा इनके डर से स्वेच्छाचारी नहीं होता था। और भूमि-अधिकारी लोग भी राजा के डर से प्रजा लोगों पर उपद्रव नहीं करते थे। इस तरह से राज्यशासन का अधिकार राजा पुरोहित और ज़मीदारों के हाथ में था। प्रजा लोगों को कोई बिशेष शक्ती नहीं रहती थी पर धीरे धीरे ज्यों ज्यों मनुष्यों की बुद्धि बढ़ती जाती है त्यों त्यों शक्ति भी बढ़ती है। और इस कारण बनिज व्यवहार बढ़ता जाता है। और बनिज के द्वारा धन बढ़ता है धीरे धीरे प्रजा लोगों में बहुत से धनी हो जाते हैं। और तब अपने हाथ में राज्य का भार लेने चाहते हैं। प्रजा लोगों मे से जब बहुतेरों की ऐसी इच्छा होती है तो राजा जिमीदार और पुरोहितों की शक्ति घटती है। तब यद्यपि वे लोग नाम के राज के मालिक समझे जाते हैं पर असल में कई एक धनी प्रजा लोगों के हाथ में राज्य का अधिकार

अधिक रहता है। आजकल के यूरप वालों में यही हाल है। उन यूरपबालों की दसा भी ऐसी ही है जो अमेरिका में रहते हैं। पृथ्वी के और किसी हिस्से में ऐसा नहीं हुआ है। यूरप ही में सब प्रजा लोगों का अब तक बिशेष सनमान नहीं हुआ। जब तक सब प्रजा ग्यान और धन में बड़ी न होंगी तब तक ऐसा होना असंभव है। आदमिओं की शासन रीति के बारे जो कुछ कहा गया है उससे यह मालूम होगा कि जैसे आदमी लोग लड़कपन में अपने मा बाप के द्वारा पाले जाते हैं और जब अवस्था अधिक होती है तब स्वाधीन हो जाते हैं। मनुष्य समाज में भी ठीक ऐसा ही हो जाता है जब तक मनुष्यों की असभ्य अवस्था रहती है तब तक कुलपति राजा पुरोहित या ज़िमीदार लोग उन पर अधिकार करते हैं। पर ज्यों ज्यों प्रजा के लोग बिद्या और बुद्धि पाते हैं त्यों त्यों स्वतंत्र होते जाते हैं। सच पूछो तो बिद्या ही बल है समाज में जो लोग बहुत बिद्वान होते हैं उन्ही लोगों के हाथ में राज्य का अधिक भार रहता है। इस नियम के बिरुद्ध कभी नहीं हो सक्ता हैं। जब कहीं ऐसा होता है तो वहां बड़ा उपद्रव उठता है।

शासन की रीति का इतिहास देखने भालने से और एक बहुत आश्चर्य नियम देख पड़ता हैं कि सब समाजों में भिन्न भिन्न मत के लोगों के कैएक दल रहते हैं। राजा और राजकर्मचारियों का एक दल, और पुरोहितों

का दल उन लोगों से भिन्न। और कूलीन भूस्वामी लोग इन दोनों दलों से अलग। और धनी प्रजा इन तीनों दलों से भिन्न। साधारण प्रजा के लोग इन चार दलों में से किसी में सम्पूर्ण रूप से नहीं मिल सकते। इन सब दलों का मत आपस में एक नहीं है। सब अपने अपने हाथ में सदा राज की शक्ति अधिक लेने चाहते हैं। पर इससे समाज का काम अच्छी तरह से चलता है। कोई बहुत प्रबल हो कर दूसरे पर अत्याचार नहीं कर सक्ता है और जो कोई करे तो उसका फल उसको शीघ्र ही मिलता है।

इस तरह बिचारने से मनुष्य समाज को एक रूई की तराजू के समान समझ सकते हैं। जैसे रूई की तराजू की एक एक तरफ़ का बोझ अपनी ओर को झुकाने चाहता है उसी तरह हर समाज के लोग अधिक शक्ति लेने की इच्छा करते हैं। लेकिन जैसे रूई के तराजू की दोनों तरफ़ से खींचाव हो जाने के कारण डंडी तुली रहती है उसी तरह सब दलों के लोग अपनी इच्छा के अनुसार करने के यत्न करने से समाज की अवस्था को एक तरह रखते हैं। राजनीति जानने वाले पण्डित लोगों ने इस नियम को 'सामाजिक समान अवस्था का नियम' कहा है। व्यवस्थापक लोगों को इस नियम के अनुसार व्यवस्था करना उचित है। जो ऐसा न करें तो व्यवस्था में दोष पड़ जाय और उसी दोष के कारण यातो समाज एक दम से कम ज़ोर पड़ जाय या उस दोष को दूर

करने के लिये बलवा मचे। जितने दिन तक वह दोष दूर हो कर फिर साम्यावस्था नहीं हो तब तक समाज का काम अच्छी तरह से नहीं चले।

तीसरा अध्याय।

व्यवस्था यानी ज़ावता।



जो सब मनुष्य जितेन्द्रिय और धर्म्म परायण होते तो चैन से दिन काट सक्ते। कोई किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार न करता। इस लिये किसी प्रकार के शासन का भी कोई काम न पड़ता। जो आदमी विद्या और वय मे बड़ा होता उसी के मत के अनुसार समाज का सब काम चलता। और अपने अपने काम करने मे भी किसी आदमी को किसी प्रकार के शासन के अधीन न रहना पड़ता। लेकिन मनुष्य की प्रकृति ऐसी शुद्ध नही है। सब अच्छी प्रकार से शिक्षा न पाने के कारण आप स्वार्थी हो जाते हैं। लड़कों के स्वभाव मे यह बात खूब देख पड़ती है। उनके मन मे नेक बातो के अनेक चिन्ह जैसे पाये जाते हैं वैसे ही स्वार्थपरता का लक्षण भी देख पड़ता है। इसी से शासन की आवश्यकता देख पड़ती है। मनुष्य समाज की पहली अवस्था मे जब एक एक वंश के लोग एकत्र रहते तब उस परिवार का सरदार शासन करता

है। और सब उसी के वस में रहते हैं। अपने परिवार पर उसका स्वाभाविक स्नेह रहने के कारण शासन की कारवाई पक्षपात रहित होती है। और सब लोग सुख चैन से रहते हैं। लेकिन जब बंश के लोग बढ़ जाते हैं तब कुल तन्त्रता का समय आता है और कुलपति लोग अपनी अपनी इच्छा और बुद्धि के अनुसार हुकूमत करते हैं। उसी समय से एक प्रकार की व्यवस्था प्रचलित होती है। कोई बड़ा ज्ञानी कुलपति जिस विषय में जिस प्रकार के विचार कर जाता है वे विचार लोगों के मन मे रह जाते हैं। उसके बाद वैसे ही विषय आपड़ने से ठीक उसी प्रकार के बिचार करने पड़ते हैं वैसा नहीं करने से निन्दा होती है और लोग असन्तोष प्रकाश करते हैं। इस प्रकार व्यवस्था धीरे धीरे ठहरती जाती है। और कवि लोग उन सभों को छन्द बद्ध करते हैं। लोग जहांतक सकते हैं उन्हे स्मरण कर रखते हैं। इसके बाद जब लिपि* की सृष्टि होती है तब सब के पहले उन सब व्यवस्थाओं का बिवरण *लिखा जाता है। जिस महात्मा के द्वारा जिस किसी देश की व्यवस्था पहिले लिखी जाती है वह उसका व्यवस्थापक कहा जाता है। हमारे देश में व्यवस्थापकों को संहिताकार कहते हैं। बहुत से प्राचीन लोगों की संहिता पाई जाती हैं। देश भेद और उस समय में लोगों की अवस्था भेद के कारण से उन संहिताओं की भी प्रकृति भिन्न भिन्न हैं। लेकिन किसी किसी बिषय मे उन की

एकता है । इन सब बातों को बिवेचना करके देखने से आदमी लोगों की कैसी अवस्था में किस प्रकार की व्यवस्था प्रचलित होती है कुछ जाना जा सकता है । इस लिये उस का कुछ संक्षेप बर्णन किया जाता है ।

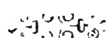
सब व्यवस्था प्राचीन समय से परम्परा उपदेश के तौर पर अनेक पीढ़ियों से चली आती हैं। इसलिये व्यवस्थापक लोग यह बिश्वास सहज ही करा सकते हैं कि वे सब व्यवस्था ईश्वर की बनाई हुई या ईश्वर के अनुग्रह से कैएक महात्माओं की बनाई हुई हैं । उन लोगों ने अपने ग्रंथों मे केवल लौकिक व्यवस्था के नियम नहीं लिखे हैं किन्तु पारलौकिक धर्म्म का उपदेश भी दिया है । इस लिये सब व्यवस्थाओं को धर्मशास्त्र मूलक समझ कर लोग बहुत आदर करते हैं । पर एक प्रकार के नियम सब समय मे नहीं चल सकते हैं । देश की अवस्था भेद के अनुसार व्यवस्था को भी बदलना पड़ता है । जैसे बचपन के कपड़े युवा अवस्था में पहरे नहीं जा सकते हैं वैसे ही मनुष्य समाज बढ़ने पर और लोगों के नाना प्रकार के व्यवसाय अवलम्बन करने पर पहली अवस्था के नियम के अनुसार सब काम नही चल सकते हैं । इस तरह सब व्यवस्था बदला करती हैं । व्यवस्था शास्त्र दो हिस्सों में बांटे गये हैं।एक हिस्से मे धर्म्म के कामों का बिवरण और दूसरे में लौकिक व्यवहारों का बर्णन किया है । सब देशों के धर्म्मशास्त्र इस तरह से आचार अध्याय और व्यवहार अध्याय मे बांटे गये हैं ।

जंगली दशा में काम की चीजों का बहुत अभाव रहता है। और उन सब चीजों को एकट्ठा करने के लिये लोगों को जी पर खेलके काम करना पड़ता है। इस्से सदा अकाल मृत्यु होती है। इस दशा में आदमियों का जीवन कैसा अमूल्य है यह अच्छी तरह से मालुम नही रहता। इस अवस्था में आदमियों का धन हरण करना और प्राणनाश करना ये दोनो एक समान गिने जाते हैं। प्राचीन समय की व्यवस्था से यह पाया जाता है कि दूसरे के धन हरने या जान मारने में में कुछ अधिक प्रभेद नही था। दोनो प्रकार के दोषों के लिये समान दंड था वरन कभी कभी साहस कर्म्म से धन अपहरण का दंड अधिक होता था। किसी किसी देश की आइन मे यह लिखा था कि फलाने पद के आदमी को मारने से इतना रुपया दंड देना पड़ेगा। और ऊंचे पद के आदमी को मारने से उसका दूना या तिगुना देना होगा। लेकिन जब आदमियों की सभ्यावस्था याने शाइस्तिगी होती है तब ऐसी बुरी व्यवस्था प्रचलित नहीं रह सकती। तब धन विषयक अपराध का दंड एक प्रकार का होता है और शरीर विषयक अपराध का दंड दूसरे तौर का होता है। इस तरह से व्यवहार कांड भी दो भागों मे बंटे हैं। एक का नाम दीवानी आइन और दूसरे का नाम फौजदारी आइन है। व्यवहार अध्याय इस तरह से बाटे जाने पर भी इन दोनो प्रकारों के आइन के दंड कुछ दिन तक बराबर थे। एक दम से सब

बदल नहीं गये थे। यह मालुम होता है कि फौजदारी की आइन का दंड बदला लेने के लिये बने थे। किसी अपराध मे हाथ काटना किसी में पैर काटना किसी में आंख निकालनी और किसी में जलाना इत्यादि भयानक दंड प्रचलित थे। दीवानी के दंड भी इस तरह से कठिन होते थे। जो आदमी क़र्ज़ लेकर अदा नहीं कर सकता था तो महाजन उस के शरीर को भी बेच सकता था। और कहीं कहीं ऐसी आइन थी कि अगर कोई अपने लड़के को जान से मारडाले तो उसका कुछ दोष नहीं होता था।

लेकिन धीरे धीरे आइन के ये सब दोष दूर हो जाते हैं। राज कर्म्मचारी जमीदार और पुरोहित लोगों ने पहले केवल अपने को आइन के बिशेष बिशेष दंडों से रहित किया था। उस के बाद प्रजा साधारण के लिये कोई कोई नियम बदल दिये गये। समाज की शासन प्रणाली जितनी अच्छी होती है और आदमियों का भला बुरा ज्ञान जितना प्रबल होता है उतना ही आइन भी सुधर कर अपराधी से वैर लेने की इच्छा दूर करती है। और तब केवल इसी की चेष्टा रहती है जिस से अपराधी का दुष्ट स्वभाव सुधर जाय। आज तक किसी देश मे यह बात अच्छी तरह से नहीं हुई है। पर यूरप के किसी किसी देश में प्राण दंड की बिधि एक दम से उठा देने का सामान हुआ है। इसमे यह अच्छी तरह मालूम होता है कि

अवस्था भेद के कारण से आइन की प्रकृति किस प्रकार बदली है।



चौथा अध्याय।

शिल्प-यानी कारीगरी।

जैसे आदमियों को व्यवस्था और शासन प्रणाली आदि को देखने भालने से यह मालुम होता है कि किस देश के लोगों की कैसी अवस्था हुई है वैसे ही शिल्प विद्याकी उन्नति पर ध्यान देने से आदमी लोग कहां तक सभ्य हुए हैं जाना जा सक्ता है। शिल्प तत्त्ववित पण्डितों ने इस विषय में जो कुछ कहा है उसका संक्षेप वर्णन इस अध्याय में करेंगे। पहले मकान बनाने की कारिगरी की प्रणाली के विषय में कुछ लिखें गे।

प्राय: सब प्रकार के जीव अपनी स्वाभाविक समझ से अपने अपने रहने की जगह बना सक्ते हैं। पक्षियों के खोते रहते हैं। हिंसक पशु अपने मांद मे जा बिश्राम करते हैं। चुंटी आदि छोटे छोटे जीवों का भी रहनेका स्थान रहता है। मनुष्य लोग भी पहले इसी तरह रहने की जगह अवश्य तैयार करते

रहे। देशों के भिन्न भिन्न स्वभाव के अनुसार कहीं तो वृक्षों के ऊपर और कहीं पृथिवी के अन्दर जंगली आदमी लोग रहा करते रहे। सर्द देशों मे मनुष्य लोग पृथिवी में गड़हा खोद कर रहते रहे। और गर्म देशों में वृक्षों के तले या उसके ऊपर रहते रहे। "युरोप" में कहीं कहीं इन सब गड़हों के चिन्ह आज तक पाये जाते हैं उन सबों का मुह-पत्थर से बंद रहता है। बाहर निकलने और भीतर जाने के लिये केवल एक छिद्र मात्र रहता है। गड़हों के अन्दर जली लकड़ी का कोइला देख पड़ा है और पत्थर या हड्डी के मुंहवाले तीर भी कहीं कहीं पाये गये हैं। इससे इस में कुछ सन्देह नहीं है कि वे आदमियों के रहने की जगह थीं। इन सब गड़हों में जो सब अस्त्र पाये गये हैं सो पत्थर के बने हुये हैं। उन में से एक भी धातु का बना नहीं है और ऐसा कोई चिन्ह भी नहीं पाया जाता जिससे मालूम हो कि उस समय के लोग किसी प्रकार धातु का व्यवहार जानते थे। लेकिन आश्चर्य्य की बात यह है कि उस प्रकार के गड़हे एक एक जगहों में बहुत से देख पड़ते हैं इससे यह मालूम होता है कि उस समय में भी आदमी लोगों का एक प्रकार का समाज था। इसलिये उस के पहले ही भाषा बनने का प्रथम आरम्भ हुआ होगा। उसके बाद जो सब रहने की जगह बनी थीं उन की बनावट पहले से कुछ भिन्न थी। उस समय में भी मनुष्य लोग मांदों में रहा करते थे। लेकिन तब गहड़ा खोद कर उस

का मुह एक दम से बंद नहीं करते थे पर उस की चारो तरफ बड़े बड़े पत्थर रख कर उस के ऊपर एक प्रकार की छत तैयार करते थे इस लिये गड़हे में आने जाने की राह भी कुछ पहले से बड़ी रहती थी। उन सब गड़हों के अन्दर जैसे हड्डी और पत्थर के बनाये हुये अस्त्र पाये जाते हैं वैसे ही पीतल के बनाये हुये अस्त्र आदि भी देख पड़ते हैं। इससे यह बात मालूम होती है कि उस समय के लोगों ने किसी किसी धातु का व्यवहार जाना होगा। मालूम होता है कि उसके थोड़े ही दिनों के भीतर आदमियों को हिंसक पशुओं का डर कम हो गया था और लोग मांद के भीतर रहना छोड़ वाहर कुटी आदि वना कर रहने लगे थे। उस समय के मकान और देवालयों के टूटे फूटे टुकड़े जो अब तक रह गये हैं उन्हे देखने से साफ मालूम होता है कि उस समय के लोग लोहे के काम को जान गये थे।

सब जातियों के लोगों को उन दोनों,अवस्थाओं के बाद तीसरी मे पहुचना होता है। लेकिन जिस देश का जल और वायू अच्छी है और भूमि उपजाऊ है वहां थोड़े दिनो में जंगली दशा बीत जाती और सभ्यावस्था आती है। अगर वह देश पृथिवी के ऐसे स्थान में हो जहां विदेशी लोग आसानी से आवागमन कर सकें तो भिन्न भिन्न जातियों के लोगों से परिचय होने के कारण बहुत जल्द अनेक बिषयों का ज्ञान हो सकता हैं वह देश सब के पहिले सुसभ्य होजाता है। "एशिया" के जिस भाग से दूसरे देशों में मनुष्यों के

संचार होने की कथा प्रसिद्ध है उस भाग में ऊपर लिखी हुई बातें पाई जाती हैं। इस से यह निश्चय है कि वहां के लोग सब के पहले सुसभ्य हुए होंगे। "भारतवर्ष" "आसिरिया," "वेविलन," "मिसर," "निउविया" और उस के निकट के और सब देशों में जो प्राचीन इमारतों के चिन्ह देख पड़ते हैं वे बहुत आश्चर्य और मनोहर हैं। उन में से किसी में पत्थर या पीतल के बनाये हुए अस्त्रों के चिन्ह देख पड़ते हैं। इन से भी उन चीज़ों के बनाने वालों की प्रकृति, बिद्या, बुद्धि, धर्म्मज्ञान अच्छी तरह से जाने जा सक्ते हैं। पर इन का विशेष बिवरण लिखने से बहुत बढ़ जायगा इस लिये केवल उनका सामान्य लक्षण और कैएक मकान बनाने की प्रणाली लिखी जाती हैं।



मिसर लोगों की इमारत की रीति।

ऊपर लिखी हुई सब जातियों के मकान बनाने की रीति एकही प्रकार की वर्णन की गई है। और आज कल "आमेरिका" के मध्य भाग में जो सब टूटे हुए कोठों के चिन्ह देख पड़ते हैं वे सब भी इसी किस्म के मकान समझे जाते हैं। इस में कुछ भी सन्देह नहीं कि गृहनिर्मान का यह प्रकार सब से प्राचीन है। "मिसर"

देश में इसके बहुत चिन्ह पाये जाते हैं। इसलिये इस का नाम "मिसरीय" कहा जाता है। "यूरोप" के "सिसिली" और "ग्रीस" में जो बड़े बड़े गिरे पड़े खंड़हर हैं और जिन को कोई "साइक्लोपिक" अर्थात् असुरों का बनाया कहते हैं, वे सब गृह रचना जाननेवाले पण्डितों के मत से इस प्रकार की बनावट के समझे जा सकते हैं।

मिसर वालों के महल में कै एक विशेष बातें देख पड़ती हैं। (१) पहले इस में दीवार नीचे की तरफ़ बहुत मोटी और ऊपर के भाग में कुछ पतली रहती हैं (२) दूसरे छत सब बराबर समपृष्ठ रहती हैं, और इतने बड़े बड़े पत्थरों से पटी रहती हैं कि उनके नीचे कड़ियों की ज़रूरत नहीं रहती। पत्थर एक दीवार से दूसरी दीवार तक या एक खम्भे से दूसरे खम्भे तक रहते हैं। (३) तीसरे खम्भे बहुत मोटे छोटे और बहुत हिस्सों में बटे और चित्र खुदे हुये रहते हैं। (४) चौथे नकासी या खोदाई का शिल्प अर्थात् कारीगरी भी घर की किसी किसी जगहों में की रहती है। (५) पांचवे कहीं कहीं पहाड़ खोद कर उस में इस तरह के मकान बने रहते हैं।

पण्डितों ने कहा है कि जो लोग पहले पहाड़ के खोह में रहते थे और उसके बाद मिट्टी के मकान बनाने लगे, वे ही लोग शिल्प बिद्या में निपुण हो कर ऐसा मकान बनाया करते हैं। पण्डित लोग यह भी कहते हैं कि मिट्टी की दीवार और खम्भे का नमूना उतारने से मकान इसी तरह का

बन जाता है। और पहाड़ के खोह में रहने के समय प्रयोजन के अनुसार खोह को प्रशस्त बनाने की जब इच्छा होती है, तब उन लोगों को मूर्त्ति आदि के लिये स्थान बनाने की इच्छा भी होती है तो वे लोग पहाड़ ही को खोद कर देवालय आदि बनाते हैं इस मे कुछ अचरज नहीं।



यूनानी मकान का प्रकार।

यूनानी लोगों ने मिसर वालों से सब बातों की शिक्षा पाई थी। उन लोगों ने मिसर वालों से मकान बनाने की विद्या को भी सीखा था, लेकिन उन लोगों ने अपनी बड़ी बुद्धि से थोड़े ही दिनों में इस विद्या में ऐसी उन्नति की कि मिसर वालों ने वैसी कभी नहीं की थी, पहले वे लोग दीवारों को समपृष्ठ बनाते थे, और खम्भों पर दूसरे किसी प्रकार की चित्रकारी के बदले केवल सरल रेखा भर खींचते थे। वे पहले ही से खम्भों को कुछ बड़ा बनाने लगे थे, लेकिन पहले चौड़ाई के चौगुने से अधिक लम्बा नहीं बनाते थे। इस प्रकार की गृह रचना को "डोरीय" कहते हैं। इस के कुछ दिन बाद यूनानी लोग खम्भों की लम्बाई, चौड़ाई से ८ या ९ गुनी बनाते थे, और खम्भों के नीचे चौकोर

पीढ़ी और ऊपर मोड़दार काम बनाते थे। इस में संदेह नहीं कि ऐसा करने से महल बहुत सुन्दर देख पड़ता था इस को "आइयोनीय" प्रकार कहते हैं।

मिसर वालों के तोसरे प्रकार के मकानों के खम्भे अपनी चौड़ाई से १०गुने लम्बे होते थे और उनकी कुरसियों की बनावट बिचित्र होती थी। और उनके ऊपर का हिस्सा पत्ते वाले वृक्ष की फुनगी सा होता था। इस प्रकार को "कोरिन्थीय" कहते हैं।

यूनान देश बहुत रमणीय है। वहां तूफ़ान और वृष्टि का उपद्रव नहीं होता, वहां साल भर बसन्त-ऋतु रहती है, इस कारण मकान के दरवाज़े बहुत बड़े होते थे। नाच घर आदि साधारण समागम घरों में छत नहीं रहती थी, और देवालयों की चारो तरफ़ सुन्दर खम्भे देख पड़ते थे। इस लिये आश्चर्य्य नहीं कि उनके मकान देखने मेंबहुत अच्छे लगते होंगे। लेकिन तअज्जुब यह है कि यूनानियों के मन का भाव जब जैसा होता था उस समय में उनके मकान भी ठीक वैसे ही बनाये जाते थे अर्थात जब यूनानियों की बढ़ती थी तब उनके मन में दृढ़ता, उदारता, और सरलता, गुण अधिक थे, उस समय में उनके मकान भी बड़े मज़बूत "डोरीय" तौर के बनते थे। जब उन लोगों ने प्रबल फारसी लोगों को सन्मुख की लड़ाई में जीत कर अपने बल बिक्रम को अच्छी तरह से जान लिया और काव्य रसके रसिक्ष

हुये तब सुन्दर "आइयोनीय" तौर के मकान बनाने लगे। और जब वे लोग चारो तरफ़ जय करके बहुत धनी और ऐश्वर्य्य हुये तब नाना अलंकार वाले "कोरिंथीय" महल के प्रकार का आदर करने लगे। यूनानवालों ने इस बिद्या में जितनी उन्नति की थी पृथिवी में आज तक किसी जाति के लोगों ने उनसे बढ़ कर नहीं की है, लेकिन देश भेद के कारण से गृह के प्रकार भी बहुत तौर के हैं। उन में से कई प्रधान प्रकारों का वर्णन संक्षेप से किया जाता है।

चीन वालों के मकान का प्रकार।

यह पहले ही कहा गया है कि चीन देश के लोग मोगल जाति के हैं। ये लोग चीन देश में बसने के पहले आज कल के "तातार" लोगों की तरह मवेशी चराते हर जगह फिरा करते थे। उस समय में वे लोग कपड़े या चमड़े के तम्बुओं में रहते थे। इस लिये जब वे चीन देश में स्थायी हो कर रहने लगे और मवेशी पालना छोड़ कर खेती करने लगे तो लकड़ियों का ठीक तम्बू सा मकान बनाने लगे। उनके मकानों की सूरत आज तक वैसी ही है। सफ़र करनेवाले लोग कहते हैं कि

दूर से चीन वालों के नगरों को देखने से यह मालूम होता है कि वे एक तम्बू एकट्ठे खड़े हैं। जैसे कपड़े की चांदनी तानने से बीच में नीची और चारो ओर ऊंची देख पड़ती है चीनी लोगों के मकानों की छत भी ठीक वैसी ही देख पड़ती है। मोगल जाति के लोगों मे नकल उतारने की बान क्या ही प्रबल है देखो हज़ारों बरस हुए कि चीन वाले सभ्य हुए तोभी अपने जंगली पहले लोगों का तम्बू न भूल सके, आज तक काठ का तम्बू बना कर उस में वे रहा करते हैं।

गाथिक लोगों के मकानों का प्रकार।

अनुकरण यानी नकल उतारना ककेशीय लोगों में भी देख पड़ताहै। अनुकरण करना आदमियों का स्वाभाविक धर्म्म है पर बिशेष यह है कि ककेशीय लोग धीरे धीरे सब बातों में जिस तरह से उन्नति करते हैं मोगल लोग उस तरह नहीं कर सकते। "यूरोप" के "टिउटन" जाति के लोग आज कल सुसभ्य और क्रस्तान हैं। पहले वे लोग जंगली थे और पत्तों के मंडयों मेंबैठ जड़ पदार्थों की उपासना करते थे। इस लिये कोई कोई कहते हैं कि जब उन लोगों ने क्रस्तान हो कर गिरजा बनाना आरम्भ किया तो इस में आश्चर्य्य

नहीं कि उनके गिरजे भी बन की चीजों के समान बनते रहे हों। बन में वृक्ष की शाखा आपस में मिल कर जैसी मालूम होती हैं उनके गिरजा घर भी वैसे ही देख पड़ते थे "गाथक" गिर्जों का मेहराब ठीक गोल नहीं होता। मेहराब के मध्य स्थान में एक एक कोन रहता है, और बाहर की तरफ़ दीवार सब, वृक्ष की तरह धीरे धीरे पतली होकर सूई की नोकसी मालूम होती हैं। इस तरह से गिर्जों के दरवाज़ों में जो शीशे रहते हैं उनपर रंग बरंग की चित्रकारी होने से अन्दर रोशनी अच्छी तरह से नहीं जा सकती। बनके अन्दर भी रोशनी अच्छी तरह नहीं जाती है, इससे यह भी उसी का अनुकरण मालूम होता है।

मुसलमानों के मकानों का प्रकार।

जैसे "यूरोप" में प्राचीन यूनान वाले सबसे चतुर होते थे। "एशिया" में अरबवाले भी वैसे ही होते थे। ये लोग पहले तम्बू में रहा करते थे, इस के बाद महम्मद के मुसलमानी धर्म्म का ग्रहण कर एक बारगी बहुत प्रबल और धर्म्म परायण हो गये। ये लोग नाना देशों को जीत कर बहुत धनी हुए। तो इस के बाद ये लोग

जो मकान बनाते थे वे चीनवालों की तरह तम्बू के ऐसे नहीं होते थे, लेकिन यूनान वालों के मकानों से बहुत मिलते थे। पर फरक़ यह था कि घोड़े के सूमकी तरह वे मेहराब बनाते थे, और जैसे तम्बू का भितरी हिस्सा फूल बूटों से शोभायमान होता था वैसे ही दीवार में भी हर तरह की चित्रकारी करते थे। तम्बू का जोड़ यानी विष्कम्भ जैसा सूक्ष्म होता है वैसे ही उनके मकानों के खम्भे भी अधिक पतले होते थे।

इस के सिवाय "रूमीय" "टसकान" "बाइजान सीय" आदि कै एक मकानों के प्रकार हैं। लेकिन वे सब प्राय: यूनानी प्रकार के अनुकरण हैं। इस लिये उन के विशेष वर्णन का कुछ प्रयोजन नहीं है। जो कहा गया है उस से यह मालूम होगा कि आदमियों के मकान बनाने की शिल्प विद्या किस प्रकार से शुरू हुई और उस के बाद किस तरह से उस की उन्नति होती गई। और सब प्रकार के शिल्प मनुष्यों के बनाये हुए हैं। इस में कुछ सन्देह नहीं कि आदमियों का जब जैसा ज्ञान और स्वभाव होता है उन के बनाये हुये शिल्प में भी तब वैसी ही उन्नति होती है।

पाचवां अध्याय।



शिल्प और विद्या।

सब देशों में पहले पहल कविता की पैदाइश होती है। पूराने समय में केवल कविलोग धर्म्म शास्त्र, दर्शन शास्त्र, भूगोल, और इतिहास जानने वाले होते थे। और वे लोग साधारण लोगों को उपदेश किया करते थे। उन के बनाए हुए ग्रन्थों का लोग बड़ा आदर करते थे। उन से धर्म्म शास्त्र की विधि, लोक के व्यवहार की रीतें, और इतिहास के वहुत से प्रमाण जाने जाते थे। और वे सब कविता केवल आज कल के छन्द की तरह नहीं पढ़ी जाती थीं। पहले कविलोग या उन के शिष्य सब कविताओं को सुर और लय के साथ पढ़ा करते थे। इस से कविता और संगीत विद्या की चर्चा एक साथ फ़ैली। ऐसी कोई असभ्य जाति न थी कि जिस में कुछ न कुछ संगीत और काव्य की चर्चा नहीं देख पड़ती थी। इस लिये इन दोनों को भाषा के सहोदर भाई

कह सकते हैं। काव्य और संगीत की कुछ तरक्की होने पर ज़रूर चित्रकारी की विद्या प्रगट होती है। और चित्रकारी विद्या के साथ नकाशी के शिल्प यानी हुनर की उन्नति होती है।

जब तक जाति धर्म्म भयानक रहता है तब तक नकाशी के काम अच्छी तरह से जारी नहीं होते, लेकिन जब कवि लोग रूपक अलंकार के द्वारा अपने मन के भावों के रूप कल्पना करते हैं, तब कारीगर लोग उन सब कल्पित रूपों की सूरत आदि देखाने का यत्न करते हैं। इस कारण से शिल्प के कामों का मान बढ़ता है। पदार्थों का ठीको ठीक चित्र उतार देने ही से शिल्प की बड़ाई नहीं समझी जाती है लेकिन तसबीर या पत्थर की मूर्त्ति ऐसी बने कि मन का भाव ज़ाहिर करे तो शिल्प का काम पूरा होता है। पुरानी जातियों में ग्रीक लोग इस विषय में सब से बढ़ चढ़ गये थे। वे लोग जैसे मकान बनाने की कारीगरी में भाव प्रकाश कर सकते थे, चित्र और नकाशी के कामों में भी वैसा ही भाव ज़ाहिर कर देते थे। इन सब बातों में ग्रीक लोगों से आज तक किसी देश के लोग नहीं बढ़ सके हैं। आजकल की सुसभ्य जातियों में शिल्पविद्या की बड़ी चाह देख पड़ती है। उन लोगों में जो शिल्प नहीं जानते उन को मूढ़ समझते हैं। उन लोगों ने शिल्प के अनेक भेद ठहराये हैं उन सभों का यहां वर्णन नहीं कर सकते, केवल इतनी बात कह सकते हैं कि काव्य की चर्चा कम होने पर मनो-

विश्राम व्याकरण शास्त्र की चर्चा अधिक होती है,उस समय अलंकार शास्त्र आदि के पण्डित लोग प्रगट होते हैं। उस के बाद इति हास लिखने का समय आता है, उस समय में वह पदार्थतत्त्व बिद्या भी जिस का मूल प्रत्यक्ष प्रमाण है प्रारम्भ होती है । पदार्थ तत्त्व की चर्चा होने से नाना प्रकार के विषयों के कामों का ज्ञान होता है, और सब लोगों में विद्या की चर्चा फैलती है ।

छठा अध्याय ।

युद्ध ।

पुराने समय मे आदमी लोग लड़ाई में लगे रहते थे । जितने ही पुराने समय का इतिहास देखा जाता है उतनी ही लोगों की चाह लड़ाई में अधिक पाई जाती है। जंगली दशा में जीविका पाना कठिन रहता था, इसलिये जब कोई काम की चीज़ किसी दूसरे आदमी के पास रहती थी तो जंगली लोग उस आदमी को मार कर उस चीज़ को लेने का यत्न करते थे, उस समय में राज की रीति अच्छी न थी और देश भी बड़ा न था, इस लिये हर एक वंश और समाज में सदा इस तरह की लड़ाई होने का मौका पड़ता था। जो एक बार किसी कारण से दो बंशो में लड़ाई हो जाती थी तो कै एक पीढ़ी तक मन मोटाव आपस में रहता था। जब तक एक

तरफ के लोग जड़मूलसे बर्बाद न हो जाते थे तब तक दूसरी तरफ वाले चुप नहीं बैठते थे। जब राज्य का प्रबंध अच्छा नहीं रहता है तब शत्रुओं से बदला लेना एक बड़ा धर्म गिना जाता है। मालूम होता है कि आदमी लोग पहले पत्थरों से पशुओं का अहेर और आपस में लड़ाई करते थे। उस समय में दूसरे हथियार काम में नहीं लाये जाते थे। इस के बाद धीरे धीरे लाठी, पत्थर या काठ की कटारी और तीर कमान आदि काम में लाने लगे थे। उसी समय में जानवरों के काड़े चमड़ों से लोग अपने बदन को ढाकने लगे थे। पर मनुष्य समाज की ज्यों ज्यों उन्नति होती जाती है त्यों त्यों लड़ाई के हथियार भी अच्छे बनते जाते हैं। क्योंकि तब ज़मीदार लोग धनी होकर बखतर वगैरह शरीर का बचाव करने वाली चीज़ें बनवा सक्ते हैं। और हाथी घोड़े भी रखसकते हैं, लेकिन जब सब लोग दुखिये और गरीब रहते हैं तब इतना धन नहीं खरच कर सकते हैं। लड़ाई को उस समय मे लोग व्यवसाय समझते थे। ज़मीदार लोग और कोई काम नहीं करते थे, पर वे लड़कपन से वेई बातें सीखते थे कि जिनसे शरीर का बल बढ़े हथियार के काम में निपुण हों, और हाथी घोड़े की गाड़ी हांक सकें। इस लिये यह आश्चर्य की बात नहीं कि ये लोग उन सेनाओं को लड़ाई में हरा देते थे जो अशिक्षित और दुर्बल होती थीं और जिन के पास हथियार तक न रहता था। यह मालूम होता

है कि इसी लिये सब देशों की प्राचीन कविताओं में ऐसे युद्धों का बयान कि एक वीर ने हजारों को मार भगाया देखा जाता है। अगर यह मान लिया जाय कि सब कविताओं में बहुत सी झूठी बातें भी हैं तो भी यह नहीं मान सकते कि वह बयान बिलकुल ही झूठ है। उस समय एक रथी बहुत से पैदलों को मार सकता था यह बात सोर हो आना झूठ नहीं है। जो सब देश बड़े और चौरस खेत के ऐसे थे उन देशों में रथ और हाथियों का बहुत अधिक व्यवहार था। जिन सब देशों की ज़मीन ऊंची नीची थी वहां के लोग घोड़सवारी में निपुण थे। "एशिया" खण्ड के सब प्राचीन देशों में युद्ध की रीत ऐसी ही थी। सेनापति लड़ाई के समय में रथी घोड़सवार और हाथी के सवारों पर विशेष दृष्टि रखता था, पैदलों का अधिक खयाल नहीं करता था। ग्रीक वालों की भी लड़ाई की रीति पहले ऐसी ही थी यह बात होमर के महाकाव्य के देखने से मालूम होती है। लेकिन 'ग्रीक' वालों ने बहुत जल्द प्रजा तन्त्र शासन प्रणाली यानी प्रजा राज की रीति जारी की, उस से ज़मीदार लोगों की बड़ाई घट गई। सब प्रजा में के लोग जमीदार हो सकने लगे इस लिये अब वे दरिद्र न रहे और लड़ाई की जरूरी चीजें और हथियार खरीद कर सके। ग्रीस बहुत ही पहाड़ी देश है इस लिये वह सवारों के लिये बल देखलाने की अच्छी जगह नहीं है। इस कारण से वहां घोड़

सवार लोगों का बहुत मान नहीं होता था। केवल पैदल लोगों का बहुत आदर हुआ करता था। रोम भी स्वतन्त्र प्रजादेश था वहां पैदल लोगों का बहुत सन्मान होता था। 'ग्रीक' और 'रोम' के पैदल सिपाहियों के साथ उस समय में किसी जाति के लोग लड़ नहीं सकते थे। जो कोई उन दोनों जातियों के लोगों के साथ लड़ाई करता था वह जैसे रूई आग में जल जाती है वैसे ही जल्द नाश हो जाता था। यह बात देखी जाती है कि यूरोप की नई जातियों में भी लड़ाई की रीत ठीक ऐसी ही चली आती है। जब उन लोगों में ज़मींदारी की बढ़ती थी तब पैदलों को कोई नहीं पूछता था, लेकिन उनमें राज की रीत ज्यों ज्यों अच्छी होती चली त्यों त्यों पैदलों का आदर होने से लड़ाई की रीति बदल चली। पैदलों की ख़ातिर होने से लड़ाई की एक और भी रीत चली कि किसी किसी राज्य में लोग अमन चैन के समय में अपना अपना काम किया करते ते और लड़ाई लगने पर हथियार लेकर लड़ने जाते हैं उस समय में ज़मींदार लोग अपनी अपनी ज़मींदारी से लोगो को लेजा कर राजा की सहायता करते हैं। लेकिन जब राज्य बड़ा होजाता है और ज़मिंदार लोगों का सन्मान बहुत नहीं रहता तो ऐसी बात नहीं हो सक्ती। तब राज्य की रचा करने के लिये कुछ लोगों को तनखाह देकर रखना पड़ता है। ये लोग जब तक जीते रहते हैं राजा

से तलब पाकर केवल लड़ाई के काम करते हैं। आज कल यूरोप की सब जगहों में ऐसा ही है। अब लड़ाई एक खास बिद्या गिनी जाती है गणित, पदार्थ बिद्या और रसायन आदि सब शास्त्र, शस्त्र बिद्या के काम में आते हैं। अब किसी असभ्य जाती का इतनी सामर्थ नहीं कि आज काल के यूरोप वालों को हरा सके। लेकिन जैसे बिद्या के बढ़ने से लड़ाई के ढंग बहुत से निकले हैं वैसे शान्ति रसकी बढ़न्ती होने से लड़ाई के बड़े बड़े दोष भी दूर हो गये हैं। आज कल सभ्य यूरोप वालों में लड़के बुढ़े या औरतों पर कोई लड़ाई की आफत नहीं पड़ने पाती शत्रु अगर शरण ले तो उसकी भी जान नहीं मारी जाती है। लोग पकड़े जाकर दास नहीं बनाये जाते हैं। यूरोप का कोई राजा प्रबल होते ही दिग्विजय करने नहीं निकलता है। और किसी किसी बड़े लोगों के मन में यह भी हैं कि अगर किसी तरह लड़ाई का रिवाज़ उठ जाय तो सब से भला है।

तृतीय प्रकरण।

प्रथम अध्याय।

मिसर वालों का हाल।

(मिसर देश और वहां के रहने वालों का वर्णन)

मिसर देश अफ़्रिक़ा के उत्तर पूरब के कोन पर है। इस देश का इतिहास बहुत ही प्रसिद्ध है। दुनियां में पुरानी जातियों के जितने लोग सिच्छा पाकर विद्या, धर्म्म, शिल्प यानी कारीगरी में बड़े नामी हुए उन में मिसर वाले सभ्य होकर सब बातों में सब से चढ़े बढ़े रहे। पुराने मिसरी लोगों की रीत व्यवहार, राज काज और धर्म्म हम लोगों की रीत व्यवहार आदि के साथ ऐसे मिले देख पड़ते हैं कि साफ़ मालूम होता है कि किसी समय में उनसे हम लोगों का हेल मेल था।

मिसर देश की प्रकृति एक अजीब ढंग की है। यहां पानी बहुत कम बरसता है और कभी कभी पश्चिम और पूरब तरफ़ से जो हवा बहती है उसके साथ बहुत सी बालू उड़ आकर देश को भर देती है। केवल एक नील नदी के कारण यह देश बसा है। उस नदी में हरसाल बाढ़ आती है। और उसी बाढ़ के कारण सारे देश में कीचड़ पानी बहुत होजाता है इस कारण वह देश बहुत उप-

जाऊ है। लेकिन नील नदी आप अपना पानी सारे देश में नहीं फैलाती इसका पानी कहीं पांच कोस से अधिक नहीं बढ़ता। . पर पुराने मिसर वाले इतने बांध और आहर बना गये हैं कि आज तक उन्हीं सबों के सबब से मिसर देश भर में नील का पानी जाता और बहुत अनाज पैदा होता है। आज कल सच पूछो तो मिसर वालों को कुछ भी नहीं करना पड़ता है। खेत बो कर मामूली समय में अनाज काट लेते हैं। और चैन से दिन काटते हैं, परन्तु जब कि वे बांध और आहर नहीं थे तब उन लोगों को इतनी मिहनत करनी पड़ती थी कि जिसका बर्णन नहीं किया जा सक्ता। इस तरह श्रम और यत्न करने के कारण पुराने मिसर वाले गुणवान, धनवान, और नामी हुए थे। वे लोग अपनी जीविका के लिये पोखरे खोदते थे, बांध बांधते थे, और बड़े बड़े अहरे तैयार करते थे। और जब य सब काम बन चुके तब वे अपनी मिहनत करने की रस के कारन बड़े बड़े प्रसिद्ध मकान और पिरामिड तैयार करने लगे ! जो लोग मिहनती होते हैं वे ज़रूरी काम बिना तमाम किये नहीं बैठ सकते। इन सब बनावटों की निशानियां मिसर की किसी किसी जगहों में अब तक देख पड़ती हैं। थीब्स, मिम्फ़िस, कारनाक, और लक्सर आदि कई एक जगहों में जो सब रचना और चित्र हैं उन कीं संदरता का बयान नही हो सकता है। वहांजो सब

खंभे और दीवार हैं, उन में हर तरह के चित्र बने हुए हैं, वे सब चित्र व्यर्थ नहीं हैं। पहले पुराने मिसरियों की वर्णमाला अक्षरों की न थी। उनकी वर्णमाला चित्रमय थी यानी पशु, पक्षी ग्रह और मनुष्यों के अनेक अंगो के चित्र के द्वारा मिसरी लोग लिखने पढ़ने का काम चलाते थे। आज तक करीब नौसौ तरह के ये चित्रमय अक्षर देख पड़े हैं।

यह किसी को विश्वास न था कि इन चित्रों का अर्थ कोई लगा सकेगा लेकिन फ्रांस के राजा बड़े वीर नेपोलियनबूनापार्ट के समय रासेटा नामी क़िले में जो कि नील नदी पर है, एक पत्थर निकला था उस पत्थर में एकही बात तीन तरह के हर्फ़ों में लिखी हुई थी। सब के ऊपर चित्रमय अक्षरों में और बीच में मिसरी लोगों के साधारण अक्षरों में और सब के नीचे यूनानी अक्षरों में लिखी थी। उस पत्थर को देखकर सम्पोलियन नामी एक फ्रांस के पंडित ने मिसर के चित्रमय अक्षरों के बांचने का उपाय निकाला।

पुराने मिसर वालों की किताबें बहुत नहीं मिलती और जो दो एक पिरामिड के अन्दर और किसी बड़े मकानों में पाई भी गई हैं उनके अर्थ आज तक अच्छी तरह समझ में नहीं आसके। पर उन मकानों की दीवारों पर बहुत तरह के चित्र देखे गये हैं जिनसे मिसरी

लोगों के आचार व्यवहार के सब हाल जाने जा सके हैं। उन चित्रों में यह बना है कि मिसर वाले कहीं तो हल जोतते हैं, कहीं बीज बो ते हैं, कहीं धान काटते हैं, कहीं सुनक्का या दाख की खेती करते हैं, किसी जगह भेड़ियां चराते हैं, और कहीं कुत्ते और पोसुवे सिंह के साथ तीर, कमान और सिंघा लेकर शिकार खेलते हैं। उन नक्शों को देखने से यह मालूम होता है कि मिसरवाले मछली और चिड़ियों के पकड़ने से बहुत खुश होते थे। शहर वालों के जो चित्र बने हैं उनमें यह देखा जाता है कि मिसरी लोग कहीं तो काठ के तख्तों पर खोदाई करते हैं, कहीं कपड़ा बिन रहे हैं, कहीं चित्र बनाने में मश्गूल हैं, कहीं सोने चान्दी और हीरों के भूषण बना रहे हैं। मिसर वालों के मुर्दों के बदन पर जो कपड़े देख पड़ते हैं उनसे साफ़ मालूम पड़ता है कि मिसरी लोग कपड़ा बनाने में बहुत निपुण थे। वे लोग शीशा भी तैयार कर सकते थे और एक पेड़ जो कि जल की सरहरी के किस्म का होता है उसी के पत्तों से कागज़ बना सके थे।

इन सब चित्रों से मिसरी लोगों की गृहस्थी के असबाव खाने पीने के व्यवहार आदि बहुत बातें जानी जाती हैं। उनसे यह बात भी मालूम होती है कि मिसरी लोग बहुत गम्भीर स्वभाव होते थे और वे लोग धर्मात्मा तो थे, परन्तु संसार का सुख भोग भी किया करते थे। वे लोग दूसरे प्राचीन लोगों की तरह औरतों को पर्दे में नहीं रखते थे। और

जब कुश्ती गाना, बजाना, जानवरों की लड़ाई होती थी तब मर्द औरत मिलकर तमाशा देखते और खाते पीते थे। मिसरी लोगों की चित्रकारी के ज़रिये से बहुत सी बातें मालूम हुई हैं। उन लोगों ने इस फ़न में जो बड़ी तरक्की की थी वह भी इससे साफ़ जाहिर होती है। उनकी चित्र,खोदाई की विद्या आदि कितनी भी रही हो पर वे युनानियों की बराबरी कभी नहीं कर सक्ते हैं। पहिले तो यह बात देखी जाती है कि मिसर वाले अनूठी चित्रकारी करने में बहुत दिल लगाते थे जैसा कि सिंह का पैर और आदमी का मुंह मिलाकर प्रसिद्ध "स्फिंस" नाम मूरत बनाते थे ऐसी ही और बहुत मूरत भी वे बनाते थे। दूसरी बात यह है कि जहां मनुष्य की सूरत बनी हुई है उसको देखने से यह मालूम होता है कि वे लोग उस सूरत में अच्छा जैसा चाहिये नहीं बना सक्ते थे। शरीर संस्थान विद्या को पढ़ कर आज कल के चितेरे लोगों की नाईं पुराने यूनानी चितेरे लोग भी जैसी कि हड्डी और मांस को जिस जिस जगह बदन में ऊंचाई निचाई है वैसी मूर्ति में भी बना सक्ते थे पर वैसी पुराने मिसर वाले नहीं बना सक्ते थे। यह मालूम होता है कि मिसर वालों ने प्रकृति के अनुसार चित्रकारी नहीं सीखी थी। लेकिन यह साफ़ मालूम होता है कि वे लोग कितने एक ठहराये हुए क़ायदों के मुताबिक़ कारीगरी के काम किया करते थे और मिसरी लोगों की खोदी हुई मूर्तियों को देखने से भी ऐसाही मालूम होता है। मुंह का डौल

जैसा सुन्दर चाहिये वैसाही होता है लेकिन उससे मनके भाव प्रकाश नहीं होते।

मिसर वालों के मकान बनाने में भी ऐसे ही दोष पाये जाते हैं। उन लोगों के मकान बहुत बड़े मज़बूत और अच्छे होते थे, लेकिन खूबसूरत नहीं मालूम पड़ते थे। इसमें कुछ संदेह नहीं कि मिसर वाले नई नई बातें बहुत निकालाकरते थे पर जैसी चाहिये वैसी निपुणता के साथ पूरी नहीं कर सक्ते थे।

इस बात में एक और प्रमान यह है कि मिसर वालों ही ने सब के पहिले अक्षर लिखने की रीत निकाली थी। लेकिन उन के अक्षर चित्रमय थे कि जिनसे पढ़ना लिखना बहुत कठिन मालूम होता था। उन्हीं से सीख कर फ़िनिशिया वालों ने वर्णमाला की रचना की और मिसरियों ने बाद उसके उन लोगों से वह वर्णमाला सीखी। यहाँ यह भी कहना चाहिये कि मिसर में दो तरह के अक्षर जारी थे, एक तो चित्रमय अक्षर जो केवल पुरोहित लोग पढ़ते थे दूसरा वह कि जो साधारण लोग जानते थे और वह फ़िनिशिया लोगों के अक्षर का उतार था। मिसरी लोगों की किताबें चित्रमय अक्षर में लिखी जाती थीं।

दूसरा अध्याय



(मिसरियों के धर्म का हाल।)

पहिले लिख आये हैं कि मिसरी लोग बड़े धीर और धर्मात्मा होते थे। यह मालूम होता है कि पहले मिसर वाले अद्वैतबादी थे अर्थात् जगत को ईश्वर मय समझते थे, इसके बाद अद्वैत मत धीरे धीरे गुम होगया और सब साधारण लोग मूर्ति पूजा करने लगे। इसका कारण यह हुआ कि मिसर के पुरोहितों ने ईश्वर की शक्ति के अनेक रूप कल्पना किये थे और सभों के नाम भी जुदे जुदे ठहराये थे तो इस में कुछ आश्चर्य नहीं कि मिसर के साधारण लोग उन सब शक्तियों और नामों के मतलब नहीं समझ कर उन मूर्तियों ही को पूजने लगे हों। इसी तरह से मिसर में मूर्ति पूजा फैल गई। मिसरी लोगों के मत से ईश्वर ने अपने को दो अंशों में बांट कर जगत की रचना की थी। उन दो शक्तिवाले अंशों में से एक का नाम

'नेफ़' था वह नित्य और निर्विकार और केवल एक ही था। दूसरे अंश का नाम "पथा" था यह जगत की सृष्टि करने वाला था। और "आमन" नाम एक दूसरी शक्ति एक अलग देवता बन कर जगत का पालन करती थी। "असेरिस" और "आईसिस" नाम मिसरी लोगों के और भी दो प्रधान देवता थे। हम सबों के देश में जिस तरह "शिव" और देवी को पूजते हैं उसी तरह वे लोग भी इन दोनों देवताओं को पूजते थे। दरहक़ीक़त में मिसरी लोग प्रकृति के उत्पन्न करने वाली शक्ति विशेष को 'आसेरिस' और आईसिस नाम से पूजते थे। हमारे यहां जैसे असुर और देवताओं की लड़ाई का हाल लिखा है वैसे ही मिसरियों के यहां भी लिखा है कि टाईफ़न नामी असुर के साथ आसेरिस देवता की लड़ाई हुई थी। जानवरों में गाय, कुत्ता, बिल्ली और आईसिस नामी सारस पक्षी विशेष और बाज़ और कई एक तरह की मछलियां मिसर में पूजी जाती थीं। और दूसरे जानवरों की पूजा वहां सब देश भर में नहीं होती थी। जिन जानवरों को एक प्रदेश के लोग पूजते थे उन्हीं को उसके पास के लोग अपवित्र समझते थे। कहीं कहीं मिसरी लोग सिवाय उन जानवरों के कि जिन में ख़ास कोई गुण पाये जाते थे किसी दूसरे जानवर को नहीं पूजते थे। मेम्फिस नगर में एपिस देवता की पूजा भी ऐसे ही जारी हुई थी।

एपिस * उस गौ को कहते हैं कि जिसका रंग काला हो और माथे में तिकोना सुफ़ेद टीका हो और पीठ पर बाज़ की सूरत का चिन्ह हो। एपिस के पूजने वाले भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों काल के हाल जानते थे।

मिसरी लोग दूसरा जन्म होना मानते थे और स्वर्ग नर्क भी मानते थे। उनके मत में आदमी के मरने के बाद उसका जीव आत्मा जमीन पानी और आकास में रहने वाले सब प्रानियों को देह धारण करता था। और अन्त में तीन हज़ार वर्ष के बाद फिर मनुष्य का जन्म पाता था। मिसरी लोगों के यम लोक का नाम "अमिन्थी" था और असिरिस उस जगह का प्रधान था। वह पुण्य और पाप का विचार कर के आदमियों को उनके कर्मों का फल देता था। मिसरी लोग इसी दुनियां में परलोक में के विचार का नकल करते थे, उन सबों में यह रिवाज जारी थी कि किसी आदमी के मरने के बाद उसके जन्म भरके भले बुरे कामों को विचार ते थे और जो उसके काम भले ठहराते थे तो वह बिन रोक टोक दफ़न किया जाता था यानी गाड़ा जाता था और नहीं तो उसे कभी नहीं गाड़ते थे। क्या राजा क्या पुरोहित सबों का ऐसा

* ऐसी गौ पुरोहित लोग चालाकी से बना देते थे इस में कुछ सन्देह नहीं।

ही विचार किया जाता था। इस रिवाज के रहने से मिसर वालों की चाल बहुत ही सुधर गई थी। वे लोग यह समझते थे कि देह का नाश होने से आत्मा भी नष्ट हो जाता है, और जब तक देह रहती है तब तक आत्मा शरीर से अलग होने पर भी नाश नहीं होता। इस लिये मिसर वाले मुर्दे की बड़ी रक्षा करते थे उन लोगों ने जो बड़े बड़े पिरामिड बनाये थे वे मुर्दों की रक्षा ही के लिये थे। मिसर वाले इस डर से कि अगर बुरा काम करेंगे तो हमारी मरी मट्टी की रक्षा न की जायगी अपने चाल चलन सुधारने में बड़ा यतन करते थे। पुराने मिसरियों ने विद्या की उन्नति कहां तक की थी यह हम सबों को ठीक नहीं मालूम है। सिर्फ़ इतना मालूम हुआ है कि चित्र विद्या की पैदाइश उन्हीं लोगों से है। वे लोग ज्योतिष भी जानते थे उन लोगों ने साल को १२ महीनों में और महीनों को ३० दिनों में बांटा था। और हर साल में पांच दिन ज्यादे ले लिया करते थे लेकिन इस पर भी साल भर में ६ घन्टा घटता है। और १४६० वर्ष में एक पूरा साल ही गायब हो जाता है। यह बात मिसरी लोग भी जानते थे इसी लिये १४६० वर्ष के बाद एक वर्ष अधिक बढ़ा दिया करते थे। वे लोग वैद्यक में हुशियार थे लेकिन साहित्य आदि शास्त्रों में मिसरी लोग बहुत अच्छे कभी न हुए। ये लोग संगीत विद्या का भी अभ्यास

रखते थे पर उस में भी जैसा होना चाहिये वैसे निपुण न हुए।

मिसरी लोगों के धर्म्म की रीत और लौकिक व्यवहारों को अच्छी तरह देखने से मालूम होगा कि वे लोग अपने मनके भाव यानी मतलबों को असानी से रूपक आदि अलंकारों में भूषित कर प्रगट कर सकते थे यह शक्ति पुराने हिन्दू और दूसरी जातियों में भी बहुत प्रबल थी।

तीसरा अध्याय।

मिसरी लोगों के समाज के नियम।

प्रसिद्ध यूनानी ग्रन्थकार "हीरोडोटस" और "डाइयोडोरस" की किताबों से पुराने मिसरी लोगों का इतिहास मालूम होता है। इन दोनों ने मिसर में सफर करके वहां के पुरोहितों से जो बातें सुनी उन सबों को अपनी किताबों में लिखा। मालूम होता है कि इसी कारण उन की किताबों में बहुत सी कहानियां भी भरी हैं। यह असम्भव मालूम होता है कि पुरोहित लोग अपने देश का पुराना हाल दूसरे देश और दूसरे मत के आदमियों को ठीक ठीक बतलाये हों।

लेकिन 'मानोथो' नाम एक मिसरी पुरोहित ने यूनानी भाषा में एक इतिहास की पुस्तक लिखी थी। जो वह पुस्तक मिलती तो मिसर का इतिहास अच्छी तरह मालूम होता लेकिन बदक़िस्मती से वह पूरी पुस्तक आजकल नहीं मिलती। दूसरे लिखने वालों ने अपनी किताबों में कहीं कहीं उस पुस्तक के कुछ हिस्सों को लिखा है उन को देखने से मिसर का पुराना हाल जितना मालूम हो सका यहां लिखा जाता है।

मिसरी लोगों के इतिहास लिखने में पहले बयान करना चाहिये कि वे कहां से आये थे और मनुष्य की जातियों में से किस जाति के लोग थे। लेकिन इन बातों का ठीक अब तक हाल नहीं मिला है। आजकल के इतिहास लिखने वालों ने बहुत कोशिश करके यह ठहराया है कि पुराने मिसरी, काकेशीय जात वाले सेमेटिक, और आफ़्रिका के आदि रहने वाले एथियोपीय लोगों के संयोग से पैदा हुए थे। सेमिटिक बंश वाले फ़ारस के इलाके कूश नाम स्थान से आकर अरब के नैऋत कोन होकर लाल समुद्र के पार उतरे और पहिले न्यूबिया देश में जा बसे। वहां उन लोगों ने नील नदी के दो शाखाओं के बीच की जगह में एक राज क़ायम किया उस की राजधानी का नाम "मेरो" पड़ा, उस नगर के खंड़हर अबतक देख पड़ते हैं। लेकिन उसका असल हाल अबतक नहीं पाया गया है। केवल यह बात समझने में आती है कि

"मेरो" राज्य में पुरोहितों की शासनप्रणाली यानी हुकूमत की रीत जारी थी और वहां के लोगों ने थोड़े ही दिनों में सभ्य और ज़ोरावर हो कर उत्तर तरफ़ अपना राज्य बढ़ाया था। वे लोग जितना उत्तर तरफ़ गये उतना ही वहां के असल रहने वालों के साथ मिलते गये। इस तरह पुराने मिसरी लोगों की पैदाइश हुई।

जब "मेरो" नगर कुछ घटते घटते दिनों में नष्ट हो गया तब 'थीबस' और 'मेम्फिस' नगर बहुत प्रबल हो गये। और वहां के लोगों ने कारीगरी में बड़ी तरक्की की। जब दूसरी दूसरी जाति के लोग आकर एक दूसरे देश में बसते हैं तब वहां जात पांत का रिवाज़ जारी होता है "मेरो" राज्य में भी ऐसा ही हुआ था वही मिसरियों में रहा। मिसर के सब लोग पुरोहित,योधा, और कई दूसरी जातियों में बटे थे,उन में से पुरोहित लोग सब से बड़े और योधा लोग उनसे नीचे गिने जाते थे। इन्हीं दो जातियों के मनुष्य राज गद्दी पर बैठ सक्ते थे। राज गद्दी भी और पदार्थों की तरह बाप के मरने बाद बेटे को दी जाती थी। लेकिन राजा किसी तरह स्वेच्छाचारी नहीं हो सक्ता था। कितने एक क़ायदों के मुताबिक़ उसे काम करना पड़ता था। पुरोहित लोग उन सब कायदों को बनाते थे और राजाओं को सदा सीख दिया करते थे। इससे यह बात ख़याल की जा सक्ती

है कि उन में और राजाओं में कभी कभी बड़ा बिवाद भी हुआ करता था ।

पुरोहित लोग भी जो चाहते थे सोसब नहीं कर सक्ते थे। एक से अधिक बिवाह नहीं कर सक्ते थे। और न बहुत भोजन करते थे और न सुस्ती में दिन काट सक्ते थे, उनको सदा विद्या सीखनी पड़ती थी। और जो लोग देवताओं की सेवा करने में असमर्थ थें वे वैद्य या कारीगरी या घोड़ों के सिखाने के कामों में मुकर्रर किये जाते थे। लेकिन जैसे उनके लिये ये सब कठिन बंधेज मुकर्रर थे वैसे ही उन लोगों को लाख़िराज ज़मीन आदि जीविका भी मिलती थी। उन के सिवाय और कोई लिखने पढ़ने नहीं पाता था, और उन्हीं के द्वारा धर्म के सब काम किये जाते थे। वे लोग यह भी कहते थे कि हमलोग जिन नियमों से बिचार करते हैं वे साक्षात ईश्वर के बनाये हुए हैं और बहुत हैं। चोर, झूटे गवाह, और खूनी को मिसर वाले जानसे मार डालते थे। मिसर वालों के योधाओं को भी लाख़िराज ज़मीन मिलती थी। वे लोग किसी तरह का व्यवसाय नहीं करने पाते थे उन्को सदा वैसी ही कोशिस करनी पड़ती थी। जिस से शरीर का बल बढ़े और अस्त्र शस्त्र विद्या में निपुण हों इसमें कुछ संदेह नहीं हो सक्ता कि मिसर वाले युद्ध में बहुत निपुण थे। उन लोगों की सेना लोहे का बखतर पहनती थी उनके प्रधान हथियार ढेल-

बांस, तलवार और शूल थे। मिसर वाले क़िला बनाने में भी बहुत निपुण थे कभी कभी मिसर के राजा लोग दिगविजय करने को निकलते थे और बहुत से देशों को जय कर आते थे।



चौथा अध्याय।

मिसरियों की स्वाधीनता का वर्णन।

मिसरी लोगों की स्वाधीन अवस्था का हाल बहुत अचरज कहानियों से भरा है। मिसर के प्राचीन राजा लोग देवता, अवतार या उपदेवता समझे जाते थे। ऐसे कई एक राजाओं के बाद ३० राजवंशों के नाम लिखे हैं। वे लोग सब मनुष्य थे। उन में सब से पहिला "मीनिस" था वह सब विद्या और गुणों में निपुण था। इन राजाओं के नाम कल्पित यानी बनावटी हैं यह बात मालूम नहीं होती, लेकिन इन लोगों का ठीक हाल नहीं मिलता। यह कहा गया है, कि उन में से "सिसष्ट्रिस," नाम एक प्रतापी राजा ने एशिया के सब पश्चिम प्रदेशों को और यूरोप के भी कुछ हिस्सों को जीता था, इतिहास में इसके दिग्विजय का हाल लिखा हुआ है।

कहते हैं कि वह एक दिन घमंड के मारे उन राजाओं से अपनी गाड़ी खिंचवाता था जिन को उसने जीता था, उन अभागे राजाओं में से एक राजा रथ के पहिये को ओर बराबर देख रहा था। जब "सिसृष्ट्रिस" ने उस से पूछा कि क्या देखता है तो उसने यह उत्तर दिया कि पहिये का एक हिस्सा कभी ऊपर जाता है कभी नीचे आता है। बुद्धिमान "सिसष्ट्रिस" ने इस का असल मतलब समझ कर अपने जी में बिचार किया कि ऐसे ही हमारी भी बढ़ती क्षण भर के लिये है। और जल्द ही उसने अपनी बुरी चालों को छोड़ दिया और राजाओं का जैसा चाहिये वैसा मान किया।

मानीथो नामी इतिहास लिखने वाले ने यह लिखा है कि "टिमिरस" राजा के समय में "हिकसस," नाम एक जाति के लोगों ने अरब से आकर मिसर देश पर चढ़ाई की थी। इन लोगों ने मेम्फिस, नगर को अपनी राजधानी बनाई थी। ये लोग सिमेटिक, बंश के रहे होंगे, इन्हीं लोगों के समय में यहूदी लोग मिसर में आये थे और बड़ा आदर पाया था। इस बंश के राजा लोग मेषपाल यानी गड़ेरिये कहलाते थे। इन लोगों ने ५११ बरस तक मिसर में राज किया निदान मिसरीयों ने इन लोगों को हरा कर देश से निकाल दिया। मेषपाल राजाओं के निकाले जाने के बाद मिसर

में जितने प्रतापी राजे हुए उन में से "रामीसिस" नाम एक राजा बहुत प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उस ने सारे तुर्किस्तान को अपने क़ब्ज़े में कर के कास्पियन झील के किनारे तक अपना राज्य बढ़ाया था, कोई कहते हैं कि यह वाही "सिसष्ट्रिस" था जिस का बर्णन पहिले हो चुका है। इसके बाद मिसर में बहुत से राजा हुए उन सबों की राजधानी "थीब्स" नगर रहा। और उनके समय में मिसरी लोगों ने कारीगरी में होशियार हो कर बड़े बड़े पिरामिड बनाये और बड़े बड़े काम किये थे।

इस तरह चैन से कुछ दिन काट कर मिसर वाले फिर ऐयाश और कमज़ोर हो गये। इसी लिये "इथिओपिया" के राजा "साबाको" ने उन लोगों को सहज ही जीत कर अपने अधीन कर लिया था। कहते हैं कि वह ५० बरस अच्छी तरह राज करने के बाद अपने देश को लौट गया। उस के कुछ दिन बाद "सीथस" नाम किसी पुरोहित ने राजा हो कर योद्धा जाति के लोगों पर बहुत अत्याचार किया। लेकिन शहर के रहने वाले बनिये और कारीगर लोग इसकी तरफ़ थे। जब ७१२ बरस "ईसा" के जन्म के पहिले आसिरिया के राजा "सेन्नाकेरिब" ने "मिसर" पर चढ़ाई की तब योद्धा जाति के लोगों ने राजा की सहायता नहीं की। और सिर्फ़ साधारण लोग हथियार

बांध कर लड़ने के लिये भागे हुए थे। इस समय के इतिहास का कुछ ठिकाना नहीं मिलता केवल यह मालूम होता है कि "साबाको" राजा सारे मिसर को एक बार्गी नहीं छोड़ गया था, मिसर का दक्खिन हिस्सा उसके बंश के राजा लोगों के कबज़े में रह गया था केवल उत्तर भाग "सोथस" नाम पुरोहित के हाथ लगा था।

"सोथस" के बाद मिसर के राज की रीत कुछ और भी बदली, उस समय में बारह राजे मिसर में राज्य करते थे। पहिले तो इन बारहों के आपस में बड़े हेल मेल थे, पीछे उन में से "सामेटिका" नाम एक राजा ने यूनानी सेना की मदद से अपने बिरोधी ग्यारह राजाओं को हरा दिया और आप सारे मिसर का राजा हुआ। वह पुराने मिसर वालों की तरह दूसरे देश के लोगों से डाह नहीं रखता था बरन यह बरन कोशिश करता था कि जिससे गुणवान यूनानी लोग यूनान को छोड़ उसके राज्य में आ बसें। उसने "साइन्नणि" नामी जगह में ग्रीक लोगों की एक नईबस्ती बसाई थी। वह बिदेशी गुणी लोगों को इतना मानता था तो भी अपने धर्म पर पूरी भक्ति रखता था। उसका बेटा "नेको" अपने बाप की तरह ग्रीस और फ़िनेशिया के नाविकों की सहायता से आफ्रिका के चारों तरफ़ फिरा था। उसने एक नहर खोद कर नील नदी को लाल समुद्र

के साथ मिलाया था, इस नहर का चिन्ह आज तक कहीं कहीं देख पड़ता है। ६०८ बरस ईसा के जन्म के पहिले इस ने सीरिया देश पर चढ़ाई की और यहूदियों के राजा को जीता, और बेबिलन राज्य को जीतने के लिये धीरे धीरे यत्न करने लगा। लेकिन बेबिलन के राजा "नेबूकडनेसर" ने "कारकेसिस" नाम जगह की लड़ाई में उसे हरा दिया। वह प्रसिद्ध लड़ाई ६०४ वर्ष ईसाके जन्मके पहिले हुई।

"नेको" के मरने पर उसका बेटा "सामिस" और "सामिस" के मरने के बाद उसका बेटा "एपरिस" मिसर का राजा हुआ। एपरिसने फ़िनिशिया वालों के साथ लड़कर उनकी बहुत सी जगहें छीन लीं। लेकिन वे सब जगहें उस के हाथ में बहुत दिनों तक न रहीं। बेबिलन के प्रतापी राजाओं ने उन सब जगहों को लेलिया, और "साइरणी" नई बस्ती के रहने वाले यूनानियों ने भी 'एपरिस' से बिगड़ कर उसकी सेना का संहार किया। मिसर की प्रजा भी अपने देश की वह दुर्दशा देख बहुत व्याकुल हुई और उस से बिगड़ गई। तब उस ने अपने प्रियपात्र 'आमोसिस' को यह कहला भेजा कि तुम जाकर सब प्रजा को शान्त करो, प्रजा के लोगों ने "आमोसिस" ही को अपना राजा बनाया।

"आमोसिस" एक नीच कुल का था, और पहिले हर तरह के दोषों से भरा हुआ था। लेकिन वह राजा

होमि पर अच्छी तरह से राज्य करने लगा। यूनानियों से उसका बड़ा हेलमेल था। "सेमस" टापूका राजा पालिक्रेटिस" उसका परम मित्र था। "आमोसिस" के मरने के बाद उसका बेटा " सामेनिटस " राजा हुआ, लेकिन बहुत दिनों तक राज नहीं कर ने पाया। फ़ारस के राजा "कम्बाईसिस" ने ६ महीने के भीतर ही मिसर पर चढ़ाई की, और कुत्ता, बिल्ली आदि जन्तुओं को जिनको कि मिसरी लोग पूजते थे, अपनी सेना के आगे रख कर सहज ही में " पेलसियम " नगर को ले लिया। थोड़े ही दिनों में सारा मिसर देश उस के हाथ आगया। यह बात ५६२ पांचसौबासठ बरस पहिले ईसा के जन्म के हुई।

पांचवां अध्याय ।

मिसरी लोगों की पराधीनता का हाल

फ़ारस का राजा " काम्बईसिस " ने मिसर को जीत कर वहां के प्रजा को बड़ी दुर्दशा की, विशेष करके

वह मिसर वालों के देवताओं को बड़ी बुरी गति करता था। उसने "मेम्फिस" नगर को जीत कर वहां के प्रसिद्ध देवता "एपिस" नाम गौ को टुकड़े टुकड़े करके अपनी सेना को खाने को दिया। फारसियों के धर्म्म उपद्रव करने के कारण मिसरी उन से जी से चिढ़ गये, यहां तक कि कोई भी अवसर मिलने पर फसाद करने से बाज़ न आये। जब पहिला "दरायुस" फ़ारस का राजा था उस समय मिसर वालों ने बड़ा बलवा मचाया। तीन बरस के बाद फ़ारस के राजा "जरकसिस" ने उस बलवे को दबाया। उस के बाद तीस बरस के दर्मियान एक और बलवा हुआ, उस में पांच बरस तक लड़ाई रही थी। उस के बाद वह दबाया गया। मिसर वालों ने फिर तीसरी बार बलवा करके कुछ दिन के लिये स्वाधीन हो गए। उस समय में "आमिरटियस" नाम एक आदमी उन लोगों का राजा हुआ। उसके मरने के बाद फ़ारसियों ने फिर मिसर को फ़तह किया, फिर "नेक्टोमिबस" नामी मिसर का राजा सरकशी करने लगा। लेकिन फ़ारसियों ने बड़ी कोशिश से उसको दबाया, और पहिले जैसे मिसर के राजाओं के साथ अच्छा सलूक करते थे और राज का बन्दोबस्त उनके हाथ में सौंपते थे वैसा इस बार न किया। इस तरह मिसर के राजाओं का वंश उच्छिन्न हो गया, उस समय से ले सिकंदर के आने तक मिसर में और कोई बलवा न हुआ।

सिकन्दर के मरने बाद उसके सेनापतियों ने उसका बड़ा राज्य आपस में बांट लिया। मिसर, "टलोमि-सोटर" नाम एक सेनापति के हिस्से में पड़ा। वह दूसरे सेनापतियों की तरह लड़ाई में अपने धन जन की हानि नहीं करता था। केवल अपने राज्य की रक्षा और बढ़ती के लिये यत्न किया करता था। उसने "अलिक-ज़ेन्ड्रिया" नगर को अपनी राजधानी बना कर उस की एक जगह में रत्नगृह और पुस्तकालय स्थापित किया था। और बहुत बड़े बड़े पण्डितों और कवियों को सम्मान के साथ रखता था। उसके बेटे "टलोमीफ़ि-लाडल्फ़िस" और पोते "टलोमी यूजेटीस" ने भी राज की बढ़न्ती और लोगों की विद्या की तरक़्क़ी के लिये बहुत उपाय किया। ये लोग लड़ाई में भी कम न थे। सीरिया, साइप्रस्, फ़िनेशिया आदि सब देश इनके इलाक़े में थे। और "यूजेटिस" की सेना एक समय में "वाक्ट्रिया" तक आई थी। "टलोमी" वंश के ये तीन राजे बड़े लायक़ थे; और पुराने मिसरी लोग अगर बिदे-शियों से डाह रखने वाले और बदचलन न होते तो यूनान वालों से हर तरह की विद्या सीख कर फिर बड़े सभ्य और बली हो जाते। लेकिन उस समय मिसर वालों में यह एक बड़ी बुराई थी कि वे लोग अपने पहिले समय की बड़ाई को याद कर ऐसा घमंड करते कि यूनानियों से कोई नई चीज़ सीखने

में अपनी अप्रतिष्ठा समझते थे। जब प्रजाही विद्या सीखना न चाहे तो केवल राजा क्या कर सक्ता है। यूनानियों ने भी जब देखा कि मिस्र वालों की तरक्की के लिये यत्न करना व्यर्थ है तो वे पहिले जिस अच्छे काम केलिये मुस्तैद हुए थे उसको छोड़ सुख चैन में अपने दिन काटने के लिये हर तरह के उपाय करने लगे। "टलोमी के बंश में इन तीन राजाओं के सिवा जितने राजा हुए उन में बहुतेरे नालायक़ बदचलन और ऐयाश थे। चौथे "टलोमी" का नाम "फिल्पेटर" था दुनियां में ऐसा कोई बुराकाम नहीं है कि जिस को इस ने न किया था। उस के बेटे "एफ़िनिस" ने लड़कपन ही में राज गद्दी पायी थी! सीरिया और "मेसोडोनिया" के राजाओं ने मिल कर उसका राज्य छीन लेने का इरादा किया, इस लिये उसके वज़ीरों ने 'रोमियों' से मदद मांगी, रोम वालों ने भी उसके राज लेने की इच्छा की और सीरिया की राज कुमारी "क्लियोपाटरा" के साथ उसको व्याह कर उसके लोगों के साथ मेल किया। उसके बाद उसका बेटा "फ़िलोमिटर" राजा हुआ। जितने दिन तक उसकी मा "क्लियोपाटरा" जीती रही उतने दिन तक राज का बन्दोवस्त एक तौर पर चलता रहा। लेकिन "क्लियोपाटरा" के मरने के बाद हर तरह की बुराइयां होने लगीं। रोमी लोग धीरे

धीरे प्रबल हुए और "टलोमी" लोग मूर्ख और बद-चलन होते गये। टलोमी वंश की आखरी रानी "क्लियो-पाटरा" ने अपने को आप मारडाला। तब राज्य ३० बरस ईसा के जन्म के पहिले रोमी लोगों के हाथ लगा।

मिसर देश के रोमियों के राज्य में मिल जाने के बाद के समय का कोई खास उस देश का इतिहास नहीं है। रोमियों ने वहां का बन्दोवस्त इस तरह से किया कि मिसरी लोग फिर एक बार भी सिर न उठा सके। जब रोम में इसाई धर्म्म फैला तो मिसरवाले भी उसी समय इसाई हुए। और जब रोम वर्बाद हो गया तब मिसर-वाले अरब वालों के तावे हो गये।

चतुर्थ प्रकरण।

यहूदी लोगों का हाल।

पहिला अध्याय।

पालेष्टीन देश का वर्णन।

पुराने इतिहासों में यहूदी जाति के लोग बहुत प्रसिद्ध थे। उन का इतिहास बहुत प्राचीन है, पर तौभी उस में झूठी कहांनिया नहीं भरी हैं। ये लोग आज तक हैं और अब छितर बितर हो दुनियां के सब देशों में बसने पर भी इन के धर्म्म, भाषा, रीति, व्यवहार सब जैसे पहिले थे वैसे ही अब भी हैं, इस लिये इन लोगों का इतिहास पढ़ने से बड़ा ही आनन्द और अचरज होता है।

भूमध्य सागर के उत्तर "पालेष्टीन" नाम एक छोटा सा देश है, उसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १०० कोश और चौड़ाई पूरब से पश्चिम तक २५ कोश है। यह पहाड़ी देश है। पहाड़ों के सब तराइयों में छोटी बड़ी बहुत नदियां बहती हैं इस कारण वे बहुत उपजाऊ होती हैं। पर यह देश पहिले जैसा उपजाऊ था अब वैसा

नहीं हैं, इसका कारण यह मालूम होता है कि खेती का अच्छा बन्दोवस्त शायद वहां अब नहीं है।

इसी देश में क्रिस्तानी धर्म्म के चलाने वाले ईशूखीष्ट ने जन्म लिया था, इस लिये क्रिस्तान लोग यहां की बहुत सी जगहों को पवित्र तीर्थ समझते हैं। मुसल्मान लोग भी इस देश की बहुत सी जगहों को तीर्थ मानतेहैं। बिशेष करके "रोमनकाथलिक" क्रिस्तान लोग "पालेष्टीन" की प्रधान "जर्डान" नदी के जल को ऐसा पबित्र समझते हैं कि उनमे से हजारों हरसाल "यूरोप" के अनेक प्रदेशों से आकर वहां स्नान और दान करते हैं। इस देश का प्रधान नगर "यरुसलेम" भी बहुत प्रसिद्ध तीर्थस्थान गिना जाता है। बहुत से लोग वहां के मठ और समाधि के दर्शन के लिये अनेक देशों से आते हैं।

तीर्थस्थानों में अक्सर बड़ी बड़ी आश्चर्य्य की चीज़ें बनाकर रक्खी रहती हैं। "पालेष्टीन" में भी ऐसी बातें हैं। वहां एक जगह है उसकी मिट्टी के साथ कुछ सेत खरी मिट्टी मिली है, इस कारण वहां की मिट्टी सफेद निकलती है। इस का कारण "रोमनकाथलिक" के पुरोहित लोग यह बताते हैं कि एक दिन "ईशूखृष्ट" की मा "मरियम" कुमारी, "ईशू" को दूध पिलाती थी, उस समय कुछ दूध उस जगह पर गिर पड़ा इसी से यहां की मिट्टी अब तक सफेद निकलती है, और वे लोग यह भी कहते हैं कि उस मिट्टीमें ऐसा गुण है कि कम दूध वाली

स्त्री जो उस को पीवे तो उसको बहुत दूध होने लगे। और वहां एक बड़ा पहाड़ है, पुरोहित लोग कहते हैं कि उसके पत्थर के टुकड़े अंगूर, पिस्ते, अनार आदि मज़ेदार फलों के से आप से आप देख पड़ते हैं, यह कह कर पुरोहित लोग उन पत्थरों के टुकड़ों को यात्रियों के हाथ बेचते हैं और रुपये पैदा करते हैं। यथार्थ में सारा "पालेष्टीन" देश तीर्थस्थान है। वहां जगह जगह एक से एक आश्चर्य चीज़ें देखने और चमत्कार बातें सुनने में आती हैं।

इस देश में जितनी बातें स्वाभाविक आश्चर्य की देख पड़ती हैं उन में "मरु सागर" का वर्णन सब के पहिले करना चाहिये। इस समुद्र का जल तेलहा है, इस में मछली आदि कोई जलजन्तु नहीं रह सके हैं, और इसके चारों तरफ़ निर्जन मरुभूमि है उस में एक तृण भी नहीं उपजता। बड़े आश्चर्य की बात यह है कि "मरुसागर" में "जर्डान" नदी का पानी गिरता है और यद्यपि उस सागर का योग महासमुद्र के साथ ज़ाहिर में कहीं नहीं देख पड़ता है तो भी वह सागर कभी पानी से भर नहीं उठता है। इससे कोई कोई भूगोल जानने वाले यह अनुमान करते हैं कि यह "मरुसागर" हो न हो पृथ्वी के भीतर २ महा समुद्र से कहीं अवश्य मिला है।

दूसरा अध्याय।

यहूदियों का "पालेष्टीन" जीतना

कहते हैं कि "नोया" के मझले बेटे "सेम" के वंश में "इब्राहिम" नाम एक महात्मा ने जन्म लिया। उन की जन्मभूमि "कालिडया" थी। "कालिडया" के लोग उस समय मूर्ति पूजते थे और उन लोगों को सत्य असत्य का विचार न था। "इब्राहिम" उन लोगों के मत का खंडन करके ब्रह्मवाद और सत्य धर्म्म को शिक्षा देने का यतन करने लगे। इस लिये उनसे लोग बिगड़ गये। तब महात्मा "इब्राहिम" अपनी जन्मभूमि छोड़ पश्चिम ओर जाते जाते "पालेष्टीन" देश में जा पहुंचे। उन के मरने के बाद "आइज़ाक" नाम उन का बेटा "पालेष्टीन" में रहने लगा। पर "आइज़ाक" का बेटा "याकब" एक समय अकाल पड़ने के कारण "पालेष्टीन" को छोड़ कर "मिसर" देश में जा बसा। "याकब" के १२ लड़के हुए, उन में से सब से छोटा लड़का "यूसफ़" "मिसर" के राजा का मंत्री हुआ, और अपनी बड़ी बुद्धि के द्वारा राज्य का बड़ा उपकार किया और अपने भाइयों को भी बहुत सी भलाइयां कर गया।

याकब के बारह लड़कों से "यहूदी" लोगों के १२

गात हुए। वे लोग बहुत दिनों तक सुख चैन से "मिसर" में रहे। बाद उसके "मिसरी" लोग उनकी बड़ाई देख कर डाह से उनको हर तरह दिक़ करने लगे। उस समय "मूसा" नाम एक महात्मा यहूदियों में प्रगट हुए, और उन्हों ने अपने जात भाइयों को मिसरी लोगों के हाथ से बचाने का उपाय किया। वे सब यहूदियों को साथ लेकर "काइरो" नाम जगह के निकट गये और उसके दक्षिण पूरब ओर "गोशन" नाम प्रदेश में जाकर "स्वेज़" की खाड़ी पार हुए, और अरब की किसी एक जगह में जा पहुंचे। यह जगह पहाड़ी और भयावन मरुभूमि थी। "यहूदी" लोग बहुत दिनों तक उस भयानक जगह में फिरते रहे। निदान जब उन में से बहुतेरे समय पाकर मर गये और उनके लड़के जवान और साहसी हुए तब "मूसा" ने उनको उत्तर तरफ़ ले जाकर "पालेष्टीन" देश दिखलाया और उस को जीतने की आज्ञा दी। और आप शरीर त्याग कर पर-लोक गये। "मूसा" के मरने के बाद "जशूआ" नाम एक योद्धा लोगों का सर्दार बना, उसके समय यहूदी लोगों ने "पालेष्टीन" के बहुत हिस्से जीत लिये। उन लोगों ने वहां के रहने वाले "कानान" के वंश वालों में से बाज़ को मार डाला बाज़ को निकाल दिया और बाज़ को दास बना लिया और धीरे धीरे सारे देश को अपने आधीन कर लिया।

यहूदी लोगों ने सारे देश को अपने अधिकार में लाकर जैसे आप १२ हिस्सों में बटे थे वैसे ही सारे देश को भी १२ हिस्सों में बांटा। उन में से "लेभी" के वंश में जो पुरोहित लोग उत्पन्न हुए थे उन लोगों ने अपने लिये भूमि का कोई ख़ास हिस्सा न लिया। पर यह बात ठहरवा लिया कि सारे देश में जितना ग़ल्ला उपजे उसका दसवां हिस्सा उन लोगों को मिला करे। और "यूसफ" के दो लड़कों से जो दो गोत्र उत्पन्न हुए थे उन लोगों को भूमि का अलग अलग हिस्सा मिला था। लेकिन ये बार हिस्से बराबर नहीं थे, जिस गोत्र में जितने ज़्यादा वा कम आदमी थे उस गोत्र को उतनी ही अधिक वा कम भूमि मिली थी। १४५० बरस "ईसा" के जन्म के पहिले "यहूदी" लोग "पालेष्टीन" में रहते थे और तब उनकी मर्दुम शुमारी ६,०१,७३० थी।

तीसरा अध्याय।

"प्रबल यहूदियों का धीरे धीरे निर्बल होना"।

यहूदी लोगों ने "पालेष्टीन" जीतने के बाद पहिले एक तरह का कुलतंत्र राज जारी किया था। उन

लोगों के बारह गोत्रों में बारह आदमी बिचार करने वाले मुकर्रर हुए थे। वे लोग अपने अपने गोत्र के सब राज-काज किया करते थे, लड़ाई के समय वे लोग सेनापति बन कर युद्ध करने जाते थे। और जिस समय अमन-चैन रहता था उस समय अपने गोत्रों के लोगों के दीन, दुनिया के सब कामों का इन्तज़ाम किया करते थे, लेकिन जब उन सब लोगों पर कोई एक आम आफ़त आती थी तो उन बारह गोत्रों के लोग आपस में मिल कर एक ही सेनापति बनाते थे और वह सब लोगों के ज़रूरी कामों का बन्दोबस्त करता था। बिचारपति लोग अपने अपने गोत्रों की इच्छा के अनुसार सब काम नहीं कर सके थे। पर 'लेभी' बंश के पुरोहित लोगों के मतके अनुसार वे लोग सब काम करते थे। 'यहूदी' लोगों का यह बिश्वास था कि पुरोहित लोग ईश्वर से उपदेश पाकर बिचार करने वालों को सलाह देते थे, उन सब लोगों का ऐसा बिश्वास के कारन 'पालेष्टीन' के पुरोहित लोगों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। इस लिये यहूदी लोगों के उस समय के राज को पुरोहितों का राज भी कह सकते हैं।

इस तरह का राज तीन सौ ३०० बरस तक चला। उस समय में यहूदी लोगों का बड़ा प्रताप बढ़ा था उन लोगों ने अपने आस पास के दुशमनों को जीता और दिन दिन धन और सभ्यता में बढ़ते गये। कुछ दिन बाद उन लोगों के राज का तौर बदल गया। 'मल' नाम एक

आदमी सारे 'पालेष्टीन का राजा हुआ। उसके बाद 'दाऊद' ने राजा होकर चारों तरफ़ के दुश्मनों को जीत कर यहूदियों का नाम बढ़ाया। 'दाऊद' के लड़के 'सालिमन' राजा के समय में 'पालेष्टीन' की बहुत बढ़ती हुई। यहूदी लोग जैसे खेती और लड़ाई में निपुण थे वैसे ही तिज़ारत में भी अपना प्रभाव दिखलाने लगे और 'फ़िनेशिया' लोगों की मदद से कारीगरी में भी बढ़ गये।

'सालिमन' राजा के मरने के बाद राज्य दो हिस्सों में बट गया, उन में जो हिस्सा उत्तर तरफ़ था उसका नाम 'इसाराईल' और जो हिस्सा दक्खिन ओर था उसका नाम 'यहूदा' पड़ा। इन दो हिस्सों के राजे आपस में लड़ने लगे। औरदूसरी जाती के लोग भी उन पर चढ़ाई करने लगे, इस कारण ये दोनों राजे कमज़ोर हो गये, निदान ७२२ सात सौ बाईस बरस ईसा के जन्म के पहिले 'निनेवा' नाम प्रसिद्ध नगर के राजा ने 'इसराईल' राजपर चढ़ाई की और वहां के रहने वालों को रणबन्दी याने लड़ाईका कैदी कर लेगया। उन अभागे कैदियों का हाल अन्त में क्या हुआ आज तक मालूम नहीं हुआ।

'यहूदा' राज्य इसके बाद भी कुछ दिन तक स्वाधीन रहा, बाद इस के ५८८ बरस ईसाके जन्म के पहिले 'बैबिलन' का राजा 'नेबुकड़ नेसर' ने 'यहूदी' राज्य पर

चढ़ाई की, 'यरुसलेम' राजधानी को बर्बाद किया और हज़ारों को क़ैद कर ले गया। इस बात के ५० बरस बाद अर्थात् ५३८ बरस ईसा के जन्म के पहिले जब फ़ारस" के राजा 'साइरस' ने 'बैबिलन' को जीता तब उसने उन यहूदियों को क़ैद से छुड़ाया। इन लोगों ने उसके हुक्म से अपने देश को लौट कर फिर 'यरुसलेम' नगर को बसाया। 'पालेष्टीन' देश उस समय फ़ारस के राजाओं के अधीन रहा, इसके बाद 'सिकन्दर' ने जब फ़ारस' को जीता तब 'पालेष्टीन' उसके हाथ में गया। जब यूनानियों के दिन बिगड़ गये, और रोमी लोग प्रबल हुए तब 'पालेष्टीन' देश 'रोम' के राजा के हाथ में आया। जिस समय में 'पालेष्टीन' रोमी लोगों के हाथ लगा उसी समय 'ईसा' का जन्म हुआ। उन के मारे जाने के उद्योग करने वालों में यहूदी ही लोग मुख्य थे। इसके बाद यहूदियों ने फिर स्वाधीन होना चाहा, रोमी लोगों ने इस कारण बहुत रंज हो कर उन लोगों को अच्छी तरह से दबाया और उनको पालेष्टीन से निकाल दिया। इस कारण यहूदी लोग पृथ्वी के बहुत से देशों में फ़ैल गये। उस समय से यहूदी लोग अपने देश में फिर आपस में न मिल सके। लेकिन यहूदी लोगों को यह भरोसा है कि ईश्वर आप प्रगट हो कर हम लोगों को इकट्ठा कर, फिर हम को हमारा देश रहने को देगा।

चौथा अध्याय।

यहूदी लोगों के राज के हाल का बयान पहिले ही लिखा गया है, अब उन की धर्म्म-प्रणाली के बिषय में कुछ लिखना अवश्य है। यहूदी लोगों का असल धर्म्म ब्रह्मबाद था, ये लोग एक ईश्वर ही की उपासना करते थे, और मूर्ति बनाकर पूजा करना बहुत ही बुरा समझते थे, 'यरुस-लेम' नगर में 'सलेमान' के बनाये हुए प्रसिद्ध देव मंदिर में एक बेदी बनी थी उसपर दो तरफ दो देवतों की मूर्तियां रक्खी थीं, और उन दोनों के बीच जो ख़ाली जगह थी वहां ईश्वर आप विराजमान होते थे, पुरोहित लोग जब किसी बात को पूछते थे तो ईश्वर उसी जगह से उसका उत्तर देते थे, और बहुत तरह की चमत्कार बातें उस जगह होती थीं।

'यहूदीलोग' ईश्वर को ज्योहोबा कहते हैं। जो लोग ज्यो होबा की उपासना छोड़ दूसरे देवता की पूजा करते थे वे म्लेच्छ समझे जाते थे। होम करना और बलिदान देना उनकी उपासना के प्रधान अंग थे, लेकिन सब पशुओं का मांस शुद्ध नहीं समझा जाता था। यहूदी लोग 'शूकर' के मांस को बहुत अपवित्र समझते थे, और लड़कपन में सुन्नत करना

उन लोगों का प्रधान संस्कार था। यहूदी लोग अपने आस पास के लोगों को देखा देखी कभी कभी देव देवियों की भी उपासना करते थे, लेकिन उनके धर्म की किताबों में यह साफ़ लिखा है कि जब जब उन लोगों ने ऐसा किया, तब तब उन लोगों को शत्रुओं से नीचा देखना पड़ा और बहुत तरह की आफ़तें झेलनी पड़ीं।

'यहूदी' लोग दूसरी जातियों के धर्म को बुरा समझते थे इस लिये किसी देश के लोगों के साथ उनका कभी मेल न हुआ। वे लोग जैसे दूसरे धर्मावलम्बी लोगों से डाह रखते थे, वैसे ही उन लोगों को भी दूसरी जाति के लोग बहुत बुरा समझते थे, और इस लिये उस समय से आजतक पृथ्वी में सब लोग यहूदियों को ख़राब समझते हैं।

यहूदियों के धर्मपुस्तक का नाम 'बाइबल' है, यह संपूर्ण पुस्तक एक समय किसी एक आदमी से नहीं बनाई गई थी। इसके किसी किसी स्थानों में यहूदी लोगों का इतिहास लिखा है और किसी किसी हिस्सों में उनकी रीत और रस्म के कायदे भी लिखे हैं। और इसके किसी हिस्से में कविता भरी है, इस किताब का कौन हिस्सा कब और किससे बनाया गया यह मालूम नहीं है, इतना कहा जा सकता है कि कोई कोई हिस्से ईसा के जन्म के क़रीब तीन हज़ार बरस पहिले और कोई कोई हिस्से सिर्फ़ ३०० बरस ईसा के जन्म के पहिले

बनाये गये थे। ईसाई लोगों की नई इंजील और मुसल्मानों के कुरान की जड़ यही किताब हैं। मुसल्मान लोगों की बहुत सी रीत व्यवहार यहूदी बाइबिल के मुताबिक हैं। ईसाइयों ने उस में के बहुत से आचार के नियमों को छोड़ दिया है। अब यह देखना चाहिये कि यहूदियों से दुनिया में लोगों की क्या क्या भलाइयां हुईं। उन लोगों ने 'यूरोप' आदि पश्चिम देशों में केवल एक ईश्वर को मानने का धर्म चलाया, उन सब देशों के प्राचीन पण्डित लोग 'ब्रह्मवाद' धर्म मानते थे लेकिन साधारण लोगों में वह धर्म जारी न था अर्थात् पहिले वह धर्म जाति भर का न था, सिर्फ यहूदियों ने उस धर्म को सब लोगों में चलाया।



पांचवा प्रकरण।

'फ़िनिशिया' देश और वहां के लोगों का हाल।

प्रथम अध्याय।

भूमध्य सागर के पूरब किनारे पर 'फ़िनिशिया' देश था। आज कल वह जगह तुरक राज्य के इलाके है। वह देश बहुत छोटा था। दक्षिण तरफ़ 'टायर' नगर से लेकर उत्तर तरफ़ आराडस नगर तक उसकी लंबाई साठ ६० कोस थी, और पश्चिम तरफ़ भूमध्यसागर से लेकर पूरब तरफ़ लिबनस पहाड़ तक उसकी चौड़ाई क़रीब दस कोस के थी। उस देश की आबहवा बहुत अच्छी और ज़मीन बहुत उपजाऊ थी। कै एक छोटी छोटी नदियां लिबानस पहाड़ से निकल कर उस देश में बहती हैं और उनका पानी कभी कभी इतना बढ़ जाता कि दोनों किनारों के ऊपर तक चढ़ आता है उन में से 'आगेनिस' नदी सबसे प्रसिद्ध है।

'फ़िनिशिया' के नज़दीक समुद्र में एक तरह की मछली होती थी, पुराने 'फ़िनिशिया' वाले उसी मछली से लाल रंग तैयार करते थे। मालूम होता है कि अब उस तरह की मछली पैदा नहीं होती या कोई उसके उस काम को नहीं जानता। पुराने 'फ़िनिशिया'

वालों की तरह आज कल लाल रंग कोई कहीं तैयार नहीं कर सक्ता। 'फ़िनिशिया' के समुद्र के किनारे जो बालू है उससे बहुत अच्छा शीशा बनता था। लिबानस पहाड़ की खान से तांवा और लोहा बहुत निकलता है। देवदारू, सखुआ आदि बहुत तरह की लकड़ियां भी उस में होती हैं। जिन नदियों का हाल ऊपर लिखा गया है उनके सबब वे सब लकड़ियां बहुत आसानी से समुद्र के किनारे लाई जाती हैं। और वहां के बन्दर बहुत बड़े बड़े हैं, और उनमे समुद्र के उपद्रव नहीं होते, इस कारण वहां जहाज़ अच्छी तरह से बनाये और रक्खे जाते हैं। इन सब कारणों से पुराने 'फ़िनिशिया' वाले सब जगह तिजारत करते थे। विशेष करके उनके देश की चारों ओर उन दिनों बहुत सभ्य लोग रहते थे। पूरब तरफ़ सिरिया, बेबिलन, और फ़ारस देश थे, दक्षिण ओर जुडिया और मिसर थे, उत्तर ओर फ्राइजिया लिडिया और ग्रीस देश थे, और पश्चिम की तरफ़ भूमध्य सागर के दोनों ओर पृथ्वी के दो टुकड़े थे, इसीवास्ते खुश्की की राह से पूरब की चीज़ें लाकर 'फ़िनिशिया' वाले जहाज़ पर रख जहां चाहते थे वहां ले जाते थे। पहिले समय में 'फ़िनिशिया' पूरब और पश्चिम देशों की तिजारत का अड्डा था। पुराने 'फ़िनिशीय लोग काकेसीय जात वाले सेमेटिक बंश के थे, वे लोग बुद्धि विद्या और जवांमर्दी आदि में किसी जाति से कम न थे। पुराने 'फ़िनिशिया' वाले आजकल के यहूदियों के

सदृश थे, उनकी भाषा भी एकही जात की थी अक्षर भी प्रायः यहूदी अक्षरों से थे और उन लोगों का आकार भी यहूदियों सा था। 'फ़िनिशिया' वाले बहुत तिजारत करते थे और समुद्र के किनारे के शहरों में बसते थे और समुद्र के किनारे से दूर इन लोगों में से बहुत कम लोग रहते थे। 'फ़िनिशिया' के ६ नगर प्रसिद्ध थे अर्थात् अंडस, ट्रिपलिस, बाइबेस, बेराइटस, साइडन और टायर। इन में टायर नगर सब से प्रसिद्ध था, लेकिन आजकल इन सब नगरों के बहुत से हिस्से बर्बाद हो गये हैं, केवल 'ट्रिपलिस' और 'बोराइटस' रहगये हैं। पहिले समय में जिस टायर नगर की बड़ाई का कुछ ठिकाना न था, जिस को कवि लोग सुवर्णपुरी कहते थे और जहां के एक एक बनिये दूसरे देश के राजाओं से भी अधिक धनी थे; आज कल उसी टायर का नाम भी कोई नहीं जानता। वहां आजकल एक छोटा सा गांव रह गया है, वहां के बहुतेरे लोग चिड़िमार का काम करते हैं। वे लोग अपने रहने की जगह को 'सूर' कहते हैं। आज-कल के देशाटन करने वाले लोग 'फ़िनिशिया' के प्राचीन नगरों के चिन्हों को देख कर कहते हैं कि इतिहास में इस देश की बड़ाई का हाल जो कुछ लिखा है सब सच हो सक्ता है। लेकिन 'फ़िनिशिया' वालों की इन सब बड़ाइयों की बहुत निशानियां लोप हो गई हैं और जो कुछ बाक़ी भी हैं सो भी धीरे धीरे नष्ट हुई जाती हैं। पर वे लोग अपनी बुद्धि बल से जो काम कर गये हैं वे सदा

अचल रहेंगे। 'फिनिशिया' वालों ने यूरोप में अक्षर लिखने की रीति निकाली थी, सिक्के का चलन जारी किया था, तौल नाप के कायदे बनाये थे, और बहुत देशों में उपनिवेश यानी अपने देश वालों की नई बस्तियां बसा कर चारो तरफ़ बनिज फ़ैलाया था। पुराने 'फ़िनिशिया' वालों ने आदमियों की ऐसी भलाइयां कर गये हैं कि जिस से लोग आज तक "फ़िनिशिया" का ठीक इतिहास जानने के लिये बहुत यत्न कर रहे हैं।

दूसरा अध्याय।

फ़िनिशिया वालों के राजनियम और धर्म्म।

फ़िनिशीय लोगों के राज की रीति किस तरह की थी यह अच्छी तरह से हम लोगों को मालूम नहीं है; सिर्फ़ इतना जाना गया है कि पहिले उस देश के हर एक नगर में एक एक आदमी सर्दार बनकर राज्य का काम काज चलाता था। इसके बाद 'टायर' नगर वालों ने सब से प्रबल हो कर सब देश को अपने अधीन कर लिया किन्तु 'टायर' की बढ़ती के पीछे या पहिले भी 'फ़िनिशिया' में कोई स्वतन्त्र राजा नहीं था, इतिहास में लिखा है कि किसी समय

'फ़िनिशिया' वाले अपने देश के मालिक को राजा कहने के बदले 'सफेती' या 'शान्तिरक्षक' कहा करते थे। इस से मालूम होता है कि 'एशिया' के और देशों में जैसी स्वेच्छाचारी राज की रीति सदा से चली आई है वैसी 'फ़िनिशिया' वालों में जो तिजारत करने वाले थे कभी नहीं हुई थी। लेकिन ऐसा अच्छा राज रहने पर भी पुराने 'फ़िनिशिया' वालों के धर्म्म की रीत ऐसी अच्छी नहीं मालूम होती। उनमें बहुत तरह के देव देवियों की पूजा जारी थी 'बेलसीमन' 'आष्टाँटि' और 'मेलकार्टस' ये तीन बड़े देवता गिने जाते थे। 'वेलसिमन' शब्द का अर्थ स्वर्गाधिपति अर्थात् सूर्य्य है, हम लोग जैसे संध्या बन्दन के समय सूर्य्य का ध्यान करते हैं वैसे ही 'बेलसीमन' की भी उपासना की जाती थी। 'वेलसीमन' के और भी बहुत से नाम थे, जैसे 'थामज' 'आडोनिल' इत्यादि। 'आष्टाँटि' शब्द का अर्थ स्वर्ग की मालिकन है प्राचीन लोग चन्द्रमा को स्त्री कहते थे, इस से मालूम होता है कि 'फ़िनिशिया' वाले चन्द्रमा ही को 'आष्टाँटि देवी के नाम से पूजते थे, किन्तु आष्टाँटि के अनेक रूप थे, जैसे हमलोग देवी के अनेक रूप मानते हैं वैसे ही "फ़िनिशिया" वालों ने भी "आष्टाँटि" के अनेक नाम बना लिये थे। हर एक नये बरस के पहिले दिन इस देवी की पूजा बड़े धूम धाम से होती थी। कहते हैं कि उस दिन औरतें सिर मुड़ामुड़ा कर इस देवी

को पूजा करती थीं, जो सिर नहीं मुड़ाती थीं उन को कसब करके खर्ची कमानी पड़ती थी और उसी खर्ची को कमाई से उनको देवी की पूजा चढ़ानी पड़ती थी। यही उनके पाप का प्रायश्चित था।

"फ़िनिशिया" देश में "आमेडोनिस" नाम एक नदी थी, बर्सात में उस नदी का पानी बहुत लाल हो जाता था, इसका कारण यह था कि "लिबानस" पहाड़ में एक तरह को लाल मिट्टी थी, बर्सात के पानी से वह नदी में बह आती थी "फ़िनिशिया" वाले इसका कारण कुछ और ही बतलाते थे, वे कहते थे कि एक दिन "वीनस" देवी "बेलसीमन" के अवतार परम सुंदर 'आडोनिस' नाम एक युवा पुरुष को देख कर उस पर मोहित हुई इस पर 'वीनस' के स्वामी 'मार्श' देव ने अति क्रोध कर बन शूकर का रूप धरा और 'आडोनिस' को मारडाला। 'आडोनिस' मरने के बाद यमलोक में गया वहां की देवी 'प्रसर्पीन' का बिवाह इसके साथ हुआ। लेकिन 'आडोनीस' के मरने पर भी 'वीनस' का मन उसी पर था, वह भी 'आडोनीस' के पीछे पीछे यमलोक गई, वहां 'प्रसर्पीम' के साथ उसकी बड़ी लड़ाई हुई। इस के बाद दोनों में यह बात ठहरी कि 'आडोनिस' छ महीने 'प्रसर्पीन' के साथ और छ महीने वीनस के साथ रहा करे। फ़िनिशिया वाले कहते थे कि बन शूकर के दांतों के लगने से 'आडो-

'नीस' के शरीर से जो लोहू बहा था उसी से 'आडोनिस' नदी के पानी का रंग लाल हो गया है। अब बर्षा के समय उस नदी का पानी लाल होजाता है तो वहां की औरतें बड़ा ग़म मनाती हैं।

पंडित लोग कहते हैं कि इस इतिहास का एक गूढ़ मतलब है—वे 'आडोनीस' का अर्थ 'उत्तरायन' और 'पर्सपीन' का 'दक्षिणायन' बतलाते हैं और बन शूकर का अर्थ हेमन्त ऋतु लगाते हैं। वह सूर्य्य को छः महीने "दक्षिणायन" में "पर्सपीन" के साथ रखता है और उसके बाद छः महिने 'उत्तरायन' या 'वीनस' देवी के साथ रहने देता है। 'मेलिकर्टस' देव की पूजा इन सबों से भी भयानक थी, जब जहाज़ रेती पर चढ़ जाता था या ख़राब हवा से तिजारत के काम रुक जाते थे या और किसी तरह की बिपद आपड़ती थी तो फ़िनिशिया वाले उस देवता को नरबलि चढ़ाते थे। मा बाप भी बिपद से छूटने के लिये आप अपने लड़कों को आग में आहुति देकर 'मेलिकर्टस' को खुश करते थे। पुराने 'फ़िनि शिया' वालों ने धर्म्म की बहुत उन्नति नहीं की थी। उन लोगों का मन सिर्फ़ तिजारत में लगा था, वे लोग खुश्की राह से हिन्दुस्तान तक आदमी भेजते थे और वहां से अपने काम की चीज़ें मंगवाते थे, और उत्तर में वे लोग भूमध्य सागर की राह से 'ब्रिटन' और शायद 'बाल्टीक' समुद्र तक जाया करते थे। 'स्पेन' के सोना, रूपा, लोहा आदि धातु—

'इंगलाण्ड' का अम्बर—'सरकेशिया' के सुन्दर दास दासी —'आरमेनिया' के घोड़े और खच्चड़—हिन्दुस्तान के कपड़े, हाथी दांत, आबनूस की लकड़ी—'पालेष्टीन' के अनाज, सहत, तेल, और गोंद—'सिरिया की ऊन और इसी तरह से और बहुत देशों की अच्छी अच्छी चीज़ें 'फ़िनिशिया' में भेजी जाती थीं। प्राचीन समय में 'फ़िनिशिया' वालों के बराबर और किसी जाति के लोगों ने तिजारत में उन्नति नहीं की थी। फ़िनिशिया के लोग दूसरे देश के लोगों को समुद्र की राह नहीं बतलाते थे, अगर किसी दूसरे देश वालों का जहाज़ उन लोगों के जहाज़ के साथ जाता था तो वे लोग उसे दग़ाबाजी से राह भटका देते थे, और जब देखते थे कि किसी तरह विदेशी जहाज़ संग नहीं छोड़ता तो अपनी जान पर खेल अपना ही जहाज़ खराब राह से ले जाते थे या यहां तक करते थे कि आप अपना जहाज़ डुबा देते थे। इस लिये किसी दूसरे देश वालों का जहाज़ फिर अपने देश को लौट कर कभी नहीं जा सकता था बरन समुद्र में मारा पड़ता था। इस तरह उस समय दुनियां की सब तिजारत 'फ़िनिशिया' वालों के हाथ में थी, इस लिये वे लोग जहाज़ चलाने में बहुत निपुण होते थे, उस समय में जब किसी देश का राजा जहाज़ बनवाना चाहता था तो 'फिनिशिया' के कारीगरों से बनवाता था। और अगर किसी को समुद्र की

राह से किसी दूर देश में जाना जरूर पड़ता था तो उसको 'फ़िनिशिया' के जहाजी माझियों की सहायता लेनी पड़ती थी। 'नेको' नामी मिसर देश के राजा ने आफ्रिका के दक्षिणी हिस्सों का हाल जानना चाहा था, तो उसने इस काम के लिये 'फ़िनिशीय' जहाजी मांझियों को नौकर रक्खा था। वे लोग लाल समुद्र में जहाज़ पर सवार हुए और जाते जाते 'गुडहोप' अन्तरीप के गिर्द घूमकर फिर उत्तर आये और 'जिबराल्टर के मुहाने से भूमध्य सागर में पैठे और उसी तरह चलते चलते 'मिसर' देश को नील नदी में वे लोग फिर लौट आये। इस सफ़र में उन लोगों को पूरे तीन बरस लगे थे।

यह सच है कि फ़िनिशीय पुराने समय के सब लोगों से जहाज़ के काम में बहुत होशियार थे, पर वे लोग चुम्बक पत्थर का गुन नहीं जानते थे और आज कल के 'यूरोप' वालों को तरह ज्योतिषविद्या भो नहीं जानते थे। और वे लोग बड़े बड़े जहाज जैसे कि आज कल बनते हैं नहीं बना सक्ते थे, इन्हीं सब सबबों से उनके जहाज़ समुद्र के बीच में से नहीं चल सक्ते थे, वे लोग सदा समुद्र के किनारे किनारे अपने जहाज़ों को लेजाया करते थे। जब उनको समुद्र का किनारा नहीं नज़र आता था तो वे अक्सर राह भूल जाते थे और तब उनके जहाज़ मारे पड़ते थे। इस लिये समुद्र की सफ़र

में उन लोगों का बहुत समय लगता था। जहाज़ के जाने में बहुत दिन लगता था इसी लिये उन लोगों को बहुत राह खर्च भी साथ लेना पड़ता था, लेकिन उनके जहाज़ छोटे होते थे उन में बहुत से असबाब नहीं अंट सक्ते थे। फ़िनिशिया वालों ने इसका उपाय यह किया कि रास्तों में बहुत से उपनिवेश यानी नई बस्तियां टिकने के लिये बसाईं, इन सब नई बस्तियों के लोगों ने भी अपने देशों के चारो तरफ़ तिजारत फैला रक्खी थी। इस कारण वे लोग भी बहुत धनी और ज़ोरावर हो गये थे। फ़िनिशिया वालों की नई बस्तियां बहुत सी जगहों में थीं, उन में से आफ्रिका में 'कार्थेज' और 'यूटिका' और 'स्पेन' देश में 'केडिस' बहुत प्रसिद्ध थीं। इन सब नईबस्तियों के रहने वालों ने भी और बहुत सी छोटी छोटी बस्तियां बसाई थीं। 'फ़िनिशिया' बहुत छोटा देश था, लेकिन उस की तिजारत और नई बस्तियां बहुत थीं और वहां के लोग धनी और कारीगरी और ज्योतिष आदि काम की विद्या में बड़े निपुण थे। इस लिये अगर फ़िनिशिया की आज कल के किसी देश के साथ तुलना करना चाहें तो सिर्फ़ 'इंगलैण्ड' से हो सक्ती है। जैसे आज कल हम लोग किसी अच्छी कारीगरी को देखते ही कहते हैं कि विलायती है वैसे ही पुराने समय के लोग भी अति सुन्दर शिल्प को देखते ही उस को 'साईडोनीय' कहते थे।

तीसरा अध्याय

फ़िनिशियावालों के पुरान की कथा।

फ़िनिशिया वालों ने बहुत पुराने समय से अपना हाल लिखना शुरू किया था, वहां जो लोग काबिरि नाम पण्डित के बंश के थे वे बहुत यत्न से अपने देश के पुराने हालों को लिख रखते थे। लेकिन उन के सब लेख आज कल नहीं मिलते उन में से कुछ थोड़े से 'सांकनियाथो' नाम एक पुराने फ़िनिशिया के पण्डित ने संग्रह कर रक्खे थे। लेकिन उस संग्रह में से भी बहुत से बर्बाद हो गए हैं। फ़रलो नाम एक ग्रीस के पण्डित ने उस संग्रह के कुछ थोड़े हिस्सों का उलथा यूनानी भाषा में किया है और उस यूनानी किताब का उलथा अंग्रेजी में हुआ है उस की ख़ास बातें इस अध्याय में लिखते हैं।

'सांकोनियाथो' ने लिखा है कि पृथ्वी और जीव जन्तु की रचना के बाद 'प्रोटोगोनस' अर्थात् सब के पहिले बना, और 'इयन' अर्थात जीवन नाम आदि स्त्री पुरुष उत्पन्न हुए। वृक्ष का फल आदमियों के खाने की चीज़ है यह बात पहिले इसी इयन ने जनाया इस स्त्री पुरुष को जिनस नामी एक पुत्र और जिनिया

नामी एक कन्या हुई। इन दोनों ने किसी समय प्यासे हो कर वेलसिमन (सूर्य्य) की ओर हाथ उठा कर पानी मागा और सूर्य्य देव ने पानी दे इन की प्यास बुझाई। इन्हीं जिनस और जिनिया के तीन पुत्र हुए उनके नाम 'फस' (आलोक) फर (ताप) और फ्लक्स (अग्निशिखा) थे, इन लोगों ने लकड़ियों को आपस में घस कर आग सिकालने की तद्बीर निकाली थी, और इन्ही लोगों ने वायु और अग्नि की पूजा जारी की थी। कहते हैं कि इन सबों के लड़के बहुत लंबे चौड़े थे उन्हीं के नाम से 'लाइबेनस' आदि बड़े बड़े पर्व्वतों के नाम पड़े हैं। ये दैत्य लड़के पहिले पहल झोपड़ी बना कर रहते थे और जानवरों का चमड़ा पहनते थे और हर दरख़्त की डालियों पर सवार हो कर पानी पर तैरते सैर किया करते थे। इनकी छठी पुश्त में जो पैदा हुए उन लोगों ने शिकार करना और मछली पकड़ना सीखा। सातवीं पुश्त के लोगों ने लोहे का काम और ईंटे का मकान बनाना सीखा। आठवीं पीढ़ी के लोग धरती जोतने लगे, दसवीं पीढ़ी के लोग मवेशी पालने लगे। ग्यारहवों पुश्त में युरेनस् (आकाश) नाम पुत्र और जी (पृथ्वी) नामी कन्या हुई, इनके बेटे 'क्रोनस' (शनिश्चर) और आस्टार्टी (चन्द्र) हुए। क्रोनस की और तीन सौतेली बहन हुईं उनके नाम एमार्मिन, होरा और रीया (अर्थात भाग, रूप, और अच्छी बुद्धि) पड़े। इन तीनों

के गर्भ से क्रोनस के कई लड़के पैदा हुए। क्रोनस ने जिस लड़के को जिस देश का अधिकार दिया वह वहां का बड़ा देवता माना जाने लगा। क्रोनस के प्रधान मंत्री का नाम 'थख' था, वह भी एक देवता था, उसी देवता की आज्ञा से ये सब गूढ़ बातें लिखी गईं और ऊपर लिखी हुई देवताओं की मूर्त्तियां बनाई गईं। क्रोनस देवता के चार आंखें थीं, दो आगे और दो पीछे, उन में दो खुली और दो बन्द रहती थीं, उसकी पीठ पर चार डैने थे उन में से दो बन्द और दो खुले हुए थे, क्रोनस के सिर पर भी दो पंख थे 'सांकोनियाथो' कहता है कि इन सब गूढ़ बातों का ठीक मतलब किसी बड़े धार्मिक मनुष्य को मालूम था, उससे फ़िनिशिया के अच्छे अच्छे पण्डित सीखते थे, उन सब बातों का अर्थ लिखा नहीं जा सकता सिर्फ अपने अपने गुरू से पण्डित लोग जान सकते हैं। यद्यपि उन बातों का असल अर्थ नहीं समझा जा सकता है तो भी विद्या की रीति के बारे में जो जो बातें पहिले कही गई हैं उनके साथ ये सब बातें बहुत मिलती हैं। और इस में भी कुछ संदेह नहीं होता कि फ़िनिशिया देश वालों के पुरान का हाल दूसरे देश वालों के पुरान के साथ मिलता है। सब देशों के पुरान की कथा, कुछ तो ठीक हाल और कुछ मिथ्या की कहानियां संग्रह कर बनती हैं।

फ़िनिशिया का सब से पहिला राजा ‘ आजिनर ’ था, उसने मिसर से उस देश में आकर ईडन नगर बसाया था। कहते हैं कि ‘ क्रीट टापू ’ के जुपिटर नाम किसी राजा ने ‘ आजिनर ’ राजा की यूरोपा नाम सुन्दर कन्या को हर ले गया, इस लिये ‘ आजिनर ’ ने अपने बेटे ‘ काडमस् ’ को हुकुम दिया कि तुम यूरोपा को छुड़ा लाओ और जब तक उसको मेरे पास न लासको तब तक अपना मुंह मुझे न दिखाओ, ‘काडमस्’ ने अपने जी में सोचा कि मैं अपनी बहन को न छुड़ा सकूंगा, इस लिये थोड़े से आदमियों को अपने साथ लेकर अपने मुल्क से चल दिया और ग्रीस के इलाके ‘बियोशिया’ में जा एक उपनिवेश यानी नई बस्ती बसाया, उसके बसाये हुए नगर का नाम कुछ दिनों के बाद ‘ थिबस ’ हुआ, ग्रीस के इतिहास में यह नगर बहुत ही प्रसिद्ध है। काडमस ने ग्रीस में जाते ही वहां के असभ्य लोगों को खेती बारी का काम और लिखना पढ़ना सिखाया, आजिनर के मरने के बाद उसका बेटा ‘ फ़िनिकस ’ राजा हुआ। कहते हैं कि उसी ने पहिले पहल लाल रंग बनाने का उपाय निकाला। मालूम होता है कि वह बहुत ही प्रबल राजा था, क्योंकि उसी के नाम से सारे देश का नाम फिनिशिया रक्खा गया है, फ़िनिकस के बाद जो राजा हुआ उसका कुछ भी हाल मालूम नहीं है, ग्रीस वालों के बड़े कवि ‘ होमर ’ ने अपनी किताब में लिखा है

कि जब ग्रीक वालों ने 'ट्राय' नगर पर चढ़ाई की थी तब 'फ़िनिशिया' के प्रसिद्ध राजा 'कालिस' ने उन लोगों को शरण दी थी। ऊपर लिखे हुए तीन राजाओं का हाल ग्रीक लोगों की किताबों से मिला है लेकिन उस हाल के साथ इतनी गप मिली हुई है कि उस में सच कितना है ठीक नहीं मालूम हो सकता। इस लिये इसे भी फ़िनिशिया वालों के पुराण की कथा के साथ लिख दिया है, प्रमाणिक हाल अगिले अध्याय में लिखा जायगा।

चौथा अध्याय।

फ़िनिशिया के राजाओं का पुराना हाल।

किसी भी जाति के पुराण की कथा और उसके पुराने ठीक हालों को आपस में मिला के देखने से यह आ... होता है कि सब देशों के पुराण की कथा साफ़ और पूरी है, क्यों कि कहते हैं कि सब देशों के पुराण लिखने वालों पर देवताओं की कृपा रहती थी। वे लोग किसी की सहायता बिना आपही अनायास देव बल से सब पुराने हालों को जान लेते थे, और लिख देते थे, लेकिन जो लोग

ठीक सही हाल लिखना चाहते हैं उन लोगों को पुरानी किताबें देखनी पड़तीं हैं। बहुत से लिखने वालों के भिन्न भिन्न मत मिलाने पड़ते हैं और पुराने सिक्के और कीर्ति स्तंभ आदि वस्तुओं को देखना भालना पड़ता है। यह सब करने पर भी बहुत सी जगहों में उनकी अक़्ल चकरा जाती है क्यों कि पुरानी किताबें हर एक बातों की सदा सब जगह नहीं मिलतीं, और [illegible] बातों में सब लिखने वालों का मत एक नहीं होता इस लिये उन लोगों का बयान बहुत जगह अधूरा रह जाता है।

'फ़िनिशिया' वालों के पुराण की कथा जो पहिले अध्याय में लिखी गई है सो 'यह्' देवता की कृपा से बनी थी और प्रायः सब प्रकार पूरी कही जा सकती है। उस में पहिले मनुष्य और पहिली स्त्री के नाम और उनके पुत्र पौत्र वग़ैरह कई पीढ़ियों तक का कुछ हाल लिखा है, लेकिन फ़िनिशिया वालों का ठीक सही इतिहास लिखने के लिये कितनी खाक छानने पर भी उस देश के राजाओं के नाम तक का पता नहीं लगता। कहते हैं कि नोया के पर पोते 'साइडन' ने फ़िनिशिया के 'साइडन' नगर को बसाया था। यह बात पन्द्रह सौ अस्सी बरस ईसा के जन्म के पहिले हुई, लेकिन इस के बाद बहुत दिनों तक साइडन नगर के और किसी राजा का पता नहीं मिलता। चार सौ इक्यासी बरस ईसा के जन्म के पहिले साइडन का राजा फ़ारस के राजा 'ज़र्क्सीस' के साथ

ग्रीस देश में दिग्विजय करने गया, इस के बाद कुछ दिनों तक साइडन का कुछ भी हाल नहीं मिलता। तीन सौ इक्यावन बरस ईसा के जन्म के पहिले वहां का एक राजा फ़ारस के राजा 'दरायुस 'अर्कस' से लड़ाई में हार गया। इन सब हालों के लिखने से कुछ फ़ायदा नहीं, भला कई एक मरे हुए राजाओं के सिर्फ़ नाम लिखने से क्या फल हो सक्ता है। इस लिये यहां सिर्फ़ ऐसे ठीक हालों को लिखते हैं कि जिनके पढ़ने से अच्छा उपदेश या उस समय के फ़िनिशिया वालों के रीति व्यवहार के बारे में कुछ जाना जा सक्ता है।

एक हजार छयालीस बरस ईसा के जन्म के पहिले 'हाईराम' नामी एक राजा 'टायर' नगर में राज करता था। उसको विद्या का बड़ा ही शौक था; उसके समय में पालिष्टीन का राजा 'सलिमान' भी दुनियां के सब पण्डितों में बड़ा गिना जाता था। इन दोनों राजाओं में बड़ी प्रीति थी, ये दोनों आपस में कठिन कठिन पहेलियों का पूछ पाछ करते थे जो उन पहेलियों को बूझ नहीं सकता था वह कुछ धन हारता था। पहिले समय के पण्डित लोग गूढ़ बचनों के अर्थ लगाने में बहुत समय बिताते थे। उन दिनों पण्डितों की परीक्षा इसी में हुआ करती थी। इन दोनों राजाओं की लिखी हुई चिठ्ठियां आज तक हैं उन को देखने से यह मालूम होता है कि फ़िनिशिया के लोग शिल्प विद्या में बड़े निपुण

थे। फिनिशिया के कारीगरों की सहायता से पालेस्टीन के राजा ने अपनी राजधानी 'यरुसालेम' में जगत प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया था। हाईराम ने भी अपने देश में बहुत से देवालय और नहरें बनवाई थीं।

नौ सौ बासठ बरस ईसा के जन्म के पहिले 'पिग्मेलियन' नामी एक मनुष्य 'टायर' के राजसिंहासन पर बैठा, उसका बहनोई 'मेलीकार्टस' देवता का पण्डा था; इसने पण्डे के काम से बहुत रुपये जमा किये थे; राजाने उस का धन लेने के लिये उस को मारडाला। लेकिन राजा की बहन डाइडो सब रुपये लेकर अपने मुल्क से चली गई और 'कार्थेज' नगर बसाकर वहां रहने लगी। यह 'कार्थेज' नगर कुछ दिन बाद बहुत प्रसिद्ध हो गया।

सात सौ सत्रह बरस ईसा के जन्म के पहिले 'ईलूइलियस' नाम एक 'टायर' का राजा था। उस समय में 'आसिरिया' के राजा 'सलमानसर' ने फ़िनिशिया देश पर चढ़ाई की। वह साठ जहाज़ तैयार कर 'टायर' वालों के साथ लड़ने आया, लेकिन टायर वालों ने सिर्फ़ बारह जहाज़ों से उस को जीत लिया। 'सलमानसर' डर कर अपने देश को लौट गया।

पांच सौ बहत्तर बरस ईसा के जन्म के पहिले 'बेबिलन' के राजा 'नेबूकड्नेसर' ने "टायर नगर पर चढ़ाई की। उस की सेना बहुत थी तौभी 'टायर' वाले तेरह बरस तक उस के साथ लड़ते रहे। निदान उसने टायर नगर के बाहर

मिट्टी का एक इतना बड़ा टीला बनवाया कि वह नगर की दिवार से भी ऊंचा हुआ, तब उसकी सेना उस पर चढ़ कर नगर पर अस्त्र बरसने लगी; इस लिये टायर वाले जहाज़ों पर चढ़ भाग गये और कुछ दूर जाके एक टापू में एक नया नगर बना कर रहने लगे, उस नगर का नाम नया 'टायर' पड़ा। लेकिन उस नये टायर के लोगों ने नेबूकड़नेसर' को ताबेदारी क़बूल की और उसको खुश करके वहां से बिदा किया। उसी समय से 'फ़िनिशिया' देश आसीरिया राज्य के अधीन हुआ। जब फ़ारस वालों ने बेबिलन' राज फ़तह किया तब उस के साथ फ़िनिशिया देश भी फ़ारसियों के हाथ में आगया लेकिन फ़ारस के राजा लोग फ़िनिशिया वालों को बहुत मानते थे फ़िनिशिया के कारीगरों से जहाज़ बनवाते थे और फ़िनिशिया के माझियों से जहाज़ चलाने का काम लेते थे। लेकिन आसीरिया और फ़ारस के राज्य के समय में फ़िनिशिया वालों में से एक एक आदमी को सर्दार बना कर देश का बन्दोबस्त किया जाता था। उन राजाओं ने फ़िनिशिया के राज का काम करने के लिये अपने देश के लोगों को मुक़र्रर नहीं किया था।

चार सौ अस्सी बरस ईसा के पहिले 'स्ट्रेटो' नामी एक आदमी फ़िनिशिया की राजगद्दी पर था; उस के राजा होने का हाल यह है। 'टायर' वाले तिजारत के ज़रिये से धन में बहुत बढ़ गये थे, धन के होने से लोगों को सुख भोग की ख़्वाहिश होती है और तब मिहनत अच्छी

नहीं लगती। फ़िनिशिया वाले भी अपने दासों ही से सब काम लेने लगे इस लिये उन के प्रधान नगर टायर में दास लोग बहुत बढ़ गये। और उन लोगों ने एक मत करके एक ही रात में अपने सब नगर वाले मालिकों को मार डाला और उन की स्त्रियों से बिवाह कर कर उन के घरों के आप मालिक बन बैठे। दास लोगों में तिलाक दिया गया था इस कारण कोई भी मालिक नगर में बचने न पाया, केवल एक 'ष्ट्रेटो' के दास ने उस को बचा कर छिपा रक्खा था। दास लोग इस तरह से सारे नगर को अपने कब्जे में कर के यह बिचार करने लगे कि उन लोगों में से कौन और कैसे राजा हो। निदान यह बात ठहरी कि वे लोग ठीक आधीरात के समय नगर के पूरब तरफ़ बड़े मैदान में इकट्ठे हों और दूसरे दिन सुबह को सूर्य्य देव जिस को सब से पहले दर्शन दें वही राजा हो। ष्ट्रेटो के दास ने अपने मालिक से यह सब हाल कहा तब ष्ट्रेटो ने उसे सिखाया कि तुम उस मैदान में जाकर पश्चिम तरफ़ नगर की ओर देखते रहियो। सब से पहिले सूर्य्य देव तुमहीं को दर्शन देंगे उसके दास ने ऐसाही किया; और पुरब तबफ़ सूर्य्य देखाने के पहले ही 'टायर' के बहुत ऊंचे कोठों पर सूर्य्य की धूप पड़ी, तो उस दास ने लोगों को दिखाया; तब लोग तअज्जुब करने और सोचने लगे कि इस आदमी ने अपनी अक्ल से कभी नहीं ऐसा काम किया है, इस को सिखाने वाला जरूर कोई दूसरा है। यह

ख़याल कर उनलोगों ने उस्से बहुत तरह से पूछा; तब उसने असल बात कह दी। तब दास लोगों ने बिचार किया कि जो आदमी ऐसे समय में बचा है उसका भाग बेशक बहुत प्रबल है इसलिये उसी को राजा बनाना चाहिये। 'ष्ट्रेटो' इस तरह से राजा हुआ। कुछ दिन तक 'ष्ट्रेटो' के वंश वालों ने सुख चैन से राज किया।

तीन सौ तेतीस बरस ईसा के पहले सिकन्दर ने 'टायर' के निकट आकर उस नगर में घुसना चाहा, लेकिन नगर वालों ने उसको रोका; इस लिये बड़ी लड़ाई मची। 'टायर' नगर टापू में था, केवल पानी की राह उसमें जाना पड़ता था; और जहाजी लड़ाई में 'फ़िनिशीय' लोग बहुत प्रबल थे; इस लिये सिकन्दर ने बड़ी मुश्किलों से समुद्र में एक बांध बाधा, और उस पर से पार उतर कर नगर पर हमला किया और फ़तह कर लिया। वह बांध अब तक बना है, इस बांध के बने रहने से 'टायर' जैसा पहले टापू सा देख पड़ता था अब वैसा नहीं मालूम होता, उस के तीन तरफ़ पानी और एक तरफ सिकन्दर का बांधा बांध है। सिकन्दर ने इस तरह से 'टायर' को फ़तह किया और बिलकुल बर्बाद कर दिया। कहते हैं कि इस लड़ाई के प्रारम्भ ही में 'टायर' का प्रसिद्ध देवता शत्रु को तरफ जाने चाहता था; नगर वालों ने अपने पुरोहितों से यह बात सुन कर उस को सोने की जंजीर में बांध रक्खा था। सिकन्दर ने 'टा-

यर ' में दाखिल होकर उस देवता की बड़ी स्तुति की और आप अपने हाथ उस के बंधन को खोल दिया।

'हेपिस्टियन' सिकन्दर का बड़ा प्रिय था; 'सिकन्दर' ने 'फिनिशिया' के 'साइडन' नगर को फतह करके उससे कहा कि तुम जिसे चाहो उसी को इस नगर का राज दो। जिस दिन यह बात हुई उसके एक दिन पहले 'फिनिशिया' के किसी बड़े आदमी के यहां 'हेपिस्टियन' की मेहमानी हुई थी, इस ने उसको राजा बनाना चाहा; लेकिन उस आदमी ने राज के लोभ में न आकर यह कहा कि मुझे माफ कीजिये क्योंकि मैं राज बंश का नहीं हूं, इस लिये मुझे राज लेना उचित नहीं, 'हेपिस्टियन' को उस आदमी का यह नेक चलन देख बड़ा ताअज्जुब हुआ और कहा कि तुम आप राजा होना नहीं चाहते हो तो राजा के बंश के किसी आदमी को बताओ हम उसी को राजा बनावेंगें। उसने 'वेलेनिमस' का नाम बताया; वह राज बंश में उत्पन्न हुआ था, लेकिन ऐसा दरिद्र हो गया था कि अपने हाथ से खेती बारी कर अपना दिन काटता था। जिस समय 'हेपिस्टियन' के आदमी लोग उसके पास राज की खिताब देने और खिलत पहराने गये, उस वक्त वह फटा पुराना कपड़ा पहने कुंए से पानी भर रहा था। राजा होने पर भी उसका स्वभाव कुछ न बदला; वहां के लोग उस के नेक चलन का

हाल पहले ही से जानते थे इस लिये उसके राजा होने पर सब लोगों ने बड़ी खुशी जाहिर की।

छठा प्रकरण।

"असीरिया" और "बेबिलोनिया" वालों का बयान।

पहला अध्याय।

असल "असीरिया" देश "टाइग्रीस" नदी के पूरब किनारे पर था। "असीरिया" का बड़ा हिस्सा आज कल "कुर्दस्थान" में मिल गया है; लेकिन "असीरिया" वालों ने "टाइग्रीस" और "यूफ्रेटीस" के बीच के सब देशों को, और "यूफ्रेटीस" के पार पश्चिम के कुछ देशों को अपने राज में मिला लिया था, इस लिये "असीरिया" कहने से कभी कभी ऊपर लिखेहुए सब देश भी समझे जाते हैं। "टाइग्रीस" नदी के पूरब ओर जो देश था उस में आर्य्य जाति के लोग रहते थे। और उस नदी के पश्चिम का देश 'सेमिटिक' जाति का आदि निवासस्थान था, इस लिये कह सकते हैं कि "असीरिया" राज में दो जाति के लोग रहतेथे; उन में से आर्य्य लोग किसी समय बहुत प्रबल हो गये थे; और अपने परोसी "सेमिटिक" लोगों को अपने अधीन कर

लिया था। उस आर्य्य लोगों की राजधानी का नाम "निनेवा" नगर था; आज कल "एशियाटिकटर्की" के जहां "मोसल" नगर है; उसी के निकट किसी जगह में "निनेवा" राजधानी थी। "बटा" नामी एक फ़ांसीसी और "लेयार्ड" नामी एक अंगरेज़ ने वहां की बहुत सी जगहों को खोद कर प्राचीन "निनेवा" के बहुत से चिन्ह निकाले हैं। उन्होंने जिन खोदी हुई पुरानी मुर्तियों और बहुत सी दूसरी चीजों को निकाला है, उन सबों को देखने से यह मालूम होता है कि किसी समय "निनेवा" शहर वाले शिल्प-विद्या में बहुत निपुण थे। और उन मूर्ति आदि चीजों में उस पुराने समय की बहुत सी बातें भी खोदी हुई हैं, उन में खोदे हुए अक्षरों के ऊपर का हिस्सा पतला और नीचे का मोटा है; इस कारण उन को "सूच्यग्र" कहते हैं। आज तक उन "सूच्यग्र" अक्षरों के पढ़ने का कोई उपाय नहीं निकला है; अगर उस का कोई उपाय मालूम हो तो "असीरिया" वालों के पुराने इतिहास की बहुत सी बातें मालूम हो जांय; आज कल "असीरिया" वालों का हाल अच्छी तरह से नहीं मालूम

"यहूदी" लोगों की प्रसिद्ध "बाइबल" नाम किताब में लिखा है कि "आसर" नामी किसी आदमी ने "बेबिलन" से जाकर "निनेवा" नगर को बसाया था। लेकिन "यूनानी" किताबों से यह मालूम होता है कि "निनेवा"

नगर "वेबिलन" से भी पहले बसा था। यूनानियों का यह मत है कि इस नगर का बसाने वाला "नाइनस" था; इस ने बहुत से देशों को जीत कर निदान "वाकट्रा" नगर पर चढ़ाई की; वहां वह बड़ी बिपत में पड़ा और अपने एक सेनापति की स्त्री "सेमिरेमिस" की चतुराई से उस बिपत से छुटकारा पाया, इसी कारण "सेमिरेमिस" से बिवाह किया। और अपने मरने के समय उस को अपनी राज गद्दी दे गया। "सेमिरेमिस" ने बहुत देशों को बिजय किया और प्रसिद्ध "वेबिलन" नगर बसाया।

लिखने वालों में ऐसे ऐसे मत भेद पड़ने के कारण "असीरिया" वालों के पुराने ठीक हाल का पता लगना बहुत कठिन है। "बाइबिल" से यह मालूम होता है कि "असीरिया" वालों ने बहुत प्रबल हो कर "वेबिलन" "सीरिया" "पैलेसटीन" "फिनिशिया" आदि अनेक देशों को जीता था; और कभी कभी 'मिसर' देश पर भी चढ़ाई की थी। कहते हैं कि "फल" नामी "असीरिया" के राजा ने पश्चिम "पैलेसटीन" तक अपना अधिकार बढ़ाया था, उस के बाद "टिगलाथपाइलेसर" ने "सीरिया" की राजधानी "डमास्कस" नगर को ले लिया था और वह 'यहूदियों' से भी कर लेता था। उस के पीछे "सलमानसूर" नामी किसी राजा ने "फ़िनिशिया" आदि बहुत देशों को बिजय कर "इसराइल" राज को बर्बाद किया और वहां के रहने वाले "यहूदियों" को क़ैद कर ले गया;

उस राज के वारिस "सानहेरिब" ने 'मिसर' पर चढ़ाई की। उस के बाद "आसारहाडन" नामी किसी राजा ने "निनेवा" नगर में राज किया; इस के समय से "असीरिया" वालों का जोर धीरे धीरे घटने लगा; निदान "वेबिलन" नगर के राजा "नवपालासर" और "मिडिया" के राजा "काइआक्सरस" ने आपस में मिल कर सिर उठाया और "निनेवा" नगर को जड़ मूल से नाश किया। यह बात ६०५ बरस 'ईसा' के जन्म के पहले हुई।

असीरिया" राज का यह सब हाल "बाइबल" से मिला है। पर 'यूनानी' लिखने वालों ने लिखा है कि 'सेमिरेमिस' ने बहुत से देशों को जीत कर अन्त को 'हिन्दुस्तान' पर चढ़ाई की; लेकिन 'हिन्दुस्तान' के महा प्रतापी राजा 'इस्टाब्रोबेटिस' ने उस को मार हटाया इस लिये "सेमिरेमिस" का जी टूट गया और वह 'वेबिलन' नगर को लौट आई। तब उस का बेटा पापी 'निनियास' ने उस को मार डाला। 'निनियास' ने राजा हो कर सिर्फ़ भोग बिलास में अपना दिन बिताया। उस के पीछे और उनतीस राजाओं ने भी वैसे ही सुख भोग में अपना दिन काटा; सबों के पीछे जो 'सार्डनापालस' राजा हुआ वह बहुत ही नालायक़ और ऐय्याश था। वह औरतों की तरह सिंगार करता था सदा रनिवास ही में रहता था और राज काज कुछ भी न देखता और न समझता था; इस लिये 'वेबिलन' और 'मिडिया' वाले औसर पाकर उस से

बिगड़ गये और चढ़ आये। तब 'सार्डनापालस' ने बिना युद्ध ही आप अपने को मार डाला, और तभी से 'निनेवा' का नाम लुप्त गया।

"असीरिया" के जो ये दो तरह के हाल लिखे गये हैं उन में जो 'बाइबल' में लिखा है वही अधिक सच मालूम होता है। क्योंकि 'यूनान' वालों ने जो हाल लिखा है उस में बहुत जगह दोष देख पड़ते हैं। यह बात संभव नहीं मालूम होती कि 'सेमिरेमिस' और 'नाइनस' सच सच दो आदमी रहे हों। यथार्थ में 'नाइनस' केवल 'निनेवा' नगर के अधिष्ठाता देवता का नाम था और 'सेमिरेमिस' 'सीरिया' देश की प्रधान देवी का नाम था। उन दोनों के जय करने के वर्णन से किसी केवल 'असीरिया' के पुराने समय की बड़ाई दिखानी है और दो किसी सच मनुष्यों की बड़ाई का वर्णन नहीं है।

पहले कह आये हैं कि 'बाइबल' के अनुसार 'वेबिलन' नगर 'निनेवा' से भी पुराना था। 'जलप्लावन' के कुछ दिन पीछे वह शहर बसाया गया था; उस का पहला राजा 'निमरूद' था। कुछ दिन बाद वह नगर 'निनेवा' के राजाओं के अधिकार में आया। इस तरह 'वेबिलन' पांच सौ बरस से भी कुछ अधिक काल तक 'असीरिया' वालों के अधीन रह कर फिर स्वाधीन हुआ। 'असीरिया' वालों ने फिर उस नगर को बिजय किया; निदान ६०५ बरस ईसा के जन्म के पहले उन लोगों का राजा

'नवपलासर' 'निनेवा' को बर्बाद कर फिर स्वाधीन हुआ।

'नवपालासर' का बेटा 'नेबूकडनसर' बड़ा प्रतापी था; उस ने 'सर्सेसियम' की लड़ाई में 'मिसर' के राजा 'नेको' को जीत लिया। उस के बाद वह 'जूडा' प्रदेश पर चढ़ाई कर बड़े बड़े यहूदियों को कैद कर ले गया। इस के पीछे उस ने 'फिनिशिया' और मिसर देशों को भी जय किया; लेकिन 'नेबूकडनसर' के बाद जितने राजा हुए वे प्रतापी न हुए; इस लिये 'वालाथाजार' के समय 'फारस' देश के राजा 'साइरस' ने 'बेविलन' को जय किया।

'वेविलन' नगर बहुत बड़ा था। इस का आकार चौखूंटा था। इस के बीच से 'यूफ्रेटिस' नदी बहती थी; इस के चारों तरफ़ ईंटे की दीवार थी, और बड़ी चौड़ी खांई भी थी। इस नगर का घेरा तीस कोस से कम न था; इस में बहुत से मनोहर बगीचे भी बने थे। ऊंचे टीले पर तरह तरह के वृक्ष लगा कर एक 'क्रीड़ावन' बना था; वह दुनिया की आश्चर्य चीजों में से एक था। कहते हैं कि 'मिडिया' के राजा की लड़की 'आमूहिया' 'नेबूकडनसर' की प्रिया स्त्री थी। 'नेबूकडनसर' ने उसी की खुशी के लिये वह 'क्रीड़ावन' बनाया था; इस को लोग 'सेमिरेमिस' का 'अनवलम्बोद्यान' कहते थे। 'वेविलन' में एक 'विलसदेव' का मन्दिर बड़े बहार का था। वह करीब २०० फ़ुट के ऊंचा था; और उस की सूरत 'मिसर' के 'पिरा-

मिड की सी थी। 'बेबिलन' नगर का खंडहर आज तक मुसाफ़िरों को देख पड़ता है। 'यूफ़्रेटिस' के पश्चिम किनारे 'पिरामिड' की तरह एक खंडहर का दूह देख पड़ता है; कोई कोई कहते हैं कि यही 'बिलसदेव' का मन्दिर था।

'बेबिलन' वालों में बहुतेरे 'सेमिटिक' जाति के थे और वे लोग 'सीरिया' की 'आरामीय' भाषा में बात चीत करते थे; उन में से जो लोग 'कालडीय' कहलाते थे वे जोतिष-विद्या में बड़े निपुण थे, चन्द्र और सूर्य ग्रहण का हाल बतला सकते थे; चान्द्र और सौर बरस के भेद को भी जानते थे; उन्हों ने नक्षत्रों को बारह राशियों में बांटा था; और ग्रहों की चालों का हिसाब भी किया था।

अगले दिनों में जो लोग असल सिद्धान्त जोतिष-विद्या पढ़ते थे, वे लोग फलित जोतिष-विद्या पर भी ध्यान देते थे। सिद्धान्त जोतिष-विद्या जानने से ग्रहों को बहुत सी होनहार बातें जानी जा सकती हैं। इस को साधरण लोग तो यह समझते कि ऐसा ज्ञान दैवी शक्ति बिना नहीं हो सकता; इस लिये उन लोगों ने जोतिषियों से अपने भाग्य का हाल पूछना शुरू किया। जोतिषियों ने यह देखा कि सब लोगों में ऐसा भ्रम रहने से वे हमारे बश में रहेंगे; इस लिये उन्हों ने उन के भ्रम को दूर करने का कोई उपाय न किया वरन ऐसी कोशिस की कि जिस में लोगों का

वह भ्रम और भी बढ़े। इस में कुछ शक नहीं कि पुराने जोतिषियों के ऐसे यत्न से फलित जोतिष उत्पन्न हुआ।

"कालडीय" पंडितों ने फलित जोतिष-विद्या की अनेक शाखें निकालीं और उस की जड़ खूब जमाई। ये लोग "शुक्र" और "वृहस्पति" को शुभ; और "मंगल" और "शनि" को अशुभ ग्रह समझते थे; और "बुध" को कहते थे कि वह आप, न भला न बुरा है; शुभ-ग्रह के साथ रहने से शुभ, और बुरे ग्रह के साथ रहने से ख़राब फल देता है। ऐसी बहुत सी बातें ठहरा कर "कालडीय" लोग होने वाली भलाई बुराई बतलाते थे। उन्हीं लोगों ने पहले पहल समय जानने के लिये पानी की घड़ी बनाई थी। और चीजों को तौलने के लिये बहुत तरह के नाप जोख के "बटखरे" भी बनाये थे। बहुत से लिखने वाले यह ख़याल करते हैं कि "कालडीय" लोग "सेमिटिक" जाति के न थे; ये लोग आर्य्य वंश के थे; और आर्य्य धर्म्म वालों की तरह ये लोग भी पहले मूर्ति नहीं पूजते थे; सिर्फ़ चन्द्र सूर्य आदि ग्रहों को मानते थे। निदान ये लोग मूर्ति बना कर सूर्य को "बिलसदेव" और चन्द्र को "मिलिता" देवी के नामों से पूजने लगे।

सातवां प्रकरण।

फ़ारसियों का हाल

पहला भाग।

एशिया के पश्चिम हिस्सों में जो ऊंची पहाड़ी ज़मीन देख पड़ती है, वही आर्य्य या ईरानी लोगों के रहने की असल जगह है। वह ऊंची पहाड़ी ज़मीन टर्किस्तान के बीच हिस्से से शुरू हो उत्तर दक्षिण तरफ़ फैली हुई है। मिडिया फ़ारस और बाक ये तीन प्रदेश उसी ऊंची पहाड़ी ज़मीन के हिस्से समझे जाते हैं। उन फ़ारस देश में जो आर्य्य लोग रहते थे; उन्हें फ़ारसी कहते थे। पुराने फ़ारस वालों के वंश के लोग आज तक फ़ारस देश में रहते हैं। लेकिन आज कल के फ़ारसी लोग मुसल्मान हो गये हैं; और अभी वे लोग कोई ऐसी प्रबल कीर्ति नहीं कर सक्ते। पर एकबाटाना सूसा पर्सिपोलिस आदि पुराने शहरों के जो टूटे फूटे खंडहर रह गये हैं, उन को देखने से साफ़ मालूम होता है कि उन के बनाने वाले लोग किसी समय में बड़े प्रतापी और नामी रहे होंगे।

यह मालूम होता है कि पहले फ़ारस देश आसीरिया राज के अधीन था; बाद इस के जब मिडिया देश के

राजा ने आसोरिया के राज को सत्यानाश किया तब वह देश मिडिया के अधीन हुआ। लेकिन थोड़े दिनों में साइरस नामी एक महात्मा ने इस देश में जन्म लिया और अपनी जन्म-भूमि को स्वाधीन किया; वह सिर्फ़ फ़ारस देश को साध कर न बैठ रहा, बल्कि तुरत दिग्विजय करने को निकला; और बेबिलन मिडिया आरमिनिया और एशियाईटकी के पश्चिमी हिस्से को जिसे एशियामाइनर कहते हैं, जीत कर, अपने राज में मिला लिया। निदान साइरस तातारी लोगों के साथ लड़ाई में मारा गया। यह बात ५२८ बरस ईसा के जन्म से पहले हुई। साइरस के मरने बाद उस का बेटा कामबाइसिस फ़ारस का राजा हुआ इस ने मिसर देश को जीता और अपने फ़ारस राज में मिला लिया।

कामबाइसिस के बाद पहला दारायूस फ़ारस का राजा हुआ उस ने यूनान पर चढ़ाई की लेकिन उसे जीत न सका। हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा, शायद सारा पंजाब इस के इलाक़े में था। इसी दारायूस ने फ़ारस देश के राज नियम बनाये थे। उस ने सब राज को बीस सेटरोप अर्थात् हिस्सों में बांटा था; हर एक हिस्सों का प्रधान सेटरोप कहलाता था। और उन को अपने अपने अधिकार में कुल इख़्तियार था, सिर्फ़ राजा को हर बरस कर देते थे। राजा हर एक सेटरोप से कर वसूल करने के लिये एक

एक दीवान मुक़र्रर करता था। वह दीवान महाराज के गुप्त दूत के समान 'सेटरोप' के पास रहता था; और अपना काम किया करता था। पर सेटरोप और दीवान से देश भरका पूरा काम नहीं हो सकता था इस लिये वे लोग हर गांव, शहर, और ज़मीदारी, में किसी किसी प्रधान मनुष्यों को कुछ अधिकार सपुर्द करके सारे प्रदेश का इन्तिज़ाम करते थे। फ़ारस राज्य के ताबे के सब हिस्से एक दूसरे से इलाक़ा नहीं रखते थे। एक सेटरोप की प्रजा दूसरे सेटरोप की प्रजा के साथ कुछ इलाक़ा नहीं रखती थी। यद्यपि फ़ारस का राज मिसर आदि सब राजों से बहुत बड़ा और प्रबल था; तौ भी खूब मज़बूत नहीं था। पहले दारायूस के बाद उस का बेटा जरकसीस फ़ारस के सिंहासन पर बैठा और यूनान पर चढ़ाई की; लेकिन यूनान वालों के वीर बहुत प्रबल थे; इस लिये फ़ारस की सेना छिन्न भिन्न हो कर भाग गई। उसी समय से यूनानी और फ़ारसी लोगों में बड़ी दुश्मनी चली; इस लिये यूनान वाले बार बार फ़ारस के राज पर चढ़ाई करते रहे। निदान मेसिडोनिया का राजा बड़ा सिकन्दर ने यूनान के इलाक़े की जितनी सेना थी; सब को इकट्ठी कर, फ़ारस पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। और एशिया में यूरोप वालों की हुकूमत की, पहले पहल नेंव दी। सिकन्दर के मरने पीछे उस का राज कई हिस्सों में

बंट गया। उन में से पूरब प्रदेश में बाकट्रिया नाम राज जो क़ायम हुआ; उस का पहले ही समय से हिन्दुस्तान के साथ बहुत संबध था। यह मालूम होता है कि बाकट्रिया ही के यूनानी राजा लोग, हमारे पुरानों में यवन या काल-यवन आदि नाम से प्रसिद्ध हैं। बाकट्रिया के यूनानी राजाओं में यूक्रेटीडस सब से बड़ा नामी था। वह १८० बरस ईसा के जन्म के पहले हुआ था। इन यवन राजाओं का कोई इतिहास नहीं मिलता; केवल सिक्कों में उन के नाम और काम का कुछ हाल लिखा है। उन्हीं को देखने से उन का थोड़ा बहुत हाल मालूम हुआ है।

दूसरा अध्याय।

पुराने 'फ़ारसियों' का धर्म और भाषा का ठीक हाल सिर्फ़ एक ही ग्रंथ से जाना जाता है; उस ग्रंथ का नाम 'वेसडा' है; यह 'ज़िन्द' भाषा में लिखा हुआ था इस कारण उस ग्रंथ को 'जिंद-वेसडा' कहते हैं। यद्यपि 'ज़िन्द' भाषा संस्कृत से न निकली हो; पर तौभी संस्कृत और ज़िन्द ये दोनों एक ही जड़ से निकली हैं इस में कुछ सन्देह नहीं। और यद्यपि 'वेसडा' के धर्म की रीति वेद की धर्म की रीति की सी नहीं है तौ भी इन दोनों धर्मों की तरह एक है इसमें कुछ शक नहीं।

'वेसडा' में लिखा है कि 'अर्मसद' और 'आहरीमान' ये दोनों; 'जवैनअकरण' अर्थात् अनादि और अनन्त-काल से उत्पन्न हुए हैं। उन दोनों में सदा लड़ाई होती है। अर्मसद से प्रकाश, ज्ञान, ताप, बुद्धि, क्रिया, और गृहस्थी धर्म, ये सब उत्पन्न हुए हैं। आहरीमान से अन्धकार, अज्ञान, शीत, जड़ता, जंगलीपन आदि उत्पन्न हुए हैं। अर्मसद के मुसाहब देवता अमसस्पन्द कहलाते हैं। इन के ताबे दुनिया की सब जगहों में एक एक साधारण देवता, मालिक की तरह रहते हैं। आहरीमान के मुसाहब दैत्य हैं, वे सब सदा अर्मसद के सेवकों का स्थान बिगाड़ने चाहते हैं, इस कारण अर्मसद और आहरीमान में सदा झगड़ा हुआ करता है पर अंत को अर्मसद आहरीमान को जीतेगा; और सुख, ज्ञान, प्रकाश फ़ैलावेगा। सब ग्रहों में प्रकाश है; इस लिये फ़ारसी लोग उनको अर्मसद की मूर्तियां समझ कर पूजा करते थे। आग को भी इसी सबब से वे लोग पूजने लगे थे। फ़ारसी लोग किसी मंदिर में मूर्ति रख कर नहीं पूजते थे, वे सब किसी मैदान में, या पहाड़ के ऊपर, सुबह, या दो पहर, के समय में ज्ञान और प्रकाश देने हारे अर्मसद को मन में ध्यान कर सूर्य देवता की पूजा करते थे।

फ़ारसियों का धर्म कितना पुराना है; यह कोई नहीं जान सकता; परंतु यह मालूम होता है कि उस धर्म

का संहिता बनाने वाला जोरोयासटर या ज़रदस्त एक हज़ार बरस ईसा के जन्म के पहले मिडिया देश में उत्पन्न हुआ था।

आठवां प्रकरण।

ग्रीस या यूनान।

पहला अध्याय।

ग्रीस या यूनान एक प्रायद्वीप है। यह भूमध्य सागर के उत्तर किनारे पर है; इसके पूरब और जो समुद्र की शाख़ है, उसका नाम 'इजियन' समुद्र है; और पश्चिम तरफ़ जो समुद्र है उसे आइओनियन समुद्र कहते हैं। यूनान पहाड़ी देश है; इसके पहाड़ की कोई कोई चोटियां, इतनी ऊंची हैं कि वे सदा वर्फ़ से ढकी रहती हैं। पहाड़ की ढलाऊ ज़मीन बहुत ही उपजाऊ है; इस के सब जगहों की आब हवा बहुत अच्छी है। यूनान के किनारे के आस पास बहुत सी छोटी छोटी समुद्र की शाखें हैं; इससे यह मुल्क तिजारत के लायक़ है।

पहाड़ और समुद्र की शाखाओं की वजह से यह मुल्क पहले ही समय से कई हिस्सों में बंटा है; इसके दक्खिनी हिस्से को 'पिलापोनिसस' कहते हैं; इसमें सात जुदे जुदे

राज थे, उनके नाम ये थे; कोरिंथ आर्गलिस लाकोनिया मेसिना इलिस आर्केडिया एकेया। और यूनान के बिचले हिस्से में आठ और जुदे जुदे देश थे, उन के नाम ये थे; मिगारिस आर्टिका बिओसिया फोरिसिस लोक्रिस डोरिस इटोलिया आकरनानिया। उत्तर यूनान में थेसिली इपाइरस मासिडोनिया ये तीन ही देश थे। इन तीनों में से पहले मासिडोनिया यूनान में नहीं गिना जाता था। यूनान महादेश, इस तरह इन देशों में बंटा था; और इन सबों के सिवाय इस के दोनों किनारों पर बहुत से छोटे छोटे टापू भी थे; वे सब पहले समय में इसी के इलाके समझे जाते थे। रोडस साइप्रस साइक्लेडिस सिफालोनिया थिसरा क्रीट कर्सांइरा आदि बहुत मशहूर थे। पुराने यूनानियों ने तिजारत के साथ बहुत दूर दूर के देशों में अपने लोगों की बहुत सी नई बस्तियां भी बसाई थी। उन में एशियामाइनर सिसली इटली का दक्खिनी हिस्सा और मिसर के उत्तर पश्चिम कोने, जो उन लोगों की नई बस्तियां थीं वे बहुत मशहूर थीं।

'यूनान' इस तरह जुदे जुदे हिस्सों में बंटा था, इस कारण इस का इतिहास भी जुदे जुदे हिस्सों में बंटा है। इस के सब जुदे जुदे देशों के रहनेवालों का धर्म, भाषा, और रंग एक था; पर तौ भी वे लोग अपने को एक-जाति के नहीं मानते थे; यहां तक कि उन्हों ने अपने देश का

पहले ख़ास एक नाम भी नहीं रक्खा था ; बाद जब उन लोगों का आपस में मेल बढ़ा, तब अपने को 'हेलेनिया' और अपने मुल्क को 'हेलास' कहने लगे। 'रोमी' लोग पहले इस देश को 'ग्रीस' कहते थे ; इस लिये आजकल के यूरोप के लोग भी इसे 'ग्रीस' कहते हैं।

दूसरा अध्याय।

ग्रीस का प्राचीन वर्णन, पुराण की कथा, हरक्यूलिस, थिसियूस, कलचिस, और ट्राय की चढ़ाई।

अठारहसौ बरस ईसा के जन्म के पहले से यूनान का इतिहास मिलता है। पहले नौ सौ बरस का इतिहास बिलकुल झूठ नहीं है, तौ भी उस में अजीब तरह की कहानियां भरी हैं ; मालूम होता है कि इतिहास का वह हिस्सा पुरान से लेकर लिखा गया है ; यूनानी पुरान में 'यूनान' के प्राचीन लोगों को 'पिलासजी' कहते हैं ; ये लोग जंगली थे ; और पहाड़ों के खोह में रहा करते थे और शिकार से अपना निर्बाह करते थे और पशुओं के चमड़े से अपने तन को ढांकते थे।

कुछ दिनों के बाद 'मिसर' के राज-कुमार' यउरेनस' ने यूनान में आकर 'सभ्यता' की जड़ रोपी, और राजा बना, लेकिन उसे उसके लड़कों ने जो 'टाइटान' कहलाते थे गद्दी से उतार दिया और उन 'टाइटानों' में से सब से जेठा भाई 'साटर्न' राज-गद्दी पर बैठा; और इस डर से कि मेरे लड़के भी मुझे गद्दी से उतार देंगे; वह अपने लड़कों को होते ही मारडालता था। निदान उसको एक लड़का 'जुपिटर' नाम पैदा हुआ। तब उसकी स्त्री जुपिटर को ले कर 'क्रीट' नाम टापू में भाग गई। वहां कुछ दिन बाद जब वह बढ़ा, और बुद्धिमान हुआ तब 'यूनान' में आया और अपने बाप और 'टाइटान' नाम चाचों को लड़ाई में झटजीत लिया और आप सिंहासन पर बैठा। 'जुपिटर' ने सारे राज को आप ही न लिया पर 'नेपचून' और 'प्लूटो' नाम अपने दो भाइओं को भी उस में शरीक किया और बड़ी बुद्धिमानी और बिचार के साथ राज करने लगा।

ये सब पुरान की बातें कहां तक सच हैं इस लोगों को मालूम नहीं; पर 'जुपिटर' 'साटरन' आदि नाम जिन लोगों के हैं; उन को, वहां के लोग देवता की तरह पूजते थे बेशक ये बातें कवियों की बनावटी हैं। उन लोगो नें 'कालपुरुष' का रूप 'साटरन' देवता को ठहराया था; 'काल' जैसे आप पैदा करता और आप ही नाश करता है; उसी तरह वह भी अपने लड़कों को पैदा और नाश करता था इस कारण इन बातों का इतिहास

में अगर कुछ जड़ हो तौभी उस से कुछ विशेष फल नहीं।

'एशिया' की किसी एक जात के 'हेलेनीय' नामी लोग, बहुत पुराने समय में 'यूनान' में आये और 'पिलास' जी लोगों को जीता और उनमें से बहुतेरों को मारडाला; और बहुतेरों को देश से निकाल दिया; और बाकि को अपने साथ मिला लिया। इन 'हेलनिय' लोगों की तीन जमात थी उन तीनों जमातों की असल भाषा एक ही थी; लेकिन छोटे छोटे फ़रकों के कारन उस के तीन जुदे जुदे नाम पड़ गये थे। एक का नाम 'इयोलिय' दूसरी का 'डोरिय' और तीसरी का नाम 'आइयोनिय' था।

'हेलेनीय' लोगों के आने के बहुत दिन पीछे अर्थात् ईसा के जन्म से १८५६ बरस पहले 'इनेकस' नामी एक मनुष्य ने 'फ़िनिशिया' से आकर 'आर्गस्' नगर बसाया। इसके ३०० बरस पीछे, अर्थात् १५५६ बरस ईसा के जन्म के पहिले 'सिक्रप्स' नामी 'मिसर' के राजकुमार ने 'अटिका' में आकर 'एथेंस' शहर आबाद किया। १४९३ बरस ईसा के जन्म के पहले 'कादमस' नामी एक आदमी ने 'फ़िनिशिया' से आकर बियोसिया प्रदेश में 'थिब्स' शहर को बसाया। सन १५२० बरस ईसा के जन्म के पहले 'सिसिफ़स' नामी एक मनुष्य ने 'कोरिन्थ' शहर बसाया। उसी समय 'लीलक्स' नामी एक मनुष्य ने 'मिसर' से आकर 'लाकोनिया' में 'स्पार्टा' नगर आबाद कर चला गया।

१४८५ बरस ईसा के जन्म के पहले 'डानायस' नामी 'मिसर' का राजा 'यूनान' में आकर रहने लगा।

१३५० बरस ईसा के जन्म के पहले 'फ्रिजिया' का मालिक 'पिलप्स' 'यूनान' में आया, यह या इसके बंशवाले ऐसे प्रबल हो गये, कि प्रायः सारा 'यूनान' इनके दखल में आगया। मालूम होता है कि 'यूनान' के दक्खिनी हिस्से का नाम 'पिलपोनिसस' इसी के नाम से पड़ा।

'पिलप्स' के बंश में जगत उजागर 'हरक्यूलिस' नाम बीर ने जन्म लिया; कहते हैं कि 'माइसिनी' के राजा की लड़की 'अलकमीना' की सुंदरताई पर देवराज 'जुपिटर' आशक्त हुआ और उसका कन्यापन भंग किया। उस से 'जुपिटर' को 'हरक्यूलिस' नाम बेटा पैदा हुआ। जुपिटर की दूसरी स्त्री जूनो देवी ने अपने सौतेले बेटे हरक्यूलिस को मार डालने के लिये दो अजगर भेजे; हरक्यूलिस ने उन दोनों को सूतिका घर ही में मारडाला। इस के पीछे हरक्यूलिस कभी तो शेर के साथ लड़ा और उसे मार-डाला और कभी कई मुंहवाले बिषैले सांप को मारडाला और कभी मैली, बदबू दुखदाई जगहों में नदी की धार फेर कर उन्हें साफ़ और सुथरी कर दिया। इस तरह लोगों की हर तरह की भलाइयां करके अपनी स्त्री के साथ अपने देश को आया। निदान उस की स्त्री ने उसे अपने बस करने के लिये एक विष के रंग से रंगा अंगा पहर ने को दिया, वह उस का ज़हर सह नहीं सका तब

जलती चिता में बैठ अपने को जला दिया; जुपिटर देव उसे जलते देख झठ रथ भेज कर स्वर्ग में बुला लिया।

यूनान का एक और प्रसिद्ध बीर 'थिसियुस' था; यह एथेन्स के राजा 'एजीउस' का बेटा था। किसी समय एथेंस के रहनेवाले क्रीट के राजा 'माईनस' से लड़ाई में हार गये; उस समय से उन लोगों को सात कुंआरी लड़कियां और उतने ही कुंआरे लड़के क्रीट के राजा के पास बतौर राजकर के भेज ने पड़ते थे, शायद उन लड़कियों और लड़कों को क्रीट का राजा लौंडी और गुलाम बनाता था। लेकिन एथेंस में उस बारे में यह किस्सा मशहूर था कि क्रीट टापू में 'डिडलस' नामी किसी एक कारीगर ने राक्षस का एक घर बनाया है उस में गाय और आदमी की सूरत का एक 'मिनोटर' नामी दैत्य रहता है उसी के खाने के लिये वे लड़कियां और लड़के भेजे जाते हैं। कहते हैं कि राजकुमार 'थिसिउस' आप अपनी खुशी से क्रीट टापू में गया और कुश्ती में 'मिनोटार' को पछाड़ कर मार डाला, फिर वहां राजकुमारी 'अरियाडनी' को ब्याहा। बाद उस के अपने मुल्क को लौट आया और राज गद्दी पर बैठा; उस ने राजा होने पर अपने मुल्क की तरक्की करने नें बड़ी कोशिश की। उसी ने एथेन्स वालों की बड़ाई की जड़ रोपी; उस के पहले वह शहर बहुत छोटे छोटे दिहातों में बंटा था। थिसिउस ने उन सब दिहातों को एकट्ठा किया और लोगों को

तीन वर्गों में बांटा; धनवान लोगों को राज काज का काम हवाले किया, और बीच के दर्जे के लोगों को कारीगरी का काम दिया और गरीबों के लिये खेती-बारी का काम ठहराया।

यूनान के पुरान में 'थिसिउस' के और कई बड़े बड़े आश्चर्य कामों का हाल लिखा है; उन बड़े कामों में से उस का 'आरगो' नाम जहाज़ पर सवार हो कर काले समुद्र के पार "कालचिस" में जाने का बयान बहुत ही चमत्कार है, लेकिन सच पूछो तो यह काम अकेले थिसिउस ने नहीं किया था थिसली का राजा 'जेसन' की इस में पूरी मिहनत थी। इस का हाल यों लिखा है कि 'थिबस' शहर का रहने वाला 'फ्रिकसस' और उस की बहन 'हेली' अपनी सौतेली मा के डाह के कारण अपना देश छोड़ देने का इरादा किया और उस काम में जुपिटर देव की सहायता मांगी और जुपिटर देवता ने उन लोगों की प्रार्थना मान एक सोने का भेंड़ा भेज दिया। हेली और फ्रिकसस दोनों उस भेंड़े पर सवार हो कर आकाश की राह से चले; लेकिन हेली डर कर भेंड़े से समुद्र में गिर पड़ी; समुद्र के जिस हिस्से में वह गिरी उस का नाम आज तक 'हेलिसपान्ट' है; पर फ्रिकसस कुसल छेम से कालेसमुद्र के पार जाके 'कालचिस' देश के राजा के पास पहुंचा और वहां उस की लड़की को ब्याहा; पर कालचिस के राजा ने फ्रिकसस को उस के सोने के भेंड़े

को लालच से मार डाला। तब थिसली के राजा जेसन ने कालचिस के राजा से फ्रिकसस के खून का बदला लेने के लिये यूनान के सब बीरों को जमा किया और आरगो नामी जहाज़ पर सवार हो कर कालचिस को गया, वहां से वह सोने का भेड़ा और राजकुमारी मिडिया को साथ लेकर अपने मुल्क में फिर आया। पण्डित लोग खयाल करते हैं कि जेसन ने यह समुद्र यात्रा १६३ बरस ईसा के जन्म के पहले की थी।

इस के कुछ दिन बाद अर्थात् ११८४ बरस ईसा के जन्म के पूर्व एक बार सारे यूनान के राजा लोगों ने एक मत हो कर ट्राय पर चढ़ाई की, इस चढ़ाई को ट्राय की युद्ध यात्रा कहते हैं, इस का हाल होमर नाम प्रसिद्ध कवि ने अपनी 'इलियड' नाम पुस्तक में बड़ी खूबी के साथ बयान किया है; इस का संक्षेप हाल यह है कि स्पार्टा के राजा 'मेनिलेयस' की 'हेलन' नाम स्त्री को ट्राय का राजकुमार 'पारिस' निकाल ले गया। तब 'मेनिलियस' ने अपने भाई 'आगामेमनन' और दूसरे यूनानी राजाओं से मदद मांगी; उन लोगों ने एक मत हो प्राय: एक लाख सेना ले, ट्राय पर जो कि एशियामाइनर के इलाके में है चढ़ाई की; ट्राय में दस बरस तक बराबर लड़ाई रही, आखिर ट्राय के लोग हार गये तब यूनानी लोगों ने वहां के कुछ लोगों को तो मार डाला और कुछ लोगों को वहां से निकाल दिया और बहुतेरों को अपना

दास बना लिया; लेकिन जिन यूनानी राजाओं ने ट्राय को बर्बाद किया वे लोग सुख चैन से अपने मुल्क में आ कर नहीं रह सके; कितने तो रास्ते ही में खतम हो गये, और जो जीते मरते अपने देश में पहुंचे; उन्होंने क्या देखा कि उन के वहां न रहने के समय में दुश्मनों ने उन के राज्यों को ऐसा अपने हाथ में कर लिया था, कि फिर मिलने का कुछ भरोसा न था।

ट्राय की लड़ाई के ८० बरस के बाद यूनान में फिर एक भारी बदअमली हुई। हरक्यूलिस के बंश वाले अपने कुल पति के मरने बाद 'डोरिस' में जा बसे; वहां 'डोरीय' लोगों की शरन में उन लोगों की दिन दिन बढ़ंती होने लगी। पहले हरक्यूलिस का बड़ा बैटा 'हाइलस' ने डोरिस से आकर पिलापोनिसस दखल करने की कोशिश की, बाद इस के फिर एक बार हरक्यूलिस के घराने के लोगों ने वैस ही चढ़ाई की लेकिन उन के हाथ कुछ न लगा दोनों कोशिशें यों हो गईं। निदान ११० बरस ईसा के जन्म के पहले 'टिमिनस' क्रेसफांटिस और 'आरिसटोडिमस' इन तीन 'हाइलिस' के पोतों ने 'आरकेडिया' के सिवाय पिलापोनिसस के कुल हिस्सों को दखल कर लिया; टिमिनस 'आरगस, देश का राजा हुआ, क्रेसफांटिस को 'मेसेनिया' का राज्य मिला, और आरिसटो-डिमस के दो लड़के थे 'यूरिसथिनिस, और प्रोकलिस, ये दोनों मिलकर स्पार्टा की गद्दी पर बैठे; डोरिस के लोग जिन देशों

को जीतते गये. उन की सब भूमि दखल करते गये, इस लिये पिलापोनिसस के पहले रहने वाले लोग झुंड के झुंड अपना मुल्क छोड़ छोड़ एशियामाइनर में जा समुद्र के किनारे बसते गये।

तृतीय अध्याय

यूनान में प्रजा राज की रीति, और मेला लगाने का बयान।

डोरीय लोगों के आने से पिलापोनिस के पहले रहने वालों में से बहुत से एशियामाइनर के किनारे जा बसे। उन में से थोड़े लोगों ने मध्य यूनान के एथेन्स शहर में जाकर सरन ली; एथेन्स के लोगों ने इन सबों को रहने के लिये जगह दी और दिलासा दी; इसी सबब से डोरीयों ने एथेन्स वालों से नाराज़ हो कर उन पर चढ़ाई की; और उसी समय यह बात जानने के लिये कि जोरावर एथेन्स वालों के साथ लड़ाई में जीत या हार होगी उन्हों ने 'डिलफी' के प्रसिद्ध 'अपोलो' देवता के पास एक आदमी भेजा; उस आदमी को वहां से यह बात कही गई कि जो डोरीया लोग एथेन्स के राजा को न मारेंगे तो उन का बार न बांकेगा और अवश्य जय पावेंगे और जो कहीं राजा को मारेंगे तो अपने मुंह का खायंगे और

हार जायंगी । यह बात एथेन्स वालों के भी कान तक पहुंच गई, तब तो एथेन्स के राजा 'कोडरस' ने अपने देश की भलाई अपने मरने में जान शत्रु के हाथ मरना ठाना । एक रोज वह एक किसान का भेष धर डोरीय लोगों के कम्पू में आप चला गया और उन की फ़ौज के किसी बीर को ललकार उससे लड़ने लगा ; खूब लड़ा ; निदान मारा गया ; उस के मरते ही डोरीय लोगों को मालूम हुआ कि वह एथेन्स का राजा था तब तो उन के छक्के छूट गये क्योंकि उन्हों ने जाना कि अब एथेन्स वाले ज़रूर जीतेंगे कारन उन का राजा मारा गया; फिर वे कहां ठहर सकते तुरत ही खेत छोड़ अपने देश की राह ली ।

उन दिनों एथेन्स वाले पहले ही से अपने देश में प्रजाराज कायम करना चाहते थे, अब मौक़ा पाकर उन्हों ने कहा कि कोडरस का सा राजा अब होना असंभव है और ऐसे बड़े राजा के सिंहासन पर बैठने के योग्य अब दुनिया में कोई नहीं है । इसलिये अब हम लोगों का राजा देवराज जुपिटर होंगे और राज काज का इन्तिज़ाम कोडरस के बड़े बेटे 'मिडन' के हाथ में रहेगा ; लेकिन उस की पदवी राजा नहीं रहेगी ; वह आरकन यानी हाकिम कहावेगा । अब यहां यह भी कहना ज़रूर है कि एथेन्स वालों ने पहले थोड़े लोगों को जनम भर के लिये आरकन की पदवी देते थे ; पर कुछ दिनों के बाद एक आरकन दस बरस राज-काज करने के लिये नियत

किया जाता था पर उस के बाद आरकन का काम हर साल दूसरे दूसरे लोगों को दिया जाने लगा। कोडरस के मरने के लगभग दो सौ बरस के बाद सदा हर तरह की तखड़ पखड़ होने लगी; उस समय का कोई हाल ठीक नहीं मिलता; जैसा किसी मकान के बनने के वक़्त वहां की जगह जहां मकान बनता है मिट्टी से भरी और नीची ऊंची रहती है लेकिन मकान तैयार हो जाने पर वही जगह साफ़ सुथरी हो जाती है, यूनान का भी ठीक वैसाही हाल हुआ। वहां हर तरह की लड़ाई दंगे बुरे भले काम होते होते आख़िर को यूनान में प्रजाराज यानी 'खुदसर' सलतनत क़ायम हुई।

उसी समय यूनान के छोटे छोटे राज्यों में भी आपस के मेल और एक मत रहने की नेव पड़ी, इस का हाल यह है कि पिलापोनिसस के दक्खिन पच्छिम एलिसनाम एक छोटा सा देश था वहां के राजा 'इफिटस' ने अपनी राजधानी ओलिंपिया में एक उत्तम मंदिर बनवा कर जुपिटर देवता की मूरत को उस में स्थापन किया। डिलफी के आपोलो देवता की यह आज्ञा हुई कि हर चौथे बरस सावन के महीने में यूनान के सब शहरों से ओलिंपिया शहर को दूत भेजे जावें और वहां जुपिटर और हरक्युलिस का मेला लगे; जो लोग वहां जायें सब पांच दिन बास करें और बड़ी खुशी करें; जिन लोगों में लड़ाई भी रहे वे भी

मेले के पांच दिन तक आपस में मेल रक्खें, लड़ाई दंगा न करें, ओलिंपिया देवता की जगह सब तरह के सुख वो चैन की जगह समझी जावे यह बात यूनान की सब जगहों में जारी हुई, और ८८४ बरस ईसा के जन्म के पहले पहला ओलिंपिया का मेला लगा, इसी मेले से यूनानी लोग अपना सन गिनना शुरू किया। जब यूनानी इतिहास लिखने वाले किसी बात का समय बतलाना चाहते तो यह लिखते हैं कि फ़लानी बात पहले दूसरे या तीसरे मेले के बीच के समय में हुई थी।

ओलिंपिया के मेला लगने बाद धीरे धीरे कोरिंथ, डेलफ़ी और आरगस, इन तीन जगहों में और तीन मेले लगने लगे। इन चार मेलों में मल्लयुद्ध, घोड़ दौर, गाड़ी दौड़, गाना, बजाना, काव्य बनाकर पढ़ना आदि बहुत सी बातों और गुनों की परीक्षा होती थी। जो इस परीक्षा में टर आते थे उन को सब लोगों के सामने एक पत्तेका मुकुट बनाकर पहनाया जाता था। इस मुकुट की क़दर लोग जैसी करते थे वैसी राजाओं के सोने के मुकुटों की भी न करते थे। सच पूछो तो यूनानियों के वे दिन बुद्धि के थे उस जमाने के लोग स्वार्थी न थे वल्कि सादे दिल और यश के भूखे थे। वे लोग यह नहीं समझते थे कि दुनिया में रूपया ही चीज़ है और दरख़्त के पत्ते के मुकुट का कुछ मोल नहीं है बरन वे हीरे जवाहिरों के मुकुटों से भी अधिक समझते थे। सिर्फ़ कम-बख़्तों को ऐसी

समझ होती है कि रुपया ही जमा करना जीवन का फल है।

जिस जमाने की बात हो रही है उस जमाने में यूनान के लोग तीन हिस्सों में बांटे गये थे, यानी नगर बासी, दिहाती, और दास अर्थात गुलाम। जिन जिन जगहों में स्वाधीन सलतनत जारी थी वहां के सिर्फ़ शहरी लोग प्रबल थे। दिहाती और गुलामों को राज-काज से कुछ इलाक़ा नहीं रहता था; दिहाती लोग स्वाधीन थे और खेती या सौदागरी करके अपना दिन काटते थे। पर गुलाम अपने मालिक के ताबे में रहते थे यहां तक कि जो उन्हें मालिक जान से भी मारडालें तौभी कुछ चूं नहीं कर सक्ते थे और मालिक को उसका कुछ दण्ड भी न होता था।

चौथा अध्याय।

लाइकरगस और सोलन

यूनान भर में बड़ी बदअमली और लड़ाई भिड़ाई होती रही, पर सब के पहले स्पार्टा नगर वालों ने इन बखेड़ों से छुट कारा पाकर अपनी बढ़ती और नामवरी हासिल करने के लायक़ हुआ। कहते हैं कि सिर्फ़ एक बड़े

मनुष्य की कोशिश और ईमानदारी से स्पार्टा वालों की भलाइयां हुईं, उस का नाम लाइकरगस था। उसने क्रीट और एशियामाइनर वग़ैरह बहुत सी जगहों में फिर कर विद्या हासिल की थी और उसको अच्छी तरह यह विश्वास हो गया था कि सब बुराइयों की जड़ इन्द्रियों के सुख में पड़ना है। किसी भी देश के लोग जो इन्द्रियों के सुख में तन मन से न लग जायं तो उन की बड़ाई सदा बनी रहे। स्पार्टा के लोग उस लाइकरगस से अपने देश के लिये क़ानून बनाने कोकहा। उस ने कई एक अजीब तरह के क़ानून बनाये। पहला यह कि स्पार्टा के कुल लोगों के दर्मियान जायदाद बराबर बांट दी जिस से अमीर वो गरीब का भेद न रहा। दूसरा रुपये का चलन उठा दिया कि जिस से लोग रुपया जमा न करें, और लोहे का एक तरह का डंडा रुपये की जगह चलने लगा। तीसरा यह नियम किया कि स्पार्टा के लोग अपने मकान में अपने मन माना खाना पीना नहीं कर सक्ते थे। चौथा मा बाप अपनी मर्ज़ी के मुआफ़िक लड़कों को नहीं पाल सक्ते थे; लड़के बचपन ही से उस्ताद और दाई के सपुर्द किये जाते थे और वे उन को क़ायदे के मुआफ़िक लिखाते पढ़ाते थे। उस ने यह क़ानून भी ज़ारी किया था कि जो लड़के अंग भंग और कमज़ोर होते थे वे पाले नहीं जाते थे बल्कि टेजिटस पहाड़ की खोह में डाल दिये जाते थे।

लाइकरगस की ऐसे कानूनों की वजह से स्पार्टा के लोग धीरे धीरे अपने को दूसरी जातियों की बनिस्बत ऐसा मज़बूत पाया कि जल्द आरगस और मेसीना लोगों के साथ लड़ाई शुरू कर दी। आरगस का राजा 'फेटन' बहुत योग्य और लड़ाई में बहुत प्रबल था; इस लिये स्पार्टा के लोगों से कुछ न बन पड़ा, लेकिन मेसिना वालों को उन लोगों ने जीत लिया और उन के साथ बहुत ही बुरे तरह से पेश आये; इस कारन कुछ दिनों बाद मेसिनियों ने सर्कसी की; उनका सेनापति ऐरिसटो-मिनेस बड़ा लायक था उस की तदबीर और बल से स्पार्टा के लोग बहुत घबड़ा गये। अंत को वह लड़ाई में मारा गया। तब उसके साथी सब अपने देश को छोड़ कर इटाली के दक्खिनी हिस्से में और सिसली टापू के उत्तर हिस्से में जा बसे। मेसिनियन लोगों की वह नई बस्ती आज तक मेसीना नाम से प्रसिद्ध है।

इस तरह स्पार्टा शहर बहुत बढ़ा और मज़बूत हुआ। यूनान के बीच 'आर्टिका जो प्रदेश है उस की राजधानी एथेंस शहर भी जल्द बढ़ा। एथेंस में बार बार बलवा हुआ करता था। आखिर को साइलन नामी किसी मनुष्य ने थोड़े छोटे लोगों को अपनी तरफ़ मिला कर अपने को मालिक बनाने का यत्न किया। इस से शहर के बड़े लोग उसके वैरी हो गये। साइलन उन लोगों के साथ लड़ाई में न पा सका। इस लिये जान के डर से

अपने कई साथियों के साथ एक देवता के मंदिर में जा शरण ली। यूनानियों में यह दस्तूर था कि जो कोई देवता की शरण लेता था वह हज़ार अपराधी हो तौ भी देवता के मंदिर में सजा न पाता था, लेकिन साइलन के शत्रु लोग क्रोध के मारे ऐसे अंधे हो रहे थे. कि उस रीति का कुछ भी खयाल न किया साइलन को उस के साथियों के समेत देवता के मंदिर में मार डाला।

पर थोड़े दिनों के बाद साधारण लोग प्रबल हो गये और उन बड़े अमीरों को मुल्क से निकाल दिया जिन्हों ने धर्म का बिचार न करके साइलन को देवता के मंदिर में मारडाला था। इस तरह छोटे बड़ों में लड़ाई न थी और ज़ुल्म होने लगा; प्रजा को नाकों दम आगया इस- लिये उन्हों ने ड्रेको नामी एक महात्मा को व्यवस्थापक या मुन्तज़िम मुक़र्रर किया। इस में कुछ सन्देह नहीं कि यह ड्रेको बड़ा ज्ञानी और धर्मात्मा आदमी था लेकिन उस को यह समझ न थी कि थोड़ा दंड देने से लोग दंड पाने वालों पर जैसा चाहिए वैसा रंज नहीं होते वरन बेमुनासिब दंड के सबब लोग दंड देने वाले से नाखुश होते हैं उस ने यह नियम किया कि किसी तरह का अपराध क्यों न हो सब के लिये प्राण दंड मिलेगा। भला ऐसी आईन कहीं भी चल सक्ती है एथेंस के लोगों ने थोड़े दिनों में ड्रेको के नियमों को उठा दिया और सोलन नामी एक दूसरे मनुष्य को अपना व्यवस्थापक बनाया; इसने इस

काम को पाते ही बहुत से नियम बनाये और वे सब नियम ऐसे अच्छे थे कि उन के सबब से एथेंस शहर सबों से बढ़ गया। पहले एथेंस में सभा थी उस में लोगों की भरती वंश के अनुसार हुआ करती थी; सोलन उसके बदले दौलत के अनुसार लोगों को उस सभा में भरती करने लगा। ऐसा करने से बड़ी पदवी पाना अब लोगों के यत्न के आधीन हुआ कुल मूल का कुछ ज़रूर न रहा। सोलन ने एथंस के लोगों को चार श्रेणियों में बांटा उन में से जो लोग पहली श्रेणी में हुए उनको बड़े बड़े काम मिलते थे। दूसरे श्रेणी वालों को घोड़ों पर सवार हो कर लड़ाई में जाना पड़ता था। तीसरे दर्जे के लोगों को बर्म-बस्त्र धारन कर पैदल जाना पड़ता था चौथे दर्जे के लोग छोटे छोटे अस्त्र अर्थात हथियार लेकर लड़ते थे। इन चारो दर्जे के लोगों को जो सभा थी उसमें हर एक दर्जे की शक्ति बराबर समझी जाती थी। पहले दर्जे के लोग गिनती में कम होने के सबब वह दर्जा कमज़ोर नहीं समझा जाता था। उस सभा में राज-काज की सब बातों का विचार होता था। उस के सिवाय एथेंस में दो और सभा थी उनमें एक का नाम बूलि यानी चार सौ लोगों की सभा थी। बड़ी सभा में जो बातें विचार के लिये और जो नियम ज़ारी होने के लिये और जो जो पुरानी बाते बदली जाने के लिये पेश होने को होती थीं उन सबों की तजवीज़ इस 'बूली' सभा में पहले ही होती थी।

दूसरी सभा का नाम 'एरिओपेगस' था, इस सभा में दिवानी और फ़ौजदारी के मुक़द्दमों का फैसला किया जाता था, इन सब सभाओं की अपील बड़ी यानी साधारण सभा में होती थी ; इस कारण राज का सब इख़्तियार साधारण सभा के हाथ में धीरे धीरे चला गया।

लेकिन शुरू में साधारण सभा का सब इख़्तियार नहीं था। 'पिसिस्ट्रेटस' नाम एक आदमी ने किसी ढंग से धीरे धीरे राज की कुल इख़्तियार अपने हाथ में ले लिया था और एथेंस में निष्कंटक राज करता था। यद्यपि उसने राज बे-इन्साफ़ी से लिया था तौभी सब राज-काज बड़े न्याय के साथ किया करता था और उस के समय में लोग बहुत सुख चैन से रहे वह गुनियों का बड़ा आदर भाव करता था और कितने एक बुद्धिमानों की सहायता से बड़े कवि होमर के बनाये हुए काव्य को सुधार कर आज कल के ढंग का उसीने बनाया था।

'पिसिस्ट्रेटस' के मरने बाद उसके दो बेटे 'हिपियास' और 'हिपारकस' वे रोक टोक एथेंस की राज-गद्दी पर बैठे। लेकिन एथेंस के रहने वाले उन के राज के समय सदा बे-चैन थे क्यों कि उन्हें अधीनता का नाम भी नहीं सोहाता था, वे अवसर पाते ही उठ खड़े हुए और हिपार्कस को मारडाला और हिपियास को देश से निकाल दिया हिपियास ने अपने मुल्क से निकाले जाने पर फ़ारस में प्रथम 'दारायूस'

को शरण ली। उस समय एथेंस वाले और दारायूस के बीच लड़ाई होने का कुछ और भी सबब पड़ा था इस लिये दारायूस ने हिपियास से यह प्रतिज्ञा की कि हम यूनान को जीत कर तुम को वहां का राजा बनावें गे।



पांचवां अध्याय

यूनानियों की पारसियों के साथ लड़ाई।

यूनानी और फ़ारस के राजा दारायूस से लड़ाई का सामान बहुत दिनों से हो रहा था। यह कह चुके हैं कि किसी समय यूनान से बहुत से लोग एशियामाइनर के किनारे जा बसे वे सब जगहें बहुत जल्द धन, जन, विद्या और कारीगरी में यूनान से भी बढ़गईं, जैसे वृक्ष का कलम अपने मूल वृक्ष से जल्द बहुत बढ़ जाता है वैसा ही हाल उन यूनानियों का भी हुआ, जो एशियामाइनर में जा बसे थे, यद्यपि उन लोगों ने बहुत तरक्की की तौभी अपनी देशी लड़ाई झगड़ा भूले न सके और आपस में एक मत भी कभी न हुए। डोरीय आइओनीय और इयोलीय लोगों में जैसा अपने देश में लड़ाई होती थी वैसे ही ये लोग वहां जाने पर भी आपस में लड़ते झगड़ते रहे इनकी आपस की

लड़ाई का फल यह हुआ कि अंतको लिडिया के राजा क्रीसस ने इन लोगों को धीरे धीरे अपने आधीन कर लिया। आपस की फुट मत का फल सदा और सब जगहों में भी ऐसा ही होता आया है।

क्रीसस को फारस के राजा साइरस के साथ लड़ाई हुई उस में उसने शिकस्त खाई उस समय से यूनानियों की वे सब बस्तियां फ़ारस के राजा के अधीन हो गईं। परंतु यूनानी लोग सदा यह चाहते थे कि औसर पाते ही बलवा मचा के स्वाधीन हो जावें। थोड़े दिनों के पीछे फ़ारस का राजा दारायूस ने डीन नदी के किनारे सिथीय लोगों पर चढ़ाई की पर कुछ कर न सका ; इस से बहुत सी बस्तियों के यूनानियों ने फ़ारस के राजा को कमज़ोर समझ कर सिर उठाया और पहले स्पार्टा और उस के बाद एथिंस से मदद मांगी। एथिंस वालों ने इन के कहने पर लड़ाई के कई जंगी जहाज़ भेजे उन की सहायता से उन सरकसों ने सारडिस शहर पर चढ़ाई की और उसको जला दिया। परंतु थोड़े ही दिनों में दारायूस ने बलबा दबाया।

दारायूस उस समय से यूनानियों से जी से चिढ़ गया। एथिंस के राजा हिपियस ने जब उस से पनाह मांगी तो दारायूस ने उस की ख़ातिर को और उसी समय यूनान को फ़तह करने चाहा उसने अपने दामाद मारोडनियस को सेना-पति बना कर बहुत से जंगी जहाज़ और लश्कर के साथ यूनान में भेजा परंतु थ्रेस के दक्खिन हिस्से में

एथ्रस पहाड़ के निकट एक भयानक आंधी आई और फ़ारसियों के बहुत से लड़ाई के जहाज़ और लश्कर को बर्बाद किया। यह चढ़ाई हर तरह से बिफल हुई।

पर दारायूस का मन इस दैवी उपद्रव से कुछ भी छोटा न हुआ उसने ४६० बरस ईसा के जन्म के पूर्व पहले से भी बड़ा लश्कर इकट्ठा किया और डेठिस और आर्टाफर्निस नामी दो आदमियों को सेनापति बनाकर यूनान पर भेजा। इस लश्कर ने यूनान के इलाके के छोटे छोटे टापुओं को जीत लिया; अंतको युबिया नाम टापू को भी इन्हों ने अपने हाथ में कर ली जो कि एथेंस के नज़दीक था। एथेंस वालों ने इस बिपत के समय स्पार्टा से मदद मांगी लेकिन स्पार्टा वाले आप स्वार्थी थे दूरंदेशी न थे उन्हों ने देखा कि उस समय उनको तो कोई डर न थी इस लिये चुप चाप बैठ रहे लड़ाई में शीघ्र सहायता न की यात्रा की साइत ही देखते रह गये कोई शुभ लगन न ठहरी क्या करें तब एथेन्स वाले दुश्मन को सिर पर देख आप ही अकेले लड़ने को कमर बांधी उन की सब फ़ौज केवल दस हज़ार थी और फ़ारस वाले तीन लाख से कम न थे, सइ लिये फारसियों ने यह समझा था कि हम ज़रूर ही जय पावेंगे लेकिन एथंस का सेनापति मिल-टाइडिस ने मारायन नाम जगह में ऐसी तदबीर कर अपने सेनाओं को खड़ा किया, और येथेंस के मनुष्यों ने भी अपना धन धर्म और स्वाधीनता की रक्षा करने के लिये

ऐसे अद्भुत और हिम्मत के साथ वीरता की, कि फ़ारसी थोड़ी ही देर में बेदिल हो कर भाग गये।

दारायूस इस बात की खबर पाकर कुछ न घबराया वह यूनान फतह करने के लिये फिर तैयारी करने लगा, लेकिन उसी समय में मिसरियों ने शर्कसी की इस से वह यूनान पर जल्द चढ़ाई न कर सका, और थोड़े दिनों पीछे मर गया। इन सब कारनों से ग्रीस में दस बर्ष तक कुछ उपद्रव न हुआ। और इसी समय में एथेन्स और स्पार्टा की सेना इकट्ठी होकर फारसियों के अधिकार के कुल यूनानी टापुओं पर चढ़ाई की और उन्हे फिर छीन लिया।

फिर ४८० बरस ईसा के पहले दारायूस के लड़के ज़र्क्सेस ने करीब बीस लाख सेना और उसी कदर लड़ाई के जहाज़ लेकर यूनान पर चढ़ाई की यूनान के उत्तर हिस्से में जितने शहर थे सबों ने जरक्सेस के पास पानी और मिट्टी भेज कर उस के अधीन होगये लेकिन मध्य और दखिनी यूनान वालों ने जी पर खेल के लड़ने लगे। शुरू ही में थेसली देश के दखिनी हिस्से में थर्म्मपोली नाम पहाड़ को एक अगम तंग राह में स्पार्टा के राजा लियोनिडास ने थोड़ी सी पिलोपनिसिया की सेना के साथ जा कर ज़र्क्सेस के आने की राह रोकी। ये लोग ऐसी मर्दानगी से लड़ने लगे कि यदी एक अधर्मी यूनानी छिपी हुई राह से फ़ारसियों के लश्कर को पीछे की तरफ से नहीं

लाता तो ज़रूर ज़र्क्सीस इसी जगह से हार कर अपने देश को लौट जाता। जो हो फ़ारसी लोग छीपी राह से आकर यूनानियों को चारों तरफ़ से घेर लिया और स्पार्टा का राजा अपने देश की चाल मुताबिक लड़ाई की जगह से भागना बे इज़्ज़ती समझ अपने लश्कर समेत वहीं खेत आया।

ज़रक्सीस इस तरह थर्म्मपिलि पार होकर जल्द एथेन्स शहर पर चढ़ाई करने के लिये बढ़ा। एथेन्स वाले ऐसे दुश्मन के हाथ से बचना कठिन देख थेमिस्टोकलिस की सलाह से अपने लड़के बालों के साथ जहाज़ पर चढ़ कर सालिमिस, ट्रिजिन, और इजाइना वग़ैरह टापुओं में भाग गये। ज़रक्सीस ने उन के खाली शहर को दखल कर जला दिया।

इस समय फ़ारसियों के जंगी जहाजों ने यूनानियों के जंगी जहाजों पर हमला किया, यह लड़ाई सालमिस टापू के निकट समुद्र में हुई इस लिये इस लड़ाई को सालमिस की लड़ाई कहते हैं। इस में थिमिसटोकलिस ने ऐसी तदबीरें की कि पारसियों के जंगी जहाज छिन्न भिन्न हो हट गये उस समय और पारसियों का राजा एक पास के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो अपनी आंख से अपने लश्कर और अपने लड़ाई के ज़हाजों को बर्बादी देखी; और यूनानियों की वीरता देख उस के दिल में ऐसा डर समाया कि वह घबरा गया और अपने सेनापति मार-

डोनियस की सलाह से उस के पास तीन लाख सिपाह छोड़ आप भाग गया। ज़र्क्सीस के चले जाने पर एथेंस वाले फिर अपने देश को लौट आये और बहुत जल्द अपने नगर को फिर आबाद किया और उस को चारो तरफ एक ऐसी मजबूत सहर पनाह बनाई कि दुश्मन के आने का दाव न रही। थेमिसटोकलिस की सलाह से इस समय एथेंस वाले भी जंगी ज़ाहाज बनाने लगे इस लिये एथेंस का शहर थोड़े दिनों में समुद्र की लड़ाई और तिजारत में सब से बढ़ गया।

इस के थोड़े ही दिनों पहले स्पार्टा का राजा पसिनियस और एथेंस का सेनापति आरिसटाइडिस सेना-एकट्ठी कर बिओशिया में गये थे और वहां पलेटिया की लड़ाई में मारडोनियस को जीत कर यूनान देश को फ़ारसियों के उपद्रव से बचाया था। जिसरोज पलेटिया की लड़ाई हुई उस रोज स्पार्टा के दूसरे राजा लिओटीकिडिस ने माइकेली की लड़ाई में एक और फ़ारसी सेना को छिन्न भिन्न किया था।

जिस समय की प्रसिद्ध वार्तों का वर्णन हुआ है वह यूनानियों के बड़ाई का समय था उस समय यूनानि खुदगर्ज न थे सिर्फ़ अपने देश की भलाई के लिये जान और माल सब संकल्प करते थे, और इसी लिये वे लोग विपत से उबरे; हर तरह की विद्या में तरक्की कर के दुनिया की भलाई करने लगे। लेकिन

जिसका जो दोष रहता है वह सदा छिपा नहीं रहता उस का कोई न कोई चिन्ह कभी न कभी जाहिर जरूर होता है। यूनानियों की आपस में जो डाह थी वह मारथन की लड़ाई में स्पार्टा वालों के न जाने से साफ़ प्रगट होती है। और जब थेमिसटोकलिस ने एथेन्स शहर को आबाद किया तब स्पार्टा के लोगों ने उसके रोक नें को कोशिश की थी इस से भी डाह साफ ज़ाहिर होती है। एथेन्स वाले भी बहुत ही छोटे दिल के और चंच-ल स्वभाव के थे, इस बात में एक प्रमाण यह है कि उन लोगों ने अपने बड़े उपकारी और लायक सेनापतियों को डाह के मारे धीरे धीरे मुल्क से निकाल दिया या किसी न किसी तरह उन को दुख दिया। पहले उन लोगों ने मारथन की लड़ाई के जीतने वाले प्रसिद्ध मिलटाइडस को एक अदना दोष लगा कर क़ैद कर दिया। और वह उसी क़ैद-खाने में मर गया। इस के पीछे आरिसटाइ-डिस नामी एक बड़े लायक आदमी को भी बिला सबब देश से निकाल दिया। आखि़र को उन लोगों ने थेमिस-टोकलिस नाम नीति जानने वाले बड़े लायक मनुष्य को भी निकाल दिया। यूनानी लोग अपने ऐसे दोषों के कारन दूसरों से हार गये और उन की सब नामवरी जाती रही और वे आज कल की बुरी हालत में पहुंचे।



छठां अध्याय।

पसेनियस, साइमन, पेरीक्लिस, एथेन्स वालों की चूड़ान्त वृद्धि।

आख़िर जो हो पर फ़ारसियों के जीतने पर यूनानी लोग सब तरह से प्रबल हुए। वे लोग नज़दीक के टापूओं को जीत कर स्वाधीन कर दिया। और कभी कभी ऐसा भी करते थे कि एशिया में उतर कर फ़ारस राज पर हमला किया करते थे। इसी अरसे में यूनानियों की सब सेना इकट्ठी हुई; और उन के सेनापति स्पार्टा का राजा था वह बहुत प्रशंसनीय हुआ। विशेष कर के प्लेटिया की लड़ाई में जिस ने फ़ारसियों को जीता था और जिस के नाम पसेनीयस थे, उस से फ़ारस के राजा का बहुत नुक़्शान पहुंचा; इस लिये ज़र्क्सिस उन को गुप्तरूप से रिस्वत देना चाहा। अन्त को जब उन्हों ने कुल यूनान का राज्य और अपनी एक लड़की को शादी कर देनी अंगीकारकिया, तब मतिमन्द पसेनियस ने अपनी जन्मभूमि के नुक़्शान करने में सम्मत हुआ। लेकिन उस के बदमतलब हासिल होने के पहले ही स्पार्टा वालों ने मालूम कर लिया और साधारन सभा में नालिश किया। पसेनीयस अपनी जान की डर से एक देवा-लय में जाकर शरण ली; और स्पार्टा वालों ने भी

उसे मारने के लिये बहुत इच्छुक हो कर उस देवा-लय में जा पहुंचे, लेकिन देवता की शरण में बध करना उचित न समझ कर चकरा गये। उस समय पसेनीयस की मा एक पत्थर का टुकड़ा लाकर देवालय के दर्वाज़े पर रख दिया; लोग उस समय उस पत्थर के रखने का अर्थ समझ गये और उसे उस जगह ऐसा गाड दिया, कि जिससे मंदिर का रस्ता बिलकुल बंद हो गया और पसे-नियस उसके भीतर ही भूखों मर गया।

पसेनियस की ऐसी बुरी करनी से स्पार्टा की बड़ी खराबी हुई। यूनान के सब नगर वालों का बिश्वास उस पर से उठ गया इस लिये यूनानियों ने अपने लशकरों को अब उस के तावे नहीं रक्खा। अब वे एथेन्स वालों पर पूरा बिश्वास रखने लगे। इस लिये यूनान भर में एथेन्स वालों का प्रताप बढ़ा और उन लोगों ने अपने सेनापति साइमन की सलाह से फ़ारस के राज पर कभी कभी चढ़ाई कर बड़ा यश और बहुत धन हासिल किया। यह साइ-मन, बड़े वीर मिलटाइडिस का बेटा था, इस ने बहुत सी लड़ाईयों में फ़ारसियों को हराया था। बिशेष कर के ४६५ बरस ईसा के पहले इउरीमीडन की लड़ाई में फ़ारसी लोगों के लशकर और जंगी जहाज़ को इस ने एक ही दिन में हरा दिया।

परंतु इस समय केवल साइमन ही एथेन्स में बड़ा आदमी नहीं गिना जाता था। साइमन के बाप के दुश्मन

ज्ञानटीपस का बेटा पेरीक्लिस नाम एक आदमी बोलचाल और राज्य के बन्दोबस्त में बहुत योग्य था। वह साइमन का बिरोधी था। साइमन एथेंस के कुलीन लोगों की तरफ़ था और पेरीक्लिस वहां की साधारण प्रजा की ओर था। इन्हीं दो आदमियों के सबब से एथेंस में दो दल हो गये। और दो दल होने का एक सबब यह भी हुआ कि कुलीन लोगों ने स्पार्टा वालों से मेल रखने चाहा और प्रजा लोगों की मेल करने की इच्छा न थी। इन दिनों लाकोनिया नाम जगह में भूकम्प होने से स्पार्टा वालों की बड़ी हानि हुई। यह औसर पा कर दास लोग जो हेलट कहलाते थे; और मेसिनीया के लोग स्पार्टा के बिरुद्ध बलवा करने लगे। स्पार्टा वालों ने इस समय एथेंस वालों से मदद मांगी तब एथेंस के दोनों दलों में इस बात पर बाद बिबाद होने लगा, कि उन लोगों को मदद देनी चाहिये कि नहीं। आखिर को साइमन के दल वालों की बात रही। स्पार्टा वालों ने बहुत सी लड़ाइयों के बाद दास लोगों को दबाया और उन मेसिनीया वालों का जिन्हों ने शरकसी की थी निकाल दिया। मेसिनिया वालों ने एथेंस वालों से शरन मांगी; एथेंस वालों ने उन को नपाक्टस शहर में रहने के लिये जगह दी। इस लड़ाई का नाम तीसरी मेसिनीया की लड़ाई पड़ी। यह लड़ाई ४५५ बरस ईसा से पहले हुई थी।

इस लड़ाई के अंत में एथेंस और स्पार्टा वालों में लड़ाई

की नेव पड़ी। स्पार्टा वाले खान खाह एथेंस वालों की बेइ-ज्ज़त किया, एथेंस वाले इसी डाह से तुरत स्पार्टा के शत्रु आरगस से मिल गये। इसलिये कोरिंथ नगर वाले लोग जो स्पार्टा की तरफ़ थे एथेंस वालों से बिगड़े और थिवस वाले भी कोरिंथ वालों के साथी हुए। यूनान का नक़शा देखने से यह साफ़ मालूम होगा कि जो देश या जो राज आपस में पास पास थे; उन में दुश्मनी थी। और जो आपस में दूर दूर थे उन में मेल था। सच पूछो तो दुनिया का ऐसा दस्तूर ही है; और सदा सब जगह डांड़ मेड़ की लड़ाई देखने में आती है। जो हो इन्ही बिरोधों के कारन दो तीन लड़ाईयां हुईं। लेकिन उन से कोई फल न मि-कला। निदान साइमन और पेरीक्लिस एक मत हुए, और इन लड़ाइयों को दूर करने के लिये यत्न किया। इस से फिर सब शहरों में मेल हो गया और लड़ाई दूर हो गई।

इस तरह का अमन चैन ईसा के जन्म के ४४८ बरस पहले तक रहा। बाद इस के डेलफी मंदिर के अधिकार के लिये फोसिया और डेलफी वालों में दंगा हुआ। स्पार्टा वाले डेलफी की तरफ़ और एथेंस वाले फोसिया वालों के तरफ़दार हो गये। तीन बरस तक यह झगड़ा रहा। निदान ४४५ बरस ईसा के जन्म के पहले फिर दोनों में मेल हो गया। इस समय थूसीडीडिस नामी एक आदमी बड़ा विद्वान् एथेंस में हुआ, उस ने पेरीक्लिस के बिरुद्ध हो कर ऐसी सलाह दी, कि जिससे मेल न हो। लेकिन पेरीक्लिस ही की बात रही।

थूसीडीडिस बहुत अच्छा प्रसिद्ध लिखने वाला था। यह बड़े इतिहास लिखने वालों में समझा जाता था।

मेल हो जाने के बाद पेरीक्लिस ने सेम्स टापू जीत लिया। और बहुत सी जगहों में एथेंस वालों की नईबस्तियां बसाईं। इस के बाद उस ने एथेन्स वालों के मददगार दूसरे ग्रीस वालों से कहा कि अगर तुम लोग फ़ारसी लोगों के साथ लड़ने के लिये सेना और जहाज़ न दे सको, तो हर साल हम लोगों को कुछ रुपया दिया करो, तो हम ही लोग तुम्हारे बदले लड़ा करें। इस बात को सबों ने पसन्द किया उसी समय से एथेन्स वाले दूसरे यूनानी लोगों से कर लेने लगे। उस कर के रुपये सिर्फ़ लड़ाई ही में खर्च न होते थे वरन उस में से बहुत से एथेन्स को शोभित करने में लगते थे यह समय एथेन्स की बड़ाई का था। इस समय में एथेन्स वालों का यथार्थ में जैसा अधिकार देखा जाता है वैसाही या उस से बढ़ के उन लोगों की विद्या में भी तरक्की पाई जाती है। उस समय के चित्र विचित्र जो सब बड़े बड़े मकान बने थे उन के खंडहर आज तक एथेन्स में देख पड़ते हैं। जिन लोगों ने उन सब को देखा है वे यही कहते हैं कि ऐसी जगह सारी दुनियां में कहीं दूसरी देखने में नहीं आती। पेरीक्लिस के समय एथेन्स जैसा कि कारीगरी के लिये मशहूर था, वैसा ही चित्र विद्या और खोदाई की कारीगरी, नाटक, काव्य, इतिहास आदि विद्याओं में भी अपना जोड़ न रख

ता था। इसी समय फ़िडियास नामी एक आदमी दुनिया में अद्वितीय कारीगर था और 'इसकाइलस' 'सफोक्लिस' और 'युरीपिडिस' आदि जगत उजागर नाटक बनाने वाले हुए थे। लेकिन पेरीक्लिस ने एथेन्स वालों की भलाई के लिये इतनी कोशिश की पर एथेन्स वाले उसका गुन मानने के बदले अपने जातीय स्वभाव के अनुसार उस के साथ भी सलूक करने से बाज़ न आये। लेकिन वह बड़ा बोलने वाला था, इस लिये उसने जल्द लोगों को फिर अपने हाथ में कर लिया। जो लोग उस के बिरुद्ध उठे थे वे सब लज्जित हो गये। पेरीक्लिस ने एथेन्स का बड़ा उपकार तो किया; लेकिन उस के समय में 'आसपेसिया' आदि बड़ी वेश्याओं की बढ़ती देखने से और उस देश के पंडितों के बिरुद्ध धर्म लिखावट पर ध्यान देने से यह साफ़ मालूल होता है, कि बड़े धनवान एथेन्स वालों में भोग बिलास में लवलीन होना और धर्म पर अश्रद्धा इसी समय से शुरू हुई थी।

सातवा अध्याय।

पिलोपोनीसीय युद्ध का बर्णन निसियास का मेल।

एथेन्स वालों ने यूनान के दूसरे लोगों से कर लेकर उस को अपने शहर को भूषित करने और अपना बल

बढ़ाने में लगाया इस बुरे काम का फल उनको जल्द ही मिला। एथेन्स वालों के जुल्म से ग्रीस बालों के नकों दम आ गया था इस लिये उन में से बहुतेरों ने स्पार्टा से सहायता मांगी, और एथेन्स के अहंकार को भंग करने चाहा। उस से बिशेष करके ग्रीस देश में आइयोनिय और डोरीय नाम दो जात के लोग बड़े गिने जाते थे उन में से 'आइयोनीय' लोग एथेन्स वालों की तरफ़ थे और उन के तौर पर साधारन राज की रीति चलाने की इच्छा रखते थे। और डोरीय लोग स्पार्टा की तरफ़ थे और वहां वालों को रीति के अनुसार कुलीन राज की रीति चलाने के लिये यत्न करते थे। जब यह हाल हुआ तो फिर उन लोगों में दो दल हुए एक दूसरे से शत्रुता, डाह, लड़ाई, दंगा करने लगा। इन्हीं सब कारनों से प्रसिद्ध पिलापोनीसीय लड़ाई शुरू हुई; यह लड़ाई बहुत दिनों तक बनी रही अन्त में दोनों तरफ़ के लोग लड़ते लड़ते ऐसे कमज़ोर हो गये कि सहज ही उन लोगों को दूसरे शत्रु ने दबा लिया आपस में फुट का ऐसा ही फल होता है; आपस की लड़ाई दोनों तरफ़ के लोगों में से किसी के लिये अच्छी नहीं, दोनों की बुराई ही होती है।

इस लड़ाई की नेव एक अदनी बात से पड़ी थी। 'करसाइरा' टापू और 'एपिडामनस' शहर ये दोनों कोरिन्थ की नई बसाई जगह थीं। इन दोनों जगहों के लोगों

ने आपस में लड़े । 'करसाइरा' वालों ने एथिन्स से सहाता मांगी और एपिडामनस के लोगों ने कोरिन्थ वालों से मदद के वास्ते प्रार्थना की । कोरिन्थ वालों ने एथिन्स वालों से लड़ने को अपनी प्रभुता न जान स्पार्टा वालों को शरन ली । इस तरह से आर्गस को छोड़ धीरे धीरे पिलापोनिसस के सब नगर और मध्य यूनान के इलाके के, मेगरा, फ़ासिस, लोक्रिस, बियोशिया और दूसरे दूसरे प्रदेश वाले स्पार्टा की ओर हुए, इस के सिवाय उन लोगों ने फ़ारस के राजा से भी मदद मांगी । एथिन्स वाले 'काइअस' 'लेसवस' 'प्लेटीय' 'नपाकटस' 'आकर्नानिय' वग़ैरह के रहने वालों की सहायता ली ।

इस तरह से दोनों तरफ़ के लोग जब लड़ाई के लिये तैयार हुए तो स्पार्टा का राजा आर्कीडेमस ४३१ बरस ईसा के जन्म के पहले बहुत सी सेना लेकर आर्टिका में गया, उस समय पेरीक्लिस की सलाह से एथिन्स वाले अपने शहर में जिस की चारों ओर दृढ़ दीवार बनी थी घुस कर बैठ रहे । आर्कीडेमस ने उन सब जगहों को जिसकी रक्षा एथिन्स वालों ने न की मनमाना लूटा और लौट गया ; पर इस के बाद एथिन्स वाले चुप न बैठ रहे, वे तुरत अपने जंगी जहाज़ों को तैयार कर पिलापोनिसस के समुद्री किनारों पर जा उतरे, और स्पार्टा वाले जो कुछ उन लोगों का नुकसान कर गये थे उस से सौ गुना अधिक नुकसान उनका कर फिर आये ।

इस पहले साल की लड़ाई में एथेन्स वालों की जीत हुई। दूसरे साल आर्कीडेमस फिर आटिका पर चढ़ा और एथेंस वाले फिर अपने क़िले में घुस बैठे। और उस के जाने पीछे स्पार्टा वालों को अपने जंगी जहाज़ों से छिन्न भिन्न करने लगे पर न जाने भीड़ भाड़ होने के कारन या और किसी दूसरे कारन से एथेन्स में बड़ी मरी पड़ी नगर वालों में से लग भग चार हज़ार और कुछ कम दस हजार दास मर गये, उसी समय महात्मा पेरिक्लिस भी मर गया। इस लिये उस के दूसरे बरस में भी एथेन्स वाले कुछ न कर सके क्योंकि जब आर्कीडिमस ने उन के पुराने मित्र प्लेटीया शहर के लोगों पर हमला किया और बड़ी कठिनता से उन के नगर को सत्यानाश किया, उस समय वे लोग सहायता करने न जा सके, तब अब उन से क्या हो सकता था।

पिलापोनीसिया की लड़ाई के चौथे बरस यानी ४२८ बरस ईसा के जन्म के पहले लेसबसटाफ के निवासी स्पार्टा वालों की तरफ़ से एथेन्स वालों से लड़ने को तैयार हुए, पर पाचीस नाम एथेन्स के जहाज़ों के प्रधान ने उन लोगों के ख़ास नगर 'मीटीलिनी' को ले लिया। उसी समय से लेसबसटाफ वाले जो कि पहले एथेन्स वालों के मेली थे अब अधीन हुए। उसी साल सीसिली टापू के रहने वाले आइयोनीय और डोरीय लोगों के दर्मियान भी यूनान के देशी झगड़ों की आग भभकी।

उस टापू के सिराकुस और लियनटिन इन दोनों शहरों में से पहला स्पार्टा की ओर दूसरा एथेन्स की तरफ़ हो कर आपस में लड़ने लगे।

४२६ बरस ईसा के जन्म के पहिले एजिस नामी स्पार्टा के राजा ने फिर सेना लेकर आर्टिका पर चढ़ाई की, लेकिन उस को अपने देश की रक्षा के लिये जल्द ही लौट आना पड़ा। उस का कारन यह हुआ कि डिमसथिनिस नामी एथेंस वालों के जहाज़ के सर्दार ने मेसिनिया प्रदेश में जाकर वहां के प्राचीन नगर पाइलस में एक क़िला बनाया, इस लिये चारों ओर के बहुत से मेसीनिया वाले लोग उस से आ मिले,और स्पार्टा वालों ने हज़ार किया पर क़िला न ले सके और अपने द्वार पर ऐसे शत्रु को रहते देख बहुत चिन्तित हो यह प्रतिज्ञा की कि जो चाहे सो हो पर पाइलस को ज़रूर लेंगे इस लिये उन लोगों ने स्फाकटीरिया टापू में एक छावनी बनाई। एथेंस वालों ने भी उस समय लड़ाई की जगह कई एक जंगी जहाज़ भेजे। स्पार्टा की सेना स्फाकटीरिया टापू में पाइलस क्या लेगी अब आप ही दुश्मनों के लश्करों से घिर गई, पर उस में बहुत से बड़े बड़े घराने के लोग थे, इस लिये उन को बड़ी तो इज़्ज़त की पड़ी थी, वे लोग लड़ाई करने की विद्या में भी ख़ूब निपुण थे। उन लोगों ने ऐसे ज़ोर शोर से लड़ना शुरू किया कि एथेंस वाले दोनों तरफ़ से चढ़ाई करने पर भी उन का टापू न ले सके। उस समय एथेंस वालों की

सभा में दो आदमी बहुत इख़्तियार रखते थे, उन में एक का नाम क्लीयन और दूसरे का नाम नीसीयास था। क्लीयन बहुत ही निर्बुद्धि, चंचल, और अहंकारी था; नीसीयास बहुत धीर, ज्ञानी, और धर्मात्मा था। जब यह हाल एथेंस में पहुंचा कि स्फाकटीया जय नहीं हो सका, तब क्लीयन बोल उठा कि अगर मैं सेनापति हो ऊं तो लड़ाई में जाते ही स्पार्टा के बीर लोगों को बांध लाऊं। एथेंस वाले जानते थे कि उस से कुछ नहीं हो सकेगा पर तो भी उन लोगों ने तमाशा देखने की इच्छा से एक मत हो कर उस को सेनापति बना कर भेजा; पर किस्मत का अजीब खेल है, क्लीयन स्फाकटीया टापू में जाते ही लड़ाई की तदबीर कर रहा था कि उसी समय में स्पार्टा वालों की छावनी के निकट के वन में आग लगी, वे लोग घबरा गये अच्छी तरह से लड़ न सके। क्लीयन ने उन सबों को सहज ही में जीत कर क़ैद कर लिया और अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। इस के बाद क्लीयन और एक लड़ाई में गया; मैसीडोनिया के नज़दीक के एक शहरों के लोग एथेंस वालों के साथ लड़ने को तैयार हुए थे। स्पार्टा का राजा ब्रासीडास जो बड़ा नेक और ज़मामर्द था वहां आकर एथेंस वालों की बड़ी ख़राबी कर रहा था; क्लीयन उस के साथ लड़ाई में हार गया और मारा गया लेकिन स्पार्टा का राजा ब्रासीडास भी उसी समय मर गया। तब दोनों तरफ़ के लोगों ने एक दूसरे की बर्बादी देख कर

लड़ाई करना छोड़ दिया, और ४२१ बरस ईसा के पहले आपस में मेल किया। नीसीयास के द्वारा यह मेल हुआ इस लिये इस को नीसीयास की सन्धि कहते हैं।

आठवां अध्याय।

सिसिली पर चढ़ाई-आलसीवाइडिस एथेंस के स्वाधीनता का नाश।

यूनान में कोई मेल बहुत दिन तक रहने को नहीं। बिशेष कर के इस समय 'निसियास' का बिरोधी 'आलसीवाइडिस' नामी एक जवान जो बड़ा गुणवान था पर आपस्वार्थी और अधर्म्मी था। एथेंस वालों की सभा में अपनी बड़ाई देखाने लगा। वह यह चाहता था कि फिर दोनों दलों में लड़ाई हो जिस में कि वह सेनापति का काम पावे और धन जमा करे। उसी के करतब से फिर लड़ाई शुरू हुई। इस लड़ाई में 'मिलस' टापू एथेन्स वालों के हाथ लगा। उस के कुछ दिन बाद एथेन्स वालों ने सिसिली टापू को जय करने की इच्छा से बहुत से जहाज़ और लशकर भेजे। पहले 'आलसीबाइडिस' 'लामाकस' और निसियास' ये तीन सेनापति हो कर गये; लेकिन आलसी-

वाइबिडस' के शत्रु की तरफ़ के लोग उस के पीछे में बलवा मचाने लगे तब उस के फिर आने के लिये एक चिट्ठी भेजी गई; उस ने उस चिट्ठी के पाते ही सेनापति का काम छोड़ स्पार्टा में चला गया। वह वहां जाकर लोगों को यह सलाह देने लगा कि ऐसा यत्न करना चाहिये जिस में एथेन्स वाले सिसिली जय न कर सकें स्पार्टा वालों ने उस के बहकाने पर 'गिलिपस' नामी अपने सेनापति को बहुत लश्कर समेत सिसिली टापू में भेजा। उस समय वहां हरमोक्रेटिस नामी एक आदमी बड़ा बोलने वाला और बीर सिराकुसीय नगर का सर्दार बन कर उस की रक्षा करता था। जब गिलिपस उस के साथ जामिला तब एथेन्स वाले कमज़ोर हो गये। जिस देश के आस पास की जगह मालूम नहीं रहती और जहां के समुद्र का यह हाल कि कहां कितना गहिरा और कहां कैसा पानी है मालूम नहीं रहता और अगर उस देश के प्रजा लोग बिगड़ बैठें तो उस देश को जय करना बहुत ही कठिन है। सिवा इस के निसियास कुछ बड़ा योग्य सेनापति न था और उस का साथी 'डीमसथिनिस' भी उस के समान ही था। इस लिये चतुर 'हर्मकरेटिस और योद्धा गिलि-पस से वे दोनों हार गये तब लश्कर और जहाज़ समेत क़ैद कर लिये गये और बहुतेरे सिसिली वालों के गुलाम बनाये गये। एथेंस में यह ख़बर पहुंचते ही हाहाकार पड़ गया। एथेन्स वालों को उसी घड़ी मालम हुआ कि

उन का नाम, बल, और यश सब सिसिली के समुद्र में डूब गया और अब फिर कभी निकल ने की आस न रही अगर स्पार्टा के लोग उसी समय चढ़ दबाते तो एथेंस ले लेते लेकिन उन लोगों ने उस समय कुछ नहीं किया केवल आर्टिका देश के 'डेसीलिया' नामी जगह में एक क़िला बनाया जो बतौर कांटे के एथेंस वालों के तन में टपक ने लगा। आलसीवाइडिस भी स्पार्टा की तरफ़ हो कर उन लोगों को स्पार्टा की तरफ़ मिलाने लगा जो पहले एथेंस वालों के मित्र थे।

इस समय एथेन्स वाले यह समझ के कि उनका अब कोई सहायक न रहा आलसीबाइडिस को फिर अपने देश को बुलाया। आलसीबाइडिस ने कहला भेजा कि अगर तुम लोग राज की रीत बदल कर साधारन सभा की शक्ति घटा दो और हमारी इच्छा के अनुसार चार सौ आदमियों के हाथ में राज का काम सौंपो तब हम तुम्हारा सेनापति होकर लड़ाई में दुश्मनों का सामना करें। बिचारे एथेन्स वालों को यह भी मानना पड़ा तब आलसी-बाइडिस आप उनका सेनापति हुआ और झट स्पार्टा वालों की सेना को मार भगाया उनके जहाज़ के सर्दार मिंडेरस को लड़ाई में मारा और उसके तावे जितने जहाज़ थे सब छीन लिये गये। इस पर एथेन्स वाले बहुत प्रसन्न हुए लेकिन इसके थोड़े दिनों बाद आलसी-बाइडिस के नहीं रहने के कारन उसकी सेनाओं को दूसरे

एक सेनापति के दोष से स्पार्टा के सर्दार 'लाइसांडर' ने जीत लिया। पर एथेन्स वालों ने ख़याल किया कि आलसीबाइडिस फिर दुश्मनों की तरफ़ मिल गया नहीं तो उनकी सेना कभी नहीं हारती इस विचार से उन लोगों ने आलसीबाइडिस को फिर निकाल दिया और फिर साधारन सभा का राज जारी किया। आलसी-बाइडिस इसके बाद अपनी जन्मभूमि फिर कभी न देख सका। फ़ारस के राजा के 'मिट्रापफ़ारनबेजस' ने उसको मार डाला इसके बाद 'आरगिनुस अंतरीप के निकट स्पार्टा और एथेन्स के जंगी जहाज़ में बड़ी लड़ाई हुई इस में भी एथेन्स वालों ने जय पाई; और दुश्मन का सेनापति कालिक्रेडास लड़ाई में मारा गया पर एथेन्स वाले ऐसे कृतघ्न थे कि जय करने वाले सेनापतियों को योंही कुछ दोष लगा कर प्राणदंड किया। मालूम होता है कि अब एथेन्स वालों का पाप अपने हद्द को पहुंचा गया था। क्योंकि लाइसांडर ने फिर स्पार्टा का सेनापति होकर इगसपटामस की लड़ाई में एथेन्स वालों के सब जहाज़ों को छीन लिया और जल्द एथेन्स पर चढ़ आया। एथेन्स वाले उस समय बिलकुल निरूपाय हो गये। लाइसांडर ने थेमिस्टक्लिस की बनाई एथेन्स की दीवार तोड़वा दिया और साधारन प्रजाके राज के बदले तीस आदमियों के हाथ में राज का काम सौंपा और यह नियम किया कि एथेन्स वाले बारह जहाज़ से अधिक न रखने पावें और

एथेन्स वालों से यह भी इक़रार करा लिया कि वे स्पार्टा के दुश्मन को अपना दुश्मन और मित्र को अपना मित्र समझें। एथेन्स जो पहले यूनान का तिलक समझा जाता था अब नाम भर का रह गया यह बात ४०४ चार सौ चार बरस ईसा के जन्म के पहले हुई।

नवां अध्याय।

तीसजनों का राज, सोक्रेटिस, विद्या की चर्चा,
फ़ारसीराज, जेनोफन, एजिसिलेअस,
अंटालसीडास का मेल।

एथेन्स में लाइसन्डर ने तीस आदमियों के इलाक़े जो राज का इन्तिज़ाम किया था उससे प्रजा पर बहुत ज़ुल्म होने लगा। बहुत से लोग अपना मुल्क छोड़ छोड़ कर दूसरी दूसरी जगहों में चले गये। बदमाशों ने भी उपद्रव मचाना शुरू किया एथेन्स वालों की ऐसी दुर्गति हुई कि उनके शत्रु भी उस समय उनका हाल देख कर अफ़सोस करते थे। बहुत से स्पार्टा वालों ने भी अपने पुराने दुश्मन को गुलामी की हालत से छोड़ाने की ख़ाहिश दिखाने लगे। उन-तीस आदमियों में से जिनको राज का काम सपुर्द

हुआ था कोई कोई प्रजा के दुख दूर करने का यत्न करने लगे उन में से एक शख्स थरामिनिस नामी ने लोगों को भलाई करने पर कमर बांधी इस लिये उस के साथियों ने डाह से उसको हेमलौक के पत्ते का रस जो एक तरह का बिष है पिला कर उसका काम तमाम किया।

उस वक़् हेमलौक के रस से और भी एक बड़ा महात्मा मनुष्य मारा गया था। इस ने दुनिया में सिर्फ़ भलाई करने के लिये जन्म लिया था। डेलफ़ी के अपालो देवता ने कि जिसको कला बड़ी जागती थी कहा था कि वह मनुष्य सब से बड़ा ज्ञानी है उसके शागिर्दों ने अनेक दर्शन शास्त्र बनाये हैं और उन्हीं शास्त्रों की रौशनी से सब सभ्य देश आज तक उंजियाले हो रहे हैं उसका चरित्र आज तक लोग उदाहरन के तौर पर मानते हैं उस अध्यात्म विद्या के बड़े आचार्य जगतगुरू का नाम सोक्रेटिस था। इस के पढ़ने से रोवां खड़ा हो जाता है ये जब कि जेल-खाने में थे तब अपने शिष्यों को आत्मा के नित्यता के बिषय में जो उपदेश किया था उस को पढ़ने से सब के मन से मरने का डर जाता रहता है इसे और इस के शिष्यों से जो बातें हुईं उन्हीं का मतलब एकट्ठा कर इस के प्रिय शिष्य प्लेटो ने जीव यानी रूह को अमर ठहराया है इस किताब के पढ़ने से जीवात्मा के अमर होने पर बड़ा विश्वास हो जाता है उसी के पढ़ने से 'क्लियम्ब्रोटस' नामी एक यनानी ने आप से आप

अपनी जान दे दी। इस 'सोक्रेटस' के ऐसे आदमी ने भी राजदंड पाया। इस बात के ख्याल करने से साफ़ मालूम होता है कि इस दुनिया में जो सब बिपत आदमी पर पड़ती हैं, वे सब सिर्फ़ आदमी के निज अपराध ही के सबब से नहीं पड़तीं।

एथेन्स से जितने अच्छे अच्छे लोग निकाल दिये गये थे उन में से एक का नाम 'थ्रासीबूलस' था; तीस ज़ालिमों के ज़ुल्म से एथेंस की प्रजा भर का दम नाक में आरहा था इस लिये इस शख़्स ने अपने मुल्क को स्वाधीन करने की कोशिश की यह एकाएक एथेंस पर चढ़ आया और उन तीसों ज़ालिमों को निकाल दिया। स्पार्टा वालों ने भी रहम कर एथेंस वालों को फिर स्वाधीन होने दिया। लाइसान्डर के दुश्मन स्पार्टा के राजा पसेनियस की कृपा से एथेन्स के लोग अपने देश में पहले सा राज फिर स्थापन किया।

इसके बाद एथेन्स के लोग जल्द किसी ख़ास लड़ाई में हाथ नहीं लगाया उनके शहर में 'आरिस्टफेनिस' वग़ैरह बड़े बड़े कवि और नाटक बनाने वाले थे। प्लेटो और 'डाइयोजिनिस' वग़ैरह दर्शन विद्या की चर्चा करते थे। थूसीडिडिटस आदि इतिहास जानने वाले लोग तरह तरह के इतिहास लिख कर यूनानियों का नाम सदा के लिये मशहूर करते थे। उस समय एथेन्स के लोग इन्हीं सब को देखने सुनने में अपना दिन काटते थे।

पर स्पार्टा वालों को काव्यरस नहीं सोहाता था सिर्फ़ लड़ाई ही उन लोगों का काम था। वे लोग जिस तरह से फ़ारसियों के साथ बड़ी लड़ाई में लगे उसका हाल लिखते हैं।

फ़ारस के राजा ने यूनान में बहुत सी सेना भेजी थी लेकिन कुछ बन नहीं पड़ा था इस लिये उनका बड़ा राज बहुत ही कमज़ोर पड़ गया था और उसके बाद वहां के किसी भी राजा के बहुत दिन तक राज करने और देश को फिर बली करने का अवकाश न मिला था। ज़र्क्सीस के बाद जितने राजा हुए उन में से कोई सात महीना और कोई दो महीना राज सिंहासन पर रहा। उन में से किसी ने भी कोई यश का काम करने का समय न पाया सब यहीं मरते गये। अन्त को आरटा 'ज़र्क्सीस' 'निमन' और साइरस इन दोनों भाइयों में राज के लिये बड़ी लड़ाई हुई। साइरस छोटा था वह राज पाने की लालसा से थोड़ी सी यूनानी सेना लेकर अपने बड़े भाई पर चढ़ गया बेबिलन के नज़दीक 'कुनाक्सा' नाम जगह में दोनों में लड़ाई हुई। उस लड़ाई में यूनानी सेना की जय हुई पर साइरस मारा गया। उसके बाद फ़ारस के राजा के नौकरों ने यूनानी लश्करों के अफ़सरों को नेवता के बहाने अपने घर बुलाया और मार डाला। इस तरह से यूनानी सेना दुश्मन के देश में अनाथ हो, बड़ी बिपत में पड़ी। पर नेक और ज़मामर्द

सिपाहियों के अलका क्या कहना है ; दस हज़ार यूनानी सेना कुल बिपतों को काटती छांटती कुशल छेम से अपने देश को लौट आई। सोक्रेटस के एक शिष्य 'जनोफन' जो इतिहास जानने वाला था उस यूनानी सेना को अपने मुल्क तक लाया।

उस समय से यूनानी और फ़ारसियों में फिर लड़ाई चली। यूनान में स्पार्टा उन दिनों प्रधान था वहां के सर्दार लोगों ने सेना लेकर फ़ारस पर चढ़ाई की। 'एजीसीलेयस' नाम बहुत अक़्लमंद स्पार्टा के लंगड़े राजा ने फ़ारस देश को खूब बर्बाद किया और जब फ़ारसी लोग यनानियों से ज़ोर में न सके तो रूपयों से लड़ने लगे। उन लोगों ने आरगस, कोरिन्थ, एथेन्स, और थिबस वग़ैरह के रहने वालों को रूपया दिया और स्पार्टा के साथ लड़ने को उभाड़ा। जब इस लड़ाई का सामान हुआ तो स्पार्टा वालों ने अपने राजा 'एजीसीलिअस' को यूनान में फिर आने को कहा। वह भी अपने मुल्क की नामवरी को पूरी नहीं कर सका आखिर को ३८७ बरस ईसा के जन्म के पहले 'अंटालसीडास' नामी एक स्पार्टा का रहने वाला फ़ारस में जाकर मेल कर आया। इस मेल में यह बात ठहरी कि एशियामाइनर के किनारे जो यूनान की नई बस्तियां सब थीं वे फ़ारस के राजा के दखल में हों और यह भी ठहरा कि यूनान के सब क्या छोटे क्या बड़े शहर स्वाधीन रहें और स्पार्टा के

सब जंगी जहाज़ फारस के राजा के हवाले किये जांय। स्पार्टा के आपस्वार्थी लोगों ने अपनी बड़ाई रखने के लिये इन सब बातों को मान यूनान की बड़ाई को फ़ारस के राजा के चरन पर भेंट कर दी।

दसवां अध्याय।

थिवस की बड़ाई, फिलिप, डिमथिनिस, मैसीडो-निया की बड़ाई।

स्पार्टा के लोग इस तरह से फ़ारस के लोगों के साथ दीनता से मेल करके अनेक उपायों से यूनान में अपनी प्रभूता चलाने का यत्न करने लगे। एक दिन उनके सेना-पति फिविडास ने अधर्म से थिवस शहर का क़िला दख़ल कर लिया और उस में अपनी जात के कुछ सिपाही रख आया; इस पर स्पार्टा वालों ने फिविडास को सजा तो दी लेकिन उसने जो क़िला दख़ल किया था उसे छोड़ना न चाहा। उस समय में थिवस के साथ स्पार्टा वालों का मेल था इस लिये उन लोगों की ऐसी करनी मित्र के साथ देख सब यूनानी स्पार्टा वालों से बहुत चिढ़ गये उस समय पिलो-पीडास नामी एक बड़ा योग्य मनुष्य थिवस से नीकाला गया

था वह जाकर दूसरी जगह रहता था और एक दिन रात के वक़्त थोड़े लोगों के साथ रूप बदल कर शहर में गया और स्पार्टा के कुछ दुष्ट आदमियों को तो मारडाला और बाकी लोगों को निकाल दिया इस तरह अपनी जन्म भूमि को उस ने फिर स्वाधीन किया। उस समय 'इपामीनंडास' नामी एक पंडित थिवस में था उस ने अपने शास्त्र की चर्चा छोड़ उस समय के काम की शस्त्र विद्या हासिल की। और लड़ाइयों में बड़ी बड़ी चालाकियां दिखलाई इस लिये उस को थिवस के लोगों ने अपना सेनापति बनाया। इपामीनंडास ने लड़ाई करने की बहुत सी हिकमतें निकाली और लिउकट्रा की लड़ाई में दुश्मनों को जीतकर स्पार्टा पर चढ़ गया। अब उस के समय में थिवस शहर यूनान में सब से बढ़ गया एथेंस वाले डाह से अपने दुश्मन स्पार्टा लोगों के साथ मिल गये पर तौभी वे थिवस का कुछ न कर सके। मांटीनिया की लड़ाई में एथेंस और स्पार्टा के सिपाहियों ने इपामीनंडास से हार माना लेकिन उस लड़ाई में इपामीनंडास आप मारा गया। उस समय स्पार्टा का मशहूर राजा एजिसिलेयस भी मर गया वह कुछ दिन पहले मिसर गया था इस लिये कि मिसर के लोगों ने फ़ारस के राजा से बाग़ी हो कर उस से मदद मांगी थी लेकिन एजिसिलेयस की मुराद पूरी नहीं हुई थी वह निर्बल होकर अपने मुल्क को फिर आया और यहां आकर परलोक सिधारा। इस समय स्पार्टा वाले बहुत लाचार

हो गये और मेल करना चाहा। और २६१ बरस ईसा के जन्म के पहले मेल होने पर कुछ दिन तक लड़ाई बंद रही।

थिवस वालों ने बढ़ती के समय मासीडोनिया में सेना भेजी और वहां के राजाओं का आपस का देशी झगड़ा निपटा दिया और वहां के राजपुत्र फिलिप को थिवस शहर में मंगा लिया। इपामोनंडास फिलिप पर बहुत स्नेह करता था इस लिये उस को लड़ाई के ढंग और तौर सिखला कर खूब पक्का किया। फिलिप अपने मुल्क का राज पाने पर अपनी लड़ाई की विद्या दिखलाई। उसने धीरे धीरे मासीडोनिया और थ्रेस सामुद्री किनारों पर की अपनी नई बस्तियों को अधीन किया। मासीडोनिया की सेना को अच्छी तरह से शिक्षा दी। ग्रीस के वक्ताओं को घूस देकर अपने बस में लाया और जब सब यूनानी लोग मिल कर फोशीय लोगों से धर्म युद्ध कर ने को तैयार हुए तब वह किसी ढंग से उस मिले हुए लशकर का सेनापति हुआ। इस तरह से जब मासीडोनिया का राजा यूनान में प्रधान हुआ। तब कोई कोई बुद्धिमान मनुष्य उस पर संदेह करने लगे विशेष करके एथेंस शहर का बड़ा वक्ता 'डिमिस-थिनिस' पहले ही से फिलिप का दिली मतलब समझ गया था। वह वहां के बड़े लोगों में से एक था; उस का हाल पढ़ने से बड़ा आश्चर्य होता है और जाना जाता है कि आदमी को असाध्य कोई वस्तु नहीं है यह लड़कपन में तोत-

लाता था और अपनी शरीर को हिलाया करता था; उसको याद रखने को भो शक्ति न थी; बहुत परिश्रम से जो याद करता था उसे थोड़े ही समय में भूल जाता था। इस को कोई अच्छा गुरु भी न मिला था। उस के साथ के पढ़ने वाले उसको तोतली बोली और बदन हिलाने पर हंसते थे इसी वह तंग रहता था। डिमिसथिनिस ने इन सब दोषों के रहते भी ऐसा नाम पैदा किया कि सब लोग यह कहते थे कि उसके ऐसा बड़ा बोलने वाला सारी दुनिया में कोई दूसरा नहीं हुआ। वह लड़कपन ही से हकलाना दूर करने के लिये अपने मुंह में पत्थर के टुकड़े भर कर समुद्र के किनारे बड़े जोर से चिल्लाता था और आसन का दोष दूर करने के लिये अपने कंधे पर दो तेज तलवार रखता था इस लिये कि बदन हिलने ही से कट जाय। वह अपने याद करने की शक्ति बढ़ाने के लिये जो किताब पढ़ता था उस को अपने हाथ से लिखता था; विशेष कर के थिउसीडिडिस के बनाये हुए इतिहास को उसने आठवार लिखा था। लोगों से मुलाकात करने में समय नष्ट होगा यह समझ कर वह अपना आधा सिर मुड़ा घर के भीतर ही रहा करता था और अपने सामने आईना रख कर सभा में बोल ने का अभ्यास करता था जिस में बोलने या देह आदि हिलाने में कोई बुराई हो तो उसे दूर करें। 'डिमिस-थिनिस' इस तरह विद्या लाभ कर अपने देश की भलाई

करने में लगा। उसने यह देखा कि मासीडोनिया के राजा मन में बुरी लालसा रखता है और ऐसा खबरदार है कि अपने मन की थाह किसी को नहीं लगने देता। इस पर वह एथेन्स वालों को यही चेताता था कि फ़िलिप का बल बढ़ने मत दो। लेकिन एथेंस वालों ने पहले तो इस पर कुछ ध्यान न दिया निदान ३३८ बरस ईसा के जन्म के पहले जब फ़िलिप का दुष्ट अभिप्राय: खुला तो एथेंस वालों ने थिबस के लोगों के साथ मिल कर किरोनिया नामी जगह में उस से लड़ाई की लेकिन वे लोग इस लड़ाई में हार गये उस समय से मासीडोनिया का राजा फ़िलिप चाहे नाम भर का न हो पर असल में सारे यूनान का मालिक हुआ। और उस के बाद उस ने सब यूनानी सेना इकट्ठी कर फ़ारस पर चढ़ाई करना चाहा। ३३७ बरस ईसा के जन्म के पहले कोरिन्थ शहर में एक बड़ी सभा हुई उस में यह बात ठहरी कि यूनान के सब जगहों से सेना और रुपया लेकर फ़िलिप फ़ारस पर चढ़ाई करें। लेकिन 'पसेनियस' नामी किसी दुष्ट ने फ़िलिप को मार डाला इस से यह बात रुक रही।

इग्यारहवां अध्याय।

बड़े सिकन्दर का बयान एन्टिपेटर।

फ़िलिप के मरने के समय सिकन्दर की अवस्था बीस बरस की थी लेकिन उस ने छोटे ही अवस्था में अपनी स्वभाविक बड़ाई का प्रमान लोगों पर प्रगट किया। उस ने राज-सिंहासन पर बैठते ही देखा कि मेरे बाप के दुश्मनों ने मुझे नालायक़ समझ कर फिर सिर उठाया। तो उस ने जल्द लड़ाई की तैयारी कर पहले थ्रेसी लोगों को दबाया और उन पर अपनी हुकूमत जमाई। बाद इस के और शत्रुओं को दबा कर अपने राज के उत्तर तरफ़ का सब बलवा मिटाया। उसी समय सुनने में आया कि यूनान के सब लोग एक राय हो कर बिगड़ गये हैं विशेष कर के थिबस के रहने वालों ने सुना था कि थ्रेस की लड़ाई में सिकन्दर खेत आया इस लिये उन लोगों ने फिर अपनी बड़ाई पाने के लिये बिगड़े; पर सिकन्दर यह समाचार सुनते ही जल्द थिवस शहर में जा पहुंचा। उस को देखते ही थिवस के रहने वालों को होश हवास जाती रही। सिकन्दर उस समय ऐसे क्रोध में था कि सारे थिवस शहर को खोदवा कर पष्ट करवा दिया और जितने वहां के रहने वाले थे उन सबों को बतौर दास के बेंच डाला। यद्यपि सिकन्दर के नाम में इस निठुरता

के कारन कुछ बट्टा लगा पर तौ भी इस से एक यह बड़ा लाभ हुआ कि दूसरे यूनानी बाग़ी लोग डर कर ठंढे हो गये और जैसा वे सिकन्दर के बाप को मानते थे वैसा ही उस को भी मानने लगे।

३३४ बरस ईसा के जन्म के पहले सिकन्दर ने तीस हज़ार पैदल और पांच हज़ार सवार के साथ फ़ारस देश पर चढ़ाई की। ग्रानिकस नदी के किनारे पहली जो लड़ाई हुई उस से सारा एशियामाइनर उस के हाथ में आगया; बाद इस के 'हालीकार्नासस' नामी क़िला को रखा जिस फ़ारस राज की तलब खाने वाली बड़ी यूनानी सेना करती थी, उसके दख़ल में हो गया। इस के बाद 'गडियम' शहर में जा कर वहां के मशहूर गांठ को काट दिया जिस से यह बात प्रसिद्ध हो गई कि सिकन्दर एशिया का नामी राजा होगा अर्थात यह बात मशहूर थी कि जो आदमी उस गांठ को खोल सके गा वह एशिया भर का निष्कंटक राज करे गा। सिकन्दर उस ग्रंथि को हाथ से तो खोल न सका तब अपनी तलवार से काट दिया और कहा कि इसी तरह से राज मिलता है। इस के बाद वह सिडनस नदी के ठंढे पानी में स्नान किया और अचानक बुख़ार में फंसा। सिकन्दर ने अपनी बीमारी में किसी आदमी से एक चिट्ठी पाई जिस में लिखा था कि सिकन्दर को चाहिये कि अपने वैद्य फ़िलिप की दवा न खाय क्यों कि फ़िलिप उस के बाप के दुश्मनों से घूस लेकर दवा के बदले उसे जहर

देगा । पर सिकन्दर लड़कपन ही से फ़िलिप को बहुत मानता था सिकन्दर को यह बात निश्चय हो गई थी कि फ़िलिप कभी ऐसा मेरे साथ न करेगा यह समझ कर जब फ़िलिप दवा लेकर आया तब सिकन्दर एक हाथ से दवा का कटोरा मुंह में लगा पीने लगा और दूसरे हाथ से जो चिट्ठी पाई थी वह फ़िलिप को पढ़ने को दी। जब कि फ़िलिप ने यह देखा कि हमारा मालिक हम पर ऐसा बिश्वास करता है तो वह ऐसा खुश हुआ कि कहा नहीं जाता।

फ़ारस का राजा दारायूस इतने दिन तक निश्चिन्त बैठा था बाद इस के बहुत सी सेना जमा कर सीलिसिया प्रदेश की सीमा पर आया और सिकन्दर को रोका ; उस जगह का नाम इसस था वहां एक लड़ाई हुई जिस में फ़ारस का राजा हार कर भागा उस की माता, स्त्री, और दो लड़कियां सिकन्दर के हाथ आईं। सिकन्दर ने उन का आदर मान और सब तरह की रक्षा की। इस लड़ाई के बाद सिकन्दर ने बहुत यत्न से टायर और गाजा नामी शहरों को दख़ल किया और वहां के लोगों की वही गति की जो थिवस वालों की की थी और धीरे धीरे पालसटीन, सिरिया, और मिसर आदि प्रदेश जीत कर लिबिया में जुपिटर आमन देव की मूर्ति का दर्शन करने गया उस देवता के पुरोहितों ने यह कोलाहल किया कि वह उन के देवता का लड़का है। सिकन्दर ने नील

नदी के मुंह पर 'अलेकजंड्रिया नामी एक भारी शहर बसाया, जो थोड़े ही दिनों में तिजारत के लिये बड़ा प्रसिद्ध हो गया। टायर के बर्वाद होने पर चारो तरफ़ के सौदागर तिजारत के लिये इसी शहर में आने लगे।

इस समय दारायूस पहले से भी अधिक सेना जमा कर लड़ाई के लिये तैयार हुआ। सिकन्दर यह सुनते ही मिसर से चला और यूफ्रेटीस, और टाइग्रिस को पार हो कर 'गगामिला' नामी जगह में आया और वहां उस ने फ़ारसी सेना का सामना किया कहते हैं कि जिस दिन यह लड़ाई हुई उस की पहली रात को उस के बड़े सेनापति 'पारमिनिउ' ने एक ऊंची जगह पर उसे ले जाकर शत्रु की सेना दिखाई जो सब ग़ाफ़िल सो रही थी और यह कहा कि इसी रात के समय उन पर चढ़ाई करनी चाहिये, लेकिन बड़े सिकन्दर ने यह उत्तर दिया कि मैं जय करना अपने बाहु-बल से चाहता हूं न कि चोरी से। दूसरे दिन की लड़ाई में सिकन्दर बिजयी हुआ। दारायूस अपना राज छोड़ कर भागा और अपने साथी बेसस् के हाथ मारा गया। सिकन्दर ने इस बेसस को जैसा चाहिये वैसा दंड दिया। इस के बाद बाकट्रिया' 'सगडियाना' आदि पहाड़ी प्रदेश सब सिकन्दर के अधीन हो गये और उस ने धीरे धीरे तूरान का दक्षिणी हिस्सा और काबुल इत्यादि जय किया। इस के पीछे वह 'अटक' शहर की किसी जगह से सिन्धु नदी पार हुआ उस समय पोरस नामी एक बड़ा बीर

पञ्जाब का राजा था वह क्षत्रिय था इस लिये उस ने सिकन्दर के साथ बड़ा संग्राम किया यद्यपि उस के सब सिपाही खेत आये और भाग गये पर तौ भी वह लड़ता रहा। एक को बहुत हैं कहां पोरस अकेला और कहां यूनानी फ़ौज का रेला; सबों ने घेर उसे पकड़ लिया और सिकन्दर के पास ले गये सिकन्दर ने उस से पूछा कि तुम्हारे साथ मैं कैसा सलूक करूं; भला पोरस कभी डरने वाला था जो यमराज होता तौ भी वह न डरता उस यवन जुवराज की क्या बात थी निडर हो बोला; राजाओं के साथ जैसा सलूक करना चाहिये वैसा ही करो। सिकन्दर इस अहंकार की बात सुन क्रोधित न हुआ बरन उस का राजाओं सा मान सम्मान किया और उस को उस का सब राजपाट फ़ेर दिया। पोरस को जीत कर सिकन्दर दक्षिण पूरब ओर गया पर शतद्रू नदी के किनारे पहुंचने पर उस की सेना जो बहुत दिन लड़ती लड़ती थक गई थी सिकन्दर के साथ आगे बढ़ना न चाहा। सिकन्दर इस सबब से लाचार अपनी इच्छा पूरी न कर सका लेकिन वह बिन कुछ किये न फिरा, सिन्धु नदी में बहुत से जहाज़ें बनवा कर 'नियार्कस' नामी किसी अपने सेनापति को जहाज़ों का सर्दार बनाया और सिन्धु नदी की राह रवाना किया। उस ने आप लशकर के साथ उस नदी के किनारे किनारे जितने प्रदेश थे सब जीत लिये तब दक्षिण ओर चला। निदान जब उस ने हिन्द समुद्र को

देखा तब यह समझ कर कि और नये देश अब जीतने को न रहे रोने लगा। नियार्कस सब जहाज़ों को लेकर समुद्र में गया और अरब समुद्र हो कर फ़ारस के सागर में पहुंचा। सिकन्दर सिन्धु नदी को पच्छिम तरफ़ गया और बाद इस के बलोचिस्तान मरु-भूमि में पहुंचा और वहां बहुत क्लेश पाया और उसकी सेना भी बहुत सी बर्बाद हो गई। निदान उस ने बेबिलन शहर में जा कर वहां अपनी राजधानी बनाई। लेकिन सिकन्दर बहुत दिन तक राज भोग न कर सका, क्योंकि वह बहुत शराब पीने लगा। एक दिन शराब की नशे की झोंक में अपने धाई के पुत्र 'क्लाइटस' को जो उसका बड़ा प्रिय सेनापति था अपने हाथ से मारडाला। इसी निशाखोरी के सबब से उसे ज्वर आया और ग्यारह रोज़ की बीमारी के बाद मर गया।

सिकन्दर दूसरे वीर राजाओं के ऐसा मार, काट, बहुत पसन्द नहीं करता था सिर्फ़ यश का भूखा था और यश भी केवल युद्ध ही से नहीं चाहता था और यह भी यत्न करता था कि जिस में लोग विद्या सीखें और सुख से रहें। सिकन्दर ने लड़ाई में जितने शहर बर्बाद किये उन से अधिक आबाद भी किये।

उस ने यूनान से आने के समय अपने साथ बहुत से इतिहास-वेत्ता और दर्शन शास्त्र जानने वाले पण्डितों को लाया था; उन्हीं लोगों के द्वारा एशिया खंड में यूनानी

शास्त्र और शिल्प विद्या की चलन हुई थी। सिकन्दर के गुरू प्रसिद्ध आरिसटटल ने भी अपने शिष्य के भेजे हुए बहुत तरह के रत्न और बेल बूंटे और जीव जन्तु पाकर प्राकृत विद्या की बड़ी उन्नति की।

सिकन्दर में और एक बड़ा गुण यह था कि जिन फ़ारसियों को वह लड़ाई में जीतता था उन पर किसी तरह का फिर ज़ोर जुल्म न करता था बरन यह चाहता था कि वे लोग भी उस के देशी यूनानियों के सा ज्ञान और गुण में बढ़ें। उसने आप दारायूस राजा की लड़की के साथ बिवाह किया था और अपने सेनापति लोगों को भी बड़े बड़े फ़ारसी लोगों की लड़कियों के साथ बिवाह करने की इजाज़त दी। वह इस तरह से यूनानी और फ़ारसी लोगों का आपस में मेल बढ़ा कर उन को एक नज़र से देखता था। पर यूनानी लोग इस बात से बहुत जलते थे। फ़ारसी लोग सिकन्दर को बड़ी भक्ती से दण्डवत प्रणाम करते थे इस लिये वह उन पर बहुत ही खुश रहता था। पर यूनानिय लोग स्वतंत्र स्वभाव के थे वे लोग यह सब नहीं देख सके थे। इस लिये वे आपस में सिकन्दर से विगड़ने की सल्लाह करने लगे। सिकन्दर ने बड़े यत्न से यूनानियों के इस यलवे को दवाया तो सही, पर उसे इस में 'पारमीनियो' और उस के लड़के 'फ़िलोटास' आदि कई एक बड़े बड़े सेनापतियों को प्राण दण्ड पड़ा।

सिकन्दर बड़ा प्रतापी और महापुरुष था इस में कुछ

सन्देह नहीं। जिस आदमी ने लड़कपन ही से जिस काम में हाथ लगाया उस को पूरा किया। जिस के सब कामों की प्रशंसा दुनिया में सब लोगों ने की और जिस को जो कामना हुई सब बर आई। ऐसा आदमी अपनी बड़ाई देख अपने को सब से बड़ा समझे और किसी किसी विषय में सब लोगों की चाल चलन से विपरीत चले तो यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं।

जब सिकन्दर फ़ारस पर चढ़ा था तब अपने पिता के मित्र एन्टिपेटर को अपनी जगह पर बैठा आया था। वहां एन्टिपेटर सुख में न रहने पाया। स्पार्टा वालों ने फिर स्वतंत्र होना चाहा और सिर उठाया; पर एन्टिपेटर को दुजि नामी जगह में लड़ कर उन का मान मर्दन करना पड़ा तब उन लोगों ने फिर शरणागत हुए। इस के बाद सिकन्दर के जीते जीते यूनान में फिर कोई उपद्रव न हुआ लेकिन सिकन्दर के मौत की खबर पाते ही एथेन्स वाले बिगड़े। उन लोगों ने पहले एन्टिपेटर को लड़ाई में जीता बाद उस को थिसिली के इलाके लामीया नामी नगर में बन्द कर रक्खा लेकिन अचानक उन का सेनापति मर गया और एशिया से मासीडोनिया की सेना भी आ गई इस कारण एथेन्स वाले ३२२ बरस ईसा के जन्म के पहले क्रानन की लड़ाई में हार गये। इस समय डिमास्थ-निस बिष पान कर मर गया और उसी के साथ एथेन्स की बड़ाई भी गई।

बारहवां अध्याय।

सिकन्दर के उत्तराधिकारियों का बयान ग्रीस में रोम वालों का इख़तियार।

सिकन्दर अपने मरने के समय यह भी कह गया था कि जो सब से लायक़ होगा वही सिंहासन पर बैठैगा। मालूम होता है कि उस महात्मा को यह बात खुल गई थी कि मेरे राजसिंहासन के लिये बहुत से लोग लड़ेंगे इस लिये किसी एक आदमी को उत्तराधिकारी बना जाना अपनी इज़्ज़त में बट्टा लगाना है। सिकन्दर के जिन सेनापतियों को जो जो जगहें मिलीं वे वहां के राजा हो दूसरे से लड़ने लगे। 'टलमिसोटर' मिसर का राजा हुआ। एन्टिपेटर और उस के बेटे 'कासांडर' ने मासीडोनिया का राज लिया। 'एन्टिगोनस' और 'इउमिनिस' को एशिया-माइनर मिलीं; 'सेलुकस' बेबिलन का स्वामी हुआ और 'लिसिमाकस' थ्रेस में राज करने लगा।

कासांडर ने धीरे धीरे सिकन्दर के बंश का उच्छेद किया। एन्टिगोनस ने इयुमिनिस को मार डाला इस लिये सब सेनापति उस पर क्रुद्ध हुए और उस से लड़ने लगे और २०१ बरस ईसा के जन्म के पहले उसको और उस के बेटे 'डेमिट्रियस' को 'इपसस' की लड़ाई में जीत

कर उस का सारा राज उन लोगों ने आपस में बांट लिया। यह डेमिस्ट्रियस कुछ दिनों के बाद एथेन्स में जाकर बहुत से लोगों को अपनी तरफ़ मिला लिया और मासीडोनिया का राजा हो बैठा। पर लालच बुरी बला होती है राज पाने पर भी संतोष कर न बैठ सका 'इपाइरस' के राजा 'पिरहस' पर चढ़ा आखिर को मुंह का खाया और भागा। पर सेलुकस के हाथ लगा उन्हों ने उसे भर ज़िन्दगी के लिये क़ैद कर रक्खा। 'पिरहस' ने कुछ दिन तक मासीडन में राज किया बाद इस के थ्रेस के राजा लिसिमाकस ने उस पर चढ़ाई की; तब पिरहस लिसिमाकस से लड़ाई में हार गया और मासिडन छोड़ दिया। लिसिमाकस सारे यूनान और मासीडन में एक छत्र राज करने लगा। वह प्रजा के पालने में बुरा न था लेकिन बदनसीबी से अपनी दूसरी स्त्री के उसकाने पर अपनी एक और स्त्री के लड़के को मार डाला तब उस की बेवा पतोह दुखी हो कर सेलुकस के पास भाग गई। सेलुकस इस के कहने पर लिसिमाकस से लड़ने लगा और २८१ बरस ईसा के जन्म के पहले 'साइरूपिडन' की लड़ाई में लिसिमाकस और उस की सेना खेत आई। पर सेलुकस को यूनान का राज न मिला; मिसर के राज 'टलीमी' के लड़के 'टलीमीसेरानस' ने सेलुकस को मार आप मासिडन का राजा हुआ। लेकिन इस समय 'केलुट' जात के बहुत से लोग यूनान में आ पहुंचे उन के साथ लड़ाई में

सिरानस मारा गया। केल्टिक लोग अपने राजा ब्रेनस के हुक्म से डेलफी के मन्दिर पर चढ़ाई की लेकिन उनकी मुराद पूरी न हुई। यह बात २७९ बरस ईसा के जन्म के पहले हुई। टलमी सिरानस के मरने बाद डेमिट्रियस का बेटा एन्टिगोनसगोनाटस मासीडोनिया का राजा हुआ। लेकिन पिरहस ने इटाली से आ कर उसे राज गद्दी से उतार दिया और आरगस पर चढ़ाई की उस समय पिरहस मारा गया। इस लिये गोनेटस फिर राजा हुआ। गोनेटस के वंश का फ़िलिप जिस समय मासीडोनिया का राजा हुआ वह नाबालिग़ था इस लिये एन्टिगोनस डोसन नामी एक आदमी इस के बदले राज के सब काम करने लगा। इस समय पिलापोनिसस के इलाक़े एकेया के बारह शहर के आदमियों ने मिल कर एक सभा जारी की थी जिस की मुराद यह थी कि लोगों की रक्षा करें और सारे यूनान को स्वाधीन बनावें; लेकिन स्पार्टा के राजा एजिस और उस के बाद उस के वारिस क्लियोमिनिस अपनी प्रजाओं की चाल चलन दुरुस्त करके स्पार्टा में पहले की तरह बढ़ती करने का यत्न करते थे। एकेया वालों के साथ पहले ही उन से लड़ाई हुई इस लिये एकेया वालों के बिचार-पति आराटस और उसका सेनापति फिलोपिमेन ने मासीडन के राजप्रतिनिधि एन्टिगोनिस डोसन को अपनी तरफ़ लाकर स्पार्टा के राजा क्लिओमिनिस के साथ बड़ी लड़ाई की २२१ बरस

ईसा के जन्म के पहले मेलासिया की लड़ाई में स्पार्टा का राजा हार गया।

जिस समय एकीया वाले आपस में मेल करके प्रबल होने का यत्न करते थे उस समय यूनान के बीच के इलाके के इटोलिया के लोगों ने भी उसी तरह आपस में मेल किया। उस समय एथेन्स, स्पार्टा, थिबस आदि कमज़ोर हो गये और उन के बदले एकीया, इटोलिया और मासीडोनिया वाले बहुत प्रबल हुए। उन की आपस की लड़ाई से यूनान की स्वाधीनता बिलकुल जाती रही। और रोम वाले उस समय बहुत प्रबल हो कर अपना राज बढ़ाते थे। मासिडन का राजा फ़िलिप उन के साथ लड़ने लगा; इटोलिया की सेना रोमी लोगों की तरफ़ मिल गई और साइनोसिफेली नाम स्थान में १९७ बरस ईसा के जन्म के पहले जो लड़ाई हुई उस में मासीडन का राजा हार गया। इस समय से रोम वालों ने यूनान में बड़ाई पाई थी। फ़िलिप के मरने बाद उस का बेटा परसियस राजा हुआ यह रोम वालों की बड़ाई नहीं सह सका इस लिये वह उन से लड़ने लगा १६८ बरस ईसा के जन्म के पहले पिडाना में जो लड़ाई हुई उस में रोमियों ने जय प्राप्ती करी और परसियस कैद किया गया। इस के कुछ दिन पीछे एकीया वाले मूर्खता से रोमियों के साथ लड़ने लगे इस लिये रोम वालों ने यूनान पर चढ़ाई की १४६ बरस ईसा के जन्म के पहले लुकोपिट्रा की लड़ाई में एकीया वालों को जीत कर को-

रिन्थ शहर को बर्बाद किया उस समय यह बात भी ठहरी कि यूनान में और किसी तरह का मेल न होगा और रोमी लोग यूनान में राज करेंगे।



सम्पूर्णम्।

OUTLINES

OF THE

HISTORY OF INDIA

(Down to the year 1879.)

TRANSLATED BY

KESHAV RAM BHATT

HEAD MASTER, MODEL SCHOOL, ATTACHED TO PATNA NORMAL SCHOOL

हिन्दुस्तान

का

पूरा इतिहास।

(सन १८७९ ईसवी तक।)

मान्यवर श्रीयुत श्रीभूदेव मुखोपाध्याय सी० आई० ई०,

बिहार स्कूलोंके इन्स्पेक्टरकी आज्ञासे,

केशव राम भट्ट ने

पण्डित रामगति न्यायरत्न के बंगला इतिहास से तर्जमा किया।

दूसरी आवृत्ति।

पटना।—बिहार-बन्धु छापाखना।

१८७९।

दाम दस आने।

शमशाद सौसन।

यह नाटक भी शायद लासानी किताब नागरी हर्फ़ों में छपी है। मुल्क के ख़ैरख़ाह का जोश, हाकिमों का ज़ुल्म, बंगालियों की ख़ुशामद और कादरपन, बिरहबाण की घायल कुलवधू का आंसू टपकाना, बहादुरों की लड़ाई, दुष्टों की दुष्टता वग़ैरह नवों रस क्या अच्छे तौर और सिल्सिले में क़िस्से के ढंग पर बयान किये गये हैं कि वाह रे वाह! ज़ियादः और क्या इसकी तारीफ़ में लिखें, "हाथ कंगन को आर्सी क्या?" जिसका जी चाहे बांकीपुर, "बिहार-बन्धु" छापेख़ाने से मंगा ले, दाम कुल एक रुपया है और डाक महसूल दो आने।

विद्या की नेव।

लड़कों के हक़ में क्या ही अच्छी किताब यह छपी है। प्राइमरी स्कौलरशिप इम्तिहान के कोर्स में भी यह रक्खी गई है। दाम कुल दो आने हैं। बांकीपुर, "बिहार-बन्धु" छापेख़ाने में मिलती है।

OUTLINES

OF THE

HISTORY OF INDIA

(Down to the year 1879.)

TRANSLATED BY

KESHAV RAM BHATT,

HEAD MASTER, MODEL SCHOOL, ATTACHED TO PATNA NORMAL SCHOOL

हिन्दुस्तान

का

पूरा इतिहास।

(सन १८७९ ईसवी तक।)

मान्यवर श्रीयुत श्रीभूदेव मुखोपाध्याय सी॰ आई॰ ई॰,

बिहार स्कूलोंके इन्स्पेक्टरकी आज्ञासे,

केशव राम भट्ट ने

पण्डित रामगति न्यायरत्न के बंगला इतिहास से तर्जुमा किया।

दूसरी आवृत्ति ।

पटना।—बिहार-बन्धु छापाखना।

१८७९।

भूमिका।

इस आवृत्ति में भाषा के हेर फेर और अन्त में काबुल की लड़ाई जोड़ने के सिवा कदाचित कोई नई बात नहीं लिखी गई है। सनों में जहां जहां पहले भूल रह गई थी, वह इस बार सुधार दी गई।

बांकीपुर,
२९वीं जुलाई, १८७९। } केशव राम शर्म्मा।

PREFACE.

I OBTAINED the permission of my friend BABU RAMA GATI NYAYARATNA to translate into Hindi, for the use of the Schools of Behar, his History of India in Bengali. The translation has been made by BABU KESHAV RAM BHATT, the well-known editor of Behar-Bandhu and the author of Vidya-ki-Nev.

THE book now printed and published will meet one of the felt wants of the Behar Schools.

BHOODEVA MUKERJI,
Inspector of Schools, Behar Circle

इसका किसीको कोई अधिकार नहीं।

हिन्दुस्तान का पूरा इतिहास।

उपक्रमणिका।

भूसंस्थान।

हिन्दुस्तान के उत्तर हिमालय पहाड़, पूरब मनीपुर का पहाड़ और बंगाले की खाड़ी, दक्खिन भारत-महासागर, और पच्छिम अरब की खाड़ी और सिन्ध नदी है। यह देश उत्तर दक्खिन प्रायः ८०० कोस लंबा और पूरब पच्छिम प्रायः ६५० कोस चौड़ा है। इस देश का रक़बा ३७५००० तीन लाख पचहत्तर हज़ार वर्ग कोस, और आबादी आज कल २२००००००० बाइस करोड़ आदमियों की है। पुराणों में इस का नाम भारतवर्ष लिखा है, पर आज कल हिन्दुस्तान कहते हैं।

हिन्दुस्तान के बीचोबीच पूरब पच्छिम लंबा बिन्ध्य नाम पहाड़ है। इस पहाड़ के उत्तर भाग को आर्यावर्त्त और दक्खिन भाग को दखन कहते हैं। आर्यावर्त्त में— कश्मीर, समूर, गढ़वाल, कमायूं, नेपाल, भूटान, लाहौर, दिल्ली, अवध, बिहार, बंगाला, मुल्तान, राजपुताना, आगरा, इलाहाबाद, सिन्ध, कच्छ, गुजरात, मालवा, आसाम—

२० सूबे, और दखन में—खान्देश, गोंदवाना, उड़ैसा, बरार, औरंगाबाद, बिदर, हैदराबाद, उत्तर सरकार, बिजयपुर, बालाघाट, करनाटक, तुलव, मैसूर, कानड़ा, मलबार, कांची, द्राविड़, और ट्रावणकोर—१८ छोटे बड़े सूबे हैं। अगले समय में ब्रह्मावर्त्त, ब्रह्मर्षि, मध्यदेश, कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल, सिन्धु, मगध, अंग, बंग, उत्कल, अवन्ति, केरल, कलिंग, कनखल, आदि नाम के देशों में हिन्दुस्तान बंटा हुआ था।

हिन्दुस्तान के उत्तर हिमालय, पच्छिम अरवली, बीच में विन्ध्य, और दक्खिन में तिकोने की शकल के दखन के पच्छिम और पूरब कनारे कनारे घाट नाम के पहाड़ हैं। समुद्र या पहाड़ टपे बिना बिदेसियों के लिये यहां आने की प्रायः कोई राह नहीं है। सिन्ध और दिल्ली सूबों में कई एक रेगिस्तान भी हैं। आर्यावर्त और दखन दोनों भागों में जंगल बन भी बहुतेरे हैं। सिन्ध, गंगा, ब्रह्मपुत्र नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, और कावेरी, आदि कई एक नदियां हिन्दुस्तान में प्रधान हैं। इन के सिवाय सिन्ध की पांच शाखें, चम्बल, जमना, सरजू, घाघरा, सोन, महानदी, ताप्ती आदि छोटी बड़ी और भी बहुतेरी नदियां हैं। लंबी चौड़ी झीलें यहां नहीं हैं।

सारे हिन्दुस्तान की आबहवा एक सी नहीं है—कहीं बहुत ही अच्छी है और कहीं बहुत ही बुरी। कश्मीर की आबहवाकी बड़ाई तमाम प्रसिद्ध है। पहाड़ पर की और पहाड़ के आस पास की जगहों के सिवा तमाम जाड़ा, गर्मी, और बर्सात प्रधान ऋतें गिनी जाती हैं। पहाड़ी देशों में जाड़े की ऋत प्रधान है।

हिन्दुस्तान की ज़मीन का उपजाऊ होना सदा से प्रसिद्ध है। चावल, गेहूं, जव, मकई, बाजरा वगैरह नाज यहां के लोगों का प्रधान आहार है। यहां सखुआ, सागुआन, आबनूस, शीशम, चन्दन, आम, जामुन, कठल, ताड़, इमली, नारियल आदि बहुत तरह के पेड़ पैदा होते हैं। रूई, नील, अफ़ीम, रेशम, लाह, चीनी और शीरा इस देश में बहुत पैदा होता है। गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर, गधा, कुत्ता, ऊंट वगैरह जानवर, घराऊ, और सिंह, बाघ, भालू, गैंडा वगैरह जानवर इस देश के जंगली हैं। गोलकुंडा, सम्बलपुर, बुन्देलखंड, और कृष्णा नदी के तीर वगैरह कई एक जगहों में हीरे की खानें हैं। लोहा, अभरक, वगैरह और और खनिज चीजें भी जगह जगह पर बहुत पाई जाती हैं।

आबादी।

आज कल हिन्दुस्तान में हिन्दू मुसल्मान दो ही जातों की गिन्ती ज़ियादे है। इन में भी मुसल्मानोंसे हिन्दुओंकी गिन्ती छ सात गुन ज़ियादे है। सौंताल, भिल, रामुसी, गारो वगैरह जंगली कौमें पहाड़ों पर बसती हैं। इन के अलावह अंगरेज़, फ़रांसीसी, पुर्तगीज़, अमेरिकन, चीनी वगैरह कई एक बिदेसी कौमें भी बनिज बेवपार आदि वसीलों से यहां आ आ के बस गई हैं।

भाषा।

हिन्दुस्तान में जितने देश हैं उतनी ही भाषायें हैं। आज कल आर्य्यावर्तमें कश्मीरी, पंजाबी, सैन्धवी, गुजराती, हिन्दु-

स्तानी, बंगला, और आसामी वगैरह कई एक ज़बानें और दखन में उड़िया, तैलंगी, द्राविड़ी (तामिल) कर्नाटी, और मराठी प्रधान गिनी जाती हैं। इन सब भाषाओंकी (विशेष करके आर्यावर्त्तीय भाषाओंकी) जड़ संस्कृत है। लेकिन अब इतने अपभ्रंश और फ़ार्सी अरबी और दूसरे दूसरे बिदेसी शब्द मिल गये हैं कि इन सब भाषाओंके आपसमें सम्बन्ध होने में भी संदेह होता है।

हिन्दू।

बहुतेरे समझते हैं कि "हिन्दू" शब्द न संस्कृत है और न संस्कृत से निकला हुआ है, क्योंकि संस्कृत के पुराने पुराने ग्रन्थों में इस शब्द का कहीं ज़िक्र नहीं है। किसी किसी की राय है कि इसे यूनानियों ने "सिन्धु" शब्द से बिगाड़के बनाया है। और बाज़े समझते हैं कि यह शब्द अरबी है, और माने इसके काले के हैं। अरबियोंसे हिन्दुओं का रंग कुछ काला होनेके सबबसे उन्हों ने हिन्दुओंका यह नाम रक्खा था। जो कुछ हो, लेकिन जब यह शब्द अगौरव का नहीं समझा जाता है, तब इस शब्दके व्यवहार में हर्ज नहीं। बहुतेरों की राय है कि हिन्दू यहां के आदिम निवासी नहीं हैं। वह कहते हैं कि सौंताल, भिल आदि क़ौमें यहां की आदिम निवासी थीं। हिन्दू ईरान (फ़ारिस) से आये, और इस देशके आदिम निवासियों को जीत कर और दूर निकाल कर अपनी सल्तनत जमाके बस गये। वह अपने तईं आर्य (बड़े) कहते थे, और इसी सबबसे जिन जगहों में उन्होंने पहले पहल अपनी सल्तनत जमाई वह जगहें

आर्यावर्तके नामसे मशहूर हुई। इस्लाम इसके बहुत दिनों के बाद आर्योंके हाथ आया।

आर्यों की जाति।

आर्योंके शास्त्रोंमें लिखा है कि सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माके मुखसे गोरे रंग का ब्राह्मण, बाहु से लाल रंग का क्षत्रिय, जांघ से पीले रंग का वैश्य, और पांव से काले रंग का शूद्र पैदा हुआ। इन चार वर्णों में ब्राह्मण सब से बढ़ के, और सब वर्णों के गुरू और देवता के बराबर समझे जाते थे। और धर्म कर्म का सब इन्तिज़ाम इनके हाथ में रहने के सबबसे अंगरेज़ इसे ब्राह्मण्य धर्म कहते हैं। धर्म कर्म के सिवा शास्त्रोंका लिखना पढ़ना आईन बनाना आदि सब काम ब्राह्मणों ही के सुपुर्द था। सन्धि, विग्रह, राज्यशासन आदि काम क्षत्रियोंके और खेती और बनिज बेवपार वैश्योंके हवाले था, और इन तीनों वर्णों की सेवा के सिवा शूद्रोंके सुपुर्द कोई काम न था। पहले तीन वर्ण द्विज कहलाते हैं, और जनऊ पहनते हैं। शूद्रोंकी जनऊ नहीं होती। बहुतेरों की यह भी राय है कि आर्यलोग जिन आदिम निवासियों को अपने इख्तियार में न ला सके वह तो पहाड़ और जंगलों में भाग भाग के जा बसे, और जिन को अपने इख्तियारमें लाये वही शूद्र कहलाये। अब हिन्दुओं में जातिभेद बहुत हो गया है। और इन में छूआछूतका बड़ा विचार रहता है।

धर्म।

आर्य्य या हिन्दू धर्मका मुख्य उद्देश्य अचिंत्य अद्वितीय परब्रह्म की उपासना है। लेकिन उसी ब्रह्म के नामसे बहुतेरे देव देवियों की पूजा भी हुआ करती है। इनकी असल धर्म पुस्तक वेद है। इसके चार भाग हैं, ऋक्, यजुः, साम, और अथर्व। अलग अलग संप्रदायोंका अलग अलग वेदों के अनुसार धर्मका विधान हुआ करता है। सब ही वेदों के एक भाग में सूर्य, अग्नि, इन्द्र आदि देवता और परमेश्वर का स्तव, और एक भाग में याग यज्ञ आदि क्रिया कलाप का विधान और दूसरे भाग में तत्वज्ञानके विषयका उपदेश रहता है। इन्हीं अन्त के भागोंको वेदान्त या उपनिषद कहते हैं। वेद या श्रुति ही के आश्रय पर मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत आदि बड़े बड़े आदमियों ने एक शास्त्र और बनाया है, उस को स्मृति या धर्मसंहिता कहते हैं। इसका सबसे अधिक मान होता है। श्रुति और स्मृति के सिवा पुराण और तन्त्र नामके दो शास्त्र और प्रचलित हैं। रामायण के सिवा सब ही पुराणोंके बनानेवाले भगवानके अवतार स्वरूप महर्षि वेदव्यास प्रसिद्ध हैं। पुराणों में धर्मकथा सम्बन्धी बहुतेरे इतिहास भी लिखे हैं। तन्त्र शास्त्र महादेव पार्वती की बातचीत में लिखा गया है। तन्त्र ही के मत से आज कल दीक्षा नाम संस्कार हुआ करता है। वेद, स्मृति, पुराण और तन्त्र के मतों में भेद होने के सबब से और टीकाकारों और संग्रहकारों के इस यत्न से कि अपना अपना मत जारी करें, आज कल हिन्दुओं में धर्म विषय के अनगिनत संप्रदाय हो गये हैं।

विद्या।

विद्या के लिये हिन्दू लोग बहुत पुराने समय से प्रसिद्ध हैं। इन की मूलभाषा संस्कृत "देववाणी" के नाम से मानी जाती है। वेद आदि पुस्तकों के सिवा इस मधुर भाषा में सैंकड़ों अच्छी अच्छी पुस्तकें हैं। उनमें से गौतम का न्याय, कपिल का सांख्य, पतंजलि का पातंजल, वेदव्यास का इकट्ठा किया वेदान्त, जैमिनी की मिमांसा, और कणाद का वैशेषिक आदि ग्रन्थ दर्शन शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस भाषा में पाणिनि, कात्यायन, बोपदेव आदि व्याकरणों के बनानेवाले, अमर, हेमचन्द्र, हलायुध आदि कोषों के बनानेवाले, कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष, भारवी, माघ, वाणभट्ट आदि काव्य और नाटकों के बनानेवाले कवि, भरत, दण्डी, मम्मठ आदि अलंकार वाले, और आर्यभट्ट, ब्रम्हगुप्त और भास्कराचार्य आदि ज्योतिषी बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

काल।

अगले समय के हिन्दुओं ने काल को सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि नाम चार युगों में यानी चार भागों में बांटा था। उनके मत से सत्ययुग में आदमियों का धर्म चार पांव रखता था, प्राण मज्जागत थे, देह २१ हाथ लांबी, और उम्र लाख बरस की हुआ करती थी, और मत्स्य, कूर्म, वराह, और नृसिंह चार अवतार नारायण के हुए थे। त्रेतायुग में धर्म के तीन पांव रहे, प्राण अस्थि अर्थात् हड्डियों में थे, देह १४ हाथ लांबी, उम्र १०००० बरस की होने लगी,

और वामन, परशुराम, और रामचन्द्र तीन अवतार हुए। द्वापरयुग में धर्म के कुल दो ही पांव रहे, प्राण लहू में रहने लगे, देह सात हाथों की, और उम्र १००० बरस की होने लगी, कृष्ण और बुद्ध के दो अवतार हुए। और कलियुग में धर्म के सिर्फ एक ही पांव बच रहा, प्राण अन्न में बसने लगे, देह ३॥ हाथों की और उम्र १०० बरस की होने लगी, और सिर्फ कल्की एक अवतार इस युग में होने वाला है। सत्य आदि तीन युग तो बीत गये, कलियुग वर्तमान है, उसके भी प्राय: ५००० बरस बीत चुके। हिन्दू शास्त्र का यह भी मत है कि कलियुग के बीत लेने पर सत्य आदि एक के बाद एक फिर सब युग होंगे।

हिन्दुस्तान का पूरा इतिहास।

पहला अध्याय।



हिन्दुओं का राज।

राज के हिसाब से हिन्दुस्तान के इतिहास में तीन काल कायम किये जा सकते हैं। बहुत पुराने समय से ईसवी सन १००० तक हिन्दुओं के राज का, १००० ईसवी के बाद १७५६ ईसवी तक मुसल्मानों के राजा का, और उस समय से आज तक अंगरेज़ों के राजका काल कह सकते हैं। हिन्दुओं के समय का इतिहास मालूम करना बहुत मुशकिल है। 'काश्मीर-राज-तरंगिणी' के सिवा इन के यहां ठीक इतिहास की किताब कोई नहीं है। और यह भी नहीं कह सकते कि पहले यहां इतिहास की किताबें थीं या नहीं। मुमकिन है कि यहां के इतिहास सल्तनतों के अदल बदल में बरबाद हो गये हों। पुराणों में जो हाल मिलते हैं, वह अलौकिक वृत्तान्तों से भरे होने के सबब से इतिहासों में गिने नहीं

जाते। खैर, जो हो, लेकिन यह बात साफ़ साबित है कि हिन्दुओं के वक़्त में सारा हिन्दुस्तान एक आदमी के अधिकार में कभी नहीं हुआ। यहां पहले एक बड़ा राजा था, और उस के अधीन छोटे छोटे कई एक राजे राज करते थे। और कभी कभी कोई राजा प्रबल हो जाता, और दूसरे राजाओं को हराकर अपने तईं 'चक्रवर्त्ती' 'सार्वभौम' 'मंडलेश्वर' 'सम्राट' आदि नामों से मशहूर कराता।

सूर्य और चन्द्रवंशीय राजाओं के हाल बहुत पहले वक़्त से मिलते हैं। वैवस्वत मनु के बेटे इक्ष्वाकु से सूर्यवंश की और उस की बेटी इला से चन्द्रवंश की उत्पत्ती हुई। सूर्यवंशी राजाओं में अयोध्या के राजा रामचन्द्र बहुत प्रसिद्ध हैं। दशरथ इन के बाप, और जनक की बेटी सीता इन की स्त्री थीं। सौतेली मा की डाह से बन का जाना, वहां लंका के राजा रावण का सीता को हर ले जाना, और रामचन्द्र का रावण को मारना, फिर अयोध्या को लौट आके राजगद्दी पर बैठना आदि सब वृत्तान्तों को आदि कवि महर्षि बाल्मीकि ने "रामायण" नाम अपनी पुस्तक में बड़ी लावण्यता के साथ वर्णन किया है। और ये वृत्तान्त, क्या लड़के क्या बूढ़े, क्या स्त्री क्या पुरुष सब हिन्दुओं को मालूम हैं। इनमें से बहुतेरे तो देवता समझ कर राम और सीता की जोड़ी की नित्य पूजा किया करते हैं। इसी कथा को भाषा के दोहे चौपाइयों में तुलसी दास जी ने भी बड़ी चतुराई से वर्णन किया है। यह पुस्तक भी इस देश में बहुत प्रसिद्ध है। यह बात रामायण के पढ़ने से खुल जाती है कि उस समय दखन का दक्खिन किनारा लंका के अधीन था, और रामचन्द्र के समय से आर्य

लोग वहां जा जा कर बसने लगे। राम के स्वर्गारोहण के बाद उन के घराने के ६० राजाओं ने उन के सिंहासन पर राज किया। इस के बाद अयोध्या में सूर्यवंश का लोप हुआ, पर और और जगहों में उस वंश के लोग बहुत दिनों तक राज करते रहे। हिन्दू शास्त्र के अनुसार ये बातें त्रेता युग में हुई थीं।

रामायण के बाद "महाभारत" में लिखी कुरु पांडवों की लड़ाई हिन्दुस्तान की बड़ी बातों में से एक है। वेद के संग्रह करनेवाले व्यासदेव ने महाभारत को बनाया है। यह पुस्तक इतनी बड़ी है कि इस का संक्षेप में समझ लेना कठिन है। पर इस की भी कथा इस देश में तमाम प्रसिद्ध है। यहां इस पुस्तक की कई एक प्रसिद्ध प्रसिद्ध बातें लिखी जाती हैं। चन्द्रवंशी राजा कुरु के घराने में धृतराष्ट्र और पांडु ने जन्म लिया था। धृतराष्ट्र जन्म का अंधा था। दुर्योधन, दुःशासन आदि उनके १०० बेटे थे। पांडु के युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, और सहदेव नाम ५ बेटे थे। पांडु के बेटे पांडव कहलाते हैं। पांचों पडवों ने अपनी मा कुन्ती की आज्ञा से पांचाल के राजा की बेटी द्रौपदी से व्याह किया। राज के बंट जाने पर दुर्योधन आदि की राजधानी हस्तिनापुर में और पांडवों की ३० कोस पश्चिम इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में नियत हुई। इस के बाद दुष्ट-स्वभाव दुर्योधन ने जूए में युधिष्ठिर को हरा के पांडवों को १२ बरस बनवास और १ बरस अज्ञातवास कराया। इसे पूरा कर के पांडवों के लौट आने पर भी दुर्योधन इनको राज देने पर राज़ी न हुआ। निदान कुरुक्षेत्र के मैदान में १८ दिनों तक खूब घनघोर गहरी लड़ाई के बाद

दुर्योधन के मारे जाने पर पांडवों ने लड़ाई जीती। इस लड़ाई में सारे हिन्दुस्तान के राजे बुलाये गये थे लेकिन सब के सब मारे गये। दोनों तरफ़ की असंख्य सेना में से कुल १० आदमी बचे थे। कुरुवंश से उत्पन्न यदुवंश में बलराम और कृष्ण ने जन्म लिया था। कृष्ण को भगवान का अवतार मानते हैं।

ममेरे भाई होने के कारण लड़ाई में कृष्ण पांडवों ही की तरफ़ थे। सच पूछो तो इन ही की चतुराई से पांडवों ने लड़ाई जीती। कृष्ण ने पहले अपने मामू कंस को मार मथुरा में राज किया। फिर कंस के ससुर मगध के राजा जरासंध से तंग आ कर ये गुजरात में समुद्र के कनारे द्वारिका नगरी में रहने लगे। कुरुक्षेत्र की लड़ाई के बाद अपनी जाति और वंश के लोग और बहुत प्राणियों के मारने के कारण परम धार्मिक युधिष्ठिर के चित्त में विराग समाया, और इसी से वह राज करना पसंद न करते थे। पर कृष्ण के समझाने बुझाने से कुछ दिनों तक राजा रहे। लेकिन कृष्ण के परलोक सिधारने का समाचार सुन कर उनसे न रहा गया, अर्जुन के पोते परीक्षित को राज सौंप द्रौपदी और पांचों भाइयों के साथ हिमालय की तरफ़ उन्होंने "महाप्रस्थान" किया। महाभारत में सुराष्ट्र, अवन्ती, द्राविड़, आंडू, केरल, कलिंग आदि बहुतेरे दखन के देश और राजाओं के हाल पाये जाते हैं। इस से मालूम होता है कि रामायण के समय से महाभारत के समय तक बहुतेरे आर्य दखन में बस गये थे। युरोपियन कहते हैं कि कुरुक्षेत्र की लड़ाई ईसवी सन के १४०० बरस पहले, मगर हिन्दुओं के मत से द्वापर और कलि के बीच में हुई थी।

जिस समय परीक्षित के बेटे इन्द्रप्रस्थ में राज करते थे उसी समय जरासंध के बेटे मगध (बिहार) में राज करते थे। इसी घराने के राजा अजातशत्रु के राज के कुछ पहले बुद्धदेव ने जन्म लेकर बौद्धधर्म को चलाया। इस धर्म के वेद के विरुद्ध होने के सबब से हिन्दुओं ने बौद्धों पर बड़े बड़े उपद्रव किये, लेकिन फिर इस के हेतुवाद के कारन से बहुतेरे हिन्दू इस मत में आने भी लगे। अजातशत्रु से पांच राजाओं के बाद नागवंशी शूद्र जात का नन्द नाम एक बड़ा राजा मगध के सिंहासन पर बैठा।

दूसरी दूसरी जातों की चढ़ाइयां।

जरासंध के घरानेवालों के राज के वक़्त में यानी सन ईसवी के ५२१ बरस पहले फ़ारिस (ईरान) का राजा दारा (डेरायस) हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करके बहुत माल और असबाब यहां से लूट ले गया था। लेकिन इस बात का पता नहीं लगता कि उसकी या उसके घराने के राजाओं की सल्तनत कब तक और कहां कहां रही। दारा की चढ़ाई के लगभग दो सौ बरस के बाद (सन ईसवी के ३२३ बरस पहले) यानी नन्द के घराने वाले महानन्द के मगध में राज करने के समय में, मसीडन, जो मुल्क यूनान (ग्रीस) में है, वहां का नामी बादशाह सिकन्दर फ़ारिस फ़तह करता हुआ अनगिनत फ़ौजों के साथ हिन्दुस्तान पर चढ़ आया। लड़ते लड़ते थक जाने के सबब से फ़ौजें आगे बढ़ने को राज़ी न हुईं, इस से सिंध नदी के दोनों कनारों के आस पास वाले मुल्क फ़तह कर के सिकन्दर को लौट जाना पड़ा।

पहले कहे हुए महानन्द के आठ बेटों में से नाइन के पेट का चन्द्रगुप्त बड़ा नामी हुआ, और पाटलिपुत्र (पटना) को अपनी राजधानी बना राज करने लगा। नीतिशास्त्र का जाननेवाला चाणक्य इसी का वज़ीर था। इसी की चतुराई से चन्द्रगुप्त के सातों भाई मारे गये, और यूनानियों का जिन जिन मुल्कों पर क़ब्ज़ा था उन्हें चन्द्रगुप्त ने फिर दख़ल कर लिया। चद्रगुप्त का पोता राजा अशोक (या प्रियदर्शी) बड़ा ही प्रतापी राजा हुआ। इस ने आर्यावर्त और दखन के बहुतेरे मुल्क मगध के अधीन किये, और फिर कुछ दिनों के बाद वह आप बौद्ध धर्म इख़्तियार कर के प्रचारक यानी पुरोहितों को भेज भेज कर तिब्बत, तातार, चीन, लंका के बहुतेरे लोगों को अपने धर्म में लाया। अशोक के बाद बहुत दिनों तक हिन्दुस्तान के इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं लगता। लेकिन इतनी बात सही मालूम होती है कि इस ज़माने में हिन्दू और बौद्धों में बराबर लड़ाइयां हुआ कीं, और इसी वक़्त में बहुतेरे ग्रन्थ बौद्धों के पक्ष और विपक्ष के लिखे गये। बहुतेरे क़यास करते हैं कि कल्कि पुराण इसी वक़्त में बना है।

सन ईसवी के ५६ बरस पहले उज्जयिनी नगर में क्षत्रिय वंश के महाराज बिक्रमादित्य बड़े प्रतापी बली और विद्योत्साही राजा हुए। इन की सभा में नवरत्न* नाम के कालिदास वग़ैरह ९ आदमी बड़े नामी नामी पंडित थे। इन्हों ने संस्कृत की बड़ी तरक़्क़ी की थी। बिक्रमादित्य ने जिस

*धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह-शंकु-वेतालभट्ट-घटखर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराह-मिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य।

सन को जारी किया था, उसे संवत कहते हैं। विक्रमादित्य के १३४ बरस के बाद शालिवाहन (या शकादित्य) भी उज्जयिनी के सिंहासन पर एक प्रतापी राजा हुआ। इन्हों ने भी एक सन चलाया था,—उसे शकाब्द कहते हैं। इस वक्त से लेकर मुसल्मानों के आने के वक्त तक हिन्दुस्तान के पच्छिम हिस्से में उज्जयिनी ही के राजा चढ़े बढ़े रहते थे।

इधर मगध में चन्द्रगुप्त के घरानेवालों ने सन ईसवी के २० बरस पहले तक राज किया। इन के बाद अन्ध्र घराने वाले कर्ण नाम राजा लोग मगध के सिंहासन पर आये। इन राजाओं में शूद्रक जो १९१ ई० में पैदा हुआ था बड़ा नामी हुआ। "मृच्छकटिक" नाटक शायद इसी का बनाया हुआ है। पुलोमा नाम राजा इसी घराने में हुआ था। चीनी लोग इनसे वाकिफ़ हैं, और इन ही के नाम से इस देश को पुलोमन कहा करते हैं। निदान अन्ध्र घरानेवालों की सल्तनत इनके नौकरों ने अपने इख़्तियार कर ली। तब ही से हिन्दुस्तान बहुत से छोटे छोटे देशों में बंट गया है। मुसल्मानों की चढ़ाइयों के पहले आर्यावर्त्त में नीचे लिखे कई एक देश बहुत मशहूर थे।

(१) कश्मीर—१०१५ ई० में मुहम्मद ग़ज़नवी ने इस पर चढ़ाई की थी।

(२) लाहोर— दिल्ली राज के साथ था।

(३) दिल्ली—पांडवों के घरानेवाले तुआर घराने के राजाओं के समय में इन्द्रप्रस्थ के बदले इस नगर का नाम "दिल्ली" हुआ। तुआर घराने वालों के बिगड़ जाने पर अजमेर के चौहान

घराने के राजा पृथुराय ने यहां अपनी सल्तनत जमाई ।

(४) कान्यकुब्ज—इस नगर में सूर्यवंशी राठोर घराने के राजा लोग राज करते थे ।

(५) काशी—लोग क़यास करते हैं कि काशी नाम राजा के नाम से इस का नाम "काशी" पड़ा ।

(६) कालिंजर या बुन्देलखंड—सूर्यवंशी राजा इस में राज करते थे ।

(७) मेवार—चित्तौर यहां की राजधानी थी । यहां के राजा सूर्यवंशी थे, और "राना" कहलाते हैं ।

(८) अजमेर—पृथुराय के वक्त में यह दिल्ली राज में मिला लिया गया था ।

(९) जसलमेर—यदुवंशी भट्टि नाम जात के लोग इस में बसते हैं ।

(१०) जयपुर—यह ढुंढराज की राजधानी है । यहां के राजा लोग सूर्यवंशी हैं ।

(११) गुजरात—यदुवंशियों के बाद सूर्यवंशियों ने वलभी नगर में राज किया । इस के बाद राजपूत लोग यहां राजा हुए ।

(१२) सिन्ध—सिन्ध नदी के दोनों कनारों की आस पास की ज़मीन सिन्ध देश की कहलाती है ।

(१३) मालवा या उज्जयिनी—विक्रमादित्य और शालिवाहन के बहुत दिनों के बाद ई० १०वीं सदी में राजा भोज यहां राज करते थे । धार उन

को राजधानी थी। इन के विषय में बहुत से अजीब अजीब क़िस्से मशहूर हैं।

(१४) गौड़ बंग या बंगाला—यह देश किसी समयमें मगध राज के अन्दर था, और अन्ध्र घरानेवाले यहां राज करते थे। फिर पाल घरानेवाले और इन के बाद सेन घरानेवाले यहां के राजा हुए। १२०३ ई० में जब मुसल्मानों ने इसे जय किया उस समय गौड़ नगर यहां की राजधानी थी। लेकिन उस वक़्त का राजा लक्ष्मणराय सेन अक्सर नवद्वीप ही में रहा करता था। १२८३ ई० में सुवर्णग्राम बंगाले की राजधानी थी।

दखन।

आर्यावर्त से दखन के पुराने हाल और भी गड़बड़ हैं। रामायण के समय में आर्य लोग यहां नहीं बसते थे। रामचन्द्र जिन रीछ बन्दर और राक्षसों की मदद से लड़े हैं, बहुतेरों की राय है कि वही वहां के आदिम निवासी हैं। महाभारत के समय तक भी आर्य लोग यहां बहुत कम बसे थे। दखन के पुराने इतिहास का पता लगना बहुत कठिन है। इसी लिये मुसल्मानों की चढ़ाइयों के पहले वहां जितने मशहूर मशहूर देश थे उन के संक्षेप वृत्तान्त लिखे जाते हैं।

(१) पांड्य और चोलराज—ये दो देश दखन के बहुत दक्खिन द्राविड़ देश में हैं। पांड्य की राजधानी

मथुरा, और चोल की कांची थी। चोल को अब तांजोर कहते हैं।

(२) चेर राज—पांड्य के पच्छिम कोइम्बतुर, त्रवंकोर, और मलबार का कुछ हिस्सा इस देश में था।

(३) केरल राज—मलबार और कानड़ा ये दोनों मिल कर यह देश था। कहते हैं कि परशुराम ने आर्यावर्त से बुला कर यहां ब्राह्मणों को बसाया था।

(४) कर्नाटक—१३१०-११ ई० में मुसल्मानों ने इसे दख़ल किया।

(५) कलिंग—तैलंग का पूरब हिस्सा कलिंग कहलाता था।

(६) अन्ध्र—तैलंगके कुछहिस्से का यह भी नाम था। वरंगूल यहां की राजधानी थी। गणपति वंशी राजा लोग यहां राज्य करते थे।

(७) महाराष्ट्र—बम्बई के आस पास। कल्याण और देवगिरि यहां की राजधानी थी। चालुक्य वंशी राजपूत यहां राज करते थे।

(८) उड़िष्या—पहले यहां गंगावंशी राज करते थे। उन ही के समय सन ११८८ ई० में जगन्नाथ जी का वर्तमान मन्दिर बनाया गया था। इसके बाद राजपूतों ने इस देश को दख़ल किया। प्रसिद्ध मुकुन्द देव इन ही के घराने में थे।

दूसरा अध्याय ।

मुसल्मानों का राज ।

५६८ ई० में अरब के शहर मक्के में मुसल्मान धर्म के आचार्य हज़रत मुहम्मद पैदा हुए। मुहम्मद के अपने तईं आख़िरी पैगम्बर क़रार देने और उस वक्त के प्रचलित सब धर्मों से अपने को उत्तम बताने के कारण से देसी लोग उन से बिगड़ गये। देसियों ने जब उन पर बहुत अत्याचार करना शुरू किया तो हज़रत मुहम्मद मदीने चले गये, जहां के लोगों ने उन का धर्म गृहण किया और उन्हें अपना राजा मान उन के मक्के से जाने की तारीख़ से गिन्ती कर के हिजरी सन जारी किया। मुहम्मद ने अपने धर्म के माननेवालों का नाम मुसल्मान रक्खा। जो लोग मुसल्मानी धर्म को नहीं मानते हैं उन्हें मुसल्मान काफ़िर कहते हैं।

क़ुरान की इस बात पर निर्भर कर यानी काफ़िरों को ज़बरदस्ती मुसल्मान बनाने से भी मरने पर स्वर्ग की खुशियां हाथ लगती हैं, ज़ोरावर मुसल्मानों ने चारो तरफ़ लड़ाइयां नाध दीं, और थोड़े ही दिनों के अर्से में बहुतेरे मुल्क फ़तह कर के अपने अधिकार में कर लिये। मुहम्मद के मरने पर उन के उत्तराधिकारी ख़लीफ़ों ने साधारण तौर

से हिन्दुस्तान पर भी कई एक बार चढ़ाइयां कीं। निदान बग़दाद के ख़लीफ़ा वलीद के समय में ७०५ ई० से ले कर ७१५ ई० के दरमियान सिन्ध में देवल नाम किसी जगह एक अरबी जहाज़ लूटा गया। इसी बात पर मुसल्मान और इस देश के राजा धीर या दाहर के दरमियान लड़ाई शुरू हुई। मुसल्मानी फ़ौज के सरदार मुहम्मद क़ासिमने सिन्ध पर चढ़ाई कर के उसे जीत लिया। दाहर रन में मारा गया। इस के बाद क़ासिम ने और और मुल्कों पर भी चढ़ाइयां कीं, लेकिन चित्तौड़ के राजा बापाराव से हार मान कर उसे भागना पड़ा। क़ासिम के अपने मालिक की आज्ञा से मारे जाने पर बहुत दिनों तक किसी मुसल्मान ने इस मुल्क की तरफ़ रुख़ नहीं किया। सिन्ध और उस के आस पास के कई एक मुल्क बरसों मुसल्मानों के तहत में रहे। लेकिन फिर हिन्दुओं ने धीरे धीरे उन्हें मुसल्मानों से छीन लिया।

महमूद ग़ज़नवी।

ख़लीफ़ों के बलहीन होने पर ख़ुरासान के बादशाह अलप्तगीन ने लाहोर के राजा जयपाल को लड़ाई में शिकस्त दी। नामी सुल्तान महमूद ग़ज़नवी इसी का बेटा था। सुल्तान महमूद ने हिन्दुस्तान पर कई एक चढ़ाइयां कीं, जिन में से १२ मशहूर हैं।

ली बार, १००१ ई० में, लाहोर के राजा जयपाल ड़ाई हुई। इस लड़ाई में क़ैद हो जाने के तब से

जयपाल को ऐसी ग्लानी आई कि कैद से छूट आने पर राज पाट अपने बेटे अनंगपाल को सौंप आप अग्निकुंड में पैठ कर जल मरा।—२री बार (१००४) भटनेर के राज पर चढ़ाई की।—३री बार अपने मुक़र्रर किये हुए पठान हाकिम की सजा के लिये, जो अनंगपाल से मिल गया था, मुलतान पर चढ़ाई की और लौटते वक़्त राह में पेशावर के पास अनंगपाल को शिकस्त दी। ४थी बार (१००८) उज्जैन, गोवालियर, कालिंजर, क़न्नौज, दिल्ली, अजमेर वग़ैरह राजाओं के साथ अनंगपाल लड़ने को गया मगर तब भी महमूद ने उसे पूरी शिकस्त दी, और नगरकोट के क़िले को लूट कर करोड़ों की दौलत हिन्दुस्तान से पाई।—५वीं बार (१०१०) मुलतान पर चढ़ कर वहां के हाकिम अबुलफ़तह लोदी को कैद कर लिया।—६ठी बार (१०१४) थानेश्वर का मन्दिर ले कर वहां की दौलत खूब लूटी, बहुतेरी मूरतें तोड़ीं, और क़रीब दो लाख हिन्दुओं को ग़ज़नी में रवाने किया।—७वीं बार (१०१५) कश्मीर पर हल्ला किया।—८वीं बार (१०१८) लाख सवार और बीस हज़ार पैदल ले कर क़न्नौज पर चढ़ाई की जहां के राजा ने महमूद की अधीनता क़बूल कर ली, लौटते वक़्त महमूद ने रस्ते में मथुरा लूटा।—९वीं बार (१०२२) महमूद की अधीनता क़बूल कर लेने की वजह से क़न्नोज के राज पर क्रोधित हो कर कालिंजर के राजा ने अनंगपाल के बेटे दूसरे जयपाल की मदद लेकर क़न्नौज के राजा को मार डाला। इस ख़बर को सुनकर महमूद कालिंजर पर चढ़ आया, और लाहोर को छीन

कर ग़ज़नी में मिला लिया। हिन्दुस्तान में मुसल्मानी बादशाहत की नीव इसी वक़्त से पड़ी।—१०वीं बार (१०२३) महमूद ने फिर कश्मीर में पैठने का इरादा किया, मगर कामयाब न हुआ।—११वीं बार (१०२४) गोवालियर और कालिंजर के राजाओं को अपने क़ब्ज़े में कर के करोड़ों के माल असबाब, और कालिंजर से अनगिनत हाथी लेगया।—१२वीं बार (१०२६-२७) महमूद ने सोमनाथ महादेव के प्रसिद्ध मन्दिर पर, जो गुजरात में था, हल्ला किया। तीर्थ स्थान समझ के वहां के लोग और आस पास के बहुतेरे राजा जो उसके बचाने को इकट्ठे हो गयेथे, उन के साथ तीन दिन तक लड़ने के बाद महमूद मंदिर में घुसा, और सोमनाथ की मूरत तोड़ कर उस के टुकड़े मक्का मदीना और ग़ज़नी वग़ैरह मुल्क़ों में भेज दिये, और सोना चांदी जवाहिर मनों अपने साथ लेकर हज़ारों दिक़्क़तें उठाता अपने देस को लौट गया।

मुहम्मद ग़ोरी।

१०३० ई० में महमूद ग़ज़नवी परलोक को सिधारा। इस के कुछ दिनों के बाद हिन्दुओं ने मुसल्मानों को इस देश से निकालना शुरू किया, सिर्फ़ लाहोर बहुत दिनों तक ग़ज़नी के अधीन रहा। १५० बरस राज करने के बाद ग़ज़नी के राजा लोग बलहीन होते चले, यहां तक कि हिन्दुकुश पहाड़ के आस पास के रहने वाले ग़ोरियों से शिकस्त खा कर उन के अधीन हुए। इसी घराने का राजा ग़यासुद्दीन का

छोटा भाई शहाबुद्दीन या मुहम्मद गोरी ने ११७३ ई० में अपने भाई से ग़ज़नी का राज पाकर हिन्दुस्तान पर कई एक चढ़ाइयां कीं। इसी समय से हिन्दुस्तान सचमुच मुसल्मानों के कब्ज़े में आना शुरू हुआ।

मुहम्मद गोरी ने सब से पहले लाहौर पर चढ़ाई की, और वहां के ग़ज़नी घराने के राजा खुस्री को क़ैद किया। इस समय दिल्ली, अजमेर, और कन्नौज के राजाओं के आपस में लड़ाई नधी हुई थी। सब ही एक एक के जानी दुश्मन हो रहे थे। मुहम्मद ने इस आपस की फूट के सुयोग से दिल्ली पर चढ़ाई की। लेकिन ११९१ ई० में पृथुराय से शिकस्त खाई, फिर ११९३ ई० में लड़ाई जीत कर पृथुराय को क़ैद कर के मार डाला, और अजमेर और दिल्ली दख़ल कर के अपना राज जमाया। दूसरे बरस क़न्नौज और बनारस फ़तह कर के ४००० ऊंटों पर यहां की धन सम्पत्ति लाद कर इस ने ग़ज़नी को प्रस्थान किया। कन्नौज के राठौर घरानेवाले राजपूतों ने इस वक़्त (११९४) जोधपुर में जाकर जो अपना राज क़ाइम किया था वह आजतक क़ाइम है।

मुहम्मद गोरी जब अपने देश को जाने लगा, तो यह मुल्क अपने सेनापति कुतुबुद्दीन के हवाले कर गया। कुतुबुद्दीन ने दिल्ली को अपनी राजधानी क़ाइम कर धीरे धीरे गोवालियर, गुजरात, अवध, और बिहार को फ़तह किया। और उस के सेनापति बख़्तियार खिल्ज़ी ने सन १२०३ ई० में कुल १७ सवारों के साथ बंगाला फ़तह किया। अस्सी बरस

का बूढ़ा वहां का राजा लक्ष्मणय सेन अपने मन्त्री और मुसाहिबों की सलाह से कुछ भी रोक टोक न कर के भाग गया। इन ही के पुरखे आदिशूर ने ईसवी दसवीं सदी के अखीर में कान्यकुब्ज से ५ वेदपाठी ब्राह्मण ५ कायस्थ नौकरों के साथ बुलवाये थे।

मुहम्मद ग़ोरी ने हिन्दुस्तान पर ६ चढ़ाइयां की थीं। मालवा और राजपुताना के सिवा सारा आर्यावर्त इस के अधिकार में आ गया था। १२०५ ई० में, कि जब वह ग़ज़नी को लौटा जाता था, सिन्ध नदी के कनारे अपने खेमे के अन्दर गोखर नाम पहाड़ियों से मारा गया।

तीसरा अध्याय।

पठानों का राज।

मुहम्मद गोरी के मरने पर कुतुबुद्दीन ऐबक ग़ज़नी की अधीनता छोड़ हिन्दुस्तान का स्वाधीन बादशाह बन कर दिल्ली में राज करने लगा। सच पूछो तो हिन्दुस्तान का पहला मुसलमान बादशाह यही हुआ। इस के राज से लेकर इब्राहिम के राज तक को पठानों का राज कहते हैं। इस घराने के बादशाहों के नाम, और हर एक के सिंहासन पर बैठने के सन नीचे लिखे जाते हैं—

१	कुतुबुद्दीन,	१२०६।	११	जलालुद्दीन,	१२९०।
	आराम शाह,	१२१०।	१२	रुकुनुद्दीन,	१२९५।
३	अलतिमश,	१२१०।	१३	अलाउद्दीन,	१२९५।
४	रुकुनुद्दीन,	१२३५।	१४	शहाबुद्दीन,	१३१५।
५	रज़िया बेगम,	१२३६।	१५	कुतुबुद्दीन,	१३१६।
६	बहराम शाह,	१२३९।	१६	खुसरो खां,	१३२०।
७	मसऊद „	१२४१।	१७	गयासुद्दीन,	१३२०।
८	नासीरुद्दीन,	१२४६।	१८	मुहम्मद,	१३२५।
९	बलबन,	१२६५।	१९	फ़ीरोज़,	१३५१।
१०	कैकुबाद,	१२८९।	२०	गयासुद्दीन तुग़लक,	१३८८।
			२१	अबुबकर,	१३८९।

२२	नाज़ीरुद्दीन महमूद,	१३८९।	२८	मुइज़ुद्दीन,	१४२१।
२३	सिकन्दर,	१३९२।	२९	फ़रीदशाह,	१४३३।
२४	मुहम्मद शाह,	१३९२।	३०	आलम शाह,	१४३३।
२५	नसरत शाह,	१३९५।	३१	बहलूललोदी,	१४५०।
२६	दौलत खां,	१४१२।	३२	सिकन्दरलोदी,	१४८८।
२७	खिज़िर खां,	१४१४।	३३	इबराहिमलोदी,	१५१७।

गुलामों का राज।

हिन्दुस्तान के पहले बादशाह कुतुबुद्दीन के गुलाम होने के सबब से उसके बाद क्रमसे कैकुबाद तक दस बादशाह गुलामों के राज के कहलाये। सन १२०६ से १२९२ ई० तक ८३ बरस इन की अमलदारी रही। कुतुबुद्दीन के अमल में मुलतान और सिंध के हाकिम नाज़ीरुद्दीन और बंगाले और बिहार के बख़तयार ख़िलजी मुक़र्रर किये गये। अलतिमश, जो पहले गुलाम था, कुतुबुद्दीन का मुसाहब हो कर आख़ीर में उस का दामाद हुआ। कुतुबुद्दीन के मरने पर उसका बेटा आराम शाह तख़्त पर बैठा, पर उस का बहनोई गयासुद्दीन अलतिमश तुरत ही उसे तख़्त से उतार आप बादशाह बन बैठा। इसी के समय में तातारियों का नामी सरदार चंगेज़ ख़ां बहुत फ़ौज ले कर बाहर निकला था। इस ने एशिया के बहुतेरे देश एक बारगी सत्यानाश कर डाले। मुग़लों की बढ़न्ती की नेव डालनेवाला यही हुआ। अलति-

मश की अक़्ल और क़िस्मत के ज़ोर से हिन्दुस्तान चंगेज़ ख़ां के पंजे से साफ़ बच गया। अलतिमश के मालवा दख़ल करने से राजपुताना के सिवा क़रीब क़रीब सारा आर्यावर्त दिल्ली के अधीन हो गया था।

अलतिमश के मरने पर पहले तो उसके बेटे रुकुनुद्दीन ने (फ़ीरोज़ शाह १ला) लेकिन उसके बाद उस की बेटी रज़िया बेगम ने बादशाही ताज पहना। एक ग़ुलाम पर रज़िया के बहुत मिहरबान होने के बाइस उस के दरबार के अमीरों ने तीन बरस के बाद उसे तख़्त से उतार दिया। रज़िया के सिवा मुसल्मानी राज-सिंहासन पर कोई औरत कभी न बैठी। रज़िया के बाद उसका भाई बहराम फिर रुकुनुद्दीन का बेटा मसऊद, उस के बाद अलतिमश का दूसरा बेटा नासीरुद्दीन बादशाह हुआ। इन लोगों की अमलदारियों में मुग़लों ने हिन्दुस्तान पर कई एक हल्ले किये थे। २० बरस तक राज करने के बाद, नासीरुद्दीन परलोक को सिधारा, और उस के होशयार वज़ीर (अलतिमश का दामाद) ग़यासुद्दीन बलबन ने बादशाही ताज पहन कर कई एक बेरहमी के काम किये। १२७९ ई० में बंगाले के सूबेदार तुग़रल ख़ां के बिगड़ने की ख़बर सुन बलबन ने तुरत ही वहां पहुंच कर उस का काम तमाम किया, और अपने बेटे करा ख़ां को उस की जगह पर मुक़र्रर कर लौट आया। ८० बरस की उमर में बलबन के इस दुनिया से कूच करने पर करा ख़ां का बेटा कैक़ुबाद उस का उत्तराधिकारी हुआ, जिस ने अपने तईं हर तरह के भोग विलास के हवाले सौंप दिया। निदान ख़िलजियों

ने उसे बड़ी बड़ी बिहत के साथ मार डाला, और जलालुद्दीन फ़ीरोज़ खिलजी को तख़्त दिया।

खिलजियों का राज।

जलालुद्दीन से ले नाज़ीरुद्दीन खुसरो तक ६ बादशाह खिलजी घराने के मशहूर हैं। खिलजियों ने १२९० से १३२० ई० तक ३१ बरस राज किया। ये भी पठान ही ज़ात के हैं। ५ बरस तक राज करने के बाद जलालुद्दीन अपने प्यारे भतीजे अलाउद्दीन के हाथ मारा गया। जलालुद्दीन दया के साथ राज करता था। इस के समय में भी मुग़लों ने एक बार इस मुल्क पर चढ़ाई की थी। जलालुद्दीन ने भतीजे को कड़े का हाकिम मुक़र्रर कर बुन्देलखंड के बागियों को सर करने के वास्ते भेजा था। वह चचा से छिपे छिपे १२८४ ई० में महाराष्ट्र देश में जा वहां की राजधानी देवगिरि (दौलताबाद) को दख़ल कर वहां का अम्बूह धन लूट कड़े में लौट आया। जलालुद्दीन ने जब भतीजे की जीत की ख़बरें सुनीं तो ख़ुश हुआ और उस से मिलने आया। पर इस सपूत भतीजे ने चचा को मार कर सिंहासन चाप लिया।

अलाउद्दीन ने २० बरस से भी ज़ियादे राज किया। इस के राज में कुछ दिनों तक अमन और चैन रहा। उस ने चितौर और गुजरात फ़तह किया। इस के समय में मुग़लों ने इस मुल्क पर कई एक हल्ले किये पर कभी सफल न हुए।

काफ़ूर नाम एक गुलाम अलाउद्दीन का सेनापति था, इसी के द्वारा अलाउद्दीन ने तैलंग, कर्नाटक, मलबार, महाराष्ट्र, आदि दखन के कई एक देश जीत लिये। इन जीतों ने इसे इतना फुलाया कि कभी तो वह अपने तईं "पैगम्बर" कहता, और कभी "दूसरा सिकन्दर" कहलाना चाहता। १३१५ ई० में यह मर गया। फिर कई एक बरस तक अत्याचार करने के बाद काफ़ूर भी मारा गया, और अलाउद्दीन का तीसरा बेटा मुबारक (कुतुब) सिंहासन पर बिठाया गया।

मुबारक निहायत ही ख़राब बादशाह हुआ। उस का वज़ीर ख़ुसरो उसे मार कर आप बादशाह बन बैठा, पर उसे भी पंजाब का हाकिम ग़यासुद्दीन तुग़लक़ १३२० ई० में मार कर सिंहासन पर बैठा।

तुग़लक़ घराने का राज।

ग़यासुद्दीन मेले दौलत खां तक १० बादशाह, १३२० से १४१३ ई० तक, ९३ बरस तुग़लक़ घराने के हुए। ग़यासुद्दीन ने बड़ी कीर्ति के साथ ४ बरस तक राज किया। इसी चौथे बरस में उस का बेटा जौना खां बिदर और वरंगूल के बखेड़ों को निबटा कर फिर आया। इधर बादशाह आप बंगाले में जा बुग़रा खां की नव्वाबी के पोहदे पर क़ाइम कर तिर्हुत फ़तह करता दिल्ली को लौट आकर बेटे के बनाये काठ के बने मकान के सिर पर गिर पड़ने से परलोक को सिधार गया।

गयासुद्दीन के बाद उस का बेटा जौना खां मुहम्मद तुगलक अपना नाम रख कर १३२५ ई० में बादशाह हुआ, और १३५१ ई० तक २७ बरस राज किया। यह बादशाह यद्यपि विद्वान, दानी, और बड़ा बीर था, तौ भी लालच, लड़कपन निठुरपन आदि इस में बड़े बड़े दोष इतने थे कि प्रजा इस से ज़रा भी खुश न थी। ईरान फतह करने और चीन के मुल्क लूटने के झोंक में उस ने राज का बहुत धन और अनगनित सेना बरबाद कर डालीं। जब ख़ज़ाना ख़ाली हो गया तो आमदनी की सूरत यह सोची कि नोट सरीखे तांबे के पत्तर चलाइये, मगर उस की कुल कोशिशें नाकाम हुईं, निदान ज़मीन की मालगुज़ारी हद से ज़ियादे बढ़ा दी। इन ही वजहों से मुल्क पर अकाल वगैरह कई तरह की आफ़तें आने लगीं। फिर तो यह हुआ कि लोगों ने जगह जगह पर बिगड़ना शुरू किया। मालवा और पंजाब के बखेड़े जों ही मिटे कि सन १३४० में इधर बंगाले में सुवर्णग्रामका नव्वाब फ़क़ीरुद्दीन, बादशाह की तई कमज़ोर जान कर, बिगड़ बैठा। इस के पहले, बादशाह अलाउद्दीन के वक़्त से बंगाले में गौड़ और सुवर्णग्राम इन दो जगहों में दो नव्वाब रहते थे। फ़क़ीरुद्दीन के वक़्त से बंगाला बहुत दिनों तक स्वाधीन और एक ही नव्वाब के अधीन रहा। इसी वक़्त दखन में भी तैलंग और कर्नाटक के राजाओं ने विजयनगर में अपनी राजधानी क़ाइम करके इस के बाद भी २०८ बरस तक स्वाधीन राज किया। जिस वक़्त इधर ये बखेड़े मचे हुए थे उस वक़्त बादशाह,

देवगिरि नगर को जिस की मनोहरता ने उस के मन को बहुत लुभा लिया था और उस का नाम दौलताबाद रक्खा था हिन्दुस्तान की राजधानी बनाने में लगा था। दिल्ली के रहनेवालों को जान के डर से लड़के बालों के साथ वहां जाने में और फिर वहां से लौट आने में क्या क्या विपतें उठानी पड़ी थीं, बयान नहीं किया जा सकता।

इसी समय विजयनगर के उत्तर और नर्मदा के दक्खिन दखन के बाक़ी हिस्से में बाहमनी नाम एक नई मुसलमानी रियासत क़ाइम हुई। यहां का पहला राजा हसन हुआ। वह किसी ब्राम्हण का एहसानमन्द था, इसी से अपने ख़ानदान का नाम ब्राम्हणी यानी बाहमनी रक्खा था। जिस समय हसन ने बिगड़ कर दौलताबाद में पनाह ली थी उस समय गुजरात में भी कुछ फ़साद बरपा हुआ था। मुहम्मद इनही बखेड़ों के निबटाने को दखन गया था कि १३५१ ई० में मर गया।

मुहम्मद के बाद उस का भतीजा फ़ीरोज़ शाह (३रा) बादशाह हुआ। इसने अपने तईं कमज़ोर समझ कर दखन और बंगाले को स्वाधीन कर दिया। इसके वक़्त में पुल, सरायें, मसजिदें, शफ़ाख़ाने वग़ैरह साधारण के फ़ाइदे के बहुत से काम बने थे। इन सब कामों में जमना से आगरा तक जो नहर खुदवाई गई थी, वह बहुत मशहूर है। इस से आजतक खेतीबारी में फ़ाइदा पहुंचता है। १३८८ ई० में

फ़िरोज़शाह परलोक को सिधारा, और इन के बाद ५ बरस के अन्दर इसी घराने के ५ बादशाह हुए। आखिरी बादशाह का नाम भी मुहम्मद ही था। इस के वक़्त में गुजरात, मालवा, खानदेश, और जौनपुर चार सूबे स्वाधीन होगये, और इसी के वक़्त में तातार के नामी तइमूरलंग ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की थी। लूटता मारता तईमूरलंग अपनी फ़ौजों के साथ जब बढ़ता बढ़ता दिल्ली में आ पहुंचा तो मुहम्मद ने भाग के गुजरात में पनाह ली। पस तईमूर बेधड़क दिल्ली में पैठ कर रअइयतों को लूट उन के मकान जला, अनगिनत आदमियों को जान से मार और बेशुमार मर्द और औरतों को कैदी बना साथ ले कर वहां से मेरट को रवाना हुआ। यहां भी इसी तरह ज़ुल्म की हद दिखला कर हरिद्वार होता अपने मुल्क को लौट गया। इसके जाने के बाद मुहम्मद दिल्लीमें आया, और १४१२ ई० में मर यगा। इसीके समय में १३८५ में नसरतशाह ने कुछ दिनों के लिये फ़ीरोज़ाबाद में एक नया राज क़ाइम किया था। मुहम्मद के बाद १५ महीने तक दौलत खां ने दिल्ली में राज किया, फिर उस के बाद पंजाब के हाकिम सय्यिद ख़िज़िर खां ने तख़्त पर से उतार दिया।

सय्यिद घरानेकी बादशाहत।

खिज़िर खां, मुबारक (मुइज़ुद्दीन) मुहम्मद (फ़रीद शाह) और अलाउद्दीन (आलम शाह)—सय्यिद यानी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद के घरानेवाले इन चार बादशाहों ने १४१४ से १४५० तक ३६ बरस राज किया। इनके वक़्त में दिल्ली का ज़ोर बिलकुल घट गया था। आख़िरी बादशाह अलाउद्दीन पंजाब के हाकिम बहलूल लोदी को राज सौंप कर आप बदाऊं शहर में रहने लगा।

लोदी घराने का राज।

बहलूल, सिकन्दर, और इब्राहिम तीन बादशाह लोदी घराने के हुए। इन्हीं ने १४५० से १५२६ तक ७६ बरस बादशाहत की। बहलूल लोदी ने राज की सीमा बहुत दूर दूर तक बढ़ा दी थी, और ३८ बरस तक बड़ी नम्रता और दबदबे के साथ राज करके इस दुनिया से कूच किया। इस के बाद इस का बेटा सिकन्दर लोदी तख़्त पर बैठा। और और बातों में तो यह बुरा न था, पर हिन्दू धर्म से बड़ा ही अग़्‌ज़ रखता था। इस के समय में भी दिल्ली की सल्तनत बहुत दूर दूर तक बढ़ाई गई थी। १५१८ ई० में इस के मरने पर इस का बेटा इब्राहिम लोदी बादशाह हुआ। यह बड़ा ही घमंडी था, सब को नीची नज़रों से देखता था। निदान बहुतेरी जगहों में बलवे हो गये। और

इस ने सब को दूर भी किया फिर पंजाब के हाकिम दौलत खां लोदी ने सुल्तान बाबर को बुलाया। बाबर ने १५२६ ई० में इब्राहिम को हराकर उसे मारा, और दिल्ली दख़ल की। पठान घराने की सल्तनत इसी के साथ लोप हुई। बाबर हरचन्द ठीक तातारी न था, ताहम वह और उस के ख़ान्दान के सब बादशाह मुग़ल ही कहलाये।



चौथा अध्याय।

———0 ० 0———

मुग़लों का राज।

सुल्तान बाबर ददिहाल से तइमूर के, और ननिहाल से चंगेज़ खां के घराने का था। थोड़ी अवस्था में इस का बाप मर गया और यह फ़र्गना (कोकन) और समरक़न्द की सल्तनतों पर क़ब्ज़ा करके अपने ज़ातवालों से बराबर लड़ा किया। इस के बाद वह बड़ी बड़ी मुसीबतें झेलता सन १५०४ में काबुल पहुंचा कि जहां अपना अधिकार जमा कर आराम से राज करने लगा। इसी अर्से में दौलतखां ने उसे हिन्दुस्तान के लिये बुलाया। इस समय बाबर कुल ४६ बरस का था।

बाबरने कुल १२ हज़ार आदमियों के साथ इब्राहिम के लाखों लड़ाके और १० हज़ार हाथियों का सामना किया और पानीपत के मैदान में फ़तह पाई। कहते हैं कि पहले पहल बाबर ही ने हिन्दुस्तान में तोपों और बन्दूकों से लड़ने की चाल निकाली थी। पानीपत की लड़ाई के बाद ही दिल्ली और आगरा ये दो जगहें बाबर के हाथ आईं। इनके सिवा और और जगहें बड़ी बड़ी मुश्किलों से यानी अपनी फ़ौज जो गरमी की शिद्दत से तंग हो कर अपने देस को लौट जाने के लिये घबरा रही थी, उसे समझा बुझा और राजकुमार हुमायूं की मदद लेकर दखल

कीं। इसी तरह जब सब मुसल्मान अपने कब्ज़े में आ गये, तब मेवार के नामी राजपूत राजा सांगाराना से लड़-ना पड़ा। आगरे के दक्खिन सिकरी में बाबर ने दूसरी बार फ़तह पाई, और सांगाराना बड़ी बड़ी मुश्किलों से निकल भागा। इस लड़ाई के बाद ६ महीनों तक राज का प्रबंध का सिल्सिला बांध कर बाबर ने अपनी फ़ौज को तो अवध की फ़तह के लिये रवाना किया और आप बुन्देलखंड के अन्दर चन्देरी में पंहुच कर सांगाराना के मित्र वहां-वाले मेदिनी राय को हराया। इस के बाद उसने अवध के बागियों को वहां से बंगाले में मार भगाया, बिहार पर पूरा कब्ज़ा कर लिया, और जब लोदी घरानेवाला मुहम्मद बिहार पर चढ़ आया, तो उसे भी वहांसे निकाल बाहर किया। बंगाले के नव्वाब नसरत शाह से लड़ा और सुलह कर ली, और लखनऊ पर चढ़ आनेवाले पठानों को निकाल दिया। इस के बाद बाबर और हुमायूं बाप बेटे दोनों बड़ी सख़्त बीमारी में मुबतला हुए। हुमायूं तो कुछ दिनों के बाद चंगा हो गया, लेकिन बाबर सन १५३० में ५० बरस का होकर और हिन्दुस्तान में ४ बरस तक राज कर परलोक को सिधार गया।

बाबर शाह की हिन्दुस्तान के अच्छे बादशाहों में गिन्ती है। शाह तइमूर और चंगेज़ ख़ां सरीखा बलवान तो था, पर उन का सा निर्दयी न था। बल्कि प्रसन्न-चित्त, दयालु, और कवि था। आराम और ऐश का नाम तक न जानता था। दोष पूछो तो उसमें यही था कि शराब बहुत पीता था।

हुमायूं।

बाबर के बाद हुमायूं सिंहासन पर बैठा। उसका एक भाई कामरान काबुल का अलग स्वाधीन बादशाह हुआ। बाक़ी और दो भाई हिन्दुस्तान में एक एक सूबे के नाज़िम मुक़र्रर किये गये। सिंहासन पर बैठने के बाद ही हुमायूं को गुजरात के पठान राजा बहादुर शाह से लड़ने के लिये जाना पड़ा। बहादुर शाह उस समय तुर्की और पुर्तगीज़ अफ़्सरों की मदद से बन्दूक़ और तोपों की लड़ाई अच्छी जानता था। अपनी ज़ोरावरीके घमंड पर खुदमुख़्तार बन के हुमायूं की बुराई करने पर कमर बांधी। हुमायूं ने गुजरात में पंहुच कर उसे लड़ाई में शिकस्त दे अपनी मुराद पूरी की। शहर के घिर जाने पर जब बहादुर शाह निकल भागा तो फ़ौजें उस की तितिर बितिर हो गईं। इस अर्से में हुमायू ने सारा गुजरात और चंपानेर का गढ़ दख़ल कर लिया। इसके थोड़े ही दिनोंके बाद शेरख़ां की सरकशी की ख़बर सुन के हुमायूं ने ज्यों ही उस समय की राजधानी आगरे की तरफ़ कूच किया, कि बहादुर शाह ने फिर अपना राजपाट ज्यों का त्यों जमा लिया।

शेरख़ां पठान घराने के किसी अमीर का लड़का था। बिहार इस की जनम-भूम थी। इस का बाप सहसराम में जागीरदार था। शेरख़ां बाबर ही के ज़माने से अपनी क़िस्मत चमकाने की फ़िक्र में था। बारे बहुतेरे हेरफेर के बाद अपने तईं बिहार का राजा बना कर जब उस ने बंगाला फ़तह करने के इरादे से गौड़ शहर की तरफ़ कूच

किया, तब हुमायूं को होश हुआ, और उस से लड़ने को आया । शेरखां ने क्या चालाकी की कि चनारगढ़ के क़िले में कुछ सिपाहियों के भेजने से हुमायूं जब उस क़िले के लेने को मुड़ा तो इतने में शेर खां ने बंगाला दख़ल कर लिया । इस के बाद इस ने क्या किया कि रोहतासगढ़ को धोखे से लेकर अपने बाल बच्चे और माल असबाब को उस में रख आगे क़दम बढ़ाया । तब हुमायूं ने लौट कर फिर गौड़ ले लिया । बर्सात के सबब से हुमायूं को बहुत दिनों तक इसी गौड़ शहर में बन्द रहना पड़ा । इतने अर्से में शेरखां ने बिहार से ले कर क़न्नौज तक सब मुल्क अपने क़ब्ज़े में कर लिये । (१५३८)

निदान जब हुमायूं आगरे जानेके इरादेसे बक्सरमें छावनी डाले हुए था कि शेरखां ने रातों रात उस पर धावा किया। जब हुमायूं को जान बचाने की कोई तदबीर न सूझी तो घोड़े को दर्या में डाल गंगापार उतर बड़ी बड़ी मुशकिलों से आगरे पहुंचा । इस वक़्त हुमायूंकी फ़ौज अनक़रीब सब की सब तितिर बितिर हो गई । उसकी बीबी भी शेरखांके हाथमें पड़ी, लेकिन शेरखां ने उस की इज़्ज़त में किसी तरह का बट्टा न लगने दिया। हुमायूं अपने भाई कामरान की मदद से फिर फ़ौजें जमा कर क़न्नौज के पास शेरखां से लड़ा, मगर फिर इस बार पूरी शिकस्त खा के कामरान के राज पंजाब को तरफ़ भागने को मजबूर हुआ । लेकिन कामरान ने पंजाब को शेरखां के हवाले कर उस से सुलह कर लीथी । पस वहां का ठहरना मसलहत न समझ के, हुमायूं ने सिंध की तरफ़ कूच किया, और कुछ दिनों तक वहां रह के मांड-

वार के राजा मल्लदेव के पास ठहरा। फिर बड़ी बड़ी तकलीफें उठाता वहां का रेगिस्तान पार उतर के अमरकोट के रानाप्रसाद के पास गया। राना ने इस समय उन्हें पनाह दी, और बड़ी खातिर की। यहीं १५४२ ई० में हुमायूं के नामी अक्बर पैदा हुआ।

रानाप्रसाद वगैरह हिन्दू राजाओं से मेल कर के हुमायूं ने चाहा कि सिन्ध फतह करें, मगर किस्मत की खूबी कि उस की यह कोशिश भी सफल न हुई। ग़रज़ चार नाचार यहां से अब कन्दहार को चला। इस वक्त कामरान के मातहत भाई अस्करी इस शहर का हाकिम था। हुमायूं ने चाहा था कि बेटे को अस्करी के सुपुर्द कर मक्का हज करने को चले जावें। लेकिन सच है कि जब वक्त बिगड़ता है तब अपना खून भी अपना दुश्मन हो जाता है।

हुमायूं ने रास्ते ही में सुना कि अस्करी उसे कैद करने को फौज ले कर चला आता है। पस वह जल्दी में सिर्फ़ अपनी बीबी को साथ ले कर भागता भागता शाह ईरान के यहां गया (१५४३)। इधर अस्करी ने पहुंच कर सिर्फ़ बेचारे भतीजे को यतीम सा पड़ा पाया, प्यारसे उठा कर छाती से लगा लिया, और उसे साथ ले लौट आया।

शेर शाह- सूर घराना।

१५४० ई० में कन्नौज की लड़ाई जीत कर शेरखां "शेर शाह" बन कर हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ, और दिल्ली

की सल्तनत और पंजाब अपने क़ब्ज़े में कर और बंगाले के बखेड़े को मिटा हिन्दू राजाओं पर फ़तहें हासिल करने की सपरने लगा। पहले मालवा को अपने अधीन किया, तब धोखे से राइसिन का क़िला दख़ल कर लिया। इस के बाद मारवाड़ पर चढ़ाई की, लेकिन कामयाब न हुआ, फिर कालिंजर का क़िला दख़ल करने के वक़्त दुश्मन की तरफ़ का जलता हुआ गोला मगज़ीन पर पड़ने से जल कर मर गया। इतनी तकलीफ़ों से हासिल की हुई हिन्दुस्तान की बादशाहत उसने कुल पांच ही बरस भोग की। मगर इतने ही में उसने राज काज का अच्छा बन्दोबस्त किया था। यानी तमाम घुड़सवारी की डाक बिठलाई थी, और चोर डाकुओं पर ऐसा रोब जमा रक्खा था कि इन लोग का नाम तक सुनाई न देता था। बंगाले से पंजाब तक एक सड़क बनवाई और जगह जगह सरायें तय्यार कराई थीं, और कूए खुदवाय थे। इस का सा मुन्सिफ़-मिज़ाज, अक़्लमन्द, और अपने काम में चालाक बादशाह कम ही देखे जाते हैं। दुश्मनों को धोखा देना, यही एक उसके चाल चलन में धब्बा है। ससराम में एक तालाब के बीचोबीच मकान के अंदर उसकी लाश गाड़ी गई।

शेरशाह के मरने पर उसका बेटा सलीम अनक़रीब ९ बरस तक निकंटक राज करके १५५३ ई० में मरा। इसके बाद शेरशाह का भतीजा मुहम्मदख़ां सिंहासन पर बैठा। यह निहायत ही मूर्ख और विषयी था। अपनी फ़ज़ूल ख़र्ची से ख़ज़ाना जब ख़ाली हो गया तब चाहा कि

वज़ीरों की दौलत लूटें। निदान सब के सब बिगड़ बैठे, और उसी घराने के एक शख्स इबराहिम सुर ने दिल्ली और आगरा दखल कर लिया। फिर थोड़े ही दिनों के बाद सिकन्दर नाम और एक शख्सने पंजाब से आ कर इब्राहिम को निकाल बाहर किया। इस वक्त जब बंगाले में बलवा हुआ तो मुहम्मद खां का वज़ीर हेमू उसे मिटाने को चला। इधर हुमायूं ने लौट आकर आगरा और दिल्ली पर क़ब्ज़ा कर लिया।

हुमायूं का दुबारा राज।

यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि हुमायूं कन्दहार की राह से ईरान को भागा था। मुसल्मानों में शीये और सुन्नी के दो फ़िर्क़ हैं। पैग़म्बर मुहम्मद के मरने पर एक के बाद एक, तीन ख़लीफ़े उनकी गद्दी पर बैठे। इन ख़लीफ़ों के बाद अली उन के दामाद ख़लीफ़ा हुए। सुन्नी इन चारों ख़लीफ़ों को मानते हैं। लेकिन शीये कहते हैं कि पहले तीन शख्स दग़ाबाज़ी से ख़लीफ़े हुए लेकिन हक़ सिर्फ़ अलीको था। शीयों और सुन्नियों के मज़हब में असल फ़र्क़ यही है। दोनों फ़िर्क़ों के आपस में बड़ी ही अदावत और अखज़ रहा करती है। हुमायूं सुन्नी था, और ईरान का शाह तहमास्प शीया था। उसने हुमायूं को अपने अधिकार में पा कर उससे शीया मज़हब स्वीकार करने को कहा, और इस बातके

लिये उसे बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें दीं, और बेइज़्ज़त किया। निदान हुमायूं को लाचार इक़रारनामा लिख दे कर शीया होना पड़ा। फिर हुमायूं ने उन ही की मदद से कुछ फ़ौज इकट्ठी कर पहले कन्दहार फिर काबुल दख़ल किया। लेकिन बार बार अपने भाई कामरान की सरकशी से १५५३ ई० तक वहां जम के राज नहीं कर सकता था। आख़िरकार उसने भाई की आंखें निकाल कर उसे बेकाम बना १५५६ ई० में पंजाब जय किया, और सरहिन्द में सिकन्दर सूर को शिकस्त दे दिल्ली और आगरा फिर दख़ल कर लिया। लेकिन यह इस दुबारे हिन्दुस्तान का राज मिलने का सुख बहुत दिनों तक भोग नहीं सका—६ ही महीने के बाद पांव फिसलने से सीढ़ी से गिर कर परलोक को सिधारा।

हुमायूं साहसी बीर और धर्मात्मा था। लेकिन किसी किसी समय उसने निठुरता और छलप्रपंच की भी राह दी थी।

पांचवां अध्याय।

अकबर शाह।

१५५५- १६०५।

हुमायूं के मरने पर उसका बेटा अकबर, जो कुल १३ ही बरस का था, राजसिंहासन पर बैठा और पंजाब में रहने लगा। बाप का मोतबर वज़ीर बैरम उसका सलाहकार हुआ, और बतौर नाइब के राज का काम अंजाम देने लगा। इधर मुहम्मदखां का वज़ीर हेमू बंगाला फ़तह करता हुआ अपने मालिक को फिर तख़्त पर बिठाने के इरादे से आगरे और दिल्ली में लड़ा, और वहां से मुग़लों को निकाल, अकबर के निकालने को लाहोर की तरफ़ मुड़ा। अकबर भी वज़ीर की सलाह से लड़ने को मुस्तइद हो गया। १५५६ ई० में पानीपत के मैदान में घनघोर लड़ाई हुई, और अकबर ने जय पाई। हेमू गिरफ़्तार हुआ और क़तल करा दिया गया। पस पठान घराने का राज ख़तम हो गया। और मुहम्मदख़ां भी बंगाले में मारा गया।

बैरम की नमकहलाली और तेज़ी में शक न था, लेकिन निष्ठुरता, डाह, और सब अधिकार अपने ही हाथ में रखने की इच्छा से, सब ही वज़ीर उस से बेदिल थे। कई एक दरबार के अच्छे अच्छे आदमियों को कत्ल करवा देने के सबब से वह अक्बर के जी से भी उतर गया था। अक्बर ने (१५६०) क्या किया कि किसी बहाने से उसे दूर भेज के शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि "आज से मैंने खुद राज का इन्तिज़ाम अपने हाथ में लिया, रअय्यत अब किसी दूसरे का हुक्म न माने।" इस हुक्म को सुन कर सारे राज के लोग बहुत ही खुश हुए। बैरम धीरे धीरे लोगों की नज़रों में बेवकर होता चला। फिर इस के बाद उस ने लाख चाहा कि किसी तरह अक्बर को राज़ी करें, या अपने पंजे में लावें, यहां तक कि फौजें इकट्ठी कर लड़ने के सामान किये, लेकिन किसी तरह उस की मनोकामना पूरी न हुई। निदान, जब सब कुछ कर के थका, तो उस ने अक्बर की शरण ले कर अपनी ज़िन्दगी के बाकी दिन मक्के में काटने चाहे। अक्बर ने उस की बहुत खातिरदारियां कीं, और कुछ मुशाहरा मुकर्रर कर मक्के जाने की इजाज़त दी। मगर रास्ते में गुजरात के पास किसी पठान ने अपनी पुरानी अदावत याद कर उस का काम तमाम किया।

इस समय अक्बर कुल १८ बरस का था। राज का प्रबंध अपने हाथ लेते ही सैंकड़ों तरह की आफ़तों के पाले पड़ा। इसे लड़का समझ अमीरों ने अलग बिगड़ना शुरू किया। युज़बेक कौम वालों ने सरकशी की। अपना

भाई हाकिम काबुल का सूबदार पंजाब पर चढ़ आया । जौन-पुर, गरा, अवध, इलाहाबाद वगैरह मुल्कों में अलग ही फ़साद बरपा हुए । लेकिन अकबर ने अपनी तेज़ी, चालाकी, उदारता, और बुद्धि के बल से सात बरस के अन्दर सब झगड़े झूट निबटा तमाम अमन चैन कर दिया । सन १५६८ ई० में चित्तौड़ पर चढ़ाई की और वहां के सेनापति जयमल से लड़ कर अनगिन्ती राजपूतों को मार उस नगर को दख़ल किया फिर रिन्ताम्बर और कालिंजर दख़ल करने पर बहुतेरे राजपूत राजाओं से उसे लड़ना पड़ा । इस समय अकबर को यह शौक़ हुआ कि राजपूत राजाओं से ब्याह शादी की रसम निकालिये, बारे उस ने ख़ुद जयपुर और जोधपुर दी राजकन्याओं से शादियां कीं । और जयपुर की दूसरी राजकन्या अपने बेटे को ब्याह दी । पहले पहल तो राज-पूतों ने इस बात को जबरन क़बूल किया था, मगर फिर धीरे धीरे वह इस रिवाज से अपनी हतक़ या धर्म की विरुद्धता नहीं समझने लगे । एक उदयपुर के राजा के सिवा सब ने इस रिवाज को क़बूल कर लिया था ।

गुजरात बहुत दिनों से स्वाधीन चला आता था । वहां के राजा ने किसी बखेड़े में पड़ने के सबब से अकबर को बुलाया, अकबर ने (१५७२) जा कर उस देस को फ़तह करके अपने राज में मिला लिया । सूरत भी इसी समय उसके दख़ल में आया । तब (१५७५) बिहार और बंगाले को अपने राज में मिलाया । कई एक बरस पहले ही से इन दोनों सूबों में पठान राज करते थे । ग़रज़ पठानों

का आखरी नव्वाब दाऊदखां ने कई एक बार मुलहें और लड़ाइयां कीं मगर आखिरकार उस के मारे जाने पर हरचंद बंगाला और बिहार, दिल्ली के राज में मिला लिया गया, तो भी अच्छी तरह १५८२ ई० के पहले तक सर नहीं होने पाया। अक्बर का भाई हाकिम फिर एक बार बाग़ी हुआ, लेकिन शिकस्त खाकर मुआफ़ मांगने पर काबुल ही में रक्खा गया। बंगाले की लड़ाइयों में अक्बर की तरफ़ से राजा टोड़लमल ने बड़ी जवांमर्दी दिखाई थी।

ईस्वी १४वीं सदी में कश्मीर मुसल्मानों के हाथ आया, और तब से बराबर स्वाधीन था। १५८६ में कश्मीर अक्बर के हाथ आया, और वहां का राजा दिल्ली दरबार का एक वज़ीर बनाया गया। इस के बाद कई एक बरस तक पेशावर के आस पास में यूसुफ़ज़ई नाम पठानों पर फ़तहें मिला कीं। इन ही लड़ाइयों में अक्बर का प्यारा वज़ीर राजा बीरबल मारा गया, और राजा मानसिंह ने बड़ी बहादुरी दिखलाई। १५९२ में सिंध और १५९४ में कन्दहार दखल हुआ। बादशाह ने इन दोनों सूबों के हाकिमों को "पंजहज़ारी" नाम पांच पांच हज़ार फ़ौजों की सरदारी दी।

इस समय अक्बर का राज उत्तर में कन्दहार, काबुल, और कश्मीर तक, और दक्खिन में नर्मदा नदी तक था। अब उसने दखन की फ़तह का इरादा किया, और १५९५ ई० में जब उसने सुना कि अहमदनगर के राज के बारे में कुछ बखेड़ा मचा हुआ है, तो अपने दूसरे बेटे मुराद को वहां भेजा। इस वक़्त उस शहर में एक बच्चा राज करता था।

राज का इन्तिज़ाम उस की चची चांदबीवी करती थी। मुराद ने जब इस शहर पर चढ़ाई की तो चांदबीवी ऐसी दिलेरी और बहादुरी के साथ लड़ी कि मुराद से कुछ भी न बन आई। लेकिन आख़िरकार जब बराड़ का सूबा बादशाह को देने का प्रस्ताव किया गया, तब सुलह हुई (१५९६)। मगर यह सुलह बहुत दिनों तक निभने न पाई। १५९९ ई० में बादशाह खुद दखन में गया, दौलताबाद ले लिया, और तीसरे शहज़ादे दानियाल को अहमदनगर के मुहासरे के वास्ते भेजा। जब चांदबीवी अपने ही घर के दुश्मनों के हाथ मारी गई, तब मुग़ल वहां घुसने पाये। राजा क़ैद हो गया। इसके बाद बादशाह खानदेश को दख़ल कर अपने बेटे दानियाल को वहां का सूबदार बना (१६०१) आगरे लौट आया।

अकबर का मंझला बेटा मुराद १५९९ ई० में और तीसरा बेटा दानियाल बहुत शराब पीने के सबब से परलोक को सिधारा। बड़े बेटे सलीम (जहांगीर) की सरकशी की ख़बर जब सुनी तो अकबर को दखन छोड़ कर आगरे जाना पड़ा—इस बखेड़े को निबटा के सलीम को बंगाले और बिहार का सूबदार मुक़र्रर किया। इधर ताबड़तोड़ दो दो बेटों के मर जाने से अकबर के दिल पर ग़म ने अपना बड़ा ही असर पैदा किया। इससे उसकी तनदुरुस्ती में भी कुछ बल पड़ गया। इसके पहले ही अकबर सलीम को अपना उत्तराधिकारी ठहरा चुका था। मगर कई एक लोगों ने सलीम के बेटे राजा मानसिंह के भांजे खुसरो को बादशाह

बनाने की सलाह की थी। आईन अकबरी के मुसन्निफ़ बादशाह के प्यारे मुसाहब अबुलफ़ज़ल को इस साज़िश का शरीक समझ कर सलीम ने उसे मरवा डाला। और ख़ुसरो पर निहायत ही नीला पीला हुआ। आख़िरश सब बखेड़े तय हो जाने के बाद अकबर ने सलीम ही को अपना तख़्त दे कर इस दुनिया से कूच किया।

अकबर का सा नेक और मुन्सिफ़-मिज़ाज बादशाह हिन्दुस्तान में कोई नहीं हुआ। वह शहज़ोर, ख़ूबसूरत, मिहनती, दिलेर, सख़ी, इन्साफ़वर, लड़ाई में दुश्मनों पर मिहरबान और इल्म का बड़ा ही क़दरदान था। अकबर ख़ुद संस्कृत समझता था, और सब ही शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने में कई एक तरह से उत्साह दिया करता। जो मज़हब अक़्ल से सही मालूम होता, उसी को वह मानता था, लेकिन किसी मत या मज़हब का दुश्मन न था। अकबर के पहले मुसल्मान बादशाहों के राज में हिन्दुओं को जो "जिज़िया" नाम महसूल देना पड़ता था उसे उठा दिया। राजा टोडलमल की मदद से इसने ज़मीन की मालगुज़ारी अदा करने का बहुत ही अच्छा बन्दोबस्त किया था। इसके पहले लश्कर के लोगों की तनख़ाह सरकारी ख़ज़ाने से नहीं दी जाती थी,—सरदारों को जो जागीरें दी जाती थीं उन ही से उनको मुशाहरा मिलता था। अकबर ने इस इन्तिज़ाम को उठा कर सरकारी ख़ज़ाने से सब की तलब चुकाने का क़ाइदा निकाला।

अकबर ने अपनी सारी सल्तनत को १५ सूबों में बांट

दिया था।—१ काबुल, २ लाहौर, ३ दिल्ली, ४ मुल्तान, ५ आगरा, ६ अवध, ७ इलाहाबाद, ८ अजमेर, ९ गुजरात, १० मालवा, ११ बिहार, १२ बंगाला, १३ खान्देश, १४ बराड़, १५ अहमदनगर। सब ही सूबों में एक एक सूबदार और उनके मातहत हिसाब किताब रखने के लिये एक दीवान मुकर्रर किये गये थे।

जहांगीर।

१६०५—१६२७।

१६०५ ई० में तख़्त पर बैठने के बाद सलीम ने 'जहांगीर' (यानी जहान को जीतने वाला) का ख़िताब लिया। पहले पहल तो उसने राजकाज की तरफ़ ध्यान दिया, और कई एक बड़े बड़े महसूलों का और नाक कान काटे जाने की सज़ा का उठा देना और शराब पीने की मनाही और घन्टा बजाके ख़बर दे कर सबसे मुलाक़ात करने का क़ाइदा वग़ैरह कई एक कामों से रआय्यत को ख़ुश किया।

पहले ही कह आये हैं कि बादशाह अपने बेटे ख़ुसरो पर निहायत रंज था। ख़ुसरो के जी में जब बादशाह की तरफ़ से कुछ खटका हुआ तो उस ने क्या किया कि कुछ फ़ौज इकट्ठी कर लूट पाट करता काबुल की तरफ़ भाग चला। इधर बादशाह ने तुरत ही फ़ौजों के साथ उस का पीछा किया, पंजाब में उसे शिकस्त दे क़ैद कर लिया, और

उस के ७०० मुसाहबों को उस की आंखों के सामने क़तल करवाया। खुसरो इस वक़्त से सारी ज़िन्दगी बराबर क़ैद रहा।

१५९९ ई० में अहमदनगर मुग़लों के हाथ आया इसके बाद फिर मलिक़ अम्बर नाम एक हब्शी ने अहमद-नगर दख़ल करके मुग़लों से लड़ना शुरू किया। निदान १६१० ई० में मुग़लों ने उसे वहां से निकाल फिर अपना अधिकार जमाया।

१६११ ई० में बादशाह ने प्रसिद्ध नूरजहान से शादी की। ग़यासुद्दीन नाम एक ईरानी अपनी स्त्री के साथ तिहरान से हिन्दुस्तान को आता था—राह में उसे एक बेटी पैदा हुई। हिन्दुस्तान में आकर ग़यासुद्दीन अक्बर के यहां नौकर हो गया और धीरे धीरे एक बड़े ओहदे पर मुक़र्रर किया गया। इसी समय उसकी बेटी मिहरुन्निसा जवान हुई और ऐसी खूबसूरत निकली कि उस वक़्त अपना जोड़ नहीं रखती थी। सलीम तो उसे देखते ही मोहित हो गया, लेकिन अक्बर के रोकने से उसे ब्याह न सका। निदान शेरखां अफ़ग़न से उसका ब्याह हुआ। सलीम के डर से शेरखां अपनी बीवी के साथ बर्दवान में जा वहां का सूबदार मुक़र्रर हुआ। अब जहांगीर ज्यों ही बादशाह हुआ, मिहरुन्निसा के पाने की तदबीरें करने लगा। शेरखां के मारने के वास्ते कुतुबुद्दीन को बंगाले का सूबदार बना के भेजा। कुतुबुद्दीन, बहादुर शेरखां के हाथ मारा गया। मगर फिर बहुत लोगों ने मिल कर शेरखां को भी मारा, और उसकी बीवी मिहरुन्निसा को

दिल्ली रवाना किया। चार बरस के बाद जहांगीर से उस का ब्याह हुआ। ब्याह के बाद मिहरुन्निसा का नाम नूरजंहान रक्खा गया। सिक्कों में जहांगीर के नाम के साथ उस का नाम भी खुदने लगा।

ब्याह हो जाने के बाद अहमदनगर फिर दखल करने को बादशाह का दूसरा बेटा पर्वीज़ भेजा गया। मगर मलिक अम्बर की चालाकियों के सामने पर्वीज़ की कुछ न चल सकी। इसके पहले बादशाह का तीसरा बेटा खुर्रम उदयपुर के राना से लड़ा, और जयी हुआ। इसी वास्ते बादशाह ने उस को "शाहजहान" की उपाधी दी, और मलिक अम्बर से लड़ने को भेजा। शाहजहानने मलिक अम्बर को अपने काबू में लाकर अहमदनगर दखल कर लिया।

१६२० ई० में मलिक अम्बर ने सुलह को तोड़ कर बुर्हानपुर पर, जहां सूबदार रहता था, चढ़ाई की। लेकिन शाहजहान फिर भेजा गया, और अम्बरने फिर शिकस्त खाई।

इंगलिस्तान के राजा १ले जेम्स का एल्ची सर टौम्स रो इसी वक्त दिल्ली में आया। और बड़ी इज़्ज़त के साथ १६१५ से १६१८ तक यहां रहा। इस के यहां आने का असल मकसद यह था कि अंगरेज़ यहां सौदागरी कर सकें। पुर्तगीज़ यहां पहले ही से तिजारत करते थे। बहुतेरे अनुमान करते हैं कि जहांगीर ही के समय से पुर्तगीज़ोंने इस देस में तम्बाकू के व्यवहार की चाल निकाली थी।

१३२१ ई० में राज में एक बड़ा ही फसाद बरपा

हुआ। बादशाह के छोटे बेटे शहरयार की शादी, शेरख़ां से नूरजहान की जो बेटी थी, उस से हुई थी। अब बादशाह को लब-इ-गोर देख नूरजहान इस बात की कोशिश में पड़ी कि उस का दामाद तख़्त पाये। शाहजहान ने दखन में जब यह ख़बर सुनी तो डंका बग़ावत का बजाया। इस बखेड़े के दूर करने को शहज़ादे पर्वीज़ और काबुल के हाकिम महाबतख़ां भेजे गये। इन से शिकस्त खाकर शाहजहान ने बंगाले में घुस कर सूबदार को मारा और वहां का तख़्त दख़ल किया। निदान कुछ दिनों के बाद उसे बाप के अधीन होना पड़ा।

महाबतख़ां बड़ा ही बीर था। नूरजहान ने इस काम के योग्य सिवा इस के किसी को न पाया, कि शाहजहान को अपने पंजे में रक्खे और शहरयार को तख़्त पर बिठाने की कोशिश करे। पर जब नूरजहान ने देखा कि महाबतख़ां की ज़ियादे मेल शहज़ादे पर्वीज़ से है, और बहादुरी के सबब से इस की लोग बड़ी क़दर करते हैं, तो नूरजहान का दिल महाबतख़ां से फिर गया, और उसे अपना दुश्मन समझने लगी। महाबतख़ां जब अपनी सेना के साथ काबुल को लौटा जाता था, कि रास्ते ही में बादशाह के पास हाज़िर होने का हुक्म पहुंचा। ५००० राजपूतों को साथ ले महाबत वहीं से लौटा, और जब बादशाह के ख़ेमे के पास, जो व्यासा नदीके बाएं तीर पर पड़ा हुआ था, पहुंचा, तो मालूम हुआ कि बादशाह से मुलाक़ात न होगी। यह महाबत को बहुत बुरा मालूम हुआ, और इस अप्रतिष्ठा

का बदला उसने यों लिया कि जब देखा कि बादशाह की कुल सेना ब्यासा पार उतर गई तो चुने हुए राजपूतों की फौजें ले कर बादशाह को खेमे के अन्दर कैद कर लिया। नूरजहान ने स्वामी को छोड़ाने के लिये लाख सर धूना पर जब किसी तरह कुछ न बर आया तो आप अपने तईं महाबत के हवाले कर पति से जा मिली। महाबत ने लगभग बरस एक के बादशाह को काबुल में कैद रक्खा, पर कभी किसी तरह से उसकी बेकदरी न होने दी। निदान चतुर नूरजहान की युक्ति से बादशाह की कैद से रिहाई हुई। महाबत को भागना पड़ा, और भागा भागा दखन में शाहजहान से जा मिला।

इस समय शाहजहान बुरी दशा को पहुंच कर ईरान जाने को मुस्तइद था। लेकिन इधर (१६२६) पर्वीज़ के मर जाने से और महाबतखां की मदद मिलने से उस के बादशाह होने की आस फिर लहलहा उठी। इस के दूसरे ही बरस बादशाह कश्मीर से लाहौर आ कर ६०वें बरस में दम्मे के रोग से मर गया। (१६२७)

शराबखारी के सिवा जहांगीर में और कोई बड़ा दोष न था। प्रजा के आपस की लड़ाई में इन्साफ़ करने के लिये जहांगीर बड़ी कोशिश करता था।

शाहजहान।

१६२७—१६५८।

बाप के मरने की खबर सुन कर शाहजहान ने तुरत दखन से आगरे में जा कर राज-सिंहासन को ले लिया। शहरयार के अलावह बाबर के घराने में जितने लोग उसकी सल्तनत के कांटों के से थे, सबके सब क़तल कराये गये। नूरजहान अपना मुशाहरा मुक़र्रर करा राजकाज से बिल्कुल इलाक़ा छोड़ अलग रहने लगी, और १६४६ ई० में मर गई। नूर-जहान का भाई और बादशाह का ससुर आसिफ़ख़ां और महाबतख़ां ने वज़ीर बन कर बड़ी इज़्ज़त हासिल की। शाहजहान का दरबार चमक दमक और रौनक़ी के वास्ते आज तक मशहूर है।

शाहजहान को सब से पहले दखन की लड़ाई की तरफ़ ध्यान देना पड़ा। ख़ां जहान लोदी दखन के एक सूबदार ने अहमदनगर के पहले सूबदार से छिपे छिपे मेल करके स्वाधीन होना चाहा। एक बार आगरे जा कर जब उसने मालूम किया कि बादशाह को उसकी तरफ़ से शक है, तो खुलाखुली बग़ावत का डंका बजाया, और दखन जा कर अहमदनगर के राजा से मिल कर बादशाह की फ़ौजों से खूब लड़ा, आख़िरकार बुन्देलखंड में मारा गया।

ख़ांजहान के मरने पर भी दखन की लड़ाई एक बारगी मौक़ूफ़ नहीं हुई। मुग़लों ने कभी अहमदनगर पर, कभी विजयनगर पर, और कभी दोनों पर एक बारगी चढ़ाइयां

करनी शुरू कीं। पहले बहुत दिनों तक तो इन की सब ही कोशिशें नाकाम हुआ कीं। इस वक़्त नामी शिवाजी के बाप शाहजी ने भी अहमदनगर के आस पास बहुतेरी जगहें दबा ली थीं। निदान शाहजहान आप दखन को गया, और बिजयपुर और गोलकुंडा शहर को दख़ल कर शाहजीको क़ाबू में लाया। और १६३७ में अहमदनगर के बखेड़ों को एक बारगी निबटा के लौट गया।

बंगाले में पुराने शहर सप्तग्राम के पास गोलिन (अब हुगली) नाम गांव में पुर्तगीज़ लोग बहुत दिनों से व्यापार करते थे। चटगांव में भी उनकी एक कोठी थी। उस समय ढाका बंगाले की राजधानी थी,—वहां के नव्वाब के यहां नालिश की कि पुर्तगीज़ यहां बड़े ज़ुल्म करते हैं। शाहजहान बाप से बिगड़ कर जब बंगाले में भाग आया था तब उस के भागने पर पुर्तगीज़ों ने कुछ ध्यान नहीं दिया था। यह बात शाहजहान के दिल में चुभी हुई थी। बारे अब उसने उन को हुगली से निकाल देने का हुक्म दिया। इस हुक्मके बजा लाने में अनगिनत आदमियों की जानों पर बिसानी। (१६३१)

इस वक़्त क़न्दहार का हाकिम अलिमर्दानख़ां अपने मालिक ईरान के शाहसे बिगड़ कर अपना राज शाहजहान को सौंप उसकी शरण में आया। दिल्ली में इसीकी खुदवाई नहर आज तक उस के नाम से जारी है। अलीमर्दान ने पहले शहज़ादे मुराद फिर औरंगज़ेब के साथ बलख़ और बदोख़शां पर कई एक बार चढ़ाइयां कीं, लेकिन वहां की यूज़बेक क़ौम सर न हुई। ईरानियों ने क़न्दहार फिर दख़ल कर लिया,

और बादशाह के बेटे दारा और औरंगज़ेब इसके वास्ते खूब लड़े, लेकिन इसे न ले सके।

इस वक्त राजा टोडलमल के मुताबिक़ दखन की ज़मीनों की पैमाइश ख़तम हो जाने पर ख़ज़ाना वसूल करने का नया बन्दोबस्त किया गया।

१६५२ ई० में शहज़ादा औरंगज़ेब दखन का सूबदार मुक़र्रर हुआ। गोलकुंडे का वज़ीर मीरजुमला अपने मालिक से नाराज़ हो बिगड़ गया, और उस सूबे को ले लेने के वास्ते औरंगज़ेब को बुलाया। इसने क्या चालाकी की कि अपने भाई बंगाले के सूबदार शुजा की बेटी से अपने बेटे को ब्याहने जाने के बहाने से फ़ौज ले कर गोलकुंडे पर चढ़ गया, और दख़ल कर लिया। वहां के राजा ने शिकस्त खाई, और वाजिब ख़ज़ाना देना मंज़ूर किया। इसी वक़्त से मीरजुमला औरंगज़ेब का प्यारा सेनापति हुआ। इसके बाद शाहजहान की बीमारी की ख़बर फैलने से उन के बेटों में तख़्तके वास्ते लड़ाई शुरू हुई।

शाहजहान के चार बेटे और दो बेटियां थीं—बड़ा बेटा दाराशिकोह, दूसरा शुजा, तीसरा औरंगज़ेब, और सबसे छोटा मुराद। बेटियों में बड़ी बादशाह बेगम दाराशिकोह की तरफ़, और छोटी रौशनआरा औरंगज़ेब की तरफ़ थी। बादशाह ने बड़े ही बेटे को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा था, और इसी सबब से उसको अपने पास रख कर सल्तनत के बहुतेरे इन्तिज़ाम पहले ही से उसके सुपुर्द कर रक्खे थे। १६५७ ई० में बादशाह के बीमार होने की ख़बर दाराने

बहुतेरा चाहा कि ज़ाहिर न हो, पर ज़ाहिर हो ही गई, और बंगाले का सूबदार शुजा और गुजरात का सूबदार मुराद दोनों ने बादशाह का ख़िताब ले ले कर दिल्ली की तरफ़ कूच किया। और मक्कार औरंगज़ेब ने ज़ाहिर तो किया कि हमें राजकाज से कुछ इलाक़ा नहीं, हम तो मक्के जाने वाले हैं। सिर्फ़ काफ़िर* दारा और उसके वज़ीर जसवंत सिंह को दबाने के इरादे से मुराद का साथ देंगे।

इस वक़्त शाहजहान अच्छी तरह से चंगा हो गया था, पर तब भी बेटों में लड़ाई नहीं बंद हुई। बनारस के पास दारा और उस के मददगार जयसिंह से शिकस्त खा कर शुजा फिर बंगाले में लौट गया। इधर जब दाराने सुना कि मुराद और औरंगज़ेब मिल कर लड़ने को चले आते हैं, तो जसवंत सिंह को उनसे लड़ने के वास्ते भेजा। लेकिन जसवंत सिंह उज्जयिनी के पास शिकस्त खा कर अपने राज जोधपुर में भाग गया। फिर दारा ख़ुद लड़ने को गया और आगरे के पास लड़ाई में शिकस्त खा कर दिल्ली को भाग आया। इधर औरंगज़ेब इन फ़तहों से फूला हुआ आगरे गया, और बापको क़ैद करके क़िले में रक्खा। पस शाह-जहान हरचंद १६६६ ई० तक ज़िन्दा रहा, लेकिन बादशाहत उसकी सन १६५८ ही में ख़तम हो गई,

शाहजहान के दरबार में एक अजीब चमक दमक थी। उसने सात करोड़ रुपये की लागत का क़िस्म क़िस्म के

*धर्म के बारे में दारा का स्वाधीन मत था, इससे अति भक्त मुसल्मान लोग उसे काफ़िर कहते थे।

जवाहिरों से सज कर एक तख़्त-इ-ताऊस बनवाया था, और मस्जिद वग़ैरह बहुतेरी नफ़ीस नफ़ीस इमारतें बनावाई थीं। इन में से ताजमहल एक ऐसी उम्दे इमारत है कि दुनिया में अपना जोड़ा नहीं रखती। यह इमारत आगरे में है, और शाहजहान की प्यारी बेगम मुम्मताज़ महल का रौज़ा है। इसके राज में क्या हिन्दू और क्या मुसल्मान सब रअ-य्यत बादशाह के न्याय से राज़ी थी। उसकी गद्दी पर से उतरने के वक़्त ख़ज़ाने में क़िस्म क़िस्म के जवाहिर और चौदह करोड़ के लगभग रुपये मौजूद थे।

औरंगज़ेब।

१६५८-१७०७।

औरगज़ेब और मुराद दोनों ने मिलकर दारा का पीछा किया। रास्ते में दग़ाबाज़ औरगज़ेब ने क्या किया कि साफ़-दिल मुराद को क़ैद कर ज़ंजीर डाल गोवालियर के क़िले में भेज दिया, और आप दिल्ली में जा अपने बादशाह होनेका ढिंढोरा पिटवा दिया (१६५८), और ख़िताब अब 'आलमगीर' का लिया।

औरंगज़ेब ने सोचा कि जब तक दारा और शुजा बचे रहेंगे, तब तक अमन की सूरत नहीं दिखाती, बारे उनके मरने की कोई तदबीर सोचा चाहिये। दारा, औरंगज़ेब के पीछा करने के डर से पहले तो मुल्तान को भागा, फिर वहां से एक एक कर कई एक राजपूत

सरदारों के पास क्रम से जा जा कर उसने पनाह चाही। निदान जून के (जो कन्दहार के पास है) हाकिम ने दग़ा से दारा को गिरफ़्तार कर औरंज़ेब के हवाले किया। निर्दयी औरंगज़ेब ने अपने बड़े भाई के पांओं में ज़ंजीर डाल के भोंडे बेभूल के हाथी पर बिठला दिल्ली की गलियों और कूचों में फिरवा कर इस्लाम के मज़हब छोड़ने की तुहमत लगा। क़त्ल करवा डाला, और झूठा ग़म दिखला कर भाई के कटे सिर पर आंसू के कई एक बूंद टपकाये! इसके पहले शुजा एकबार और बंगाले से चला था, लेकिन कजवार की लड़ाई में शिकस्त खाकर फिर बंगाले में लौट गया। इस वक़्त बादशाह ने अपने बेटे मुहम्मद और सिपह-सालार मीर जुमला को शुजा से लड़ने के वास्ते रवाना किया। फिर थोड़े ही दिनों के बाद शहज़ादा मुहम्मद बाप की फ़ौज से अलग हो कर शुजा से जा मिला, और शुजा की बेटी को ब्याह लेने पर उससे बिगड़ बैठा, और फिर जब बाप की फ़ौज में आ मिला तो गोवालियर के क़िले में क़ैद किया गया। इधर शुजा मीर जुमला से हार कर, पहले ढाके और फिर अराकान में भागा, और वहां के राजा के हाथ बाल बच्चों समेत मारा गया। दारा का बेटा सुलेमान भी बाल बच्चों के साथ गोवालियर के क़िले में क़ैद किया गया, और थोड़े ही दिनों के बाद मर गया। मुराद भी १६६१ ई० में एक झूठे अपराध लगा कर क़त्ल करा दिया गया। अत्याचारी और निठुर औरंगज़ेब इस तौर से अपने सब भाई भतीजों को मार कर आप निकंटक राज करने लगा।

अब वीर और साहसी मीरजुमला ही एक बच रहा था कि जिसका बादशाह को बड़ा खटका रहता था। सो वह भी १६६३ ई० में आसाम फ़तह कर लेने के बाद और चीन पर जो उस ने चढ़ाई की थी उस में नाकाम हो कर ढाके में लौट आने पर इस दुनिया से गुज़र गया।

इस वक़्त औरंगज़ेब एकाएक एक सख़्त बीमारी में पड़ा और लोग उस की जगह हासिल करने के लिये साज़िशें करने लगे। कोई यह चाहता था कि शाहजहान फिर तख़्त पर बैठे, और किसी को यह सलाह थी कि औरंगज़ेब का बेटा उस का जानशीन हो लेकिन औरंगज़ेब की अक़्ल, हिम्मत, और ज़ोर के बाइस सब साज़िशें जों की तों दबी दबाई रह गईं। चंगा हो जाने पर बादशाह आब-हवा तबदील करने के इरादे से कश्मीर को रवाना हुआ।

इस के बाद औरंगज़ेब को मरहटों की तरफ़ ध्यान देना पड़ा। हिन्दुस्तान का नक़शा निकाल कर दखन के पच्छिम किनारे सूरत शहर से एक कल्पित रेखा पूरब तरफ़ नागपुर के कुछ पूरब हिस्से तक खैंचो, और वैसी ही एक दूसरी रेखा गोवा शहर से चन्दा शहर तक खैंचो, इन दोनों रेखाओं के बीच की जगहों को महाराष्ट्र देश समझ लो। सह्य पहाड़ इसी देश में है। नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, भीमा, कृष्णा नदियां भी यहीं किसी न किसी हिस्से में बहती हैं। इस पहाड़ी पर उपजाऊ मुल्क के रहने वाले नाटे नाटे, मज़बूत, मिहनती, और बड़े चालाक होते हैं।

मरहटों के पुराने हाल कुछ नहीं मिलते हैं। मुग़लों के

वक़्त में भी इनका कोई ख़ास राजा न था। एक एक आदमी छोटी छोटी जगहों पर हुकूमत करता था। अहमदनगर और विजयपुर के राजाओं की फ़ौजों में मरहटे बहुत भरती हुआ करते थे। घुड़सवारी के फ़न में होशयार होने के सबब से मुसलमानी सल्तनतों में भी ये फ़ौजी बड़े बड़े ओहदों पर मुक़र्रर होने लगे। इसी तरह यह क़ौम बहादुर और दिलेर होती चली।

अहमदनगर के वाली मलिक अम्बर के कारकुनों में मल्लजी भोंसला और यदुराव नाम दो अच्छे अच्छे घराने के मरहटे नौकर थे। इसी यदुराव की बेटी जीजीबाई के साथ मल्लजी के बेटे शाहजी का ब्याह हुआ, और इसी जीजीबाई से शाहजी का दूसरा बेटा शिवाजी १६२७ ई० में पैदा हुआ। दादाजी पन्थ नाम एक ब्राह्मण शिवाजी का गुरु था। इस ने शिवाजी को मरहटों की ज़रूरी सब बातें सिखलाई थीं, लेकिन लिखना पढ़ना कुछ भी नहीं बताया था। शिवाजी हर्फ़ तक नहीं पहचानता था। उस को हिन्दू धर्म पर बड़ी भक्ती थी। वह पुराणों के वीरों के हाल बहुत ही जी लगा कर सुना करता था। मुसल्मानों से बहुत नफ़रत करता था। उसने शिकार खेलने के वास्ते पहाड़ों में अक्सर जा जा कर अपने तईं वहां के पहाड़ी मुल्कों से वाक़िफ़ कर लिया था। इस वक़्त की यह वाक़िफ़कारी उसे आगे बहुत काम आई।

शिवाजी ने कमसिनी ही में इतना ज़ोर हासिल कर लिया

कि छलबल से विजयपुर के राजा के कई एक गढ़ और कोकन देस का उत्तर हिस्सा दखल कर लिया। इस बात से विजयपुर के राजा ने रंज हो कर शिवाजी के बाप शाहजी को क़ैद कर लिया। शिवाजी बादशाह शाहजहान की शरण में जा कर उसकी मदद से बाप को क़ैद से छुड़ा लाया, पर फिर साबिक़ दसतूर अपना राज बढ़ाने की तदबीर करने लगा। फिर १६५५ ई० में शाहजहान के दखल किये हुए दखन के कुछ हिस्सों में शिवाजी ने लूट मार करना शुरू किया। शाहज़ादा औरंगज़ेब इस वक़्त गोलकुंडे में लड़ रहा था। शिवाजी ने जब देखा कि औरंगज़ेब ने लड़ाई में फ़तह पाई है तो चट अपने क़ुसूर के वास्ते मुआफ़ी मांग ली। औरंगज़ेब मुआफ़ कर के तख़्त दखल करने को १६५८ में दिल्ली की तरफ़ रवाना हुआ। इधर शिवाजी ने विजयपुर के राजा को मारे लड़ाइयों के तंग कर डाला। निदान राजा ने लाचार हो कर शिवाजी के फ़ाइदों की शर्तें क़बूल कर के सुलह कर ली। इस सुलह से शिवाजी पूना के पास पास कोकन देस के एक बड़े हिस्से का स्वाधीन राजा हुआ।

१६६२ ई० में बादशाह की अमल्दारी में शिवाजी के लूट मार करने के सबब से दखन का सूबदार शाइस्तेखां उसे सर करने को भेजा गया। शाइस्तेखां शिवाजी को शिकस्त दे पूना दखल कर उसी के मकान में रहने लगा। शिवाजी ने सिंहगढ़ में जा कर पनाह ली। एक दिन उसने रात को किसी की बारात के साथ पूना में पहुंच कर शाइस्तेखां के सब बालबच्चों को मार डाला, शाइस्तेखां ने भाग कर अपनी जान बचाई।

इस के बाद शिवाजी ने दूर दूर पर लूटमार करना शुरू किया, और चार हज़ार सवारों के साथ औरंगज़ेब के दख़ल किये हुए सूरत बन्दर में जा कर बहुत कुछ धन सम्पत्ति लूटी। औरंगज़ेब के जंगी जहाज़ों को लूट कर समुद्र में भी वह अपना अधिकार बढ़ाने लगा।

जब औरंगज़ेब ने सुना कि शिवाजी ने हज करने को मक्के जाने वालों के जहाज़ लूट लिये हैं, राजा का ख़िताब लेकर स्वाधीनता इख़्तियार कर ली है, सिक्कों में अपना नाम खुदवाया है, तो ख़ूब ही ख़फ़ा हुआ, और राजा जयसिंह और दिल्ली के ख़ां को बहुत सी फ़ौजें साथ दे उसे सर करने को भेजा। जब इन सिपह-सालारों ने शिवाजी के दो बड़े बड़े किले ख़ाली करा लिये, तो शिवाजी ने लड़ना मुनासिब न समझ कर राजा जयसिंह से जा कर मुलाक़ात की। राजा जयसिंह ने उस की अच्छी ख़ातिरदारी की, और बादशाह से सुलह करा दी। इस के बाद शिवाजी ने जयसिंह के साथ बिजयपुर के राजा के बरख़िलाफ़ कूच किया। फिर लालच के बस हो कर वह दिल्ली को गया। दरबार में जब औरंगज़ेब ने उस की पूरी इज़्ज़त न की तो रंज हो कर बे इजाज़त दरबार से उठ गया। औरंगज़ेब ने इस बात के वास्ते क़ैद कर के उस को दिल्ली ही में रक्खा लेकिन चालाक शिवाजी पहरुओं की आंखों में धूल डाल कर निकल भागा, और सन्यासी के भस में ८ महीनों के बाद अपनी राजधानी रायगढ़ में पहुंचा (१६६६)।

जब शिवाजी इस तौर पर दिल्ली से भाग आया, तब

औरंगज़ेब ने उस को फिर अपने क़ाबू में लाने के वास्ते उस के सब क़ुसूर मुआफ़ कर दिये, उस का राजा का ख़िताब लेना मंजूर कर लिया, और एक जायगीर मुक़र्रर कर दी। मगर अब शिवाजी कब उस के चपले में आता है? १६६८ से उस ने विजयपुर और गोलकुंडे के राजाओं से ख़िराज लेना शुरू किया, और १६६८ और १६६९ दो बरस में अपनी नई सल्तनत का इन्तिज़ाम किया।

जब बादशाह ने देखा कि शिवाजी मुग़ालते में न आया, तो खुलमखुला लड़ने की तय्यारी की। बरस दो एक तक लड़ाई चली। इन लड़ाइयों में शिवाजी अक्सर फ़तहयाब हुआ किया। बादशाह के कई एक क़िले ख़ाली करा लिये, सूरत को लूट लिया, और सूबे ख़ानदेश में एक फ़साद मचा कर वहां से 'चौथ' यानी राज की आमदनी के चौथे हिस्से के तहसीलने का दस्तूर निकाला। १६७२ ई० में शिवाजी के सर करने को बादशाह ने कुछ फ़ौजें और भेजीं। मगर ये भी शिवाजी से लड़ कर फ़तह न उठा सकीं। शिवाजी के आदमियों की हिम्मत इन फ़तहों की खुशियों से और दूनी हो गई।

इस वक़्त अफ़ग़ानिस्तान के उत्तर-पूरब की तरफ़ के पहाड़ों की रहने वाली क़ौमों से बादशाह को लड़ना पड़ा। उसके बाद दिल्ली के पास ही एक बलवा हुआ। वहां एक ईश्वर के माननेवाले सतनरामी नाम एक हिन्दुओं का फ़िर्क़ा बसता था। एक अदनी बात के लिये उस फ़िर्क़े के एक भक्त से और बादशाह की फ़ौज के एक सिपाही से कुछ

खटपट हो जाने के सबब से बढ़ते बढ़ते एक बड़ी लड़ाई हो गई। पहले तो सतनरामियों ने कई एक बार फ़तहें हासिल कीं, लेकिन फिर बादशाह की बेशुमार फ़ौजें आने पर उन्होंने शिकस्त खाई, और फ़ौजें उन की सारी तितिर बितिर हो गईं।

औरंगज़ेब बड़ा ही कट्टर मुसल्मान था। अक्बर ने हिन्दुओं की जिन जिन रस्मों और रिवाजों को अपने यहां जारी किया था, इसने उनको उठा दिया। मुसल्मानोंके सिवा और और सब मज़हबवालों से जिज़िया नाम जो महसूल लिया जाता था उसे अक्बर ने मौकूफ़ कर दिया था, लेकिन इस ने फिर जारी किया। इससे हिन्दुओं का फ़िर्क़ा बहुत ही नाराज़ हो गया, और हिन्दू मुसल्मान के आपस की लाग हद से ज़ियादा बढ़ गई। राजपूत लोग मुग़लों से बहुत हिल मिल गये थे, लेकिन इस वक़्त वह भी बिगड़ गये, और दखन के हिन्दू मरहटों से जा मिले (१६७७)।

इस वक़्त औरंगज़ेब से आम बिगाड़ होने का एक सबब और हुआ। जोधपुर का राजा जसवंतसिंह बादशाह ही के काम के वास्ते काबुल गया था। वहां वह गुज़र गया। दुर्गादास नाम एक अमीर राजपूत जसवंतसिंह की स्त्री और लड़कों को देस लिये आता था। रास्ते में अटक के पास बादशाह ने उसको रोका, लेकिन दुर्गादास ने किसी हिक्मत से विधवा रानी और उस के लड़कों को भेस बदलवा कर देस को रवाना कर दिया, और आप बहुत दिनों तक बादशाह की फ़ौज से लड़ता भिड़ता रहा।

निदान जसवंतसिंह के बालबच्चों से इस बुरे तौर पर पेश आने और जिज़िया तहसीलने के सबब से अनक़रीब सब के सब राजपूत बादशाह से नाराज़ हो कर बिगड़ बैठे। पहले पहल उदयपुर के राना ने दो बार बग़ावतें कीं, और दोनों बार शिकस्तें खाईं। फिर दुर्गादास ने बादशाह के छोटे बेटे अक्बर को तख़्त दिला देने का लालच दे उस से डंका बग़ावत का बजवाया। उस समय अक्बर के पास ७० हज़ार सिपाही थे। उस ने इस फ़ौज के साथ बादशाह के विरुद्ध, जो अजमेर में उस वक़्त था, कूच किया। लेकिन चतुर औरंगज़ेब ने क्या चालाकी की कि एक एक कर सारी फ़ौज को बहका कर अपने पंजे में कर लिया। अक्बर अकेला पड़ गया, और जब उसने अपने तईं बचाने की कोई तदबीर न देखी, लाचार भाग कर मरहटों की शरण ली (१६८१)। इस के बाद भी उदयपुर के राना और दूसरे दूसरे राजपूत, और बादशाह के दरमयान लड़ाइयां हुआ कीं। आख़िरकार सुलह हुई, लेकिन फिर कभी औरंगज़ेब और राजपूतों में दिली मेल न हुआ।

जब औरंगज़ेब इधर इन बखेड़ों में उलझा हुआ था, उधर शिवाजी ने मौक़ा पाकर दखन में बहुतेरी जगहें दख़ल कर लीं, अपने यहां के अमले कारकुनों और फ़ौजी अफ़सरों के ओहदों के फ़ार्सी नाम उठा कर संस्कृत के जारी किये। १६७५ में उस की फ़ौज ने गुजरात लूटा, और १६७६ में उस ने आप मैसूर में जा कर मौरूसी जायगीर को दख़ल किया। १६७९ में जब बादशाह के सेनापति

दिल्ली के ख़ां ने विजयपुर के राज पर चढ़ाई की, तब शिवाजी ने विजयपुर के राजा से मिल कर किसी जुगुत से बादशाह की फ़ौजों को इंटा के तितिर बितिर कर दिया। इस से शिवाजी का बड़ा फ़ायदा हुआ। फिर १६८० में शिवाजी ५३ बरस का हो कर परलोक को सिधारा।

शिवाजी बुद्धिमान, तेजस्वी, मिहनती, चतुर, और बड़े हौंसलेवाला था। इस ने एक अदनी हालत से इतनी तरक्क़ी की, और जिन मरहटों की क़ौम का अक्सर लोग नाम भी नहीं जानते थे उन का नाम इतना ऊंचा किया कि अब उसी क़ौम की इज़्ज़त हिन्दुओं की अन्क़रीब और और सब क़ौमों से ज़ियादे है। हिन्दूधर्म का इसे बड़ा ही पास था।

शिवाजी के बाद उस के बड़े बेटे शंभूजी ने बाप का राजसिंहासन तो पाया, मगर बाप के गुणों में से एक को भी न पाया। यह निठुर निर्विवेकी, और विषयी था। शिवाजी के बनाये अच्छे आईन और क़ाइदों के जारी नहीं रहने से इस के वक़्त में फ़ौजों का काम सिर्फ़ मुल्कों का लूटना रह गया था।

उदयपुर के राजा से सुलह हो जाने पर औरंगज़ेब निचिन्त हो गया। तब उस ने दखन की तरफ़ दिल दिया और १६८३ में ख़ुद बुर्हानपुर में छावनी डाल अपने बेटे मुअज़्ज़िम को कोकन का मुल्क लूटने भेजा। इधर के मुआमले तय हो जाने पर विजयपुर पर चढ़ाई करने के इरादे से वह अहमदनगर को गया। कोकन के लूटे जाने से शंभूजी रंज हो कर चुपचाप बुर्हानपुर को गया और उसे

लूट के और जला के ख़ाकस्याह कर चला आया। फिर जब बादशाहने विजयपुर के बरख़िलाफ़ कूच किया, तो शंभूजी ने दखन के उत्तर हिस्सों को लूटना शुरू किया। बादशाह ने जब सुना कि शंभूजी ने गोलकुंडे के राजा से सुलह कर ली है, तो उस ने विजयपुर का जाना मौकूफ़ रख पहले गोलकुंडे पर चढ़ाई की, और उसे अच्छी तरह लूट-मार कर राजा को सुलह करने के वास्ते मजबूर किया। फिर विजयपुर दख़ल हुआ। इस के बाद औरंगज़ेब ने दग़ाबाज़ी से सुलह की शर्तों को तोड़ कर गोलकुंडे के राजा को तबाह किया, और मैसूर में घुस कर मरहठों की जायगीर ज़ब्त कर ली, और अपनी सल्तनत का हद कुमारिका तक पहुंचा दिया।

इस के बाद बादशाह शंभूजी को कोकन से क़ैद कर लाया, और मुसल्मान होने का हुक्म दिया। इस बात का कड़ा जवाब देकर नामंज़ूर करने के बाइस शंभूजी का सर काट लिया गया (१६८९)। शंभूजी के बाद उस का बेटा साहूजी, जो अभी बिल्कुल बच्चा था, राजा हुआ। उसका सौतेला भाई राजाराम राजकाज चलाने लगा। इस वक़्त मुग़लों ने रायगढ़ के क़िले को दख़ल कर साहू को क़ैद किया। राजाराम ने वहां से कूच कर कर्नाटक में जिंजी क़िले को दख़ल किया और राजा का ख़िताब लिया। औरंगज़ेबने उस क़िले के भी लेने के वास्ते ज़ुलफ़िक़ारखां नाम सेनापति को रवाना किया (१६९२)।

इधर राजाराम ने शान्तजी और दानजी नाम दो मरहटे

सरदारों को मुल्क लूटने और चौथ तहसीलने को रवाना किया। विजयपुर और गोलकुंडे के बहुतेरे आदमियों ने इनका साथ दिया।—पस दखन में इस वक्त यह हाल था कि जहां देखो वहीं एक आफ़त मची हुई है,—कहीं लूट है कहीं खसोट है, कहीं गांव के गांव में आग लगी है। इस वक्त मरहटी फ़ौजकी तलब मुक़र्रर न थी। लूट ही खसोट से वह अपना गुज़ारा करती थी। मरहटे मुग़लों से सामना करके नहीं लड़ते थे, इससे मुग़लों को उन के सर करने का मौक़ा नहीं मिलता था। शान्तजी और दानजी ने क्या किया कि धीरे धीरे ज़ुलफ़िक़ारखां के लश्कर की बग़ल में पहुंच कर उसकी रसद पहुंचाने की राह रोक दी। बादशाह ने डर कर जल्द ही अपने बेटे कामबख़्श की फ़ौज के साथ जिंजी क़िला दख़ल करने के वास्ते रवाना किया ज़ुलफ़िक़ार और कामबख़्श के आपस में मेल नहीं रहने के सबब से बहुत दिनों तक कोई काम न निकला। निदान १६९८ में ज़ुलफ़िक़ार ने जिंजी को दख़ल किया। मगर राजाराम इसके पहले ही सितारा जा चुका था।

इस वक्त मरहटी फ़ौजों के आपस में बिगाड़ होजाने के सबब से उन्हीं ने शान्तजी को मार डाला। राजाराम ने दानजी से मिल कर बहुत सी फ़ौजें इकट्ठी कीं। दखन के उत्तर हिस्से में तमाम लूट मार और चौथ वसूल करना शुरू किया। औरंगज़ेबने भी इधर ज़ुलफ़िक़ार को मरहटी फ़ौजों के बरख़िलाफ़ रवाना किया, और आप उनके क़िलों के लेने को रवाना हुआ। १७०० ई० में सितारा दख़ल किया

इसके कुछ पहले राजाराम गुज़र गया, और उसका बेटा २रा शिवाजी बाप की जगह पर बिठाया गया । परन्तु यह अभी बिलकुल बच्चा था, इस सबब से सल्तनत का इन्तिज़ाम उसकी मा ताराबाई चलाती थी। मुग़लों ने अभी तक लड़ाई मौकूफ़ नहीं की थी। औरंगज़ेब ने कई एक बड़े बड़े क़िले दख़ल किये,—उधर मरहटे भी उन्हें फिर ले लेने में ग़ाफ़िल न थे,—इस समय मरहटी फ़ौज इतनी ज़ोरावर हो गई थी, और इतना फ़साद मचाये रहती थी कि मुग़लों को उनके डर से सदा होशयार और चौकन्ना रहना पड़ता था। मरहटे सामने सामने कभी नहीं लड़ते थे—ये अक्सर धोखा देकर चालाकी के साथ मुग़लों की थकी हुई फ़ौजों को लूट लिया करते थे। इसी तरह बरस बीस एक तक मरहटों से लड़ते भिड़ते औरंगज़ेब के नाकों दम आ गया। ख़ज़ाना ख़ाली हो गया। फ़ौजोंकी मुक़र्रर तलब चुकानी मुशकिल पड़ गई। राजपूतों से तो अक्सर लड़ाई हुआ ही करती थी, इधर आगरे के पास जाटों से एक लड़ाई खड़ी हुई। इन ही सब बाइसों से औरंगज़ेब ने मरहटों के पास सुलह का पैग़ाम भेजा। मरहटे इसकी इस बुरी हालतको मालूम कर तन बैठें, —शर्तें सुलह की कड़ी कड़ी रखनी चाहीं। औरंगज़ेब ने घमंड से सुलह तो नहीं क़बूल की, पर उनके जब्र और ज़ुल्मों को गवारा कर लिया, आख़िरश अहमदनगर में जाकर १७०७ ई० में ८९ बरस का हो कर इस जहान से रुख़सत हो गया।

औरंगज़ेब दिलावर, अक़्लमंद, चालाक और कुछ इन्सा-

फ़ब्र भी था। मुसल्मानी मज़हब में बहुत पक्का होने के सबब से मुसल्मानों ने उसकी बड़ी तारीफ़ें लिखी हैं। इसी के अमल में मुग़लों की सल्तनत ख़ूब चमकी, और फिर इसी के वक़्त में उसकी तबाही के भी सामान बंधे। यह शक्की इतना था कि किसी का इतबार नहीं करता, और इसी सबब से इस का न कोई इतबार करता, और न कोई इसे चाहता। जिज़िया के जारी करने से और हिन्दुओं की सल्तनत के कामों से महरूम रखने ही से सब हिन्दू इस से नफ़रत करते थे। यह अपने बाप से जिस बुरे तौर से पेश आया था उस के लिये वह मरते मरते समय तक पछताया किया।



छठा अध्याय।

बहादुर शाह।

१७०७—१७१२।

औरंगज़ेब के तीन बेटे थे—मुअज़्ज़म, आज़म और कामबख़्श। उसने मरते वक़्त तीनों बेटों को अपना सारा राज बांट लेने कहा था, लेकिन ऐसा होने नहीं पाया। उसके मरने पर तीनों बादशाही ताज पहनने के लिये ख़्वाहां हुए, और इसी से तीनों ने आपस में लड़ने की भी तय्यारियां कीं। निदान लड़ाई में और सब तो मारे गये,—सिर्फ़ बड़ा बेटा मुअज़्ज़म 'बहादुरशाह' (१ला शाह आलम) का ख़िताब लेकर बादशाह हुआ।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि शंभूजी के बेटे साहू को मुग़लों ने क़ैद कर लिया था। औरंगज़ेब के मरने के बाद आज़म ने उसे छोड़ दिया था। साहू जब दखन में गया तो बहुतेरे इसे राजका असल वारिस ख़याल कर उस की तरफ़ हुए। इस पर मरहटों में दो दल हो गये। बहादुरशाह ने भी साहूका साथ दिया, और सुलह कर ली। सुलहनामे की शर्त यह हुई कि मरहटों को जो चौथ दिया जायगा, उसे मुग़ल ही वसूल करेंगे, मरहटे ख़ुद न तहसीलें। बहादुरशाह का असल मक़सद यह था कि लड़ाई झगड़े निबटें और सारे मुल्कमें अमन हो। इसी ख़याल से उसने राजपूतों

से भी सुलह कर ली। परन्तु इतना करने पर भी उसे फिर एक लड़ाई में उलझना ही पड़ा।

ईसवी पन्द्रहवीं सदी के अखीर में बाबर की सल्तनत के समय पंजाब में "नानक" नाम एक शख़्सने एक नया मत जारी किया था। इस मत के माननेवालों को सिक्ख (शिष्य) और धर्मयाजक को 'गुरू' कहते हैं। इस मत की असल अद्वितीय ईश्वर की उपासना है। क्या हिन्दू क्या मुसल्मान सब ही इस मज़हब में आ सकते हैं। पस इस मज़हब में वर्णविचार नहीं है, मगर गोवध और गोमांस भक्षण निहायत ही मना है। सिक्खों को किसी शक्ल का एक टुकरा लोहा अपने बदन में रखना ज़रूर है। १६७५ ई० में १०वें गुरू गोविन्द* ने इस मत को हरतरह से पूरा कर दिया। सिक्ख लोग पहले दुनियावी बातों से बिल्कुल तर्क थे। मगर जब मुग़ल उन पर बहुत ज़ुल्म करने लगे, तब इनसे न रहा गया। सब के सब सिपाहियाना भेस रखने लगे, और मुसल्मानों को अपना जानी दुश्मन समझ मुग़लों की सल्तनत में लूट मार करने लगे। बहादुर शाह के ज़माने में 'बंधु' नाम गुरू को अपना सरदार बना सिक्खों ने पंजाब के पूरब से लूट मार करना शुरू किया। बहादुर शाह ने वहां जाकर उन लोगोंको हराया, और पहाड़ों की तरफ़ निकाल दिया, लेकिन इसके थोड़े ही दिनों के बाद लाहोर में लौट आकर १७१२ ई० में अपना चोला छोड़ दिया। इसने कुल ५ बरस बादशाहत की।

---

* गुरू गोविन्द की जन्म भूमी पटना है।

जहांदार शाह।

१७१२—१७१३

बहादुर शाह के चार बेटे थे। दूसरा बेटा अज़ीमुश्शान औरों से लाइक़ था। परन्तु उसे तख़्त न मिल सका। वज़ीर आज़म ज़ुलफ़िक़ारअली की मदद से बड़ा बेटा 'जहांदार" का ख़िताब लेकर तख़्त पर बैठा। अज़ीमुश्शान वग़ैरह भाई और भतीजे सब के सब क़त्ल करा दिये गये। सिर्फ़ अज़ीमुश्शान का बेटा फ़र्रुख़सियर बंगाले में रहने के सबब से बच गया।

जहांदार निहायत ही नालाइक़ और ऐयाश था। उसे नाम के लिये बादशाह बनाकर ख़ुद बादशाहत करने के लिये ज़ुलफ़िक़ार ने उसकी मदद की थी। अब घमंड से उसके सब दुश्मन हो गये, और इसी बिगड़े वक़्त में एक ज़ोरावर दुश्मन भी आ पहुंचा। बिहार का हाकिम सय्यिद हुसैन और इलाहाबाद का हाकिम सय्यिद अबदुल दोनों भाइयों की मदद लेकर फ़र्रुख़सियर ने कुछ फ़ौजें जमा कीं, और तख़्त दख़ल करने के इरादे से दिल्ली की तरफ़ कूच किया। आगरे के पास जहांदार से लड़ाई हुई—पहली ही लड़ाई में जहांदार और ज़ुलफ़िक़ार दोनों पकड़े गये, और मारे गये (१७१३), और फ़र्रुख़सियर दिल्ली का बादशाह हुआ।

फ़र्रुख़सियर।

१७१३—१७१८।

फ़र्रुख़सियर ने तख़्त पर बैठते ही सय्यिद अब्दुल्लाह को वज़ीर आज़म और सय्यिद हुसैन को सेनापति मुक़र्रर किया। फ़र्रुख़सियर इन दोनों भाइयों का इहसानमंद था, इस सबबसे इनके आपस में प्रीति नहीं होने पाती थी राजकाज का सारा बंदोबस्त इन ही दोनों के हाथ रहने की वजह से दरबार के उमरा कनमनाने लगे। निदान सय्यिदों के मारने की साज़िशें होने लगीं। सय्यिदों ने भी बादशाह को धमका दिया। आख़िरकार बादशाह और सय्यिदों का मेल बिल्कुल ज़ाहिरी रह गया। फिर इसके बाद हुसैन दखन का सूबदार मुक़र्रर हुआ।

इस वक़्त सिक्खों के पहाड़ से उतर कर पंजाब में बहुत फ़साद मचाने पर एक मुग़ल सेनापति वहां जा कर उन्हें शिकस्त दे उनके सरदार बन्धुके साथ बहुत से सिक्खों को दिल्ली में क़ैद कर लाया। वहां सबके सब क़त्ल किये गये, और बन्धु बड़ी बड़ी बिपतों के साथ मारा गया। इतना करने पर भी सिक्ख सर न हुए।

बहादुर शाह के वक़्त में मुग़ल और मरहटों के दरमियान जो सुलह हुई थी, वह थोड़े ही दिनों के बाद तोड़ दी गई, और मरहटों के आपस की फूट रोज़ रोज बढ़ती चली, इसी सबब से दखन में तमाम हलचल जों की तों मची हुई थी। हुसैन ने दखन में जा कर जब देखा कि अमन का

कोई डील नहीं है, और बादशाह की साज़िश से अपने भाई की हिफ़ाज़त के वास्ते अपना दिल्ली जाना ज़रूरी समझा तो जल्दी में साहू से जैसी तैसी एक सुलह कर ली। परन्तु बादशाह ने अपनी बेइज़्ज़ती समझ कर इस सुलहनामे को तसलीम नहीं किया। बादशाह को हरदम फ़िक्र रहा करती कि ये सय्यिद किस ढंग से मारे जावें, परन्तु आख़िरश सय्यिदों ही ने उसे मार डाला। (१७१९)

फ़र्रुख़सियर ने मारवाड़ के राजा अजितसिंह की बेटी से शादी की थी। इस शादी के वक़्त अंगरेज़ों को सौदागरी के कई एक इख़्तियार हाथ लगे।

मुहम्मद शाह।

१७१९—१७४८।

फ़र्रुख़सियर को मार कर सय्यिदों ने रीफ़उद्दर्जात और रफ़ीउद्दौला को तख़्त पर बिठाया, परन्तु दोनों के दोनों थोड़े ही थोड़े दिनों के अन्दर इस दुनिया से उठ गये। फिर उन्हीं ने रोशन अख़तर को तख़्त दिया, जिस ने अपना लक़ब "मुहम्मद शाह" रक्खा।

सय्यिदों का इस क़दर इख़्तियार देख कर कितने ही लोग इन के दुश्मन हो ही गये थे। चीनक़िलीचख़ां भी जिसका बाप औरंगज़ेब के नामी तूरानी सरदारों में था, उन का दुश्मन हो गया। चीनक़िलीचख़ां "निज़ाम-उल-मुल्क" और आसिफ़जाह नामों से ज़ियादे मशहूर है। फ़र्रुख़सियर

के वक़्त में यह दखन का सूबदार था। हुसैनअली ने इससे सूबदारी छीन ले कर सिर्फ़ मालवे की हाकिमी सुपुर्द की। इस बात के वास्ते आसिफ़जाह के दिल को बड़ा ही क़लक़ था। निदान १७२० ई० में इसने डंका बग़ावत का बजाया और दखन में अपनी सल्तनत क़ाइम कर ली—हुसैनअली की फ़ौज बहुत लड़ी, पर उसे हरा न सकी।

सय्यिदों के मारने की साज़िश में मुहम्मद शाहको शरीक समझने के कारण से हुसैनअली जब आप आसिफ़जाह के सर करने के वास्ते दखन को जाने लगा तो उसे साथ लेता गया। लेकिन जब आगरे से कुछ आगे बढ़ा तो एक आदमीने, जो पहले से सिखलाया पढ़ाया हुआ था, हुसैन-अली का काम तमाम किया। मुहम्मद शाह ने दिल्ली में लौट आकर, अब्दुल्लाह को लड़ाई में शिकस्त दे क़ैद कर लिया। इसके बाद विज़ारत के लिये आसिफ़जाह बुलाया गया। परन्तु आसिफ़जाह ने दिल्लीमें आकर जब देखा कि बादशाह ऐय्याशी में डूबा हुआ है, और राजकाज से बिल्कुल ग़ाफ़िल है, तो विज़ारत से इस्तीफ़ा दे अपनी हुकूमत पर दखन को लौट गया। इसी ख़यालसे इस वक़्त मुहम्मद शाह का एक और वज़ीर सआदतख़ां भी विज़ारत छोड़ कर अवध में चला गया। दोनों वज़ीरों ने अपने ठिकाने पर जा एक एक स्वाधीन राज क़ाइम किया। आसिफ़जाहकी औलाद में निज़ाम के नामसे आज तक नव्वाबी चली आती है। सआदतख़ां की औलाद भी अवध में बराबर राज करती रही—आख़िरी नव्वाब वाजिदअली

शाह १८५६ ई०में अपनी सल्तनत से बेदख़ल हो कर कलकत्ते में रहते हैं।

आसिफ़जाह ने दिल्ली से लौट आकर राजधानी अपनी हैदराबाद में क़ाइम की। इस वक़्त यहां मरहटों की बड़ी चढ़ी बढ़ी थी। बालाजी विश्वनाथ नाम एक ब्राह्मण राजा साहू का "पेशवा" यानी प्रधान मन्त्री था। यह पेशवाईका ओहदा पुश्तैनी हुआ करता था। ख़ैर, पहले सय्यिद हुसैन के जिस सुलहनामे को फ़र्रुख़सियर ने नामंज़ूर कर दिया था, बालाजी ने उसे बड़ी चतुराई के साथ मुहम्मद शाह से मंज़ूर करा लिया। और इसी सुलहनामे के मुताबिक़ चौथ और चौथ बाद देकर राजकी आमदनी का दसवां हिस्सा तमाम तहसीलने लगे। १७२० ई० में बालाजी के परलोक सिधारने पर उस का बेटा बाजीराव पेशवाई के ओहदे पर मुक़र्रर हुआ। इसने तो दिल्ली के बादशाह ही पर चढ़ाव करने का मन्सूबा बांधा। और इसी इरादेसे वह मालवे में लूट मार करता हुआ गुजरात में जा चौथ तहसीलने लगा।

आसिफ़जाह ने ख़याल किया था कि थोड़े बहुत कुछ रुपये दे देने से चौथ और "सरदशमुखी" (यानी राज की आमदनी का दसवां हिस्सा) से बरी कर दिये जायेंगे। परन्तु यह जब होने न पाया, तो क्या उज़्र पेश किया कि दूसरे शिवाजी के मरने बाद साहूका सौतेला भाई भी उस की जगह पर राज करता है— फिर यह चौथ वग़ैरह पर दोनों में से किस का हक़ है, पहले इसका तस्फ़ीया हो जाना चाहिये। इस बात के सुनते ही साहू और बाजीराव दोनों नीले पीले

हुए, और दोनों ने आसिफ़ज़ाह के इलाक़े पर चढ़ाई की। आफ़िज़ाह ने शंभूजी से मिल कर इन्हें रोकना चाहा। परन्तु साहू ने इतना हैरान कर मारा कि आख़िर लाचार हो कर साहू से आसिफ़ज़ाह को सुलह कर लेनी पड़ी ।

मरहटों में पेशवा की तरह राजप्रतिनिधि का भी एक बड़ा ओहदा था। इसी प्रतिनिधि ने एक बार शंभूजी को घेर कर पूरी शिकस्त दी, और यह इक़रार करा लिया कि साहू मरहटों की रियासतों में तमाम राज करेगा, और शंभूजी सिर्फ़ कोलापुर के आस पास ज़िलों का राजा रहेगा। साहू और शंभूजी में इस तौर पर सुलह हो जाने पर आसिफ़ज़ाह ने बाजीराव के ज़ोर घटाने की दूसरी तदबीर सोची। मरहटों में पेशवा और प्रतिनिधि की तरह सेनापति का ओहदा भी मौरूसी हुआ करता था। इस समय सेनापति दबारी के ज़ोर से गुजरात मरहटों के दख़ल में आया। आसिफ़ज़ाह ने क्या किया कि बाजीराव और दबारी दोनों को आपस में लड़ा दिया। आख़िरकार खुलमखुला लड़ाई की नौबत पहुंची। शिवाजी के बाद मरहटों में बाजीराव से बढ़ कर चालाक और तेज़ कोई पैदा न हुआ। लड़ाई में बाजीराव ने फ़तह पाई, और दबारी मारा गया। बाजीराव ने इस घड़ी नरमी से काम लिया, यानी सेनापति का ओहदा दबारी के दूध पीते बच्चे ही को दिया, और गुजरात के ख़ज़ाने की आधी तहसील लेने का हुक्म दिया (१७३१)। और पीलाजी गायकवाड़ को उसका नाइब मुक़र्रर कर गुजरात का इन्तिज़ाम उसके सुपुर्द किया।

बड़ोदे का राज आज तक इसीके घराने में है।

बाजीराव ने ऊदाजी पवार, मलहार राव होलकर, और रानाजी सिन्धिया नाम तीन आदमियों को ऊंचे ऊंचे ओहदों पर मुक़र्रर किया था। ऊदाजी पवार को धारवाड़ का राज मिला। मलहरराव होलकर के घरानेवाले इन्दौर में, और रानाजी सिन्धिया के घरानेवाले गोवालियर में आज तक राज करते हैं। इन दोनों राजों को यथाक्रम होलकर और सिन्धिया का राज कहते हैं।

दवारी के मारे जाने पर बाजीराव और आसिफ़जाह में सुलह हो गई, और दोनों ने एक दूसरे की मदद देने का वादा किया।

१७३२ ई० में बुन्देलखंड के किसी राजा ने मालवा के सूबदार मुहम्मदख़ां से सताये जाने के बाइस बाजीराव की शरण ली थी। बाजीराव के मुहम्मदख़ां को उस के राज से निकाल बाहर करने पर उस ने बाजीराव की इस इहसान के बदले पहले तो सिर्फ़ झांसी का राज दिया, फिर मरते समय सारा बुन्देलखंड सौंप गया।

मुहम्मदख़ां के बाद जयपुर का राजा २रा जयसिंह मालवा का सूबदार मुक़र्रर किया गया। यह विज्ञान शास्त्र का बड़ा उत्साही था। इसी के वक़्त में बनारस का मानमन्दिर और वहां के उम्दे उम्दे ज्योतिष के यन्त्र बनवाये गये थे। विद्यामें जैसा यह निपुण था लड़ाई में वैसा न था। इस ने जब देखा कि मरहटों से लड़ कर फ़तह उठाना मुश्किल है तो मालवा बाजीराव के हवाले कर दिया। मरहटों की

ज़ोरावरी देख कर मुहम्मद शाह ने भी इस बात पर उज़्र न किया। परन्तु पेशवा को मालवा पाने पर भी सन्तोष न हुआ। मुहम्मद शाह को तंग करना शुरू किया। निदान मुहम्मद शाह ने सुलह का पैग़ाम भेजा। लेकिन बाजीराव ने ऐसी कड़ी कड़ी शर्तें रखनी चाहीं, कि मुहम्मद शाह राज़ी न हो सका। परन्तु रोज़ रोज़ उसका तो ज़ोर घटता जाता था और मरहटों का बढ़ता जाता था। मरहटों की इस तरक्की को देख आसिफ़जाह भी सख़्त घबराया हुआ था, पस मुहम्मद शाह के बुलाने पर दिल्ली को तुरत चला गया, और सेनापति मुक़र्रर हो कर मरहटों से लड़ने तो आया, परन्तु कुछ कर न सका। मरहटों ने उसकी फ़ौजों को तीन तेरह कर दिया। आख़िरकार १७३८ में वह पेशवा से सुलह कर लेने को मजबूर हुआ। शर्त सुलह की यह हुई—चम्बल नदी के दक्खिन सब ज़मीनें और बादशाही ख़ज़ाने से ५० लाख रुपये मरहटों को दिये जावें। इस सुलहनामे के मुवाफ़िक़ कामों के बर्ताव होने के पेश्तर ही नादिर शाह ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की।

नादिर शाह कास्पियन समुद्र के किनारे रहने वाला एक चरवाहों की क़ौम का था। १७२२ में जब अफ़ग़ानों ने ईरान की सल्तनत तबाह कर डाली थी उस वक़्त ईरान के शाह का तहमास्प नाम एक लड़का दुश्मनों से जान बचा कर उन चरवाहों की पनाह में गया था। इसी वक़्त बहादुर नादिर ने कुछ आदमियों को इकट्ठा कर और ईरान में जा अफ़ग़ानों को मार भगाया। नादिर ने पहले तो तहमास्प ही को तख़्त पर बिठाया, फिर १७३६ ई० में उसे तख़्त

से उतार आप ईरान का बादशाह हुआ। इस के बाद उसने हिरात और कन्दहार दख़ल किया, और हिन्दुस्तान के बादशाह को पहले तो एक चिट्ठी लिखी, फिर एक हर्कारे से अपने कई एक अफ़ग़ानी दुश्मनों की गिरफ़्तारी के वास्ते कहला भेजा। परन्तु जब चिट्ठी का जवाब नहीं गया, और हर्कारा मारा गया, तो नादिर के गुस्से की हद न रही, हिन्दुस्तान की तरफ़ मुड़ा और दिल्ली से ५० कोस दूर कर्नाल में आ छावनी डाली। (१७३८)।

मुहम्मद शाह अब तक बेख़बर था। आसिफ़जाह और सआदतख़ां पर दग़ाबाज़ी का शक पैदा हुआ था। जब नादिर शाह के कर्नाल तक पहुंच जाने की ख़बर पहुंची, तो बड़ी घबराहट पड़ गई। आख़िरकार कर्नाल में लड़ाई हुई, परन्तु नादिर ने जय पाई। और मुहम्मद शाह ने सरदारों समेत अपने तईं नादिर के हवाले किया। नादिर मुहम्मद शाह के साथ दिल्ली के क़िले में दाख़िल हुआ। दूसरे ही दिन शहरवालों ने क्या हवाई उड़ाई कि नादिर शाह मर गया, और फिर बदमाशों ने ईरानियों को क़त्ल करना शुरू किया। नादिर शाह इस ख़बर को सुन कर नीला पीला हुआ, और आम क़त्ल और लूट मार करने का हुक्म सुनाया। सुबह से कुछ दिन चढ़े तक यह हुक्म क़ाइम रहा। फिर मुहम्मद शाह के कहने से क़त्ल की मौक़ूफ़ी का हुक्म हुआ। इस के कुछ दिनों के बाद नादिर शाह शाहजहान का तख़्त-ताऊस और ३० करोड़ के लगभग नक़द रुपये लेकर देस को लौट गया।

जाते वक्त उसने मुहम्मद शाह को तख़्त पर फिर क़ाइम करके एक श्रीहदनामा लिखा लिया कि जिसकी रू से सिंध नदी के पश्चिम तमाम मुल्क ईरानकी सल्तनत के मातहत हुआ।

नादिर शाह की चढ़ाई के बाद दिल्ली और दिल्ली के बादशाह ऐसी बुरी दशा को पहुंच गये थे कि अगर मरहटे ज़रा भी जी पर लाते तो सारा हिन्दुस्तान अपने अधीन कर लेते। परन्तु इस वक्त इनके यहां घर ही में लड़ाई की आग ऐसी भड़की हुई थी, कि बाहर निकलने की कब फ़ुर्सत मिलती थी?—जिस तरह ऊपर बयान हुआ है उससे मालूम होता है कि बाजीराव पेशवा ने धीरे धीरे साहू के सब इख़्तियार अपने हाथ कर लिये थे। इसी कारण से वह बहुतेरों की आंखों में कांटा सा गड़ने लगा। पहले पहल परशुजी भोंसले ही ने, जो एक बड़े ओहदे पर मुक़र्रर था, और जिस के सुपुर्द बराड़ के चौथ वसूल करने का काम हुआ था, गुजरात के गायकवाड़ से मिल कर बाजीराव को उखाड़ना चाहा, परन्तु सफल न हो सका। इस के बाद १७४० ई० में बाजीराव की वफ़ात हुई। बाजीराव के तीन बेटे थे,—बड़े का नाम बालाजी पेशवा था। हरचंद वह बाप सा सिपाही और बहादुर न था, ताहम एक बारगी डरपोक भी न था। परशुजी का उत्तराधिकारी रघुजी भोंसले वग़ैरह प्रधान आदमियों के रोक टोक करने पर भी वह सब बखेड़ों को दूर कर के अपने ओहदे पर जम के बैठ गया। इसके बाद उसने बादशाह को उस सुलहनामे के

मुताबिक चलने को मजबूर किया, जिसे आसिफजाह ने नादिर की चढ़ाई के पहले बादशाह की तरफ़से तामील किया था। इस समय रघुजी के एक सेनापती भास्कर पंडित ने पीछे खुद रघुजी ने भी जब बंगाले में उपद्रव* मचाने शुरू किये, तो बंगाले के नव्वाब अलीवर्दी खां ने बादशाह से मदद मांग भेजी। बादशाह ने बालाजी को कहला भेजा कि "अगर तुम रघुजी को बंगाले में उपद्रव करने को मना कर दो तो तुम्हें बंगाले की आमदनी में से ११ लाख रुपये और मालवे की हुकूमत देंगे।" बालाजी बंगाले में जा रघुजी को निकाल बाहर कर उस वक्त की राजधानी मुर्शिदाबाद के ख़ज़ाने से ११ लाख रुपये ले कर मालवा होता हुआ सितारे को चला गया।

कुछ दिनों के बाद रघुजी बालाजी की राय से चौथ वसूल करने को फिर बंगाले में गया। बूढ़ा अलीवर्दी बड़ी बहादुरी के साथ १० बरस तक बराबर मरहटों से लड़ा, आख़िरकार जब थक गया तो १७५१ में रघुजी से इस शर्त पर सुलह करके निचिन्त हो गया कि सालाना १२ लाख रुपये बतौर चौथ के और सूबे उड़ेसे का सारा राज पाने पर मरहटे बंगाले में फिर न आयेंगे।

इसी वक्त साहू ने इन्तिकाल किया। इसे लड़का बाला कोई न था। इस राज पर कोलापुर के राजा का हक था, परन्तु उसने न पाया। २रे शिवाजी का बेटा राम, साहू के सिंहासन पर, बिठाया गया।

---

*इन ही उपद्रवों को "बरगी" के उपद्रव कहते हैं।

इधर ईरान के बादशाह नादिर शाह के मरने पर अहमद-अब्दाली नाम एक आदमी उसकी फ़ौज का सरदार अफ़गा-निस्तान का स्वाधीन राजा हो गया था। मुहम्मद शाह को कमज़ोर पा कर उस से लड़ने के इरादे से अहमद अब्दाली चला आता था कि राह में सरहिन्द के पास उसकी फ़ौज ने बिगड़ कर उसे शिकस्त दे निकाल बाहर किया (१७४८)। मुहम्मद शाह इसी साल परलोक को सिधारा।

अहमद शाह।

१७४८—१७५४।

मुहम्मद शाह के मरने पर उसका बेटा अहमद शाह तख़्त पर बैठा। इसने सआदतखां के बेटे सफ़दर जंग को अपना वज़ीर मुक़र्रर किया। पहले ही से रोहिले नाम पठान क़ौम के बहुत से लोग दिल्ली की सल्तनत में काम करते करते बड़े ज़ोरावर हो गये थे। इस समय इन में से एक सरदार अली मुहम्मद सारे रोहिलखंड का राजा हो गया था। मुहम्मद शाह ने १७४५ ई० में इसे शिकस्त दे सूबे सरहिन्द की हाकिमी दी थी। परन्तु इस के बाद रो-हिलों ने फिर रोहिलखंड ले लिया। अहमद शाह के वज़ीर सफ़दर जंग को रोहिलों से लाग पड़ गई थी। यह रोहिलों की जड़ मूल से उखाड़ने के वास्ते जी जान से उनके पीछे पड़ा। परन्तु जब कई एक लड़ाइयों में सफ़दर जंगने ताबड़-

तोड़ शिकस्तें खाईं, और ग़नीम ने लखनऊ घेर लिया तब तो सफ़दर जंग के चिहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं, निदान मरहटी फ़ौजों के सरदार सिन्धिया और होलकर की शरण ली। बारे इनकी मदद से रोहिले सर हुए (१७५१)।

सफ़दर जंग जब रोहिलों के साथ लड़ाई में मशगूल था, उस वक़्त अफ़ग़ानों का सरदार अहमद अब्दाली फिर पंजाब पर चढ़ आया था, और बादशाह ने पंजाब उस के हवाले कर सुलह कर ली थी। सफ़दर जंग इस सुलहनामे से नाख़ुश हुआ, और विज़ारत से इस्तीफ़ा दे अवध की तरफ़ अपनी सूबदारी पर चला गया। इसी वक़्त से अवध स्वाधीन हुआ (१७५२)।

सफ़दर जंग के बाद आसिफ़शाह का पोता ग़ाज़ीउद्दीन वज़ीर हुआ। इसने १७५४ में अहमद शाह की आंखें निकलवा कर क़ैद कर लिया, और बादशाही घराने के एक दूसरे आदमी को तख़्त पर बिठाया।

२रा आलमगीर।

१७५४—१७५९।

इस नये बादशाह का नाम २रा आलमगीर रक्खा गया। इन दिनों दिल्ली सल्तनत की दशा पहले सिरे की बुरी हो गई थी। गुजरात, बंगाला, बिहार, उड़ेसा, अवध, रोहिलखंड, पंजाब, हैदराबाद, महाराष्ट्र, और कर्नाटक, ये सब

सूबे इस समय दिल्ली से छूट छूट कर स्वाधीन हो हो गये थे। इस समय तक सिक्ख भी खूब बढ़ गये थे। जाटों ने अलग ही भरतपुर में राजधानी बना अपना राज क़ाइम कर लिया था। और इस समय जब ग़ाज़ीउद्दीन ने पंजाब ले लेने का इरादा किया तो दिल्ली सल्तनत की कमबख़्ती हद को पहुंच गई।

ग़ाज़ीउद्दीन को धोखा दे कर पंजाब दख़्ल कर लेने से उस सूबे का असल मालिक अहमद अब्दाली नीला पीला हुआ, और फ़ौजों के साथ दिल्ली पर चढ़ आया। नादिर शाह सा दिल्लीवालों की जान और माल छीनता खसोटता एक शहज़ादी से शादी कर अपने देस को लौट गया (१७५७)। बादशाह के कहने से ग़ाज़ीउद्दीन को दबाने के लिये वह एक रुहेले को सेनापति मुक़र्रर करता गया। परन्तु ज्यों ही अहमद यहां से गया कि ग़ाज़ीउद्दीन ने मरहटों की मदद से उसे निकाल बाहर कर सारा इन्तिज़ाम सल्तनत का अपने हाथ कर के बादशाहत को अच्छी तरह अपने पंजे में कर लिया। उधर मरहटे पंजाब दख़्ल कर के अपने देस को लौट गये।

इस के बाद मरहटों ने अवध पर चढ़ाई करने और दिल्ली की बादशाहत छीन लेने का मंसूबा किया। इन दिनों जैसे ये चढ़े बढ़े थे, उससे उनका ऐसा मंसूबा बांधना बिल्कुल ख़याली पुलाव पकाना ही नहीं मालूम होता था। परन्तु कई एक मुसल्मान सूबदारों ने, मरहटों की इताअत क़बूल करने से बचने के लिये, अहमद शाह दुर्रानी (अहमद

अब्दाली) को फिर बुलाया। इसने आकर सिंधिया और होलकर की फौजों को शिकस्त दी। इस अर्से में गाज़ीउद्दीन ने आलमगीर को मार कर शाहजहान नाम जिस आदमी को बादशाही ताज पहनाया, उसे और किसी ने बादशाह नहीं माना।—पस आलमगीर का बेटा शाहआलम ही बादशाह हुआ (१७५८)।

२रा शाह आलम।

शाह आलम (अलीगुहर) मुग़ल घराने का आख़िरी बादशाह हुआ। बाप के क़त्ल के समय यह बंगाले में था। इस के राज का पूरा हाल अंगरेज़ों की सल्तनत में अच्छी तरह बयान किया जायगा।

सिन्धिया और होलकर की फौजें हार जाने से मरहटों का जी छूटा नहीं, बल्कि उसी वक़्त से अहमद शाह दुर्रानी के मुक़ाबले के लिये पूरा सामान इकट्ठा करने में मशग़ूल हुए। बारे थोड़े ही दिनों के बाद बालाजी पेशवा के भतीजे सदाशिव राव भाऊ और पेशवा के बेटे विश्वनाथ १ लाख ४० हज़ार सिपाही साथ ले दिल्ली की तरफ़ रवाना हुए, और दिल्ली को दख़ल कर वहां के सब माल असबाब तसर्रुफ़ कर गये (१७६०)। अगर अहमद शाह से लड़ना न होता तो मरहटों की सलाह थी कि विश्वनाथ राव को इसी समय दिल्ली के तख़्त पर बिठाइये। अहमद शाह इस वक़्त अवध में नव्वाब शुजाउद्दौला से सलाह लेता था। उसने एक बार

इधर ही से मरहटों की फ़ौज पर हल्ला किया। मरहटों ने वहां से हट कर पानीपत में अपने मोर्चे क़ाइम किये, फिर यहीं अहमद शाह दूर्रानी से लड़ाई शुरू हुई। उस समय मरहटों के पास कुल ७० हज़ार सवार, १५ हज़ार पैदल सिपाही बच गये थे, और दो सौ तोपें थीं। अहमद शाह के पास भी ५३ हज़ार सवार, ३८ हज़ार पैदल सिपाही, और ३० तोपें मौजूद थीं। निदान सदाशिव राव के घमंड से मरहटों ने इस लड़ाई में (१७६१) शिकस्त खाई, और सदाशिव और विश्वनाथ के गिरफ़्तार हो कर मारे जाने से सारी फ़ौज इनकी तितिर बितिर हो गई। इस शिकस्त की ख़बर जब दखन पहुंची, तो सारे महाराष्ट्र देश में वावैला पड़ गया, इसी के ग़म में बालाजी की जान गई। लड़ाई के हारने से मरहटों ने सदा के लिये हिम्मत हार दी, और इसी समय से इनकी घटन्ती शुरू हुई।

अहमद शाह चाहता तो इस समय दिल्ली का बादशाह बन जाता, परन्तु न मालूम क्यों वह सीधा अपने वतन को लौट गया। शाहआलम इस समय बंगाले में अंगरेज़ों से लड़ने की फ़िक्र में था। परन्तु सच पूछो तो इस समय हिन्दुस्तान के असल बादशाह अंगरेज़ ही थे॥ पस अब लौर्ड लिटन की सल्तनत तक अंगरेज़ों ही के बारे में लिखा जायगा।

सातवां अध्याय।



युरोपियनों का हिन्दुस्तान में आना।

हिन्दुस्तान बहुत पुराने समय से धन और सभ्यता के लिये प्रसिद्ध है। नामी हिरोडोटस के लिखे यूनानियों के पुराने इतिहासों में भी हिन्दुस्तान का ज़िक्र पाया जाता है। यह बात अभी तक दरयाफ़्त नहीं हुई है कि मसोडन के बादशाह सिकन्दर के पहले कोई युरोपियन हिन्दुस्तान में आया या नहीं। सिकन्दर के यहां से लौट जाने के बहुत दिनों के बाद युरोपियन लोग धीरे धीरे तिज़ारत के वास्ते यहां आया करते थे, परन्तु इस के पहले भी मिस्र, अरब, और फ़िनिशिया वग़ैरह देशों के सौदागर इस देश में सौदागरी करने आते थे। युरोपियनों में सब से पहले मालूम होता है कि शायद रोम ही वाले सौदागरी के वास्ते यहां आये।

सन १४९८ ई० में वास्कोडीगामा नाम एक पुर्तगीज़ तीन जहाज़ों के साथ उत्तमाशा अन्तरीप से घूम कर इस देश में आया था, मलावार के किनारे कल्लीकोट शहर में

उतरा था। उस समय दिल्ली का बादशाह सिकन्दर लोदी था और कल्लीकोट में राजा ज़मोरिन राज करता था। ज़मोरिन पहले तो पुर्तगीज़ों से बड़े भावभाव के साथ पेश आया, परन्तु अरब और मिस्र वाले सौदागरों ने, जो मूर कहलाते थे, बहका कर राजा का दिल पुर्तगीज़ों की तरफ़ से फेर दिया। निदान दोनों में लड़ाई होने की नौबत पहुंची। इसके बाद जब पुर्तगाल से लोग धीरे धीरे हज़ारों यहां आ गये, और जब पुर्तगीज़ों का पाया हिन्दुस्तान में अच्छी तरह जम गया, तो देसी राजाओं और दूसरे दूसरे लोगों की अमलदारियों पर भी ये हाथ फैलाने लगे। फिर इन्हों ने कई एक जगहें तिजारत की कोठियां खोलीं। गोवा को सदर मक़ाम मुक़र्रर किया। इस के अलावह बंगाले के दरमयान हुगली में एक, और अराकान में दो कोठियां, खोलीं। और ईरान में अर्मज़, और सिंहल आदि देशों में और हिन्दमहासागर के प्रायः सब टापुओं में तमाम सौदागरी ऐसी फैलाई कि हिन्दमहासागर में चक्रवर्ती राज करने लगे। १६वीं सदीके अन्त तक तो इनका यह निष्कंटक राज बना रहा, परन्तु फिर वलन्देज़, दिनामार, अंगरेज़, और फ़रासीसियों के आने से पुर्तगीज़ लोग बहुत दब गये।

पुर्तगीज़ों की चढ़ी बढ़ी सौदागरी के हाल सुन कर वलन्देज़ों से न रहा गया। ये भी १५९५ ई० में जहाज़ ले कर हिन्दमहासागर में आये, और जावा, सुमात्रा वग़ैरह टापुओं से सौदागरी करने लगे। थोड़े ही दिनों के अर्से में

इन्हों ने पुर्तगीज़ों के भी कान काटे। उन को लड़ाइयों में हरा हरा कर उन की कई एक कोठियां छीन छीन लीं। एक कोठी इन्हों ने चुंचुड़ा शहर में, जो बंगाले में है, खोली, जिसकी १७वीं सदी के अन्त में किलेबंदी भी कर ली। १८२४ ई० तक चुंचुड़ा वलन्देज़ों ही के दखल में था, कि जब अंगरेज़ों ने सुमात्रा टापू के एक शहर को दे कर चुंचुड़ा बदल लिया।

१७वीं सदी के शुरू में दिनामारों ने भी हिन्दुस्तान में आ कर दखन के दरमयान ट्रांकुइबार में और बंगाले के दरमयान श्रीरामपुर में एक एक कोठी खोली थी। तब से श्रीरामपुर बराबर इन ही के हाथ में रहा। १८१२ में इसे अंगरेज़ों ने ख़रीद लिया।

सन १६०० में इंगलिस्तान के कई एक सौदागरों ने चाहा कि साझा करके कुछ रुपये जमा कीजिये, और महारानी एलिज़ाबथ से सनद ले हिन्दुस्तान की सौदागरी कीजिये। बारे इन्हों ने वैसा ही किया, और अपनी मंडली का नाम "ईस्ट इन्डिया कम्पनी" रक्खा। यह अधिकार पहले पहल तो इन को कुल पन्द्रह ही बरसों के लिये दिया गया था, पीछे जब जब चाहा मुद्दत बढ़वा बढ़वा ली। इस कम्पनी ने अपने कारोबार के प्रबन्ध के लिये एक सभा नियत की जिस का नाम "कोर्ट औफ़ डिरेक्टर्स" रक्खा था। इस सभा में २ मेम्बर और १ सभापति नियत किये गये। सन १६०१ में कप्तान लैंकैस्टर ने कम्पनी के ५ जहाज़ साथ ले सुमात्रा टापू में उतर कर एक कोठी खोली। इस के बाद धीरे धीरे कम्पनी के और जहाज़ों के आने से सुमात्रा

और आसपास के टापुओं में कम्पनी की सौदागरी जल्द ही जम गई। पुर्तगीज़ इससे अपना हर्ज समझ के अंगरेज़ों से लड़ बैठे, परन्तु शिकस्त खा गये।

इसके बाद अंगरेज़ों ने धीरे धीरे पिप्ली, मछलीबन्दर, सूरत, कल्लीकोट, हुगली, क़ासिमबाज़ार, पटना वग़ैरह कई एक शहरों में अपनी कोठियां खोल दीं। इसी सूरत की कोठी के डौक्टर ब्राउटन ने १६३८ ई० में शाहजहान की किसी बीमार बेटी का इलाज किया, और कृपा भगवान की, कि वह चंगी हो गई। बादशाह बहुत ख़ुश हुआ, और डौक्टर ने कम्पनी के वास्ते हिन्दुस्तान में सौदागरी करने के लिये जो जो अधिकार मांगे, बादशाह ने सब क़बूल कर लिया। इसी इलाज के सबब से बंगाले के नव्वाब शाह शुजा के ज़रीये से भी कम्पनी को सौदागरी के बहुतेरे सुबीते हुए।

सन १६४० में विजयनगर के राजा ने अंगरेज़ों को बुला कर अपने राज में क़िलेबन्दी करके एक कोठी खोलने का हुक्म दिया। इस क़िले का नाम "सेन्ट जौर्ज" रक्खा गया। यही मंदराज शहर की नेव पड़ी। १६५३ में यह शहर एक प्रेसिडेन्सी यानी करमंडल कनारों की सौदागरी के लिये प्रधान जगह मुक़र्रर की गई।

सन १६६२ में इंगलैन्ड के बादशाह २रे चार्ल्स ने पुर्तगाल के राजाकी बेटीसे ब्याह कर बम्बई शहर दहेज़ में पाया। उसने १६६८ में इसे कम्पनी को दे डाला। कम्पनी ने इस शहर को पच्छिम किनारों की

सौदागरी के वास्ते प्रधान जगह (प्रेसिडेन्सी) बनाया।

सन १६९६ में अंगरेज़ों ने बादशाह औरंगज़ेब के बेटे आज़म से कलकत्ता, सूतानुटी, और गोविन्दपुर तीन गांव ख़रीदे, और वहां एक कोठी खोली। सन १६९८ में यह कोठी फ़ोर्ट वीलियम नाम क़िले की क़ैद में कर ली गई। १७१५ में यह शहर भी एक अलग प्रेसिडेन्सी क़ाइम किया गया।

इसी तरह ईस्ट इन्डिया कम्पनी की तिजारत हिन्दुस्तान में कई एक जगह होने लगी। फिर इंगलैन्ड के राजा २रे चार्ल्स ने सौदागरों की एक और मंडली को उसी तरह हिन्दुस्ताने में तिजारत करने की सनद दी। इन दोनों कम्पनियों के आपस में अक्सर छेड़छाड़ और लड़ाई झगड़े भी हुआ करते थे। इससे दोनों को हर्ज पहुंचने लगा। निदान सन १७०८ में दोनों कम्पनियां मिल गईं, और "यूनाईटेड ईस्ट इन्डिया कम्पनी" के नाम से प्रसिद्ध हुईं। यह मिली कम्पनी बंगाले के नव्वाब के साथ कभी मिल मिल कर और कभी बिगड़ कर, बहुत दिनों तक इस देश में सौदागरी किया की। मरहटों के उपद्रवों से बचने के लिये सन १७४२ में कलकत्ते की चारों तरफ़ "मरहटी खाई" नाम एक खाई तय्यार कराई गई। इस समय कलकत्ता, मंदराज, और बम्बई में एक एक अदालत क़ाइम हुई, थोड़ी बहुत फ़ौज रखने का प्रबन्ध किया गया। इन ही फ़ौजों से अंगरेज़ों की दुश्मनों से अक्सर लड़ने भिड़ने का भी काम पड़ता था। फ़रासीसियों से और

इन से जो लड़ाई हुई थी, उसका हाल आगे लिखा जाता है।

फ़रासीसी सन १६०४ ई० में यहां सौदागरी करने आये। और मुरिश बोर्बो वगैरह टापुओं में बहुत दिनों तक सौदागरी करने के बाद सूरत शहर में एक कोठी खोली (१६६४)। इस के बाद सन १६७४ में पटुचेरी और सन १६८८ में चन्दननगर उन की सौदारी की प्रधान जगहें हुईं। इन के सिवा माही, कारीकोल वगैरह और भी कई एक जगहों में उन की कोठियां खोली गई थीं। मगर इन सब में पटुचेरीवाली कोठी सब से बढ़ी चढ़ी थी।

कर्नाटक की लड़ाई।

सन १७४४ में युरोप में अंगरेज़ और फरासीसियों में लड़ाई शुरू होने पर हिन्दुस्तान में भी इन दोनों क़ौमों ने आपस में लड़ना शुरू किया। लड़ाई के शुरू में मुरिश और बोर्बो टापुओं का हाकिम लाबेर्डोने ने अंगरेज़ों के मंदराज शहर को घेर कर ले लिया, और पटुचेरी के हाकिम डुप्ले ने अंगरेज़ों को बहुत दबाना शुरू किया। अंगरेज़ों ने भी चाहा कि पटुचेरी दख़ल कर लेवें, परन्तु सफल न हुए। इस के बाद सन १७४८ में, जब युरोप में इन दोनों क़ौमों में सुलह हो गई, तब यहां के भी लड़ाई झगड़े तय पा गये।

उसी साल निज़ाम घराने का आदि पुरुष दखन का निज़ामुल-मुल्क (आसिफ़जाह) के मरने पर तख़्त के वास्ते उस के बेटे नाज़िरजंग और नाती मुज़फ़्फ़रजंग के आपस में तकरार शुरू हुई। और ठीक उसी समय दखन के दरमयान कर्नाटक की नव्वाबी के वास्ते उस समय के वर्तमान नव्वाब अनवरुद्दीन और अगले नव्वाब के दामाद चंन्दासाहिब के भी आपस में लड़ाई शुरू हुई। फ़रासीसियों ने हिन्दुस्तान में अपना अधिकार बढ़ाने के इरादे से इस मौके पर मुज़फ़रजंग और चंदासाहिब की मदद के वास्ते कुछ फ़ौज के साथ बूसी नाम सेनापति को भेजा। बूसी की मदद से जितनी लड़ाइयां हुईं, सब में नाज़िरजंग ने जय पाई, और उस का दुश्मन मुज़फ़रजंग क़ैद हो गया, और कर्नाटक का नव्वाब अनवरुद्दीन मारा गया। परन्तु नाज़िरजंग लड़ाई जीतने पर भी राज का सुख भोगने न पाया। थोड़े ही दिनों के बाद किसी नव्वाब के हाथ से उसके मारे जाने पर फ़रासीसियों ने मुज़फ़रजंग को क़ैद से छुड़ा ला कर निज़ाम के तख़्त पर बिठाया। परन्तु जब कुछ दिनों के बाद मुज़फ़रजंग भी अपनी फ़ौज के हाथ मारा गया, तब फ़रासीसियों ने नाज़िरजंग के भाई सलाबतजंग को तख़्त दिया। इस से इस सल्तनत का बखेड़ा तो निबट गया।

इधर कर्नाटक के नव्वाब अनवरुद्दीन के मारे जाने पर चंदासाहिब ने कर्नाटक की राजधानी को दखल कर लिया। अनवरुद्दीन के बेटे मुहम्मदअलीने अपने बालबच्चे समेत तिरुचिनापली के क़िले में पनाह ली। इस समय तक

अंगरेज़ इन लड़ाइयों से बिलकुल अलग थे, परन्तु जब इन्हों ने देखा कि फ़रासीसियों ने इस लड़ाई में पड़ कर बहुत कुछ देश अधिकार, और इज़्ज़त हासिल की, तो फिर यह कब संभव था कि ये चुपचाप बैठे रहें? इन्हों ने मुहम्मदअली की सहायता के लिये तिरुचिनापली में कुछ फ़ौज भेज दी। चंदासाहिब इस समय फ़रासीसियों की सहायता से तिरुचिनापली को घेरे हुए था। यह शहर चन्दासाहिब के हाथ में आ जाता, अगर अंगरेज़ी फ़ौज का क्लाइव नाम एक बहादुर सिपाही इसे न बचाता।

क्लाइव १८ बरस की उमर में कम्पनी की तरफ़ से मन्द-राज में केरानी के काम पर नियत हो के आया था। यह काम इसके मन के लाइक़ न होने के कारण इसने दो दो बार अपने तईं मार डालना चाहा था, अन्त में केरानी के काम से इस्तीफ़ा दे कर फ़ौज में भरती हुआ। इसी क्लाइव ने इस समय क्या किया कि थोड़ी सी फ़ौज ले जा कर चंदासाहिब की राजधानी अर्काट को घेर के दख़ल कर लिया। पस चंदासाहिब तिरुचिनापली की घेरी हुई फ़ौज का कुछ हिस्सा अपनी राजधानी का शत्रु के हाथ से उद्धार करने के लिये भेज दिया। परन्तु क्लाइव ऐसी बहादुरी के साथ शहर पर क़ब्ज़ा किये रहा, कि चंदासाहिब की फ़ौज से कुछ भी न बन आई, सब के सब नाकाम लौट गये। इस समय मेजर लौरेन्स ने, जो तुरत ही इंगलैन्ड से लौट आया था, क्लाइव को कुमक पहुंचाई, और मुहम्मदअली की सहायता के लिये मैसूर वग़ैरह जगहों से इकट्ठा करके बहुत सी फ़ौजें

भेजीं। निदान अंगरेज़ों ने तिरुत्रिनापली की घेरनेवाली फ़ौज के तईं पूरी शिकस्त दी। फ़रासीसियों ने जब देखा कि जय की कोई आशा बाक़ी न रही, चट अंगरेज़ों से सुलह कर ली। चंदासाहिब क़त्ल कराया गया। मुहम्मदअली को अर्काट की नव्वाबी दी गई। और अंगरेज़ों को सौदागरी के लिये बहुत से अधिकार दिये गये। १७५२।

इस लड़ाई से फ़रासीसी दब तो गये थे, परन्तु झगड़ा एक बारगी मिटने न पाया। सन १७५७ में जब फिर युरोप में दोनों क़ौमों में लड़ाई ठनी तो फिर यहां भी लड़ाई शुरू हुई। इस समय फ़रासीसियों की तरफ़ तो लाली और बूसी और अंगरेज़ों की तरफ़ आयरकूट सेनापती था। इस बार लड़ाई में पहले तो फ़रासीसियों ने जय पाई, परन्तु पीछे शिकस्त खाई, और उनकी प्रधान जगह पटुचेरी अंगरेज़ों के हाथ में आ गई। फिर १७६३ में दोनों क़ौमों में सुलह हो जाने पर फ़रासीसियों को पटुचेरी लौटा दिया गया, पर फिर इस के बाद उनका हिन्दुस्तान में कभी पाया जमने न पाया।

आठवां अध्याय।

बंगाले में दख़ल।

नव्वाब अलीवर्दी ख़ां के बाद उसका नाती सिराजुद्दौला १८ बरस का १७५६ ई० में बंगाला, बिहार, और उड़ीसे का नव्वाब हुआ। इस समय दिल्ली के बादशाह का ज़ोर इतना घट गया था कि नव्वाब सिराजुद्दौला को उससे सनद लेने की ज़रूरत न हुई। जो हो, चंचल और निठुर सिराजुद्दौला नाना के बहुत लाड से ऐसे बुरे सुभावका ज़ालिम और बुरी बातों में आसक्त हो गया था कि उसके उपद्रवों से आदमियों की जान माल और औरतोंका सतीत्व बचाना कठिन हो गया था। यह पहले ही से अंगरेज़ों की उन्नति देख देख के जलता था, अब उन्हें जड़ मूल से उखाड़ने के लिये उनके पीछे पड़ा। इस समय कृष्णादास नाम एक अमीर हिन्दूने इसके अत्याचारों से तंग आ कर कलकत्ते में जा अंगरेज़ों की शरण ली। नव्वाब ने उसे भेज देने का अगरज़ों के पास लिखा। परन्तु अंगरेज़ों ने यह उचित न समझा कि जिसने आ कर अपनी शरण ली, उसे दुश्मन के हवाले करें। इन दिनों अंगरेज़ों को फ़रासीसियों से लड़ाई होने का बड़ा ही खटका था। इसी सबब से वे कलकत्ते में अपने क़िले की मरम्मत करने लगे।

यह ख़बर जब सिराजुद्दौला को पहुंची, तो उस ने क़िले की मरम्मत मौक़ूफ़ रखने को लिख भेजा, पर अंगरेज़ों ने न सुना। इन ही दो कारणों से नव्वाब ने अंगरेज़ों से लड़ने की तय्यारी की, और क़ासिमबाज़ार की कोठियां लूट कर के फ़ौज के साथ कलकत्ते में पहुंच कर उन पर चढ़ाई की। इस समय कलकत्ते में अंगरेज़ों के पास बहुत ही थोड़े सिपाही थे। नव्वाब ने उन्हें शिकस्त दे क़िला ख़ाली करा लेने बाद ख़ज़ाना लूट लिया। जिस दिन क़िला फ़तह हुआ था, उस दिन नव्वाब के नौकरों ने क्या किया कि १४६ अंगरेज़ क़ैदियों को एक छोटी सी अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया। उस कोठरी में उस रात को हवा के न आने से और गरमी और प्यास की शिद्दत से उन क़ैदियों में से कुल २३ बचे, बाक़ी सब मर गये। सन १७५६ की १०वीं जून को यह माजरा हुआ था। यह माजरा हिन्दुस्तान मे "काले बिल का क़त्ल" नाम से प्रसिद्ध है।

कलकत्ते की यह ख़बर जब मंदराज पहुंची, तो क्लाइव और वाट्सन साहब देसी और विलायती दोनों मिल कर १ हज़ार के लगभग सिपाही लेकर कलकत्ते को रवाना हुए। कलकत्ते पर फिर अपना क़ब्ज़ा किया। नव्वाब ने यह ख़बर सुन के फिर कलकत्ते पर चढ़ाई की। मगर इस बार क्लाइव से हार मान सुलह करके लौट आया। इस के बाद अंगरेज़ों के निकालने के लिये नव्वाब ने छुपे छुपे फ़रासीसियों से साज़िश की, परन्तु क्लाइव ने सुराग़

लगा कर तुरत फ़रांसडांगा (चन्दननगर) पर चढ़ाई की, और फ़रासीसियों को पूरी शिकस्त दी। नव्वाब के चित्त की चंचलता देख क्लाइव ने बिचारा कि जब तक इस लड़के के हाथ राज रहेगा, अंगरेज़ लोग चैन से बैठने न पायेंगे।

ज़ालिम नव्वाब को सिंहासन पर से उतारने के लिये, सेनापति मीरजाफ़र, वज़ीर रायदुर्लभ, ख़ज़ांची जगतसेठ वग़ैरह राज के प्रधान प्रधान आदमियों ने साज़िश की और क्लाइव को बुलाया और क्लाइव ने भी बड़ी ख़ुशी से उनका साथ दिया और एक इक़रारनामा तय्यार किया। इस इक़रारनामे में यह लिखा गया कि मीरजाफ़र की मदद से अगर नव्वाब सिंहासन पर से उतार दिया गया तो वही नव्वाब बनाये जायेंगे, और अंगरेज़ लोग लड़ाई की नुक़सानी पुराने के लिये उन से बहुत धन और कलकत्ते के आस पास की बहुत सी ज़मीन पायेंगे। इन बातों के तय हो लेने पर अमीचंद नाम एक आदमी क्या बोल उठा कि, "हमें अगर तीस लाख रुपये न मिलेंगे तो मैं भंडा फोड़ दूंगा।" उस समय चतुर क्लाइव ने अमीचन्द को जाल इक़रारनामा दिखला के ठंडा किया।

सब बातें जब तय हो हवा गईं, तब क्लाइव ने क़रीब ३ हज़ार सिपाहियों के साथ मुर्शिदाबाद की तरफ़ कूच किया। नव्वाब भी क़रीब ५० हज़ार फ़ौज की भीड़ भाड़ ले कर मुर्शिदाबाद से चला और १२ कोस दक्खिन पलासी के मैदान में क्लाइव की फ़ौज के आमने सामने अपनी छावनी डाली। दूसरे दिन नूरके तड़के लड़ाई शुरू हुई,

और बहुत देर तक ठहरी। दो पहर ढले दगाबाज़ मीर जाफ़र की सलाह से नव्वाब ने लड़ती फ़ौज को ज्यों हो लड़ाई मौकूफ़ करने का हुक्म सुनाया कि फ़ौज तीन तेरह हो गई, और क्लाइव ने पूरी जय पाई। सिराजुद्दौला ने जब कोई उपाय न देखा, बेचारा लाचार ऊंट पर सवार हो अपनी जान ले भागा। ये बातें सन १७५७ ई० की तारीख़ २३वीं जून को हुई। कह सकते हैं कि इसी तारीख़ से हिन्दुस्तान की राज-लक्ष्मी मुसल्मानों के घर से निकल कर अंगरेज़ों के घर सिधारीं। इसके बाद क्लाइव फ़तह के निशान उड़ाता मुर्शिदाबाद गया, और मीरजाफ़र को तख़्त पर बिठाया, और क़रार के मुताबिक़ पहले ही खेप में बहुत से रुपये ले कर कलकत्ते भेजे। उधर सिराजुद्दौला भाग कर बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहने न पाया, भगवानगोले में पकड़ा गया, और मीर जाफ़र के बेटे मीरन के हाथ मुर्शिदाबाद में मारा गया।

मीर जाफ़र—क्लाइव।

इसके बाद ही लन्डन की डिरेक्टर सभाने खुश हो कर क्लाइव को कलकत्ते की गवर्नरी दी। सन १७५९ में जब मीर जाफ़र ने सुना कि शहज़ादा अलीगुहर (शाहआलम) उस से लड़ने को चढ़ आया है, और पटना घेरे हुए है, तो डरा, और क्लाइव की शरण ली। क्लाइव ने झट फ़ौज भेज कर शहज़ादे की फ़ौजों को मार भगाया। इस कामके

बदले में मीरजाफ़र ने क्लाइव को एक ऐसी जागीर दी, कि ज़िसकी सालाना आमदनी ३० लाख रुपयों के लगभग थी। दखन में उत्तर-सरकार का इलाका फ़रासीसियों के दख़ल में था। इन्हें वहां से निकालने के लिये अगले साल यानी सन १७५८ में कर्नल फ़ोर्ड भेजा गया था, जो एक तरह से सफल हो आया था। इन बातों के देखने सुनने से लोगों ने समझ लिया कि जो कुछ है सो क्लाइव है,— मीर जाफ़र नाम का नव्वाब है। नव्वाब आप भी क्लाइव का इतना अधिकार देख कर जलने लगा। पस इस के ज़ोर तोड़ने के इरादे से चुंचुड़े के वलंदेज़ों से ख़त किताबत शुरू की। क्लाइव ने भी झट फ़ौज के साथ कर्नल फ़ोर्ड को चुंचुड़े भेज दिया। वलंदेज़ों ने शिकस्त खाई, और अंगरेज़ों ने जैसा कहा वैसाही करना पड़ा। इन कामों को तय करके सन १७६० में क्लाइव अपने देश को लौट गया।

क्लाइव की जगह पर वान्सिटार्ट नियत किया गया। यह क्लाइव सा न चतुर था और न चालाक था। इस समय शाहआलम ने फिर पटने पर चढ़ाई की थी। परन्तु मीरन और कौलियड ने आ कर उसे शिकस्त दे निकाल दिया। यहीं मीरन खेमे में बिजली के गिरने से मर गया। पहले ही से मीरजाफ़र अंगरेज़ों का क़र्ज़दार था। यहकर्ज़ रोज़ रोज़ बढ़ता ही जाता था। अब अमीर के मरने पर राजकाज की बदइन्तिज़ामी से यह क़र्ज़ इतना बढ़ गया कि जिस का अदा होना असंभव मालूम होने लगा। अंगरेज़ों में धन का लालच इधर बहुत बढ़ गया था। पस

अब अंगरेज़ों को सन्तुष्ठ रखना नव्वाब के अधिकार के बाहर हो गया। इसी लिये अंगरेज़ों ने कई एक बहानों से मीर जाफ़र को सिंहासन से उतार दिया, और उसके दामाद मीर क़ासिम को नव्वाब बनाया।

मीर क़ासिम ने इस भलाई के बदले में कम्पनी को इनआम के तौर पर बर्दवान, मेदनीपुर, और चटगांव तीन ज़िले दे डाले, और सब क़र्ज़ अदा कर देने का वादा किया, और कम्पनी के नौकरों को भी खूब पूजा की १७६० ।

मीर क़ासिम बुद्धिमान, चतुर, चालाक, और उत्साही था। उसने तुरत ही राज के ख़र्च घटा और आमदनी का सिल्सिला बांध अंगरेज़ों के सब देन अदा कर दिये। परन्तु अंगरेज़ों को बिलकुल अधीनता उसे पसन्द न थी। इस अधीनता से छुटकारा पाने के इरादे से उस ने अपनी राजधानी मुंगेर में क़ाइम की। और वहीं फ़ौजों की शिक्षा और लड़ाई के उम्दे उम्दे असवाब तय्यार कराने शुरू किये। दिल्ली में कुछ बखेड़ा रहने के सबब से बादशाह शाह आलम अभी तक दिल्ली नहीं गया था—बिहार ही में इधर उधर फिर रहा था। मीर क़ासिम ने इस समय पटने में उसके पास जा २४ लाख रुपये सालाना मालगुज़ारी देना मंज़ूर कर बादशाह से बंगाला बिहार और उड़ैसे की सूबदारी के लिये एक सनद ले ली।

इसके बाद कलकत्ता काउन्सिल और नव्वाब से तकरार शुरू हुई—कारण यह हुआ कि तिजारती माल पर इस देस

के सब ही लोगों को महसूल देना पड़ता था—सिर्फ़ कम्पनी को बादशाही सनद के अनुसार महसूल नहीं लगता था। उन दिनों कम्पनी के नौकर भी तिजारत करते थे। इस समय ये भी अपनी अपनी कश्तियों पर कम्पनी की झंडी लगा बे महसूल दिये अपने अपने माल निकाल ले जाने लगे। नव्वाब के नौकरों को जब इस बात की ख़बर मिली तो रोक टोक की—परन्तु अंगरेज़ सुनेंगे क्या, और भी उलटा उन ही को हर तरह से ज़लील करने लगे। इस से देसियों का बेवपार बिल्कुल मिट्टी में मिल गया। नव्वाब ने बहुतेरा चाहा कि कुछ बन्दोबस्त हो, परन्तु जब किसी तरह से सफल न हुआ, गुस्से में आकर क्या किया कि तिजारती माल का महसूल लेना एक क़लम मौक़ूफ़ कर हुक्म दे दिया कि 'अब किसी के माल पर कुछ महसूल नहीं लिया जायगा'। इस हुक्म से खुद नव्वाब की, कम्पनी की, और कम्पनी के नौकरों की तो नुक़सानी हुई, परन्तु देशियों का बड़ा ही उपकार हुआ। इस बात के लिये कलकत्ते की काउन्सिल में एक बड़ी बहस पेश हुई, और इसी पर इसके मेम्बरों में से बहुतेरे नव्वाब से बिगड़ बैठे।

सब के पहले पटने की कोठी का गुमाश्ता एलिस साहिब नव्वाब से बिगड़ा, परन्तु शिकस्त खा कर साथियों समेत क़ैद हो गया। इस पर कलकत्ते के काउन्सिलवालों ने मीर क़ासिम की माजूली का इश्तिहार दे बूढ़े मीरजाफ़र को फिर नव्वाबी के ओहदे पर बहाल किया। इसके बाद ही लड़ाई शुरू हुई। सूती के पास गढ़िया में मीर क़ासिम

और अंगरेज़ों में एक लड़ाई हुई। इस लड़ाई में मीर क़ासिम की फ़ौज लड़ी तो खूब, परन्तु अन्त को शिकस्त खा गई (१७६३)। इसके बाद जब मुंगेर अंगरेज़ों के हाथ आ गया, तो मीर क़ासिम पटने की तरफ़ भागा और वहां पहुंच कर उसने बड़े निठुरपन के साथ, पटने के पहले हाकिम राजा रामनारायण को, ढाके के पहले हाकिम राजवल्लभ और उसके बेटों को, जगतसेठ के घराने के कई एक लोगों को, और एलिस और उसके साथियों को मरवा डाला। फिर पटना जब अंगरेज़ोंके अधिकारमें आया तो मीर क़ासिम वहां से भागा भागा अवध के नव्वाब की शरण में गया। वहां वह बादशाह शाहआलम से मिला। तीनों मिलकर पटने की तरफ़ चले आते थे, कि रास्ते ही में अंगरेज़ों से शिकस्त खा कर तीन तेरह हो गये। इस समय मेजर मन्रो के सिपाही बिगड़ गये थे, परन्तु तुरत ही सर हो गये। इसके बाद फिर सन १७६४ में अवध के नव्वाब शुजाउद्दौला से बक्सर में लड़ाई हुई। इस में भी अंगरेज़ों ही ने जय पाई, और नव्वाब के बहुत से असबाब छीन लिये। इस लड़ाई के बाद बादशाह शाहआलम ने अंगरेज़ों की छावनी में हाज़िर हो कर अपने सिंहासन पाने के लिये सहायता चाही। इसके बाद अवध के नव्वाब ने फिर एक बार लड़ाई में शिकस्त खा कर अंगरेज़ों की शरण ली। अब तो जिधर देखो उधर ही अंगरेज़ों की जय पताका उड़ रही है।

क्लाइव के पीछे कलकत्ते के काउन्सिल की बुरी दशा हो गई थी। मेम्बरों ने स्वार्थपरता और अत्याचार की सीमा

दिखला दी थी। किस उपाय से खूब धन कमा कर अपने देश में जा बड़े आदमी कहलाइये, सिवा इस बात के किसी का और कोई उद्देश्य न था। सन १७६५ की जनवरी में मीरजाफ़र के मरने पर काउन्सिलवालों ने उस के नाबालिग़ बेटे नुजुमुद्दौला को गद्दी पर बिठा, नज़राने के तौर से बहुत धन लिया। ईस्ट इन्डिया कम्पनी के डिरेक्टर, काउन्सिलवालों के इन ग़ैरवाजिब कामों को सुन सुन कर डरे और इस की दुरुस्ती के वास्ते सिवा क्लाइव के किसी को लाइक़ न पा कर, उसीको फिर इसी साल के मे महीने में हिन्दुस्तान भेजा। क्लाइव ने इंगलैन्ड में बादशाह और वज़ीर वग़ैरह लोगों से बड़ी इज़्ज़त और लौर्ड का ख़िताब पाया था।

लौर्ड क्लाइव (२री बार)।

१७६५—१७६७।

लौर्ड क्लाइव ने आते ही सब से पहले यह प्रबन्ध किया कि कम्पनी के नौकरों का नज़र नज़राना लेना बंद कराया। फिर इलाहाबाद जा कर कर्नाक साहिब की छावनी में उतरे हुए शुजाउद्दौला और शाहआलम से मुलाक़ात की। शुजाउद्दौला के यह प्रतिज्ञा करने पर कि अंगरेज़ों के सदा दोस्त रहेंगे, उसको उसका

राज लौटा दिया गया—सिर्फ़ कोड़ा और इलाहाबाद बादशाह के वास्ते रक्खा गया। इसी समय यानी सन १७६५ के १२वीं अगस्त को बादशाह शाहआलम ने सिर्फ़ २६ लाख रुपये सालाना खिराज मुकर्रर करके कम्पनी को बंगाला, बिहार, और उड़ैसे की दिवानी दे डाली। सच पूछो तो कम्पनी ने पहले ही से राजा का पूरा अधिकार अपने हाथ कर रक्खा था, लेकिन अब बादशाह की सनद पाने से उस को यहां राज करने का आईन के अनुसार वाजिब हक़ पैदा हुआ। इस के बाद मुर्शिदाबाद का नव्वाब सिर्फ़ ५० लाख रुपये सालाना पेन्शन पाने लगा। कम्पनी इस समय तक तो सौदागर थी, परन्तु अब राजकाजके प्रवन्ध की तरफ़ झुकी।

इस के बाद क्लाइव फ़ौज के ख़र्च घटाने में मशगूल हुआ। पहले फ़ौज का यह इन्तिज़ाम था कि सिपाही जब लड़ाई पर जाते थे, तब मुशाहरे से कुछ ज़ियादे पाते थे। और इस ज़ियादे हिस्से को "डब्ल भत्ता" कहते थे। क्लाइव ने डब्ल भत्ता देने का नियम उठा दिया (१७६६)। पहले कम्पनी के सब ही नौकर अपनी अलग अलग तिजारत करते थे—क्लाइव ने इस रीत को भी उठा दिया, और उनका घाटा पुराने के लिये कम्पनी को नमक की तिजारत से जो मुनाफ़ा था, उस में से थोड़ा थोड़ा सब नौकरों को भी देने का नियम रक्खा।

अपने इन कामों को तय करके उसने सन १७६७ में फिर अपने देशको यात्रा की। इसके जारी किये हुए क़ायदों से जिन जिन लोगों का नफ़ा मारा गया था, वह पा-

लेमेन्ट सभा में इसकी चुगलियां खाने से बाज़ न आये पर अन्त को इसी की जय हुई।

क्लाइव के बाद सन १७६७ से सन १७७२ तक ५ बरस के अन्दर पहले वेरेल्स्ट फिर कार्टियर साहिब गवर्नर हुए थे। इन दिनों बंगाले के राज का इन्तिज़ाम अंगरेज़ मुसल्मान दोनों के हाथ था। इस से राज में अक्सर उपद्रव हुआ करते थे, और चोर डाकुओं के बड़े बड़े फ़साद रहा करते थे। इस पर फिर सन १७७० में ज़ोरशोर का अकाल पड़ने के कारण प्रजा के कष्ट की हद नहीं रही।

मैसूर—हैदर अली।

दखन में उत्तर-सरकार का इलाक़ा दख़ल करने की घात में कम्पनी बहुत दिनों से थी। क्लाइव ने इसके लिये बादशाह से सनद भी ले ली थी। परन्तु दखन के सूबेदार निज़ामअली के रोकने से वहां दख़ल नहीं होता था। निदान निज़ाम को सालाना ८ लाख रुपये ख़िराज देने और ज़रूरत पड़ने पर फ़ौज से सहायता करने की प्रतिज्ञा करके कम्पनी ने उस इलाक़े को ज़मीदारी के तौर पर निज़ाम से ले लिया। अब इस सुलहनामे के अनुसार कम्पनी को एक लड़ाई में उलझना पड़ा।

विजयपुर राज के अन्दर मैसूर का सूबा बहुत दिनों से हिन्दू राजाओं के अधीन था। सन १७५० में वहां के मन्त्री नन्दराज ने राज के सब अधिकार अपने हाथ कर रक्खे थे। इस की फ़ौज में हैदर नाम एक आदमी नौकर

था। इस का बाप सिरे के नव्वाब की चाकरी में पियादे से फ़ौजदार बन गया था। हैदर लिखना पढ़ना तो कुछ नहीं जानता था, परन्तु ऐसा चतुर, चालाक, और बुद्धिमान था कि देखते, देखते मैसूर का राजा बन गया, और अमलदारी बढ़ाने लगा।

सन १७६७ में निज़ाम ने मरहटों से मिल कर हैदर से लड़ने को कूच किया। अंगरेज़ों को भी प्रतिज्ञा के अनुसार निज़ाम की मदद के लिये कुछ सिपाही भेजने पड़े। चालाक हैदर ने निज़ाम और मरहटों को तो धन का लालच दे कर फुसला लिया। मरहटों ने तो चल दिया— परन्तु निज़ाम ने हैदर से मिल कर अंगरेज़ों ही पर चढ़ाई की। अंगरेज़ों के सेनापति कर्नल स्मिथ ने इस नई बिपत को देख हिम्मत नहीं हारी, बरन खूब बहादुरी के साथ लड़ कर उन दोनों की फ़ौजों को कई बार शिकस्तें दीं। अन्त को निज़ाम डर कर फिर अंगरेज़ों से आ मिला, और पहले सुलहनामे को क़ाइम रक्खा।

इस के बाद जब हैदरने देखा कि कर्नल स्मिथने मैसूर की बहुतेरी जगहें, और क़िले दख़ल कर लिये, तो चाहा कि अंगरेज़ों से सुलह कर लें, परन्तु मंदराज काउन्सिल के ग़ैरवाजिब दावा कर बैठने पर रंज हो गया, और फिर लड़ने को उद्यत हुआ। अब उसने क्या किया कि चुने चुने घुड़सवारों के तीन रिसाले साथ ले ऐन मंदराज ही के पास आ पहुंचा। अब तो अंगरेज़ों के छक्के छूट गये और घबरा के उसके कहने मुताबिक़ सुलह कर ली, जिस

की शर्तें ये थीं—एक दूसरे की जो जो जगहें, और क़िले जिसने लिये हैं, दोनों एक दूसरे को लौटा दें। और समय पड़ने पर आपस में फ़ौज से एक दूसरे की सहायता करें (१७६८)।

बाजीराव के मरने पर उसका बेटा मधुराव मरहटों का पेशवा हुआ। इसी के समय में मलहारराव होलकर की अहल्याबाई नाम विधवा बहू ने तमाम अपनी कीर्ति फैलाई थी। अंगरेज़ों से सुलह हो जाने पर हैदर और मरहटों में तकरार शुरू हुई—उस पर मधुराव पेशवा ने अनगिनत सेना के साथ मैसूर में जा राज को चौपट कर, हैदर को तीन तेरह कर दिया। हैदर ने भाग कर श्रीरंगपट्टन में शरण ली, और सुलहनामे के अनुसार सहायताके लिये अंगरेज़ों को बार बार बुलाया—परन्तु अंगरेज़ न आये पै आये। निदान उसने बड़ा अपमान और नुक़सान सह कर मरहटोंसे सुलह कर ली। परन्तु अंगरेज़ों कीइस दग़ाबाज़ी को उसने याद रक्खा।

———

नवां अध्याय।

वारन हेस्टिंग्स।

१७७२—१७८५

कार्टियर साहिब के बाद वारन हेस्टिंग्स १७७२ में बंगाले का गवर्नर हुआ। यह भी क्लाइब सा पहले पहल केरानी के काम के लिये मुक़र्रर हो कर इस देश में आया था। फिर ज्यों ज्यों उसकी विद्या बुद्धि और बल प्रगट होने लगा त्यों त्यों तरक़्क़ी होती चली। पहले मुर्शिदाबाद का रेसीडेन्ट फिर कलकत्ता काउन्सिल का मेम्बर मुक़र्रर हुआ। कई एक बरस पहले से बंगाले का ख़िराज तहसीलना, इन्साफ़ करना, सज़ा देना वग़ैरह सब काम मुर्शिदाबाद का रहने वाला मुहम्मद रज़ाख़ां नाम एक मुसल्मान के सुपुर्द था। उस समय नव्वाब बिल्कुल बच्चा था, इससे उसकी ख़बरगीरी के वास्ते मीरजाफ़र की एक स्त्री मनीबेगम मुक़र्रर थी, और राजा नन्दकुमार का बेटा गुरुदास इस नव्वाब के दीवान का काम अंजाम देता था। ये लोग अक्सर राजकाज में भी दस्तन्दाज़ी किया करते थे। इस समय हेस्टिंग्सने डिरेक्टरों की राय से यह क़ाइदा उठा कर राज का सारा इन्तिज़ाम अपने हाथ करना चाहा। इस से सन १७७२ में ख़ज़ाना और दूसरे दूसरे बड़े सरिश्ते मुर्शिदाबाद से कलकत्ते में लाये गये। और नाइब दीवान

रज़ाखां का ओहदा एक बारगी एबौलिश हो गया। मालगुज़ारी तहसीलने के लिये हर ज़िले में एक एक कलेक्टर मुक़र्रर किये गये—कलेक्टरों को पांच पांच बरस के लिये ज़मीन का बन्दोबस्त करने का हुक्म हुआ। मुक़द्दमे फ़ैसल करने के लिये हर ज़िले में दीवानी और फ़ौजदारी दो दो कचहरियां क़ाइम की गईं—दीवानी के मुक़द्दमे कलेक्टर साहिब के और फ़ौजदारी के क़ाज़ी या मुफ़्ती के सुपुर्द होते थे, और उन मुक़द्दमों की अपील के लिये सदर दीवानी और सदर निज़ामत दो कचहरियां कलकत्ते में क़ाइम की गईं। इन काररवाइयों को अच्छी तरह चलाने के लिये हेस्टिंग्स ने छोटे छोटे कई एक आईन भी तय्यार कर दिये थे।

सन १७६१ में अहमदशाह से पानीपत की लड़ाई में हार जाने के सबब से मरहटे कुछ दिनों तक चुपचाप थे। परन्तु फिर १७६९ में मधुराव पेशवा तीन लाख फ़ौज के साथ चम्बल नदी पार उतर कर राजपूत और जाटों की सल्तनतें लूटता दिल्ली में आ पहुंचा और कमज़ोर बादशाह शाहआलम का खूब अपमान कर रोहिलखण्ड में घुसा। रोहिलों ने इन से बचने के लिये ४० लाख रुपये देने का क़रार कर के शुजाउद्दौला को बुलाया। शुजाउद्दौलाने रोहिलों से मिल कर मरहटों को निकाल बाहर किया, परन्तु जब उन ४० लाख रुपयों को नहीं पाया तो फिर रोहिलों ही से लड़ाई शुरू की (१७७२)। हेस्टिंग्स ने शुजाउद्दौला के लिखने अनुसार धन के लालच में पड़ कर एक अंगरेज़ी पल्टन रोहिलों से लड़ने को भेज

दी। (१७७४) इस लड़ाई में रोहिलों ने पूरी शिकस्त खाई —उन के बीस हज़ार सिपाही खेत रहे—और बहुतेरे रोहिलखंड छोड़ छोड़ कर भाग गये। निदान शुजाउद्दौला ने इस देश को अधिकार करके अपने दिल का अर्मान पूरा किया। फिर अंगरेज़ों ने ५० लाख रुपये लेने का क़ौल क़रार कर कोड़ा और इलाहाबाद के सूबे बादशाह से छीन कर शुजाउद्दौला को दे दिये, और बादशाह को जो २६ लाख रुपये सालाना देने का इक़रारनामा था उसे मुस्तर्द कर दिया।

इन दिनों (१७७३) कम्पनी को जब ख़र्च की बड़ी तंगदस्ती हुई तो इंगलैन्ड के अफ़सरों ने इस देश के राजकाज का नया प्रवन्ध करने का इरादा किया। नीचे लिखे कई एक नियम बनाये गये—१ला। बंगाले का गवर्नर हिन्दुस्तान का गवर्नर जनरल होगा। कलकत्ते में उसके अधीन एक काउन्सिल यानी सभा रहेगी जिसके चार मेम्बर होंगे। बम्बई और मंदराज के गवर्नर, सभा में अधिष्ठित गवर्नर जनरल के अधीन, रहेंगे।—२रा। कलकत्ते में सूप्रीम कोर्ट नाम एक बड़ी अदालत नियत की जायेगी, जिस के जज लोग कम्पनी के अधीन नहीं रहेंगे।—३रा। राजकाज की सब बातें इंगलैन्ड के वज़ीर आज़म के पास पेश की जावेंगी। कम्पनी का कोई नौकर नज़र नज़राना नहीं लेने पायेगा।—वग़ैरह।—इस आईन के जारी होने पर १७७४ में वारन हेस्टिंग्स २॥ लाख रुपये सालाना के मुशाहरे पर गवर्नर जनरल के ओहदे पर और बरवेल, मौन्सन, क्लेवरिंग, और फ़्रान्सिस लाख लाख रुपये के मु-

ओहदे पर मेम्बरों के ओहदे पर, और सर इलाइजा इम्पी ८० हज़ार के मुशाहरे पर सूप्रीम कोर्ट के अव्वल जज के ओहदे पर मुक़र्रर हुए।

काउन्सिल के मेम्बरों में से बरवेल बहुत दिनों तक इस देश में रहा। यह हेस्टिंग्स का मित्र था। बाक़ी और तीन मेम्बर हेस्टिंग्स से बराबर अखज़ रक्खा करते थे। उन की सदा यही चेष्टा रहती कि क्योंकर हेस्टिंग्स को नीचा दिखलायें। काउन्सिल का नियम यह रहने के कारण कि ज़ियादे मेम्बरों की राय जिस बातके लिये हो उसी के अनुसार काम अमल में आवे, हेस्टिंग्स इनके विरुद्ध कुछ कर भी नहीं सकता था। इसी कारण काउन्सिल में हेस्टिंग्स का बस कुछ भी नहीं चलता था। निदान काउन्सिल में उसके नाम से मुक़द्दमे दायर होने लगे—"वह बेसबब रोहिलों से लड़ा,—मनीबेगम और गुरूदास को नव्वाब के यहां नौकर रखवा कर बहुत कुछ घूस लिया वग़ैरह।" राजा नन्दकुमार को भी किसी सबब से हेस्टिंग्स से अदावत थी, इसने भी इस समय इन मुक़द्दमों के सुबूत कराने में बहुतेरी कोशिशें कीं। अब तो हेस्टिंग्स के पेट में घोड़ा कूदने लगा। इस के बाद ही कलकत्ते की सूप्रीम कोर्ट में नन्दकुमार के नाम से भी एक मुक़द्दमा दायर हुआ कि इसने ६ बरस पहले एक जाल चिट्ठी तय्यार की थी। चीफ़ जस्टिस सर इलाइजा इम्पी ने इसी जुर्म पर नन्दकुमार को फांसी का हुक्म दिया। नन्दकुमार ब्राह्मण था, इस लिये इसके लिये फांसी का हुक्म सुन कर इस देश

के आदमी बहुत घबराये, और हेस्टिंग्स और कम्पनी का का तमाम गिला होने लगा।

इसके बाद मौन्सन साहिब के विलायत जाने पर कौंसिल में हेस्टिंग्स की बात सुनी जाने लगी। क्यों कि बहस में जब दोनों तरफ़ मेम्बरों की संख्या बराबर होती, तो जिधर गवर्नर जनरल रहते वही राय अमल में आती।

हेस्टिंग्स के अमल में लड़ाइयों के ख़र्च से कम्पनी बहुत चूर चूर हो गई थी। इस लिये रुपये जमा करने के लिये हेस्टिंग्स ने कई एक उपाय सोचे। सन १७७५ में अंगरेज़ों ने बनारस का राज अवध के नव्वाब से लेकर २२॥ लाख रुपये मालगुज़ारी पर चेतसिंह की ज़मींदारी के तौर पर दिया था। चेतसिंह बराबर ठीक समय पर मालगुज़ारी दिया करता था। हेस्टिंग्स ने उससे मालगुज़ारी के सिवाय ५ लाख रुपये फ़ाज़िल और भी तीन बरस के अन्दर लिये। सन १७८० में जब चेतसिंह ने इन फ़ाज़िल रुपयों को मानो दस्तूर के बराबर देने से इन्कार किया तो हेस्टिंग्स ने ये रुपये ज़बरदस्ती उससे लिये और इसी बहाने से एक लड़ाई लगा कर उसको बहुत ज़लील किया, और क़ैद कर लिया। पर चेतसिंह अपना देस छोड़ कर जान बचा के भाग गया। हेस्टिंग्स ने उसके घराने के किसी को गद्दी पर बिठा सालाना ४० लाख रुपये लेने का इक़रार करा लिया।

अवध के नव्वाब शुजाउद्दौला के मरने पर उस का सब धन उस की मा और बीवी ने पाया। अब सन १७८१ में

शुजाउद्दौला के बेटे आसिफ़ुद्दौला ने अपना क़र्ज़ चुकाने के लिये मा और दादी के पास का धन छिनवाने के इरादे से हेस्टिंग्स को बुलाया। हेस्टिंग्स ने चट इस बात को मन्जूर कर लिया और बेगमों से ज़बरदस्ती एक करोड़ २० लाख रुपये खींच लिये।

सन १७७२ में पेशवा मधुराव के मरने पर उसका भाई नारायण राव पेशवा हुआ। मगर तुरत ही उसके मारे जाने से उसका चाचा राघोबा पेशवा बन बैठा। परन्तु नाना फड़नवीस और सखाराम बापू वग़ैरह कई एक लोगों ने नारायण राव के बच्चे को सिंहासन पर बिठा राघोबा से लड़ाई शुरू की। राघोबाने शिकस्त खाई और बम्बई के अंगरेज़ों की शरण ली। बम्बई के अंगरेज़ भी यह चाहते ही थे कि मरहटों की ज़ोरावरी ख़ाक में मिलायें, और बम्बई के पास दो टापू सालसेट और बस्सीन, जो मरहटों के दख़ल में थे, ले लेवें, और बम्बई प्रेसिडेन्सी का हाता बढ़ायें। बारे तुरत ही उन्हों ने राघोबा का साथ दिया, और उन दोनों टापुओं को और सालाना बहुत से रुपये लेने का क़ौल क़रार करा लिया। सन १७७५ में पहले पहल कर्नल कीटिंग राघोबा के साथ मरहटों से लड़ने गया। कुछ दिन गुज़रने पर दोनों तरफ़ से गहरी छनी—पहले तो मरहटों ने फिर अंगरेज़ों ने जय पाई। इन लड़ाइयों में सिन्धिया और होल्कर, बच्चे पेशवा २रे मधुराव की तरफ़ थे। बहुत दिनों तक लड़ाई चली—बीच बीच में अक्सर सुलहें भी हो जाया करती थीं। निदान जब हैदर ने इधर फिर

तंग किया, तो लाचार अंगरेज़ों को सन १७८१ में मेल कर लेना पड़ा। पहले पूना के पास पुरंदर में जो सुलहनामा हुआ था, उसे "पुरंदर का सुलहनामा" और इसे "सालबाई का सुलहनामा" कहते हैं। इस सुलहनामे के अनुसार राघोबा की तनख़ाह सालाना ३ लाख रुपये की मुक़र्रर हुई, और जहां चाहें वहां रहने का अधिकार रहा—अंगरेज़ों को कई एक जगहें जो उन्हों ने जय की थीं, लौटा देनी पड़ीं, —और एक बात यह तय पाई कि अगर हैदरअली कर्नाटक में अंगरेज़ों के इलाक़ों को, जिन को उसने दबा लिया है, न लौटा देवे और जिन अंगरेज़ों को क़ैद कर रक्खा है, न छोड़ देवे तो पेशवा उस पर चढ़ाईकरे।

पहले कह आये हैं कि सुलहनामे में क़ौल क़रार हो जाने पर भी अंगरेज़ों ने हैदर को बिपत के समय सहायता नहीं की थी। इस विश्वासघात का पूरा बदला लेने के लिये हैदर बहुत दिनों से घात में लगा था। इसी लिये उसने फ़रासीसियों से भी मेल कर लिया। निदान निज़ामअली और मरहटों से सहायता पानेपर उसने सन १७८० में कर्नाटक के अर्काट शहर को जा घेरा। इस शहर के बचाव के लिये मन्रो और बेली साहिब दो पल्टनें ले ले कर आगे बढ़े—सख़्त लड़ाई हुई—अन्त को चालाक और बहादुर हैदर ने दोनों को पूरी शिकस्त दे मार भगाया। इस ख़बर के सुनतेही हेस्टिंग्स ने बंगाले से फ़ौजों के साथ आयरकूट साहिब को रवाना किया। आयरकूट को देख कर हैदर ने जय की हुई बहुतेरी जगहें आप ही छोड़ दीं, और सन १७८१ में पोर्टनव नाम जगह

की लड़ाई में हार कर पीठ दिखा दी। दूसरे बरस इस का बेटा टीपू अंगरेज़ों से लड़ा, और इसने अंगरेज़ों पर फ़तहें भी हासिल कीं। फिर हैदर भी पहुंचा, परन्तु इस के थोड़े ही दिन बाद ८० बरस का हो कर परलोक को सिधार गया। हैदर के मरने पर अंगरेज़ों ने सोचा था कि अब निश्चिन्त हुए, परन्तु टीपू ने बाप से भी ज़ियादे इन को हैरान किया। इसने बड़े ज़ोर शोर के साथ लड़ाई चलाई, और कई एक मैदान में जय पाईं। परन्तु जब अंगरेज़ी सिपाह छुपी छुपी दो तरफ़ों से उस की राजधानी पर चढ़ आई, तो उसने हिम्मत हार दी, और अंगरेज़ोंके साथ मेल कर लेने पर राज़ी हो गया (१७८४)। यह "मंगलोर का सुलहनामा" नाम से प्रसिद्ध है।

सन १७८५ में वारन हेस्टिंग्स ने काउन्सिल के एक बड़े मेम्बर मैकफ़र्सन साहिब को चार्ज दे कर अपने देश को कूच किया। वहां जाने पर एक दिन भी उस का सुख से न बीतने पाया। रोहिलों के साथ लड़ना, चेतसिंह का राज छीनना, बेगमों का धन लेना वग़ैरह २२ क़िस्मों के ग़ैरवाजिब कामों के वास्ते पार्लेमेन्ट में उस के नाम से मुक़द्दमे दायर हुए— इन मुक़द्दमों की काररवाई १२ बरस तक चलाकी। अन्त में जिस समय उस का निर्दोषी होना साबित हुआ, उस समय तक वह मुक़द्दमों की ज़ेरबारी से कौड़ी कौड़ी को मुहताज हो गया था। हेस्टिंग्स साहसी और धीरा था। हिन्दुस्तान में अंगरेज़ों की सल्तनत ने इसी के समय में जड़ पकड़ी। जैसा इसका

सुभाव था, अगर कहीं न्याय और दया उस के चित्त में होती, तो फिर सोना सुगन्ध था ।

इन्डिया बिल ।

हेस्टिंग्स के अन्त समय में हिन्दुस्तान के राजकाज के बारे में पार्लेमेन्ट की सभा में एक बड़ी बहस पेश हुई । अन्त को पिट साहिब नये वज़ीर ने जो क़ानून का मुस्विदा तय्यार किया, उसी को सबने स्वीकार किया—उस का सार मर्म यह है ।

१ । लन्डन के काउन्सिल के मेम्बरों में से ६ आदमियों की "बोर्ड औफ़ कन्ट्रोल" नाम एक सभा क़ाइम की जावे । कम्पनी के कामों की छान बीन और राजकाज के प्रबंध की ज़वाबदेही इसी सभा के सुपुर्द हुई । डिरेक्टरों की सभा इस के अधीन की गई ।

२। डिरेक्टरों की सभा के मेम्बरों में से ३ आदमियों की "गुप्त सभा" नाम एक सभा और क़ाइम की गई । हिन्दुस्तान के राज का इन्तिज़ाम ख़ास कर इसी के सुपुर्द हुआ ।

३ । डिरेक्टरों की सभा की बे इजाज़त गवर्नर जनरल हिन्दुस्तान में किसी के साथ मेल या लड़ाई न करें । परन्तु अगर कोई कम्पनी से या कम्पनी के मित्र राजा से बुरा बर्ताव करे तो उस में गवर्नर जनरल को अपने जी से काम करने का पूरा अधिकार रहेगा ।

४ । कलकत्ते के काउन्सिल में ४ आदमियों के बदले

६ आदमी मेम्बर हुआ करेंगे। उन में से एक आदमी कम्पनी के हिन्दुस्तान की फ़ौजों का सेनापति होगा। मंदराज और बम्बई में भी इसी तरह एक एक सभा रहेगी।

लौर्ड कौर्नवालिस।

१७८६—१७९३।

ऊपर कहे हुए इन्डिया बिल नाम क़ानून के जारी हो जाने पर लौर्ड कौर्नवालिस हिन्दुस्तान का गवर्नर जनरल और सेनापति मुक़र्रर हो कर सन १७८६ के सेप्टेम्बर महीने में कलकत्ते पहुंचा। इस के पहले मैक्फ़र्सन साहिब ने २० महीने तक उस काम को अंजाम दिया था। कौर्नवालिस ने पहले तीन बरस सल्तनतके इन्तिज़ाम में ख़र्च किये—कम्पनी के नौकरों की तलबें बढ़ा दीं, और छुप छुप के उन का तिजारत करना बंद कराया। इस के बाद वह टीपू के साथ लड़ने में उलझा।

मंगलोर के सुलहनामे के बाद टीपू, मुसल्मानों के सिवा और और मज़हबवालों पर ज़ुल्म करने लगा। यहां तक कि बहुतेरे ईसाई और हिन्दुओं को उसने ज़बरदस्ती मुसल्मान कर डाला। १७८९ में उसने त्रावणकोर के राज पर चढ़ाई की। त्रावणकोर का राजा अंगरेज़ों का मित्र था, इस कारण से अंगरेज़ोंने नाना फड़नवीस के अधीन मरहटों और निज़ाम से मिल कर, राजा का साथ दिया। सन १७९० में लड़ाई शुरू हुई। पहले साल तो निज़ाम या मरहटों ने

बहुत कुछ मदद नहीं दी, लेकिन दूसरे साल कौर्नवालिस आप लड़ाई के मैदान में आया, और निज़ाम और मरहटे भी मदद के लिये पहुंच गये। जब तीनों ने मिल कर श्रीरंगपट्टन पर चढ़ाई की, तो टीपू के छक्के छूट गये, सुलह का पयाम भेजा,—सुलह हुई—१७९२। इस सुलह के मुताबिक़ अंगरेज़ों ने टीपू से लड़ाई का ख़र्च ३ करोड़ रुपये और आधा राज पाया। आपस के अहदपैमान के मुताबिक़ इस आधे राज को अंगरेज़, निज़ाम, और मरहटों ने बराबर बराबर बांट लिया। इस के सिवा जिस में आइन्दे फिर लड़ाई न हो इस लिये ओल में अंगरेज़ों के पास टीपू को अपने दो लड़के देने पड़े, और हैदर के समय से जो जो अंगरेज़ उस की क़ैद में थे उन्हें छोड़ देना पड़ा। इस लड़ाई से जो जो जगहें अंगरेज़ों के हाथ लगीं, उनके नाम दिन्दीगल, बारह महाल और मलबार हैं।

पहले पहल शेर ही शाह ने रऐयत से उसकी ज़मीन के लिये ख़िराज या मालगुज़ारी तहसीलने का क़ाइदा निकाला था। इस क़ाइदे के मुवाफ़िक़ जो ज़मींदार बादशाह की मालगुज़ारी तहसील देता था वह पांच रुपये सैंकड़े के हिसाब से मिहनताना पाता था। अक्बर के अमल में यह क़ाइदा और अच्छी तरह से जारी हुआ, और कहीं कहीं मालगुज़ारी तहसीलने के लिये बादशाह की तरफ़ से नौकर भी मुक़र्रर किये गये। कुछ दिनों के बाद ये ही लोग राजा या ज़मींदार कहलाने लगे। बंगाला, बिहार, और उड़ैसे की दीवानी मिलने पर अंगरेज़ों ने भी बहुत दिनों तक

मालगुज़ारी तहसीलने का यही क़ाइदा जारी रक्खा। फिर सन १७७७ से एक एक बरस के लिये ज़मीनें इजारे मिलने लगीं। जो ज़ियादे मालगुज़ारी देने को राज़ी हो उसी को इजारा मिलता था। हर साल नये इजारेदार होने के कारण उन्हें रऐयतों पर माया ममता नहीं होने पाती थी— सिर्फ़ रुपये खींचने पर ख़याल रहता था। इस क़ाइदे से रऐयत को बड़ी तक्लीफ़ पहुंचती थी, कम्पनी को भी ख़ूब नफ़ा न था—क्यों कि लोग इजारा पहले लेने को तो ले लेते थे, परन्तु देने के समय भाग भाग जाते थे, इस से बहुत रुपये कम्पनी को छोड़ देने पड़ते थे। कौर्नवालिस साहिब ने इन ऐबों को दूर करने के लिये रैविनिउ बोर्ड के प्रधान मेम्बर शोर साहिब से इस बात की सलाह करके पहले तो ज़मींदारों से १० बरस के लिये ज़मीनों का बन्दोबस्त किया, और तमाम इश्तिहार कर दिया कि अगर डिरेक्टरों ने इसे मंजूर कर लिया तो यही बन्दोबस्त बंगाला, बिहार, उड़ैसा और बनारस में सदा के लिये रहेगा (१७८९)। सन १७९२ में डिरेक्टरों के मंज़ूर करने पर यह बन्दोबस्त सदा के लिये हो गया। पहले पहल १० बरस के लिये बन्दोबस्त होने के कारण से यह "दससाला बन्दोबस्त" के नाम से प्रसिद्ध है। दससाले बन्दोबस्त का मतलब यह है कि ज़मीनों की सरकारी मालगुज़ारी जो एक बार मुक़र्रर हो गई है, उसे ज़मींदार अगर बराबर सरकार में दाख़िल करता जावे तो उस की ज़मींदारी उस के दख़ल में हमेशा

रहेगी। बहुतेरों की राय है कि इस बन्दोबस्त से जो कुछ फ़ाइदा हुआ, वह सिर्फ़ ज़मीदारों ही को हुआ। रऐयतों का इस से कोई फ़ाइदा न हुआ। ज़मीदार रऐयतों से किस तरह से मालगुज़ारी वसूल करें, इस के लिये कोई क़ाइदा न बना। ज़मींदार को मनमानता ख़ज़ाना बढ़ाने का अधिकार रहा। निदान रऐयतों की ज़मीन पर जैसे पहले ममता न थी, अब भी नहीं रही।

पहले कह आये हैं कि हेस्टिंग्स साहिब के अमल में मालगुज़ारी तहसीलने और दीवानी मुक़द्दमों की तज्वीज़ के लिये हर ज़िले में एक एक कलेक्टर मुक़र्रर किये गये थे। मगर कौर्नवालिस ने जब देखा कि ये दो दो काम एक आदमी अकेला अच्छी तरह नहीं चला सकता है, तो दीवानी मुक़द्दमों की तज्वीज़ के लिये हर ज़िले में एक एक जज, एक एक रजिस्ट्रार, और कई एक मुन्सिफ़ मुक़र्रर कर दिये। ज़िलों के जजों के फ़ैसल किये हुए मुक़द्दमों की अपील के लिये कलकत्ते, मुर्शिदाबाद, पटने और ढाके में एक एक प्रोविन्शियल कौर्ट क़ाइम किये गये। फिर इन कोर्टों की अपील सुनने के लिये कलकत्ते में सदर दीवानी अदालत क़ाइम हुई। इस समय तक फ़ौजदारी के मुक़द्दमों की क़ाज़ी और मुफ़्ती ही तज्वीज़ किया करते थे। परन्तु इस इन्तिज़ाम से काम अच्छी तरह नहीं चलने के कारण ज़िले के जजों के हाथ में कुछ कुछ मजिस्ट्रेटी अधिकार भी दिये गये। इसी समय हर ज़िले में दो दो एक एक थाने भी क़ाइम किये गये। हर थाने में एक एक दारोगा जज-मजिस्ट्रेट के अधीन रऐयत की रक्षा के लिये नियत किये गये।

हेस्टिंग्स साहिब के अमल में कई एक आईन तय्यार हुए थे। कौर्नवालिस साहिब ने उनको इकट्ठा किया, और बार्लो नाम एक आदमी की सहायता से और भी कई एक आईन बनाये—और देसी बोलियों में ये तर्जुमा करा कर छपवाये गये।

लौर्ड कौर्नवालिस बरस सात एक राज करके सन १७९३ के औगस्ट महीने में अपने देसको लौट गये। इसी साल कम्पनी ने फिर २० बरस की मीयाद की सनद हासिल की।

दसवां अध्याय।

सर जौन शोर।

१७९३—१७९८।

कौर्नवालिस साहिब ने जो जो भलाई के काम किये थे, उन में सर जौन शोर, सर जौर्ज बार्लो, सर विलियम जोन्स वगैरह अच्छे अच्छे होशयार आदमियों की भी सहायता थी। अब कौर्नवालिस के बाद शोर ही साहिब हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हुए। इन के अमल में ख़ास ख़ास कुल तीन काम हुए। १ला—सन १७९५ में मरहटों ने टीपू सुल्तान से मिल कर निज़ाम से लड़ाई की, जय पाई, और अपने फ़ाइदे की सुलह कर ली। इस लड़ाई में निज़ाम को यह आशा थी कि अंगरेज़ सहायता करेंगे, पर यह विफल हुई। २रा—सन १७९१ में फ़ौजों का "डब्ल भत्ता" वगैरह उठ गया था, फिर कौर्नवालिस के राज में जब सिविल नौकरों की तलब बढ़ाई गई, तो उस समय उनकी नहीं बढ़ी। इस समय उन्हों ने धमका कर अपना "डब्ल भत्ता" फिर जारी करा लिया। ३रा—अवध के नव्वाब आसिफ़ुद्दौला के मरने पर पहले तो उस का बेटा वज़ीर अली, जो उसका असली बेटा न था, तख़्त पर बैठा। फिर शोर साहिब ने बड़ी बड़ी मुश्किलों से उसे तख़्त से उतार आसिफ़ुद्दौला

के भाई सआदत अली को उस की जगह पर बिठाया। इन, कामों को निबटा कर शोर साहिब ने "लौर्ड टेनमाउथ" की उपाधी पा कर सन १७९८ के मार्च महीने में अपने देश की यात्रा की। यह बुद्धिमान, शान्त, और धर्मभीरू था।

मार्क्विसवेल्स्ली

१७९८—१८०० ।

सर जौन शोर के बाद मार्क्विसवेल्स्ली (मौर्निंगटन) गवर्नर जनरल के पद पर नियत हुआ, और सन १७९८ के मे महीने में कलकत्ते पहुंचा। आते ही पहले इसे टीपू सुल्तान से लड़ना पड़ा। सन १७९२ में टीपू सुल्तान ने लाचार हो कर सुलह तो कर ली थी, परन्तु अंगरेज़ों की तरफ़ से उसके जी में लाग ज्यों की त्यों बैठी हुई थी। जब तक उसके दोनों बेटे ओल में अंगरेज़ों के पास रहे तब तक तो लड़ने का हियाव न हुआ। परन्तु जब सन १७९४ में शोर साहिब ने उन दोनों लड़कों को छोड़ दिया, तब से वह बराबर लड़ाई की तय्यारियां करने लगा। अंगरेज़ों को इस देश से दूर करने के लिये उसने बहुतेरे राजाओं के पास एल्ची भी भेजे थे, परन्तु कदाचित् कहीं से भी उसे सहायता की आशा न हुई। इन दिनों युरप में प्रसिद्ध बोनापार्टी के अधीन फ़रासीसी और अंगरेज़ों में खूब लड़ाई भड़की हुई थी। टीपू ने बोनापार्टी की सहायता पाने की आस पर अंगरेज़ों लड़ना ही

ठाना। यह ख़बर जब वेलस्ली को पहुंची तो उसने क्या किया कि पहले तो निज़ाम से मेल कर लिया और उस के लश्कर में जितने फ़रासीसी थे सब को निकलवा दिया, और उस के राज में एक अंगरेज़ी पल्टन रखवा दी। इसी तरह उस ने मरहटों को भी अपने पंजे में लाना चाहा, मगर ये कब किसी के पंजे में आते हैं ?

इन कामों को सम्पन्न करके गवर्नर जनरल साहिब ने टीपू से उस के बिगड़ने का कारण पूछ मांगा। टीपू ने मारे घमंड के कोई जवाब न दिया। सन १७९९ के शुरू में मंदराज और बम्बई दोनों तरफ़ से अंगरेज़ी फ़ौज ने उस के देश पर चढ़ाव किया। हारिस साहिब मंदराज की फ़ौज के और स्टूअर्ट साहिब बम्बई की फ़ौज के सरदार थे। इन के सिवा गवर्नर जनरल का छोटा भाई आर्थर वेलस्ली भी इस लड़ाई में था। यही आगे नेपोलियन बोनापार्टी को शिकस्त दे कर डिऊक ऑफ़ वेलिंगटन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। टीपू ने पहले स्टुअर्ट से, फिर हारिस से अलग अलग लड़ाई की, परन्तु दोनों से शिकस्तें खाईं। फिर दोनों ने मिल कर उस की राजधानी श्रीरंगपट्टन पर चढ़ाई की। टीपू इस समय ख़ूब लड़ा, और लड़ता ही लड़ता परलोक को सिधारा।

वेलस्ली ने टीपू के देश के तीन हिस्से किये। एक हिस्सा कम्पनी के लिये रक्खा, एक निज़ाम को, और बाक़ी एक हिस्सा मैसूर के पुराने राजा के वारिसों में से जिसे हैदर अली ने बेदख़ल कर दिया था, चुन कर एक के सुपुर्द कर सल्तनत का इन्तिज़ाम अपने हाथ रक्खा। टीपू के

लड़के वाले बिल्लूर के किले में रक्खे गये, और कम्पनी की तरफ़ से पेन्शन पाने लगे। टीपू के देश के इस इन्तिज़ाम से, मलबार, दक्खिन की तरफ़ के सब देश, और श्रीरंगपट्टन का किला अंगरेज़ों के हिस्से में पड़ा। निज़ाम ने मरहटों के डर से अपने यहां कम्पनी की अंगरेज़ी फ़ौज कुछ ज़ियादे रखने को कहा, और उस के खर्च के लिये मैसूर के राज का जो हिस्सा उन्हों ने पाया था, उसे कम्पनी को दे डाला। पस सच पूछो तो इस समय मैसूर और निज़ाम का राज इन दोनों जगहों में कम्पनी ही राज करती थी।

अंगरेज़ों के मैसूर दखल करने से कम्पनी का नाम तमाम प्रसिद्ध हो गया, और सब पर इनका रोब छा गया। गवर्नर साहिब ने इस सुयोग के सहारे से इतने काम किये। १ला—तांजोर पर क़ब्ज़ा किया। इस राज में इन दिनों विरासत का झगड़ा फैला हुआ था, वेल्स्ली ने क्या किया कि एक अपने आदमी को गद्दी पर बिठा राज काज का सब अधिकार कम्पनी के हाथ दे दिया। २रा—इसी तरह सूरत के नव्वाब की पेन्शन मुक़र्रर कर उसकी अमलदारी अपने अधिकार में कर ली।—१८००। ३रा— कर्नाटकके नव्वाब को बहुत क़र्ज़ हो गया था—कम्पनी के नौकरों ही का वह ज़्यादे क़र्ज़दार था। हेस्टिंग्स ही के समय इस क़र्ज़ के अदा करने के सामान हो रहे थे, परन्तु अभी तक कोई बन्दोबस्त नहीं हुआ था। फिर जब कम्पनी के नौकरों ने अपने अपने रुपयों के लिये बहुत तंग करना शुरू किया, तो कर्नाटक के नव्वाब ने टीपू के पास सहायता के लिये एक चिट्ठी लिखी

थी। यह चिट्ठी पकड़ी गई । इस पर वेल्स्ली साहिब ने पेन्शन मुक़र्रर करके उस का सारा राज छीन लिया। ४था —अवध के नव्वाब को पहिले ही से अपनी अमलदारी में कुछ अंगरेज़ी फ़ौज रखनी पड़ती थी। इस समय गवर्नर साहिब ने कुछ और फ़ौजें उस के पास भेज दीं, और उसके खर्चके लिये इलाहाबाद और रुहेलखंड वग़ैरह अवधका प्रायः आधा राज कम्पनी के तहत में कर लिया। १८०१। इन कामों के साथ ही साथ गवर्नर साहिब ने राज के इन्तिज़ाम के बारे में भी कई एक अच्छे अच्छे काम किये थे। देसी बोलियों की उन्नति का नेव डालनेवाला यही है।

इसके बाद वेल्स्ली साहिब को मरहटों की लड़ाई में उलझना पड़ा। इस समय मरहटों में प्रधान प्रधान चार आदमी थे— बराड़ का राजा रघुजी भोंसला, जसवन्त राव होल्कर, दौलतराव सिंधिया, और बाजीराव पेशवा। यह बाजीराव राघोबा का बेटा था। नारायण राव के बेटे २रे माधवराव पेशवा के मरने पर यही उसकी गद्दी पर बैठा था। यह तो विल्कुल मिट्टी का पूतला था, इस के राज के सब प्रबंध और अधिकार दौलतराव सिंधिया के हाथ में थे। सन १७९५ में अहल्या बाई के मरने पर उसके विश्वासी मन्त्री तुकाजी के बेटे जसवंत राव ने लड़ भिड़ के होल्कर का राज दख़ल कर लिया। फिर इसने बाजीराव पेशवा की राजधानी पूना पर चढ़ाई की। सिंधियाने बाजीराव की सहायता की, पर कुछ फल न निकला। बाजीराव बस्सीन में भाग गया, और वहां उसने अंगरेज़ों की सहायता

मांगी, और एक सुलहनामा कर लिया। इस सुहलनामे की शर्तों के अनुसार अंगरेज़ों ने उस की अमलदारी में कुछ फ़ौजें रक्खीं, और इस के ख़र्च के लिये कुछ जागीर पाई। यह "बस्सीन का सुलहनामा" सन १८०२ में तामील हुआ था। इस सुलहनामे के बाद अंगरेज़ों ने बाजीराव पेशवा को पूने में लाकर फिर गद्दी पर बिठा दिया।

मरहटों के राजकाज के बर्ताव में भी अंगरेज़ों की दस्तंदाज़ी देख कर सिंधिया और बराड़ के राजा के कान खड़े हुए और दोनों ने अंगरेज़ों से लड़ना ठाना। उस समय सिंधिया ने अपना राज उत्तर आगरे तक बढ़ा लिया था, और ६० हज़ार फ़ौज उस के पास थी। इस फ़ौज में से बहुतेरे एक फ़रासीसी सेनापति से लड़ाई की शिक्षा पाये हुए थे। बराड़ के राजा के पास भी ३० हज़ार फ़ौज से कम न थी। इन दोनों के मिलकर लड़ने के सामान देख कर वेल्स्ली भी अपनी तरफ़ लड़ाई की तय्यारियां करने लगा। इसने अपनी फ़ौज के दो हिस्से किये। एक को उत्तर की तरफ़ से, और दूसरे बड़े हिस्से को दक्खिन की तरफ़ से सिंधिया और बराड़ के राजा की सिपाह पर चढ़ाव करने को रवाना किया।

दक्खिन की तरफ़ से चढ़ाव करनेवाली फ़ौज का सेनापति आर्थर वेल्स्ली था। इस ने पहले ही अहमदनगर का क़िला ख़ाली करा लिया, फिर कई एक दिनों के बाद असाई नाम गांव के पास सिंधिया और रघुजी की फ़ौजों पर चढ़ाई की। कुछ देर तक ख़ूब लड़ाई हुई, आर्थर के बहुत सिपाही खेत रहे, लेकिन अन्त को इसी ने जय पाई। फिर

तुरत ही स्टीवन्स साहिब ने बुर्हानपुर और असीरगढ़ वगैरह कई एक किले दख़ल कर लिये। इस के बाद दोनों ने मिल कर अरगांव में फिर मरहटों को हराया। फिर बराड़ के राजा का गाविलगढ़ किला दख़ल हुआ। कर्नेल हारकोर्ट ने बराड़ में अधिकार कटक तक कर लिया। कई एक लड़ाइयों में ताबड़तोड़ शिकस्त खाकर बराड़ के राजा की तो बाई पच गई, अपनी राजधानी नागपुर को चला गया, और अंगरेज़ों से मेल कर लिया। इस सुलहनामे से कटक का इलाक़ा और बरदा नदी के पच्छिम तरफ़ सब मुल्क अंगरेज़ों के हाथ में आ गये। १८०३। उत्तर की तरफ़ से कर्नेल लेक ने सिंधिया की फ़ौज पर चढ़ाव किया था। पेरन नाम एक फ़रासीसी सिंधिया की फ़ौज का सेनापति था। लेक ने अलीगढ़ के पास उसे फ़ाश शिकस्त दी। फिर लुइस नाम एक और फ़रासीसी उस की जगह मुक़र्रर किया गया, उस के भी लेक ने दिल्ली की लड़ाई में खूब ही दांत खट्टे किये, और बादशाह शाहआलम को सिंधिया की क़ैद से रिहाई दिलाई। इसी समय से कम्पनी ने इस बादशाह का पेन्शन मुक़र्रर कर दिया।

सिंधिया आप इस समय दखन में लड़ रहा था, उत्तर में अपनी हार का हाल सुन कर वहां भी कुछ सिपाही भेज दिये, परन्तु जब सुना कि इन्हों ने भी शिकस्त खाई, बुंदेलखंड अंगरेज़ों के हाथ आ गया, और रघुजी ने अंगरेज़ों से मेल कर लिया, तो कमर ढीली कर दी, और अंगरेज़ों से मेल ही कर लेना मुनासिब समझा। इस सुलहनामे के बमूजिब अंगरेज़ों ने भड़ौच, अहमदनगर, दोआब

का इलाका, दिल्ली, आगरा, गोवालियर वगैरह बहुतेरी जगहें पाईं। १८०३।

सिंधिया और बराड़के राजा और अंगरेज़ोंसे जिस समय लड़ाई हो रही थी, होलकर चुपचाप था। परन्तु अंगरेज़ोंसे लड़नेके लिये इसकी भी पीठ सलसला रही थी। बारे इसने सन १८०४ के शुरू ही में अंगरेज़ों से छेड़छाड़ की, यानी उनके मित्रराज में उपद्रव मचाना शुरू किया। इसके सर करने को लौर्ड लेक मुक़र्रर हुआ। होलकर ने जब जयपुर में उपद्रव शुरू किया, तो लौर्ड लेक ने कर्नेल मौन्सन को फ़ौज के साथ वहीं रवाना किया। मौन्सन तो जसवंतराव होल्कर को रास्ते ही में लड़ने पर मुस्तइद पा कर घबराया और भागा। होल्करने पीछा किया। मौन्सन ने भाग कर आगरे में शरण ली। फिर जब होल्कर दिल्ली के पास गया तो वहां के रेसिडेन्ट अक्टर लोनी ने बड़ी बहादुरी के साथ इस शहर की रक्षा की। इतने में लेक भी आ पहुंचा। फिर तो दीघ और फ़र्रुख़ाबाद में जितनी लड़ाइयां हुईं सब में होल्कर ही बराबर शिकस्त खाता गया। निदान लाचार हो इसने अपने मित्र भरतपुर के क़िले में शरण ली। यह क़िला खूब ही मज़बूत बना हुआ है। इस पर अंगरेज़ों की दाल न गलने पाई। निदान इन्हों ने राजा से सुलह कर ली। सुलह की शर्तों के अनुसार होल्कर को यह क़िला छोड़ कर निकल जाना पड़ा, और राजा को अपना एक लड़का अंगरेज़ों के पास ओल में रखना पड़ा। १८०५।

इन कामों को निबटा कर सन १८०५ के औगस्ट महीने

में वेल्स्ली अपने देस को सिधारा। इसने सात बरस तक गवर्नर जनरल का काम अंजाम दिया। इसके बराबर बुद्धिमान, बहादुर, और होशयार गवर्नर जनरल बहुत थोड़े यहां आये। परन्तु इसे लड़ाई का हदसे जियादे चसका था, बलकि इसी कारण डिरेक्टर लोग इससे जैसा चाहिये वैसे खुश न थे।

कौर्नवालिस और बार्लो।

१८०५—१८०७।

इस समय डिरेक्टरों की राय यह थी कि हिन्दुस्तानी राजाओं से लड़ना, और अमलदारी बढ़ाना ज़रूर नहीं। बल्कि ख़र्च की तख़फ़ीफ़ हो, और मरहटों की लड़ाई एक बारगी निबटा दी जाय। उन्हों ने इन कामों के लाइक़ कौर्नवालिस के सिवा किसी को नहीं पाया। पस फिर उसी को हिन्दुस्तान का गवर्नर जनरल बना रवाना किया। वह सन १८०५ की ३०वीं जुलाई को कलकत्ते पहुंचा, और लौर्ड वेल्स्ली की राजनीति बदलने में तत्पर हुआ। परन्तु अब बुढ़ापे के कारण यह बहुत ही रोगी, दुर्बल, और सुस्त हो गया था। ग़रज़ उसी साल ५वीं अक्टोबर को कलकत्ते से बनारस जाते ग़ाज़ीपुर में परलोक को सिधार गया।

सर जौर्ज बार्लो इन दिनों काउन्सिल का प्रधान मेम्बर था। गवर्नर जनरल का काम इसी के सुपुर्द हुआ। कौर्न-

वालिस अगर जीता होता, और जिस रीति से काम किया होता, उसी तरह इस ने भी काम करना शुरू किया। सिंधिया की तरफ़ से जिन जिन बातों के लिये दिल मैला था, इसने उन की सफ़ाई कर डाली, और होल्कर से मेल कर लिया। चम्बल नदी के दक्खिन हिस्से के सब देश होल्कर के अधीन में रक्खे गये।

मंदराज का गवर्नर इन दिनों वीलियम बेन्टिंक था। इसने सब सिपाहियों को एक प्रकार की टोपी पहनने का हुक्म दिया। सिपाहियों ने क्या समझा कि यह उन्हें ज़बरदस्ती ईसाई बनाने का उपाय है। बारे सन १८०६ की १०वीं जुलाई की रात को बिल्लूर के क़िले में १५०० सिपाही एक बारगी बिगड़ बैठे और बहुतेरे युरोपियनों को मार डाला। कर्नल जिलस्पी इस ख़बर के सुनते ही फ़ौज के साथ अर्काट से रवाना हुआ, और वहां पहुंच कर उसने तुरत बलवा मिटा दिया, और बलवाइयों की पूरी सज़ा की। इस में टीपू सुल्तान के घरवालों पर साज़िश का शुबहा होने के कारण ये नज़रबंद रहने को कलकत्ते भेजे गये। इस में बेन्टिंक की बड़ी बदनामी हुई—और विलायत बुला लिया गया। इस के काम पर बार्लो नियत हुआ, और गवर्नर जनरल के काम पर लौर्ड मिन्टो नियत हो कर सन १८०७ की जुलाई में कलकत्ते पहुंचा।

लौर्ड मिन्टो।

१८०७—१८१३।

कौर्नवालिस की तरह लौर्ड मिन्टो भी लड़ाई झगड़े पसन्द नहीं करता था। परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद उसने सोचा कि देसी राजाओं के राजकाज में बेदस्तंदाज़ी किये राज का चलाना कठिन है, निदान उसे मौके मौके पर ख़ाह मख़ाह देसी राजाओं के कामों में दस्तंदाज़ी करनी पड़ी।

सन १८०८ में पटियाले और झींद के सरदारों ने सिक्खों के सरदार रनजीत सिंह से सताये जाने पर गवर्नर जनरल के यहां नालिश की। लौर्ड मिन्टोने मेट्काफ़ साहिब को बतौर एलची के रनजीत सिंह के पास भेज कर उससे इस तौर पर सुलह कर ली कि रनजीत संह की अमलदारी सतलज नदी के पच्छिम ही किनारे तक रहे—पूरब किनारे की तरफ़ वह कभी हाथ न फैलाये। पहले कहा जा चुका है कि मुग़लों के अत्याचार से सिक्ख लोग पहाड़ों पर जा बसे थे, फिर ज्यों ज्यों मुग़ल बादशाहों का बल घटता गया, वे धीरे धीरे पहाड़ से उतर कर पंजाब में बसते गये। इन में से एक एक आदमी सरदार बन बन कर एक एक इलाक़ा दबा बैठा। रनजीत सिंह भी इन ही सरदारों में से एक का बेटा था। यह लाहौर में राज करता था, और अपनी बुद्धि, समझ, और कौशल्य के बल से और और सरदारों से चढ़ा बढ़ा था। अहमद अब्दाली का पोता ज़मान शाह

इसका किसी काम के लिये इहसानमंद था, यही रनजीत सिंह को लाहौर में मुस्तहकम कर गया था। (इस के बारे में आगे फिर लिखा जायगा।)

फ़रासीसियों के टापू मुरिश बोर्बों वग़ैरह के लोग प्रायः जंगी जहाज़ों पर सवार हो अंगरेज़ों के तिजारती जहाज़ लूट लिया करते थे। मिन्टो ने सन १८०९ और १८१० में कुछ सिपाही भेज कर उन टापुओं को दख़ल कर लिया। इन में से मुरिश तो आज तक अंगरेज़ों के अधिकार में है, परन्तु बोर्बों सन १८१४ में फ़रासीसियों को लौटा दिया गया। जावा टापू भी उसी समय वलंदेज़ों से ले लिया गया था।

अंगरेज़ और फ़रासीसियों में शुरू ही से घोड़े भैंसे का बैर चला आता है। अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान में सब से ज़ियादे फ़रासीसियों ही का खटका रहता था। निज़ाम, सिंधिया, होल्कर वग़ैरह राजाओं से जो जो लड़ाइयां हुई हैं सब का एक एक उद्देश्य यह भी था कि फ़रासीसियों का बल घटे। फ़रासीसियों की भी यह पूरी इच्छा थी कि किसी तरह हिन्दुस्तान में अपना पाया जमाइये। इन दिनों नेपोलियन के बहुत बढ़ जाने से अंगरेज़ों को बड़ा ही ख़ौफ़ हुआ। निदान लौर्ड मिन्टो ने रनजीत सिंह से मेल कर के सिंध, काबुल, और ईरान में एल्ची भेज भेज कर तमाम से इस तौर पर सुलह कर ली कि अंगरेज़ों के दुश्मन को ख़ास कर फ़रासीसियों को कोई अपने राज में जगह न दे।

सन १८१३ में लौर्ड मिन्टो इंगलैन्ड को सिधारा। लोगों ने अच्छे गवर्नर जनरलों में इस की गिन्ती की है। इस

साल फिर कम्पनी के चार्टर यानी सनद लेने का समय पहुंच गया। फिर कम्पनी को २० बरस के लिये नई सनद मिली। पहले सिवा कम्पनी के इंगलैन्ड का कोई सौदागर हिन्दुस्तान में तिजारत नहीं करने पाता था। इस नई सनद के बमूजिब सब को यहां की तिजारत करने का अधिकार दिया गया —सिर्फ चीन के लिये अब भी कम्पनी को वही अधिकार रहा।

इग्यारहवां अध्याय।

मार्कुइस हेस्टिंग्स।

१८१३—१८२१।

मार्कुइस औफ़ हेस्टिंग्स मिन्टो के पद पर नियत हो कर सन १८१३ के अक्टोबर महीने में कलकत्ते पहुंचे। पहले ये लौर्ड मायरा नाम से पुकारे जाते थे। नैपाल की लड़ाई के बाद इन्हीं ने "अर्ल औफ़ हेस्टिंग्स" का ख़िताब पाया। इन के राज का पहला काम नैपाल की लड़ाई है। "गुर्खा" नाम एक बलवान और लड़ाकी जाति बहुत दिनों से नैपाल में बसती थी। इन जातिवालों ने लड़ लड़ कर हिमालय की तराई में बहुत दूर तक अपनी अमलदारी बढ़ा रक्खी थी, और इधर ये धीरे धीरे सरकारी अमलदारी में भी हाथ फैलाने लगे थे। लौर्ड मिन्टो ने बहुतेरा चाहा कि उन्हें समझा के या धमका के आगे बढ़ने से रोकें, पर कौन सुनता है। लाचार अब लौर्ड मायरा को लड़ाई ही की सलाह ठाननी पड़ी। सन १८१४ में अंगरेज़ी फ़ौज के चार हिस्से कर चारों को चार तरफ़ से नैपाल पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया।

अक्टर लोनी, जिलस्पी, उड, और मार्लो इन ही चार

जनरलों के अधीन फ़ौज के वह चारों हिस्से रवाना हुए। इन में से उड और मार्लो से तो कुछ भी न बन आई। और जिलस्पी कलंगा नाम किले पर धावा करते समय मारा गया। बाक़ी अक्टर लोनी गुर्खाओं के सरदार अमर सिंह से खूब लड़ा और उनके कई एक किले ख़ाली करा लिये,—निदान अमर ने मैलोन के किले में क़ैद हो जाने पर सुलह का पयाम भेजा। पहले तो सुलहनामे की बात चीत सब तय ही हवा गई, पर पीछे फिर राय पलट गई। परन्तु जब अक्टर लोनी नैपाल के अन्दर घुसके उनकी ऐन राजधानी काठमांडू के पास पहुंच गया, तब तो घबरा कर नैपालियों ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया। १८१६। इस सुलहनामे के बमूजिब अंगरेज़ों ने जो जो जगहें पाई थीं, उन ही में से शिमला, मन्सूरी, नैनीताल वग़ैरह हैं, जहां अब अंगरेज़ों ने अपनी आबहवा की तबदीली के लिये मनोहर मनोहर सुहावने नगर बसाये हैं।

बहुत दिनों से हिन्दुस्तान में पिंडारे नाम एक क़िस्म के लुटेरे हिन्दुस्तान में तमाम उपद्रव मचाते फिरते थे। हिन्दू मुसल्मान सब जातके आदमी उन में शामिल थे। इधर कई एक बरस से गिन्ती और ज़ोर में ये इतने बढ़ गये थे कि अक्सर राजा लोग भी लड़ाई के वक़्त इनकी सहायता ले लिया करते थे। इन दिनों चेतू ख़ां और करीम ख़ां इन के दो प्रधान सरदार थे। इन्हों ने धीरे धीरे अंगरेज़ों की अमलदारी में भी लूट मार करना शुरू किया। इन के

अत्याचारों ने बर्मियों के अत्याचारों को भी मात कर रक्खा था। लोर्ड मायरा ने नैपाल की लड़ाई से ज्यों ही फ़ुर्सत पाई कि इन पिंडारों की तरफ़ ध्यान दिया, और सन १८१७ में असंख्य सेना इकट्ठी कर नर्मदा के किनारे और मालवे में कम से कम २५ हज़ार पिंडारों को चारों तरफ़ से घेर लिया। पिंडारों के छक्के छूट गये, जिधर जिसका सींग समाया, भागा, अंगरेज़ी सिपाह ने भी पीछा किया। पिंडारों ने होल्कर की अमलदारी में शरण ली, परन्तु वहां भी कहां कल्याण। अंगरेज़ी सिपाह होल्कर से भी लड़ने को डट गई। होल्कर ने शिकस्त खाई, और सुलह कर ली। इस सुलहनामे के बमूजिब अंगरेज़ों ने होल्कर की राजधानी में अपनी फ़ौज रख दी, और उस के ख़र्च के लिये ख़ानदेश वग़ैरह देश दख़ल कर लेने की इजाज़त पाई। पिंडारे भी बिलकुल छिन्न भिन्न हो गये, सरदारों में से कोई भाग गया, कोई मारा गया, आप भी बहुतेरे तो लड़ाई ही में मारे गये, बाक़ी जो बचे बचाये थे, उनमें से बाज़ों ने बनिज व्यापार और बाज़ों ने खेती बारी करनी शुरू कर दी।

सन १८०२ में बस्सीन के सुलहनामे से बाजीराव हरचन्द अंगरेज़ों ही की सहायता से पूना में फिर गद्दी पर बिठाया गया, तो भी उसकी राजधानी में अंगरेज़ रेसीडेन्ट के मुक़र्रर किये जाने के कारण वह अंगरेज़ों से ख़ार खाता था, और अंगरेज़ों की इस अधीनता से छुटकारा पाने की फ़िक्र में बराबर रहा करता था। त्रिम्बकजी नाम उस का एक विश्वासी मन्त्री उस को अंगरेज़ों से लड़ने के लिये बराबर

बहकाया करता और पेशवा का पहला रोब और दबदबा बनाये रखने की सलाह दिया करता । गायकवाड़ का एक राजदूत किसी काम के लिये पूना गया था। त्रिम्बकजी की साज़िश से वह यहां मारा गया । गायकवाड़ अंगरेज़ों के कहने में था। इस से अंगरेज़ों ने त्रिम्बकजी को क़ैद कर लिया। बाजीराव ने अंगरेज़ों से छुपे छुपे उसे क़ैद से रिहाई दिलवा दी । अब फिर पेशवा और अंगरेज़ों में लड़ाई होने के सामान बंधे। परन्तु पेशवा ने सुलह कर ली। लेकिन फिर जब उस ने देखा कि अंगरेज़ लोग पिंडारों की लड़ाई में उलझे हुए हैं, चट बिगड़ बैठा (१८१७।) और जब अंगरेज़ों की तरफ़ से स्मिथ लड़ता भिड़ता अपनी सिपाह के साथ ऐन पूना के पास पहुंच गया, तब तो पेशवा घबरा के शहर छोड़ कर भाग गया। पूना को अंगरेज़ों ने दखल कर लिया। निदान पेशवा हार मान कर सुलह कर लेने को मजबूर हुआ। इस सुलहनामे के बमूजिब अंगरेज़ों ने पेशवा का सारा राज ज़ब्त कर के सितारे के पास उस राज का कुछ हिस्सा शिवाजी के घराने के एक राजा के हवाले किया। पेशवा सिर्फ़ सालाना ८ लाख रुपये पेन्शन पाने लगा, और बिठूर में जा उसने गंगासेवन किया । बालाजी बिश्वनाथ के समय से पेशवाओं ने जो कुछ स्वाधीनता और गौरव पैदा किया था, सब सन १८१८ में एक बारगी लोप हो गया।

बराड़ के राजा रघुजी भोंसले के मरने पर परसूजी उसकी गद्दी पर बैठा । परन्तु उस के चचेरे भाई आपा साहिब

ने उसे मार कर गद्दी छीन ली थी । हरचंद आपा साहिब और अंगरेज़ों में मेल था, तौ भी इसने अंगरेज़ों से बिगड़ कर पेशवा का साथ दिया। इसी लिये अंगरेज़ों ने लड़ कर इसे शिकस्त दी, और गद्दीसे उतार रघुजी भौंसले के पोते को दादे का नाम धर कर गद्दी पर बिठाया । १८१८ ।

सन १८२३ की १ली जनवरी को लौर्ड मायरा अपने देस को रवाना हुआ।

लौर्ड ऐम्हर्स्ट ।

१८२३—१८२८ ।

लौर्ड ऐम्हर्स्ट साहिब गवर्नर जनरल हो कर सन १८२३ के औगस्ट महीने में कलकत्ते आये । इन के आने के पहले कई एक महीने तक काउन्सिल के प्रधान मेम्बर ऐडेम साहिबने काम अंजाम दिया था । अखबारों के छपने के बारे में इन्हों ने कई एक कड़े कड़े नियम जारी किये थे— इस कारण से लोग इनसे खूब राज़ी न थे ।

कुछ दिन पहले बर्मावालों ने आराकान आसाम वगैरह कई एक देश दबा लिये थें, और इस से अपने मन में समझ लिया था कि अंगरेज़ी अमलदारी भी दबा बैठना कुछ बड़ी बात नहीं है । उन इलाकों के दखल कर लेने से बर्मा और बंगाले के सिवाने के बारे में तकरार शुरू हुई। ऐम्हर्स्ट साहिब ने बहुतेरा चाहा कि झगड़ा यों ही निबट जाये, लड़ाई की नौबत न आये । परन्तु जब सन १८२३ में

बर्मावालों ने चटगांव के पास शाहपुरी नाम टापू दखल कर के अंगरेज़ों के आदमियों पर ज़ोर ज़ुल्म जताना शुरू किया तो फिर अब लड़ाई क्यों कर न हो। निदान गवर्नर जनरल के हुक्म बमूजिब सन १८२४ में बर्मावालों के साथ लड़ाई होने का इश्तिहार दे दिया गया। आर्कीबोल्ड कैम्बेल साहिब फ़ौज ले कर बड़ी बड़ी मुश्किलों से रंगून पहुंचे। अंगरेज़ी सिपाह जो एकाएक रंगून पर चढ़ आई, इससे वहां के लोग मारे डर के शहर छोड़ छोड़ कर भाग भाग गये। अंगरेज़ों ने चट शहर दख़ल कर लिया। इस समय हरचन्द बरसात के कारण यहां की आबहवा बिगड़ी हुई थी, और इससे बहुतेरे सिपाही बीमार हो हो गये थे, और बहुतेरे मर भी गये थे, तौ भी अंगरेज़ी सिपाह ने हिम्मत न हारी, लड़ाई जारी ही रक्खी, और बैठे बिठाये को छेड़ने का स्वाद बर्मावालों को खूब चखाया। उनके कई एक शहर ले लिये। सन १८२५ में बर्मावालों का नामी सेनापति महाबन्दुला, दनाब्यू शहर की लड़ाई में, मारा गया। अन्त को जब अंगरेज़ी सिपाह बढ़ते बढ़ते राजधानी आवा से कुल दो कोस की तफ़ावत पर जेन्दाबू शहर में पहुंच गई, तब तो राजा के होश उड़ गये, लाचार सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया। इस सुलहनामे के अनुसार अंगरेज़ों ने बर्मा के राजा से आसाम, कछाड़, जयन्ती, अराकान, तनासिराम वग़ैरह के इलाके और लड़ाई के ख़र्च करोड़ रुपये नक़द पाये। १८२६।

इसी लड़ाई के लिये बराकपुर की ४७वीं पल्टन के सि-

धाही बिगड़ गये थे। असल बात तो यह थी कि जहाज़ पर, सवार हो के समुद्र पार उतरना इन्हें गवारा न था, परन्तु बिगड़े इस बहाने पर कि सरकार डबल भत्ता नहीं मन्जूर करती। बारे प्रधान सेनापति पेजेट साहिब कलकत्ते से एक रिसाला गोलन्दाज़ों का ले गये, और बाग़ियों पर गोले बरसा कर उन के होश ठिकाने कर दिये।

भरतपुर के राजा बलदेव सिंह के सन १८२५ में परलोक सिधारने पर उसका लड़का उसकी गद्दी पर बैठा। परंतु फिर उस लड़के का चचा दुर्जनसाल उसे गद्दी से उतार आप राजा बन बैठा। अंगरेज़ों को उस लड़के की ख़ातिर मन्जूर थी, इस लिये इन्हों ने दुर्जनसाल से लड़ने की तय्यारियां कीं। सन १८०५ में जो कर्नल लेक भरतपुर का क़िला दख़ल न कर सका था, इस से हिन्दुस्तानियों ने समझ लिया था कि यह क़िला दुर्जय है। निदान इस लड़ाई से एक ग़रज़ यह भी थी कि हिन्दुस्तानियों का यह ख़याल दूर हो कि भरतपुर का क़िला जय नहीं किया जा सकता। जो हो, लौर्ड कम्बरमियर ने फ़ौज के साथ भरतपुर में जा बातों में क़िला ख़ाली करा लिया, और बलदेव सिंह के लड़के को फिर गद्दी पर बिठा दिया। १८२६।

इसके बाद सन १८२८ के मार्च महीने में लौर्ड ऐम्हर्स्ट अपने देस को सिधारे। इसी के अमल में कलकत्ते का सा बम्बई में भी एक सुप्रीम कौर्ट क़ाइम किया गया।

लौर्ड बेन्टिंक।

१८२८—१८३५।

लौर्ड बेन्टिंक पहले मन्दराज के गवर्नर थे, अब गवर्नर जनरल हो कर सन १८२८ के जुलाई महीने में कलकत्ते तशरीफ़ लाये। इन के पहले कई एक महीनों तक बटर्वर्थ बेली साहिब क़ाइम मुक़ाम गवर्नर जनरल थे। बेन्टिंक के राज में लड़ाई भिड़ाई कोई बड़ी बात नहीं हुई। परन्तु विद्या का प्रचार, सामाजिक रस्म रिवाजों का संशोधन, राज के ख़र्च की तख़्फ़ीफ़, इन्साफ़ की उम्दगी वग़ैरह अच्छे अच्छे साधारण के फ़ाइदे के काम इनके समय में बरते गये, और इन बातों से उनकी बुद्धि और उदारता लोगों पर ख़ूब प्रगट हो गई। बहुतेरों की राय है कि इनके बराबर नेक और हिन्दुस्तान का सच्चा ख़ैरख़्वाह कोई गवर्नर जनरल आज तक हिन्दुस्तान में नहीं आया।

लौर्ड बेन्टिंक के अमल में सन १८३७ में बरासत के तीतू मियां की लड़ाई हुई थी। और सन १८३७ में बिहार के दक्खिन कोल नाम एक जंगली क़ौम ने सर उठाया था। गवर्नर जनरल ने तुरत ही दोनों बखेड़ों को मिटा दिया। मैसूर के चतुर मन्त्री पूर्निया के मरने पर वहां का इन्तिज़ाम बहुत ही बिगड़ गया था—इस लिये गवर्नर जनरल ने सन १८३२ में उस राज का इन्तिज़ाम एक अंगरेज़ के सुपुर्द कर आगे के लिये राजा के घरानेवालों का पेन्शन मुक़र्रर कर दिया।

मैसूर के पच्छिम कुड़ग का राजा अंगरेज़ों का मित्र था। परन्तु इस समय वीरराज, जो वहां का राजा था,

बहुत ही निठुर और अत्याचारी था। उसने एक बार मंद-राज के गवर्नर को चिट्ठी में दो एक कड़ी कड़ी बातें लिख भेजीं। इस पर अंगरेज़ों ने उसे गद्दी पर से उतार देना चाहा। अन्त को १० दिन तक खूब लड़ाई होने के बाद कुड़ग दखल हुआ, और कम्पनी की अमलदारी में मिला लिया गया। १८३३।

लौर्ड एम्हर्स्ट के समय में लड़ाई की ज़ेरबारी से खज़ाना खाली हो गया था। बलकि कुछ कर्ज़ भी हो गया। बेन्टिंक साहिबने इस लिये कई एक तौरसे खर्चों की तख़्फ़ीफ़ की, और आमदनी बढ़ाई। सिविलियन नौकरों का मुशाहरा और भत्ता कुछ घटाया गया, और बेदलील दस्तावेज़ के जिन जिन ज़मीनों को लोग लाखिराज के तौर से दखल किये हुए थे, उन्हें जब्त कर के बाज़ाब्ते मालगुज़ारी मुकर्रर कर देने से बहुत आमदनी बढ़ गई। इन ही के समय में इन नीचे लिखे भलाई के कामों का भी बर्ताव किया गया।—

१। सन १८२९ में बहुतेरे देसी और युरोपियनों की राय ले कर सती होना यानी स्वामी के साथ जलती चिता में जल मरने की रस्म उठा दी गई।

२। इन दिनों ठगों का बड़ा फ़साद रहा करता था। गवर्नर जनरल साहिब ने इन ठगों से मुसाफ़िरों की रक्षा के लिये स्लीमान सरहिब को नियत किया। इन्हीं ने हज़ारों ठगों को मार कर मुसाफ़िरों को बे खौफ़ ओ ख़तर कर दिया।

३। राजपूत लोग बेटी के ब्याहने में बहुत खर्च पड़ने के ख़याल से और साले ससुरे कहलाने के भय से अक्सर

अपनी अपनी बेटियों को मार डाला करते थे। गवर्नर जनरल साहिब ने इस निष्ठुर रस्म के दूर करने की तरफ़ ध्यान दिया और सन १८३४ में विल्किन्सन और विलोवी साहिबों के द्वारा बहुतेरे प्रधान प्रधान राजपूतों को इकट्ठा कर के दोस्ताने तौर से उपदेश किया, और इस बुरी रस्म को बहुत दूर तक दूर कर दिया।

४। उड़ीसे में खन्द नाम एक जंगली क़ौम अपने अपने खेतों को ज़ियादे उपजाऊ करने के लिये नरबली दे कर देवी पूजा किया करते थे। गवर्नर जनरल साहिब ने सन १८३५ में इस रस्म को भी उठा दिया। इसी समय गुमसर के बाग़ी राजा का इलाक़ा कम्पनी की अमलदारी में मिला लिया गया।

५। पहले देसी लोग सिर्फ़ छोटे छोटे पदों पर मुक़र्रर किये जाते थे। बेन्टिंक साहिब ने डेप्यूटी कलेक्टर और सदरआला का पद क़ाइम करके इन पदों पर देसियों ही को ज़ियादे मुक़र्रर किया।

इस समय प्रोविन्शियल कोर्ट बेफ़ाइदे मालूम होने के कारण से उठा दिये गये। कई एक ज़िलों को मिला कर एक एक विभाग (डिवीज़न) क़ाइम किया गया, और हर विभागमें एक एक रेविनिऊ कमिश्नर मुक़र्रर हुए। मजिस्ट्रेट के अधिकार जजों से ले लिये गये, और कलेक्टर के सुपुर्द हुए। जजों के सुपुर्द सिर्फ़ दीवानी और दौरे के मुक़द्दमे होने लगे। कचहरियों में फ़ार्सी के बदले देसी बोली और हर्फ़ों में कारखाई होने लगी। परन्तु न मालूम

क्यों बिहार और उत्तर-पश्चिम प्रदेशों की अदालतों में बोली तो बदल दी गई, पर हर्फ़ों के तौं फ़ार्सी ही के जारी रहे। कलकत्ते की तरह इलाहाबाद में भी सदर अदालत और रेविनिऊ बोर्ड क़ाइम किये गये। उत्तर-पश्चिम प्रदेशों में बंगाला बिहार की तरह ज़मींदारी का इस्तिमरारी बन्दोबस्त नहीं है—वहां बेन्टिंक ही के राज में एक बारगी रऐयत से ज़मीन का बन्दोबस्त कर लिया गया।

६। सन १८१३ में जब चार्टर बदला गया था, उस समय देसियों की शिक्षा के लिये १ लाख रुपये ख़र्च करने की इजाज़त दी गई थी। वह रुपये इस समय तक सिर्फ़ संस्कृत कालेज, मद्रसा और किताबों ही के छपवाने में ख़र्च होते थे—अंगरेज़ी शिक्षा के लिये कोई प्रबंध न था। बेन्टिंक ने लौर्ड मेकौले और ट्रिविलियन वग़ैरह अच्छे अच्छे आदमियों की सहायता से जगह जगह अंगरेज़ी स्कूल और कालेज भी जारी किये। इन ही के यत्न से सन १८३५ में कलकत्ते में मेडिकल कालेज क़ाइम किया गया।

पहले यहां से इंगलैन्ड जाने की राह उत्तमाशा अन्तरीप से घूम कर जाने की थी, लौर्ड बेन्टिंक के अमल में लाल सागर और भूमध्य सागर के बीच ही कर राह निकाली गई। लौर्ड ऐम्हर्स्ट ने दिल्ली के बादशाह से कहा था कि अब अंगरेज़ लोग हिन्दुस्तान के बादशाह हुए, और अब तइमूर के घरानेवाले बादशाह नहीं गिने जाते। इस बात से बादशाह बहुत रंज हुआ और अपनी साबिक़ शान औ शौकत और इज़्ज़त बनाये रखने के लिये लौर्ड बेन्टिंक के

समय में उस ने राजा राममोहन राय को बतौर वकील के इंगलैन्ड भेजा। राममोहन राय जात के ब्राह्मण थे। इन के पहले कोई हिन्दू अपने समाज से छूट जाने के डर से इंगलैन्ड नहीं गया था। राममोहन राय ने पहले पहल वेदान्त के ब्राह्म धर्म को भी नये तौर से चलाया था। ये बड़े ही बुद्धिमान थे, और बहुतेरी भाषाओं में दख़ल रखते थे। इंगलैन्ड जाकर उन्हों ने खूब इज़्ज़त हासिल की। वह जिस मुराद से वहां गये थे वह तो पूरी न हुई परन्तु बादशाह की पेन्शन दो लाख रुपये और बढ़वा दी। इंगलैन्ड ही में राममोहन राय मरे।

सन १८३३ में कम्पनी ने २० बरस के लिये फिर नई सनद ली। अब चीन में भी सब किसी को सौदागरी करने का अधिकार दिया गया। पहले मंदराज, बम्बई, और बंगाल तीन प्रेसीडेन्सी थे। अब बंगाल प्रेसीडेन्सी से उत्तर-पश्चिम प्रदेश अलग कर लिये गये, और आगरे प्रेसीडेन्सी में रक्खे गये। मंदराज और बम्बई प्रेसिडेन्सियों की तरह इस नई प्रेसिडेन्सी में भी एक गवर्नर और काउन्सिल के तीन मेम्बर नियत हुए परन्तु फिर कुछ दिनों के बाद ही यानी सन १८३५ में यह नियम बदल दिया गया, और उत्तर-पश्चिम प्रदेश एक लेफ़्टेनेन्ट गवर्नर के अधीन किये गये। इनके सिवाय और एक नियम यह बनाया गया कि मज़हब और क़ौम पर ख़याल न कर के लाइक़ होने से हर कोई हर किसी पद पर नियत हो सकता है।

सन १८३५ के मार्च महीने में लौर्ड बेन्टिंक साहिब इस

देश से जसकी मुटरी साथ ले इंगलैन्ड को सिधारे।

बेन्टिंक के बाद सर चार्ल्स मेट्काफ़ ने बरस दिन तक गवर्नर जनरल का काम अंजाम दिया था। इसके पहले अख़बारवाले जैसा जी में आता था वह लिख नहीं सकते थे—गवर्नमेन्ट के नियत किये हुए लोग जब तक देख न लेते थे तब तक कोई विषय छपने नहीं पाता था। मेट्काफ़ साहिब ने सन १८३५ के सेप्टम्बर महीने में अख़बारों को स्वाधीनता दे दी। इस उपकार की यादगारी के लिये देसियों ने उनके नाम से एक मकान "मेट्काफ़ हौल" तय्यार कराया था।

बारहवां अध्याय।

लौर्ड औक्लैन्ड।

१८३६—१८४२।

लौर्ड औक्लैन्ड सन १८३६ के मार्च महीने में कलकत्ते पहुंचे। इनके अमल में बराबर काबुल ही की लड़ाई हुआ की। इसके पहले मुहम्मद अब्दाली का पोता शाह शुजा काबल का बादशाह राज खो कर पहले तो रनजीत सिंह के फिर अंगरेज़ों के शरणागत हो लुधियाने में रहने लगा। दोस्त मुहम्मद नाम कोई दूसरा आदमी काबुल का बादशाह हो गया। इस समय इधर रनजीत सिंह ने कश्मीर, मुल्तान, लिया पेशावर वग़ैरह दख़ल कर लिया। इन जगहों में से पेशावर दोस्त मुहम्मद के भाई के तहत में था। दोस्त मुहम्मद जब आप रनजीत सिंह से पेशावर न ले सका तो उसने अंगरेज़ों को, बीच में पड़ कर इस लड़ाई को तय करा देने के लिये, लिखा। लौर्ड औक्लैन्ड ने रनजीत सिंह की नाराज़गी के डर से इस बात को मंज़ूर नहीं किया, और फिर कुछ दिनों के बाद दोस्त मुहम्मद को हुकूमत जतलाने वाली इबारत में एक चिट्ठी लिख भेजी। इस के कुछ पहले अंगरेज़ों के एल्ची बर्निस साहिब दोस्त मुहम्मद से सुलह करने के इरादे से काबुल गये हुए थे। दोस्तमुह-

म्मद इस चिट्ठी को पढ़कर आग बबूला हो गया। अंगरेज़ों से सुलह की आस छोड़ कर ईरान के शाह से सुलह कर ली। इन ही दिनों रूस का भी एक एल्ची ईरान में जोड़ तोड़ लगा रहा था। अंगरेज़ों ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि रूसी लोग ईरान और काबुल के बादशाहों की सहायता ले कर हिन्दुस्तान में पांव फैलायें। जो हो, औकलैन्ड ने उस घड़ी यही मुनासिब समझा कि शाह शुजा फिर काबुल के तख़्त पर बिठाया जाय, और यह देश अपने तहत में रहे। क्यों कि रूसियों के हिन्दुस्तान में आने का खटका सिवा अफ़ग़ानिस्तान हो कर किसी तरफ़ से नहीं हो सकता।

इन बातों को सोच बिचार औकलैन्ड साहिब ने दोस्तमुहम्मद से लड़ना ही ठाना, और रनजीत सिंह भी अंगरेज़ों की सहायता करने पर मुस्तइद हो गया। सन १८३८ के जून महीने में कम्पनी, रनजीत सिंह, और शाह शुजा में क़ौल करार हो कर सुलहनामा हो गया, फिर तुरत ही बड़ी धूमधाम से लड़ाई की तय्यारियां होने लगीं।

सन १८३८ के नवेम्बर महीने में अंगरेज़ी फ़ौजें सिंध हो कर काबुल की तरफ़ रवाना होने लगीं। सर जौन कीन साहिब सेनापति, और विलोबी, कौटन, सेल, आर पौटिंजर वग़ैरह उन के नाइब और मैक्नाटन साहिब एल्ची मुक़र्रर हो कर चले। अंगरेज़ी फ़ौजें पहाड़ी और जंगली राहों में बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें झेलती अफ़ग़ानिस्तान में पहुंचीं, और पहले क़न्दहार फिर ग़ज़नी तब काबुल को दख़ल कर लिया। दोस्तमुहम्मद पहले तो भागा, लेकिन पीछे कुछ सिपाहियों

को इकट्ठा कर दो चार लड़ाइयां लड़ा, पर अन्त को अंगरेज़ों की शरण में चला आया, और हिन्दुस्तान में आकर मन्सूरी में नज़रबंद रहा, और सालाना दो लाख रुपये पेन्शन पाने लगा। १८४०। शाह शुजा फिर काबुल के तख़्त पर बिठाया गया। निदान अब रूसियों का कुछ भी खटका न रहा। अब मुनासिब था कि अंगरेज़ी फ़ौज काबुल से हटा ली जाती। परन्तु अंगरेज़ लोग ऐसा न कर के फ़ौज समेत वहीं रहने लगे। बलवान और स्वाधीनता-प्रिय काबुलियों से बिदेसियों का ख़ास अपने शहर में शेख़ी और ढिठाई के साथ बिचरना देखा न गया। बारे सन १८४१ में सब के सब एक बारगी बिगड़ बैठे। दोस्तमुहम्मद के बेटे अक्बर ख़ां ने भी बलवाइयों का साथ दिया।

अंगरेज़ अपने बल के घमंड पर भूले हुए थे। भगवान किसी का घमंड नहीं रखता। अंगरेज़ों में जैसा ही घमंड था, वैसी ही इन्हों ने सज़ा भी पाई। सब के पहले बर्निस साहिब मारे गये। अक्बर ख़ां ने शहर में पैठ कर अंगरेज़ों की रसद पहुंचने की राह बंद कर दी, जब तो अंगरेज़ों के छक्के छूट गये, सुलह का पयाम भेजा। अक्बर ख़ां ने कहला भेजा कि इसीमें ख़ैर है कि शाह शुजा को तो हिन्दुस्ताम ले जाओ, और दोस्त मुहम्मद को काबुल भेज दो। अंगरेज़ों ने मन्ज़ूर कर लिया, और काबुल से चलने की तय्यारी की। इस अर्से में मैकनाटन अक्बर ख़ां के हाथ मारा गया। ख़ैर किसी तरह सन १८४२ की जनवरी में ४५०० सिपाही और ११००० बहीर के आदमियों ने हिन्दु-

स्तान को क्या चले मानो परलोक की राह ली। बर्फ़ से छुपी पहाड़ी राहों और घाटियों में जंगली और दग़ाबाज़ अफ़ग़ानों ने चारों तरफ़ से उन्हें घेर लिया। अंगरेज़ों से कुछ भी न बन आई, आख़िर सब के सब मारे गये—सिर्फ़ कई एक औरतें और लड़के क़ैद हुए, और ब्राउटन नाम एक अंगरेज़ और २० सिपाही मानो इस बिपत की कहानी सुनाने को जीते जागते जलालाबाद पहुंचे। हिन्दुस्तान में आने के बाद अंगरेज़ों का ऐसा अपमान और दुर्गत शायद कभी नहीं हुई थी।

लौर्ड औक्लैन्ड इस के बाद ही सन १८४२ के मार्च महीने में लौर्ड एलेम्बरा को अपना काम समझा इंगलैन्ड को चले गये।

लौर्ड एलेम्बरा।

१८४२—१८४४।

सिर्फ़ काबुल ही वाली फ़ौज की हिन्दुस्तान आते समय खुर्द काबुल नाम घाटी में यह दुर्गत हुई थी। बाक़ी जलालाबाद में सैल साहिब, ग़ज़नी में पामर साहिब, और कन्दहार में नौट साहिब उस समय भी अपनी अपनी फ़ौज के साथ जमे हुए थे। काबुलियों ने इन पर भी हमला किया था, पर ये बड़ी बहादुरी से अपनी रक्षा करते रहे—सिर्फ़ पामर ने अपने तईं उनके हवाले कर दिया।

इनके पहले सेनापति पौलक साहिब फ़ौज के साथ

जलालाबाद में गये हुए थे। इसी समय गवर्नर जनरल साहिब ने सेल, पौलक, और नौट को हुक्म दिया कि काबुल में जा कर अंगरेज़ कैदियों को छुड़ा लावें। सेल और पौलक लड़ते भिड़ते काबुल पहुंचे। नौट भी रास्ते में ग़ज़नी लूटता हुआ उन से जा मिला। काबुल पहुंच कर इन्हों ने सुना कि अकबर खां तो भाग गया और शाह शुजा बाग़ियों के हाथ मारा गया। पहले तो इन्हों ने जाते ही कैदियों को रहाई दिलाई। कैदियों में सेल साहिब की बीवी और बेटी भी थीं। सेल साहिब को इन के मिलने पर परले सिरे की ख़ुशी मिली। फिर तो अंगरेज़ों ने काबुलियों से जैसा चाहिये वैसा बदला लिया। इस देश को अपने अधिकार में रखना व्यर्थ समझ कर सरकारी सिपाह किलों को तोड़ती फोड़ती जय के पताके उड़ाती बड़ी धूमधाम के साथ हिन्दुस्तान को लौट आई। गवर्नर जनरल ने दोस्तमुहम्मद को भी अपने राज में जाने की आज्ञा दे दी। काबुल की लड़ाई में अंगरेज़ों ने हर तरह से ज़कें उठाईं, धन गया,—आदमी गये—अपमान भी हुआ।

बलूचिस्तान के रहनेवाले मुसल्मानों के एक फ़िर्के ने सन १७८६ में सिंध को जय कर लिया था। इन के घराने के लोग अमीर कहलाते हैं और अलग अलग उस सूबे के कई एक हिस्सों में स्वाधीन तौर से राज करते थे। इन में और अंगरेज़ों में जो सुलहनामा तआमील हुआ था उस में सिंध हो कर अंगरेज़ी सिपाह के लेजाने का ज़िक्र नहीं था। काबुल की लड़ाई में लौर्ड औकलैन्ड के उस देश हो

कर फ़ौज लेजाने के कारण अमीर लोग नाराज़ हुए। और उस लड़ाई में अंगरेज़ों की हार का समाचार सुन कर बाज़े बाज़े अमीर अंगरेज़ों से तन भी बैठे। सिंध के रेसीडेन्ट आउटरैम ने यह बात गवर्नर जनरल को लिख भेजी। उन्हों ने सन १८४२ में सेनापति सर चार्ल्स नेपियर को सिंध में भेजा। नेपियर साहिब की तहक़ीक़ात से प्रधान अमीर रुस्तमजी दोषी ठहराया गया। रुस्तमजी का भाई अली-मुराद नेपियर की सहायता से अपने भाई को निकाल बाहर कर आप मस्नद पर बैठ गया। पर और और अमीरों ने आउटरैम को बहुत घेरा, और रुस्तमजी की निर्दोषिता साबित करके बहुतेरा कहा सुना कि फिर वही मस्नद पर बैठे। परन्तु नेपियर कुछ भी ख़याल में नहीं लाया। निदान सन १८४२ की फ़रवरी में उन्हों ने आउटरैम पर हमला किया। आउटरैम और नेपियर दोनों ने मिल कर अपने मोर्चे म्यानी के मैदान में जमाये। लड़ाई शुरू हुई। अमीरों ने शिकस्त खाई। सिंध अंगरेज़ों के अधि-कार में आ गया। सर चार्ल्स नेपियर वहां के प्रधान कमि-श्नर नियत हुए। अभी यह सूबा किसी प्रेसीडेन्सी के शामिल नहीं रक्खा गया, बल्कि नियम बहिर्भूत प्रदेश के तौर से रहा। १८४३।

ज्यों ही सिंध की लड़ाई ख़तम हुई कि गवर्नर जनरल को गवालियर के बखेड़ों में उलझना पड़ा। दौलतराव सिं-धिया के मरने पर उस के दत्तक पुत्र झनकूजी ने बहुत दिनों तक राज किया। यह भी निस्सन्तान ही मरा।

सन १८४३ ई० में उस की विधवा ने एक लड़के को गोद लिया। यह विधवा और वह लड़का—दोनों के दोनों बहुत ही अल्पवयस्क थे। इस लिये राज की ख़बरगीरी के लिये झुनकूजी की मा और चचा में तकरार शुरू हुई। अंगरेज़ उस के चचा की तरफ़ हुए। पस महारानी और अंगरेज़ों में बिगाड़ हुआ।

इन दिनों पंजाब के सिक्खोंने भी सर उठाया था। गवर्नर जनरल ने इस डर से कि कहीं गवालियर की मरहटी फ़ौज इन से न आ मिले, पहले मरहटों ही को सर कर लेना मुनासिब समझा और सेनापति सर हिउ गफ़के साथ गवालियर को कूच किया। महाराजपुर में मरहटी फ़ौज ने अंगरेज़ी सिपाह का मुक़ाबला किया। इस लड़ाई में अंगरेज़ों ने हर-चंद पहले ज़कें उठाईं, पर अन्त को जय पाई पै पाई। (डिसेम्बर, सन १८४३) उसी दिन पनियार गांव में सेनापति ग्रे ने भी मरहटों की एक दूसरी फ़ौज को शिकस्त दी। इन दो दो लड़ाइयों में शिकस्तें खा जाने से मरहटों की कमर टूट गई। लाचार अंगरेज़ोंकी इताअत क़बूल कर लेनी पड़ी। गवर्नर जनरल इस राज की स्वाधीनता छीन कर और ख़िराज अदा करने वग़ैरह का सब प्रबंध कर कलकत्ते लौट आये।

सन १८४४के फ़रवरी महीनेमें कलकत्ते पहुंचते ही उन्हीं ने क्या सुना कि डिरेक्टरों ने उन्हें मौक़ूफ़ कर के लौर्ड हार्डिंज को उनकी जगह पर बहाल किया है। लौर्ड एलेम्बरा और डिरेक्टरों में बहुत दिनों से मनमुटाव चला आता था। इसी से लौर्ड एलेम्बरा चिट्ठी पत्री में उनका पूरा सन्मान

नहीं करते थे, अक्सर उन की आज्ञाओं को टाल कर लड़ाई भिड़ाई किया करते थे, और सिविलियनों की खूब ख़बर लेते थे। इन ही सब कारणों से उन की माज़ूली का हुक्म आया।—उसी साल औगस्ट में वह इंगलन्ड सिधारे। इनके राज में काउन्सिल के प्रधान मेम्बर बौर्ड साहिब के यत्न से कई एक अच्छे अच्छे काम अमल में आये, जिन में से एक तो यह है कि गुलाम लौन्डियों की ख़रीद फ़रोख़्त उठा दी गई।

लौर्ड हार्डिंज।

१८४४—१८४७।

लौर्ड हार्डिंज सन १८४४ में यहां आये। ये नामी डिउक औफ़ वेलिंगटन के अधीन वाटरलू की लड़ाई में लड़ाई के काम पर नौकर थे। उस लड़ाई में उनका एक हाथ कट गया था। इसी कारण से यहां के लोगों ने उनका नाम "हथकटे गवर्नर" रक्खा था। ये काम पर नियत होते ही सिक्खों की लड़ाई पर गये।

पंजाब का राजा रनजीत सिंह लिखना पढ़ना कुछ भी नहीं जानता था, परन्तु बड़ा ही बुद्धिमान, समझदार, और चालाक था। हरचंद उसके अधीन इस समय ख़ालसा नाम ८० हज़ार एक से एक हेकड़ सिपाही थे तो भी उसने कभी अंगरेज़ों से बिगड़ने का ख़याल तक नहीं किया। यह उस को पूरा निश्चय था कि किसी न किसी समय अंगरेज़ ही सारे हिन्दुस्तान के निकंटक बादशाह होंगे। इसी कारण

से उसने एक बार हिन्दुस्तान के नक़शे में अंगरेज़ी अमलदारी का लाल रंग देख कर कहा था कि "धीरे धीरे तमाम लाल हो जायगा"। सन १८३९ में रनजीत सिंह परलोक को सिधारा। उसके तीन बेटों में से बड़े खड़ग सिंह ने गद्दी पर दो ही चार महीने बैठने के बाद प्राणत्याग किया। उस के मरने ही के दिन उसका बेटा नौनेहाल सिंह भी गिरते हुए फाटक से दब कर मर गया। इस के बाद रनजीत सिंह के मंझले बेटे शेर सिंह ने गद्दी पाई, और बापके प्यारे मन्त्री ध्यान सिंह को अपने काम पर बहाल रक्खा। कुछ दिनों के बाद मन्त्री और राजा में झगड़ा हुआ। मन्त्री ने राजा और उसके बेटे को मार डाला, (१८४३) और फिर आप भी किसी दूसरे से मारा गया। और रनजीत सिंह का छोटा बेटा दिलीपसिंह गद्दी पर बैठा, और ध्यान सिंह का बेटा हीरा सिंह उसका मन्त्री हुआ। दिलीप सिंह की अवस्था इस समय कुल बरस पांच एक की थी। इस लिये उसकी मा चंद्रावती (या झिंदा) राजकाज का इन्तिज़ाम करने लगी। कुछ दिनों के बाद हीरा सिंह अत्याचार करने के कारण मारा गया। सन १८४५ में तेज सिंह सेनापति और रानी का यार लाल सिंह मन्त्री हुआ। गरज़ इस समय पंजाब के सारे कारखाने बिल्कुल अन्तर जन्तर हो रहे थे।

रनजीत सिंह के मरने के बाद ही उसकी खालसा फौज हाथ बाहर हो गई, किसी का दबाव नहीं मानती थी। सिक्खों के सरदारों ने सोचा कि इस फौज को लड़ाई में न उलझाये रखने से यह देशको तबाह कर डालेगी। इस लिये जब फौज ने अंग-

रेज़ी अमलदारी पर चढ़ाई करने का मंसूबा किया तो उन्हों ने भी उसका साथ दिया। लौर्ड हार्डिंजने बहुतेरा चाहा कि समझाने बुझानेसे लड़ाई निबट जाये। पर सिक्खोंने न माना। लौर्ड हार्डिंज ने पहले ही से अपने इलाक़ों के सिवाने पर सतलज नदी और मेरट के बीच फ़ौजें भेज रक्खी थीं। सन १८४५ की ११वीं डिसेम्बर को सिक्ख सतलज पार उतर कर अंगरेज़ी अमलदारी पर चढ़ आये। हार्डिंज ने लड़ाई का इश्तिहार दे दिया, और आप लड़ाई के मैदान में पहुंचा। सिक्खों ने फ़ीरोज़पुर दख़ल कर लेना चाहा था, परन्तु वहां से १० कोसके फ़ासले पर मुदकी में अंगरेज़ों ने अपने मोर्चे जमा रक्खे थे। वहीं लड़ाई हुई। अंगरेज़ी सिपाही सर हिउगफ़ के अधीन ११००० और सिक्खों की तरफ़ ३०००० थे। तो भी अंगरेज़ों ही ने जय पाई, और शत्रु की १७ तोपें छीन लीं। जलालाबादवाला नामी बहादुर सेल उस दिन की लड़ाई में मारा गया। १८४५—१८वीं डिसेम्बर।

इस के बाद मुदकी और फ़ीरोज़पुर के बीचोंबीच फ़ीरोज़शहर में ५० हज़ार के लगभग सिक्खों की फ़ौज इकट्ठी हुई—इन के पास प्रायः सौ तोपें थीं। गवर्नर जनरल साहिब वहां लड़ाई के लिये डट गये। सेनापति सिटलर ने फ़ीरोज़पुर से आकर ५००० सिपाहियों के साथ कुमक पहुंचाई। २१वीं डिसेम्बर को शाम के कुछ पहले लड़ाई शुरू हुई और सारी रात हुआ की। अंगरेज़ी सिपाही मारे जाड़े और भूख के बहुत ही कमज़ोर हो ही गये थे। अन्तको पौ फटते फटते

गफ़ और हार्डिंज ने बड़ी बहादुरी के साथ लड़ कर शत्रु को फ़ीरोज़शहर से मार हटाया, और उनकी ७२ तोपें छीन लीं। इस लड़ाई में सिक्खों ने भी खूब बहादुरी दिखलाई—सारी अंगरेज़ी फ़ौज का प्रायः सातवां हिस्सा मारा गया और घायल हुआ। दिन को सिक्खों का सेनापति तेज सिंह एक नई फ़ौज ले कर चढ़ आया, पर शिकस्त खा कर उल्टे ही पांव हट गया। अंगरेज़ी सिपाह इस समय इतनी थक कर कमज़ोर हो गई थी, कि शत्रु का पीछा तक न कर सकी। बारे सिक्ख लोग बेखटके सतलज पार उतर गये।

इस के बाद एक महीने के अन्दर ही फिर सिक्खों की फ़ौज सतलज पार उतर कर चढ़ आई—इस दफ़े गुलाब सिंह सेनापति थे। स्मिथ साहिब ने इन से लड़ने को कूच किया,—परन्तु कुछ फल नहीं निकला—बलकि सिक्खों की तोपों के सामने पड़ कर बहुतेरे सिपाहियों ने जानें खोईं। इस से सिक्खों ने अपने तईं जयी समझा। स्मिथ साहिब ने दूसरी बार सन १८४६ में फिर सिक्खों पर चढ़ाई की और १८वीं जनवरी को अलीवाल के मैदान में उन के खूब दांत खट्टे किये। सोबरायन में फिर एक लड़ाई हुई—उस में स्मिथ और गफ़ दोनों ने मिल कर सिक्खों को फ़ाश शिकस्त दी। इस के बाद अंगरेज़ों ने सतलज पार उतर कर क़सूर में जा के छावनी डाली। और गवर्नर जनरल ने इश्तिहार दिया कि पंजाब सरकारी अमलदारी में मिला लिया जायगा, और वहां के राज का इन्तिज़ाम अंगरेज़ी ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ हुआ करेगा। सिक्खों के सरदारों ने गुलाब सिंह को

मध्यस्थ मान कर सुलह का पयाम भेजा। नीचे लिखे अनुसार सुलहनामा तआमील हुआ—

(१) सतलज और व्यासा नदियों के बीच जलन्धर दोआब अंगरेज़ोंके अधिकार में रहे। (२) दिलीप सिंह पंजाब का राजा हो, और जब तक यह नाबालिग़ है तब तक एक अंगरेज़ रेसीडेन्ड की सलाह से सल्तनत का इन्तिज़ाम किया जाय। (३) सिक्ख लोग लड़ाई का ख़र्च दें। (४) इस नई सल्तनत की हिफ़ाज़त के लिये लाहौर में एक रिसाला अंगरेज़ी सिपाहका रहा करे। वग़ैरह।—बर वक़्त लड़ाई का ख़र्च अदा करना सिक्खों के लिये मुश्किल हुआ, लाचार उस के बदले उन्हें अंगरेज़ों को कश्मीर का सूबा दे देना पड़ा। अन्त को गुलाब सिंह ने करोड़ रुपयों पर जम्बू का राज ख़रीद लिया। १८४६, डिसेम्बर।

ग़िलफ़ेल तो इस तौर से सिक्खों की लड़ाई तय पा गई। बहुतेरों का यह ख़याल है कि इस लड़ाई में अंगरेज़ों ने सिक्खों के सरदारों को मिला लिया था, और उन सरदारों की दग़ाबाज़ी से अंगरेज़ों ने जय पाई। परन्तु जो हो इस लड़ाई में जय पाने का हाल सुन कर इंगलैन्ड के अफ़सरों ने बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की, और गवर्नर जनरल और सेनापति दोनों को अच्छे अच्छे इज़्ज़तदार ख़िताब दिये, और सिपाहियोंको १२ महीनोंका भत्ता इनआम दिया।

इस के बाद लौर्ड हार्डिंज ने राज के प्रबंध की तरफ़ ध्यान दिया,—कई एक अच्छे अच्छे काम अमल में आये।

बड़े बड़े शहरों में तिजारत के मालों पर पहिले जो महसूल लगता था, वह उठा दिया गया।

सन १८४८ के शुरू ही में लौर्ड हार्डिंज अपने देस को सिधारे। इन से हर कोई राज़ी और खुश था।

लौर्ड डलहाउसी।

१८४८—१८५६।

लौर्ड हार्डिंज के बाद लौर्ड डलहाउसी गवर्नर जनरल मुकर्रर हो कर सन १८४८ के जनवरी महीने में कलकत्ते पहुंचे। डलहाउसी का इरादा तो था कि लड़ाई झगड़ों को निबटा कर देश में अमन आमान और चैन चान की सूरत दिखलायें, परन्तु यह होने न पाया—तुरत ही उन्हें कई एक लड़ाइयों के लिये तत्पर होना पड़ा, जिनमें से मुल्तान की लड़ाई पहली है।

रनजीत सिंह ही के समय से मुल्तान सिक्खों के हाथ में था। सन १८४८ में मूलराज वहां का हाकिम मुकर्रर हुआ। लाहोर के दरबार से मुल्तान के राज की आमदनी और खर्च का हिसाब किताब तलब किया गया। इस पर मूलराज ने काम छोड़ देने का इरादा प्रगट किया। खान सिंह एक लाहोरी सिक्ख उस की जगह पर नियत हुआ। खान सिंह मुल्तान जाते समय ऐग्निउ और ऐन्डर्सन साहिबों को अपने हमराह लेता गया। मुल्तान में पहुंचते ही मूलराज की साज़िश से ये दोनों अंगरेज़ मारे गये, और

मूलराज खुलमखुला बिगड़ गया। सेनापति ह्यूस साहिब बहावलपुर के नव्वाब की सहायता लेकर बागियों से खूब लड़ा, मूलराज ने हर जगह शिकस्त खाई, और अन्त को किले में भागकर पनाह ली। फिर कई एक लड़ाइयों के बाद उसने अपने तईं अंगरेज़ों के हवाले किया और क़ैद कर लिया गया। मुल्तान में रक्षा के लिये कुछ अंगरेज़ी फ़ौज रख दी गई। जनवरी, १८४९।

जिस समय मुल्तान में यह बखेड़ा मचा हुआ था, उसी समय सिक्खों ने अंगरेज़ों को मार डालने और पंजाब से निकाल बाहर करने की कई एक जगहों में साज़िशें कीं। परन्तु भेद खुल गया। और महारानी पर शुबहा होने के कारण वह बनारस भेज दी गईं। इस साज़िश के शरीक हज़ारे का हाकिम चतर सिंह और उस का बेटा शेर सिंह भी था। सेनापति गफ़ को जब यह ख़बर मिली, उसने चट उन की तरफ़ कूच किया, और व्यासा के किनारे चेलियानवाला में अपने मोर्चे क़ाइम किये, और वहीं लड़ना शुरू किया। सिक्ख कैसी बहादुरी से लड़ते हैं—और किस फुर्ती के साथ गोले बरसाते हैं उस का मज़ा गफ़ साहिब खूब चखे हुए थे, और इस बार भी उन्हीं ने खूब चखा। इस लड़ाई में अंगरेज़ों के बहुत सिपाही काम आये। इस के बाद सन १८४९ की २१वीं फ़रवरी को गुजरात नाम शहर में फिर एक सख़्त लड़ाई हुई। इस में ह्यूस वगैरह बड़े बड़े सेनापतियों ने मुल्तान जीत कर अंगरेज़ों को कुमक पहुंचाई थी। इस लड़ाई में अंगरेज़ जयी हुए। ८वीं मार्च को शेर सिंह सब मुफ़्सिदों समेत अंगरेज़ों की सेवा में चला आया।

२८वीं मार्च को दिलीप सिंह ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर के पंजाब का राज और विख्यात कोहनूर हीरा अंगरेज़ों के सुपुर्द किया, और आप ५ लाख रुपयों की पेन्शन मुक़र्रर करा ईसाई मज़हब अधिकार कर इंगलैन्ड में जा कर रहने लगा। ऐग्निउ और ऐन्डर्सन के मार डालने के जुर्म में मूलराज सारी ज़िन्दगी के वास्ते कालेपानी भेजा गया। पंजाब का इन्तिज़ाम नियम वहिर्भूत प्रदेश के तौर से एक बोर्ड यानी सभा के अधीन रक्खा गया। इस लड़ाई के ख़तम हो जाने पर डलहाउसी ने एक इज़्ज़तदार ख़िताब पाया। पंजाब की लड़ाई के बाद बरस तीन एक तक हिन्दुस्तान में तमाम अमन रहा।

फिर बर्मावालों से लड़ाई शुरू हुई। सन १८५१ में बर्मावालों पर न मालूम क्या शामत सवार हुई कि उन्हों ने रंगून के सरकारी अंगरेज़ नौकरों पर अपना ज़ोर ज़ुल्म जताना शुरू किया, बलकि एक को पकड़ ले जा कर बहुत ज़लील किया। इस ख़बर को सुन कर गवर्नर जनरल बहुत नीले पीले हुए। पहले तो उन्हों ने एक एल्ची भेज कर लड़ाई का निबटारा कर डालना चाहा, परन्तु जब उन की यह चेष्टा सफल न हुई तो सन १८५२ के एप्रिल महीने में कमोडोर लेम्बर्ट और गौडविन साहिबों के कमान में ख़ुशकी और तरी दोनों राहों से फ़ौजें भेजीं, और दोनों तरफ़ से बर्मा पर चढ़ाई कर के राजा के होश ठंडे कर दिये, और पैगूका सूबा ले कर सुलह कर ली। १८५३। अब वह देश ब्रिटिश बर्मा कहलाता है, और एक कमिश्नर के अधीन है।

बराड़ की राजधानी नागपुर का राजा रघुजी भोंसला (२रा) सन १८५३ में परलोक सिधारा। इसे कोई लड़का बाला नहीं रहने के कारण इस की रानियों ने पोष्य-पुत्र लेना चाहा। परन्तु डलहाउसी ने लेने नहीं दिया, और उसका सर्वस्व छीन कर उस देश को सरकारी अमलदारी में मिला लिया।

अवध अंगरेज़ों का मित्रराज्य था। सन १८०१ में वेल्स्ली के अमल में नव्वाब सआदतअली से जो ओहद ओ पैमान हुआ था, उसमें एक बात यह भी थी कि राज का प्रबंध अच्छी तरह से हुआ करेगा। परन्तु कुछ दिनों के बाद सल्तनत की बड़ी ही बद-इन्तिज़ामी हुई। इस समय नव्वाब वाजिदअली के अमल में बद-इन्तिज़ामी की और भी उन्नति हुई। इसे क़ैसरबाग़ में दिन रात ऐश से काम था, सल्तनत का सिर्फ़ एक नाम था। सल्तनत की तरफ़ से नव्वाब की इस बेख़बरी के हालों को रेसीडेन्ट स्लीमैन और जेम्स आउटरैम ने बराबर सरकार में लिखा किया। डलहाउसीने इस बारे में इंगलैन्ड लिखा, और वहां से हुक्म आने पर सन १८५६ में अवध को भी सरकारी अमलदारी में मिला लिया। और पेन्शन मुक़र्रर कर के नव्वाब वाजिद-अली को कलकत्ते में नज़रबन्द रक्खा। पंजाब की तरह अवध में भी एक कमिश्नर नियत हुआ।

पंजाब, पैगू, नागपुर, अवध चार चार सूबों के ले लेने पर भी डलहाउसी की अमलदारी बढ़ाने की प्यास नहीं बुझी—उन्हीं ने हैदराबाद के निज़ाम से राइकड़ के दोआब

वगैरह कई एक जगहें, और शिकम के राजा से शिकम और मोरंग मांग लिया, और इन के सिवाय अवध की तरह कटक के पास का अंगूल राज को भी ज़ब्त कर लिया।

आठ बरस तक राज करने के बाद डलहाउसी सन १८५६ के मार्च में इंगलैन्ड को सिधारे। इन के समय में बहुतेरी भलाई की बातें भी बरती गईं। उन में से सब से बड़ी बात रेलवे का जारी होना है। डलहाउसी की कोशिश से सन १८५१ में रेलवे कम्पनी क़ाइम की गई, और सन १८५४ की १ली सेप्टेम्बर से हवड़े में रेलगाड़ी चलने लगी। अब तो हिन्दुस्तान में मकड़े की जाल सी तमाम रेलवे फैल गई, और फैली जाती है। इस से एक जगह से दूसरी जगह जाने आने में कितना सुबीता हुआ, कहा नहीं जा सकता। यों तो सरकारको रेलवेके कारखाने में कुछ देना नहीं पड़ता है, मगर इस कम्पनी के साझी अपने अपने रुपयों का जो पांच रुपये सैंकड़े सूद पाते हैं, उस के लिये सरकार ज़ामिन है।

रेलवे के साथ ही साथ इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ़ यानी तार-बर्क़ी का भी प्रबंध किया गया। ये दोनों कारख़ाने जैसे ही काम के हैं, वैसे ही अनूठे भी हैं।

पहले डाक में चिट्ठी का महसूल जगह की दूरी के हिसाब से लगता था। परन्तु डलहाउसी की कोशिश से हिन्दुस्तान में तमाम का एक महसूल हो गया। नक़्द पैसे देने के बदले टिकट सांट कर चिट्ठी भेजने का नियम भी इन्हीं के समय से जारी हुआ।

लोर्ड डलहाउसी ने १८५४ में इंगलैन्ड के अफ़सरों की इजाज़त से शिक्षा विभाग का नया बन्दोबस्त किया। इसी बन्दोबस्त के अनुसार डिरेक्टर और स्कूलों के इन्स्पेक्टर नियत हुए, और मदद़ी स्कूल होने के नियम जारी होने से गांओं में भी अंगरेज़ी और देसी दोनों भाषाओं के इल्मों की चर्चा फैली।

रेलवे का कारखाना शुरू होने के बाद सरकारी युरोपियन नौकरों ने बिहार के सौंताल नाम जंगली क़ौम पर ज़ियादती की। उन्हों ने सन १८५६ में डंका बग़ावत का बजा दिया। परन्तु डलहाउसी ने तुरत इन्तिज़ाम करके उन को सर कर दिया।

लोर्ड डलहाउसी ही के राज में (१८५३) ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने आख़िरी सनद ली। इसके अनुसार—(१) ३० की जगह १८ डिरेक्टर रहे, उन में से भी ६ बादशाह की तरफ़ से नियत हुए। (२) सिविल ओहदों पर सिर्फ़ हेलीबरी कालेज ही के पास किये हुए लोगों के नियत होने का नियम हुआ। (३) मेकोले साहिब का बनाया हुआ फ़ौजदारी के लिये ताज़िरात हिन्द अमल में आया। (४) बंगाले और पंजाब में एक एक लेफ़्टेनेन्ट गवर्नर के रहने का हुक्म हुआ। (५) महारानी का सूप्रिम कोर्ट और कम्पनी की सदर दिवानी अदालत मिला दी जावे। वग़ैरह।

तेरहवां अध्याय।

लौर्ड कैनिंग।

१८५६—१८६२।

लौर्ड डलहाउसी के बाद लार्ड कैनिंग हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हुए, और १८५६ ई० के फ़रवरी महीने में कलकत्ते पहुंचे। १८३७ ई० में ईरानियों ने रूसियों से मिल कर हिरात पर चढ़ाई की थी पर अंगरेज़ों के रोकने से सफल न हुए। इसी कारण वह बराबर अंगरेज़ों से ख़ार खाते थे। रूसी शहनशाह के बहकाने से अंगरेज़ों के साथ उन की अदावत बढ़ते बढ़ते यहां तक बढ़ गई कि अन्त को लड़ाई की नौबत पहुंची। इस लड़ाई पर सर जेम्स आउट्रैम भेजे गये, और इन्हीं ने लड़ कर उन पर जय पाई। १८५७ ई० की ४थी मार्च को सुलह हुई, उस में ईरानियों ने अंगरेज़ों को छेड़ने के लिये पछतावा किया, और हिरात और अफ़ग़ानिस्तान पर जो दावी करते थे उस से बाज़ आये।

इस समय सौदागरी के बारे में कुछ झगड़ा हो जाने के कारण चीनियों ने भी अंगरेज़ों का अपमान किया था। इस का बदला लेने को इंगलैन्ड से फ़ौज के साथ लौर्ड एल्गिन भेजे गये। उन्हों ने लड़ाई में फ़तह हासिल

की, और चीन के बादशाह से मेल करके अंगरेज़ों के लिये सौदागरी के सब अधिकार पाये। यहां पर यह बात इस लिये लिखी गई कि लौर्ड एल्गिन चीन जाते वक्त सिपाहियों का ग़दर दूर करने के लिये अपनी फ़ौज का कुछ हिस्सा हिन्दुस्तान में भी रखते गये थे।

अब सिपाहियोंके ग़दर का हाल लिखा जाता है।—इस ग़दर के तीन कारण कहे जाते हैं। (१) १८५६ ई० में सरकार का हुक्म हुआ कि अब सिपाही लोग किसी ख़ास जगह के लिये मुक़र्रर नहीं होंगे। अगर ज़रूरत होगी तो क्या दूसरा देश, और क्या समुद्र का पार—तमाम जाना पड़ेगा। जहाज़ पर चढ़ना हिन्दू शास्त्र में मना है, इस लिये इस हुक्म से हिन्दू सिपाहियों के दिलों में नाराज़गी पैदा हुई होगी।—(२) नागपुर, सितारा, झांसी, अवध वग़ैरह की सल्तनतें छिन जाने के कारण अंगरेज़ों की काररवाइयों पर लोगों को सन्देह होने लगा, और सब को इन की तरफ़ से खटका हो गया।—(३) सारे देश में एक अफ़वाह उस समय यह भी उड़ा कि "गाय और सूअर की चर्बी से एक तरह के टोटे बनते हैं, उन ही टोटों को अब दांतों से काट कर राइफ़्ल नाम नई क़िस्म की बन्दूकें भरनी पड़ेंगी, और इसी तरह जात ले कर हिन्दू और मुसल्मान दोनों को क्रिस्तान करने के लिये अंगरेज़ उपाय कर रहे हैं।" सिपाहियों के बिगड़ने के बहुत करके ये ही तीन कारण मालूम होते हैं। पहले पहल बहरमपुर की १९ नम्बर की पल्टन के सिपाही बिगड़े, फिर बराकपुर में

बिगड़ने के लक्षण देखे गये। ये दोनों जगहों के सिपाहियों से हथियार रखवा लिये गये और सब के सब काम से छुड़ा दिये गये।

इस के बाद ही तुरत मेरट में बड़े ज़ोर शोर से ग़दर की आग भड़क उठी। १८५७ की १०वीं जून को कई एक सिपाही, जिन्हों ने उन टोटोंको काटने से इन्कार किया, क़ैद किये गये। इन्हें रिहाई दिलाने के लिये देसी फ़ौजें प्रायः सब को सब बिगड़ बैठीं—वहां के सब ही अंगरेज़ों को उन्होंने नाश कर डाला, शहरको लूट लिया और जला कर ख़ाक कर दिया, और फिर दिल्लीकी तरफ़ कूच किया। दूसरे दिन ११वीं जून को दिल्ली की भी वही गत करके इस शहर को अपने अधिकार में कर लिया। पुरानी राजधानी दिल्ली दख़ल हो जाने की ख़बर सुनकर तमाम के सिपाही बिगड़ गये, और लूट मार करनी शुरू कर दी। फ़ीरोज़पुर, बरेली, कान्हपुर, झांसी, बनारस, इलाहाबाद वग़ैरह तमाम से सिपाहियों के बिगड़ने की ख़बरें आने लगीं। इस समय यह भी प्रगट हुआ कि दिल्ली में मुग़लों के शाही घराने वाले मुहम्मद बहादुर, सितारे की रानी का पोसपूत नाना साहिब, उन के मित्र अज़िमुल्लाह, अवध की बेगम, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, जगदीसपुर के (ज़िला शाहाबाद) कुंअर सिंह, और दखन का एक अदना मरहटा दूकानदार तांतीया टोपी और दूसरे दूसरे सरदारों ने जो अंगरेज़ी राज से कई एक सबबों से नाराज़ थे, बाग़ियों का साथ दिया है।

नाना साहिब या धुंधुपंत के अधीन बाग़ियों ने ६ठी जून

में २७वीं जून तक लड़कर कान्हपुर अधिकार किया, और बड़े निठुरपन के साथ वहां युरोपियनों के बालबच्चे और स्त्रियां प्रायः सब के सब को मार डाला। फिर सेनापति हैव्लौक और कर्नल नील ने १६वीं जूलाई को लड़कर कान्ह-पुर उद्धार कर लिया, और बागियों से पूरा बदला लिया।

इस के बाद हैव्लौक ने लखनऊ की तरफ़ कूच किया। सर हेन्री लौरेन्स अब तक उस जगह को बचाये हुए थे। २री जूलाई को गोले के फटने से उन के परलोक सिधारने पर और और अंगरेज़ों ने भी अपनी खूब रक्षा की। फिर हैव्लौक वहां पहुंच के खूब लड़ा, और फिर २५वीं सेप्टेम्बर को लखनऊ अंगरेज़ों के हाथ आया। साहसी कर्नल नील इस लड़ाई में मारा गया।

लखनऊ दखल होने के ५ दिन आगे बागियों की असल जगह दिल्ली भी सेनापति विल्सन की चतुराई से अंगरेज़ों के हाथ आ गई। यहां भी अंगरेज़ों ने सिपाहियों के अत्याचारों का पूरा बदला लिया। कई एक महीनों के बाद दिल्ली के बूढ़े बादशाह मुहम्मद बहादुर बर्मा में शहर-बदर किये गये। वहीं ये मरे।

दिल्ली अधिकार हो जाने के बाद बागियों का ज़ोर और हौंसला घट गया। फिर तो यह दशा हुई कि सिर्फ़ उन के भागने और फांसी पड़ने की ख़बरें आने लगीं। सर कालिन कैम्बेल ने १८५८ के मार्च में लखनऊ को अच्छी तरह से बेख़ौफ़ और ख़तर कर दिया।

१८५७ साल के ओक्टोबर महीने में गोवालियर में ग़दर

हुआ। १८५८ साल के शुरू ही में बम्बई से सर हिऊरोज़ ने झट वहां पहुंच कर पहले झांसी का किला ले लिया। रानी भाग गईं, परन्तु गोवालियर पर चढ़ाई करने के समय मारी गईं। जून के महीने में गोवालियर फिर दखल हुआ। तांतीया टोपी भाग निकला था, पर फिर गिरफ़्तार हो गया। तांतीया टोपी कान्हपुर के क़त्ल का मुजरिम ठहराया गया, और १८५९ साल में फांसी पड़ा। नाना साहिब का पता न लगने पाया।

गोवालियर दखल होने के बाद ही ग़दर एक तरह से मिट गया—सरदारों में से कोई मारा गया कोई भाग गया, इसी से बाग़ियों का जी छूट गया। इस ग़दर के समय लोर्ड कैनिंग की उदारता देख के देसी लोग बहुत ही खुश हुए। उस समय के अंगरेज़ एडिटरों ने हिन्दुस्तान के सब ही आदमियों को बाग़ी कहना शुरू किया, और सरकार को क्या सलाह देने लगे कि सब हिन्दुस्तानियों को सज़ा दी जावे। इसी कारण लोर्ड कैनिंग ने कुछ दिनों के लिये अखबारों की स्वाधीनता ले ली। कलकत्ते और दूसरी दूसरी जगहों के अंगरेज़ जिस तरह सब ही हिन्दुस्तानियों के विरुद्ध तलवार खींचे हुए थे, वैसे लोर्ड कैनिंग न थे। उन्हों ने इस बलवे को सिपाहियों की बग़ावत के सिवा सब हिन्दुस्तानियों की बग़ावत कभी ख़याल तक न किया। इसी लिये वह सिर्फ़ बाग़ियों ही को सज़ा करते थे। उन में भी जो लोग खुशी से बाग़ी हुए थे सिर्फ़ उन ही को सज़ा की गई, बाक़ी औरों को एक बारगी

मुआफ़ कर दिया। हरचंद लौर्ड कैनिंग ने इतनी उदारता दिखलाई, तौ भी गवर्नमेन्ट के बलवे के कड़े आईन के अनुसार ११ महीनों में तीन हज़ार से भी ज़ियादे आदमी फांसी पड़ गये।

गदर का हाल सुन कर इंगलैन्ड के बड़े बड़े अफ़सरों ने सोचा कि इतना बड़ा हिन्दुस्तान का राज कई एक सौदागरों के हाथ में रहने देना उचित नहीं। निदान १८५८ ई० को २री औगस्ट को महारानी विक्टोरिया ने इस राज का भार अपने हाथ में ले लेना मन्ज़ूर किया। इस कारण राजकाज में भी कुछ हेर फेर हुआ। हिन्दुस्तान के सब तरहों के कामों के देखने सुनने को इंगलैन्ड में एक स्टेट सेक्रेटरी नियत हुए। और १५ मेम्बरों की एक काउन्सिल यानी सभा उन के अधीन क़ाइम की गई, जिस का एक नियम यह हुआ कि आठ मेम्बर इस के ऐसे ज़रूर होंगे कि जो कम से कम १० बरस तक भी हिन्दुस्तान में काम कर चुके हैं। पहले पहल जनाब लौर्ड कैनिंग बहादुर ही महारानी विक्टोरिया के वाइसराय (राज-प्रतिनिधि) हुए। अपने हिन्दुस्तान का राज लेने के समय महारानी विक्टोरिया ने एक इश्तिहार जारी किया जो हिन्दुस्तान के प्राय: सब भाषाओं में तर्जुमा हो कर १८५८ साल की १ली नवम्बर को बहुत सी जगहों में पढ़ा गया। उसी १ली नवम्बर की रात को कलकत्ते वग़ैरह बड़े बड़े शहरों में तमाम ख़ूब रोशनी भी की गई थी।

बलवे को दूर करने में ख़ज़ाने के जमा होने में रुकावट

पहुंचने वगैरह के कारणों से सरकार को खर्च की बड़ी दिक़दारी हुई—और इसे दूर करने के लिये कई एक उपाय सोचे गये। अन्त को १८६० सालमें अर्थशास्त्र के जाननेवाले विल्सन साहिब हिन्दुस्तान के खज़ांची के तौर पर नियत होके आये। उन्हीं ने ५ बरस के लिये नफ़े का महसूल (इन्कम टैक्स) क़ाइम किया, और तिजारती के मालों पर भी कुछ कुछ महसूल बढ़ा दिया। इस के बाद लेंग साहिब जब खज़ांची हुए तो इन्हीं ने गवर्नमेन्ट के "करेन्सी नोट" चलाये, कि जिन के चल जाने से सरकार की आमदनी बहुत बढ़ गई। कुछ रुपये क़र्ज़ भी लिये गये। फ़ौज की संख्या घटा दी गई कि जिससे खर्च बहुत ही घट गया। इसी तरह कई एक उपायों से आमदनियों को बढ़ा और खर्चों को घटा सन १८६०-६१ में लेंग साहिब ने दिखला दिया कि सरकार का खर्च और आमदनी दोनों ४१ करोड़ के लगभग है।

जसोर, नदिया, पबना, फ़रीदपुर, वगैरह कई एक ज़िलों में बहुत दिनों से नील की खेती होती थी। यह खेती अक्सर युरोपियनों ही के द्वारा हुआ करती है। पहले यहां की प्रजा समझती थी कि ये राजा की ज़ात के हैं, इस लिये इन्हें अधिकार भी अधिक है। नीलहे अंगरेज़ कितनों ही उन पर अत्याचार करें ये सह लिया करते थे। अब यह बात सब को मालूम है कि नील की खेती प्रजा की खुशी पर है, और सरकार की तरफ़ से इस बात के लिये कुछ ज़बरदस्ती नहीं है। बारे बहुतों ने नील का दादन लेना बन्द कर दिया। फिर नीलहों के अत्याचार के समाचार सरकार के कानों

तक पहुंचा, और उस समय के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर ग्रैन्ट साहिब की कोशिशों से नीलहों के सब अत्याचार प्रगट हो गये। सारे बंगाले में एक हलचल मच गई। फिर इस के बाद से कुछ कुछ नीलहों का अत्याचार घटा।

लौर्ड कैनिंग के समय में सन १८६१ में पानी नहीं बरसने के कारण आगरे में अकाल पड़ा था। उसी अकाल के समय उस अतराफ़ की ज़मीनों की मालगुज़ारी अदा करने के बारे में नई किस्म का आईन बनाने का इरादा हुआ। उसी समय में क़ानूनी सभा (लेजिस्लेटिव काउन्सिल) में इस देश के अच्छे अच्छे आदमियों को मेम्बर बनाने की राय हुई, और उसी समय से देसी लोग उस सभा में मेम्बर मुक़र्रर होने लगे। उसी समय से "स्टार औफ़ इन्डिया" (सितारे हिन्द) नाम नया ख़िताब अच्छे अच्छे आदमियों को दिया जाने लगा। मितराजाओं का पोसपूत लेना जो डलहाउसी ने रोक दिया था इस से उन के दिलों में जो एक उदासी सी छाई हुई थी उसे इस समय लौर्ड कैनिंग ने पोसपूत लेने के हुक्म का इश्तिहार जारी कर के मिटा दिया। इन ही सब बातों को तय करके लौर्ड कैनिंग ने सन १८६२ के मार्च महीने में अपने देश की यात्रा की।

लौर्ड एल्गिन।

१८६२—१८६३।

लौर्ड कैनिंग के बाद लौर्ड एल्गिन हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हुए, और १८६२ के मार्च महीने में कलकत्ते पहुंचे। पहले ये ही लड़ाई के लिये चीन जाते समय ग़दर दूर करने को कुछ फ़ौज कलकत्ते में रखते गये थे। लौर्ड डलहाउसी ही के समय में कलकत्ते की सदर दिवानी और सुप्रिमकोर्ट को मिला कर हाईकोर्ट बनाने का प्रस्ताव किया गया था, परन्तु वह बात अब सन १८६२ में अमल में आई।

इस समय अमेरिका में लड़ाई होने के कारण वहां से इंगलैन्ड को जो रूई जाती थी, वह अब बन्द हो गई। इस से मैन्चेस्टर के सौदागरों को बहुत तक्लीफ़ हुई, और यहां कपड़े आग के भाव बिकने लगे। लौर्ड एल्गिन ने सोचा कि यह आफ़त जब दूर हो कि यहीं रूई खूब पैदा होने लगे। बारे उन्हों ने इस बारे की बहुत बहुत कोशिशें कीं। उसी समय में खेतीबारी की उन्नति करने के लिये बंगाले के लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर बीड्न साहिब ने अलीपुर में अपने मकान पर एक ऐसा मेला जमाने का सामान किया कि जिसमें खेती बारीकी अद्भुत अद्भुत चीज़ें दिखलाई जावें। १८६४ ई० की जनवरी में इस की नुमाइश हुई।

इस समय सिंध नदी के उस पार हिन्दुस्तान के उत्तर पच्छिम सरहद पर सिताना नाम की जगह में फ़साद बरपा हुआ। वहां वहाबी नाम एक क़िस्म के मुसल्मानों ने क्या

किया कि वहां के पहाड़ियों को बहका बहका कर उनके साथ अंगरेज़ी अमलदारी में फ़साद मचाना शुरू किया। अंगरेज़ों ने भी उन के सर करने को फ़ौजें भेजीं। लड़ाई हो ही रही थी कि इतने में लौर्ड एल्गिन एकाएक बीमार पड़े और १८६३ साल के नवम्बर महीने में हिमालय की तराई में धर्मशाला नाम जगह में प्राणत्याग किया।

सर जौन लौरेन्स।

१८६४—१८६८।

काबुल की लड़ाई के हाल याद पड़ने से सिताना वाली पहाड़ी क़ौमों की लड़ाई से इंगलैन्ड के अफ़सरों का जी कांप उठा, और चूंकि बलवे के समय सर जौन लौरेन्स ने अपना बल प्रगट किया था, इस कारण इस समय वही योग्य समझे गये, और गवर्नर जनरल बनाये गये। वह १८६४ के जनवरी महीने में कलकत्ते पहुंचे। परन्तु उनके आने के आगे मदरास के गवर्नर डेनिसन साहिब कई एक महीनों तक क़ाइम मुक़ाम गवर्नर जनरल नियत हुए थे। उन ही के समय में सिताना लड़ाई की आग अच्छी तरह बुझ बुझा चुकी थी।

बम्बई में इस समय रूई के रोज़गार में बड़ा नफ़ा था। इसी से बहुतों ने उस रोज़गारमें अपने अपने इतने रुपये फंसा दिये कि चांदी के सिक्के दुष्प्राप्य हो गये। इसी लिये सोने के सिक्के चलाने के लिये प्रस्ताव किया गया पर कई एक कारणों से यह बात होने न पाई।

१८२५ ई० में आसाम जय करने के समय भूटान के दक्खिन तरफ़ "दुआर" नाम एक संकड़ी राह अंगरेज़ों ने दख़ल कर ली थी। परन्तु इस के बदले में भोटियों को बतौर ख़िराज के कुछ दिया जाता था। पर भोटिये इसे धन्य न समझ कर अंगरेज़ी अमलदारी में आ आ के लूट मार किया करते थे, और इधर के लोगों को क़ैद कर ले जाया करते थे। इस फ़साद के दूर करने को १८६४ साल में ईडन साहिब बतौर एल्ची के वहां भेजे गये। परन्तु जंगली भोटियों पर कमबख़्ती क्या सवार हुई कि इन्हें अपने क़ाबू में पा कर ख़ूब ज़लील और अपने गौं की सुलह कर के ईडन साहिब से ज़बरदस्ती दस्तख़त बनवा लिया। फिर इस के बाद तुरत ही भोटियों से लड़ाई शुरू हुई और बराबर प्रायः दो बरस तक चली। अन्त को लाचार हो कर भोटियों ने सुलह करना मन्जूर किया। सन १८६५ में सुलह हुई— भोटिये दुआर की दावी से बाज़ आये, और अंगरेज़ उन्हें हर साल ५०००० रुपये देने को राज़ी हुए।

सन १८६४ के अक्टोबर महीने में तूफ़ान ऐसे ज़ोर शोर से आया कि प्रायः सारे बंगाल में बड़ी नुक़सानी हुई। पानी नहीं बरसने के कारण से दूसरे बरस उड़ैसे में ऐसा अकाल पड़ा कि क़रीब १० लाख आदमी भूखों मर गये।

राज का इन्तिज़ाम अच्छी तरह नहीं करनेका इल्ज़ाम लगा लौर्ड वीलियम बेन्टिंक ने मैसूर के राजा से राज छीन कर एक अंगरेज़ के सुपुर्द कर दिया था। राजा ने फिर राज पाने के लिये सब ही गवर्नर जनरलों के पास दरख़्वास्त

की थी। पर किसी ने न सुना था। अब राजा ने इस समय फिर पोसपूत लेने की और उसे अपने बाद गद्दी पर बिठाने की दरख़्वास्त की। सन १८६७ में स्टेट सेक्रेटरी नौर्थकोट ने इसे मन्ज़ूर कर के यह हुक्म दिया कि वह लड़का, जो गोद लिया गया है, बालिग़ होने पर अपना राज पायेगा।

हिन्दुस्तान में आइन्दे अकाल न पड़ने पायें, इस लिये सर जौन लौरेन्स ने हर प्रेसिडेन्सियों में तमाम नहरें खुद-वाने के बहुत यत्न किये बलकि इस के लिये एक आईन तय्यार कराया, लेकिन खर्च की ज़ेरबारी से ये प्रस्ताव अभी अमल में न लाये गये। सन १८६९ के शुरू ही में लौरेन्स साहिब ने अपने देश को कूच किया, और वहां पहुंच कर इज़्ज़त का खिताब पाया।

लौर्ड मेयो।

१८६९—१८७२।

लोर्ड मेयो हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल नियत हो के सन १८६९ के शुरू ही में कलकत्ते पहुंचे। काबुल का बाद-शाह दोस्तमुहम्मद खां बराबर अंगरेज़ों के कहने में रहा। सन १८६३ में उस के परलोक सिधारने पर तख़्त के लिये एक बड़ी हलचल मची। दोस्तमुहम्मद का इरादा था कि शेरअली नाम अपने बेटे को तख़्त दें, बलकि यही पहले तख़्त पर बैठा भी था। पर इन के बाद यह तख़्त से उतारा गया, लेकिन फिर इसने लड़ कर तख़्त दखल कर लिया।

लौर्ड लौरेन्स ने इस में कुछ भी दस्तन्दाज़ी नहीं की, लेकिन लौर्ड मेयो ने देखा कि घर की लड़ाई से मुल्क तबाह हुआ चाहता है अब इस दशा में दस्तन्दाज़ी करना अनुचित नहीं। बारे उन्हों ने सन १८६९ की २५वीं मार्च को अम्बाले में एक बड़ा दरबार किया, और वहां अमीर शेरअली को बुलाया, और उसे काबुल का बादशाह क़रार दे कर सालाना १२ लाख रुपयों से और ज़रूरत पड़ने पर हर्बेहथियार से सहायता करने की प्रतिज्ञा की।

लौर्ड मेयो के अमल में सरकारी खर्च से कई एक रेलवे तय्यार कराने की बात चलाई गई। इन ही के समय में बंगाले के लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर सर जौर्ज कैम्बेल के कई एक कालेज उठा देने से सब आदमी उन से नाराज़ हो गये थे, और खयाल करते थे कि सरकार को अब प्रजा की "ऊंची शिक्षा" नहीं सुहाती।

मेयो साहिब एक बार अन्डामन का टापू (काला पानी) देखने गये थे। वहीं सन १८७२ की ८वीं फ़रवरी को पोर्ट-ब्लेयर में शेरअली नाम एक मुसल्मान क़ैदी के हाथ मारे गये। उस के मारने का कारण नहीं प्रगट होने पाया। यह तो कहना ही फ़ज़ूल है कि उस दुष्ट ने अपने किये की पूरी सज़ा पाई।

लौर्ड नौर्थब्रूक।

१८७२—१८७६।

लौर्ड मेयो के मरने पर सर चार्ल्स नेपियर ने कई महीनों

तक काम अंजाम दिया, फिर लौर्ड नौर्थब्रूक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल मुकर्रर हो कर १८७२ के एप्रिल महीने में यहां आये। यह बड़े धनी हैं, इस से बहुतों ने समझा कि इन के यहां आने का उद्देश्य महज़ भलाई ही भलाई होगी। बलकि इन के इन्कम टैक्स उठा देने से हिन्दुस्तानियों की यह आशा और भी लहलहा उठी।

सन १८७२ में पानी के नहीं बरसने से बिहार में अकाल पड़ा। परन्तु सरकार के प्रबंध और ज़मीदारों की सहायता से लोगों ने उतना कष्ट नहीं पाया कि जितना गुमान था।

सन १८७२ में डेंगू नाम एक प्रकार का बुखार सारे हिन्दुस्तान में फैला था। इस से लोगों ने बड़ी तक्लीफ़ उठाई। इस के सिवा हैज़ा आदि कई एक संक्रामक रोग कई एक बरस पहले से हर साल हुआ करते थे।

लौर्ड नौर्थब्रूक के अमल में बड़ोदे के राजा मलहार राव गायकवाड़ का गद्दी पर से उतारा जाना एक प्रधान घटना है। बड़ोदे की रियासत की बदइन्तिज़ामी देख कर गवर्नमेन्ट बहुत दिनों से क पांच में पड़ी हुई थी, कि इसके बारे में क्या हो। बलकि गवर्नर जनरल ने एक बार धमका भी दिया कि मलहार राव १८ महीनों के अन्दर होशयार हो जावे और अपने राज का इन्तिज़ाम दुरुस्त करे। इन ही १८ महीनों के अन्दर बड़ोदा राज के रेसीडेन्ट फ़ेयर साहिब ने राजा के नाम पर एक नालिश दागी कि राजा ने उन्हें ज़हर खिलवा देना चाहा था। गवर्नर जनरल ने इस मुकद्दमे का बिचार कई एक देसी राजाओं और कई एक

सरकारी मुलाज़िम अंगरेज़ों के सुपुर्द किया। इन्हीं ने इस मुक़द्दमे की तजवीज़ सन १८७५ की २६वीं फ़रवरी से ले कर १८वीं मार्च तक चलाई। अन्त को तजवीज़ करने वालों में देसियों ने तो उन्हें निर्दोषी और अंगरेज़ों ने दोषी ठहराया। गवर्नर जनरल ने अंगरेज़ों ही की राय सच्ची समझी, और मलहार राव को एक बारगी गद्दी से उतार, गायकवाड़ ही घराने के एक दूसरे को गद्दी पर बिठाया। गवर्नर जनरल के इस काम से बहुतेरे लोग नाराज़ हो गये।

लौर्ड मेयो के अमल में महारानी विक्टोरिया के मंझले बेटे डिऊक औफ़ एडिन्बरा इस देश में तशरीफ़ लाये थे। अब लौर्ड नौर्थब्रूक के अमल में महारानी के बड़े बेटे होनहार बादशाह वेल्स के राज-कुमार सन १८७५ की ८वीं नवेम्बर को यहां तशरीफ़ लाये, और सन १८७६ के मार्च में यहां से सिधारे। इन्हों ने बम्बई, कलकत्ता, पटना, बनारस, इलाहाबाद, लाहौर, कश्मीर, वगैरह तमाम सैर की थी।

इधर हिन्दुस्तान में कई एक जगहें सूत कातने और कपड़े बुनने की कलें जारी हुईं। इस से मैन्चेस्टर के सौदागरों को अपने कारबार में झोल पड़ने का खटका हुआ। बारे उन्हों ने यह कोशिश की कि इंगलैन्ड से यहां माल भेजने में जो उन को महसूल लगता है वह उठा दिया जावे। लौर्ड नौर्थब्रूक ने इस का प्रतिवाद किया। बहुतेरे समझते हैं कि इसी बात के लिये इन में और स्टेटसिक्रेटरी लौर्ड सैलिस्बरी से मनमुटाव हो गया, और इसी लिये उन्हों ने इस्तीफ़ा दे सन १८७६ के मार्च महीने में इंगलैन्ड की यात्रा की।

इन के समय में लड़ाई झगड़ा कहीं कुछ नहीं हुआ। सिर्फ़ आसाम की उत्तर सरहद पर रहनेवाली डफला नाम एक जंगली कौम के लोग अंगरेज़ी अमलदारी से आदमियों को पकड़ ले जाया करते थे, इस कारण इन पर, और नागा पहाड़ पर पैमाइश करने के समय हौकम्ब साहिब को मार डालने के कारण नागाओं पर चढ़ाई करनी पड़ी थी। परन्तु इन की गिन्ती लड़ाइयों में नहीं की जा सकती।

लौर्ड लिटन।

१८७६—

लौर्ड लिटन ने सन १८७६ ई० की ११वीं मार्च को लौर्ड नौर्थब्रूक से हिन्दुस्तान के गवर्नर जनलर का काम समझ लिया। इन के समय में इतनी बातें बड़ी बड़ी हो चुकी हैं—(१) महारानी विक्टोरिया ने "एम्प्रेस औफ़ इन्डिया" यानी "क़ैसर-इ-हिन्द" का ख़िताब लेना चाहा। इसी उपलक्ष में बड़ी धूमधाम के साथ लौर्ड लिटन ने सन १८७७ की १ली जनवरी को दिल्ली में दरबार किया। इस में तमाम के राजा महाराजा सरदार आये थे। इस से एक बड़ा उपकार यह हुआ कि इंगलैन्ड और हिन्दुस्तान का नाता बहुत निकट हो गया।—(२) इन के अमल में मदरास में बड़े ज़ोर शोर से अकाल पड़ा था, परन्तु सरकार के इन्तिज़ाम से प्रजा ने बहुत कष्ट नहीं उठाया।—(३) सौदागर, कारीगर, ब्यौपारी, और हर तरह के पेशेदारों पर ला-

इसेन्स टैक्स बिठाया गया। --(४) देसी बोलियों के अखबारों की स्वाधीनता छीन ली गई। इस काम से हिन्दुस्तान की प्रजा सरकार से बहुत नाराज़ है।--(५) इन के समयमें जितनी बातें हो चुकी हैं उन में सब से प्रधान काबुल की लड़ाई है। अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह अमीर शेरअली के दरबार में रूसियों की रसाई का समाचार सुन कर सरकार बहादुर ने भी अपना एक दूत फ़ौजके साथ वहां भेजना चाहा। परन्तु अमीर के नोकरों ने उन को अपने राज में जाने न दिया। यही अपमान इस लड़ाई का कारण है। लड़ाई शुरू हुई, और बराबर छ सात महीने तक चली। अंगरेज़ी फ़ौजोंने जब प्राय: आधा अफ़ग़ानिस्तान ले लिया, और काबुलियोंसे कुछ भी न बन पड़ा, तो शेरअली का जी छूट गया, और शायद इसी खेद मेंमर भी गया। इनके मरने पर इन का बेटा याकूबखां काबुल के तख़्त पर बैठा। इस ने लड़ाई जारी रक्खी। परन्तु जब देखा कि सरकार से मुक़ाबला कर के फ़तह उठाना मुश्किल है, तो लाचार हो कर सुलह का पयाम भेजा। सरकार को तो सिर्फ़ शेरअली से अपने अपमान का बदला लेना था। बारे तुरत ही सरकार ने मन्ज़ूर कर लिया, और तारीख़ २६वीं मे सन १८७९ के दिन गंडामक नाम जगह में नीचे लिखे अनुसार सुलहनामा तआमील हुआ।—

१।—अमीर याकूब खां और अंगरेज़ी सरकार में सदा मित्रता का बर्ताव हो।

२।—अमीर अपनी प्रजा को इस बात की दिलजमई करा दें कि अंगरेज़ी सरकार से सरोकार रखने के कारण उन पर किसी तरह का अत्याचार नहीं होगा।

३।—अमीर याकूब खां अगर दूसरे देशवालों से किसी तरह की गुफ़्तगू करना चाहें तो अंगरेज़ी सरकार की राय ले-लेनी होगी।

४।—एक सरकारी रेसीडन्ट थोड़ी सी फ़ौज के साथ काबुल में रहे, जिसे काम पड़ने पर सरकारी एजेन्टों को अफ़ग़ानिस्तान की सरहदों पर भेजने का अधिकार रहेगा। अगर अमीर चाहें तो वह भी अपने एजेन्टों को हिन्दुस्तान में रक्खें।

५।—सरकारी एजेन्टों की जान और आराम को रक्षा याकूबखां के ज़िम्मे रहे।

६,७।—दोनों राजों में तिजारत जारी रहे। इस बारे में साल भर के अन्दर एक दूसरा अहदनामा तआमील पायेगा, जिस में खुलासा हाल लिखा जावेगा।

८।—हिन्दुस्तान से काबुल तक, कुरम की राह हो कर, टेलीग्राफ़ के तार लगाये जावें।

९।—क्यों कि दोनों सरकारों में दोस्ताना तौर पर मेल हुआ है, इस लिये अंगरेज़ी सरकार कुरम, पिशीन, और सिबीन की तराइयों के सिवा सब जगहें, जहां जहां इस समय अंगरेज़ी फ़ौज का अधिकार है, याकूबखां को लौटा देगी। इन इलाक़ों की आमदनी में से राज के प्रबंध का ख़र्च बाद दे कर जो बचे, वह याकूबखां को दे दिया जावेगा। ख़ैबर और मिचनी घाटियों पर, और उन के आस पास की रहनेवाली क़ौमों पर भी अंगरेज़ी सरकार का पूरा अधिकार रहेगा।

१०।—याकूबखां अगर इन शर्तों के अनुसार चलें तो

इस के बदले में अंगरेज़ी सरकार उन्हें हर साल छ लाख रुपये दिया करेगी।

समाप्त।

साधो राम भट्ट ने छाप कर प्रकाश किया।



